नारी चेतना रैली के शुभारम्भ हेतु ध्वज प्रदान करते मुख्यमत्री

दिव्य दीपिका

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान

जयपुर

❑ *प्रकाशक*

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान

के जी बी का रास्ता, जयपुर-302 003

दूरभाष 565194, 565250

❑ *प्रतिया*

3000

❑ *प्रकाशन वर्ष*

1997

❑ *कम्प्यूटर टाइप सेटिंग*

सपना कम्प्यूटर्स

जयपुर-302 003

❑ *मुद्रक*

आनन्द प्रिंटको

गोपालजी का रास्ता, जयपुर-302 003

दूरभाष 565318, 608318

अहं पंचहि ठाणेहिं,
जेहि सिक्खा न लब्भई।
थंभा, कोहा, पमाएण,
रोगेणालस्स एण वा ॥

● *भगवान महावीर*

अहकार, क्रोध, प्रमाद, रोग
और आलस्य -
इन पाच कारणो से शिक्षा
प्राप्त नही होती

अरिहन्त भगवन्तों को नमस्कार हो
सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार हो
आचार्य महाराजों को नमस्कार हो
उपाध्याय महाराजों को नमस्कार हो
ढाई द्वीप में रहे हुए सर्व साधुओं को नमस्कार हो

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान, जयपुर

संचालक मंडल

विद्यालय की संस्थापिका

प्रवर्तिनी श्री सुवर्ण श्री जी म.सा.

जिन शासन की दिव्य विभूति, महामना नारी जगत को गौरवान्वित करने वाली, प्रातः स्मरणीय प्रवर्तिनी श्री सुवर्ण श्री जी म.सा. ने उस अंधकारपूर्ण युग में नारी शिक्षा की ज्योति प्रज्जवलित कर न केवल तत्कालीन नारी समाज को सुशिक्षित व सुसंस्कारित बनाने का प्रयास किया, वरन पीढ़ियों तक स्त्री समाज के कल्याण, आत्मनिर्भरता व ज्ञान विकास को सम्बल व सुदृढ़ आधार प्रदान किया। इस सबके मूल में आपश्री की मानव कल्याण एवं नारी उत्थान की भावना प्रधान रहीं।

संस्था प्रारम्भ से ही नारी विकास, शिक्षा, स्वावलम्बन एवं चारित्रिक विकास की पोषक रही है। जयपुर में ही नहीं वरन राजस्थान में संस्था अपना सम्माननीय स्थान प्राप्त कर इस वर्ष हीरक जयंती मना रही है। यह मांगलिक कार्य नारी जाति के उत्थान की प्रेरक व सरस्वती की उपासिका साध्वी सुवर्ण श्री जी म.सा. के आशीर्वाद का ही सुफल है। शिक्षण संस्थान की ओर से परम श्रद्धेया चारित्रिक गुण की खान संस्थापिका साध्वी के प्रति शत-शत नमन एवं वन्दन!

साध्वी प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्री जी म सा जिनका आज हम वन्दन करते है वे एक ऐसा व्यक्तित्व थीं जिनके गुणो की सुरभि सारे देश में फैली हुई थी। जिनकी वाणी सदैव जिनवाणी के प्रचार प्रसार मे लगी रही जो सदैव चिन्तन मनन परोपकार एव जन कल्याण मे ही अपना समय व्यतीत करती रहीं जो समता त्याग वैराग्य और सयम की प्रतिमूर्ति थीं। सुवर्ण श्री महाराज साहब की प्रधान शिष्या तथा विद्यालय के स्थापनाकाल से जुड़ी परम श्रद्धेया साध्वी स्वर्गीय विचक्षण श्री महाराज साहब सस्था के विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहीं। जयपुर निवासियो तथा श्री वीर बालिका विद्यालय परिवार को आपने जीवन के अतिम क्षणो मे जिस कष्ट सहिष्णुता वेदनामय साधना तथा क्षमता का सदेश प्रदान किया वह चिरस्मरणीय है। अल्पायु म ही वैराग्य धारण कर आत्म विकास के मार्ग पर चलने वाली वृद्ध साधिका सभी साध्वी समुदाय तथा श्रावक-श्राविकाओ को अपनी ज्ञान ज्योति समान रूप स वितरित करने वाली परम पूज्या साध्वी श्री विचक्षण श्री जी महाराज साहब के प्रति हीरक जयती वर्ष म शत-शत वन्दन।

प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्री जी म सा

जिनका वन्दन करते आज

प्रवर्तिनी श्री सजन श्री जी म सा

परम श्रद्धेया साध्वी श्री सज्जन श्री जी महाराज साहब जिन शासन की ऐसी निधि थी जिन्होने अपनी प्रतिभा से केवल आत्म कल्याण के पथ को ही दैदीप्यमान नहीं किया वरन समाज सेवा शिक्षा साहित्य, सगीत और दर्शन आदि सभी क्षेत्र आपकी नेतृत्व और ज्ञान की ज्योति से आलोकित हो उठे। आप अत्यन्त सरल सहज व अनूठी प्रेरणा की स्रोत कुशल वक्ता प्रभावी लेखिका तथा जन-जन के कल्याण की शुभ चिन्तिका थी आपका अध्ययन चिन्तन व मनन अगाध था। विद्यालय से आपका गहरा व अटूट सबध था। छात्राओ और शिक्षिकाओ के चारित्रिक उत्थान मे आपका मार्गदर्शन सर्वोपरि रहा। हीरक जयन्ती के मगलमय शुभ अवसर पर नमन।

"अन्तर अभिव्यक्ति"

भगवान महावीर स्वामी के नाम पर जिसका वीर बालिका विद्यालय/महाविद्यालय नाम है, उस संस्था का हीरक-जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है, इसकी जानकारी श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव के द्वारा प्रेषित पत्र से प्राप्त हुई।

उस विद्यालय की प्रशंसा मैं किन शब्दों में करूं, जिसका प्रारम्भ ही त्यागी, तपस्वी साध्वी रत्न-प्रवर्तिनी श्री पुण्यमूर्ति स्वर्ण श्री जी. म. सा. द्वारा हुआ। इन संस्थाओं को प्रारम्भ से अब तक सर्वोत्कृष्ट, सुविधा-साधन व चरित्र तथा श्री सम्पन्न व्यक्तित्व, अध्यक्ष, मन्त्री, अध्यापिका के रूप में प्राप्त होते रहे एवं प्रतिवर्ष स्थापना दिवस की वर्षगांठ "ज्ञानपंचमी" को त्यागी आत्माओं के आशीर्वाद मिलते रहें, ऐसे विद्यालय का जीवन काल वटवृक्ष की तरह विकास की ऊँचाई एवं अध्ययन करने वाली छात्राओं की संख्या इसकी सर्वोपरि ख्याति है।

कार्यकर्त्ताओ का उल्लेख उनकी समुचित योग्यता के साथ इस प्रसंग पर प्रकाशित होगा ही, अतः मैं शब्द विस्तार में न जाते हुए इतने मे ही ॐ शाति करती हूँ।

पुनश्चः श्री राजरूप जी साहब टांक, श्रीमती प्रकाशवती जी सिन्हा जिनका नाम स्मरण किए बिना मन किसी भी तरह मौन होना नहीं चाहता। आने वाले समय में भी सदाचार की ख्याति के साथ शिक्षा के स्तर की ख्याति अर्जित करने में न्याय सम्पन्नता प्राप्त करे।

"विचार कण"

आज की पीढी में जहां साक्षरता बढ रही है, वहा सहनशीलता, श्रमशीलता और सेवा भावना तथा वाणी-विवेक तेजी से घट रहा है। विचारों के लिए गंभीर प्रश्न है।

संस्कार देने की जवाबदारी तभी सार्थक होती है, जब सस्कार लेने वाले में लेने की लगन हो और लेने लायक कोमल व सरल हृदय हो, अन्यथा शिक्षा के साथ उद्दण्डता व उच्छृखलता शिक्षा का उपहास कराती है।

जीवन में विद्या का अर्थ केवल पेट पूर्ति कराने वाली व्यवस्था या साक्षरता ही नहीं है, अपितु कुसंस्कारों को क्षीण करना और सुसंस्कारों का विकास करने मे उपयोगी बने, उसी का नाम विद्या है। विद्या स्वयं से जोडती है, विवेक से स्वयं की तरफ मोडती है एव दुर्गुणो के घट को फोडती है। विद्या सुन्दरता और सद्गुणों का भेद समझती है। अहकार घटाती है, लघुता बढाती है व जीवन मे क्षमा और सहनशीलता का अभ्यास कराती है, अर्थात् शिक्षा स्वय के अज्ञान को स्वयं के ज्ञान मे प्रतिबिम्बित करती है।

यही अन्तर से शुभेच्छा है
मणिप्रभा

आशीर्वचन

''दीपो की मुस्कान बनो तुम
फूल विछा दो क्यारी-क्यारी
सयम पथ के इन पुष्पो से
महके जीवन की फुलवारी ॥''

ससार मे अनेक जीव जन्म लेते है, लेकिन उन्ही का जीवन सार्थक होता है जिसका आकर्षक व्यक्तित्व सदैव दूसरो के जीवन को नयी और सही राह दिखाता है।

जो सत्य अहिसा प्रेम और सदाचार जैसे उच्चतम सस्कारो का खजाना जगत के समक्ष रखते हुए मुमुक्षु जीवो को यह विरासत सौपने के लिए प्रचण्ड पुरुषार्थ करते है। प्रमाद की गाढी निद्रा से जागृत करके कर्त्तव्य की राह पर आगे बढने का मार्गदर्शन देते है और जीवन जीने की कला का अपूर्ण बोध प्रदान करते है।

श्री वीर बालिका की सस्थापिका साध्वी प्रवर्तिनी श्री सुवर्ण श्री जी म सा तथा सस्था के आशीर्वाद प्रदाता प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्री जी म सा तथा प्रवर्तिनी श्री सज्जन श्री जी म सा को कोटि कोटि नमन।

गुरु कृपा प्यासी विचक्षण शिशु
सुवर्ण यशाश्री

अन्तर के आशीर्वाद

मुनिश्री सुकनमल जी म.
(श्रमणसंघीय सलाहकार उप प्रवर्तक)

नारी शिक्षा व जीवन समीक्षा का लक्ष्य निश्चित रूप से चुनौती भरा आयोजन है। पुरुष प्रधान समाज की सोच के बीच नारी को बराबरी का दर्जा देने का मानस निःसंदेह अनुकरणीय है। सदियों से सुप्त स्त्री सम्वेदना के स्वरों को सम्मान देने की चेष्टा समय की धड़कती नब्ज पर समझदारी का प्रथम सूत्र है। नारी जागृति उत्थान व शिक्षा का चिन्तन हमारी चिन्ता को निश्चय ही घटायेगा, ऐसा आभास इस आयोजन के अनुष्ठान से परिलक्षित हो रहा है "श्री वीर बालिका विद्यालय/ महाविद्यालय" की हीरक जयंति इस सत्य का साक्षी है कि पुरुष प्रधान समाज नारी को पूरा सम्मान देता है। युगीन समस्याओं के समाधान अकेले पुरुष के बूते की बात नहीं है, अत सही समय पर समाज ने करवट बदली, परिणाम स्वरूप पुरुष व नारी एक साथ समाज की संरचना के सहभागी है।

मुझे जानकर अत्यन्त हर्षानुभूति हुई कि "श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान" स्मृतियो को चिरस्थायी बनाने के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहा है तो मेरे भीतर भी अपनी भावाभिव्यक्ति को शब्द को साधन बनाकर इस स्वर्णिम अवसर पर अन्तर के आशीर्वाद प्रेषित करने की चाह जगी।

भारत भूमि की नारियों का इतिहास विश्व प्रसिद्ध है। हर युग में कभी सीता कभी सावित्री कभी गर्गेयी कभी अहिल्या कभी हाडी रानी कभी झांसी की रानी कभी पन्ना तो कभी इन्दिरा ने जन्म लेकर नारी शक्ति की महता को उजागर किया है। मै चाहता हू कि इस संस्थान की सुकुमार बालिकाएं फिर उसी इतिहास को पुनरावृत्ति दे ताकि नारी शक्ति की परम्परा की धारा सतत प्रवहमान रहे और यह संस्थान उस महान परम्परा का सम्वाहक बने।

इसी आशा के साथ

प्रस्तोता श्रमण

अमरेश निराला

पावन प्रेरणा

परम पूज्या प्रवर्तिनी श्री स्वर्ण श्री जी म सा की पावन प्रेरणा एव उन्ही के द्वारा सस्थापित श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय अपने नामानुरूप गुण के आलोक से आलोकित होता हुआ निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है।

जहा छात्राओ को न केवल मात्र जीवन निर्वाह की ही शिक्षा दी जाती है अपितु उनके जीवन के सर्वागीण निर्माण एव विकास की भी शिक्षा दी जाती है। साथ ही बालिकाओ मे प्रदत्त पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त धार्मिक व नैतिक शिक्षा पारस्परिक सहयोग की भावना, उदारता विशालता एव नियमितता तथा सौन्दर्याभिव्यक्ति के साथ प्रबल इच्छाशक्ति एव दृढ निश्चय शक्ति के भाव तथा खेलकूद की क्षमताओ का विकास करते हुए स्वावलम्बी जीवन हेतु उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को व राष्ट्रीय चेतना के जागृत करने हेतु शिक्षा दी जाती है।

ये सारा श्रेय भूतपूर्व प्रधानाध्यापिका श्री प्रकाशवती जी सिन्हा एव वर्तमान प्रधानाध्यापिका श्री उर्मिला जी श्रीवास्तव को है। उन्ही के कुशल नेतृत्व व सुन्दर सचालन मे विद्यालय की प्रगति व प्रतिभा दिनानुदिन अभिवृद्धि को प्राप्त हो रही है व भविष्य मे भी सदा होती रहेगी।

इन्ही शुभ भावनाओ के साथ हार्दिक प्रसन्नता है कि विद्यालय की हीरक जयन्ति के उपलक्ष मे प्रकाशित प्रस्तुत स्मारिका मे अध्यापक अध्यापिकाओ व छात्र छात्राओ द्वारा प्रदत्त ज्ञान वर्द्धक आकर्षक सुन्दर व रोचक सामग्री पाठक वृन्द के लिए सफल जीवन जीने हेतु उपयोगी व उद्देश्य पूर्ण सिद्ध हो।

इन्ही हार्दिक अभ्यर्थनाओ के साथ -

वीर शासन सेविका
'सज्जन मणि' आचार्या शशिप्रभा श्री
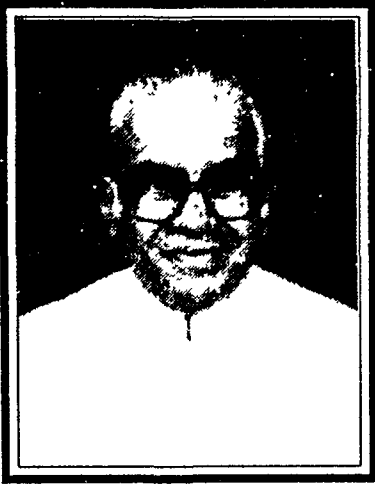
राज्यपाल
राजस्थान

संदेश

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में शिक्षित महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एक शिक्षित बालिका अपने परिवार समाज व देश को शिक्षित करती है।

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान द्वारा हीरक जयन्ती वर्ष के समापन समारोह के अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन की जानकारी का सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

मुझे विश्वास है कि प्रकाश्य स्मारिका में छात्र-छात्राओं के शैक्षिक विकास के अलावा राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, साक्षरता, बालिका शिक्षा एवं परिवार कल्याण के संबंध में जनोपयोगी सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा।

मेरी ओर से शुभकामनायें।

(बलिराम भगत)

मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे ये जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि जयपुर मे स्थित श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान का हीरक जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज से 75 वर्ष पूर्व हमारे समाज मे महिला शिक्षा की जो स्थिति थी, उसमे इस सस्था द्वारा महिला शिक्षा का अनुष्ठान प्रारम्भ करना न केवल सराहनीय बल्कि एक साहसिक कदम था। विगत 75 वर्षों मे इस सस्था ने महिला शिक्षा के क्षेत्र मे जो योगदान दिया है वह श्लाघनीय है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यह शिक्षण सस्थान वर्ग, जाति और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर परस्पर सहयोग, समन्वय और सामाजिक समरसता के वातावरण का निर्माण करते हुए शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रो मे छात्राओ को समाज की मूल धारा से जोडने का प्रयास कर रही है।

राजस्थान सरकार का यह प्रयास है कि इक्कीसवी सदी मे प्रवेश के समय राजस्थान मे कोई भी व्यक्ति निरक्षर नही रहे, इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सरकार ने गत सात वर्षों मे जो सघन प्रयास किये है, उनमे महिला शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। मुझे विश्वास है कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान जैसी महिला शिक्षा के प्रति सकल्पित सस्थाओ के सहयोग से हम अब इस लक्ष्य को प्राप्त करने मे सफल होगे।

मैं हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान की निरन्तर प्रगति की कामना करता हूँ और उसके कार्यकर्त्ताओ, अध्यापिकाओ और छात्रा समुदाय को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। इस अवसर पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमो और प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(भैरोसिंह शेखावत)

उपमुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान, जयपुर द्वारा अपने हीरक जयन्ती वर्ष के अधीन विविध शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा वर्ष के समापन समारोह पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन तथा बालकों एवं बालिकाओं में सुसंस्कार विकसित करने के लिये महिला शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार जरूरी है। वीर बालिका शिक्षण संस्थान द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास अनुकरणीय हैं।

मैं हीरक जयन्ती वर्ष के अधीन आयोजित होने वाले कार्यक्रमों तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

सद्भावी,

(हरिशंकर भाभड़ा)

मन्त्री, सावजनिक निमाण
उच्च शिक्षा एव तकनीकी शिक्षा

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान हीरक जयती मनाने और इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन करने जा रहा है। 20वी शताब्दी के तीसरे दशक से प्रारम्भ हुए एक छोटे से प्रयास से आज यह सस्थान पुष्पित, पल्लवित होकर एक विशाल वटवृक्ष के रूप मे जयपुर के आसपास की बालिकाओ को शिक्षा का सम्बल प्रदान कर रहा है। महिला शिक्षा के इस प्रयास से राजस्थान प्रगति के पथ पर आगे बढ़े और समाज मे एक ऐसी विशिष्ठ भावना उत्पन्न हो जिससे महिला को दूसरे दर्जे का नागरिक नही समझकर समाज मे सहभागिता का अधिकार उसे दिया जावे। सस्थान निरन्तर प्रगतिशील हो तथा महिला शिक्षा, बालिका शिक्षा एव उसके साथ साथ शिक्षा के अन्य क्षेत्रो मे भी आगे बढे, ऐसी मेरे मन की कामना है। स्मारिका के माध्यम से आप अपने भूत और वर्तमान के विषय मे समाज को परिचित करायेगे और उससे समाज लाभान्वित होगा, ऐसी आशा है।

आपके हीरक जयन्ती समारोह एव उस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका के लिए मेरे हृदय के अन्त:स्थल से शुभ कामनाए प्रेषित करता हू।

सदभावी

(ललित किशोर चतुर्वेदी)
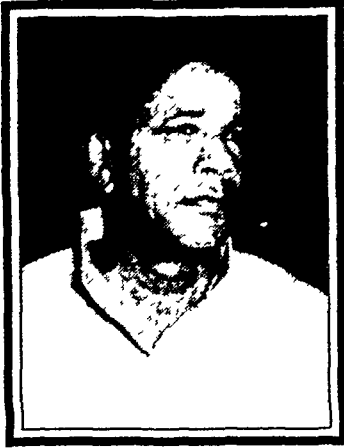
मन्त्री, स्वायत्त शासन, नगरीय
विकास एवं आवासन, जन. स्वा.
अभि. एवं खेलकूद व भू-जल

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री वीर बालिका शिक्षा संस्थान हीरक जयन्ती समारोह आयोजित कर रहा है और इस अवसर पर हीरक जयंती स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, आपकी संस्था द्वारा श्रेष्ठ कार्य किया जा रहा है।

यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि स्मारिका में संस्था के इतिहास, प्रगति एवं विशिष्ठ उपलब्धियों का समावेश करते हुये अभिभावकों, समाज के जागरूकों एवं शिक्षा में रुचि रखने वाले महानुभावों के लेखों, संदेशों एवं संस्मरणों का समावेश किया जावेगा। इससे स्मारिका प्रकाशन उपयोगी होगा।

मैं संस्थान की प्रगति की कामना करता हूं।

भवनिष्ठ

(भंवरलाल शर्मा)

राज्यमत्री, चिकित्सा, स्वास्थ्य
एव परिवार कल्याण

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान अपनी हीरक जयती वर्ष विविध शैक्षणिक एव सास्कृतिक गतिविधियो के साथ आयोजित कर रहा है। हीरक जयती वर्ष के समापन समारोह पर सस्थान द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमे कई उत्कृष्ट लेखो का समायोजन होगा।

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान अपने शैक्षिक स्तर को उच्चतर रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करे। इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित है।

शुभेच्छु

(राजेन्द्र राठौड)

राज्य मन्त्री, ग्रामीण विकास
एवं पंचायती राज विभाग

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि गुलाबीनगर जयपुर की चार दीवारी में स्थित श्री वीर बालिका संस्थान अपने हीरक जयंती वर्ष के अन्तर्गत विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित कर रहा है। इसके साथ ही हीरक जयन्ती वर्ष समारोह के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जिसमें संस्था के इतिहास, प्रगति एवं विशिष्ठ उपलब्धियों का समावेश करते हुये अभिभावकों, समाज के जागरूक एवं शिक्षा में रुचि रखने वाले महानुभावों के लेखों, संदेशों एवं संस्मरणों का समावेश किया जावेगा। निश्चय ही यह सराहनीय कार्य है।

संस्था की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामना प्रेषित करता हूं।

शुभेच्छु,

(नाथूसिंह गूर्जर)

राज्य मन्त्री, विधि एव
राजकीय उपक्रम

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान की हीरक जयती वर्ष के समापन समारोह पर आप एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहे हैं। मै इस प्रकाशन की सफलता की कामना करती हू एव आशा करती हू यह स्मारिका श्रेष्ठ समाज के निर्माण मे सहायक सिद्ध होगी।

भवनिष्ठ

(शशी दत्ता)

प्रो. आर. एन. सिंह

कुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय

संदेश
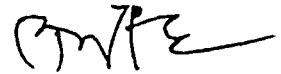
मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान अपने हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है, जिसमें शिक्षण संस्थान द्वारा की गई विविध सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी करायेगा।

जयपुर की यह शिक्षण संस्था बहुत पुरानी शैक्षणिक संस्था है, जिसने स्थानीय छात्राओं को शिक्षा के लिए प्रेरित किया है तथा जयपुर शहर में इस शिक्षण संस्थान की स्थापना की है।

मेरी यह मान्यता है कि शिक्षा के क्षेत्र में इस संस्था ने बहुआयामी कीर्तिमान स्थापित किये हैं तथा जयपुर में छात्राओं के लिए विशेष योगदान मिला है।

मैं इस अवसर पर अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह संस्था उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे।

भवनिष्ठ,

(आर. एन. सिंह)

डॉ पी एल चतुर्वेदी

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय
अजमेर
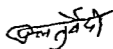
संदेश

मै गत दो दशक से इस सस्था से अति निकटता से जुडा रहा हूँ। इस सस्थान ने जो उन्नति की है वह प्रवन्ध समिति के दृढ़ सकल्प एव शिक्षको के परिश्रम का परिचायक है। कुछ वर्षों मे महिला शिक्षा के क्षेत्र मे प्रदेश मे नये आयाम स्थापित हुए है। वर्तमान सरकार ने इस दृष्टि से विशेष प्रयत्न कर इसके प्रसार का सद्सकल्प व्यक्त कियाहै। वीर बालिका शिक्षण सस्थान द्वारा अनेक वर्षों से छात्रो को सुनिश्चित और सुसस्कारित करने मे महत्वपूर्ण योगदान किया है। एक विदुषी एव सुसस्कृत महिला समाज मे अभूतपूर्व परिवर्तन ला सकती है और इस दृष्टि से आपके सस्थान का प्रयत्न सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि सस्थान की प्रवध समिति एव शिक्षक मिलकर अपने दायित्व का निर्वाह करते रहेगे और सुसस्कृत समाज के निर्माण मे अपनी महती भूमिका निभायेगे। स्मारिका के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाए स्वीकार करे।

भवनिष्ठ,

(डॉ पी एल चतुर्वेदी)
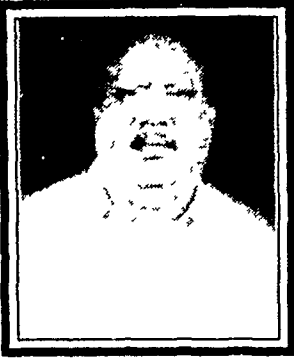
कॉलेज शिक्षा निदेशालय
राजस्थान, जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि श्री बीर बालिका शिक्षण संस्थान जयपुर अपना हीरक जयन्ती समारोह आयोजित कर रहा है।

महिला शिक्षा एवं विकास के लिए समर्पित यह संस्थान राजस्थान में स्वतन्त्रता से पूर्व महिला शिक्षा का अलख जगाने वाली लब्ध प्रतिष्ठित संस्था है, जिसने आध्यात्म जगत की विदुषी साध्वी एवं समर्पित समाज सेवी के प्रेरणास्पद सानिध्य का सुखद क्षण भी देखा है।

गुलाबी नगर जयपुर की ख्याति की भांति यह संस्था भी अपना गौरवमय इतिहास पथ पर प्रदर्शित होते हुए आज इस हीरक जयन्ती युग में प्रवेश कर अनेक सांस्कृतिक शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन कर चुकी है, जो शिक्षा जगत के क्षेत्र में अपने आप में एक कीर्तिमान है।

हीरक जयन्ती के समापन समारोह पर आप की संस्था एक स्मारिका का प्रकाशन भी करने जा रही है, यह भी गौरव का विषय है। स्मारिका में रुचिकर एवं ज्ञानार्जन की दृष्टि से उच्च कोटि की पठनीय सामग्री पाठकों को सुलभ होगी, ऐसी मेरी आशा है। मैं समारोह एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ तथा संस्था के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

भवनिष्ठ,

(के.एस. डिंडोर)

सावित्री शर्मा

सभागीय शिक्षा उपनिदेशक (महिला)
जयपुर सभाग, जयपुर

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान इस वर्ष अपनी हीरक जयन्ती मना रहा है। सस्थान द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जिसमे सस्था के इतिहास, प्रगति एव विशिष्ट उपलब्धियो तथा अभिभावको एव शिक्षाविदो के लेख, सन्देश व सस्मरणो का भी समावेश होगा।

महिला शिक्षा एव विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील इस सस्था को "हीरक जयन्ती स्मारिका" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित है।

(सावित्री शर्मा)

संस्थापक सचिव
केशव विद्या पीठ, जामडोली, जयपुर

संदेश

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान द्वारा हीरक जयन्ती के सुअवसर पर स्मारिका का प्रकाशन एक स्तुत्य प्रयास है। जयपुर शहर की चार दीवारी के अंदर गत 75 वर्ष से यह शिक्षा संस्थान महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक कीर्तिमान कायम किये हुए है। विद्यालय एवं महाविद्यालय को देखने के उपरान्त एवं एक वर्ष स्वयं की बेटी के अध्ययन को देखने के पश्चात मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूं कि जयपुर की कन्याओं को सुसंस्कार, सुशिक्षा एवं अन्य सभी प्रकार की जीवन की व्यावहारिक एवं उपयोगी शिक्षा देकर इस संस्थान ने जयपुर के शिक्षा क्षेत्र में चार चांद लगा दिये हैं। यह संस्थान दिन रात उन्नति करता रहे, प्रभु से यही कामना है।

भवदीय

(कौशल किशोर जैन

बी-18, राजेन्द्र मार्ग,
बापू नगर, जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वीर बालिका शिक्षण सस्थान द्वारा हीरक जयती के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा कराकर शिक्षार्थियो को अच्छे अको से परीक्षा उत्तीर्ण करा देना मात्र नही है, अपितु उनका सर्वांगीण विकास करते हुए देश के लिए सुखी, स्वस्थ और समाजोपयोगी नागरिक तैयार करना है। ऐसा नागरिक, जो शरीर से स्वस्थ हो, जिनके मन मे उमग हो, उत्साह हो, जो अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग जागृत विवेक से कर सके, जो किसी के बहलाने मे, बहकाने मे अथवा भड़काने मे न आए और जो भले और बुरे मे अतर कर सके। जिनके मन मे करुणा हो, जो दूसरे की स्थिति समझ सकता हो। दुनिया को जानने के लिए जिनकी प्यास जगती रहती हो, परन्तु जिनके मन मे अपनी भाषा, अपने देश, अपनी सस्कृति के प्रति हीनता की भावना न हो।

यह सस्थान अपनी विभिन्न गतिविधियो के माध्यम से सदैव ऐसा सब कुछ करने मे प्रयत्नशील रहा है, ऐसा मेरा मानना है। इसी के परिणामस्वरूप यहा की निकली हुई बालिकाए समाज और देश मे, अपना गौरवशाली, सुसस्कृत उदाहरण प्रस्तुत करती चली आ रही हैं।

यह कदम उत्तरोत्तर सही दिशा मे बढ़ते रहे, इसी कामना के साथ,

तेजकरण डडिया

(तेजकरण डडिया)

जिला शिक्षा अधिकारी
छात्रा संस्थाएं, जयपुर

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान अपने हीरक जयन्ती समारोह केअन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों के साथ-साथ एक स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहा है।

यह शिक्षण संस्थान जयपुर में लम्बे समय से शिक्षा के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है।

स्मारिका में विद्यालय की प्रगति एवं विशिष्ट उपलब्धियों के साथ-साथ शिक्षाविदों के लेखों, संस्मरणों से निश्चय ही बालिका शिक्षा को एक नवीन आयाम मिलेगा। शिक्षा द्वारा बालिकाओं में नैतिक संस्कारों का सुदृढ़ीकरण होगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(उषा बाप ना)

अध्यक्ष,
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

संदेश

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान हीरक जयती मना रहा है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है। इस सस्थान ने बालिका शिक्षा के लिये अत्यन्त सराहनीय एव अनुकरणीय कार्य किये है। सस्थान ने बालिका शिक्षा का अहम् भार उस वक्त उठाया जब बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिभावको का कोई रूझान न था। आज भी दूरी की वजह से बालिकाओ को उच्च शिक्षा से वचित कर दिया जाता है। परन्तु सस्थान ने शहर के बीच महाविद्यालय प्रारम्भ कर बालिकाओ के लिये उच्च शिक्षा सुलभ कराई है। सस्थान मे शिक्षण से ज्यादा चारित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बालिकाओ व महिलाओ को रोजगार व आय के साधन मिले इसके लिये प्रशिक्षण का कार्य भी वर्द्धमान स्मारक सेवा समिति के साथ मिल कर किया। सस्थान के पदाधिकारी, शिक्षक वृन्द व छात्राओ और अभिभावको ने सस्थान के लिये एक अद्वितीय छाप जन-जन के मस्तिष्क मे बनाई है। इसके लिये सबको साधुवाद। सस्थान उत्तरोत्तर प्रगति करे और बालिकाओ के शिक्षण व चरित्र निर्माण मे अग्रणी बना रहे, इसी शुभकामना के साथ -

आपका
[signature]
(रणजीतसिह कूमट)

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर

आलेख

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान अपनी हीरक जयन्ती मना रहा है। किसी भी संस्था के लिये यशस्वी व अनवरत सेवा के 70 वर्ष पूरे करना गौरव की बात है। इस अवसर पर इस संस्था के संस्थापक स्व. श्री राजरूपजी टांक व संस्था के वर्तमान संरक्षक श्री विमलचन्दजी सुराणा व अन्य कार्यकर्ताओं को मैं साधुवाद देना चाहता हूं जिनके सुप्रयासों से यह संस्थान उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकी है।

आज के युग में संस्कार शील व चरित्र निर्माण की शिक्षा, विशेषकर बालिकाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक है। पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने के साथ साथ नैतिक शिक्षा देना, पारस्परिक सहयोग व राष्ट्रीय चेतना जागृत करना भी शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य होना चाहिये। यह विद्यालय इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति कर रहा है। यह हमारे लिये संतोष का विषय है।

इस विद्यालय में लगभग 3000 छात्राएं अध्ययनशील हैं। जयपुर की घनी आबादी वाले क्षेत्र में भव्य भवन तथा विकास की अन्य सुविधायें प्रदान करना कठिन कार्य है। इस विद्यालय द्वारा गत 10 वर्षों से सैकेण्डरी स्तर पर लगभग शत प्रतिशत परिणाम प्राप्त करना विशेष उपलब्धि है जिसके लिये इस संस्था के संचालक, शिक्षक, अभिभावक व छात्राएं बधाई के पात्र हैं।

मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता है कि विद्यालय में खेलकूद व शारीरिक शिक्षा, पुस्तकालय, वाचनालय, छात्रवृत्तियां, साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। व्यावसायिक आवश्यकताओं को देखते हुए कम्प्यूटर प्रशिक्षण की भी

व्यवस्था है।
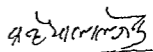
भारत मे शिक्षा के क्षेत्र के प्रसार मे जैन समाज का काफी योगदान रहा है। जैन समाज द्वारा जयपुर मे कई सस्थान जैसे महावीर दि जैन विद्यालय, सुबोध कॉलेज व स्कूल, आदि कई अग्रणी सस्थाए सचालित है। हमारे साधु व मनस्वी शिक्षा प्रसार पर विशेषकर नैतिक शिक्षा पर हमेशा जोर देते है। हमारे मुनिश्री भी जन मगल की कामना से अपनी पद यात्रा के दौरान शिक्षण सस्थाओ के विकास पर विशेष अनुप्रेरणा देते रहते है।

औद्योगिक, सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्रो मे जैन समाज का अवदान जनसख्या के अनुपात मे अत्यन्त उल्लेखनीय है। जैन समाज शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्तिकारी जागृति लाई है। जैन समाज का बुद्धिजीवी वर्ग सभी क्षेत्र मे जातिवाद की सकीर्ण भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रहित मे कार्य कर रहा है। वे "क्षेम सर्व प्रजाना" की भावना को अपनी पूजा मे नित्य दोहराते है।

आज इसी बात की आवश्यकता है कि हम वैयक्तिक लाभ की आवश्यकता से नही, वरन् सम्पूर्ण समाज तथा राष्ट्र के कल्याण की भावना से कार्य करे।

मुझे विश्वास है कि यह विद्यालय इसके सस्थापक दिव्य विभूति स्व श्री राजरूप जी टाक की महान आत्मा के आदर्शों का पालन करते हुए समाज व देश के विकास मे अपना योगदान देता रहेगा।

रजत जयती, स्वर्ण जयती या हीरक जयती के अवसर हमे अपने कार्यों का पुन अवलोकन करने तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। सस्थाओ की कोई आयु सीमा नही होती वह तो स्थायी होती हैं। मेरी कामना है कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान अपनी स्थापना की शताब्दी ही नही, कई शताब्दिया इसी उल्लास व सेवा समर्पण की भावना से मनाते हुए समाज व राष्ट्र की सेवा मे उन्नतोत्तर प्रगति करता रहे।

(कन्हैयालाल जैन)
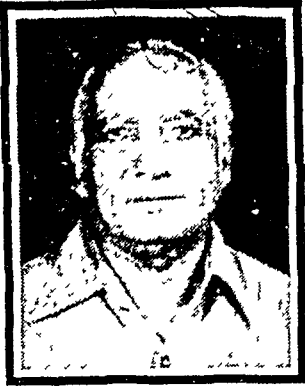
17, जोबनेर बाग,
पारीक कॉलेज रोड,
जयपुर
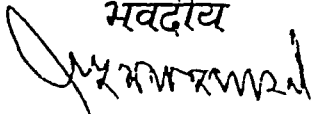
संदेश

आज समाज और सरकार दोनों स्त्री शिक्षा के पक्षधर हैं किन्तु आज के 70-75 वर्ष पूर्व नारी शिक्षा के बारे में कोई जनमत नहीं था। समाज के तत्कालीन नेताओं ने नारी शिक्षा के महत्व को समझा और शहर की चार दीवारी में समाज के महत्वपूर्ण अंग नारी की शिक्षा के संबंध में स्वप्न संजोया और स्कूल का शुभारम्भ किया। हमारे वे पूर्वज निश्चित ही साधुवाद के पात्र हैं कि जिन्होंने समाज की इस महती आवश्यकता की सहज ही कल्पना की और स्वप्न को साकार किया।

आज भी घनी आबादी वाली चौकड़ी घाट दरवाजा इस महाविद्यालय के स्वरूप को सीमित नहीं कर सकी तथा बहुत बड़ी संख्या में महिला शिक्षा के जगत में महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक योगदान देकर समाज में सुगृहणी एवं आदर्श माता व बहन के रूप में अनुपम भेंट दे रही है।

मुझे विश्वास है यह संस्था उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर होगी।

मैं स्मारिका प्रकाशन की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

भवदीय

(कपूरचन्द पाटनी)

टुकलिया भवन
कुन्दीगरो के भैरोजी का रास्ता,
जौहरी बाजार, जयपुर

आत्म विलय

जन्म पर हर्षातिरेक,
जरा मे पद पद दीनता,
मरण से भय उद्विग्नता।
हर्ष, दैन्य, भयोद्विग्नता,
हरा मन इनसे, हो निर्लिप्त,
आत्मलीन रह यह ही दृष्टा।
तन सेवक, मन स्वामी, हो -
आत्म-चेतना के अनुगामी।
चेतना वह दो दिशा मुझे -
आवागमन कुचक्र मिटा दू,
परम-आत्म स्व-आत्मभेद
सदा के लिए गला दू।
आत्म-विलय, का गीत गुजा दू
गीत गुजा दू,
आत्म-विलय का
गीत गुजा दू।

(पूर्णचन्द जैन)
पूर्व अध्यक्ष,
श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान

महिला शिक्षा संस्कार निर्माण एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना गौरवपूर्ण मानदंड स्थापित करने वाली गुलाबी नगर जयपुर की प्रमुख शिक्षण संस्था श्री वीर बालिका अपना हीरक जयंती समारोह मना रही है। यह गौरवपूर्ण अनुभूति केवल संस्था के प्रबन्धकों, अध्यापिकाओं, प्राध्यापिकाओं, छात्राओं एवं अभिभावकों की ही नहीं है वरन् महिला शिक्षा से जुड़ी समस्त संस्थाओं, शिक्षा प्रेमी समाज एवं राज्य सरकार तथा महिला विकास की अनेकानेक संस्थाएं भी इसकी अधिकारी हैं। उनके अनन्य सहयोग, मार्ग दर्शन एवं राज्य सरकार की उदार नीतियों की छत्रछाया में विकसित एवं पुष्पित होती हुई संस्था ने हीरक जयंती मनाने का सुअवसर प्राप्त किया है।

सहज विश्वास नहीं होता कि मध्यकालीन अंधकार पूर्ण युग में परम् श्रद्धेया साध्वी सुवर्ण श्री जी महाराज साहब के मानस में समाज की आधारशिला नारी को सुशिक्षित एवं सुसंस्कारित करने की दिव्य कल्पना जागृत हुई, जिसे साकार किया उनके उत्साही, सेवाभावी तथा दूरदर्शी श्रावक समुदाय ने - जिनमें सर्वप्रमुख स्वर्गीय श्री सोहनमल जी गोलेछा, स्व. श्री राजमल जी सुराना, स्व. श्री राजरूप जी टांक, स्व. श्री सोहनमल जी दूगड़ आदि ने। न जाने कितने कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के त्याग, दानदाताओं के सहयोग, अभिभावकों के विश्वास, छात्राओं की लगन तथा शिक्षिकाओं एवं कर्मचारियों की निष्ठा का सुफल आज हीरक जयंती महोत्सव के रूप में उद्भाषित हो रहा है। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है।

स्मारिका के प्रकाशन में जहां संस्थान के इतिहास, प्रगति एवं विशिष्ट उपलब्धियो की झांकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, वहीं समर्पण खंड में संस्था को सुदृढ़ एवं स्थायी स्वरूप प्रदान करने वाले प्रमुख कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, संस्था प्रधान एवं शिक्षिकाओं के समर्पण एवं सहयोग की यशोगाथा को सम्मिलित किया गया है। तृतीय खंड नारी और शिक्षा के अंतर्गत शिक्षकों एवं

विद्वान लेखक, लेखिकाओ के विचारो को प्रस्तुत किया गया है।

अतिम खड विद्यालय पत्रिका 'दीपिका' व महाविद्यालय पत्रिका 'दिव्या' के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमे बाल कलाकारो एव शिक्षिकाओ के मौलिक विचारो एव अभिव्यक्ति कौशल को अकित करने का प्रयास किया गया है। इन रचनाओ के माध्यम से शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रो एव वर्तमान के ज्वलत प्रश्नो पर चिन्तन जागृत करने का प्रयास किया गया है।

स्मारिका के लिए राज्य के विभिन्न क्षेत्रो से विद्वानो, समाजसेवियो एव राजनेताओ ने अपनी शुभकामनाये एव आशीर्वाद भेजकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया है। सस्था के हितैषी, उदारमना महानुभावो ने विज्ञापन देकर स्मारिका प्रकाशन मे जो आर्थिक सहयोग प्रदान किया है उन सबके प्रति शिक्षण सस्थान अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता है। हीरक जयती समारोह समिति, सम्पादक मडल, विज्ञापन समिति तथा सभी लेखक, लेखिकाओ के सतत् सहयोग और मार्गदर्शन से ही स्मारिका का प्रकाशन हो सका है। उन सबके प्रति भी अपना विनीत भाव प्रकट करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है।

स्मारिका का आकलन विद्वत पाठको, रुचिशील सेवाभावी नागरिको एव शिक्षा के प्रति समर्पित महानुभावो की प्रतिक्रिया से ही सभव हो सकेगा। अत आपसे सम्मति एव विचार प्रेषित करने का आग्रह है।

✍ हीराचन्द वैद

✍ उर्मिला श्रीवास्तव

प्रेरणा स्रोत

पूर्व कार्याध्यक्ष
पूर्व प्रधानाध्यापिका
पूर्व प्राचार्या
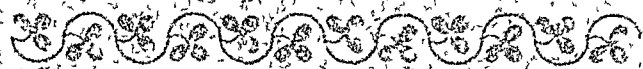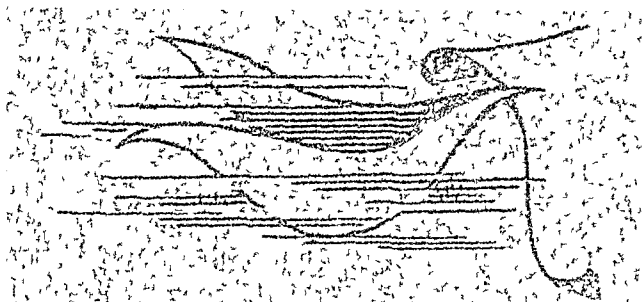
अध्यक्ष
उपाध्यक्ष
मन्त्री
सहायक मन्त्री
कोषाध्यक्ष,
सदस्य

विद्यालय की प्रधानाचार्या
महाविद्यालय की प्राचार्या

स्व. श्री राजरूप जी टांक

समाज रत्न स्व. श्री राजरूप जी टांक श्री वीर बालिका विद्यालय के संस्थापक एवं संरक्षक ही नहीं थे, बल्कि नगर की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के विकास में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान था। वस्तुतः आपके निधन से पारिवारिक एवं व्यावसायिक क्षति ही नहीं हुई है, वरन् अनेक संस्थाएं नेतृत्व विहीन हो गई हैं। हमारी संस्था यद्यपि अपने आपको पितृविहीन अनुभव कर रही है, किन्तु दूसरी ओर आप द्वारा पल्लवित, संरक्षित और निर्देशित जीवन मूल्यों के सहारे निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। आपका जीवन आदर्श तो था ही, किन्तु हर कार्यकर्ता के लिए एक खुली पुस्तक थी, जिसका अध्ययन प्रत्येक व्यक्ति देखकर स्वयं कर सकता था। संस्था को आपका इतना स्नेह एवं आतमीय भाव प्राप्त हुआ था कि वह आज भी हमें अपने से दूर नहीं प्रतीत होते। इस हीरक जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर इस भव में व्याप्त आपकी शुद्ध निर्मल आतमा का स्मरण कर संस्था की ओर से शत शत नमन एवं वन्दन!

आप विद्यालय के सस्थापक सदस्यो मे से थे। वैसे तो श्वेताम्बर समाज की शायद ही कोई सस्था हो जिसमे आपका योगदान न रहा हो, पर शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि ने इस सस्था के साथ आपको ऐसा जोडा कि अपने जीवन मे वे सदैव इस सस्था के विकास कार्यो मे अग्रसर रहे। आपके अध्यक्ष काल मे ही इस सस्था को जयपुर राज्य के शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त हुई। आज आपका पार्थिव शरीर विद्यमान नही है, तो भी आपकी स्मृति सदैव सस्था को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

स्व श्री सोहनमल जी गोलेछा

संस्था के पूर्व अध्यक्ष

स्व श्री राजमल जी सुराणा

माननीय स्व श्री राजमल जी सुराणा केवल दर्शन मात्र से ही युवक नही थे वरन् आजीवन युवको जैसी स्फूर्ति उत्साह एव लगनशील रहे। आपने जिस कार्य मे भी रुचि ली उसे योजनाबद्ध तरीके से सम्पन्न करवाया। आपके अध्यक्षता काल मे विद्यालय का विकास प्रारम्भ हुआ। आप जयपुर के प्रमुख रत्न व्यवसायी होते हुए भी अत्यन्त विनम्र सहज तथा शालीन थे। विभिन्न राजकीय सार्वजनिक एव सामाजिक सस्थाओ मे आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस सस्था के प्रति आपका ही नही वरन् आपके सम्पूर्ण परिवार का अनन्य स्नेह एव आत्मीय भाव है। आपके सुपुत्र श्री विमलचन्दजी सुराणा वर्तमान मे सस्था के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे है। हम आपके प्रति नत मस्तक है।

दानवीर सेठ सोहनलालजी दुग्गड़ का नाम किसने नही सुना, विद्यालय के प्रथम निरीक्षण में ही विद्यालय ने आपके मन में स्थान बना लिया। संस्था के अध्यक्ष बनते ही आपने अपनी कलम से एक बुलेटिन स्कूल के बारे में लिखा, जिसमे समाज की महिला शिक्षा की उदासीनता के प्रति मीठी चुटकी भी ली, साथ ही इस संस्था की सेवाओं की सराहना भी की। आपको संस्था का पुराना भवन बहुत छोटा एवं उपयुक्त स्थान पर न होने के कारण रुचता नही था। आपने ही संस्था के वार्षिकोत्सव में अजीबो गरीब भावना जाहिर करते हुए नया मकान खरीद कर देने की घोषणा की। आज विद्यालय आपके द्वारा प्रदत्त मकान में ही चल रहा है। इस भवन के दान के बाद भी वे हर तरह का योगदान संस्था को देते रहे। काश! आज वे होते और हीरक जयंती महोत्सव मे आशीर्वाद प्रदान कर सकते।

दानवीर सेठ सोहनलालजी दुग्गड़

संस्था के पूर्व अध्यक्ष

श्री सिद्धराजजी ढढ्ढा

यह संस्था का सौभाग्य ही कहा जायेगा कि लक्ष्मी-पुत्रों के साथ-साथ सरस्वती पुत्रों, साहित्य मनीषियो, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं राजनेताओं का सहयोग भी हमे मिलता रहा। श्री सिद्धराज जी ढढ्ढा गांधीवादी दर्शन एवं विचारधारा के प्रतिमान सर्वोदयी नेता के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर सुपरिचित एवं सुविख्यात हैं। आपके कार्यकाल में संस्था का क्षेत्र समाज से बढ़कर पूरे नगर तक बढ गया। 'जैन श्वेताम्बर कन्या पाठशाला' के रूप में वर्षो से कार्य करने वाली संस्था ने आपके नेतृत्व में श्री वीर बालिका विद्यालय का स्वरूप पाया। संस्था का नाम तो बदला ही चहुँमुखी विकास भी प्रारम्भ हो गया। आपकी व्यावहारिक दक्षता, कार्यकुशलता एवं दूरदर्शिता संस्था के विकास में वरदान सिद्ध हुई। यह भी सुन्दर संयोग रहा कि नवनिर्मित राजस्थान प्रान्त के प्रथम मन्त्री मण्डल में आप मन्त्री रहे और तब भी संस्था का बराबर नेतृत्व करते रहे। आज भी हमें श्री सिद्धराज जी ढढ्ढा साहब का सहयोग व मार्गदर्शन मिलता रहता है। हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर आपको सम्मानित करते हुए संस्था स्वयं कृतार्थ अनुभव कर रही है तथा आपके सुखद स्वस्थ जीवन की कामना करती है।

विद्यालय से आपके परिवार का अतिनिकट का सबध रहा है। आपके अध्यक्ष काल मे विद्यालय को विकसित होने का अपूर्व अवसर मिला। आपकी राष्ट्रीय विचारधारा के साथ सस्था की प्रधानाध्यापिका बहिन प्रकाशवती जी की विचारधारा का अनूठा मेल मिला, जिसने सस्था को राजनैतिक नेताओ की दृष्टि मे बहुत आगे ला दिया। आप सदैव विद्यालयो मे अनुशासन बद्धता के हामी रहे और आपके सुदृढ़ नेतृत्व मे ऐसी भूमिका बनी कि आज तक भी यह सस्था जयपुर नगर मे नैतिकता अनुशासन एव शिक्षण परिणामो मे अग्रणी स्थान बनाए हुए है। हम आपके प्रति आभारी है। यद्यपि सेवा स्वय ही स्तुत्य है उसका कोई मूल्य नहीं आका जा सकता किन्तु हीरक जयन्ती के मगलमय अवसर पर आपकी सेवाओ का सम्मान करते हुए सस्था स्वय सम्मानित हो रही है तथा आप द्वारा स्थापित अनुशासन नैतिकता व कार्यकुशलता के आदर्शो को बनाये रखने की कामना करती है।

श्री पूर्णचन्दजी दुकलिया

संस्था के पूर्व अध्यक्ष

स्व श्री जतनमल जी लूणावत

जयपुर के श्वताम्बर समाज मे पढ़े लिखे परिवारो मे आपके परिवार का ऊचा स्थान रहा। सामाजिक कार्यो मे आपकी अत्यधिक रुचि रही है। सामाजिक और धार्मिक सस्थाओ मे सदैव युवक नेतृत्व आपके हाथ रहा। सरकारी सेवा मे भी रहकर अनेक बन्धुओ को आपने सरकारी सेवा मे स्थान दिलवाया। वीर बालिका विद्यालय के सचालक मडल के आप अध्यक्ष रहे। महिला शिक्षा के काम मे आपकी काफी ठोस योजनाए थीं जिसका लाभ सस्था को मिला। विद्यालय को आपका सहयोग एक अभिभावक चिन्तनशील नागरिक तथा अध्यक्ष के रूप मे प्राप्त हुआ। हम हीरक जयती वर्ष मे आपकी बहुमुखी सेवाओ का हार्दिक वन्दन करते है।

संस्था के पूर्व अध्यक्ष

स्व. श्री सौभाग्य मल जी श्री श्रीमाल

लगभग 40 वर्षो तक संस्था के संचालक मंडल के विभिन्न पदों पर आसीन रहे। श्रीश्रीमाल साहब एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री हिन्दी के अधिकृत विद्वान अनुशासन प्रिय तथा नियमों के ज्ञाता था। आपने अपनी प्रखर वाक् प्रतिभा एवं लगन की सुस्पष्ट छाप संस्था पर छोड़ी। विशेष रूप से अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुये आपने महाविद्यालय के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। संस्था के शैक्षिक उन्नयन एवं कार्यालय प्रणाली सुधार की दृष्टि से संस्था आपके प्रति आभारी रहेगी। इस हीरक जयन्ती वर्ष में श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि !

संस्था के पूर्व कोषाध्यक्ष

स्व. श्री महावीर जी श्रीमाल

स्व. श्री महावीरप्रसाद जी श्रीमाल श्रद्धेय श्री टांक साहब के परम प्रिय शिष्य एवं संस्था के कोषाध्यक्ष थे। साथ ही अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में भी कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में पदासीन थे।

आप अत्यन्त प्रतिभाशाली, अनुशासन प्रिय, दीन दुखियों के सच्चे सेवक, धार्मिक कार्यो में रुचि लेने वाले लगनशील कार्यकर्ता थे। आपकी प्रखर बुद्धि एवं व्यावहारिक क्षमता हमारी संस्था के विकास में अत्यन्त सहयोगी सिद्ध हुई है। आपका असामयिक निधन संस्था परिवार एवं समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। हीरक वर्ष महोत्सव के अवसर पर आपके प्रति विनम्र पुष्पांजलि !

पूर्व प्रधानाध्यापिका

स्व श्रीमती प्रकाशवती देवी सिन्हा

विद्यालय की पूर्व प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा जो आज हमारे बीच नहीं है किन्तु जिनकी लगन निष्ठा और परिश्रम ही आज सस्था को इस स्तर पर पहुचाने मे सहायक सिद्ध हुई है।

हीरक जयन्ती महोत्सव पर विद्यालय परिवार की हार्दिक श्रृद्धाजलि।

पूर्व प्राचार्या

महाविद्यालय की सस्थापक प्राचार्या स्व श्रीमती डा शाता भानावत की सस्था मे व्याख्याता एव प्राचार्या रूप मे 20 वर्षों की सेवाए अविस्मरणीय रहेगी। आपने महाविद्यालय के स्वरूप को निखारने मे अत्यन्त श्रम, विद्वता एव लगन का परिचय दिया है। आपकी सज्जनता शालीनता और विनम्रता हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी रह। इसी भावना के साथ हीरक जयन्ती महोत्सव पर वीर बालिका शिक्षण सस्थान की हार्दिक श्रद्धाजलि।

डा स्व श्रीमती शान्ता भानावत

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान संचालक मंडल

अध्यक्ष

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री विमलचन्द जी सुराणा श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान के अध्यक्ष ही नहीं इस संस्थान के गौरव हैं। आप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त रत्नव्यवसायी है, तथा राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित हो चुके है। सज्जनता, सरलता एव शालीनता के आप अनुपम उदाहरण है। विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक सस्थानों के प्रतिष्ठित पदों पर रहते हुए अपनी प्रतिभा, नि·स्वार्थ सेवा तथा परोपकारिता का परिचय दे रहे है। आप कैसर चिकित्सालय के अध्यक्ष हैं, विपश्यना केन्द्र के सयोजक हैं, विद्याश्रम स्कूल के निर्देशक हैं और एस जे पब्लिक स्कूल के संरक्षक है, आपका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है। आपके नेतृत्व मे हीरक जयन्ती महोत्सव अपनी विविध गतिविधियों रूपी पुष्पो से शिक्षा जगत एवं समाज को सुवासित बना रहा है।

श्री विमलचन्द्र जी सुराना

उपाध्यक्ष

श्री प्रेमचन्द जी धांधिया

श्री प्रेमचन्दजी धांधिया: आप श्वेताम्बर ओसवाल समाज के प्रमुख सेवाभावी एव आस्थावान, सरल व निश्छल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप गत 35 वर्षो से संस्था की प्रबंध समिति से जुडे हुए है तथा वर्तमान में उपाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। आपने समय समय पर अनन्य आर्थिक सहयोग देकर संस्था के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। पारिवारिक घनिष्ठता की दृष्टि से आपकी बहनों व पुत्री ने इसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है। संस्था आपकी सरलता, सादगी एव उदारता के प्रति आभारी तथा भविष्य मे प्रखर सहयोग की आशा करती है।

मंत्री

श्री हीराचन्दजी वैद

संस्था से लगभग पचपन वर्षों से जुडे श्री राजरूप जी टाक के प्रमुख शिष्य अनेकानेक सामाजिक, धार्मिक तथा व्यवसायिक संस्थाओ से जुडे वर्तमान मत्री श्री हीराचन्द जी वैद हमारी सस्था के बहुआयामी विकास के आधार स्तम्भ है जैन दर्शन एव जैन साहित्य मे विशिष्ट रुचि एव भावना रखने वाले साहित्यिक एव सास्कृतिक विचारो के प्रणेता, मौलिक सूझबूझ के धनी कुशल वक्ता, व्यावहारिक बुद्धि एव सहनशीलता के प्रतीक श्रीमान हीराचन्द जी वैद सस्था के मत्री है जिन पर हमे गर्व है।

संयुक्त मंत्री

श्री दुलीचदजी टाक

श्री राजरूप जी टाक के सुपुत्र श्री दुलीचन्द जी टाक सही अर्थो मे अपने पिता के उत्तराधिकारी है । आपने उत्तराधिकार के रूप मे केवल व्यावसायिक ऊचाइयो को ही नहीं प्राप्त किया वरन् टाक साहब की सभी दत्तक सस्थाओ को आपने अपना सरक्षण आर्थिक, शारीरिक एव मानसिक सहयोग प्रदान कर सेवा, परोपकार एव समाज कल्याण का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री दुलीचन्द जी टाक सादगी सज्जनता एव विनम्रता के प्रतिबिम्ब है । आप प्रमुख रत्न व्यवसायी होते हुए भी समाज के हर वर्ग को अपना समताभाव समान रूप से वितरित करते है । सस्था आप जैसे बन्धु को पाकर स्वय को धन्य मानती है।

कोषाध्यक्ष

श्री गिरधारी लाल जी टांक

लगभग पाँच वर्ष पूर्व संस्था से जुड़े श्री गिरधारी लाल जी टांक हमारे नव नियुक्त कोषाध्यक्ष हैं। आप अत्यन्त विनम्र, मृदुभाषी तथा सरल स्वभाव के हैं। संस्था के लिए कुछ कर गुजरने की उत्साही भावना आपके प्रयासों में निरन्तर दृष्टिगोचर होती है। आपकी उदारता और सज्जनता संस्था के चहुंमुखी विकास में सहायक होगी इसी शुभकामना के साथ हम हीरक जयंती वर्ष में आपका स्वागत करते हैं।

सदस्य

लगभग 30 वर्ष पूर्व जयपुर में स्थानान्तरित व्यवसायिक दृष्टि से श्री छुट्टनलाल जी बैराठी ने विद्यालय में छः कमरों का निर्माण करवाकर अपने अनन्य शैक्षिक अनुराग एवं समाज सेवा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। गुणग्राही श्री टांक साहब ने आपको विद्यालय प्रबन्ध समिति में सदस्य के रूप में आमंत्रित कर आपकी भावनाओं का सम्मान किया

संस्था के वरिष्ठ सदस्य, शिक्षा के व्यवहारिक और उपयोगी स्वरूप पर बल देने वाले बैराठी साहब अत्यन्त निष्ठावान, समय के पाबन्द तथा संयमशील और संतोषपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले सच्चे जैन श्रावक हैं। हीरक जयन्ती वर्ष में हम आपकी महानता, सरलता एवं सूझबूझ का अभिनन्दन करते हैं।

श्री छुट्टन लाल जी बैराठी

सदस्य

राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त श्री रतनचन्द जी कोठारी सस्था के वरिष्ठ सदस्यो मे से एक है। आपका भी सस्था स लगभग 35-40 वर्षो से सबध है। अनेक धार्मिक एव सामाजिक सस्थाओ मे व्यस्त रहने पर भी आप हमारी सस्था के लिए नियमित समय एव सेवाए प्रदान करते रहे है। हम आपके प्रति भी इस सुअवसर पर आभार व्यक्त करते है।
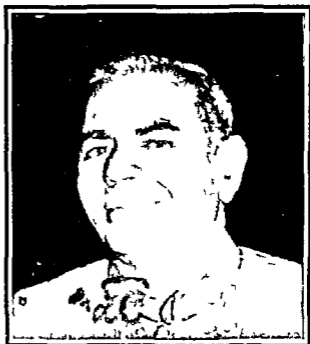
श्री रतनचन्द जी कोठारी

सदस्य

श्री मोतीलालजी भड़कत्या

राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी राजकीय नियमो एव कार्यप्रणाली के ज्ञाता तथा स्पष्टवादी व दूरदर्शी श्री मोतीलाल जी भडकत्या आज के बदलते समय एव परिस्थितियो मे सस्था के लिए अत्यन्त हितकर सिद्ध हुए है। आप आर्थिक मामलो के ज्ञाता कर्मचारियो के हितैषी अनुशासन प्रिय तथा सस्था के निरन्तर विकास मे गहरी रुचि रखने वाले निष्ठावान कार्यकर्ता तथा योग्य प्रशासक है। सस्था इस हीरक जयती वर्ष मे आपकी सेवाओ का आदर करती है तथा भविष्य मे महत्वपूर्ण सहयोग की अपेक्षा करती है।

सदस्य

श्री शिखरचन्द जी पुंगलिया उन प्रमुख जैन परिवारों में से हैं जिनका सस्था में जन्मकाल से ही सबंध रहा है। आपके पिता श्री धनराज जी पुंगलिया श्री टांक साहब के मित्रों मे व विद्यालय के जन्मदाताओं में से थे। आपकी बहिनों ने इसी विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त की और आप गत 10 वर्षो से सस्था की प्रबध समिति के सदस्य हैं।

श्री शिखरचन्द जी पुंगलिया

श्रीमती आशा गोलेछा

जयपुर नगर के प्रमुख उद्योगपति परिवार गोलेच्छा ग्रुप से संबद्ध श्रीमती आशा गोलेछा हमारी संस्था की एक मात्र महिला सदस्या हैं। आप सुशिक्षित, सुसंस्कारित सुविज्ञ समाजसेवा एव नैतिक विकास की ओर समर्पित एव रुचिशील महिला है। सभी विषयो में समान रुचि शांतिपूर्ण चिन्तन तथा गिने चुने शब्दो मे अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने में कुशल पूर्ण सजग, एवं कर्मठ हैं। आप महिला विकास एवं शिक्षा की अनेक संस्थाओ से जुड़ी हुई हैं। जैसे मत्री चाद शिल्पशाला, मत्री श्री जैन महिला उद्योग शाला, सदस्या श्री जैन श्वेताम्बर शिक्षा समिति तथा कार्यकारिणी सदस्या, विपश्यना समिति आदि। इस संस्था के प्रति आपकी रुचि एवं भावना दिनों दिन बढ़ती रहे हीरक जयंती वर्ष में इसी शुभकामना के साथ आपके स्वास्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना।

श्री मेहरचन्दजी धांधिया प्रमुख रत्न व्यवसायी हैं। इसी क्षेत्र के समाज सेवी एवं शिक्षण संस्थाओं से जुड़े व्यक्ति हैं। आप गत दस वर्षो से हमारी प्रबंध समिति के सदस्य हैं। हीरक जयंती वर्ष में आपको शुभकामनाएं, हमारी संस्था के प्रति आपकी गहन रुचि एवं गतिशीलता में वृद्धि होती रहे।

श्री मेहरचन्द जी धांधिया

विद्यालय की प्रधानाचार्या

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव

शिक्षक शैक्षिक उत्थान का स्रोत सुधार की सुरसरि और समाज की सजीवनी होता है। उक्त कथन की ज्वलत उदाहरण है हमारी प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव। आप पिछले 35 वर्षो से विद्यालय को अपनी सेवाये देती रहीं। आपकी विद्वता अगाध है और साहित्य मे असाधारण रुचि है। अध्यापन द्वारा आपने ज्ञान की रश्मिया विद्यार्थियो तक पहुचाने मे पूर्ण सफलता प्राप्त की है। सादा जीवन उच्च विचार आपके जीवन का मूलमत्र है। अहकार से कोसो दूर विनम्रता आपका आभूषण है। सहानुभूति आप मे कूट कूट कर भरी है। आपका मानना है कि शिक्षक को कभी भी अपने ज्ञान से सतुप्ट नही होना चाहिये और उसकी वृद्धि हेतु सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये क्योकि हमारा ज्ञान समुद्र मे एक बूद के समान है। हमे गर्व है कि आपके पथ प्रदर्शन मे विद्यालय उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सका तथा हीरक जयती मनान का सौभाग्य प्राप्त कर रहा है।

महाविद्यालय की प्राचार्या

महाविद्यालय की प्राचार्या डा भगवती स्वामी बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी होने के साथ कुशल प्रशासिका है। महाविद्यालय के सर्वागीण विकास मे सदैव प्रयत्नशील आपके नेतृत्व मे महाविद्यालय की शैक्षणिक एव शिक्षणोत्तर गतिविधियो मे गुणात्मक एव उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है। आपके लेखन मे गहन अध्ययन चिन्तन मनन परिलक्षित होता है। विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी आपने प्रशासन के अल्प समय मे श्रेष्ठ कार्यप्रणाली से विशिष्ट अस्मिता बनायी है। हमे पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल दिशा निर्देश मे महाविद्यालय अपनी गौरवपूर्ण परम्परा को अक्षुण्य रखेगा।

डा भगवती स्वामी

श्रद्धार्पण

अनुक्रमणिका
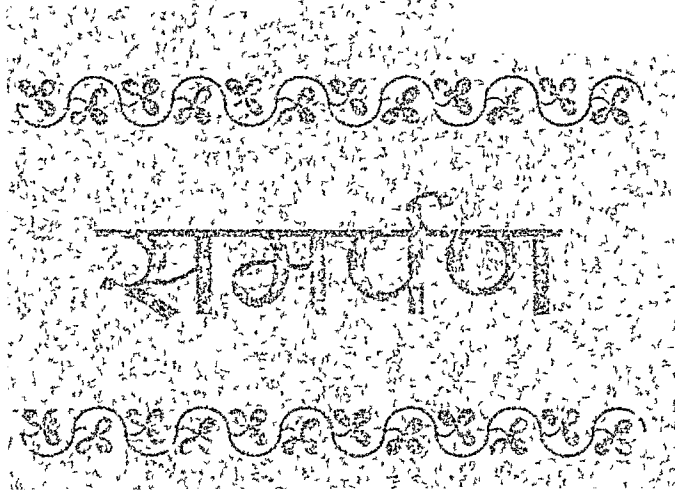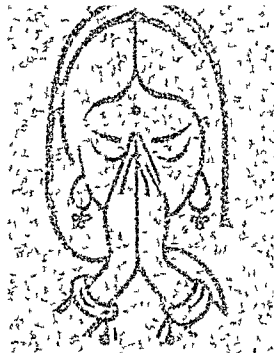
किसी भी मांगलिक या कल्याणकारी योजना की क्रियान्विति, त्याग व समर्पण के बिना संभव नहीं होती। जहाँ देश की स्वतंत्रता के लिए न जाने कितने बाल, वृद्ध और नवयुवकों ने अपना तन मन धन सुख और शान्ति समर्पित कर दी थी, वहीं शताब्दियों से पीड़ित जर्जरित समाज के उत्थान व विकास के लिए सृजनात्मक दृष्टि, त्याग व समर्पण के धनी जन नायकों की अपेक्षा होती है। चाहे धार्मिक सुधार का पक्ष हो, अन्धविश्वास व आडम्बरों से मुक्ति की समस्या हो, या ज्ञान व शिक्षा प्रचार का आंदोलन, बिना समर्पण व सहयोग के स्थायी व प्रभावशाली अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो पाता।

आज श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान का हीरक-जयन्ती समारोह आयोजित करते हुए संस्थान की संस्थापिका परम पूज्या साध्वी स्वर्णश्री जी महाराज साहब, आद्य संस्थापक एवं मंत्री श्रद्धेय स्व. श्री राजरूप जी टॉक, स्व.श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा, सभी प्रबन्ध समिति के सदस्य एवं पदाधिकारी, शिक्षिका बहिनों, समाज के सहयोगी दानदाताओं, अभिभावकों व छात्राओं के सहयोग व समर्पण के प्रतीक नमन एवं आभार व्यक्त करते हुए कतिपय महानुभावों के जीवन मूल्यों और संस्मरणों को स्मारिका में सुसज्जित कर हम कृतार्थ अनुभव कर रहे हैं ताकि यह स्मारिका केवल इतिहास बनकर ही नहीं वरन् भविष्य में प्रकाश की किरण बनकर कार्यकर्ताओं, शिक्षिकाओं व छात्राओं का मार्गदर्शन करती रहे।

● *सम्पादक मण्डल*

महान सेवा के प्रति समर्पित एक महान व्यक्तित्व
समाज रत्न श्री राजरूप टांक

हीराचन्द वैद
मत्री

श्री राजरूप टाक का नाम याद आते ही जयपुर नगर की सार्वजनिक सस्थाओ का सेवा कार्य व इतिहास नजरो के सामने क्रमबद्ध रूप से आने लगता है। जयपुर नगर मे समाज कल्याण कार्यो मे रत कौनसी सस्था रही है जिसमे श्री टाक साहब का योगदान न रहा हो। वस्तुत उनके देह विलय से अनेक सस्थाये अपने को नेतृत्व विहीन महसूस कर रही है। उनको श्रद्धाजलि समर्पित करते वक्त हमे उनके चहुँमुखी व्यक्तित्व के अन्दर झाककर देखना होगा। यो कहे कि उनका सार्वजनिक जीवन आदर्श तो था ही, मूल मे तो वह एक खुली किताब था, जिसको हर व्यक्ति हर कार्यकर्त्ता देख पढकर अपने जीवन का सही निर्माण कर सकता है। विधाता ने उनके रूप मे समाज को एक ऐसा व्यक्ति प्रदान किया था, जो जीवन मे उपयोगी हर क्षेत्र मे मार्गदर्शक बन कर आगे की पक्ति मे खडा दिखाई देता था।

वे एक गाव से शहर मे एक जौहरी के दत्तक आये थे। ग्राम से आने वाला एक व्यक्ति इतना सुसस्कृत, साहित्य प्रेमी, शिक्षा प्रेमी हो सकता है यह एक विशेषता ही मानी जानी चाहिए। आज से छ दशाब्दी से भी पहले जब वे मात्र 18 वर्ष के थे, उन्होंने महिला शिक्षा के क्षेत्र मे एक क्रातिकारी कार्य मे अपने आप को जोड दिया। उस युग मे यह कार्य केवल कठिन ही नही अपितु आश्चर्य देने वाला था। समाज मे कोई लड़कियो को पढ़ाने हेतु राजी ही नही होता था। उन्होने भविष्य को जानकर अथक प्रयास किया। घर-घर जाकर लोगो को समझाया, बालिकाओ को पढाने के लिए रोजाना मिठाई नाश्ता देने की व्यवस्था की। दो अध्यापिकाओ और आठ छात्राओ से प्रारम्भ यह महिला शिक्षा सस्था आज राजस्थान की प्रमुख सस्था है, जहा 3500 मे भी अधिक छात्राये प्रारम्भिक से स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर रही हे। यह भी एक चमत्कार ही कहा जायेगा कि स्थापना से अन्त तक 63 वर्षो तक वे इस सस्था के मत्री रहे और यह भी विधि का विधान ही माने की सस्था के स्थापना दिवस ज्ञान पचमी को उन्होंने देह छोडी। सस्था का सचालन एक बात है पर उसमे प्राण फूक देना दूसरी बात है। अपने जीवन के आदर्शो के अनुरूप सस्था को बनाने का स्वप्न उन्होने सजोया। नैतिक उत्थान के साथ ही आध्यात्मिक भावना छात्राओ मे जागृत होवे, यही लक्ष्य उनका रहा। उन्होने अपने 63वे वर्ष के अभिनन्दन समारोह मे शिष्य परिवार द्वारा समर्पित 63 हजार की राशि अपनी इस प्रिय सस्था को तुरन्त

ही दे दी और यही उद्गार प्रकट किये कि यह भाईयों की राशि बहिनों के लिए काम आवे, उससे ज्यादा इसका उपयोग क्या हो सकता है ? ऐसे पिता वीर बालिका विद्यालय को मिले, यह इस संस्था का कितना बड़ा सौभाग्य था। यह राशि जिस भावना से चाचा साहब ने अपनी पुत्री संस्था को भेंट कर दी वह फलवती होनी ही थी। संस्था न केवल आर्थिक संकट से उबरी बल्कि विकास का ऐसा मार्ग खुला कि विद्यालय महाविद्यालय बन गया।

पुत्रियों को संस्कारी बनाने का तो हर पितां का कर्त्तव्य बनता ही है पर पुत्रों को भी अपने जीवन निर्वाह के योग्य आदर्श व्यापारी बनाना आवश्यक है ही। इस क्षेत्र में भी वे आज के युवक जौहरियों के वास्तविक और सही पिता बने। आज जवाहरात व्यवसाय में लगे हजारों व्यक्ति उनके शिष्य हैं, उनसे शिक्षा ली है। हर प्रांत, हर जाति, हर धर्म, हर योग्यता का जौहरी उनका शिष्य बनने का गौरव प्राप्त कर सका। उनके यहां जवाहरात शिक्षण को चलाने वाली यह पाठशाला पुरातन इतिहास के गुरुकुल जीवन की झांकी प्रस्तुत करती थी। बाहर से आने वाले छात्र को न केवल शिक्षा ही उनसे मिली वरन् आवास, भोजन की व्यवस्था, उनके घर पर निःशुल्क प्राप्त हुई। न कोई भेंट, न कोई शुल्क। क्या मिल सकता है ऐसा उदाहरण इस युग में ? न केवल अर्थोपार्जन या जीवन-निर्वाह के लिए उनका ध्येय था अपितु उनका लक्ष्य हमेशा यह रहा कि मेरे पास काम सीखने वाला व्यवसाय में निष्णात हो, चारित्रवान हो, व्यवसाय के नियमों का पूर्ण पालन करने वाला हो, उसकी बाजार में साख हो, जवाहरात व्यवसाय के हर अंग का ज्ञान उसे प्राप्त हो और उन्हें बहुत संतोष होता था जब वे अपने किसी शिष्य की योग्यता व निपुणता के लिए कुछ भी सुनते थे।

उन्होंने इस व्यवसाय को न केवल व्यापार अपितु सेवा के लिए भी उपयोग किया। अनेक औषधियां इन रत्नों से उन्होंने निर्माण कराई जिससे कई असाध्य रोगियों पर उपयोग कर उन्हें आरोग्य लाभ प्राप्त कराया।

वे ज्वैलर्स एसोसियेशन के शीर्ष नेता रहे। इस व्यवसाय में रत लोगों के हित के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे।

इस व्यवसाय के लिए उनकी सबसे बडी सेवा रत्न व्यवसाय पर लिखी उनकी पुस्तक है। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में यह प्रकाशित हुई। एक हिन्दी भाषी जौहरी व्यापारी द्वारा लिखित पुस्तक अमेरिका में पाठ्य पुस्तक के रूप में मान्यता प्राप्त करे यह कितने बडे गौरव की बात है।

आज हमारे विद्यार्थी उनके लिए नतमस्तक हैं, समर्पित हैं। उन्होंने न केवल अपने जीविकोपार्जन में ही अपने को लगाया है। अपितु सार्वजनिक क्षेत्र की अनेक संस्थाओं में अपने को जोडा है और अनेक संस्थाओं में सेवारत रहे हैं।

वे केवल व्यापारी व शिक्षा प्रेमी ही नहीं थे, राजनैतिक क्षेत्र में भी सदैव अग्रिम पंक्ति में रहे। वे गांधीवादी थे, जीवनभर खादी का प्रयोग किया। जयपुर राज्य के युग में वे प्रजामण्डल के संस्थापक सदस्य तो थे ही वर्षो तक कोषाध्यक्ष रहे। कोई भी सभा, सम्मेलन, अधिवेशन हो, सदैव भोजन व्यवस्था उनके जिम्मे रही। यह सब काम इतनी मितव्ययता से किया कि सब सुन्दर व्यवस्था वह भी इतनी सस्ती जानकर आश्चर्य करते थे। सन् 1948 में आजादी के बाद जयपुर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन की भोजन व्यवस्था आज भी सब याद करते हैं। वे जयपुर राज्य

की असेम्बली एव नगरपालिका के भी निर्वाचित सदस्य रहे। उन्होंने राजनैतिक कार्यकर्ताओ को सदैव सरक्षण व सहायता प्रदान की।

समाज कल्याण कार्यों मे उनका अभूतपूर्व योगदान रहा। भगवान महावीर के 2500वे निर्वाण वर्ष के आयोजनो मे वे प्रमुख सहयोगी रहे। उसी अवसर पर उन्ही के निवास पर विकलागो के कल्याण हेतु श्री भगवान महावीर विकलाग सहायता समिति के गठन का निश्चय हुआ था। वे इस समिति के अध्यक्ष भी रहे। नेत्रहीनो के कल्याण के लिए भी वे सदा जागरूक रहे। उन्होंने न केवल राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ की स्थापना की बल्कि जीवन के अन्तिम काल तक उसके अध्यक्ष भी रहे। आज इस सस्था का अपना भवन उनका एक स्मारक बन गया है। उन्हीं का साहस था कि बगैर किसी आर्थिक ससाधन के एक बडा भवन उन्होंने नेत्रहीनो के लिए क्रय कर दिया। मृत्युपरान्त अपने नेत्र भी उन्होंने दान कर दिये थे। गौ सेवा, हरिजनोद्धार के लिये भी उन्होंने खूब कार्य किया। अनाथाश्रम के वे सस्थापक थे। जयपुर शहर की शायद ही कोई सस्था हो जिसमे श्री राजरूपजी टाक की सेवाये न लिखी गई हो।

अब कुछ उनके निजी जीवन पर भी दृष्टि डाले। वे एक धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति थे। नित्य पूजन-सामायिक प्रतिक्रमण उनके कार्यक्रम मे सम्मिलित थे। स्वाध्याय भी निरन्तर चालू रहता था। साधु साध्वियो के व्याख्यान श्रवण मे भी उनकी उपस्थिति सदैव देखी जा सकती थी। साधु साध्वियो की सेवा (वैयावच्च) के लिए समाज मे उनकी प्रसिद्धि थी। रोग ग्रस्त साधु-साध्वियो की सेवा के लिए उनका घर हमेशा खुला हुआ था। धार्मिक साहित्य का अच्छा सग्रह उनके पास सुरक्षित था।

श्री राजरूपजी टाक को सब काई आदर और प्रेम से चाचा साहब के नाम से सबोधित करते थे। वास्तव मे वे सबके चाचा थे। उन्होंने जितने कार्यकर्ता आज समाज को दिये है, वे ही उनकी गरिमा जानने के लिए सक्षम है।

श्री चाचा साहब के चले जाने से ऐसा मालूम हो रहा है जैसे एक मसीहा नहीं रहा, एक पिता नहीं रहा, एक नेता नहीं रहा, एक कार्यकर्ता नहीं रहा, सबको साथ लेकर चलने वाला व्यक्तित्व नही रहा। वे नहीं रहे पर इतने स्मारक पीछे छोड गये है कि जो युग-युग तक उनको अमर बनाने मे सहायक रहेंगे।

हम सब उनके बताये मार्गो पर चल सके यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। उन्होंने एक आदर्श हमे दिया है काश! हम उसे समझ सके -

"It is nice to be Important, but it is much important to be Nice"

❑

क्षमा

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है,
क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है।
क्षमा भावना से ही सम्पूर्ण जगत का मगल है।

तुम मुझमें लय फिर परिचय क्या ?

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
प्रधानाचार्या

किसी भी महान व्यक्ति के जीवन की अन्यान्य विशेषताओं को जानने मे जहॉ एक ओर उनका सामीप्य प्राप्त न करने की असमर्थता होती है, वहॉ कभी-कभी उनके जीवन की रहस्यमय तथा महत्वपूर्ण घटनाओं से हम इसलिए भी अनभिज्ञ रह जाते हैं कि वे हमारे अतिनिकट तथा आत्मीय होते हैं और हम उनके वर्तमान के सम्पर्क से ही इतने अधिक प्रभावित रहते हैं कि उनके अतीत को जानने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना चाहते।

यही अनुभव हमें आज अपने सम्बन्ध में हो रहा है। लगभग 12 वर्षों तक उनके नेतृत्व में कार्य करने पर भी हम लोगों ने कभी उनके विगत जीवन के इतिहास को जानने की उत्सुकता प्रकट नहीं की। अधिकांश अवसरों पर उन्हें अपना प्रधान सहयोगी तथा अधिकारी मानकर ही कार्य करती रहीं, किन्तु अकस्मात् उनके निधन से अन्तर्मन व्याकुल एवं आन्दोलित हो उठा, चित्तवृत्तियां सिमट कर उनके आचरण, व्यवहार, कठोर कार्यक्षमता एवं जीवन की विगत स्मृतियों का विश्लेषण करने में संलग्न हो गई और मैं विभिन्न स्रोतों द्वारा उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने में जुट गई। इस प्रयत्न मे कुछ ऐसे अद्भुत, अपूर्व तथा अद्वितीय तथ्य प्रकाश में आये, जिनसे पाठकों को परिचित कराये बिना श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा की स्मृति अपूर्ण ही रहेगी।

श्रीमती सिन्हा का जीवन बहुचर्चित एवं बहुविज्ञापित होते हुए भी अपने आप में कुछ ऐसे ज्योति पुंजों एवं अनन्त प्रेरणा स्रोतों से परिपूर्ण है जो जनसाधारण के लिए केवल कल्पना की वस्तु हो सकती है। आपका जीवन बीहड, कटु एवं मार्मिक स्मृतियों को संजोये हुए दीपक की भांति है, जो प्रबल झंझावातों का सामना करते हुए भी दूसरों को प्रकाश देने की क्षमता रखता है।

उनके आदर्श चरित्र, कर्मठता, त्याग, सहनशीलता एवं धैर्य का चित्र हम भावी पीढी के समक्ष उपस्थित कर उसे प्रेरणा देने का प्रयत्न करना चाहते हैं। सम्भवतः इन संस्मरणों द्वारा ही वह प्रकाश स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण प्रणाली से नई पीढी के सामने आ सके। इसीलिए उनके जीवन के प्रेरणादायक अंश यहां उपस्थित कर रहे हैं .-

निर्भीकता :-

देश व्यापी स्वतंत्रता आंदोलन में आप ब्रिटिश साम्राज्य के दमन-चक्र की परवाह न करके अल्पायु में ही स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने लगीं, 3 बार जेल गई, वहां भीषण यातनायें सहीं जिनमें चक्की पीसना तथा कालकोठरी की यातनायें भी सम्मिलित हैं।

एक बार की घटना है कि उस समय आप अजमेर में थीं, मथुरा में दमन चक्र तीव्र होने पर आपको ब्रिटिश सरकार का घोर विरोधी समझ कर बार-बार पुलिस अधिकारी पकड लेते थे। इसलिए कुछ कार्यकर्त्ताओं ने आपको अजमेर भेज दिया था। आपके धुआंधार तथा ओजस्वी भाषण के कारण अजमेर में भी वारंट जारी कर दिया गया। इस सूचना से सहयोगी सतर्क हो गये और आपको घुमाने के बहाने घर से आना सागर ले गये। वहां भी

पुलिस ने घेराबन्दी कर ली। उधर पुलिस तथा जनता की घेराबन्दी से कुछ तनाव का वातावरण बनता देख आप स्वय पुलिस अधीक्षक के पास जाकर बोली- "लीजिये, मै तैयार हूँ।" किन्तु पीछे अपार जन-समूह देखकर पुलिस अधिकारी उन्हे गिरफ्तार करने को परेशान थे और भीड के बीच मे जाकर उन्हे गिरफ्तार करते हुए डरते थे। वे स्वय जनता की घेराबन्दी तोड कर पुलिस के सामने जाकर बोली- "सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब, आपकी पुलिस बडी भीरू है, गिरफ्तार क्यो नहीं करते।" जनता की उत्तेजना के कारण उस समय तो पुलिस वापस चली गई, फिर मौका पाकर गिरफ्तार किया।

चारित्रिक दृढ़ता तथा शालीनता -

आपका व्यक्तित्व ही ऐसा प्रभावशाली था कि दर्शन मात्र से चारित्रिक दृढता झलकती थी, इसका मुख्य प्रमाण है कि वर्धा मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी द्वारा स्थापित कस्तूरबा पाठशाला मे आपने 16 वर्ष की किशोर अवस्था मे ही प्रधान अध्यापिका के पद पर सफलतापूर्वक कई वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात जयपुर मे अग्रवाल कन्या पाठशाला मे कई वर्ष प्रधानाध्यापिका के पद पर रह कर अच्छी ख्याति प्राप्त की और जैन समाज तो आपके प्रति सदा ही ऋणी रहेगा कि किस प्रकार उन्होने इस समाज की परम्परागत रुढ़ियो को तोड कर अपनी चारित्रिक दृढ़ता का परिचय दिया।

महिला जागृति की प्रतीक -

वीर बालिका विद्यालय की प्रगति के पथ पर बढ़ते चरण जो आपके नेतृत्व के कारण ही आज राजस्थान मे एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये है, इस उक्ति का ज्वलन्त उदाहरण है कि आप महिला जागृति की प्रतीक थीं। समाज की कई ऐसी पतिविहीन अल्पायु महिलाओ को अध्ययन की प्रेरणा देकर उन्हे जीवन का मार्ग दिखाया, आज वे स्वावलम्बी बन कर जीवन-यापन कर रही है, कई साध्वियो ने भी इस विद्यालय मे अध्ययन किया। प्रौढ शिक्षा का भी आपने समर्थन किया, यहाँ तक कि जेल मे अपराधी महिलाओ को भी आप पढ़ाने जाया करतीं थीं।

उदारता की अग्रदूत -

वातावरण के अनुकूल अपनी कार्य प्रणाली को ढालना मानव का एक विशेष लक्षण है, यह गुण बिरले महापुरुषो मे ही होता है और वही मानव सफलता के पथ पर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य को पहुँचता है जो योजना बनाकर उसी के अनुसार कार्य करता है। उन्हीं बिरले महानुभावो मे श्रीमती सिन्हा थीं। उनका जीवन भी योजनाबद्ध था, वीर बालिका विद्यालय आपकी योजना का प्रतीक है। समय-समय पर विद्यालय की आर्थिक सकटकालीन परिस्थिति को किस प्रकार सुधारा, यह हम जानते है। राजनैतिक, सामाजिक तथा शिक्षण क्षेत्र मे बढते चरण तथा विजयी नेता के रूप मे पाकर हम स्पष्ट रूप से कह सकते है कि आप उदारता की अग्रदूत थी।

निस्पृहता, उदारता तथा सरक्षण की भावना -

आप महान त्यागी महिला थी, केन्द्रीकरण तथा सचय की भावना तो आप मे छू तक नहीं गई थी। आपका कहना था- "वस्तु या धन का केन्द्रीकरण हो जाने से ही सामाजिक विषमता बढती है।" यह बात उनके निकटतम रहने से हमे अच्छी तरह से ज्ञात हुई कि आप अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुये खरीदतीं थी, यदि आप चाहती तो स्वतत्रता सग्राम की दुहाई देकर उच्च पद प्राप्त कर सकती थीं किन्तु आपने कभी भी धन तथा उच्च पद की लालसा नहीं की। जो भी व्यक्ति आपके पास जिस उद्देश्य को लेकर आया, एक न्यायी शासक की भाति उदारतापूर्वक उसका उपकार किया। विपत्ति तथा आडे समय मे यथा सभव उसकी रक्षा करती थीं। जो जिस आशय से आता उसके उद्देश्य की पूर्ति आप बडे उदार हृदय तथा निस्पृहतापूर्वक करती थी। मीठी वाणी द्वारा सान्त्वना तथा उत्साहवर्द्धक उनके वचन आज भी कानो मे गूज रहे है।

□

समर्पित जीवन के धनी श्री महावीर प्रसाद श्रीमाल

✍ श्रीमती शशिबाला शर्मा

व्याख्याता

शत-शत जन्म समर्पित जीवन

दिव्य विभूषित पौरुष गान,
किया समर्पित जीवन अपना.
पर सेवा उपकार में,
सत्यशील थे उनके आभूषण,
मानव प्रेम का अद्भुत संगम शत-शत जन्म......

'विमल' जी की बगिया में,
महका यह सुवासित पुष्प,
समय चक्र की निष्ठुर धारा ने,
छीन लिया उनको हमसे। शत-शत जन्म......

सहज सरल जीवन शैली में
संकल्पों को परिधान दिया,
निष्ठा लगन सौम्यता ने
जीवन मार्ग सुगम किया। शत-शत जन्म......

श्रद्धेय राजरूप जी के शिष्यों ने,
सीखा उनसे रत्न ज्ञान,
जीवन कुन्दन बनकर चमका,
रत्न जगत के क्षेत्र में। शत-शत जन्म......

इच्छा अभी शेष थी उनकी,
मां सरस्वती की सेवा की,
भामाशाह बनकर निभाया,
कोषाध्यक्ष की गरिमा को। शत-शत जन्म......

❑

मेरे पिता – जैसा मैने उन्हें जाना.

श्रीमती उपा वापना
जिला शिक्षा अधिकारी (छात्रा सस्थाए)

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान द्वारा सचालित शिक्षण सम्थाओ की हीरक जयन्ती समारोह के उपलक्ष पर प्रकाशित स्मारिका मे पिताजी के सवध मे कुछ सामग्री प्रकाशन हेतु भिजवाने के लिए बहिन उर्मिलाजी का सदेश प्राप्त हुआ, और जव कुछ लिखने बैठी तो वावूजी के वारे मे क्या लिखू व कहा से लिखू यही सोच विचार चलता रहा। आदर्श पिता, आदर्श शिक्षक, आदर्श प्रशासक, आदर्श नागरिक, आदर्श समाज सुधारक न जाने कितनी छवि उनकी मेरे मस्तिष्क मे अकित है, उनमे से कौनसी छवि शब्दो मे उतारु।

मेरा शिक्षा जगत से जुडना व आज की स्थिति तक पहुचने का श्रेय वावूजी को ही हे। आज भी शिक्षा जगत मे शिक्षा के उच्च स्तर, सुदृढ नेतृत्व व कुशल प्रशासन की चर्चा होती है तव हमेशा पिताजी को स्मरण किया जाता है। वच्चो से विशेष लगाव के कारण प्रधानाचार्य से ऊपर की पदोन्नतिया उन्होंने स्वीकार नहीं की। शिक्षा विभाग के उच्च पदासीन प्रशासक उस समय उन्हे अनेक मुद्दो पर राय लेने हेतु विशेप रूप से आमन्त्रित करते रहते थे, यहा तक कि तत्कालीन शिक्षामत्री विधानसभा से सीधे उनके विद्यालय (राज सी से विद्यालय, माणक चौक, जयपुर) मे आ जाते थे तथा वे निर्भय होकर अपनी स्पष्ट राय देते थे, जिसका सम्मान सभी लोग करते थे।

घर मे लडके व लडकी मे उन्होंने कोई भेद नहीं रखा। भाईयो की तरह ही बहिनो को भी उन्होंने पढाया। पढने के साथ वे ये भी चाहते थे कि उस पढाई का उपयोग समाज के लिए अवश्य होना चाहिए। यहा तक कि मेरी बीच वाली बहिन को उन्होंने स्वर्गवास से कुछ वर्ष पूर्व ही स्वय ने नोटस तैयार करवी एड करवाया। शारीरिक रूप से स्वस्थ न होते हुये भी वे इस दौरान उसके पास माताजी को लेकर पोरवन्दर गये।

जहा तक मेरी स्मृति जाती है वहा वाबूजी का एक चित्र वार-वार उभरता है, पलग अथवा सोफे पर बैठकर हमेशा लेखन कार्य करते रहना। वे उस कार्य मे इतने तल्लीन हो जाते थे कि समय का कोई ध्यान नही रहता था, यहा तक कि खाने पीने का ध्यान नहीं आता था। कई बार रात-रात भर काम करते रहते थे। वे अपने जीवनकाल मे राजकीय सेवापूर्ण करने के पश्चात् भी लगभग 20 वर्ष तक विभिन्न सामाजिक एव शिक्षण सस्थाओ से जुडकर निष्ठापूर्वक कार्य करते रहे। कार्य ही उनकी पूजा थी वे किसी मदिर या साधुसतो के पास नियमित नहीं

जाते थे। जिस भी कार्य को करना उन्होंने स्वीकार किया, उसे अपना समझकर पूर्ण निष्ठा के साथ ही करते थे। किन्तु बेवजह की दखल उन्हें असहनीय थी और ऐसा होने पर तुरन्त उस कार्य से अपने आपको अलग कर लेते थे।

हाथ से कार्य करने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। वे जहाँ भी रहे वहाँ उनकी कार्य क्षमता की अमिट छाप आज भी दिखाई देती है। घर में बगीचे की सफाई हो या कोई अपना कार्य हो वे स्वयं ही करते थे। मृत्यु पर्यन्त वे अपने कपड़े स्वयं ही धोते रहे। माता व हम लोग कभी धो देते तो वे बहुत नाराज होते थे, यहां तक कि 14 दिसम्बर, 1992 को भी दोपहर में बगीचे की सफाई करने के पश्चात् नहाकर कपड़े सुखाते ही उन्हें ब्रेन हेमरेज हुआ और वे बेहोश हो गए व फिर कभी होश में नहीं आए। अन्त समय तक भी वे अपना कार्य स्वयं ही करते रहे।

बाउजी बताते थे कि वे ग्यारह भाई बहिनों में से एक मात्र जीवित सन्तान होने के कारण माता-पिता ने उन्हें बहुत लाड-प्यार से पाला था। घर पर उनसे कोई कार्य दादाजी नहीं करवाते थे, किन्तु गांधीजी के साथ सेवाग्राम आश्रम में बिताया गया समय उनके जीवन में श्रम की महत्ता की अमिट छाप छोड़ गया।

बाबूजी बाह्य आडम्बर व रुढ़िवादिता से कोसों दूर रहते थे। प्रारम्भ से ही सामाजिक रुढ़ियों के प्रति वे संघर्षरत रहे। सामाजिक अवसरों विशेषकर विवाह, सगाई, मृत्यु आदि अवसरों पर वे कोई ऐसे रीतिरिवाज नहीं होने देते थे, जिन्हें समाज में सामाजिक कुरीतियों व ढकोसलों के रूप में मान्यता दी जाती रही है। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी वसीयत में भी स्पष्ट उल्लेख किया कि मेरे मरने के बाद भी कोई आडम्बर नहीं किया जाये। ब्राह्मणों को भोजन करवाना, पुष्कर में अस्थि प्रवाह, यहां तक कि रोना-धोना भी नहीं होना चाहिए। बल्कि यह इच्छा उन्होंने अवश्य जाहिर की कि यदि परिवार वाले चाहें तो मेरी स्मृति को बनाये रखने के लिए जिन संस्थाओं से मेरा विशेष जुडाव रहा है वहां कोई अच्छा कार्य किया जा सकता है, जिसे समाज याद रख सके। चूंकि वीर बालिका शिक्षण संस्था लंबे समय तक उनका कार्यक्षेत्र रही थी अतः हम सभी ने यही निर्णय लिया कि प्रतिभाशाली बालिकाओं को सम्मानित कर उनकी स्मृति को चिरस्थाई रख उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सकती है। उसी क्रम में प्रति वर्ष प्रथम आई छात्रा को स्वर्ण पदक दिया जाता है।

हम सबके आदर्श हमारे पिता आज हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी स्मृति उनके बताए मार्ग पर चलने के लिये हमें प्रेरित करती रहती है।

पुस्तक

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।

- महात्मा गांधी

रत्न-जगत का ज्वाजल्यमान रत्न चा.सा. श्री राजरूप टांक

✍ ज्ञानचन्द खिन्दूका

जिसने भी जन्म लिया है उसका मरण अवश्यम्भावी है। कुछ व्यक्ति ऐसे विलक्षण प्रतिभाशाली होते है जिनके पार्थिव शरीर के जाने के बाद भी उनके कर्त्तव्य ओर यश की गरिमा उन्हे दीर्घकाल तक जीवित एव उनकी स्मृति को अक्षुण्य बनाए रखती है।

स्वर्गीय श्री राजरूप जी टाक ऐसे ही यशस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। राजस्थान के छोटे से गाव चिडावा मे श्री माणकचन्दजी श्रीमाल के घर जन्मे श्री राजरूप जी की स्कूली शिक्षा सिर्फ आठवी श्रेणी तक ही रही। वहा से ये जयपुर मे श्री छगनलालजी टाक के यहा गोद आये तथा जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी श्री रतनलालजी फोफलिया जैसे अनुभवी एव रत्नपारखी गुरु से रत्न व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

यह श्री टाक की मेहनत व निरन्तर अभ्यास का ही परिणाम था कि अपने गुरु से प्रदत्त ज्ञान को बढाते रहे और रत्न व्यवसाय व रत्न परीक्षा के नये क्षितिज खोलते रहे।

यद्यपि मुझे उनका विधिवत शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ तदपि उनका वात्सल्य और स्नेह मेरे केशोर्य से ही मुझे मिलता रहा। तब वे हमारे पिता श्री एव ख्यातिनामा जौहरी स्वर्गीय श्री मगनमलजी साहब पटोलिया व अन्य जौहरियो के साथ बैठकर पन्ने की खरड बनाया करते थे।

उन्होंने रत्न-व्यवसाय व रत्न-परीक्षा के पारम्परिक तरीके से प्राप्त ज्ञान तक ही अपने को सीमित नहीं रखा अपितु प्राचीन ग्रथो एव अर्वाचीन पाश्चात्य प्रणाली मे से वे निरन्तर खोज करते रहे और अपने अनुभव को नये आयाम देते रहे। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने अपने जीवन काल मे रत्नो का अभूतपूर्व सग्रहालय निर्मित किया जो सुगमता से अन्यत्र उपलब्ध नही हे।

उनका जीवन दर्शन एक निश्छल प्रवाहमान धारा के अनुरूप था, जिसके तट पर जो भी आया उसे अपनी प्यास बुझाने का समान अवसर मिला और वह अपनी क्षमता के अनुसार अपने पात्र को भरकर ले गया। यही कारण था कि उन्होंने बिना किसी जाति व सप्रदाय की बाधा के युवको को रत्न उद्योग मे प्रशिक्षण दिया। उनके शिष्यो की सख्या लगभग एक हजार होगी। जयपुर रत्न उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। दुनिया के रत्न व्यवसाय के मानचित्र पर जयपुर को जो गौरवपूर्ण अग्रण्य स्थान प्राप्त हे उसमे श्री टाक सा तथा इनके शिष्यो का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि उनके अधिकाश शिष्य आज इस व्यवसाय मे शीर्ष स्थानो पर बैठे है।

रत्नपारखी श्री टाक मे व्यवसायिक निपुणता एव मानवीय गुणो का अद्‌भुत सामन्जस्य था। व्यपार हो

अथवा समाज सेवा वे दोनों में प्रभावी रहे हैं। उनकी दानशीलता एवं कर्त्तव्य पराणयता का लाभ व्यापारिक संस्थाओं, शिक्षालयों एवं चिकित्सा के क्षेत्रों को समान रूप से मिलता रहा है। अनाथालय हो अथवा नेत्रहीनों का स्कूल, जरूरतमन्द की मदद के लिए उनके दरवाजे सदैव खुले रहते थे। इसी से प्रभावित होकर उन्हें 'समाज रत्न' तथा 'समाज भूषण' आदि उपाधियों से सम्मानित किया गया। उनके शिष्यों ने उन्हें 63,000/- रु. की थैली भेंट की थी जिसे उन्होंने सहर्ष महिला शिक्षा के लिए अर्पित कर दिया। आखिरी दान के रूप में वे अपने नेत्र दान कर गये जिससे किसी नेत्रहीन को लाभ मिल सके।

यद्यपि स्वतंत्रता सग्राम में जेल जाने वाले स्वतंत्रता सैनिकों की सूची में उनका नाम नहीं था, फिर भी राजनैतिक क्षेत्र में वे काफी समय तक सक्रिय भाग लेते रहे। वे जयपुर राज्य प्रजामण्डल से सम्बन्धित रहे और उन्हें सेठ जमनालाल बजाज जैसे देश भक्त का सान्निध्य प्राप्त होने का सौभाग्य मिला। वे जयपुर की प्रथम लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य निर्वाचित हुए। जयपुर नगर परिषद के सदस्य के रूप में भी वे जयपुर के नागरिकों की सेवा करते रहे। राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, व्यापार उद्योग मण्डल, जयपुर चेम्बर, ज्वैलर्स एसोसिएशन, गौ सेवा संघ आदि व्यापारिक संस्थाओं के अध्यक्ष व अनेक उच्च पदों पर वे आसीन रहे।

बोलचाल में मृदुल और अत्यन्त व्यवहार कुशल, विनोद स्वभाव के श्री टांक बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे। विद्वानों और सन्तजनों के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा व प्रेम था। लगता है उनके शुभाशीर्वाद से ही टांक जिन्दगी की बुलन्दियों पर चढते गये।

उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'इण्डियन जेमोलाजी' व 'रत्नप्रकाश' का भारत में ही नहीं अपितु अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में जो सम्मान हुआ है उससे पुरातन भारतीय रत्न विशेषज्ञता की प्रतिष्ठा बढ़ी जिसके लिए श्री टांक की जितनी प्रशंसा की जावे, थोडी है।

ऐसे ख्यातिनामा, रत्नपारखी, व्यवहारकुशल, समाजसेवी के निधन से जो रिक्तता आई है उसकी पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है। मैं इनके गुणों के प्रति विनयावनत हूं।

❑

वास्तव में हमको धर्म के प्रति आस्था कम और मोह अधिक है। यही कारण है कि धर्म के मर्म को समझे बिना धर्म के नाम पर कई ऐसे कर्म करते रहते हैं, जिनका धर्म से दूर का भी नाता नहीं है।

●

ज्ञान का सार यही है कि ज्ञान के रहते उसका उपयोग करना चाहिए तथा उसके अभाव में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए।

कर्मशील व्यक्तित्व की अविराम जीवन यात्रा

✍ प्रधानाचार्य एव
विद्यालय परिवार

जन्मते है जीवन, बहुत इस ससार म,
पर याद आते है वही, जो जीते है सदा परमार्थ म

पचभूतो से निर्मित यह नश्वर ससार जीवन और मृत्यु के दो किनारो से बधा रहता है। मनुष्य एक ओर से आता है और दूसरी ओर चला जाता है। जीवन और मृत्यु के बीच दूरी ही मनुष्य की कर्मस्थली होती है। जिसे कुछ प्रतिभाशाली सस्कार शील व पुण्य कर्मो की सचित पूजी के आधार पर श्रेष्ठ एव अनुकरणीय स्वरूप प्रदान करते है। वे अपने शुभ कर्मो एव दीप्तमान गुणो से इस नश्वर जीवन को अनश्वर ज्योति प्रदान करते है। श्री महावीर प्रसाद जी श्रीमाल ऐसे ही गिने चुने व्यक्तियो मे से एक थे। आपका जीवन उस दीपक के समान ह जिसे उन्होने अपनी लगन, निष्ठा, सेवा सौम्यता एव कर्त्तव्य भावना से प्रज्ज्वलित किया था, जो असमय ही असाध्य रोग के झझावातो से शान्त हो गया, किन्तु उसका प्रकाश समाज, परिवार व सेवा के क्षेत्र म अपनी आभा विकीर्ण करता रहेगा, क्योकि किसी ने सत्य ही कहा है -

'सूरत से कीरत भली, बिना पाख उड़ जाए,
सूरत तो जाती रहे, कीरत कभी न जाए।'

स्व श्री महावीर प्रासद जी श्रीमाल का जन्म 23 मार्च 1945 को झुझुनू मे श्री विमलचन्द जी पसारी के यहा हुआ था। आप स्व श्री भूरामल जी श्रीमाल के पौत्र थे। आपने विद्यालय एव महाविद्यालय स्तर की शिक्षा जयपुर मे प्राप्त की, शिक्षा के क्षेत्र मे अद्भुत सफलता का परिचय दिया। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात आपने जवाहरात का व्यवसायिक प्रशिक्षण समाज-रत्न श्रद्धेय स्व श्री राजरूप जी टाक के सान्निध्य मे प्राप्त किया। अपने गुरु के प्रति असीम आस्था, दृढ विश्वास, कठिन परिश्रम व कुशाग्र बुद्धि के बल पर आप शीघ्र ही एक सफल व्यवसायी बन गये। आपने श्रद्धेय टाक साहब से केवल व्यवसायिक कुशलता ही अजित नहीं की वरन् समाज सेवा दीन दुनियो के प्रति करुणा तथा शैक्षिक अनुराग और परोपकार की भावना भी ग्रहण की। आपकी धार्मिक आस्था व विश्वास परिवार की देन कही जा सकती है। आपके माता-पिता श्री विमलचन्द पसारी एव श्रीमती पेपबाई अत्यन्त धार्मिक, सौम्य एव सयम का जीवन अपनाने वाले व्यक्ति है, इन्हीं पारिवारिक गुणो की छाप आपके स्वभाव पर व्यवहार मे देखी जा सकती थी। आप अत्यन्त विनम्र, सहनशील, अनुशासनप्रिय, उदार एव दूरदर्शी थे। व्यवहार कुशलता भी आपकी प्रमुख विशेषता थी। स्मरण शक्ति तो कार्यकर्ताओ को आश्चर्य मे डालने वाली थी।

आपका विवाह 22 वर्ष की आयु में 30 जनवरी 1967 को पवनकुमारी सुपुत्री स्व.श्री आनन्दमल जी सकलेचा अजमेर निवासी के साथ सम्पन्न हुआ था। आप अपने परिवार में ज्येष्ठ पुत्र थे। अपनी तीन छोटी बहिनों तथा दोनों भाईयों को सदा पितृवत मार्गदर्शन, सहज स्नेह व आत्मीय भाव प्रदान करते थे। आपने अपने मधुर व्यवहार व सरल स्वभाव के कारण पूरे परिवार को एकता के सूत्र में बांधे रखा। आपका परिवार अत्यन्त सौम्य, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल एवं धार्मिक संस्कारों से ओत प्रोत है।

आपने अपने जीवन रूपी माला के मोतियों को बड़ी चतुरता व कुशलता के साथ पिरोया था। एक ओर व्यवसायिक कुशलता तो दूसरी और पारिवारिक, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में उसका सदुपयोग, न किसी क्षेत्र में कोई कमी और न कहीं अधिकता। कार्य चाहे वैयक्तिक हो या सामाजिक सब में एक ही तत्परता, एक ही चिन्ता और सब की सफलता की कामना। जीवन के विविध पक्षों में ऐसा सांमजस्य और समता विरले व्यक्ति ही स्थापित कर पाते हैं। अनेक सामाजिक , धार्मिक एवं शिक्षण संस्थाओं से आप सम्बद्ध रहे जिनमें प्रमुख हैं-श्वेताम्बर जैन श्री माल सभा, दी ज्वैलर्स एसोसिएशन, श्री स्वर्ण सेवा संस्था, श्री वीर बालिका संचालक मंडल, श्री वीर बालिका विद्यालय एवं महाविद्यालय आदि। आप इन संस्थाओं के कोषाध्यक्ष के पद पर कार्य करते रहे तथा इनके सर्वांगीण विकास में सराहनीय योगदान दिया। विधाता जिन लोगों में कार्य करने की क्षमता एवं सूझबूझ प्रदान करता है शायद उनके जीवन को समय की सीमाओं में कैद कर देता है।

17 जनवरी सन 1994 को आपके असामयिक एवं आकस्मिक निधन से न केवल परिवार व इष्ट-मित्रों को गहरा आघात पहुँचा वरन आपसे सम्बद्ध हमारी जैसी संस्थाओं के कर्मचारियों व सदस्यों को असहनीय वेदना पहुँची तथा विकास की गति अवरुद्ध हुई। महीनों हम यह समझ नहीं पाते थे कि कि इस कार्य या समस्या समाधान के लिए किससे सम्पर्क करें। संस्था के निकट निवास तथा हर छोटे-बड़े कार्यो में आपकी व्यापक रुचि तथा दायित्व बोध विद्यालय / महाविद्यालय के संचालन में अत्यन्त सहायक था। हम आज भी आपकी तत्परता, स्मरणशक्ति व हर समस्या के प्रति पूर्ण जागरुकता एवं सजगता को भुला नहीं पाये हैं। हीरक जयन्ती समारोह की सफलतम परिणति हेतु हम दिव्य लोक से भी आपके आशीष एवं मार्ग दर्शन की कामना करते हैं।

❑

जिस गृहस्थाश्रम में आनंदपूर्ण गृह, बुद्धिमान पुत्र, प्रियवंदा स्त्री, इच्छा पूर्ति के लिए पर्याप्त धन, अपनी पत्नी की प्रीति, आज्ञाकारी सेवक, आतिथ्य-सत्कार, देव पूजन, प्रतिदिन मधुर भोजन तथा सत्पुरुषों के संग-सत्संग का सुअवसर सदा सुलभ होता है, वह धन्य है।

- चाणक्य

साहित्य धर्म एव सस्कृति की त्रिवेणी स्व डा शान्ता भानावत

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव

स्व श्रद्धेय डा नरेन्द्र भानावत के स्मृति अक के प्रकाशन का कार्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि परिवार, समाज व इष्ट मित्रा पर डा शान्ता भानावत के आकस्मिक व असामयिक निधन का वज्राघात हुआ। मन इन दोना ही विभूतियो के व्यक्तित्व एव कृतित्व की अनेकानेक स्मृतियो से झकृत हो उठा। डा भानावत के असाध्य रोग ने धीरे धीरे उनके वियोग व ससार त्याग के प्रति मन-मस्तिष्क को तैयार कर दिया था, किन्तु श्रीमती भानावत का देहावसान एक ऐसा आघात है, जिसने सभी को हतप्रभ व चेतना शून्य चना दिया। मात्र छ माह तक पति-वियोग की असाध्य वेदना को झेलकर उन्होंने अपने आपको भारतीय नारी के उज्जवल आदर्श एव सौभाग्य का अधिकारी सिद्ध कर दिया। परम विचारणीय तथ्य है कि इन छ महीना मे भी वह केवल वियोग या वेदना के सागर मे ही नही डूबी रही, वरन् दृढता एव समपण के साथ डा साहव के अधूरे कार्यो को पूर्ण करन, अपने प्रशासनिक, सामाजिक एव धार्मिक कार्यो का निर्वाह करने मे निरन्तर दत्तचित्त रहीं। उनकी कार्य क्षमता, सहन-शीलता, लगन एव निष्ठा साथ मे कार्य करने वाले हम लोगो को भी आश्चर्य मे डाल देती थी।

शान्त, सहज, सरल, स्नेही
रही ज्ञान की आराधक।
सेवा कर्मशील की दीपशिखा
सदाचरण की प्रतिपालक

श्रीमती शान्ता भानावत मे जहा एक ओर साहित्यकार की भावुकता, सवदेनशीलता एव रचनाधर्मिता विद्यमान थी, वहीं दूसरी ओर मानवीय तथा आध्यात्मिक गुणा के प्रति आकर्षण, समपण एव सदाचरण का प्रतिपालन भी था।

आप एक आदश गृहणी, समर्पित जीवन सगिनी, ममतामयी माँ, निष्ठावान शिक्षिका, भावना-शील समाज सेविका एव जागरुक महिला थीं। आप हिन्दी राजस्थानी भाषा की लेखिका, आकाशवाणी व दूर-दर्शन की वार्ताकार, महाविद्यालय की प्राचार्या एव अनेक सामाजिक, शैक्षिक एव धार्मिक सस्थाओ से जुड़ी थी। आपकी सादगी, विनम्रता, सहनशीलता एव सहयोग की भावना सबको आत्मीय भाव से अभिप्रेरित कर देती थी।

एक ओर गाव के साधारण परिवार मे जन्म लेकर अपनी कुशाग्र बुद्धि, श्रम, विनम्रता और लगन क वल पर उच्च शिक्षा प्राप्त कर अध्यापन के व्यवसाय से जुड़ी, लेकिन अध्यापन को आपने केवल व्यवसाय ही नहीं माना वरन् यह आपके जीवन का लक्ष्य वन गया था। आपने अध्यापन को समाज सेवा व समाज सुधार के कार्यो से जोड़ा, जिसका प्रमाण सस्था मे किये जाने वाले कार्य है, जिन्हे आपने नेतृत्व ही नही प्रदान किया वरन् गति भी दी। चाहे एन एस एस का कार्य हो, साक्षरता और स्वच्छता का अभियान हो, चाहे महिलाओ मे कानून के प्रति जागरूकता का प्रश्न हो या महिला व्यवसाय

की समस्या हो, आपने सदैव सभी को अपना अमूल्य सहयोग, रचनात्मक चिन्तन व कार्य करने का दिशा निर्देश प्रदान किया।

साहित्य से आपको गहरा लगाव था, साहित्य पढाने व पढने के अतिरिक्त आप मौलिक रचनाकार भी थी। राजस्थानी लोक-काव्य 'ढोला मारू' पर आपने अपना शोध प्रबन्ध लिखा था। समय समय पर हिन्दी में व राजस्थानी भाषा में आपके लेख पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे। जैसे राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, जिनवाणी एवं श्रमण आदि। आपने मानवीय मूल्यो पर आधारित लेखन को प्राथमिकता दी।

श्रीमती भानावत जैन परिवार में जन्म लेकर स्वभावत· जैन धर्म व संस्कारों से अनुप्राणित थी। आपने जैन धर्म के सिद्धांतों, नियम व संयम को धारण करने का पूर्ण प्रयास किया था। आपके सरल सात्विक विचार, नियमित दिनचर्या, सयमशील खान पान एवं धर्म गुरुओं, आचार्यो एवं साध्वी मंडल के प्रति अपार श्रद्धा इसके परिचायक थे। साथ ही आप धर्म की सहज संकीर्णता से मुक्त थी। एक सच्चे श्रद्धालु और गुण ग्राहिका के रूप में आप जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के समारोहों में तो सम्मिलित होती ही थीं, जैनेतर सम्प्रदायो यथा ब्रह्मकुमारी प्रजापति तथा सिद्धेश्वर मंदिर राजापार्क में भी आप प्राय संत समागम के लिए जाया करती थी तथा सबके प्रति समान आस्था व विश्वास प्रकट करती थी।

श्रीमती डॉ. शान्ता भानावत की मान्यता थी कि धर्म जब तक जीवन की प्रेरणा न बने, व्यक्तित्व में सादगी, सहिष्णुता, सेवा सहयोग आदि गुणों का निखार न लाये, तब तक धर्म की साधना अधूरी ही मानी जायेगी। आपने महिलाओं, बच्चों और युवकों में सच्ची धार्मिक-भावना जागृत करने का निरन्तर प्रयत्न किया। समय समय पर महिला गोष्ठियों, धार्मिक एवं सामाजिक समारोहों में उनके द्वारा दिये गये भाषण एवं लिखी गई कहानियां इसी तथ्य को उजागर करती हैं। आपकी सतत् यही प्रेरणा रही कि महिलायें शिक्षित हों, जागृत हों, और कर्मशील बनें तभी कोई समाज परिवार व देश प्रगति कर सकेगा। धर्म व धर्म गुरुओं के प्रति आस्था व धार्मिक साधना हमें इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शक्ति प्रदान करती है। मन व बुद्धि को पवित्र व उज्ज्वल स्वरूप प्रदान करती है जहां ऊंच-नीच, अपने पराये व छोटे-बड़े के सारे विकल्प स्वत. समाप्त हो जाते हैं। धर्म के इसी स्वरूप की आप साधक व प्रचारक रही।

डा. शान्ता भानावत की दृढ मान्यता थी कि महिलायें ही संस्कृति की संरक्षिका हैं। आज समाज मे उपभोक्ता वादी और प्रदर्शन की बाढ देखकर वे क्षुब्ध व चिन्तित हो जाती थीं। आज खान-पान, रहन-सहन व वेश-भूषा के तरीके ही नहीं बदले हैं वरन् व्यक्तिवादी स्वकेन्द्रित और अर्थ प्रधान संस्कृति में हमारे पारिवारिक, सामाजिक व वैयक्तिक आदर्शो को ही ध्वस्त कर दिया है। नैतिक मूल्य, सहयोग, प्रेम, करुणा व सेवा आदि धराशायी हो गये हैं। समता, त्याग, सौहार्द्र एवं आज्ञापालन आदि गुणों का नामो-निशान मिटता जा रहा है। सब तरफ केवल 'स्व' का बोल बाला है। यह स्थिति किसी भी समाज के लिए शुभ नही कही जा सकती और अधिक दिन जीवित भी नहीं रह सकती, क्योंकि हर 'स्व' कर्मा तो 'पर' बनेगा ही और तभी संघर्ष का जन्म होगा। अत श्रीमती भानावत का कहना था कि इस विस्फोटक स्थिति को रोकने का साधन महिलायें हैं, वे बच्चों में सास्कृतिक विरासत की गरिमा जागृत करें। भावी पीढ़ी में संस्कारों का वपन कर सुन्दर व स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी महती भूमिका अदा करें।

नारी के आदर्शों की प्रतिमा
साहित्य धर्म की प्राण स्वरूप
शत-शत नमन तुम्हें करते हैं
बने आपके हम अनुरूप

❑

समाज रत्न की स्मृतियां

कलानाथ शास्त्री
पूर्व निदेशक, भाषा विभाग

जयपुर नगर के साथ समाज रत्न श्री राजरूप टाक की सेवाओ का 80 वर्ष का सम्बन्ध इतना गहरा है कि सहसा यह विश्वास नहीं होता कि वे जयपुर को तथा हम सबको छोड गये है। न केवल रत्न व्यवसाय, कामगारो के प्रशिक्षण तथा उससे सम्बन्धित साहित्य-लेखन मे विचार, हिन्दी, सस्कृत, प्राकृत, धर्म, जैन विद्या आदि क्षेत्रो मे कार्यरत सस्थाओ को प्रोत्साहन देने मे, नेत्रहीनो और विकलागो की सेवा म उनकी प्रेरणा और उनकी कर्मठता इतने लम्बे समय तक इस नगर को देखने को मिली है कि उनकी स्मृतियाँ सदा अमर रहेगी।

मेरा उनसे सम्पर्क मेरे बाल्यकाल से ही रहा। मेरे पिता स्व भट्ट मथुरानाथ शास्त्री उनके मित्रो मे से थे और कहा करते थे कि राजरूप जी इस नगर के सभी पुराने परिवारो के मित्र है। शायद ही कोई ऐसा पुराना प्रतिष्ठित परिवार हो, जो इनके कार्यों के सम्पर्क मे न आया हो। बाद मे अनेक सस्थाओ के सदस्य के रूप मे जब मै कार्य करने लगा तो उन सब सस्थाओ के प्रेरक व्यक्तित्व के रूप मे इनसे सम्पर्क होता रहा। प्राकृत भारती सस्था जो अब प्राकृत भारती अकादमी हो गइ है, जब स्थापित हुई थी तो इसके गुणग्राहक सचिव श्री देवेन्द्रराज मेहता ने कृपापूर्वक मुझे भी इस सस्था मे सहयोगी बनाया। उसकी बैठके सदा टाक साहब की हवेली मे होती थीं। प्रो प्रवीणचन्द्र जैन ने उच्चस्तरीय अनुसधान सस्थान जब स्थापित किया तो उसके प्रेरको म भी टाक साहब थे और कुछ वर्षों तक मै इस सस्था का महासचिव रहा था। मुझे याद है कि प्रत्येक बैठक मे टाक सा आते थे और हमे आश्चर्य होता था कि इतने व्यस्त रहते हुए भी वे ऐसी हर बैठक मे पहुचने का समय निकाल लेते थे, चाहे थोड़े समय के लिए ही क्या न हो।

जयपुर मे जितने साहित्यिक, सामाजिक या धार्मिक बड़े समारोह होते थे उनकी स्वागत समिति मे या प्रबन्ध समिति मे टाक साहब को सम्मानित सदस्य के रूप मे या सरक्षक के रूप मे शामिल किया जाता था। श्री देवीशकर तिवाड़ी, जो स्वय यहा के नगर जीवन के एक स्तम्भ थे, राजरूप जी के अभिन्न मित्र थे। ये दोनो अधिकाश सस्थाओ और समितियो मे साथ-साथ सम्मिलित रहते थे। मुझे ऐसी सैंकड़ो बैठको की याद आ रही है जिसमे टाक साहब शामिल होते थे और प्रत्येक कार्य को प्रोत्साहन और प्रशसा देते थे। उनकी इस आत्मीयता और प्रशसा से बहुत से काम बिगडते-बिगड़ते भी बन जाते थे।

एक बार विनोद मे उन्होने कहा था कि इतनी सस्थाओ ने मुझे सरक्षक या कोषाध्यक्ष बनाया है और उन सबके काम के लिए खुले मन से अपनी ओर से जो

आर्थिक सहयोग सम्भव हुआ देता रहा हूं। और साथ ही अन्य सम्पन्न व्यक्तियों से चन्दा मांगने भी जाता रहा हूं। अब यह हालत हो गई है कि जब भी किसी से मिलने जाता हूं तो वह यही समझते हैं कि किसी सार्वजनिक कार्य के लिए चन्दा मांगने आया होगा। इस विनोद के साथ वे यह अवश्य कहते थे इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं ऐसे कार्ये के लिए जाना बन्द कर दूंगा। ये कार्य तो मैं जीवन भर करता रहूंगा पर चाहता यह हूं कि मेरे साथ आप सब लोग भी रहें ताकि मैं नि.संकोच किसी अच्छे काम की वकालत कर सकूं। उनकी यह परोपकारी वृत्ति जयपुर भर में स्मरण की जाती थी। इसका परिणाम यह तो होना निश्चित ही था कि वे अजातशत्रु रहते और यही हुआ। उनकी निन्दा करने वाला कोई नहीं मिलेगा। ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा जो किसी न किसी प्रसंग में सार्वजनिक जीवन में इनके निकट सम्पर्क में नहीं आया हो। इतने लम्बे समय तक खुले दिल से इतनी व्यापक सार्वजनिक सेवाएं करने वाले व्यक्ति बिरले ही होते हैं। उनके उठ जाने से ऐसा लगता है कि पूरा इतिहास उठ गया है। एक अध्याय ही नहीं, अनेक अध्याय ही समाप्त हो गए हैं।

वीर बालिका विद्यालय उनके द्वारा रोपा गया एक ऐसा उत्कृष्ट कल्पतरु है जो गत 75 वर्षों से निरन्तर पनप रहा है और फलफूल रहा है। इसका कार्य अब इतना बढ़ गया है कि यह महाविद्यालय भी बन गया है और अनेक शाखाओं में इसकी शैक्षणिक प्रवृत्तियां चल रही हैं। जिस लगन से इन्होंने तन-मन-धन से इसे सींचा है, वह सभी सार्वजनिक जीवन में कार्यरत व्यक्तियों के लिए अनुकरणीय है। मुझे भलीभांति याद है कि अपनी अन्तिम अवस्था में रुग्ण होते हुए भी वे किसी प्रकार इस संस्था के ही नहीं, अन्य संस्थाओं के भी, जिनसे वे जुडे थे, समारोहों में जाते थे और बडे स्नेह से सहयोग देते थे। उनकी यह छवि आज भी मेरी आंखों के सामने घूम जाती है। न जाने कितने ऐसे व्यक्ति होंगे जिनके आंखों के सामने वह छवि आज भी उसी प्रकार जीवन्त होगी। निश्चय ही राजरूप टांक अमर रहेंगे। उनकी कर्मठता और उनकी समाज सेवा अमर रहेगी। ❑

अशुभ से शुभ अधिक शक्तिशाली !

'अशुभ से शुभ की शक्ति कही अधिक है। धूमिलता से प्रकाश कही तीव्रगति से आता है। एक शीशे को ले लीजिये। इसको धूमिल होने मे काफी समय की अपेक्षा है। एक-एक करके धूल-कण उस पर जमते चले जाते हैं, तब जाकर वह काफी देर मे कहीं धूमिल हो पायेगा। परन्तु उसको स्वच्छ एव उज्ज्वल करने में अधिक समय नही लगेगा। बस, जरा दबाव से ऊपर हाथ फिराइए कि उसकी स्वच्छता उभर आती है। इसलिए शुभ्रता अधिक शक्तिशाली है, धूमिलता की अपेक्षा। मनुष्य वस्त्र का उपयोग करता है। शनैः शनैः कुछ दिनों अथवा सप्ताहो में जाकर वह मलिन हो पाता है, पर उसे स्वच्छ करने मे कितना समय लगता है? बस, आधा घन्टा लगा, धोया और साफ। आत्मा के सम्बन्ध मे भी कुछ ऐसा ही है। आत्मा भी ऐसे ही शुद्ध एव पवित्र होती है। इसलिए अशुभ से शुभ की शक्ति वडी है। मलिनता की अपेक्षा शुभ्रता शीघ्रता से आती है।'

-उपाध्याय अमरमुनि

जागरूक साहित्य साधिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा

श्रीमती कमला श्रीवास्तव

'मनुष्य की कला-कृतियों का उसी हद तक मूल्य है, जिस हद तक कि ये मनुष्य को कर्त्तव्य पालन की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करती है।'

-गांधी

हमारी पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती सिन्हा के गुणगान करना 'गागर में सागर' भरने की कहावत को चरितार्थ करती है। आप एक प्रतिभाशाली लेखिका एवं कुशल वक्ता थीं। आप की गंभीर शैली पर महादेवी की स्पष्ट छाप थी। आप विचारशील, धर्मपरायणा तथा कुशल लेखिका थीं। तत्कालीन परिस्थितियों को आप इस प्रकार साहित्य की विविध विधाओं के साँचे में ढाल लेती थीं कि प्रयत्क्ष दृष्टाओं को चकित रह जाना पड़ता था। वे उन्हें भविष्य दृष्टा समझते थे, इसी उक्ति पर मुझे अनेक स्वरचित एकांकी की बात याद आ गई।

एक बार की बात है कि बाजार के व्यापारियों ने चीनी के बढ़ते भाव देखकर गोदामों में चीनी एकत्र कर छिपा दी। चीनी के अभाव में जनता बड़ी व्याकुल हो गई। उन्होंने इसी समस्या पर एकांकी अभिनीत कराया, जिस में यह भय दिखलाया कि चीनी-संग्रह करने वाले व्यापारियों के घर तथा गोदामों पर पुलिस ने छापा मारकर चीनी बरामद की और सेठ जी को हथकड़ी डाल कर पुलिस ले गई। एक दिन रात को यह एकांकी [illegible] पर खेला गया, दूसरे दिन यह घटना सत्य रूप में शहर [illegible] में दिखलाई दी। [illegible] जिनकी लड़कियाँ इस विद्यालय में पढ़ती थीं, वे आपके पास आए और [illegible] बोलीं आपको तो सब मालूम रहता है। आपने भी उनका अभिप्राय समझते हुए [illegible] तो आपको नाटक के द्वारा सावधान कर चुके [illegible] नहीं माने तो हम क्या करें।

नगर-पालिका की अव्यवस्था तथा ऊपर से कूड़ा डालने का दृश्य भी आपने बड़े रोचक ढंग से जनता के समक्ष उपस्थित किया था। किसी भी सत्य को अपने सन्दर्भ में जोड़ देना तथा उसी के अनुरूप नाटक, कहानी, लेख लिखना आपकी मौलिक तथा स्वतंत्र मनोवृत्ति की परिचायक थी। आप राष्ट्र, समाज, धर्म तथा विद्यालय सम्बन्धी अनेकों सत्य प्रसंगों को एकत्रित कर अपने विचार नाटक, रेडियो रूपक, लेख तथा रंगमंच पर अभिनीत करवा कर व्यक्त करती थीं जिससे जनता प्रेरणा ले सके। साहित्य की विविध विधाओं में नाटक लिखने में आपकी विशेष रुचि थी। आपकी सभी कलाकृतियाँ तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण हों ऐसी बात नहीं थी, मस्तिष्क में जब भी जैसी विचारधारा उमड़ी, वे

उसे एकांकी अथवा लेख के रूप में परिवर्तित कर लेती थी। उनकी समस्त रचनाओं का केन्द्र राष्ट्र तथा समाज ही था।

आप भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग से यह अपेक्षा करती थी कि भारत एक सुदृढ़ तथा संगठित राष्ट्र बनकर विश्व के गगन मण्डल पर अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके। यहां के नागरिक चरित्रवान, कर्त्तव्यनिष्ठ, तथा परिश्रमी बनकर राष्ट्रोत्थान में अपना अपूर्व सहयोग प्रदान कर सकें। भेदभाव को भुलाकर देश की अखण्ड प्रभुसत्ता की रक्षा करें, यह उनकी हार्दिक इच्छा थी, यही उनके नाटकों का केन्द्रीय भाव है। हम उनकी रचनाओं को 3 भागों में विभाजित कर सकते हैं।

(अ) राष्ट्रीय
(ब) सामाजिक
(स) समस्यामूलक
(जो हास्यापद तथा व्यंग्यात्मक होते थे)

❑ राष्ट्रीय एकाकी निम्न हैं -

वीरांगना वीरा, सुहागरात, रानी दुर्गावती, चमकती तलवार, राजपूत की आन, जलती दीवार, धोखा, वतन मां की पुकार, आह्वान, विश्व मां, भारत के लाल, रणभेरी, बलिदान आदि।

आपकी रचनाओं में अहितकारी तत्वों का मूलोच्छेदन करना आपका मुख्य उद्देश्य था। साहित्य की साधना आपकी दैनिक दिनचर्या का मुख्य अंग था, वे जाति-पांति, छुआछूत, बाल-विवाह, स्त्रियों की दुर्दशा, पारिवारिक कलह, दहेज प्रथा, मृतक भोज आदि रुढ़िवादी प्रथाओं की प्रबल विरोधी थी। इनसे उत्पन्न संघर्ष तथा बुराइयों का स्पष्ट चित्रण आपके नाटकों व एकांकियों में उभरा है। इनमें से अधिकांश एकांकी हमारे विद्यालय की छात्राओं द्वारा जनता के समक्ष प्रस्तुत हो चुके हैं। इन्हीं समस्यामूलक एकांकियों के माध्यम से वे समाज को एक नई प्रेरणा देती थीं।

नाटकों का तीसरा रूप आपके हास्य-व्यंग्य प्रहसनों में मुखरित हुआ है। उनमें आपने तत्कालीन अथवा स्थानीय किसी भी ज्वलंत समस्या को लेकर मनोरंजक ढंग से व्यंग्यपूर्ण मार्मिक चित्रण कर समस्या का निदान प्रस्तुत किया है। उनके हास्य-व्यंग्य तथा हास्य मिश्रित कटुक्तियों को छात्राओं के माध्यम से सुनकर दर्शकगण लोटपोट हो जाया करते थे। जिनमें मुख्य है-बोलती सडक, चौराहा इत्यादि। आपके कई नाटक जो राजनैतिक, सामाजिक व समस्यामूलक हैं, अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनीत हो चुके हैं। नाटक ही नहीं साहित्यिक अनेक विधाओं पर आपका पूरा अधिकार था। आपकी प्रत्युत्पन्नति प्रशंसनीय थी। एक दीपावली पर आकाशवाणी जयपुर से 'वीर बालिका विद्यालय' की छात्राओं द्वारा 'घर-घर दीप जले' नामक शीर्षक पर ध्वनि एकांकी प्रसारित करने का निमंत्रण आपको प्राप्त हुआ। इसी समय मुझे बुला कर कथानक, कथोपकथन, पात्र आदि चुन कर ध्वनि एकांकी तैयार कर दिया, बडा आश्चर्य मुझे उस समय हुआ कि आपने 'घर-घर दीप जले' नामक गीत भी लिख दिया और छोटी दीपावली को आप द्वारा रचित यह ध्वनि एकांकी पूर्ण सफलता के साथ प्रसारित हो गया।

आपकी रचनाओं में वीर, हास्य, करुण रसों की प्रधानता है। आप द्वारा रचित एकांकी जनता के हृदय पर अपनी अमिट छाप डालते हैं। इतिहास, राजनीतिक तथा साहित्य विशेषज्ञ होने के नाते आपकी रचनाएं ऐतिहासिक तथ्य पृष्ठभूमि पर वर्तमान

स्वरूप के साथ अवतरित होती थी। काग्रेस विग्रह के समय आपने एक रूपक लिखा था, जिसमे दोनो दलो मे फूट के कारण, परिणाम तथा घटनाओ को क्रमबद्ध कर के कथानक को पारिवारिक साँचे मे ढाल कर जनता के समक्ष उपस्थित किया, सब लोगो ने अपनी-अपनी मनोवृति के अनुसार सार ग्रहण कर लिया। नाटक मे उपस्थित महिला तथा मध्यम समुदाय ने गृहकलह दूर करने की शिक्षा ली तथा राजनीतिज्ञो ने काग्रेस विग्रह का सार ग्रहण कर लिया।

इसी प्रकार अनेक तत्कालीन परिस्थितियो को ओर तीक्ष्ण दृष्टि रखते हुए आपने अनेक समसामयिक लेख तथा प्रहसन लिखे है, जिसमे हमे आपकी प्रत्युन्नमति के ज्वलन्त उदाहरण मिलते है। इसी प्रकार हाइकोर्ट जयपुर लाने के समर्थन मे वकीलो तथा विद्यार्थियो की हडताल का वर्णन, जगद्गुरु शकराचार्य पुरी पीठाधीश्वर के गोहत्या के विरोध मे 48 दिन के अनशन पर आपने समाचार पत्रो मे लेख निकलवाये। आप यद्यपि वर्तमान सत्ताधारी सरकार की प्रबल समर्थक थीं, किन्तु जब कोई बात उनकी स्वतन्त्र सम्मति के विरुद्ध होती थी, तो वे उसकी कटु आलोचना करने मे भी चूकती नही। समाचार पत्रो मे सरकार का ध्यान जनता की ओर आकर्पित करने के कॉलम मे तो माह मे प्राय 2-4 बार आपके नाम का लेख अवश्य होता था।

आपकी लेखन कला का सबसे महत्त्वपूर्ण अश आपकी जागरुक पत्रकारिता थी । राज्य, समाज, नगर अथवा विश्व के रग-मच पर घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाए हृदय और मस्तिप्क पर अपना तीखा प्रभाव छोड जाती, जिसकी प्रतिक्रिया लेख, नाटक, बधाई पत्र, विरोधपत्र तथा भापण आदि का रूप लेकर हमारे समक्ष उपस्थित होती थी और इसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हमे समय-समय पर रेडियो पर ध्वनि-नाटक, पत्र पत्रिकाओ मे लेख तथा एकाकी आदि मे स्वतत्र विचार पढने को मिलते थे।

जड और मानव प्राणी मे महान अतर है और वह यह कि जड कभी प्रगति नहीं करता, पर मानव प्राणी अपने परिश्रम, पुरुषार्थ से ज्ञानार्जन कर आगे वढ़ता जाता है एव दूसरो के लिए भी आलोक की किरणो निखेर जाता है। पर एक बात मर्वोपरि है ज्ञान का उद्देश्य एक लक्ष्य होना चाहिए, लक्ष्यहीन जीवन बिना पतवार की नाव है, जिसे यही पता नहीं कि वह किधर जा रहा है।

❑

जैन धर्म और त्याग

जैन धर्म का त्याग वासनाओ का त्याग है। जैन धर्म त्याग के लिए अग्नि म जिन्दा जल जाने को नही कहता, गगा या यमुना मे डूब मरन को नही कहता, पहाड़ की ऊची चोटियो से कूद जाने या वर्फ म गलकर मर जाने को नही कहता। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी सह लेना भी कोई त्याग नही है। वह त्याग तो अनेक अपराधी जेल-खाने के कैदी भी कर लेते है। अपने आपको कामनाओ के जाल से मुक्त कर लेना ही सच्चा त्याग है। त्यागी के लिए जीवन या मरण महत्वपूर्ण नही है, महत्वपूर्ण है कामना रहित हो जाना।

शिक्षण संस्थान को एक शिक्षाविद् की देन

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
प्रधानाचार्या

राजस्थान के शिक्षा विभाग में सन 1950 व 60 के दशकों में अपनी कर्मठता, कठोर अनुशासन तथा गहन कार्य पद्धति के लिए प्रख्यात स्व.श्री सौभाग्य मलजी श्रीश्रीमाल अनूठी प्रशासनिक क्षमता के धनी थे। एक कुशल अध्यापक, हिन्दी के विद्वान, विद्यालय व्यवस्था में निष्णात, अपनी इन्हीं विशेषताओं के लिए आप राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किये गये थे।

हमारी संस्था का सौभाग्य रहा कि लगभग 50 वर्षो तक आप संस्थान के विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए इसके नियमानुसार, सुसंचालन में अपना योगदान करते रहे। 1960 में विद्यालय को सैकण्डरी स्तर की मान्यता मिलने के साथ ही उपाध्यक्ष के रूप में पदासीन होने पर आपकी प्रथम उपलब्धि विद्यालय को बोर्ड का केन्द्र बनाना था। यद्यपि विद्यालय की स्थिति गलियों में होने से प्रारम्भ में इतना सुपरिचित नहीं था। आप तत्कालीन बोर्ड के सचिव स्व. श्री भारत भूषण जी को विद्यालय दिखाने के लिये लाये। प्रवेश द्वार पर पैर रखते ही भारत भूषण जी ने विद्यालय को परीक्षा का केन्द्र बनाने की स्वीकृति दे दी। तब से आज तक बोर्ड का 1000-1100 छात्राओं की परीक्षा कराने वाला एक सफलतम व लोकप्रिय केन्द्र है।

अध्यक्ष के रूप में संस्था के कार्यालय रिकार्ड को सुव्यवस्थित एवं विभागीय नियमानुसार संधारित करने का मार्ग दर्शन आपसे प्राप्त हुआ, जिसे कार्यालय कर्मचारियों श्री नेमीचन्द जी जैन तथा रामजीलाल शर्मा ने बड़ी कुशलता से ग्रहण किया। आज विद्यालय रिकार्ड की जो व्यवस्था है इसके लिए विभागीय अधिकारियों और निरीक्षणकर्त्ताओं से जो प्रशंसा प्राप्त होती है, उसका श्रेय आदरणीय श्रीश्रीमाल साहब को है। आप जहां कार्य क्षेत्र के पंडित थे, वहीं बात कहने की वक्र शैली भी श्रोता के मन पर सीधा प्रहार करती थी, किन्तु उसकी प्रतिक्रिया सकारात्मक चिन्तन व श्रेष्ठ कार्यशैली के रूप में प्रतिफलित होती थी। निरन्तर 20-25 वर्षो तक आपके सान्निध्य में कार्य करने के न जाने कितने खट्टे-मीठे अनुभव मन में संचित हैं, जो सदैव आपकी स्मृति को अक्षुण्य बनाये रखेंगे।

महाविद्यालय का प्रारम्भ जहां छात्राओं की मांग, अभिभावकों का आग्रह, संचालक मंडल के शैक्षिक अनुराग एवं उदारता का परिचायक है, वहीं महाविद्यालय की समुचित योजना, उसकी क्रियान्विति एवं व्यवस्था आपकी देन है। महाविद्यालय की स्थापना महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी कदम था। शहर की चार दीवारी में

शिशु से लेकर स्नातक तक की शिक्षा की व्यवस्था कर एक ओर आपने बालिकाओ की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया तथा दूसरी ओर बालिका शिक्षा के लिए समर्पित सेवाभावी निष्ठावान सचालन मडल को गौरवान्वित किया।

आप कुशल प्रशासक, योग्य शिक्षक, प्रखर वक्ता, श्रमशील एव मूल्यो पर आधारित जीवन के पोषक थे। आपके समर्पण एव सहयोग के लिए सस्थान सदैव आभारी रहेगा। हमारी सस्था मे वेतन भत्ते तो प्रारम्भ से ही राजकीय नियमानुसार दिये जाते थे। किन्तु अवकाशो के सम्बन्ध मे कृपणता बरती जाती थी, जिससे बालिकाओ का शिक्षण नियमित रहे तथा विद्यालय मे अधिक से अधिक कार्य दिवस हों। तत्कालीन शिक्षिकाये भी यह सहर्ष स्वीकार कर लगन व निष्ठा से अध्यापन कार्य करती थी। सर्वप्रथम श्रीश्रीमाल साहब ने 1973 से शिक्षिकाओ का व्यवस्थित सर्विस रिकार्ड बनवाया तथा नियमानुसार अवकाश स्वीकृत किये जाने की व्यवस्था की। इस प्रकार स्वय सेवी सस्था मे राजकीय नियमानुसार स्वच्छ व निष्पक्ष कार्यशैली प्रारम्भ करवाई, इसका तात्पर्य यह नहीं कि सस्था का वातावरण या प्रशासन मे कहीं कुछ कमिया थी। श्रद्धेय टाक साहब ने सस्था को परिवार का स्वरूप प्रदान किया था। सस्था के सभी छोटे-बडे सदस्यो से आपका परम आत्मीय भाव था। आपके सरक्षण, वात्सल्य भाव एव सहृदयता से सस्था का परिवेश अत्यन्त सहज, स्नेहिल एव पारिवारिक था। आदरणीय स्व श्रीश्रीमाल साहब की सूझबूझ तथा नियमो की परिपालन से कार्यशैली मे निखार आया। हीरक जयती वर्ष मे हम आप के सहयोग एव समर्पण को याद किये बिना नहीं रह सकते। जिन्होंने विद्यालय और महाविद्यालय को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

बूद नही सागर बनिए

जल की नन्ही बूद के लिए सब ओर सकट ही सकट है, आपत्ति ही आपत्ति है, उसे मिट्टी का कण सोखने को उभरता है, हवा का झोका उड़ाने को फिरता है सूरज की तपती किरण जलाने को उतरती है, पक्षी की प्यासी चोच पीने को अकुलाती है। कि बहुना, जिधर देखो उधर मौत बरसती है। यदि बूद को अपना अस्तित्व बचाना है, तो उसे अल्प से भूमा बनाना होगा, क्षुद्र से विराट् होना होगा, महासमुद्र बन जाना होगा। समुद्र बन जाने के बाद कोई भय नही कोई आतक नही। आधी और तूफान आए, लाखो पशु और पक्षी आएँ, जेठ का सूरज आग बरसाए और कड़कड़ाती बिजलिया मौत उगले, परन्तु समुद्र को इन सब उपद्रवो का क्या डर है ? वह भूमा बन चुका है, विराट् हो चुका है। उसके अस्तित्व को दुनिया मे कही भी खतरा नही। मनुष्य भी 'मै' और 'मेरा' म अवरुद्ध एक क्षुद्र बूद है। वह यदि अपने क्षुद्र 'मै' और 'मेरे' को 'हम' और 'हमारे' का विराट् रूप दे सके, तो वह बूद से समुद्र बन जाये, देश और काल की सीमाओ को तोड़ कर अजर, अमर हो जाये।

व्यक्तित्व शिल्पी डा. शान्ता भानावत

✍ डा. वन्दना जैन

हर व्यक्ति के जीवन निर्माण और पतन में कुछ विशेष व्यक्तियों का सहयोग होता है उनमें से एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं-'गुरु' तभी तो कहा गया है कि 'गुरु गोविन्द दोऊ खडे, काके लागूं पाय ! बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय।''

मेरे जीवन के उन पलों में जब मन चंचल और मस्तिष्क उपद्रवी होता है-यानी आज के युग की भाषा में 'टीन-एजर्स' के समय में मुझे 'शान्ता भानावत दीदी' का स्नेहिल आशीर्वाद भरा हाथ छत्र छाया सा प्रतीत हुआ। अपने गुरु को 'दीदी' शब्द से सम्बोधित करना शायद अटपटा लगे। किन्तु जब हमने महाविद्यालय में प्रवेश लिया उस समय हमें वहां का वातावरण आनन्दमय, प्रेममय और अपना सा प्रतीत हुआ। हमारी सभी शिक्षिकाओं में बडी बहन सा प्यार अपनापन नजर आया। इसी कारण हम कभी इन्हें 'मैडम' शब्द से सम्बोधित ही नहीं कर सके। आज तक मैं अपने गुरुओं को दीदी शब्द से ही सम्बोधित करती आई हूं।

नया नया कॉलेज, नया वातावरण, नए शिक्षक और नई छात्राओं का यह प्रथम बैच था जिस साल इस महाविद्यालय को विश्वविद्यालय से अनुमति मिली थी। भानावत दीदी ने परम्पराओं का निर्वाह करते हुए मुझे कॉलेज के छात्र संघ का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। विश्वविद्यालय के जब सीनेट के चुनाव हुए तो मुझे भी अपना मत डालने जाना था। मैं बहुत घबरा रही थी। मैने भानावत दीदी से बात की और वहां जाने से इंकार किया तो उन्होंने कहा, ''तुम इतनी सी बात से घबरा रही हो, जीवन की राह मे बहुत सी कठिनाइयां आएंगी, जिनका सामना सम्भवतः तुम्हें अकेले करना पड़े। अपने मनोबल को मजबूत करो और अपना फर्ज ईमानदारी से निभाओ।'' दीदी की बातों ने न जाने क्या जादू किया कि मैं पहली बार विश्वविद्यालय मतदान करने गई, वो भी अकेले।

दीदी की बोली में मिठास, प्रेम और गजब की जादुई शक्ति थी जो दिल दिमाग पर छा जाती थी। तीन साल हमने कालेज में कैसे बिताए, पता ही नहीं चला। हम खूब शैतानियां करते थे किन्तु दीदी ने हमें कभी नहीं डॉटा। पास बुलाकर ऐसे समझाती थीं मानो यशोदा मां शिकायत भरे लहजे में डांट रही हों। हमने उन्हें न तो कभी जोर से बोलते हुए, न कभी गुस्सा करते हुए और न कभी झुंझलाते हुए देखा। सिर्फ छात्राओं के प्रति ही नहीं और दीदियों व कर्मचारियों के प्रति भी कभी उन्हें गुस्सा होते नही देखा।

कालेज से निकलने के पश्चात् मैंने एम.ए. तथा

एम फिल किया और पी एच डी के लिए अपना नामाकन करवाया। पुण्य कर्मो के उदय से मुझे पी एच डी करने के लिए श्री नरेन्द्र भानावत सा का मार्ग दर्शन मिला। उस समय तक मेरा विवाह हो चुका था और मैं एक प्यारी सी बच्ची की मा बन चुकी थी। मेरे शोध कार्य मे कभी-2 बाधा आ जाती थी। कभी परिवार की जिम्मेदारिया, कभी बच्ची की परेशानी। मै समय पर अपना कार्य नहीं कर पाती थी। एक दिन (भानावत सा) गुरु जी ने मुझे फोन करके घर बुलवाया। मै तिलक नगर गई। गुरुजी मुझ पर बहुत गुस्सा हुए और कहने लगे-तुम समय पर अपना कार्य नहीं करती हो तो पढाई छोड़ दो, ताकि मै किसी दूसरी विद्यार्थी का मार्ग दर्शन कर सकू। मै कुछ न कह सकी। गलती मेरी थी। उस समय दीदी भी वहीं बैठी थी। मै एकदम रुआसी हो गई। उन्होंने मुझे देखा, शायद वो कुछ समझ गई थीं। उन्होंने गुरु जी से कहा कि आप नाहक ही इसे डाट रहे है। यह मेरी बेटी है, परिवार की जिम्मेदारिया निभाने के बाद भी पढ रही है। कोइ कारण हो गया होगा। तभी नहीं आ पाई। धीरे-2 कर लेगी, दीदी का तो इतना कहना था कि मै जोर-जोर से रो पडी। गुरु जी बोले-मै तो इस लिए कह रहा था कि समय निकलता जाएगा ओर इसका कार्य अधूरा रह जाएगा। जिम्मेदारिया तो दिन प्रति दिन बढती ही जाएगी।

उस समय मुझे ऐसा लगा मानो मै भगवान की छत्र छाया मे बैठी हू। शोध कार्य में दीदी ने भी मुझे बहुत सहयोग दिया। दीदी के प्रेरणादायी, आशीर्वाद स्वरूप ही मुझे डाक्टरेट की उपाधि मिल पाई।

दीदी मे जीवन जीने की कला थी। उन्होंने अपने जीवन के (जहा तक मैंने देखा) एक-एक क्षण को सजगता एव सार्थक सदुपयोगिता से जिया है, वे हर क्षण सजग, सतर्क एव सन्नद्ध रहती थीं। यही उनकी कार्यशीलता का मर्म था। उनका हृदय स्नेहशीलता एव नवनीत के समान स्निग्ध था। उनके मन मे स्नेह की अन्त सलिला प्रवाहित होती रहती थी।

एक समय की बात है कि मैं पारिवारिक कठिनाइयो के कारण परेशान थी। दीदी मेरा चेहरा देखते ही भाप गई। उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने बता दिया इस पर उन्होंने जिस स्नेह से मेरे सर पर हाथ रख कर मुझे ताकत दी मै आज तक नहीं भूल पाई। उनके वचन मेरे लिए शक्ति बन गए और मै इस कठिन समय से निकल कर हरे भरे जीवन का आनद ले पाई।

दीदी अगणित गुणो की धनी थी। उनकी तुलना किससे करू समझ नहीं पा रही हू। दीदी से मेरा परिचय एक शिक्षक और छात्रा के नाते हुआ। मुझे इस बात का गर्व है कि मुझे ऐसे शिक्षक का वरदहस्त और मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ, जिन्होंने सदा ही ऊचे आदर्शो की सरल रूप मे शिक्षा दी वरन् उन्हे सदैव अपने जीवन का अभिन्न अग भी बनाया।

आज दीदी का आशीर्वादभरा हाथ मेरे सर पर नहीं है, मुझे ऐसा लगता है मानो एक सूनापन मेरे दिमाग मे आ गया हो, कई बार जब मै कुछ लिखने बैठी तो मुझे समझ ही नहीं आया कि मे क्या लिखू ? कैसे लिखू। दीदी होती तो मै तुरन्त जाकर पूछ लेती कि कैसे लिखू ? शान्ता भानावत दीदी एव प्रो नरेन्द्र भानावत सा ने मेरी मानसिकता को परिपक्वता दी है। मेरी सोच मेरी लेखन प्रतिभा सदा ही उनकी ऋणी रहेगी। आज जब दीदी के सम्बन्ध मे लिखने बैठी हू तो बहुत सी घटनाये चलचित्र की भाति घूम रही है। दीदी की याद हमेशा आएगी उनसे बिछोह हमेशा अखरेगा, इससे अधिक अब मुझसे नहीं लिखा जाएगा।

❑

सोचा न था

डा. सरोज वर्मा

यों अचानक चली जाओगी,
सोचा न था।
हम देखते रह जायेंगे विवश से,
सोचा न था।

मन की पीडा है मौन मूक,
दृष्टि न पाती कहीं मग है।
हृदय में उग आई इस व्यथा को,
किस से कहें, बीच पथ में छोड़ जाओगी,
सोचा न था।

जीवन के कटुमधु क्षणों में,
सब की संगिनी रहीं अविरल।
पीडा के वन में पथ प्रदर्शिनी थी हर पल,
मंझधार में यों निराधार कर जाओगी,
सोचा न था।

हे ! वात्सल्यमयी, हे ! करुणामयी,
हे ! समतामयी, हे ! ममतामयी,
स्नेह के आंचल में सबको बांधकर
स्नेह रज्जु यों तोड निष्ठुर बन जाओगी,
सोचा न था।

महाविद्यालय को मल्यानिल सा सुवासित कर,
अज्ञान के आच्छादन को विदीर्णकर ज्ञान मंदिर को सुदृष्टि दे,
विकास के अभ्रभेदी अनन्त चरणधर
अनन्त पथ पर यों प्रस्थान कर जाओगी,
सोचा न था।

शारदे मां की वरद पुत्री।
वाङमय की मधुर ज्योति
साहित्य गंगा की पावन लहरी
बहु-चर्चित बहु प्रशंसित
मनीषियों के भ्रम जाल निवारण कर,
हमको यों भ्रमित छल जाओगी,
सोचा न था।

हे ! शान्तिप्रिय,
'शान्ता' सार्थक था नाम तुम्हारा,
संघर्ष को हर पल झेला, किन्तु कभी मन न हारा।
दुर्देव की कुदृष्टि पर भी देखा, न मन अशान्त तुम्हारा,
किन्तु हम सब को यों अशान्त कर जाओगी।
सोचा न था।

सत्यं शिवं सुन्दरम् की साधिका थी तुम,
मानवता के मन्त्र की आराधिका थी तुम,
आत्मीय अनुकरणीय सदैव वन्दनीय तुम,
मृदुभाषिनी, रही सदा अजात शत्रु तुम,
किन्तु यों शत्रु बन विकल मन कर जाओगी,
सोचा न था।

शाश्वत नियम है विधना का कि
सभी आते हैं और चले जाते हैं।
पर तुम उनमें हो जो जाकर भी नहीं जाते,
किन्तु ये आंखें तुम्हें अब न देख पायेंगी,
सोचा न था।

अश्रुपूरित हृदयोद्गार

हीराचन्द वैद

ज्ञान ज्योति के पावन पर्व ज्ञान पचमी के दिन जयपुर नगरवासियो के मध्य से एक विलक्षण रत्न इस भोतिक देह को त्याग कर विलीन हो गया। महारत्न महामानव श्रीमान राजरूप जी टाक के स्वर्गस्थ हो जाने पर विविध क्षेत्रो मे जो एक अपूरणीय क्षति उत्पन्न हुई है, उस क्षति को हमारी कइ भावी पीढिया भी पूरा नही कर सकती है। उनके शोक से सतप्त जयपुर नगरवासियो ने एक विशाल श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया, जिसमे जयपुर के प्रतिष्ठित एव गणमान्य नागरीको एव पूज्य चाचा सा से जुडी अनेक सस्थाओ के सदस्यो एव पदाधिकारियो ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

● श्री हीराचन्द वैद

सभा का आरम्भ श्री हीराचन्द जी वैद ने शोक सतप्त वाणी से कुछ इस प्रकार कहते हुए किया कि जन्म तो सभी का महोत्सव होता है, पग्न्तु ससार मे कुछ ऐसी भी हस्तिया होती है, जिन की मृत्यु भी महोत्सव बन जाया करती है।

पूज्य चाचा सा युग पुरुष, करुणामूर्ति व पीडितो के मसीहा थे। आज हमारे मध्य वे भौतिक शरीर से विद्यमान नही है, परन्तु उनके सिद्धान्त हमारे पथ प्रदर्शक सिद्ध होगे। आज से 63 वर्ष पूर्व महिला शिक्षा की समस्या को देखते हुए उन्होने श्री वीर बालिका विद्यालय की स्थापना की। महात्मा गाधी की भाति अपने सम्पूर्ण जीवन को पर सेवा हेतु समर्पित कर दिया।

अपन व्यवसाय को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव प्रदान करने वाले महामना चाचा साहब लेखन एव ज्ञान के क्षेत्र मे भी कुछ पीछे नही रहे। अमेरिका जैसे ख्याति प्राप्त स्थल से स्वर्ण पदक प्राप्त कर आपने जयपुर एव रत्न-व्यवसाय के गोरव को और भी अधिक बढा दिया। सर्वाधिक नियात के कारण आपको तीन बार सम्मानित किया गया।

'समाज रत्न' और 'समाज विभूषण' की उपाधि से सम्मानित चाचा साहब ने जिस क्षेत्र पर अपना वरद-हस्त रख दिया वह सदा-सदा के लिये सक्षम हो गया। ऐसे प्रात स्मरणीय परम पूज्य चाचा साहब के प्रति जयपुर नगर वासिया ने श्रद्धा सुमन सजोकर जो हार गूथा है, उसमे विचार रूपी पुष्पो की लड़ी कुछ इस प्रकार है।

● श्री दौलतमल भडारी

मेरा श्री राजरूप टाक के साथ 70-72 साल से भी ज्यादा पुराना सम्बध था। मै और वे तीसरी- चौथी कक्षा मे लीलाधर जी की पाठशाला मे पढते थे। उन्हे न केवल रत्न व्यवसाय का ही पूर्ण ज्ञान था अपितु हर क्षेत्र मे वह ज्ञान के धनी थे। उनके साठोपरान्त समारोह मे मेरे द्वारा उनकी लिखी हुई पुस्तक का विमोचन करवाया गया। मुझे ऐसा लगता था कि वे न केवल रत्न पारखी ही थे, अपितु उन्हे ज्योतिष शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। वे एक ऐमे निष्कलक अमूल्य माती थे जिनका ताज माणक का तथा जिनकी हीरे जैसी पैनी दृष्टि थी। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के सभी लोगो को व्यवसाय के क्षेत्र मे पारगत किया। वे कहा करते

थे कि जो एक बार मेरे पास आ गया, उसकी रोजी-रोटी की व्यवस्था होकर रहेगी। आज उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जो कार्य वह अधूरे छोड़ गये हैं, उन्हें हम पूरा करें।

● श्री सिद्धराज ढढ्ढा

श्री मान राजरूप जी टांक से मेरा निकट का सम्पर्क था। वे वर्ग भेदों से ऊपर उठकर जीने वाले महामानव थे। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज सैकड़ों हजारों के रूप में उनके शिष्य परिवार यहां उपस्थित है। उनका एक बार जिससे सम्पर्क हो जाता था, उसके लिये उनकी करुणा का स्रोत हमेशा हमेशा के लिए फूट पड़ता था। उन्होंने सामाजिक दृष्टि से समाज को समृद्ध बनाया। यह कथन उनके लिए पूर्णत: सत्य है कि उनका जन्म भी महोत्सव था तो उनकी मृत्यु भी महोत्सव से कम नहीं है।

● श्री देवेन्द्रराज मेहता :-

मेरा उनसे परिचय एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में हुआ था। उनसे बढकर समाज सेवी मुझे आज कोई नजर नहीं आता। जिस संस्था से वे जुड जाया करते थे, उसकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध हो जाया करती थी। एक बार विदेश में यूनीसेफ संस्था की वार्ता में मुझसे पूछा गया कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आपकी संस्था में लोगों को विश्वास कैसे हो जाता है-''मैंने उत्तर दिया-जहां श्रीमान राजरूपजी टांक इतने वर्षो से संस्था के अध्यक्ष हैं, वहां लोगों का इस संस्था पर विश्वास स्वतः हो जाता है।''

● श्री तेजकरण डण्डिया :-

यादगानी मौत उसकी होती है, जिसका जमाना अफसोस करे। श्री मान राजरूपजी टांक की मृत्यु भी कुछ इसी प्रकार की थी। उन्होंने क्या शैक्षिक, क्या धार्मिक, क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक सभी क्षेत्रों में अपना पूर्ण उत्साह दिखाया। उन्होंने सही अर्थो में समाज में अपना जीवन जिया। समाज में उनके चले जाने से जो अभाव पैदा हुआ है, वह अभाव अपूरणीय है।

● श्री कपूरचन्द पाटनी

मृत्यु उसकी महान कहलाई जाती है, जिसमें वह स्वयं हंसता है और समाज रोता है। श्रीमान राजरूपजी टांक की मृत्यु भी समाज के लिए कुछ इस प्रकार की थी। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्रों में निष्ठा के साथ कार्य किया। वे विकलांगों के पैर, अनाथों के नाथ, अंधों की आंखें थे। उनके पास बैठते हुए कभी इस प्रकार का आभास नहीं होता था कि हम किसी प्रमुख रत्न व्यवसायी के पास बैठे हैं बल्कि अपने ही किसी परिवार के बुजुर्ग सदस्य के साथ मिलकर बैठे हैं।

● श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव

जिन्होंने विविध प्राचीरों को तोड कर अपने करुणा के द्वार सभी के लिये खोल दिये, जिन्होंने अपने जीवन से उन लोगों के जीवन को आलोकित किया जो कि अभावों के अंधेरे में जी रहे थे, ऐसे महारत्न की मृत्यु हमारे लिये एक ऐसा सदमा है जिसे सहन करना नितान्त कठिन है। उनके प्राणों का उत्सर्ग हमारे लिये एक चुनौती है। हम उनके गुणों को अपनाकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करेंगे तभी हम उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि व्यक्त कर पायेंगे।

● श्री भंवरलाल शर्मा

इतिहास का अध्ययन तो सभी किया करते हैं, परन्तु कुछ युग पुरुषों का चरित्र कुछ इतना अधिक अनुकरणीय होता है कि वे स्वयं इतिहास के अमिट पृष्ठ बन जाया करते हैं। श्रीमान चाचा सा.का भी चरित्र एवं कृतित्व कुछ इतना विलक्षण था कि वे स्वयं इतिहास बन गये। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके गुणों को अपने जीवन में उतारें।

❑

ऐसी पहचान वर्षों में मिलती है

✍ श्रीमती मेनका गाँधी

यद्यपि मै जैन धर्म मे जन्मी नही हूँ, तथापि विचारो से जैन हूँ। जहाँ तक सभव होता है जैन धर्म के नियम और सिद्धान्तो को पालने का प्रयास करती हूँ। मै एक बार अमेरिका पहुँची, वहाँ बैठक के पश्चात् हम रेस्टोरेन्ट मे भोजन हेतु पहुँचे। वेटर ने पूछा, 'आप खाने मे क्या पसन्द करेगी शाकाहार या मासाहार ?'

मैने कहा, 'मै तो अण्डा भी खाना पसन्द नही करती, मुझे तो शुद्ध शाकाहारी भोजन चाहिए।' 'क्या आप जैन है ?' वेटर ने उसी क्षण पूछा। वेटर की बात सुनकर मै सोचने लगी कितना महान है ये जैन धर्म। एक दिन या दो दिन के त्याग से यह पहचान नही मिलती, ऐसी पहचान तो वर्षो मे मिलती है, पर दुर्भाग्य है कि जैन समाज के जो विमल आदर्श है, उनमे विकृति आ रही है।

मै एक स्थान पर गई जहाँ एक जैन नवयुवक भी मेरे साथ भोजन करने के लिये बैठा। वेटर ने पूछा, 'आप भोजन मे क्या लेना पसन्द करेगे, शाकाहार या मासाहार ?' जैन युवक ने कहा, 'मासाहार'।

यह सुनकर मै चोक उठी, मैने कहा, 'आप जैन धर्मावलम्बी है फिर मासाहार कैसे ?' उस युवक ने कहा, 'घर पर तो मासाहार मिलता नहीं इसलिए होटल या पार्टियो मे मासाहार ले लेता हूँ।'

मैने उसे अमेरिका की वह घटना सुनाई और कहा, 'भैया, यह जो जैन धर्म की महानता बनी हुई है, उसे बनाये रखो। जैन धर्मावलम्बियो को गौरव होना चाहिए कि वे शुद्ध शाकाहारी है।'

मेरी बात सुनकर उस युवक ने कहा, 'बहनजी! मै तो भटक गया था। अब मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी भी मासाहार नही करूगा। मुझे यदि कोई उपदेश देता तो मे नहीं छोड पाता, पर अब मै समझ गया, अत जीवन पर्यन्त मासाहार नही करूगा।'

❑

सुधार दानशीलता की भाति घर से प्रारम्भ होना चाहिए।

- कालाइल

संस्था की जन्मदात्री
साध्वी श्री सुवर्ण श्री जी महाराज

✍ साध्वी मणिप्रभा श्री

पुष्प खिलते हैं मुरझाने के लिए, चन्द्रमा का उदय होता है छिपने के लिए, बादल भरते हैं खाली होने के लिए, दीपक जलता है मंद होने के लिए, इस प्रकार एक नही, प्रकृति के जितने भी पदार्थ हैं, उनका उद्‌भव ही अवसान के लिए होता है। मानव ही सृष्टि की एक अनुपम उपलब्धि है, किन्तु उसके साथ भी प्रकृति की यह प्रक्रिया ज्यों की त्यों विद्यमान है। कैसा भी हो, कहीं भी हो, कितना भी विद्वान अथवा सम्पत्तिशाली हो, तीर्थकार हो या चक्रवर्ती, योगी हो अथवा भोगी, सभी का अंत निश्चित रूप से होता ही है। अतीत के इतिहास को देखते हैं, उन महान व्यक्तियों की शक्तियों का अध्ययन करते हैं, तो सिर श्रद्धा से झुक जाता है, पर आज उनमें से किसी एक को भी आखों से देखना चाहें तो सर्वथा असंभव है। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व, सेवा, सौहार्द एवं स्वभाव आदि का ज्ञान हो सकता है, पर प्रत्यक्ष देखने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

इस प्रकार अतीत के इतिहास का अवलोकन करने पर एक दिव्य विभूति, महामना, नारी जगत को गौरवान्वित करने वाली 'वीर बालिका विद्यालय' सस्था को जन्म देने वाली प्रवर्तिनी श्री सुवर्ण श्री जी म. सा. की स्मृति आज तीव्र रूप ले रही है। किस प्रकार आत्म शक्ति को अभिव्यक्त करने के लिए विवाहित जीवन में भोगी जीवन के समस्त अनुकूल साधनों की सुविधा में, केवल त्याग व वैराग्य भावना को साकार रूप देने के लिए किस कला से उन्होंने पति व परिवार सभी की अनुमति ली, इतना ही नहीं अपने पति देव की अपनी उपस्थिति में दूसरी सगाई 'सबंध' करा कर अपना सभी कुछ आने वाली को संभला कर कहा - बहिन! मेरे स्थान को अब तुम सुशोभित करना और इस परिवार को कभी मेरी कमी महसूस न होने देना। मैं आत्म साधना करने के लिए, जड चेतन के भेद विज्ञान को समझने के लिए, मानव जीवन की दुर्लभता को सार्थक करने के लिए, दीक्षा ग्रहण कर रही हूं, जिसमें समस्त कार्य क्षेत्र आत्म विकास से संबंधित होगा।

उस साहसशीला महिला ने दीक्षित व शिक्षित बनकर जिन शासन की महान सेवा की, वह आज भी हम सब को प्रेरित कर रही हैं। आज वीर बालिका विद्यालय की हीरक जयंती मनाई जा रही है। इस प्रसग पर उन्हें विशेष रूप से सश्रद्धा नमस्कार करना हम सब का सहज कर्त्तव्य है, क्योंकि वीर बालिका संस्था जो अपनी प्रगति से जयपुर में गौरवपूर्ण पद प्राप्त कर चुकी है, का बीजारोपण त्याग व वैराग्य की मूर्ति, सरस्वती की अनन्य उपासिका साध्वी श्री सुवर्ण श्री जी महाराज ने ही किया था और उन्ही के आशीर्वाद का फल है कि जिस सस्था को जन्म दिया उसे स्वर्ण रूप व हीरक आभा भी मिल रही है।

परिणामत हीरक जयन्ती मनाने का अवसर आया। ऐसी महान विभूति का जीवन पठनीय है।

परमश्रद्धेया चरित्र नायिका का आकार-प्रकार तो विशिष्ट था ही, उनके प्रत्येक व्यवहार मे दिव्य गुणो की झलक मिलती थी। उनके विराट रूप को लिपिवद्ध करना इस लेखनी के सामर्थ्य के वाहर है, फिर भी अत करण की प्रेरणा स्वरूप उनका कुछ रूप अपनी लेखनी से अकित कर रही हू।

चरित्र नायिका का जन्म सवत् 1927 मे दुर्गादेवी जी की रत्नकुक्षी से हुआ। पिता का नाम सेठ योर्गीदास बोहरा था। वालिका के अद्‌भुत सौन्दर्य को देखकर माता-पिता ने उन्हे सुदर वाई नाम दिया। सुदर वाई नाम से ही नहीं अपितु क्रिया से भी सुदर थी। वचपन से ही ये उदार और उच्च भावना रखने वाली थी। विद्या की तरफ विशिष्ट रुचि होने के कारण अल्पवय म ही अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली। इनकी अद्‌भुत प्रतिभा के कारण इनकी विद्या का रूप और भी निखर गया। इनकी अल्पायु मे ही इनके पिता का स्वगवास हो गया। तत्कालीन परम्परा मे 11 वर्ष की वय मे उन्हे विवाहयोग्य जान माता इन्हे जोधपुर रियासत के पीपाड नामक स्थान पर ले गई। यही वह स्थान था जहा सर्वप्रथम सुदरवाई जी को सत-समागम प्राप्त हुआ। वैराग्य पूर्ण देशनाए सुन-सुन कर उनका चित्त ससार से विरक्त हो गया पर कर्मान्तराय ने कहा किसको छोडा ? आपको सवत् 1935 की माघ शुक्ला तृतीया के दिन नागौर निवासी श्रीमान प्रतापचन्द्र जी भडारी के साथ विवाह वधन म वधना पडा।

खरतरगच्छ गणाधीश्वर सुखसागर जी महाराज के समुदाय की जगत विख्याता शात मूर्ति, गाभीयादि गुणो से युक्त पू पुण्य श्री जी महाराज स 1945 मे नागौर पधारीं, जिनकी नित्य प्रति वैराग्यमयी वाणी सुनकर आपका वेराग्यपूर्ण जीवन अधिक सुदृढ वना।

अपने विचारो की अभिव्यक्ति इन्होने पूज्या श्री के सम्मुख की, पर उन्होने यही कहा पहले घर वालो की स्वीकृति लो, फिर कदम वढाना।

प्रारम्भ मे तो आपको काफी अडचने मिली। श्री प्रतापमल जी साहव ने दीक्षा के लिए सर्वथा अस्वीकृति दी, पर तीव्र वैराग्य वाला न रोके रुक सकता है, न वाधे वध सकता है। अन्ततोगत्वा सवको समझाकर, आज्ञा प्राप्त कर सवत् 1946 मार्गशीर्ष शुक्ला पचमी वुधवार के दिन प्रात 5 वजे गृहस्थ वेश का त्याग कर आपने सयम धारण किया। दीक्षा लेने के समय ही आपका नाम सुदरबाई से वदल कर सोहन श्री जी हो गया।

दीक्षोपरात इनका समय ज्ञान-ध्यान मे व्यतीत होने लगा। जैसा कि पूर्व मे हम लिख आये है कि ज्ञान की रुचि व प्रतिभा दोनो का सगम इनके जीवन मे था, अत ध्यान के साथ ज्ञान का क्रम भी निरन्तर वढते चन्द्रमा की भाति प्रगति की ओर वढने लगा। ध्यानावस्था मे भी आप 13-14 घटे प्रतिदिन व्यतीत करती थी। दीक्षा के समय से ही इन्होने अनेक प्रकार की तपस्याये की थीं। अठ्ठाई, नवपद जी की ओली और वीसस्थानक तप करने साथ-साथ कठिन सिद्धि तप की भी आपने आराधना की। आपने एक ही समय मे लगातार 9, 10, 11, 17, 19 और 21 उपवास तक की तपस्याये की।

श्री पुण्य श्री जी म सा की सवा सो शिष्या मण्डली मे आप प्रधान थी। यह वात आपकी महत्ता को सिद्ध करती हे। आपने जीव-विचार, नवतत्व और

कर्मग्रंथ आदि प्रथम बीकानेर चातुर्मास में कंठस्थ किये। अध्ययन के साथ आपका मनन उसी प्रकार होता था जैसे छाछ में से मक्खन निकालना। आपका चातुर्मास फलौदी मारवाड़ में हुआ। वहाँ श्रीमान् ऋद्धिसागर जी महाराज सा. का सुयोग आपको मिला। उनके पास सूत्र वांचन, व्याकरण अभ्यास आदि किया व 31 उपवास जैसी बड़ी तपस्या भी की। आपका तीसरा चातुर्मास नागौर में था जहॉ आपने 19 उपवास किये। चौथा चौमासा ब्यावर, पांचवा फलौदी मारवाड में तथा छठा चौमासा शत्रुंजय तीर्थ पर हुआ, जहॉ आपने सिद्धि तप किया व 15, 20 तथा 6 उपवास किये, तीन अठ्ठाई की, छोटी तपस्या की तो गिनती ही नहीं। आपके 9 चातुर्मास पू. पुण्य श्री जी म.सा. के साथ हुए। दसवां चौमासा उनकी आज्ञा से बीकानेर में किया।

आपका 11 वां चौमासा आपकी जन्मभूमि अहमदनगर में हुआ। खरतरगच्छीय साध्वी जी म. का शहर में यह प्रथम आगमन था। वहॉ से आप पूना पधारीं, पूना से 24 वां चौमासा बम्बई शहर में किया। आगे सब एक से एक बढकर उन्नतिशील चौमासे हुए। आपके तमाम चौमासों में से बम्बई का चातुर्मास बड़ा प्रभावशाली था।

आपकी दीक्षा के समय संघ में 15-20 साध्वियां थी। आपके उपदेश, त्याग, वैराग्य आदि के प्रभाव से करीबन 100-150 की संख्या में सुयोग्य साध्वी समुदाय के बढने के साथ-साथ ज्ञानार्जन आवश्यक था। ज्ञानाभाव में साध्वी समुदाय का बढ़ना आपको अखरा, अत: साध्वियो के लिए समुचित रूप से आपने अध्यापक आदि की व्यवस्था करवायी। यह प्रथम साहसिक प्रयास आपके द्वारा किया गया था। इस प्रकार आपने साध्वी समुदाय मे ज्ञान-दान प्रवत्ति द्वारा उन्हें सुयोग्य बनाया। आपके उन्नत, स्वस्थ विचार साध्वी समुदाय के लिए दीपक तुल्य प्रकाश दिखाने वाले बने।

संवत् 1976 फाल्गुन सुदी 10 को प्रात: आपकी गुरुवर्या श्री पुण्य श्री जी म.सा. का जयपुर में स्वर्गवास हुआ। आप उस समय वहीं थी, अत: गुरु सेवा का लाभ आपको मिला। गुरुवर्या के स्वर्गवास के बाद आप पर ही समुदाय संचालन का भार आया जिसे आप प्रवर्तिनी रूप में निभा कर स्नेह एवं श्रद्धा की पात्र बनीं।

जयपुर में चातुर्मास के बाद स्वर्गीया गुरुवर्या श्री के आदेशानुसार आपने दिल्ली और उत्तरप्रदेश की ओर विचरण किया। इस प्रदेश में आपश्री के उपदेश से स्थान-स्थान पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए, जिनका यदि वर्णन किया जाय तो एक स्वतंत्र पुस्तिका ही बन जाय, अत: संक्षेप में लिखना ही पर्याप्त होगा।

1. हापुड में सेठ श्री मोतीलाल जी बुरड द्वारा नव मन्दिर निर्माण हुआ।
2. आगरा में दानवीर सेठ लक्ष्मीचद जी वैद द्वारा बैलनगंज में भव्य मन्दिर तथा विशाल धर्मशाला बनाई गयी।
3. आगरा के निकट शौरीपुर तीर्थ का उद्धार कार्य कराकर वहॉ की सुन्दर व्यवस्था कराई गई।
4. दिल्ली में महिला समाज की उन्नति हेतु 'साप्ताहिक स्त्री सभा' का आरम्भ किया।
5. जयपुर में आप श्री महिला समाज को जागृत करने के लिए एक योजना स. 1952 में बनाई गई, बाद मे कार्तिक शुक्ला पचमी ज्ञान पंचमी को धूपियों की धर्मशाला में श्राविकाश्रम की

स्थापना की, जो बीज आज वृक्ष के रूप मे पल्लवित हो, 'वीर बालिका विद्यालय' के रूप मे हमारे सामने है। जिसमे आज अध्ययनार्थिनी बालिकाओ की सख्या 3200 के करीब है। विद्यालय आज विद्यालय न रहकर महाविद्यालय 'कॉलेज' का रूप ले चुका है। महान् सहयोग मत्री के रूप मे श्रीमान् राजरूप जी टाक ने इस वृक्ष को बढाने मे सहयोग दिया। बीज का वपन पू श्री सोहन श्री जी म सा के द्वारा हुआ लेकिन रक्षक के अभाव मे बीज भी सूख जाता है। इस बीज को सिचन करने के रूप मे श्री राजरूप जी टाक हमारे सम्मुख आये। प्रधानाध्यापिका स्वर्गीय श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा का गुणानुवाद भी यह जिव्हा, यह लेखनी किये बिना नही रह सकती, जिन्होने स्कूल की बालिकाओ को मातृत्व-स्नेह व गुरु का सा कडक व्यवहार दिया। अनेक रूप मे वे स्कूल के मच पर सफल नायिका के रूप मे आयी। उन्हे यह सस्था व सस्था की बालिकाये सदैव-सदैव स्मृति पर रखेगी।

पू सोहन श्री जि म सा की विचारधारा का सुलझा हुआ स्वरूप हमे उनके इस वाक्य से मिलता है। "यो ही हजारो लाखो रुपये खर्च कर देने से जैन जाति का उद्धार कदापि न होगा। उद्धार तभी होगा, जब हम लोग अपने दीन दरिद्र निस्सहाय और निराश्रय भाई-बहिनो को अवलबन प्रदान करते हुए उनकी सब प्रकार से सहायता करेगे।" बहनो को उन्नति पथ पर उठाने के लिए आपने महिला सस्था भी खोली थी, पर वह कार्य आगे न बढ सका।

6 वृद्धावस्था एव अशक्त होते हुए भी आप आगरे वाले सेठ लूणकरण जी सेठिया तथा वीरचद जी नाहटा की माताजी के अतिआग्रह से बीकानेर पधारी और वहा स्थानक जी का उद्यापन बडे उत्साहपूर्वक कराया।

7 बीकानेर के उदरामसर शहर मे आपने श्री कुथुनाथ जी के मदिर का निर्माण कराया। इन स्थानो पर मुनिराज जी का आगमन बहुत कम होता था। आपने इस क्षेत्र को विकसित किया।

8 अतिम अवस्था जान आपने बीकानेर मे वर्तमान आचार्य वीर पुत्र श्री आनन्द सागर सूरीश्वर जी म की मम्मति से ज्ञान श्री जी म को प्रवर्तिनी पद विभूपित कर सघ सचालन का कार्य सौपा।

इस प्रकार आप श्री द्वारा जीवन के अतिम क्षण तक लोकोपकारार्थ तथा धर्मोद्यत हेतु कई महत्वपूर्ण कार्य होते रहे।

ऐसी महान् उपकारी, महान पूजनीया साध्वी शिरोमणि गुरुवर्या श्री सुवर्ण श्री जी म सा की दिव्य ज्योति स 1991 माघ कृष्ण नवमी को सायकाल 5 बजे इहलोक से सदा के लिए अतर्धान हो गई। दूसरे दिन प्रात काल बीकानेर के गोगा दरवाजे के बाहर दादाबाडी मे बडे समारोहपूर्वक आपका दाह सस्कार किया गया। पार्थिव रूप से आज आप हमारे बीच नहीं है, पर आपने नवजागरण व ज्ञान की जो किरणे प्रसारित की, वे सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

❑

श्री वीर बालिका विद्यालय
एक परिचय

श्री वीर बालिका यह यो, खिला सरस उद्यान,
छात्राएं पाती जहां शिक्षा अमृत का ज्ञान ।
हो विद्या के साथ में, विनय विवेक जरूर
वरना विद्या भार है, पुण्य प्रगति है सब दूर ।
संतों की शुभ प्रेरणा, करिए आत्म विकास
विद्या विनय विवेक का, करें सहज अभ्यास ।

मुनि श्री सुवालाल जी महाराज साहेब

तन पुलकित है मन हुलसित है ।
आमंत्रण मिला, प्रिया मन का ।
प्रारब्ध ने किया, कृतार्थ हमें
सुफलां, सुजन्म, स्व अंचल का ।
शाला में श्लाघा, छलक रही
मुखरित कलिकाएं चमक रही ।
शिल्पी से शिक्षक कलाकार
व्यक्तित्व बनाते कंचन सा ।
आदर्श मूल्य, यहां बहुमूल्य
एक पाठ पढ़े प्रिय मातृभूमि ।
कर्त्तव्य प्रेम, यहां अलंकार
पर ममता का एक बंधन सा
यहां विविध सुमन खिलते रहते
सुख-दुख मिलजुल कर हैं सहते ।
मासूम, सुकोमल भोलापन
निश्छल नयनों की चंचलता ।
परिवेश यहां मन भावन सा
स्निग्ध, सुरस-मय सावन सा ।
अर्पित करती, शुभ कामनाएं,
स्नेह, प्रेम, मन रंजन सा ।

श्रीमती लोकेश झा
व्याख्याता, रा.उ.मा. बीकानेर

सर्वश्रेष्ठ शिक्षण सस्था

स्व देवीशकर तिवारी

(स्वर्ण जयती स्मारिका से)

यह परम हर्ष का विषय है कि जयपुर नगर मे महिला शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रणी सस्था श्री वीर बालिका विद्यालय निकट भविष्य मे ही अपने जीवन के 50 वर्ष पूर्ण कर 'स्वर्ण जयती महोत्सव'' मना रही है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। स्मारिका मे विद्यालय का वैभवशाली अतीत अभिव्यक्ति पायेगा तथा वर्तमान प्रगति के बारे मे सामग्री प्रकाशित होगी। मेरा इस विद्यालय के साथ सन् 1935 से ही निकट सम्पर्क रहा है। मेरे मानस पटल मे अब भी वे दिन सजीव है जब इस विद्यालय की बालिकाये राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत कार्यक्रम जयपुर नगर मे स्थान-स्थान पर प्रसारित करती रहती थी। जब कभी मै इस सस्था के जीवन पर दृष्टि डालता हू तो सस्था का एक और भव्य स्वर्णिम चित्र मेरे समक्ष अकित हो जाता है।

अपने 50 वर्ष के जीवन मे यह विद्यालय निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहा है। मिडिल से हाई स्कूल और फिर हायर सैकण्डरी तक इस विद्यालय की यात्रा समाज मे महिला शिक्षा के क्षेत्र मे अमूल्य योगदान है। सस्था का वर्तमान स्वरूप तो और भी निखर आया है। सस्था ने अब स्नातक स्तर पर ''स्वय-पाठी'' छात्राओ का मार्ग दर्शन प्रारम्भ कर दिया है। किन्ही कारणो से महाविद्यालय शिक्षा से वचित छात्राए इसका लाभ उठाकर आगे भी अपना अध्ययन सुचारु रूप से जारी रख सकेगी।

सस्था के निर्माण मे इसके सस्थापक श्री राजरूप जी टाक का अभूतपूर्व योगदान है। श्री टाक ने इस सस्था की नीव इतनी पुष्ट और गहरी डाली कि आज अर्धशती पूर्ण होने पर भी यह सस्था न केवल अपना अटल-अजयी अस्तित्व ही कायम किये हुए है अपितु महिला शिक्षा के क्षेत्र मे आज नगर की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण सस्थाओ मे एक है। श्री टाक नगर के प्रसिद्ध जौहरी होने के साथ ही महान सामाजिक कार्यकर्ता भी है। उन्होने एक ओर सैकडो नवयुवको के लिए जवाहरात उद्योग के प्रशिक्षण की व्यवस्था कर उन्हे इस व्यवसाय मे लगाया तो दूसरी ओर महिलाओ के लिए सर्वतोमुखी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने हेतु ''श्री वीर बालिका विद्यालय'' जैसी महिला-शिक्षा-सस्था का सफल सचालन किया।

मेरा विश्वास है कि इस सस्था का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है तथा श्री टाक के सरक्षण मे यह निरन्तर उन्मुख रहेगी।

❑

संस्थान के इतिहास की झलक

हमारा राजस्थान प्रदेश जो आज भी सम्पूर्ण भारत में महिला शिक्षा की दृष्टि से निम्न स्थान पर गिना जाता है, उसी राज्य की राजधानी जयपुर में महिला शिक्षण संस्थान का बीजारोपण अपने आप में एक क्रांतिकारी एवं दूरदर्शी प्रयास था। महिला शिक्षा के प्रति ऐसी उपेक्षा और संकीर्ण विचाराधारा के मध्य एक जैन साध्वी के हृदय में मातृ कल्याण की भावना जागृत हुई। उन्हें देश और समाज की दयनीय स्थिति से मुक्ति का मार्ग केवल नारी शिक्षा के प्रचार और प्रसार में ही दृष्टिगोचर हुआ। अपनी महती भावना से प्रेरित होकर परम श्रद्धेय स्वनाम धन्य साध्वी सुवर्ण श्री जी महाराज साहब ने जयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर समाज के श्रावक समुदाय के सम्मुख अपनी योजना प्रस्तुत की। योजना अपने आप में अनूठी थी तथा समाज में एक हलचल पैदा करने वाली थी किन्तु कभी साधुजनों की दृढ निष्ठा निष्फल नहीं जाती। बालिका शिक्षा के एक बीज का रोपण जयपुर में महाराज साहब की प्रेरणा से किया गया।

केवल आठ बालिकाओं व दो अध्यापिकाओं से एक छोटी सी धर्मशाला में नारी शिक्षा का अलख जगाया गया। प्रारम्भिक प्रगति को नापना इतना शक्य तो नहीं होता क्योंकि इसकी प्रगति बहुत धीमी होती है, परन्तु भविष्य इन्हीं जडों की मजबूती पर आधारित होता है।

जयपुर के प्रमुख उद्योगपति श्री सोहनमल जी गोलेछा इस संस्था के अध्यक्ष बनाए गए तथा युवक उत्साही और समाज सेवी श्री राजरूप जी टांक संस्था के मंत्री। संस्था का नाम रखा गया 'श्राविकाश्रम कन्या पाठशाला'। एक युग तक कार्य कर रही संस्था चार कक्षा तक बढ़ पाई। यह अपने उद्गम स्थान से घी वालों का रास्ता स्थित दूसरे मकान में स्थानांतरित हुई, तब तक बालिकाओं की संख्या 100 तक पहुंची। सन् 1939 में नये सिरे से इस संस्था की व्यवस्था समिति का गठन किया गया और इसे राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की गई। थोड़े वर्षों बाद ही दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड़ से इस संस्था का सम्पर्क हुआ। उन्हें उस वक्त भी यहां की कार्य पद्धति इतनी भा गई कि उन्होंने अपना वरदूहस्त इस संस्था पर रख दिया। उन्हें भविष्य काफी उज्ज्वल दिखाई दिया। उन्होंने समाज के नाम अपनी ओर से इस पाठशाला के लिये एक अपील निकाली।

भारत की स्वतंत्रता से 3 मास पूर्व ही तत्कालीन जयपुर राज्य के शिक्षा विभाग ने इसे वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल के रूप में मान्यता प्रदान की और तब से ही इसे राजकीय अनुदान प्राप्त होने लगा। उस वक्त इसका नाम जैन श्वेताम्बर गर्ल्स वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल हुआ।

बीच के इस काल में संस्था के अध्यक्ष पद पर श्री सोहनलाल जी दूगड श्री राजमल जी सुराना रहे। दोनों ही महानुभावों के नेतृत्व में संस्था ने जयपुर

नगर मे अपना अच्छा स्थान बनाया। परीक्षाफल भी काफी अच्छे रहे।

भारत की आजादी के साथ सब सस्थाओ के जीवन मे नई विचारधारा का समावेश होना स्वाभाविक था। यह सस्था भी कैसे इस क्राति से अछूती रह सकती थी। इस वक्त सस्था के अध्यक्ष प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री सिद्धराज जी ढढ्ढा थे। सस्था के लिए यह क्या कम गौरव था कि उसके अध्यक्ष नव गठित राजस्थान प्रान्त के प्रथम मत्रीमडल मे प्रमुख मत्रियो मे थे। तत्कालीन सचालन मडल ने काफी गभीरता से विचार कर इस सस्था का कार्यक्षेत्र बढ सके, साथ ही निश्चित आदर्शों के साथ यह शिक्षण क्षेत्र मे अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके, इस हेतु इस सस्था का नाम क्या बदला, इतिहास ही बदल गया। नाम से भी वह महावीर के निकट आ गई और काम स भी। वास्तव मे यहा की बालिकाओ मे नाम के साथ ही वीरत्व की भावना पनप उठीं। सचालक मडल के साथ ही शिक्षिकाओ और छात्राओ ने इस नाम को सार्थक करने का दृढ मकल्प कर लिया। राज्य सरकार द्वारा भी यह नाम स्वीकृत किया गया। यही है इस वीर बालिका विद्यालय के जन्म की कहानी। श्री ढढ्ढा जी जब राज्य सरकार मे मत्री थे तब सार्वजनिक क्षेत्र मे इस सस्था का रूप निखरा। हर कार्यक्रम मे यहा की छात्राओ के कार्यक्रमो न जनता को गद्गद् कर दिया।

श्री ढढ्ढा जी के बाद श्री पूर्णचन्द जी जैन टुकलिया इस सस्था के अध्यक्ष बने। इनका आदर्श जीवन सस्था मे भी प्रवाहित हुआ। राष्ट्रीय विचारधारा और प्रेरणा इस सस्था के साथ इतनी ओत प्रोत रही कि राष्ट्र निमाण के हरेक कार्यक्रम म यह सस्था आगे रही।

सन् 1941 मे करीब 300 छात्राए यहा 15 योग्य अध्यापिकाओ द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रही थी। सस्था का खर्चा 16 हजार रुपये वार्षिक तक पहुच चुका था।

सन् 1954 मे यहा 9वीं कक्षा खोलने का निश्चय किया गया, उस समय यह एक जोखम भरा कार्य था। सस्था की आर्थिक स्थिति सदैव से ही साधारण चल रही थी। अमुक राशि जमा कराने पर ही हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त की जा सकती थी। पर इस आर्थिक अभाव मे भी शैक्षणिक स्तर को नहीं गिरने दिया बल्कि वह ऊचा ही होता गया। सचालक मडल ने इन सब विपरीत परिस्थितियो मे भी दृढ साहस से केवल परीक्षा परिणामो के आधार पर नवीं कक्षा खोल दी। सस्था की गतिविधियो को देख कर विशेष रूप से बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन अजमेर ने हाई स्कूल की कक्षाये खोलने की स्वीकृति प्रदान कर दी। गत दस वर्षो मे सस्था का खर्चा 16 हजार से बढकर 35 हजार हो गया। अगले वर्ष ही दसवीं कक्षा खुलने पर यहा का पहला ग्रुप हाई स्कूल बोर्ड की परीक्षाओ मे बैठा और प्रथम परीक्षा परिणाम ने ही सारे राजस्थान मे यहा के पढाई स्तर की धूम मचा दी। स्थानाभाव मे विद्यालय को दो पारी मे चलाना पडा।

सन् 66 मे चार वर्ष से कम उम्र के बच्चो के लिए इसी सस्था मे वीर बाल निकेतन के अन्तर्गत शिशु कक्षाओ की व्यवस्था की गई। परिणाम उत्साहवर्धक आया, प्रथम वर्ष मे ही 50 बालको ने प्रवेश लिया। छोटे बच्चो की शिक्षा मे पारगत शिक्षिकाओ की नियुक्ति की गई। यह योजना आसपास के क्षेत्रो मे अत्यधिक लोकप्रिय हुई। (आज तो छ -छ विभाग शिशु कक्षा के चलाकर हमे प्रवेश के लिए माफी

मांगनी पड़ रही है।)

इस काल में संचालक मंडल के अध्यक्ष जयपुर के समाज सेवी श्री जतनमल जी लूनावत रहे। आपके ठोस व सक्रिय रचनात्मक दृष्टिकोण से संस्था काफी लाभान्वित हुई। आप अपने जीवन के अंतिम काल तक संस्था के अध्यक्ष रहे। सैकण्डरी तक की शिक्षा के उन्नत परीक्षाफल ने 10 साल बाद ही हायर सैकण्डरी कक्षा खोलने का साहस प्रदान किया। बालिकाओं की अभिरुचि अनुशासनबद्ध व्यवस्था व विद्यालय के पारिवारिक संबंधों ने जयपुर नगर में इस संस्था को जो गौरव प्रदान किया वह जन जन के स्नेह का प्रतीक बना। सैकेण्डरी और हायर सैकण्डरी बोर्ड के परीक्षाफलों ने शिक्षण क्षेत्र में इस संस्था को बहुत ऊंचा उठा दिया। धीरे धीरे बोर्ड की वरीयता सूची में छात्राओं ने स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों की सूची में विद्यालय निरन्तर अपना स्थान प्राप्त करता रहा है। श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने के कारण बोर्ड ने विद्यालय को पुरस्कृत किया। यह संस्था राज्य स्तर पर प्रशंसनीय बनी और नागरिक स्तर पर भी।

ज्यों ज्यों जनता एवं शिक्षाविदों का इस संस्था में विश्वास बढ़ता रहा त्यों त्यों संचालक मंडल का साहस बढ़ता गया। दो वर्ष बाद इस संस्था के इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड आया। हायर सैकण्डरीकी छात्राओं के शुभकामना विदाई समारोह में एक दिल दहलाने वाला प्रसंग बना। कुछ बालिकायें सिसक-सिसक कर रोने लगीं। सब आगन्तुक जिनमें श्री कुम्भट साहब निदेशक उच्च मा. शिक्षा भी थे यह प्रसंग देखकर हतप्रभ रह गए। प्रधानाध्यापिका द्वारा काफी सांत्वना देने पर यह ज्ञात हुआ कि वे चाहती हैं कि उनके आगे के अध्ययन की यहीं व्यवस्था की जावे, नई कक्षायें खोली जायें। यदि ये कक्षाएं नहीं खुली तो इनका अध्ययन रुक जावेगा। इस वातावरण ने संचालक मंडल को अनूठी प्रेरणा प्रदान की। कालेज की कक्षाएं खोलने का नया नक्शा दिमाग में आया। यद्यपि इस तैयारी में एक वर्ष लगा पर आखिर में 1947 में टी.डी.सी. कला की प्रथम कक्षा खोल दी गई। नए व्याख्याताओं की नियुक्ति की गई। प्रथम वर्ष का परिणाम काफी उत्साहवर्धक रहा। परीक्षाफल 85% रहा और उसके पश्चात द्वितीय वर्ष की कक्षा भी खोल दी गई। इस कॉलेज विभाग की दोनों कक्षाओं में करीब 150 बहनें अध्ययन करने लगी।

संस्था के स्तर को कालेज तक बढ़ाने में इस संस्था के पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री सौभागमलजी श्रीश्रीमाल का विशेष हाथ है। आपकी सूझबूझ और अनुभव ने इस संस्था को यह गौरव प्रदान किया है।

● जिनसे संस्था ने मार्गदर्शन पाया :

संस्था के प्रारम्भ काल से ही श्री राजरूप जी टांक इसके मंत्री रहे। कर्मठ कार्यकर्ता के असीम गुण धारक और रचनात्मक दृष्टिकोण के धनी श्री टांक साहब के नेतृत्व में इस संस्था ने अनेक झंझावतों में से अपना मार्ग बनाया, आपने यहां की बालिकाओं को सदा पुत्रीवत माना। इस संस्था के जीवन में आर्थिक विषमताएं सदैव से संगीन रही पर श्री टांक साहब की निष्ठा को वह नहीं डिगा सकी। उनका एक ही लक्ष्य रहा पैसे के अभाव में संस्था का स्तर नहीं गिरना चाहिए। व्यवस्था के क्षेत्र में जो दायित्व मंत्री जी ने वहन किया, विद्यालय की दैनिक गतिविधियों में शिक्षा क्षेत्र में वैसा ही योगदान भाग्य से प्रकाशवती

सिन्हा के रूप मे विद्यालय को प्राप्त हुआ। महात्मा गाधी के सान्निध्य मे दस वर्ष रहकर जो सेवा भावना उन्होंने प्राप्त की,उसी का भरपूर लाभ भी मिला इस विद्यालय को। आपकी सूझबूझ ने इस सस्था को वर्तमान स्वरूप प्राप्त कराया। आपके जीवन की सादगी ने विद्यालय परिवार के हर बच्चे पर अपनी छाप डाल दी। विद्यालय के वातावरण मे गभीरता आ गई। अनुशासन व्यवस्था आ गई, नैतिकता आ गई। और आज वे नहीं रही पर इनकी छाप स्थायी बन गई।

● वर्तमान भवन का विकास

धर्मशाला मे जीवन प्रारम्भ कर यह सस्था घी वालो के रास्ते मे एक सकडी अधेरी गली के एक मकान मे आई। सस्था के पूर्व अध्यक्ष श्री सोहनलाल जी गोलेछा का असाधारण योगदान रहा, इस मकान को प्राप्त कराने मे। काफी वर्षो तक विद्यालय इसमे विकास पाता रहा। पर शिक्षा निष्णात नेताओ व आदरणीय व्यक्तियो को लाने और दिखाने का साहस शिक्षा क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा बनाये रखने वाली सस्था के सचालको को भी नहीं हो पाता था। एक झिझक थी उनको लाने मे केवल स्थान के कारण, इसी कारण सस्था भी प्रकाश मे नही आ पा रही थी। पर मनुष्य के भाग्य की तरह सस्था का भी तो अपना भाग्य होता है। सेठ सोहनलालजी दूगड को बालिकाओ का विकास केवल स्थान के कारण रुका हुआ है, यह खटक ही रहा था। विद्यालय का वार्षिकोत्सव जयपुर की जनता को अत्यधिक रुचिकर लगने लगा था। बस विद्यालय वर्ष मे एक बार इसी रूप मे जनता के सामने आता था। श्री दूगड जी को ऐसे ही एक वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता के लिए आमत्रित किया गया, बदले मे मिली फटकार। पर वह फटकार सस्था के भाग्योदय का प्रतीक बन गई। (आगे अलग से पूरी घटना का जिक्र किया गया है)। विद्यालय को अपना नया भवन मिल गया, कल्पनाये साक्षात हो गई, आजादी की सास विद्यालय परिवार ने इस भवन मे जाकर ली। पर भवन का क्षेत्र क्या विकसित हुआ, कार्य का क्षेत्र उससे भी अधिक फैलाव पा गया। अगले ही वर्ष इस सस्था के लिए यह नया भवन भी छोटा पड गया और शिशु कक्षाये वापस पुराने भवन मे भेजनी पडी। कार्यकर्ताओ के सामने नई दुविधा आ गई। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है।' अब इस भवन के विकास की बात सोची जाने लगी। विद्यालय की एक मेधावी छात्रा कुमारी शाता (लेखक की छोटी बहन) का विवाह के तुरत बाद ही निधन हो गया। इसकी स्मृति एव विद्यालय से उसके सबध को चिरस्थाई रखने के लिए उनके परिवार की ओर से एक बडा कक्ष यहा नया बनाया गया, औरो को भी इससे प्रेरणा मिली। सचालक मडल को भी यह दिखने लगा कि प्रयास करने से सारा विद्यालय इसी मकान मे चलाया जा सकता है। भाई छुट्टन लाल जी बैराठी को भी साध्वी जी महाराज से प्रेरणा मिली, प्रवेश द्वार के सामने की दो मजिल तक का कक्ष उन्होंने नये सिरे से बनवाया फिर तो प्रतिवर्ष दाताओ के सहयोग से भवन का विकास होने लगा। इसी बीच विद्यालय भवन के पास की जमीन राज्य सरकार ने सस्था को दिलवाई। धीरे धीरे इस भवन ने आज का रूप पाया है। सेठ दूगड जी का लगाया बीज विकसित हुआ और शहर के मध्य सुरक्षित स्थान पर शात वातावरण मे शिशु स्तर से कालेज स्तर तक चलने वाली इस एक मात्र बालिका विद्यालय ने अपना सादा किन्तु उपयुक्त भवन पाया।

भवन के विकास मे श्रीमती किरणदेवी जी बैराठी,

श्री मणिलालजी दोसी, श्री मन्नालाल जी सुराना, श्री वल्लभचन्दजी भसाली, श्री पूनमचंद जी, श्री हरिशचंद जी बडेर, श्री अमरचन्दजी, श्री धर्मचन्दजी नाहर, श्री जेम्स ट्रेडिंग कम्पनी, श्री मानकचंदजी, श्री केसरीचंदजी गोलेछा, श्री भंवरमलजी, श्री रतनचंदजी सिंघी, श्री अमरचंद जी धांधिया, श्री त्रिलोकचंदजी वैद, श्री राजमलजी सुराना, श्री राजरूपजी, श्री दुलीचंदजी टांक एवं श्री बुधसिंह जी हीराचंद जी वैद का प्रशंसनीय सहयोग रहा। संचालक मंडल इस पुत्री पाठशाला के लिये प्रदत्त सहायता के लिए हृदय से आभारी है।

● आर्थिक समस्या

सरस्वती की साधना में लक्ष्मी का योगदान कम रहे तो नई बात नहीं है। और फिर इस संस्था की स्थापना भी तो लक्ष्मी पुत्रों द्वारा नहीं बल्कि एक त्यागी साध्वी के हाथों जो सम्पन्न हुई थी।

प्रारम्भ से ही आर्थिक स्थिति कमजोर रही पर संस्था का भाग्य दो तरह से अनुकूल रहा, एक तो विद्यालय परिवार विशेष कर शिक्षिकाओं ने आड़े वक्त में पूर्ण सहयोग दिया। दो-दो, तीन-तीन माह में भी वेतन मिला तो प्रसन्नता से लिया और अपनी सेवाओं और भावनाओं में व्यवधान नहीं आने दिया। दूसरे जब भी ऐसे आर्थिक संकट आये दैनिक सहायता के रूप में कार्य बन गया। इस स्थिति से इस ओर गंभीरता से कभी ध्यान ही नहीं दिया। और फिर राजरूपजी साहब का खजाना इस संस्था के लिए सदैव उपलब्ध था ही। पर ज्यों-ज्यों संस्था का विकास होता जा रहा था त्यों-त्यों खर्चा बढ़ना स्वाभाविक था। ऐसे महंगाई के युग में कब तक इस तरह घाटे की सरकार चल सकती थी, अब संस्था शिशु नहीं रही थी व्यस्क हो चली थी, चिन्ता स्वाभाविक थी।

फिर एक अवसर आया श्री राजरूप जी साहब का नागरिक अभिनन्दन हुआ। उनके पुत्रवत शिष्य परिवार ने सोचा यह कैसा नागरिक अभिनन्दन है जब पिता कन्याओं के कारण विद्यालय चिन्ताग्रस्त हो तो यह सब कुछ कैसे अच्छा लग सकता है। 63 वर्ष के श्री टांक साहब को पत्रम पुष्पम के रूप में शिष्य परिवार ने 63 हजार की थैली भेंट की और विद्यालय ने वह पाकर अपनी व्यवस्था और आर्थिक समस्या से थोड़ा त्राण पाया। समस्या का समाधान तो हुआ पर समाधान ने नई समस्या को पनपा दिया। विद्यालय का स्तर सैकेण्डरी से महाविद्यालय बन गया। फिर वही चिन्ता पर विद्यालय का परिवार इतना विस्तृत हो चुका है कि आज समाज का कोई परिवार ऐसा नहीं जिसमें किसी भी रूप में यहां की छात्रा न पहुंची हो। इस स्थिति में विद्यालय को चिन्ता मुक्ति मिलेगी इसमें दो राय नहीं है। संस्था का आने वाला सफर भी सफल व कल्याणकारी होगा।

❑

धनहीन मनुष्य को उसके मित्र, उसकी स्त्री और नौकर-चाकर तथा बंधु-बांधव सभी छोड़ देते हैं। वही जब धनवान हो जाता है तो सभी उसके पास आ जाते हैं। यही संसार है।

- चाणक्य

जीवन जीने की कला

✍ स्व श्री सौभागमल श्रीश्रीमाल

'हमारे प्रेरक स्व श्री सौभागमलजी श्रीश्रीमाल का स्वय का लिखा लेख जो उन्होने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व लिखा था, आज हमे जीवन जीने की प्रेरणा दे रहा है।'
– सम्पादिका

जन्म मरण ससारी जीव के साथ जुड़ा हुआ है। वस्तुत जन्म मरने का ही द्योतक है, इसी तरह मरना जन्म लेने की ही पूर्व भूमिका मानना चाहिये।

एक उर्दू के शायर ने कहा है -

न जन्म कुछ, न मौत कुछ, बस सिर्फ एक बात है।
किसी की आख लग गई किसी की आख खुल गई॥

पर हर आदमी यह नहीं जानता कि जीना कैसे चाहिये और साथ ही मरना कैसे? वास्तव मे जीवन जीना भी एक कला है। ज्ञानी से पूछिये, वह बतायेगा कि मरना भी एक बड़ी कला होती है। तपे हुए, तप का पालन किये गये व्रतो की और पठन, मनन और चिन्तन किये गये ज्ञान का सार समाधि युक्त मरण ही है।

शास्त्रो मे मृत्यु के दो प्रकार बताये गये है - 1 अकाम मरण 2 सकाम मरण। अकाम मरण तो बार बार होता है पर सकाम मरण किसी बिरले साधक का ही होता है। इसमे व्यक्ति इच्छापूर्वक मृत्यु का वरण करता है। वह सलेक्षण करता है, यह समाधिकरण है। जैन मान्यतानुसार श्रमण और श्रावक दोनो के लिए सलेखना आवश्यक मानी गई है। इसे व्रतराज माना गया है। जीवन के अतिम समय मे की जाने वाली यह एक उत्कृष्ट साधना है। सारे जीवन मे कोई साधक उत्कृष्ट तप की साधना करता रहे, पर अत समय मे राग-द्वेष के दल दल मे फस जाये तो उसका जीवन निष्फल हो जाता है। उसकी वह सारी साधना विराधना मे परिवर्तित हो जाती है। सलेखना मन की उच्चतम आध्यात्मिक दशा का सूचक है। यह मृत्यु का आकस्मिक वरण नहीं है और न यह मौत का आह्वान ही है, वरन जीवन के अतिम क्षणो मे सावधानीपूर्वक चलना है। वह मृत्यु का मित्र की तरह आह्वान करता है, "आओ मित्र! मै आपका हृदय से स्वागत करता हू, मुझे शरीर पर लेशमात्र मोह नहीं है। मैने अपने कर्तव्य को पूर्ण किया है और अपने स्वय के लिए सुगति का मार्ग ग्रहण कर लिया है।

इस प्रकार सलेखना जीवन की अतिम आवश्यक साधना है। अत सलेक्षना को हम स्वेच्छा मृत्यु कह सकते है। इसमे साधक कायर की भाति मुह मोड़ता नहीं, किन्तु वीरसेनानी की तरह मुस्कराते हुए मृत्यु का आलिगन करता है। यह मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की कला सिखाती है। यह जीवन शुद्धि और मरण शुद्धि की ही एक प्रक्रिया है। आचार्य अभयदेव ने परिभाषा करते हुए सलेखना के लिए लिखा है "जिस क्रिया के द्वारा शरीर एव कषाय को दुर्बल और कृश किया जाता है वह ही सलेखना है"। अर्थात चरम अनशन की विधि को अथवा शरीर को कृश करने को ही सलेखना कहा जाता है, पर सलेखना तभी सार्थक होती है जब काया और कषाय दानो ही कृश होती जाये।

प्रसिद्ध शायर शेखशादी ने कहा है -

जब इसा आया जगत मे, सब हसे, खुद रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हसो, जग रोये॥

यह है जीवन जीने की कला।

❑

प्रसंग जो सदैव याद रहेंगे

✍ **हीराचन्द बैद**
मंत्री

श्री वीर बालिका विद्यालय जयपुर का हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका भी प्रकाशित हो रही है। करीब 54-55 वर्षो से मैं संस्था से सम्बद्ध हूँ। वैसे तो अनेक प्रसंग विद्यालय के सम्बन्ध में ऐसे हैं जो रह-रहकर स्मृति पटल पर आ जाते हैं पर उनमें भी कुछ तो ऐसे हो गये जो कभी भुलाये नहीं जा सकते। ऐसे कुछ प्रसंग लेखबद्ध कर इस खण्ड के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

● **मुझे क्यों बुलाया जाता है ?**

साल, संवत् तो सही याद नहीं पर विद्यालय का एक वार्षिकोत्सव जौहरी बाजार में स्थित देवडी जी के मन्दिर में सम्पन्न हुआ था। विद्यालय की गतिविधियों मे यहां के सालाना जलसों का भी अपना कीर्तिमान था। आज या कल से नहीं पर 50 वर्ष पहले से भी, विद्यालय के संचालक मण्डल ने इस यादगारी जलसे की सदारत के लिए सेठ सोहनलाल जी दूगड का नाम तय किया था। यह आप जानते ही होंगे कि उन दिनों विद्यालय से उनका कुछ निकट सम्बन्ध भी बन गया था। वे यहां की पढाई व अनुशासन से बहुत प्रभावित हो गये थे। यह भी आप याद रख लें कि उस वक्त ये विद्यालय आज के भवन में नही था। देवडी जी के मन्दिर के पीछे, घी वालों के रास्ते में एक तंग सी गली में यह विद्यालय चलता था।

संचालक मण्डल के निर्णयानुसार सेठ साहब, जो उस वक्त फतेहपुर विराजते थे तथा कुछ अस्वस्थ भी थे, को पत्र लिखा गया और अध्यक्षता के लिए उनकी स्वीकृति मांगी गई। पत्र के उत्तर में उनका जो पत्र मिला उसकी शुरू की पंक्तियों ने हमारा उत्साह ही भंग कर दिया। जैसे ही मैं चा.सा. (श्री राजरूपजी साहब) के पास पहुँचा, उन्होंने मेरे हाथ में वह पत्र दिया। मैंने पत्र पढ़ा तो हैरत में रह गया, लिखा था, 'मैं ऐसी किसी संस्था के उत्सव की अध्यक्षता नहीं कर सकता जो बालिकाओं के जीवन के साथ खिलवाड़ करती हो।' नीचे तो और भी कठोर शब्द थे और अन्त में अपने आशय को स्पष्ट करते हुए लिखा था कि, 'एक छोटी सी जगह में आप स्कूल चलाकर महान अन्याय कर रहे हैं, इसलिए मैं नहीं आऊँगा। हॉ, कोई खुला, हवादार व बड़ा स्थान आप स्कूल के लिए खरीदें तो मैं आ सकता हूँ।' यहॉ ये बताना कतई गैर वाजिब नहीं होगा कि इस संस्था की माली हालत कभी दृढ़ नहीं रही। जयपुर राज्य के वक्त भी इस संस्था को केवल परीक्षाफल एवं अनुशासन के कारण ही अपवाद के रूप में कक्षाएं बढाने की अनुमति मिलती रही। इसमें कोई अतिश्योक्ति नही है कि यदि इस संस्था को श्री राजरूप जी साहब का संरक्षण नहीं मिला होता तो कब का ही इस संस्था का समापन समारोह भी मन जाता। श्री टांक साहब ने सदैव एक ही बात हम लोगों के सामने रखी कि यह आर्थिक संघर्ष ही संस्था की सच्ची कसौटी है, इस संस्था का स्तर कभी भी

होगा वैसी ही सस्था ढाली जा सकेगी और वीर बालिका विद्यालय को सरकार व जनता के प्रकाश मे लाने मे उनका बहुत वडा हाथ था। न तो इतना सस्था का सामर्थ्य था कि पत्र के अनुरूप हम उनके वेतन दे सके ओर न ही यह कहने का साहस था कि आर्थिक दृष्टि से इतना वडा त्याग कर इसी सस्था मे वनीं रहे। पत्र मैंने ले लिया और आया चाचा साहव के पास। 'मुल्ला की दोड मस्जिद तक' सारी वात चाचा साहव के सामने रखी, वे भी क्या कर सकते थे। उदासीन भाव से एक ही वाक्य उनके मुख से निकला 'जो सस्था का भाग्य होगा, वही होगा'।

दूसरे दिन विद्यालय मे हम तीनो ही एकत्रित हुये वडी गम्भीर समस्या थी, उस वक्त। वहिनजी ने हसते हुए पूछा कहिए, बाबूजी को क्या उत्तर लिखू वे हस रही थीं और हम अन्दर ही अन्दर घुट रहे थे। चाचा साहव ने कहा, 'वहिन प्रकाशवती जी, हमारा तो इतना सामथ्य नही ओर आपका विकास हम रोकना नहीं चाहते। बाकी इस सस्था के लिए कोइ सुयोग्य प्रधानाध्यापिका वताना आपके जिम्मे है।'

प्रकाशवतीजी की मुद्रा कुछ अजीब सी लग रही थी- उनके चेहरे पर दृढता के साथ अपनत्व की झलक दिखाई दे रही थी। वे वोली, 'भाईजी, चिन्ता न करे, इस सस्था का स्नेह मेरे लिए उस आर्थिक और विकास की स्थिति से ज्यादा हृदय मे घर किये हुए है। मैंने सकल्प कर लिया है कि मै सरकारी नौकरी मे नहीं जाऊगी। इसी विद्यालय और इन छात्राओ की सेवा मे अपना तन-मन लगाऊ गी, मेरी आर्थिक स्थिति की चिन्ता करने वाले आप है ही, मै क्यो मेरा दिमाग खराव करू ? मुझे कोई प्रलोभन नही है, मेरा पेट यहा भी भर जायेगा। मेरी इच्छा यही है कि मै अपने जीवन में इस विद्यालय को ऊँचे से ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित करा सकूँ। आप निश्चित रहे, मै इस विद्यालय को छोडकर कहीं नहीं जाऊगी।' कैसा समर्पण था, हम द्रवित हो गये। और बात सच निकली अपने जीवन के अन्तिम श्वास तक वे कर्मशील रही, इस सस्था को इतने ऊँचे स्तर पर उठा सकी। काश वे आज होतीं।

● विदाई समारोह बनाम शुभ कामना समारोह

जैसा कि हर विद्यालय का रिवाज है, जब ऊची कक्षा की बालिकाए विद्यालय शिक्षण की अन्तिम परीक्षा देती है ओर अगले वर्ष मे अब वे यहाँ नहीं पढेगी यह तय हो जाता है तो उस बिछोह के स्मृति रूप मे विदाई समारोह आयोजित किया जाता है। ऐसा ही इस विद्यालय मे भी होना स्वाभाविक था। लगातार दो-तीन साल तक इस समारोह आयोजन के वक्त जो दु खद स्थिति वनती थी उससे क्या शिक्षिकाए, क्या सचालक मण्डल के सदस्य और क्या अतिथि, सब ही परेशान हो जाते थे। होता यह था कि कुछ साम्कृतिक कार्यक्रम चलते तब तक तो तूफान के पहले की सी शान्ति रहती और जैसे ही विदाई समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ कि विदा होने वाली वालिकाये धू-धू कर रोने लगतीं। शिक्षिकाए मनातीं, प्रधानाध्यापिका भी प्रयास करती, पर रोना वन्द नही होता। बहुत प्रयास कर शान्त करते और पूछते तो सिसकते-सिसकते बोलती, हम इस विद्यालय से और दूसरी जगह नहीं जावेगी-या तो यही पढाने की व्यवस्था करिए या आगे पढना ही बन्द कर देगी।

● भाईयो द्वारा भेट राशि वहिनो को

वैसे तो यह सीमित परिवार रखने का युग है। पर यहा हम एक ऐसी कहानी लिख रहे है जहा यह परिभाषा टूट जाती है। आदरणीय राजरूप जी स्वय भी मानते है और बडे लोगो को ऐसा कहते सुना है कि वीर

बालिका विद्यालय की छात्राएं उनकी पुत्रियां हैं, वह संख्या पहले तो कुछ सैकडों में थी अब सीमा लांघकर हजारों के ऊपर पहुंच चुकी हैं। मैंने ऊपर बतलाया कि विद्यालय की आर्थिक समस्या सदैव चाचा साहब के मस्तिष्क में रहा करती थी। यद्यपि हर स्थिति में पिता का पुत्री के प्रति कर्त्तव्य को निभाया और कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि पुत्रियां अभावग्रस्त हैं, फिर भी एक बार संचालक मंडल की बैठक में अपने स्वास्थ्य का हाल बताते हुए संस्था की आर्थिक समस्या के प्रति उन्होंने अत्यधिक चिन्ता प्रकट की। ऊपर के लेखन से अनभिज्ञ बन्धु यह समझ लेने की कृपा न करें कि चाचा साहब सैकडों कन्याओं के ही पिता बने-पुत्रों का अभाव है। विद्यालय की तरह उन्होंने अपनी व्यापारिक विद्यालय में सैकड़ों की संख्या में पुत्र भी प्राप्त किये हैं और आज सैकड़ों की संख्या में हम सब उनके पितृवत स्नेह से ही इस व्यवसाय में खडे हैं। हां तो संचालक मंडल की बैठक में जब यह विचार चाचा साहब ने रखा तो चार पांच जो उनके शिष्य संचालक मंडल में थे, उनकी वेदना को समझ गए। चाचा साहब की यही भावना थी कि संस्था का क्षेत्र विकसित होता जा रहा है आर्थिक फैलाव बढ़ना स्वाभाविक है। इस तरह बगैर साधनों की संस्था कब तक चलेगी।

बीज तो हमारे हृदय में जम चुका था सौभाग्य से प्रसंग आ गया। चाचा साहब का नागरिक अभिनन्दन होने की सूचना मिली। समय अत्यधिक अनुकूल लगा। मातृत्व भावना जागी, आज हम भाई कुछ सक्षम हुए हैं तो क्या बहिनों का भार अब भी पिता पर ही डालना उचित है ? क्या उनकी उस चिन्ता के निवारण में हम सब मिलकर भी भागीदारी नहीं बन सकते ? प्रयास प्रारंभ किया शुभ उद्देश्य कभी निष्फल नहीं जाते। चाचा साहब ने उस वक्त अपने जीवन की 63 देहलीयां पार की थी, बस वही सीमांकन बना लिया अंक भी बडे शुभ थे। एक ओर दोनों अंकों का योग अक्षय अंक नौ का बनता था, तो दूसरी ओर स्नेह मित्रता और प्रेम का सूचक यह अंक था। कहते हैं दो मित्रों को 63 बनना चाहिये 36 नहीं। और सही कहूं तो इतना उत्साह इन अंकों के शुभ दिखने से जमा। त्रेंसठ हजार की राशि एकत्रित की। भाइयों की बहिनों के प्रति शुभ कामना की प्रतीक यह राशि जैसे ही थैली रूप में नागरिक अभिनन्दन में भेंट की गई। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका स्व. श्री प्रकाशवती जी स्वप्रेरणा से मंच पर आई और चाचा साहब से यह थैली बालिका विद्यालय के लिये मांग ली। स्वाभाविक रूप से यह प्रसंग बन गया - चाचा साहब की चिन्ता हल्की हुई भाइयों द्वारा बहनों के प्रति कर्त्तव्य की कहानी साक्षात हुई और इसी भेट ने विद्यालय को महाविद्यालय के रूप में आने का मार्ग प्रस्तुत किया। इस घटना ने फिर सिद्ध कर दिया कि सही दृष्टिकोण, सच्ची लगन और निस्वार्थ सेवा भावना से प्रेरित कार्य दैविक सहायता प्राप्त कर लेते हैं।

विद्यालय की जीवन कहानियों में अनेक अनकही कहानियां हैं पर प्रसंग पर जो याद आ गई वह आप तक इस अवसर पर पहुंचा रहा हूं।

- **सरस्वती की सेवा हमारा लक्ष्य :**

एक बार ऐसा प्रसंग बना की दस तारीख तक भी अध्यापिकाओं और कर्मचारियों को वेतन नहीं दिया जा सका। उस समय न तो संस्था के पास फण्ड था और न ही सरकार से अनुदान की राशि प्राप्त हुई थी। ऐसी स्थिति में चाचा सा. राजरूपजी साहब बहुत चिन्तित थे, वे विद्यालय में आये और

प्रधानाध्यापिका कार्यालय मे उदास से वेठ गये। चाचा साहब को उदास वैठे देखकर तत्कालीन प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा ने पूछा, भाई साहब आज इतने उदास कैसे है ? चाचा साहव ने कहा बहिन जी, अध्यापिकाओ ओर कर्मचारियो को वेतन नहीं दिया जा सका है। वे कितने कष्ट मे होगे। इतने मे 4-5 अध्यापिका वहिने कार्यालय मे आई, उन्होंने चाचा साहब की सारी वाते सुनी और कहा चाचा साहव आप चिन्ता नहीं करे,हम व्यवस्था होने पर अगले माह वेतन ले लेगे। आप इस वात की चिन्ता नहीं करे, हम वेतन के लिए नही, सरस्वती की सेवा के लिए यहा काम कर रहे हे। कैसा स्नेह भाव इन सबका सस्था के प्रति था, यह देखकर चाचा साहब को बहुत शाति मिली। वास्तव मे इस सस्था का परीक्षा परिणाम ओर अनुशासन इसी भावना का प्रतीक रहा हे।

- **कैसी कैसी परिस्थितियो मे यह सस्था गुजरी**

सचालक मडल ने कालेज स्तर की कक्षाए खोलने का निर्णय तो लिया पर न तो सस्था के पास फण्ड था न योग्य प्राध्यापिकाए थीं और न ही कक्षाए चलाने के लिए स्थान था, यह बात विद्यालय मे प्रधानाध्यापिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव के सामने आई। श्रीवास्तव बहिन जी ने अपनी सूझबूझ से विद्यालय मे कार्यरत शिक्षिकाओ से चर्चा की, परिणाम आश्चर्यजनक आया। विद्यालय मे कार्यरत बहिनो ने आश्वासन दिया कि न तो कालेज के लिए हमे अतिरिक्त खर्चे की जरूरत है, न प्राध्यापिकाओ की और न ही भवन की, कालेज स्तर की कक्षाओ के लिए समस्त व्यवस्था विद्यालय भवन मे ही कर लेगे।

सैकण्डरी, हायर सेकण्डरी के स्टाफ ने कालेज स्तर की कक्षाओ की छात्राओ को शिक्षण देने की जिम्मेदारी ली और प्रथम 2 वर्षो मे ही परीक्षाफल 90% से ऊपर रहा। इस पर सचालक मडल का साहस औग वढ गया। चा साहब श्री राजरूप टाक वाइस चासलर साहव के पास कॉलेज की मान्यता के लिए गए, उन्होंने कहा आपके पास जगह नहीं, योग्य प्राध्यापिकाए नहीं और आप केवल परीक्षाफल के आधार पर महाविद्यालय की मान्यता चाहते है, यह कैसे सभव हो सकता है ? इतने मे ही विश्वविद्यालय मे काम करने वाले एक अधिकारी वाइस चासलर के कक्ष मे आये, उन्होंने यह वात सुनी और वाइस चासलर साहव को कहा "सर आप इनको नहीं जानते" ये जयपुर के प्रसिद्ध जोहरी और समाजसेवी श्री राजरूप जी टाक है। कालेज के लिए समस्त व्यवस्थाए ये तुरत कर देगे। आप विश्वास रखे। वाइस चासलर साहव को यह वात जम गई और कालेज स्तर की मान्यता दे दी गई।

चाचा साहव और हम वापिस घर आये। चाचा साहव के दिमाग मे एक ही बात घर कर गई कि महाविद्यालय के लिए सबसे पहले भवन की व्यवस्था करनी है। सोभाग्य से 2-4 दिन बाद ही एक दलाल मकान की बात लेकर आया और चाचा साहव ने तुरत सौदा कर लिया। उस समय इस मकान मे सैकडो सिधी शरणार्थी रह रहे थे, उनसे खाली कराना बहुत बडी समस्या थी, परन्तु चाचा साहब का साहस था और उन्होंने हर प्रयत्न से मकान को खाली कराया और महाविद्यालय की कक्षाओ को स्कूल भवन से स्थानान्तरित कर दिया गया। शहर की चार दिवारी मे यह पहला महाविद्यालय वना। इसमे आज लगभग 1200 वालिकाए शिक्षण प्राप्त कर रही है और

परीक्षा परिणाम भी श्रेष्ठ रहता है चाचा साहब की सूझबूझ से यह शिक्षण संस्था जयपुर में मध्यमवर्गीय परिवारों की बालिकाओं के शिक्षण के लिए सुलभ व महत्वपूर्ण बन गई है।

- **कंकर को हीरे बनाकर भी संतोष नहीं :**

महाविद्यालय के निरीक्षण हेतु विश्वविद्यालय के अधिकारी पधारे हुये थे, मैं भी वहां उपस्थित था, उस वर्ष कॉलेज की कक्षाओं का परीक्षा परिणाम 90% से भी ऊपर था। निरीक्षण के लिये आये हुये श्री एल.पी. वैश्य साहब ने कहा संस्था के इस परीक्षा परिणाम के लिए मैं आप सबको बधाई देता हूं। अचानक मेरे मुंह से यह निकल गया कि हमें तो इस परीक्षा परिणाम से भी संतोष नहीं है, शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम आना चाहिये। वैश्य साहब ने कहा, सरकारी महाविद्यालयों में 60% अंक वाली छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है और आप 33% पर भी प्रवेश करते हैं और सरकारी महाविद्यालयों के परीक्षा परिणाम से दोहरे उच्च परीक्षा परिणाम प्राप्त करते हैं, फिर भी आपको संतोष नहीं है। आप कंकर को हीरा बना कर भी संतोष नहीं करते। कैसी विडम्बना है। यह थी अधिकारियों व शिक्षाप्रेमी विद्वानों की संस्था के प्रति विचारधारा।

- **मुझे किसी ने इस संस्था के संबंध में बताया ही नहीं :**

महाविद्यालय के एक कार्यक्रम में प्रथम बार राजस्थान के उच्च शिक्षा मंत्री श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी पधारे थे। संस्था का परिचय देते हुए मैंने इतना सा निवेदन किया कि आज की सरकार जो बालिकाओं की शिक्षा के लिए अलख जगा रही है, वैसा अलख आज से 75 वर्ष पूर्व एक जैन साध्वी की प्रेरणा से जैन श्वेताम्बर समाज ने जगाया था और संस्था के परीक्षाफल, गतिविधियां, अनुशासन आदि के संबंध में जानकारी देते हुये मैंने राज्य सरकार के शिक्षा विभाग से आवश्यक सहयोग नहीं मिल ने के संबंध में दो शब्द कह दिये। चतुर्वेदी जी ने अपने भाषण में सबसे पहले यह कहा कि ऐसी व्यवस्थित और सेवाभावी संस्था के लिए मुझे न तो आपके संचालक मंडल ने बताया और न ही विभाग के अधिकारियों ने जानकारी दी।

मैं राज्य के उच्च शिक्षामंत्री के नाते आज आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपकी समस्याएं इसी वर्ष में हल कर दी जावेंगी। मेरा विश्वास रखें।

- **एक शिकायत संचालक मंडल की**

इस विद्यालय के परीक्षा परिणाम राज्य के सभी विद्यालयों में अपना प्रमुख स्थान प्राप्त करते रहे हैं पर संचालक मंडल की ओर से एक ही बात सदैव आती रही कि योग्यता सूची में श्री वीर बालिका का नाम नहीं आवे तब तक हमें संतोष नहीं।वर्षो से संचालक मंडल की यह भावना भी विद्यालय स्टाफ के अथक प्रयास से पूरी हुई और लगातार योग्यता सूची में श्री वीर बालिका विद्यालय की छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया। इतना ही नहीं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रतिवर्ष 50 सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों की सूची निर्धारित करता है उसमें भी इस विद्यालय का स्थान आता रहा है, ऐसी संस्था का सदस्य होकर मैं बिना गर्व किये नहीं रह सकता।

चित्रकार की भूल

राजबाला सिघी

एक चित्रकार ने अद्‌भुत चित्रकला से नगर मे विशिष्ट ख्याति प्राप्त की अनेक कला सस्थाओ ने उसको चित्रकला के लिये पुरस्कृत किया। चित्रकार ने अनेक प्रदर्शनियो का आयोजन किया। जो भी उसके चित्रो को देखता मुक्तकठ से प्रशसा करता था।

परन्तु चित्रकार के वृद्ध पिता कभी अपने पुत्र की प्रशसा नहीं करते। जब भी चित्रकार किसी नए चित्र का निर्माण करता, अपने पिता को वह चित्र दिखलाता। पिता उसमे कुछ न कुछ त्रुटि निकाल देते। वह उसे पुन बनाता, अपनी कला को और निखारने का प्रयत्न करता पर दक्ष पिता रग-आकार, भावो की अभिव्यक्ति आदि को लेकर कोई न कोई कमी निकाल देते। वे ही चित्र जब अन्य कला-पारखियो के हाथ जाते तो भारी प्रशसा पाते थे।

चित्रकार के मन मे यह कुठा पनपने लगी कि पिताजी जानबूझकर मेरी त्रुटिया निकालते है इनका तो स्वभाव ही ऐसा बन गया है चाहे कितना भी सुदर चित्र हो, पर इनका लक्ष्य तो कमी ही निकालना है। वस्तुत मेरी कला से इन्हे ईर्ष्या हो रही है अब मै कोई ऐसा मार्ग निकालूगा कि इनको प्रशसा करनी ही पड़ेगी। दोष निकालने का अवसर ही नहीं मिलेगा।

चित्रकार ने एक अत्यन्त सुदर भाव व कलापूर्ण चित्र बनाया। देखने वालो को चित्र सजीव लगता। उस उत्कृष्ट चित्र को पुत्र ने किसी अन्य व्यक्ति के हाथो पिता के पास भिजवाया और पुछवाया यह चित्र कैसा है ? जब वह व्यक्ति चित्र लेकर पिता के कमरे मे प्रविष्ट हुआ तो चित्रकार भी दरवाजे के बाहर कान लगाकर खड़ा हो गया। वह जानना चाहता था कि पिताजी क्या कहते है ? उस अद्‌भुत चित्र को देखकर पिता का मन प्रसन्नता से भर उठा। खिलकर उन्होने कहा अहा ! यह चित्र तो अद्वितीय है, अद्‌भुत है। उस व्यक्ति ने पूछा महोदय, इसमे कोई त्रुटि हो तो बताइये।

चित्रकार के पिता ने कहा, इसमे त्रुटि के लिये स्थान कहीं नहीं है। पर मै जानना चाहता हू कि इस महान कलाकृति को बनाने वाला चित्रकार कौन है ?

इतना सुनना था कि पुत्र अदर आ गया और पिताजी के चरणो मे गिरकर कहने लगा, पिताजी इस कृति का निर्माता आपका अपना पुत्र है। आपके मुह से जो बात सुनने की आकाक्षा थी वह बस आज मैंने सुन ली है सही बात तो यह है कि यही सुनने के लिये मैंने इस सज्जन के हाथ यह चित्र आपके पास भिजवाया। यदि मै चित्र लेकर आता तो आप कोई न कोई कमी अवश्य बता देते।

पिता खिन्न हो गये। कहने लगे पुत्र आज तुम्हारी कला की समाप्ति हो गई है अब तुम कभी आगे नहीं बढ़ सकोगे। आज तुम्हारे कर कौशल की इतिश्री हो गई है। मै जानबूझकर तुम्हारी कला मे गलतिया ढूढता था ताकि तुम्हारे मन मे अहकार न हो जाये। तुम अपने आपको सर्वोत्कृष्ट न मान बैठो। आज तुमने जीवन की सबसे बड़ी भूल की है।

पुत्र लज्जित हो गया। उसे अपनी भूल समझ मे आ गई कि जो अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मान लेते है वे जीवन मे कभी आगे नहीं बढ़ सकते।

आवश्यकता लोक सेवक-सेविका की

✍ धनपति टुंकलिया

इस वर्ष हम अपने महान देश की स्वाधीनता प्राप्ति की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। हाल के पिछले वर्षों में हमने राष्ट्रपिता महात्मागांधी की सवा सौवीं जयंती और आचार्य विनोबा भावे की जन्म शताब्दी मनाई। इन सबको जोड़ने की कड़ी रूप, विनोबाजी द्वारा स्थापित निर्भय, निर्वेद, निष्पक्ष आचार्यो का संगठन आचार्य कुल 11 सितम्बर 1994 से 2 अक्टूबर 1997 तक जय जगत महोत्सव मना रहा है और जय जगत में भी यात्रा चल रही है। यह सुखद संयोग ही है कि "गुलाबी नगरी" के रूप में विश्वविख्यात जयपुर नगर की चार दीवारी में स्थित श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान इस वर्ष अपनी स्थापना का हीरक जयंती महोत्सव मना रहा है। संस्थान की स्थापना स्थानीय श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा महिला शिक्षा और उनके उत्थान के महान उद्देश्य से आजादी प्राप्ति से बहुत पहले उस समय की गई थी जब विदेशियों के आक्रमण और दास्ताओं के दौर में हमारे देश में महिलाओं की स्थित बहुत बिगड गई थी। एक महान उद्देश्य के लिये ऐसी संस्था की स्थापना करने वाले और उसको उत्तरोत्तर विकास पथ पर ले जाने वाले हम सबके श्रद्धा व नमन के पात्र हैं।

गांधीजी और अन्य असंख्य ज्ञात अज्ञात स्वतंत्रता सैनिकों के त्याग बलिदान से हमें विदेशी अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली। गांधीजी स्वयं सवा सौ वर्ष जीवित रहकर देश समाज की सेवा करना चाहते थे। उसे अपने पहले वाले गौरव तक पहुंचाना चाहते थे। लेकिन 80 वर्ष के होने से पूर्व ही उनकी हत्या कर दी गई और विनोबा जिनको गांधीजी ने स्वराज्य के लिये 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में पहला सत्याग्रही घाषित किया था, 87 वर्ष हमारे बीच रहे, फिर आहार औषध आदि का त्याग कर के स्वेच्छा मात्र स्वीकार किया। यानि मरण के लिये जैन परम्परा की संथारा विधि को अपनाया। ऐसा उन्होने परोक्ष गोवध निषेध के लिये किया। गांधीजी की हत्या हुई और विनोबा ने स्वेच्छामरण स्वीकार किया। देश दुनिया की क्या, पूरे मानव समाज की बदली परिस्थितियां, प्रत्येक को आत्मचिन्तन के लिये बाध्य कर रही हैं। ऐसा क्यों ? क्या ऐसा ही होता रहेगा ?

गांधीजी जिन जीवन मूल्यों के लिये आजीवन जूझते रहे, उन तमाम मूल्यों में गिरावट उनके सामने ही शुरु हो गई थी और उन्होंने भी सवा सौ वर्ष जीने की इच्छा छोड दी थी। गांधीजी ने कहा था मैं भ्रम में रहा कि जनता में सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा हुई है, जनता ने मेरी आंखें खोल दी, अब 125 वर्ष जीने की कोई उम्मीद नहीं है। उधर विनोबा जी ने अपने जीवन का सार इन शब्दों में पहले ही व्यक्त कर दिया था कि "मैंने जीवनभर सबको जोड़ने का काम किया। हृदय जोड़ने के लिये और सत्य की खोज के लिये, दुराग्रह तो काम का है ही नहीं, लेकिन सत्य का आग्रह नहीं चाहिये।" सर्वोदय अथवा गांधीवाद के मार्ग के सिमटते शून्य के आशादीप को प्रज्जवलित रखने के लिये विनोबा जी ने इच्छा प्रकट की थी कि नेतृत्व का

युग तो समाप्त हो गया, अब सेवकत्व का युग है।

पच विध काम - विनोवा जी ने सर्वोदय सेवको से अपेक्षा की थी कि उनका बुनियादी और प्राथमिक काम यह रहेगा कि वे जीवन शोधन का काम करेंगे। अपने निजी जीवन की भी शुद्धि व अपने कुटुम्बीजन, मित्र सहधर्मी, सबकी जीवन शुद्धि नित्य निरतर परखते रहें। वह यह भी देखे कि अपनी आजीविका का मुख्य अश जहा तक हो सके उत्पादक शरीर श्रम पर चलाये और निजी पारिवारिक तथा सामाजिक तीना दृष्टि से प्रयोग करे। यह सारा जीवन शोधन का बुनियादी काम उनका प्रथम कार्य होगा। दूसरी बात उन्हे यह करनी होगी कि वे नित्य निरन्तर अध्ययनशील रहे। लोक जीवन की जितनी शाखाय-उपशाखाये है, उनका वे अध्ययन करेंगे। हर तरह की उपयुक्त जानकारी उनके पास रहेगी। बिना अध्ययन के कोई भी समाज गहरा काम नहीं कर सकता।

तीसरी बात यह है कि जो उपेक्षित क्षेत्र है, जिनकी ओर समाज और सरकार का ध्यान नहीं है, उनकी ओर ध्यान देना। सब तरह की सेवा मे दिन रात निष्काम बुद्धि से लगे रहना। दीर्घकाल मे उसका फल मिलेगा, ऐसी निष्ठा रखकर कभी तेज कम न होने देना और चारो ओर अधेरा फैला हो, तो भी दीपक के समान अधेरे का भान न रखकर मस्ती से सेवा करते रहना उनका काम होगा।

चौथा काम, समाज जीवन म या सरकारी कामो मे जहा कहीं गल्ती देखे, वहा उनका निर्देश करना। यह जरूरी नहीं कि यह निर्देश जाहिर तौर पर ही किए जाए, परन्तु जहा जाहिर तौर पर निर्देश करने का मौका आए, वहा राग द्वेष रहित होकर स्पष्ट शब्दो मे उसे जनता के सामने रखना तथा उसमे अपनी प्रतिभा प्रकट करना, उनका काम होगा। कभी-कभी उन दोषो के लिये क्रियात्मक प्रतिकार का मौका भी आ सकता हे। वह इतना सहज होगा कि जिनके विरोध मे वह होगा, उन्हे भी वह प्रिय लगेगा, क्योकि वह उनकी सेवा के लिये होगा। उसे प्रतिकार का नाम देने के बजाय शल्य-क्रिया ही कहना ठीक रहेगा, क्योकि शल्य-क्रिया जिस पर होती है, उसे भी वह प्रिय होती है।

पाचवा काम उनका यह रहेगा कि समाज जीवन मे जो भारी मसले पैदा होते है, उनका अहिसात्मक हल वे खोज ले। अहिसात्मक तथा नैतिक तरीके से बडी-बड़ी समस्याए भी हल हो सकती है। यह वे सावित कर द तभी नैतिक तथा अहिसात्मक तरीको पर लोगो की श्रद्धा जम सकती है। लोगो को नैतिक तरीके प्रिय तो होते ही है लेकिन प्रत्यक्ष परिणाम देखे विना लोगो की निष्ठा स्थिर नहीं हो सकती। उस प्रकार के प्रत्यक्ष प्रयोग करके अहिसा को सिद्ध करना यह उस निष्पक्ष समाज का पाचवा काम होगा। इस तरह पच विध काम सर्वोदय समाज को करना होगा। आचार्य विनोवा ने कहा था कि सकल्प यदि शुद्ध होता है तो वह कभी भी क्षीण नहीं होता। *मानव निर्माण करने की शक्ति भी उस शुद्ध सकल्प मे होती है।*

आज हमारे अपने देश मे धर्म सम्प्रदायो के आचार भेद, राजनैतिक दलो के अन्तर्विरोधी विचार भेद तथा विभिन्न सस्थाओ की सकीर्ण रीति नीति के चलते आम आदमी किकर्तव्यविमूढ की सी स्थिति मे है। ऐसी हालत मे विनोवा की अपेक्षा मानव निर्माण की प्राथमिक आवश्यकता है। देश की वर्तमान निरन्तर बिगडती स्थिति के लिये सत्ताधारियो को दोष देना तो उचित ही है, लेकिन राष्ट्रपिता ने सच्चे लोकतत्रात्मक समाज की स्थापना के लिये लोक शक्ति को जागृत, सगठित और सक्रिय बनाने पर जोर दिया था,हम इसे भूल गये है। गाधीजी ने अपेक्षा की थी देश के प्रथम श्रेणी के व्यक्ति लोक सेवक बने, स्वय सत्ता मे न जाकर लोकशक्ति को शासन शक्ति पर नैतिक अकुश रखने योग्य बनाने मे लगें। इसके लिए उन्होने सात लाख ऐसे लोकसेवको की आवश्यकता बताई थी। आज हमे ऐसे लोक सेवक और लोक सेविकाओ की अत्यधिक आवश्यकता है।

❑

अर्हं नमः

अभिवन्दन 卐 अभिनन्दन

सुवर्ण श्रीजी महाराज की जय हो

✍ विचक्षण शिशु तिलक श्री

सु सुंदर जिनका नाम था, अतिसुंदर शुभ काम
सु संयम स्वीकार के, किया अमर जगनाम

वर वर्णन कर सकते नहीं, रटते अर्हं ओम को
वीर बालिका विद्यालय, जगाया जैन कौम को

ण नहीं माया नहीं लोभ था, करते जग उपकार
खर तर गच्छ की दिव्य मणि थी, उज्जवल तेज अपार

श्री श्रीमंतों को प्रबल प्रेरणा, तीर्थ शौरीपुर जीर्णोद्धार
दीक्षा शिक्षा प्रभु प्रतिष्ठा, उद्यापन यात्रा श्रीकार

जी जीवन रत्न अनमोल था, पुनित पुण्य प्रभाव
आगमज्ञानी आत्मध्यानी, सरल शांत स्वभाव

म मधुर मनस्वी महायशस्वी, वैराग्य रस भरपूर
करुणा की तो मूर्ति मनहर, कर्म रिपु चक चूर

हा हार हीरक सम आर्यामंडल, करना धर्म प्रचार
निपुण तिलक मंजुल ज्योति, विनीत भाग्य उदार

रा राग द्वेष की जउ काटन को, जपते श्री वीतराग
राज राजेश्वर तीर्थंकर पद, पा नेका अनुराग

ज जन्म मरण का चक्र मिटाने, आराधन सिद्ध चक
भवचक्र विनाशक तारक, ग्रहण करो धर्म चक्र

की कीजिये कोटि कोटि वन्दन, सुवर्ण गुरु अभिवन्दन
हीरक जयंती विद्यालय की, लाख लाख अभिनन्दन

ज जन मन रंजन अति शुभंकर, सम्यग दर्शन खास
आत्मज्ञान अध्यात्म ज्योति, प्रगटे यही अरदास

य यशमय कीति ध्वज फहराये, घर घर मंगलाचार
विश्व सकल में शांति सुजनता, प्रगटएं हर बार

हो होगी अगर श्रद्धा अटल, सफल होगा शुभ काम
जय हो जय हो सुवर्ण विचक्षण, नमन तिलक अविराम

पढ़ाना है जन-जन को

डा अजीतकुमार जैन

प्रत्येक देश अपनी अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था तथा सास्कृतिक विकास को आगे बढाने मे प्रयत्नशील रहता है। आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग मे प्रत्येक देश आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक दृष्टि से आगे बढने का उपक्रम करता है। शासन और समाज अलग-अलग या समन्वित रूप से सचेत रह कर राष्ट्रीय तथा अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपनी पहचान बनाने के लिए लालायित रहते है। लोगो की यही इच्छा व ललक उन्हे आगे बढने को प्रेरित करती है। विश्व भर के विकसित देशो मे वहा के लोगो की इच्छा-शक्ति के ऊचे स्तर ने ही उन्नति के नए सोपान अर्जित किए है। आज दुनिया भर मे विकास की होड मे लगे तीसरी दुनिया वाले देश इस विकास पथ पर चलने को अग्रसर है। आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से कमजोर देश भी आगे बढने का सकल्प लेकर अपनी बेहतरी के लिए प्रयासरत है। विकास के इन मानदडो की पहचान करना हमारे लिए जरूरी है। वस्तुत किसी भी देश का सच्चा धन केवल वहा के रुपये पैसो मे ही नही है। किसी भी देश के खनिज ससाधन, वनस्पति, उद्योग या कृषि ससाधन भी मानवीय ससाधनो के सामने गौण हो जाते है। इसलिए यह कहा भी जाता है कि किसी भी देश का सच्चा धन वहा के स्वस्थ, शिक्षित व प्रसन्न स्त्री-पुरुषो व बच्चो मे निहित होता है। इस प्रकार कुशल मानवीय ससाधन ही किसी देश के विकास का मूलाधार है।

यह सुनिश्चित हो जाने के पश्चात कि देश के विकास की पूर्वशर्त वहा के योग्य मानवीय ससाधनो पर निर्भर है, हमे उन उपायो की चर्चा करनी चाहिए जो मानवीय ससाधनो को दक्षता प्रदान करके देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करे।

मानवीय ससाधनो का गुणात्मक विकास उनके रहन सहन के स्तर, शिक्षा के स्तर, प्रशिक्षण के अवसर, स्वास्थ्य आदि तत्वो पर निर्भर है। इन सभी की प्राथमिकता तय करे तो सामान्यत जनसख्या मे सम्मिलित स्त्री-पुरुषो व बालको की शिक्षा को सर्वोच्च स्थान पर रखा जाता है। विश्व के जिन-जिन देशो ने भी विकास का ऊचा स्तर प्राप्त किया है वे लोगो की शिक्षा का स्तर ऊचा करके ही आगे बढ पाए है। बात चाहे पाश्चात्य पूजीवादी विकसित देशा की हो या समाजवादी पद्धति पर आधारित शासन व्यवस्थाओ की, सभी मे विकास के प्रारभिक चरणो मे शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर वहा के मानवीय ससाधनो को आगे बढाने के प्रयास किये गये। अब न केवल विकसित देश वरन् विकासशील तथा अर्द्धविकसित देश भी "शिक्षा" को पढने-पढाने को विकास का मूलाधार मानते है।

यह तय हो जाने के बाद कि देश के विकास मे मानवीय ससाधनो का विकास तथा मानवीय ससाधन विकास मे शिक्षा का ऊचा स्थान है, हमे इस सबध मे अपने

प्रयासों को सक्रियता प्रदान करने की आवश्यकता है। अब प्रायः सभी देश, सभी धर्म, सभी वर्ग, सभी जातियों और समूहों वाले लोग, सभी राजनीतिक दल और शासन पद्धतियां "शिक्षा" को देश निर्माण का महत्वपूर्ण सोपान समझते हैं। शिक्षा की महत्ता और आवश्यकता के बारे में कोई मतभेद नहीं है। हां, पद्धति और विषयवस्तु की भिन्नता के बारे में अलग-अलग विचार हो सकते हैं किन्तु "शिक्षा" की जरुरत के बारे में मतैक्य है।

पढ़ना-पढ़ाना तो देश बनाने का रास्ता है, प्रदेश की समृद्धि, पारिवारिक सुख और वैयक्तिक प्रगति की कुंजी है। इसी मार्ग पर चलकर अपने परिवार, नगर, ग्राम, प्रदेश या यों कहे संपूर्ण विश्व को सुखी व संपन्न बनाया जा सकता है। भारत जैसे देशों में शिक्षा व साक्षरता के फैलाव के बिना इसकी प्रमुख सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का समाधान कठिन है।

शिक्षा में साक्षरता, अंकज्ञान व सामाजिक आर्थिक कौशलों के विकास के साथ साथ महत्वपूर्ण तात्कालिक मुद्दों पर चेतना जागृति के तत्व शामिल हैं। मानव मात्र के व्यक्तित्व विकास के लिए, उसके काम धंधे से संबंधित कौशलों के निरन्तर विकास के लिए प्रगति की दौड़ में दूसरों से कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए शिक्षा एक अमोघ शास्त्र है- शक्ति है। इसी के सहारे व्यक्ति तथा परिवार अपनी आमदनी में बढ़ोतरी कर पाता है। स्वास्थ्य, स्वच्छता, पीने के स्वच्छ पानी आदि जन सुविधाओं को जुटाने में भी पढना-पढाना बहुत मदद करता है। देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं की पहचान और उनके समाधान में शिक्षा सहायक होती है। लोग अपनी बदहाली के कारणों की छानबीन करके उनको ठीक करने में पढ़ने-पढ़ाने की मदद ले सकते हैं। कुल मिलाकर देश, परिवार व व्यक्ति को देती है "शिक्षा"।

इतने बड़े देश की सारी जनसंख्या को पढ़ने-पढ़ाने से जोड़ पाना एक कठिन काम तो है। परन्तु अगर हम संकल्पबद्धता से एकजुट होकर काम करें तो यह कोई अत्यन्त कठिन बात भी नहीं है। आजादी हासिल करने के बाद इस देश में शिक्षा और साक्षरता प्रसार के अनेक प्रयास हुए हैं, परिणामस्वरूप जनसंख्या की साक्षरता दर में भी सुधार हुआ है किन्तु अभी भी साक्षरता यात्रा की एक लंबी मंजिल तय की जानी शेष है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए हजारों स्कूल खोले गए, लाखों शिक्षक इस काम में जोड़े गये। वयस्क जनसंख्या के लिए राष्ट्रीय प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सम्पूर्ण जिला साक्षरता कार्यक्रम, श्रमिक शिक्षण की महती परियोजनाएं आदि शिक्षा प्रसार के प्रयास उल्लेखनीय हैं। स्कूल से बाहर रह जाने वाले बालक-बालिकाओं के लिए लाखों अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, आंगनबाड़ी केन्द्र, बालिका शिक्षा केन्द्र, प्राथमिक शिक्षा प्रोत्साहन परियोजनाएं आदि प्रयासों ने भी शिक्षा-परिदृश्य को समुज्जवल किया है। दूरस्थ एवं शिक्षा की दृष्टि से दुरूह क्षेत्रों में शिक्षा प्रसार के अनेक नवाचार किए गए हैं। राजस्थान की शिक्षाकर्मी योजना, लोकजुम्बिस परियोजना, सरस्वती योजना, बिहार शिक्षा परियोजना आदि ने निरक्षरता पर प्रहार करके शिक्षा के फैलाव में मदद की है। इन सब प्रयासों के परिणामस्वरूप साक्षरता दर ऊंची हुई है। किन्तु आज भी देश की लगभग आधी जनसंख्या निरक्षर है। स्त्रियों में साक्षरता का प्रतिशत तो और भी नीचे

है। इस सब बात को मद्दे नजर रखते हुए यह आवश्यक है कि हम पढे-पढाए और जन-जन को शिक्षित करे।

यदि आप पढे लिखे है तो कम से कम दो और व्यक्तियो को पढाए। यदि आप ऊची कक्षाओ मे पढने वाले छात्र-छात्रा है तो अपने आसपास, घर-परिवार या मोहल्ले-बस्ती मे जो भी भाई-बहिन निरक्षर रह गए है उन्हे शिक्षित करने के पावन कार्य से जुड जाए। जो बहिने पढ लिखकर मात्र अपने घर के काम मे लगी है उनसे यह अपेक्षा करना उचित ही होगा कि वे अपने आसपास की निरक्षर बहिनो को पढाए। यह सब एक सुदृढ प्रजातत्र के लिए जरूरी है। हम आप सभी इस विद्यादान के पावन यज्ञ मे अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन करे यह जरूरी है।

इस सकल्प के पश्चात कि हम अपने पास-पड़ोस मे, गली-मोहल्लो मे घर परिवार मे निरक्षर भाइयो-बहिनो को पढाएगे और जन-जन को शिक्षित करेगे, यह जानना आवश्यक है कि हम इस कार्य को कैसे और कब करेगे ? जैसे ही आप ऐसे किसी व्यक्ति की पहचान कर ले कि वह साक्षर नहीं है, आप उससे मिल-बैठकर बातचीत करे। मिलने के पहले ही दिन से आप उसे अक्षर ज्ञान देने की उतावली न करे। उसका मन जीते, उसे आदर दे, उसका परिवेश और समस्याए जानकर फिर साक्षरता और चेतना जागृति से उसे जोडे। आजकल देशभर मे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान चल रहे है।

राजस्थान की ही बात ले तो दो-तीन जिलो को छोड़कर सभी मे सपूर्ण साक्षरता अभियान चल रहे है। इसका जिम्मा सबधित जिला साक्षरता समिति का होता है। इस समिति द्वारा साक्षरता स्वय सेवको के माध्यम से हर गाव और शहर के निरक्षरो की पहचान करके उनके शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। आप भी इस काम से जुड़ जाइए ओर पाच-छ महिनो मे किसी एक या कुछेक व्यक्तियो को साक्षर बनाकर सृजनात्मकता और विद्यादान का गौरव अर्जित कीजिये। यह काम निरक्षरो का जीवन बदलने मे और स्वय सेवको को नया और रोमाचक अनुभव प्राप्त करने मे सहायक होगा। शिक्षित और सीखने वाला समाज ही आज की जरूरत है। आइए! पढने-पढाने के काम मे हम प्राण-प्रण से जुटकर देश को आगे बढाए।

❑

भावना का महत्व

ससार का कोई पदार्थ न हमे बाधता है, न हमे मुक्त करता है। और तो क्या, भगवान भी किसी का बुरा या भला नही कर सकते। जो कुछ भी है वो सब कुछ हमारी भावना पर ही निर्भर है। भावना ही ससार का हेतु है, और यही मुक्ति का भी हेतु है। चमत्कार मनुष्य की अपनी भावना का है, बाह्य वस्तु का नही।

' यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी। '

जाकि रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

वस्तु का स्वभाव मत देखिए। मत उसे दोष दीजिए। वस्तु हमे कुछ भी प्रदान नही करती। यह तो हमारा मनोभाव है, जो वस्तु को निमित्त मानकर अपने अन्दर से ही जागृत होता है।

– अमर भारती

वन्दनांजलि

✍ साध्वी मंजुलाश्री

श्री सुवर्ण गुरु मम वन्दना स्वीकारो
श्री जिनदत्त कुशल गुरु प्रणमुं सदगुरु शरणं सुखकारी
सुविशाल श्रमणी संघ नायिका, प्रखर वक्तृ उपकारी
वर्णन नहीं कर पाते सुरगुरु, शिक्षा दीक्षा देते थे।
नश्वर काया मोह नहीं था, आत्म स्वभाव में रमते थे
गुरु भक्ति प्रभु भक्ति प्राण था, वीतराग पद चाहक थे
रूपारूपी आत्मस्वरूपी, सर्वश्रेष्ठ गुण ग्राहक थे
मन मंदिर में भेद ज्ञान की, ज्योत अखंडित जलती थी
महावीर ॐ अर्हं पदका, जाप निरंतर करती थी
वन्दनीया विरल विभूति, आशीष अमीरस बरसाना
दया दान का शीतल सिंचन, शुष्क जीवन वन सरसाना,
नाम यथा आदर्श तुम्हारा, यावत चन्द्र दिवा चमके
स्वीकृत हो सुस्नेह सुवासी, अभिनन्दन पुष्प विचक्षण के गुरु
कार्य कुशलता, क्षमाशीलता, संयम साधक भवनाशी
रोम रोम पुलकित है मेरा, तिलक दर्शन की प्यासी
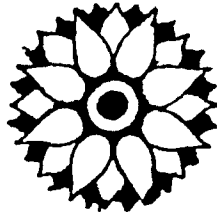
शिक्षा के सूत्र
(भगवान महावीर के जीवन से)

✍ सुरेन्द्र बोथरा

भगवान महावीर का समस्त जीवन तथा उनके उपदेश ऐसी घटनाओ और सूत्रो से भरे पडे है जिन्हे समझने और जीवन मे उतारने की चेष्टा की जाए तो आदर्श शिक्षा पद्धति तथा आदर्श शिक्षक का निर्माण किया जा मकता है। आवश्यकता यह है कि इस अद्भुत महापुरुष के जीवन की इन घटनाओ को और उनके उपदेशो मे से इन सूत्रो को चुना जाए और उन्हे आज की आवश्यकताओ के दृष्टिकोण से देखा जाए।

कुछ महत्वपूण सूत्र जो अनायास ही पकड मे आ जाते है, उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है।

देशना-उपदेश-व्याख्यान आदि शिक्षा के ही माध्यम है, विषय चाहे आध्यात्म व्यवहार अथवा अन्य कोई। अपनी देशना के लिए जनभाषा को स्वीकार करना शिक्षा के क्षेत्र मे एक क्रातिकारी योगदान के रूप मे देखा जाना चाहिए। तत्कालीन परम्परा को तोड उन्होंने शिक्षा की प्राथमिक आवश्यकता को उजागर किया। शिक्षा की भाषा का आधार शिक्षक की योग्यता नहीं शिक्षार्थी की योग्यता होनी चाहिए। यह सूत्र भाषा ही नहीं समस्त शिक्षा प्रणाली के लिए उपयुक्त है। शिक्षक को शिक्षा देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे उपाय अपनाए कि उपस्थित विद्यार्थियो मे जो सबसे कम योग्य हो वह भी समझ सके।

समवायाग सूत्र मे महावीर की भाषा के विषय मे विस्तार से चर्चा है। "भगवान ने अर्द्धमागधी भाषा मे धर्म कहा" इस कथन के साथ उस भाषा के गुणो का वर्णन करते हुए कहा है - "वह सुख-शिव-शाति दायक भाषा बोलने के साथ आर्य, अनार्य, द्विपद, चतुश्पद, पशु, पक्षी आदि के ग्रहण परिणमित हो जाती है।"

हम यह बात पढते सुनते आए है। इस बात पर सभव असभव के तर्क करते आए है। यह मतभेद भी पालते आए है कि भगवान ने मुख से शब्दो का उच्चारण किया था अथवा वह दैनिक ध्वनि का एक गुजन मात्र था जिसे हर सुनने वाले ने अपनी भाषा मे सुना।

इन सभी विवादो को छोडे। इस घटना के पीछे रही भावना को समझे। अतिश्योक्ति लगती है तब भी उसके पीछे छुपे सदेश के महत्व को स्वीकार करे। श्रेष्ठ उपदेशक अथवा शिक्षक वह है जिसकी बात ऐसी शैली मे, ऐसी भाषा मे और इस प्रकार कही गई हो कि प्रत्येक सुनने वाले के, प्रत्येक शिक्षार्थी के भली प्रकार समझ मे आ जाए चाहे वह विज्ञ हो, अल्पज्ञ हो अथवा सर्वथा अनभिज्ञ ही क्यो न हो। शिक्षक जब शिक्षा प्रदान करता है तब उसका उद्देश्य हर स्तर के शिक्षार्थी को शिक्षा देना होता है न कि

अपनी विद्वता या योग्यता का प्रदर्शन। अतः उसकी भाषा व शैली सहज सरल होनी चाहिए ताकि तत्काल हृदयंगम की जा सके।

भाषा के अतिरिक्त महावीर के स्वर के विषय में भी विस्तृत वर्णन मिलता है। महावीर के स्वर के चौदह गुणों-गंभीर, मधुर, मनोहरतर, निर्दोष, हित, स्पष्ट आदि को भली प्रकार समझना और तदनुरूप अभ्यास करना प्रत्येक शिक्षक के लिए आवश्यक हो तो शिक्षा की गुणात्मकता कितनी विकसित हो सकेगी, समझ पाना कठिन नहीं है।

महावीर ने अपने शिष्यों को शिक्षा का एक ऐसा सूत्र दिया था जो आज लगभग विस्मृत हो चुका है। आचारांग सूत्र में उल्लेख है - "जैसे चिड़िया अपने बच्चों को सुबह शाम नियम से चुग्गा देती है, वैसे ही तुम अपने शिष्यों को शिक्षा दो।" कितना सटीक उदाहरण है। चिड़िया के चुग्गा देने के पीछे भावना है उसके बच्चों को सम्यक रूप से विकसित करने के उत्तरदायित्व की। इस क्रिया और नियम में औपचारिकता का कोई स्थान नहीं है। आज की शिक्षा प्रणाली में जो औपचारिकता व्याप्त है, कोर्स पूरा करा देने की या अधिक से अधिक परीक्षा पास करवाने मात्र को उद्देश्य समझने की। वह इस सूत्र, उदाहरण तथा उसकी भावना को समझने-अपनाने की चेष्टा करने से दूर हो सकती है।

महावीर की शिक्षा शैली में दो अन्य बातों का महत्वपूर्ण स्थान है। एक तो सामान्य जीवन के सहज उदाहरणों का सटीक प्रयोग और दूसरी प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग। ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कन्ध में ऐसे उदाहरणों से भरपूर उन्नीस कथाएं हैं।

उनमें से एक कथा में पदार्थ के निरन्तर परिवर्तनशील स्वभाव और इस कारण उसके प्रति राग-द्वेष से मुक्त होने जैसी जटिल लगती अवधारणा को पानी जैसे सामान्य और व्यापक उदाहरण से सहज ही बोदगम्य बना दिया है। ऐसी कथाएं तथा उदाहरण ज्ञाता सूत्र में ही नहीं सभी अंगशास्त्रों में प्रचुर संख्या में हैं।

प्रश्नोत्तर शैली शिक्षा की आधारभूत शैली मानी जाने लगी है। आधुनिक मनोविज्ञान ने इस बात को खोज के द्वारा स्थापित किया है कि शिक्षा प्रभावी तब होती है जब उसमें आदान और प्रदान दोनों हों। शिक्षार्थी मूक श्रोता मात्र न हो। केवल प्रदान मात्र को शिक्षा समझ लेने की भूल आज की प्रचलित प्रणाली की सबसे बडी कमजोरी है। महावीर द्वारा प्रयुक्त उपदेश की प्रश्नोत्तर शैली को शिक्षा के सूत्र के रूप में ग्रहण किया होता तो यह त्रुटि हमसे नहीं होती।

भगवान महावीर के जीवन चरित्र और उनके उपदेशों पर इस दृष्टिकोण से चिन्तन, मनन और दोहन की आवश्यकता है। शिक्षा के क्षेत्र से जुडे लोगों का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वे इस दिशा में शोध को प्रोत्साहन दें और शोध से उपलब्ध सूचना को प्रयोग में लावें। यह न भूलें कि शिक्षा का उद्देश्य अनुपयोगी सूचना से भरे प्रमाणपत्रधारी उच्छृंखल और दिशाहीन लोगों की भीड बढाना नहीं है अपितु ज्ञानवान, विवेकवान और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है।

❑

शिक्षा गुणात्मक कैसे हो

कन्हैयालाल गुप्ता

देश की आजादी से पूर्व शिक्षा की दशा सख्यात्मक तथा गुणात्मक दोनो दृष्टियो से दयनीय थी। स्वतत्रता प्राप्ति के वाद इसके विस्तार की ओर काफी ध्यान दिया गया। आज भी प्रत्येक ग्राम मे प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ करने तथा प्रत्येक बच्चे को शिक्षण सस्था तक लाने का प्रयास कई सस्थाओ के माध्यम से चल रहा है, किन्तु आजादी के इन 49 वर्षो के वाद भी शिक्षा के विस्तार की दृष्टि से अभी वहुत कुछ करना शेष है। शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष इसके गुणात्मक विकास का है । जिसकी ओर हमारे राजनीतिज्ञो व शिक्षा शास्त्रियो का ध्यान अभी तक पूर्णरूपेण आकर्पित नहीं हुआ है।

शिक्षा कुछ निश्चित उद्देश्यो की पूर्ति की दृष्टि से दी जा रही है । जिनसे छात्र का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रो मे विकास हो और छात्र देश का एक सुयोग्य नागरिक वनकर अपना जीविकोपार्जन करने के साथ समाज की भली प्रकार सेवा कर सके। यदि शिक्षा द्वारा देश मे इस प्रकार के नागरिक तैयार होते हो तो हम यह कहने की स्थिति मे है कि शिक्षा के गुणात्मक पक्ष की ओर ध्यान दिया जा रहा है, किन्तु ऐसा नही है।

प्रेफेसर जॉन आडम्स ने लिखा है - "स्कूल केवल ज्ञान की दूकान नहीं है और न शिक्षक सूचना देने वाला व्यक्ति है।" स्कूल समाज की जिम्मेदारियो को निभाकर ही अपने अभिप्राय की सिद्धि कर सकता है। यदि विद्यालय छात्र का सर्वतोमुखी विकास द्वारा उसे सुयोग्य नागरिक नहीं वना पाते तो उनके लिए यह ही कहना उपयुक्त होगा कि वे केवल पुस्तकीय ज्ञान दे रहे है और कुछ प्रश्नो के माध्यम से उनकी जाच कर अपने अस्तित्व को सावित करने का एक झूठा प्रयास कर रहे है । यह शिक्षा मनुष्य को सामाजिक प्राणी न बनाकर एक स्वार्थी प्राणी का निर्माण कर रही है, जो किसी भी क्षेत्र मे शुद्ध सेवा भाव से कार्य नहीं कर पा रहा है।

हमारी प्रारम्भिक शिक्षा सस्कार जनित होनी चाहिए। वाल्यावस्था से ही सुसस्कारो की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए तथा हम वच्चो मे जो महत्वपूर्ण सस्कार पैदा करना चाहते है, उनकी भी जाच अन्य परीक्षाओ की तरह अनिवार्य हो। जैसे यदि हम वच्चो मे सत्य वोलना, ईमानदारी से कार्य करना, सफाई से रहना आदि गुणो का विकास करना चाहते है तो उसे उसकी कक्षा मे उत्तीर्ण होने के लिए इन सब गुणो की जाच लिखित, मौखिक व व्यवहार आदि के माध्यम से की जानी चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा मे भी अन्य ली जाने वाली परीक्षाओ की तरह सबधित गुणो की जाच की जानी चाहिए कि वह अपने व्यवसाय को जीविकोपार्जन

के साथ शुद्ध सेवा भाव से कर पायेगा अथवा नहीं। उदाहरणार्थ (1) एक डाक्टर यदि सरकारी सेवा में हो तो रोगियों का शुद्ध सेवा भाव से उपचार करे। प्राईवेट क्लिनिक खोलने पर उचित फीस द्वारा धनोपार्जन करे।(2) एक अभियन्ता ईमानदारी से निर्माण कार्य करवाये। (3) एक शिक्षक अपने को राष्ट्र निर्माता समझते हुए देश के लिए अच्छे नागरिक तैयार करने की दृष्टि से अपने शिक्षण कार्य में संलग्न रहे। (4) एक न्यायाधीश निष्पक्ष भाव से अपना निर्णय दे, आदि। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालों में उस व्यवसाय से संबंधित गुणों की जांच भी लिखित, मौखिक व व्यवहार के आधार पर की जानी चाहिए। शैक्षिक जीवन में ही नैतिक शिक्षा/सामाजिक शिक्षा/व्यावहारिक शिक्षा के हर स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम तथा व्यवस्थित मूल्यांकन द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में आगे बढा जा सकता है।

यह चिन्ता का विषय है कि देश में चोरी, डकैती, लूटमार, हत्यायें, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, चोर-बाजारी, मिलावट, आर्थिक घोटाले आदि की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि व पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएं नियंत्रण से बाहर होती जा रही हैं। राष्ट्रीय चरित्र में आजादी के बाद अत्यधिक गिरावट आई है। इन सबके मूल में हमारी शिक्षा का संस्कार जनित नहीं होना है। वर्तमान शिक्षा न छात्रों में देशभक्ति की भावना पैदा कर पाई और न श्रम के प्रति निष्ठा। श्रद्धा व भक्ति जैसे महत्वपूर्ण गुणों का उनमें पूर्णत· अभाव सा है। इन सबका मूल कारण शिक्षा में गुणात्मक पक्ष की ओर ध्यान नहीं देना है। आवश्यक मूल्यों के अभाव में न केवल छात्रों को आगे की कक्षाओं में जाने से रोकना चाहिए बल्कि व्यावसायिक जगत में काम करने वालों में भी यदि इन मूल्यों का अभाव पाया जावे तो उन्हें भी उस व्यवसाय से उस समय तक अयोग्य घोषित कर देना चाहिए जब तक वह सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना न कर ले तथा भविष्य में गलती नहीं करने का वादा न कर ले। चाहे वह डाक्टर, शिक्षक, अभियन्ता, राजनीतिज्ञ आदि क्यों न हो।

शिक्षा व्यक्ति को समाज में एक सभ्य व सुसंस्कृत जीवन जीने योग्य बनाये। इसके लिए शिक्षा सैद्धांतिक कम एवं व्यावहारिक अधिक होनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब शिक्षा के गुणात्मक पक्ष की ओर इसके विस्तार की दृष्टि से अधिक ध्यान दिया जाकर ठोस प्रयास किये जावें। केन्द्र व राज्य सरकारों को अपनी विकास योजनाओं में इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। वास्तव में देश का भविष्य उत्तम शिक्षा पर ही निर्भर करता है।

❑

जिसका निश्चय अटल और दृढ़ है वह दुनिया को अपने सांचे में ढाल सकता है।

- गेटे

●

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है।

- सेम्युअल जॉन्सन

शिक्षा, आधुनिकता और नारी

✍ चन्द्रकुमार सुकुमार

उसको नही देखा हमने कभी पर इसकी जरूरत क्या होगी ?
ऐ मा तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी।

जिन ऊचाइयो से मा के रूप मे नारी के प्रति आस्था और सम्मान इन शब्दो मे व्यक्त हुआ है, वहा सत्य ही केवल भगवान ही की कल्पना की जा सकती है। हमारे प्राचीन ऋषि-साहित्य मे भी नारी की इसी महिमा-गरिमा की अभिव्यक्ति हुई है -

'यत्र नारियस्तु पूजयन्ते, रमन्त तत्र देवता '

इतना ही नहीं नारी को जननी के रूप मे जो सम्मान हम देते आए है, वह अतुलनीय और अप्रतिम है -

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादयि गरियसी' मे भी हमारी यही भावना अभिव्यक्त हुई है। किन्तु प्रश्न यहा यह उठता है कि मा के रूप मे जो नारी भारतीय-मानस मे इतने ऊचे आसन पर प्रतिष्ठित है । वही नारी अर्धागिनी या सहधर्मिणी के रूप मे इतनी नीचे कैसे गिर गई ? इसके अनेक कारण हो सकते है। इनमे से एक कारण भारत के मध्यकालीन इतिहास का वह अधकार है जिसमे हमारी सभ्यता और सस्कृति डूब गई । जिसने नारी को केवल भोग्या बनाकर छोड़ दिया। पर्दे मे और घरो मे कैद होकर रहने वाली नारी और हो भी क्या सकती थी। अशिक्षित और अज्ञान मे डूबी नारी पुरुष की जागीर बनकर रह गई, वह गुलाम बनकर रह गई । उसका अस्तित्व और व्यक्तित्व पुरुष की कृपा पर निर्भर हो गया। वह मूक पशु बनकर खूंटे से बध गई।

नया भोर

फिर परिवर्तन की एक आधी चली। भारत माता की गुलामी की जजीरे काटने के नए उत्साह ने अनेक मनीषियो को नारी की दुर्दशा से मुक्ति के लिए सघर्ष का बल प्रदान किया। भक्ति आन्दोलन के समाप्त होते होते नवजागरण ने धीरे-धीरे जोर पकड़ा। भक्ति के माध्यम से ही सही, पर मीरा ने उन जजीरो को काटा और वह राजमहलो से बाहर निकल सामान्य नारी की चेतना को झकझोर गई । स्वामी रामतीर्थ और स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे अनेकानेक सतो ने नारी को महिमान्वित करने का अथक कार्य सम्पादन किया महात्मा गाधी ने इसे स्वतत्रता आदोलन का ही एक अश बनाकर नारी-मुक्ति का अभियान चलाया। नारियो ने भी करवट बदली और नई सुबह के नए सूर्य की रोशनी का अनुसरण कर आगे बढने लगी। स्व सरोजनी नायडू, स्व अरुणा आसफ अली, श्रीमती कमला नेहरू और श्रीमती इदिरा गाधी जहा राजनीतिक क्षितिज पर उभरीं, वहीं श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, स्व महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, मन्नू भडारी जैसी अनेक नारिया देश के साहित्याकाश मे नव-नक्षत्र बनकर उभरीं।

किन्तु -देश आजाद हुआ और आजादी के साथ ही प्रारम्भ हुआ पश्चिम का अधानुकरण। नारी स्वातत्र्य

और पुरुष से समानता के पश्चिमी दृष्टिकोण ने हमारे देश के नारी मुक्ति आंदोलन को भी दिशा भ्रमित कर रख दिया। यह पश्चिमी दृष्टिकोण का ही प्रभाव है कि पुरुष से नारी की समानता का अर्थ केवल पुरुषोचित वस्त्र पहनना ही नहीं लगाया गया, वरन धूम्रपान, नशाखोरी, जुआखोरी आदि जैसे दुर्व्यसनों को अपनाना भी पुरुष से समानता के अंतर्गत मान लिया गया। आधुनिकता की अंधी हवा ने नारी को एक पतन से निकालकर दूसरे पतन के अंधे-शहर में ढकेल दिया। धन और साधनों की चकाचौंध ने पुरुषों को तो दृष्टिहीन किया ही, नारियों को भी यह चकाचौंध ले डूबी। आज वह साधन-सम्पन्नता की शय्या पर सोने के लिए क्या नहीं कर गुजरती हैं ? कभी-कभी (बल्कि क्षमायाचना पूर्वक अधिकांशतः) तो वह इसी वैभव-लोलुपता के वशीभूत वीभत्स स्थितियों को भी अपनाने से हिचक नहीं रही हैं। अधिकांश विज्ञापनों और फिल्मों में यही सब कुछ तो दिखाई पडता है और मजे की बात यह है कि वही पुरुष, जिसके जाल-जंजाल से नारी मुक्त होना चाहती है, उसी पुरुष के द्वारा चलाए गए चांदी के चाबुक की मार के आगे वह नतमस्तक हो जाती है। वही पुरुष उसे कभी फिल्म के कथानक की दुहाई देकर और कभी सौन्दर्य प्रतियोगिता के बहाने उसे विद्रुप से विद्रुपतर करता जा रहा है। उपभोक्ता या दूसरे शब्दों में भोगवादी संस्कृति के यही दुष्परिणाम तो निकलेंगे। इसके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता। इस भोगवादी संस्कृति ने पुरुष को कितना क्रूर और नृशंस बना दिया है और नारी को पतन के किस अंधकूप में कैद कर दिया है कि मुक्ति का मार्ग ही दिखाई नहीं देता।

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत-नग-पगतल मे,
पीयूष-स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।''

कहां गई, प्रसाद जी की श्रद्धा और जीवन के लिए पीयूष-स्रोत सी बहने वाली नारी ? क्या आज की नारी भी मैथिलीशरण जी की कैकेयी की भांति किसी राम से यह दुहाई करती दृष्टिगत हो सकती है -

''थू के त्रैलोक्य, भले ही थू के,
जो कोई कह सके, कहे क्यों चूके ?
छीने न भरत का किन्तु मातृपद मुझसे,
रे राम ! दुहाई और करूं क्या तुझसे।''

है, आज की किसी नारी में भरत से पुत्र को जन्म देने और संस्कारित करने की शक्ति और सामर्थ्य ? है किसी नारी में स्वामी रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द जैसी संतान प्राप्त करने की लालसा ! है किसी नारी में रामानुजम (महान गणितज्ञ), विश्वेश्वरैया (महान इंजीनियर) या भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री जैसे महान बलिदानी पुत्रों को जन्म देने की सामर्थ्य ? गंगा का अवतरण हिमालय से ही संभव है, केवल हिमालय से। इतने उत्तुंग शिखर पर यह भोगवादी संस्कृति किसी को पहुंचने तो क्या, देखने बल्कि कल्पना करने का अवकाश तक नहीं देती।

क्या कहें, इन आधुनिक चिन्तकों-विचारकों को और क्या कहें इस दृष्टि को कि पश्चिम से आयातित कचरा भी हमें बहुमूल्य दिखाई देता है ? शिक्षा और संस्कार का चोली-दामन का साथ है। पूंजीवादी उपभोक्ता संस्कृति ने सैक्स एज्यूकेशन की हवा चलाई। यह हवा हमारे देश में पहुंची, जहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पुरुषार्थ (जीवन के चरम लक्ष्य) माना गया, जहां ''कामसूत्र'' के रचयिता 'वात्स्यायन' को ऋषि माना गया, जहां 'काम' को पूजनीय मानकर उसके मंदिर (खजुराहो) बनवाए गए, ऐसे इस महान देश

मे भी यह हवा आई और जहर घोल गई। नारी का जब पतन होता हे तो मुनष्य समाज का विनाश होता है। आज यही होता नजर आता है। पुत्र-पुत्री से बहिन, फिर प्रेयसी व अर्धागिनी और तब वह 'मा' के पावन पद पर आसीन होती है, वही इस आसन से गिर गई तो फिर गिरने को शेप रह ही क्या जाता है? कितनी वीभत्स एव भयानक स्थितियो मे पहुच गए है हम?

किन्तु अभी भी वक्त है सभलने का, हा है-

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही, मिटाए
सदियो रहा है दुश्मन दौरे-जहा हमारा।"

— इकबाल

हा, इस आस्था पर मुझे ही नहीं सबकी भी अटल श्रद्धा है। हम मिटेगे भी नही पर इसके लिए सभलना अवश्य पड़ेगा। हमारे आज के स्कूल, कॉलेज सचमुच ही विद्या के मदिर हे, इन्हे मदिर ही बना रहने दीजिये। इन्हे आधुनिकता की दुहाई देकर गन्दा मत कीजिये, मैला मत होने दीजिये। जब भी रोशनी मिलेगी, इन्हीं मदिरो से मिलेगी। इसके लिए जरूरी है कि हम विप और अमृत को पहचानना सीखे। क्षणिक सुख ओर स्थाई आनन्द के अन्तर को जाने और यह तब ही हो सकता है जब नारी को उसकी खोई प्रतिष्ठा, उसका लुटा हुआ मान-सम्मान उसे लौटाये। क्योकि नारी ही 'प्रथम गुरु' है बालक की। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा और सस्कार नारी के हाथो ही अक्षुण्य रहे है और रहेगे भी। नारी हमारे सास्कृतिक मूल्यो की सरक्षिका और पोपक है। सुशिक्षित नारी के हाथो मे ही देश का भविष्य सुरक्षित रहेगा।

क्षमा

सभव है कुपुत्र
किन्तु
असभव है कुमाता।

सज्जन-दुर्जन
सबके आघातो को चुपचाप
सहती है धरती माता।

जब रोम रोम मे
रम जाये ऐसी 'क्षमा'

कि जीवन का गणित
कुछ जमा।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

✍ श्रीमती इन्दरजीत कौर ओबेराय

कुछ समय पूर्व अयोध्या में भयंकर और हिंसक साम्प्रदायिक दंगे फसाद हुए, उन्हें देखकर भारत विभाजन के समय की साम्प्रदायिक घटनाएं भी लज्जित हो उठती हैं। ऐसा दर्दनाक नर संहार इस देश में शताब्दियों तक स्मरण रहेगा। क्या सम्प्रदायिकता ही धर्म है अथवा धर्म का स्वरूप इस आधुनिक युग में क्या रह गया है ? क्या धर्म राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बन गया है।

धर्म क्या है ? इसका उत्तर देने की चेष्टा संसार के अनेक महान शास्त्रियों, धर्म प्रचारकों, ऋषियों-मुनियों, पीरों-फकीरों, साधु-संतों ने की है। कुछ लोगों ने इसे समाज हित से आंका है। कुछ इसका संबंध जप, तप और कर्मकांड से जोड़ते हैं तो कुछ इसे नैतिकता का पर्याय मानते हैं। कुछ शिक्षाविद् इसे आध्यात्मिक विषय की श्रेणी में रखते हैं। देश में हो रहे धार्मिक दंगे फसाद, वैर विरोध, हिंसा, संघर्ष जैसे साम्प्रदायिक तत्वों को प्रोत्साहन ऋषियों मुनियों ने नहीं दिया, बल्कि लालची सामाजिक कार्यकर्ताओं और राजनीतिज्ञों ने दिया है। संसार में हुए सारे महापुरुषों ने मानव प्रेम, अहिंसा, त्याग, तपस्या, सार्वजनिक हित कामना, जन सद्भावना, अत्याचार और संघर्ष की सराहना नहीं की है किन्तु फिर भी संसार में दर्दनाक हत्याएं लूटपाट हिंसा होते आए हैं, क्या आप मुझे बता सकते हैं क्यों ? धर्म वह है जो मनुष्य के बीच प्रेम का प्रचार करे, भाई-चारे व अहिंसा का वातावरण उत्पन्न करें। सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को मानवीय गुणों के करीब लाए। वह धर्म जो मनुष्यों को भेदभाव की भावना में जकड़ देता है। वह धर्म के नाम पर कलंक है। इस संबंध में यह सूत्र हमारी बहुत सहायता करेगा कि धर्म की कसौटी समीपता, मानवीय प्रेम, सदभावना व अनेकता में एकता की भावना है।

सचमुच महाकवि इकबाल का यह कथन सत्य है कि -

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।

❑

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियां हैं, शिक्षा उनमें सबसे बढ़कर है।

- निराला

●

व्यवहार एक दर्पण है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना चेहरा देख सकता है।

- गेटे

स्वर्ण विचक्षण स्वप्न साकार हुआ

साध्वी विद्युत प्रभाश्री

राजस्थान की राजधानी 'जयपुर' जो गुलावी नगरी के साथ साथ जौहरियो की नगरी भी कहलाती है, अनगढ पत्थरो को गढने वाली इस नगरी मे मासूम वालिकाओ को सुघढ वनाने का प्रयास कर रही है एक सस्था-जिसका नाम है - ''श्री वीर वालिका शिक्षण सस्थान'' ।

लगभग 75 वर्ष पूर्व जयपुर की पुण्यधरा पर परमपुण्यशालिनी आत्मा पूज्या श्री पुण्य श्री जी महाराज साहव की स्वर्ण तुल्य शिष्या पूज्या श्री स्वर्ण श्री जी महाराज साहव जयपुर चातुर्मास हेतु पधारीं। जैन-समाज मे नारी वर्ग को समुन्नत रूप से शिक्षा प्राप्त हो इस मगल भावना से भावित होकर उन्होने समाज को ''महिला-शिक्षण-सस्थान'' हेतु प्रेरणा दी । महान दिव्य आत्मा की प्रेरणा तथा समाज की योग्यता का सुपरिणाम कुछ ही समय मे उभर कर आया।

पाच कन्याओ के शिक्षण से कार्तिक सुदी पचमी अथवा सन् 1925 सवत् 1884 को यह सस्था प्रारभ हुई।

कालातर मे यह सस्था वटवृक्षवत विस्तार पाती गई । प्राइमरी से विद्यालय तथा विद्यालय से महाविद्यालय (कॉलेज) के रूप मे उन्नति के शिखर पर वढती हुइ इस सस्था मे आज हजारो लडकिया शिक्षण प्राप्त कर रही है।

शिक्षण के साथ साथ सगीत, सिलाई, स्पोर्ट्स आदि मे जहा इस सस्था की वालाए निपुण हे एव प्रथम स्थान प्राप्त करती है वहा उनमे विनय, विवेक, सेवा आदि अनेकानेक सुगुणो का, सुसस्कारो का समन्वय भी है जो यथा समय यथा प्रसग देखने को मिलता है। इसका श्रेय जाता है इस वटवृक्ष की प्रारम्भिक सरक्षिका के रूप मे प्रधानाचार्या श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा को।

इस स्कूल की छात्रा होने के कारण श्रीमती सिन्हा को निकटता से देखने का अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ - छोटा कद, श्यामवर्ण, प्रभावशाली मुख-मडल, खादी की श्वेत साडी से सम्पूर्णत आवृत तन, स्पष्ट तथा ओजस्वी वाणी की धनी श्रीमती सिन्हा जव स्कूल के प्रागण मे खड़ी होती थी तव सभी प्रसन्न व शात मुद्रा से उनके मुख मडल के दर्शन तथा वाणी श्रवण हेतु उत्सुक बनते थे।

श्रीमती सिन्हा जी के दिवगत होने के बाद एक लम्वे समय से इस सस्था को सभाल रही है श्रीमती उर्मिलादेवी जी श्रीवास्तव। जिनके जीवन मे सादगी, सरलता, सतोष, विनय एव मृदुता आदि गुणो की झलक व्यक्ति प्रथम दर्शन मे ही अनुभव करता है।

अन्य अनेकानेक अध्यापिकाओ का सहयोग भी सराहनीय है जिन्होने अपनी कार्य, दक्षता, सौम्यता, उदारता आदि अनेकानेक गुणो का सिचन छात्राओ मे कर विद्यालय को उन्नत बनाने मे सहयोग दिया है।

इस सस्था के प्राण तुल्य तन-मन-धन से समर्पित जौहरी प्रमुख स्वर्गीय श्रीमान राजरूप जी टाक को भी

मैं इस प्रसंग पर याद किये बिना नहीं रह सकती जो इस संस्था की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। जिन्होंने अपने जन्म दिवस पर प्राप्त विशिष्ट धन राशि को उदारतापूर्वक इस संस्था को भेंट कर दी।

श्रीमान हीराचन्दजी वैद आदि अनेक सहयोगियों के नाम मस्तिष्क में उभर रहे हैं जिन्होंने सदैव लगन-निष्ठा के साथ संस्था को सहयोग दिया।

पूज्या श्री स्वर्ण श्री जी महाराज साहब एवं पूज्या श्री विचक्षण श्री जी म.सा. का स्वप्न-स्वप्न नहीं सत्य हुआ, जीवन्त हुआ और कई गुणा अधिक रूप में साकार हुआ। कारण जिस संस्था को वैराग्य भावों से ओतप्रोत साध्वी जी का आशीर्वाद, श्रीमती सिन्हा जी, श्रीमती श्रीवास्तव जी जैसी "सादा जीवन उच्च विचार" जीवन जीने वाली सन्नारियों का समुचित मार्गदर्शन मिला एवं "चाचा" साहब कहलाने वाले, सस्था के प्राण तुल्य - विशिष्ट व्यक्तित्व जौहरी श्रीमान टांक साहब आदि विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियो का सहयोग मिलता रहा वह संस्था भला कैसे नहीं फलेगी ? ऐसी संस्था में कैसे पुष्प खिलेंगे इसकी कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं। इस संस्था में शिक्षण के साथ साथ सुसंस्कारों का सिंचन समन्वय देखने को मिलता है जो अद्भुत है, बेजोड है।

इस संस्था ने समाज को शिक्षित संस्कारी सन्नारियां ही दी हो, ऐसा नहीं। इस सस्था ने जैन समाज को अनमोल रत्न भी दिये हैं, जिनके नाम सदियों तक लोगो की जिह्वा पर रहेंगे। वे नाम इस प्रकार है -

1. आशु कवयित्री, आगमज्ञा, शान्तस्वभावी स्वर्गीया प्रवर्तिनी पूज्या श्री सज्जन श्री जी महाराज साहब।.
2. जौहरियों की नगरी के अनमोल रत्न तुल्य प्रखर व्याख्याता पूज्या श्री मणिप्रभा श्री जी महाराज साहब।
3. विशिष्ट साधक श्रीमान अमरचन्द जी नाहर की सुपुत्री तपस्विनी पूज्या श्री निर्मला श्री जी महाराज साहब।
4. पूज्या श्री प्रियदर्शना श्री जी म.सा. (किरण बांठिया)
5. पूज्या श्री सुरेखा श्री जी म.सा. (सुधा संचेती)
6. पूज्या श्री विमल यशा श्री जी म.सा. (विमला कूकडा)
7. पूज्या श्री विद्युतप्रभा श्री जी म.सा. (वीणा टांक)
8. पूज्या श्री हेमप्रज्ञा श्री जी म.सा. (हेमलता सुराणा)
9. पूज्या श्री स्थित प्रज्ञा श्री जी म.सा. (प्रीति जैन)

सुवर्ण - अच्छा वर्ण या स्वर्ण - सोने के समान चमकने-दमकने वाला जिनका व्यक्तित्व था तथा जिनका नाम विचक्षण, काम विचक्षण, बुद्धि विचक्षण, जीवन विचक्षण सब कुछ विचक्षण रहा ऐसी "तन में व्याधि-मन में समाधि" धारण करने वाली पूज्या गुरुवर्या श्री के स्वप्नों का संसार रूप "वीर बालिका संस्थान विचक्षण विलक्षण हो, आश्चर्य नहीं।

यह संस्था गुरु आशीर्वादों के सहारे दिन-दूनी, रात-चौगुनी बढती रहे इसी मंगल कामना के साथ ....ॐ शांति।

❑

नारी

सीमा जैन

अमृत का कुड तो विष की बेल नारी ।
जल का समुद्र तो मदिरा की धार नारी ।
उत्थान का प्रतीक तो विनाश की सूचक नारी ।
पूज्यता का आधार तो तिरस्कार की पराकाष्ठा नारी ।
सुख का सागर तो दु ख की गहराई नारी ।
स्वर्ग की रमणी तो नरक की दानवी नारी ।
शातिसुधा की बल्लरी तो अग्नि की शिखा नारी ।
युग की निर्माता तो सृष्टि की विनाशक नारी ।
शक्ति की सबल दुर्गा तो कायरता की मूर्ति नारी ।
विश्वास की परिधि तो धोखे की खाई नारी ।
साक्षात मोक्ष तो ससार की नीव नारी ।
सगीत की जननी तो पीड़ा की उत्पादक नारी ।
मानवता का जीवन तो उसकी मृत्यु भी नारी ।
जीवन का गीत तो आख का आसू नारी ।
प्राणो की गति तो जीवन का विराम नारी ।
चेहरे की मधुरता तो कटुता की बेल नारी ।
जीवन की महक तो दुर्गंध भी है नारी ।
मानवता का स्वर तो दानवता की उवाच नारी ।
विश्व का प्रकाश तो ससार का तम नारी ।
आकाश की ऊचाई तो पाताल की गहराई नारी ।
जीवन श्रेष्ठ रत्न तो पैरो की ठोकर नारी ।
जीवन की मझधार मे पतवार भी नारी ।
मानव मन की अग तो कलेजो की जलन भी नारी ।
भू की सचरण शक्ति तो सृष्टि की सहारक नारी ।
पृथ्वी समान क्षमा तो दावानल समान क्रोध नारी ।
राजाओ का सिहासन तो पायदान भी नारी ।
वीरो की जननी तो कायरो की सहेली नारी ।
जीवन का सयोग तो वियोग भी है नारी ।
धर्म की देवी तो पाप की गलियारी नारी ।
चेहरे की मुस्कराहट तो आखो की जलन नारी ।
करुणा की स्त्रोत तो पाषाण प्रतिमा नारी ।
पवित्रता का सरोवर तो नाली की पकिलता भी नारी ।
जीवन का श्वास तो मनुज की मौत है नारी ।
जीवन की खिलती कली तो मुरझायी डाल है नारी ।
सग्राम की रणचडी तो कायरता की देवी नारी ।
दया का जीवन तो कठोरता की प्रतीक नारी ।

कहानी :

अहसास

✍ श्रीमती राजबाला सिंघी

पूर्व छात्रा

जिंदगी में कुछ समय ऐसा भी आता है जब व्यक्ति अपने भविष्य के सुनहरे सपनों को संजो उन्हीं के बीच खो जाता है और इन्हीं सपनों को सुंदरतम बनाने की चाह में अपना तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर देता है। लेकिन कभी कभी यही ख्वाब एक एक कर टूटे हुये शीशे की तरह चूर-चूर होजाए तब ? तब जिंदगी में एक नया अहसास होता है। हां कुछ ऐसा ही घटित हुआ था रामू काका के साथ।

''क्या बूढ़ा अभी तक बाजार से नहीं लौटा ? पता नहीं क्या करते रहते हैं ? धीरे धीरे जायेंगे और घंटों में लौटकर आयेंगे। अभी तक सब्जी नहीं आयी, कब खाना बनेगा बच्चों को स्कूल को देर हो जायेगी।'' यह थी रामू काका की बड़ी पुत्रवधु की कर्कश स्वर लहरी। हां जिठानी जी, उसकी हां में हां मिलाते हुए छोटी बहुरानी भी बोल उठी, ''ससुरजी से कुछ काम नहीं होता। बाजार से कल शैम्पू व पाउडर लाने को कहा था लेकिन अभी तक नहीं आया। न बच्चों का पूरा ध्यान रख सकते हैं न कुछ और। मेरे पिताजी तो इस उम्र में घर का सारा काम संभाल लेते थे। इन्हें तो सासूजी ने कुछ भी नहीं सिखाया लगता है।'' दोनों बहुयें सास-ससुर को कोसते हुये खिलखिलाने लगी।

आइये, अब चलते हैं रामू काका के तीसरे बेटे के घर। ''ममा-ममा दादाजी आये हैं'' ''अच्छा बाबा सुन तो लिया, तुम जाकर उनके पास बैठो, मुझे अभी ढेरों काम निपटाने हैं। पता नहीं क्या है जब मर्जी आये तब चले आते हैं, बूढे जो ठहरे, काम तो कुछ है नहीं।'' यह था रामू काका की तीसरी पुत्रवधु व पोते चिंटू के बीच हुये संवाद का अंश। चिंटू मां से लताड़ खाकर भाग जाता है व दादाजी के पास आकर उनसे लिपट जाता है। ''दादाजी इस बार आप कितने दिन बाद आये हैं, दादाजी आप कुछ दिन यहीं रुक जाइये ना मेरी भी छुट्टियां हैं'' चिंटू लगातार बोले जाता है। इतने में चिंटू की मम्मी आ जाती है, ''बस, चिंटू बातें बहुत हो चुकी हैं,तुम जाकर पढ़ने बैठो, मैं यहां बैठती हूं।'' रामू काका चिंटू से मिलने आये पर उसे जी भर देख भी न पाये, मन मसोस कर रह गये।

''बहु, आज आलोक ऑफिस से नहीं लौटा ?'' रामू काका बोले। ''नहीं पिताजी, उनका कोई ठिकाना थोडे ही है,कही ताश खेलने बैठ जायेंगे तो फिर घर बाहर की क्या फिक्र।'' रामू काका के सामने ही उनके बेटे आलोक की खूबियां बखान रमा के चेहरे पर आत्मसंतोष की एक गहरी झलक सी फैल

गई। जैसे सारा दोष रामू काका का ही हो।

आलोक ने घर मे कदम रखते ही कहा ''अरे आज तो मुझे ऑफिस मे ही देर हो गई, चलो तुम लोग तैयार हो जाओ, अभी चलते हे।'' आलोक पिताजी की तरफ पलट कर बोला ''अरे पिताजी आप, पिताजी क्या आप खाना खायेगे, आज हम लोगो को तो होटल जाना है।'' रामू काका बोले ''नहीं वेटा, मुझे तो भूख ही नहीं है।''

बोझिल मन, थके कदम उठाते रामू काका वहा से चल पडे। अपनी ही सतान की अपने प्रति इतनी रूखाई देखकर उनका मन विचलित होने लगा। मन का प्रत्येक कोना क्रन्दन कर रहा था, न पास बैठा, न कुशलक्षेम पूछी, हाय क्या अपना खून भी इतना पराया हो जाता है ? अपने से ही प्रश्न करते करते आखो से आसू छलछला आये। ऐसे मे काकी की याद मे उनका रोम-रोम तडपने लगा। उन्हे लगा आज वे भरे पूरे परिवार के होते हुये भी कितने अकेले हो गये है।

वह क्यो मुझे मझधार मे छोड गई ? आज उन्हे काकी के साथ बिताये वे दिन, भविष्य के लिये बुने सुनहरे जाल के प्रत्येक कोने मे पैबद ही पैवद नजर आने लगे। रामू काका के कान मे स्वय उन्हीं के कहे ये वाक्य बार बार गूजने लगे ''आलोक की मा, मेरे तीन-तीन लाल है, तीनो रत्नो को तराश कर हीरा बना दूगा।'' तब काका को थोडे ही पता था कि ये हीरे इतनी कलुषता से भर जायेंगे।

रामू काका को आज भी धुधली स्मृति है, जब काकी को व्याहकर लाये थे। पूरे बारह वर्ष की कच्ची कली थी। काकी रूप व गुण दोनो मे इतनी सुदर थी कि आसपास के कई गावो तक चर्चा थी। काका के माता पिता भी वहु को देख बहुत खुश होते थे। काकी सेवा भी वहुत करती थी। बस, उन्हे तो दुख था तो यह कि विवाह के कई वर्ष पश्चात भी काकी को सतान न हुई। काकी की सास ने न जाने कितन देवी-देवता पूजवाये, जादू टोने करवाये पर सफल न हुई, फिर काका ने ही काकी को शहर ले जाकर डॉक्टर से इलाज करवाया, तब कहीं काकी की कोख हरी हुई। भगवान जब देता है छप्पर फाड कर देता है और यही काकी के साथ हुआ। धीरे धीरे उनका घर तीन पुत्रो व तीन पुत्रियो की किलकारियो से गूजने लगा।

लेकिन यह खुशी अधिक दिन नहीं रह पाई। कच्ची उम्र मे एक के बाद एक सतानो का बोझ ग्रहण कर काकी का शरीर जीर्ण हो गया था। वह अधिकतर वीमार रहने लगी। घर मे इतना पैसा न था कि छह वच्चो का पालन-पोषण जिस पर काकी की दवादारु। और एक दिन छोटे छोटे दूध मुहे बच्चो को रोते-बिलखते छोड काकी परलोक सिधार गई। काका के छोटे से कधो पर छह बच्चो का बोझ एक साथ आ गया। काका ने उसी समय प्रण कर लिया कि चाहे जैसे भी हो मै अपनी सतानो को पढा-लिखा कर इस योग्य बना दूगा ताकि वे अपना भला-बुरा स्वय सोच सके। और इसी सकल्प मे रामू काका ने छ बच्चो को मा व पिता दोनो का प्यार दिया।

आज रामू काका के तीनो लडके अच्छे अच्छे ओहदो पर है और लडकियो को पढा-लिखा कर शादिया कर जिम्मेदारी से मुक्त हुये। तब उन्हे चाहिये था सिर्फ अपने बच्चो का प्यार व सुख की दो रोटी। लेकिन काका को अपनी पूरी जिदगी कुर्बान करने पर भी सुख से दो रोटी भी नसीब नहीं हो पा रही थी।

काका के दोनो बड़े व छोटे बेटे बहुओ के साथ

रहते। सबसे छोटा बेटा तो पहले ही जवाब दे चुका था। काका दिन भर बच्चों से मन बहलाते, घर के छोटे-बडे कार्यो में हाथ बंटाते, लेकिन धीरे धीरे दोनों बहुओं ने काका से अभद्र व्यवहार करना शुरु कर दिया। नौकरों से करवाये जाने वाले कार्य तक काका पर डालने शुरु कर दिये। काका भाग्य की यही नियति समझ सभी कार्य करते। धीरे धीरे बच्चों को भी काका के कमरे में जाने के लिये रोक लगायी जाने लगी। रामू काका का दिल रो पडता। आज अनायास ही घर की सीढियां चढ़ते काका के कानों में दोनों बहुओं का वार्तालाप सुनाई आ गया। काका सकते में आ गये उन्होंने तुरंत निश्चय कर लिया कि वे अपना खाना स्वयं पकायेंगे। दो रोटी के लिये किसी के मोहताज नहीं बनेंगे और घर के पिछवाडे बनी कोठरी में काका ने अपना डेरा डाल दिया। रामू काका के बूढे हाथ रोटी बनाते तो उन्हें काकी के हाथों बनी रोटी की सौंधी सुगंध की याद आ जाती, आंखों में आंसू छलछला आते लेकिन पेट भरने के लिये अनभ्यस्त हाथों को अपनी कच्ची-पक्की पकानी पडती।

रामू काका के निश्चय पर घर के किसी भी सदस्य ने ध्यान नहीं दिया। उन्हें तो क्लबों, होटलों व पार्टियों से ही फुर्सत न थी। बच्चे मम्मी पापा की अनुपस्थिति में दादाजी के पास आते। रामू काका का सारा वात्सल्य उमड पडता, आंखें भर आती। बच्चे पूछते "दादाजी आप इसलिये रो रहे हैं न कि हमारे मम्मी पापा आपका ध्यान नहीं रखते,कोई बात नहीं दादाजी, हम ख्याल रखेंगे आपका।" बच्चे कई बार घर में रखी मिठाईयां चुपके से लाकर दादाजी को खिला देते। बच्चे पूछते दादाजी बुआजी कब आयेंगी ? रामू काका लम्बी सांस खींचकर कहते, पता नहीं बेटा,वे लोग कब आयेंगी।

घर की परिस्थितियों को देखते हुये रामू काका ने बेटियों को नहीं बुलाना ही उचित समझा। लेकिन कुछ दिन पश्चात बड़ी बेटी को पिता का मोह बिन बुलाये ही खींच लाया। रमा ने रामू काका को देखते ही कहा' "अरे पिताजी आप तो बहुत दुबले हो गये ? क्या आपकी तबियत ठीक नहीं है ?" नहीं बेटी "मन का दुबलापन तन के दुबलेपन से भी ज्यादा खतरनाक है।" रामू काका बोले। रमा को घर की स्थिति भांपने में जरा भी देर नहीं लगी। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि अब वह पिताजी को इस नर्क में नहीं रहने देगी। वह उन्हें अपने घर ले जायेगी लेकिन रामू काका रमा के साथ जाने को राजी न थे। रामू काका बोले, "नहीं नहीं, बेटी तीन तीन बेटों के होते हुये मैं तुम्हारे घर नहीं रह सकता, लोग क्या कहेंगे, समाज में हमारी क्या इज्जत रह जायेगी। रमा क्रोधित हो उठी, बोली "पिताजी जिन बेटों द्वारा ऐसी दुर्दशा फिर भी आप उन्हीं की दुहाई, बस अब बहुत हो चुका, पता नहीं आप कब तक बेटे व बेटी के फर्क को मन में संजोयेंगे, लानत है ऐसे बेटों व उनके समाज पर।"

रमा की बातोंसे रामू काका को वास्तव में अहसास हो गया कि क्या बेटा व क्या बेटी। रमा के अत्यधिक आग्रह को काका टाल न सके।

❑

सम्राट अकबर प्रतिबोधक जगत गुरु आचार्य विजय हीरसूरीश्वरजी

✍ हीराचन्द बैद
अनुवादक

'भगवान महावीर के अनन्य भक्त महाराजा श्रेणिक अपने राज्य मे अहिसा के पालन का जो कार्य नहीं करा सके, वह आज से 400 वर्ष पूर्व जगद् गुरु आचार्य विजय हीरसूरीश्वर जी ने मासाहारी मुगल सम्राट अकबर से कराया। जिसका प्रभाव इतिहास मे आज तक भी चमत्कारी ढग से याद किया जाता है। अहिसा के देवदूत गुरुदेव को कोटि कोटि वन्दन।'

जगद् गुरु आचार्य विजय हीरसूरीश्वर जी ने अपने चारित्रवल से मुगल वादशाह अकबर को प्रतिबोध देकर अहिसा का शखनाद वजवाया। आचार्य जी का जन्म विक्रम स 1583 के मगसर सुद नोमी सोमवार को पुरा सेठ की धर्मपत्नी नाथीवाई के कुच्छी से पालनपुर मे हुआ था। उनका ससारी नाम हीरजी था। उनकी 12 वर्ष की उम्र मे माता पिता का स्वर्गवास हो गया। इसी बीच पाटन मे आचार्य विजय दानसूरी से समागम हुआ। उनके वैराग्य गर्भित प्रवचनो से हीर जी का मन ससार से उठ गया। विक्रम सम्वत 1596 मे 13 वर्ष की उम्र मे उन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वे विजय हीर मुनि बन गये। उनकी तीक्षण बुद्धि देखकर उनको न्याय शास्त्र का अभ्यास कराने देवगिरि (दौलताबाग) की तरफ अन्य मुनियो के साथ विहार करा दिया। वहा उन्होंने चिन्तामणि जैसे न्याय के कठिन ग्रथ का अभ्यास किया।

उन्हे विक्रम स 1607 मारवाड मे नाडलाई गाव मे पहले प्रन्यास पदवी व बाद मे उपाध्याय पदवी से सुशोभित किया गया। केवल 26 वर्ष की उम्र मे सिरोही मे विक्रम स 1610 पोष सुदी पाचम को आचार्य पदवी प्रदान की गई। उसके बाद वे आचार्य विजय हीरसूरीश्वर जी के नाम से जाने गये। कुछ दिनो बाद ही पाटण मे दानसूरीश्वर जी ने उन्हे अपना पट्टधर बनाया। विक्रम स 1622 मे दानसूरीश्वर जी के स्वर्गवास के बाद समस्त जैन सघ की जिम्मेदारी इन पर आ पडी।

इस काल मे मुगल सूबेदारो की नादिरशाही से आचार्य श्री को बहुत कुछ सहन करना पडा। इधर राजधानी मे ऐसी घटना घटी की जिससे मुगल सम्राट अकबर जैन धर्म की तरफ आकर्षित हुआ। आगरा मे चम्पा नाम की श्राविका ने 6 माह की उपवास की लम्बी तपस्या की। उनकी तपस्या पूर्ण होने पर शोभायात्रा निकाली गई। अकबर बादशाह को वाजो की आवाज आई तो उन्होंने अपने सेवक से पूछा यह

किस चीज का जुलूस है। सेवक ने कहा, जहांपनाह ! चम्पा नाम की श्राविका ने 6 मास तपकी उपासना की है, उनकी तपस्या के बहुमान में यह जुलूस निकाला जा रहा है। बादशाह को इस बात पर भरोसा नहीं हुआ। इसलिए चम्पाबाई को अपने महल में बुलाया और पूछा कि तुमने 6 महिने के रोजे किये हैं, क्या यह सच्ची बात है। इतने दिन तक बिना अन्न के कैसे चला ? चम्पा ने कहा देव गुरु की कृपा से, बादशाह ने उनके गुरु के संबंध में जानकारी चाही। चम्पा ने कहा कि मेरे गुरु गुजरात के गंधार नगर में विराजे हुए हैं, उनका नाम हीर विजय सूरीश्वर जी महाराज है, जिनकी कृपा से मैं यह तपस्या पूरी कर सकी हूं !

आचार्य श्री का नाम सुनने पर बादशाह को उनके दर्शन करने की भावना जागी। बादशाह ने सोचा ऐसे गुरु कितने महान होंगे। उन्होंने श्रावक मनु कल्याण और थानसिंह से कहा कि तुम जैन संघ की तरफ से गुरुदेव को यहां पधारने की विनती लिखो और मैं गुजरात के सूबा सिहायब खान को लिखता हूं। अपने दो सेवकों मोदी और कमाल को बादशाह ने अहमदाबाद भेजा और सिहायबखान को लिखा कि गुरुदेव को हाथी, घोड़ा पालकी के साथ सम्मानपूर्वक दिल्ली पधारने की विनती करो। गंधार संघ के पास दोनों और के पत्र पहुंचने पर काफी विचार विमर्श हुआ। आखिर आचार्य देव ने दिल्ली की तरफ विहार का कार्यक्रम निश्चित किया। एक रात्रि को आचार्य महाराज को अल्पनिद्रा में एक देवी ने दर्शन दिये और कहा कि गुरुदेव ! अकबर आपको हृदय से बुला रहा है, आप दिल्ली पधारो। जिन शासन की बहुत शान बढ़ेगी। आचार्य देव अहमदाबाद से विहार कर वि.सं. 1639 जेठ बुदी तेरस को 67 शिष्यों के साथ फतेहपुर सीकरी में प्रवेश किया। आचार्य भगवन्त राजमहल में पधारे तो वहां गलीचे बिछे हुए थे। आचार्य देव ने आगे बढ़ने से मना किया। पूछने पर कहा कि इनके नीचे छोटे जीव हो सकते हैं। और गलीचे को उठाने पर नीचे चीटियों की लाइन चल रही थी। यह देखकर सूरी जी के प्रति बादशाह की खूब **श्रद्धा** बढ़ गई ! बादशाह प्रतिदिन आचार्य भगवन्त का प्रवचन सुनता था और उनके उपदेश को जीवन में उतारने की भावना जागृत हुई। प्रतिदिन सवासेर चिडियों की जिह्वा का कलेवा करने वाला बादशाह निरामिष भोजी बन गया। उनके प्रति बादशाह की इतनी बढ़ती श्रद्धा को देखकर अन्य लोगों को असंतोष होने लगा। उन्होंने बादशाह से कहा कि यह जैन लोग सूर्य देवता को नहीं मानते हैं, जो सारी दुनिया को प्रकाश प्रदान करता है। बादशाह ने आचार्य जी को पूछा तो उन्होंने कहा कि हम जितना सूर्य की इज्जत करते हैं उतना दूसरे नहीं करते हैं। जैन लोग से सूर्य अस्त होने बाद उसके वियोग में भोजन भी नहीं लेते हैं और पुनः तब तक उदित नहीं होता जब तक कोई चीज ग्रहण नहीं करते। इसी तरह एक रोज अकबर ने गुरुदेव से शनि की दशा में बचने का कोई उपाय व मंत्र तंत्र के बारे में पूछा। गुरुदेव ने कहा हमारे यहां साधुओं के लिए ज्योतिष व मंत्र तंत्र का काम करने का आचार नहीं है। हां आप जीवों को अभयदान देओगे तो आपके लिए सब अच्छा होगा। कारण जो दूसरों के लिए अच्छा करता है। उससे अपने लिए अच्छा होता है। आचार्य देव विहार कर आगरा पधारे। वहां पर्यूषण में आमारी प्रवर्तन कराया। आचार्य देव ने बादशाह को अहिंसा धर्म की महिमा समझाई इससे बादशाह के दिल पर बहुत असर हुआ। बादशाह के पूछने पर सूरिजी ने पक्षियों को पिंजरे से मुक्त करने का सूचन किया।

सूरिजी के उपदेश से अकबर ने पर्युषण पर्व के आठ दिन एव आगे पीछे के दो दो दिन इस तरह 12 दिन अपने सारे राज्य मे आमारी प्रवर्तन आदेश निकाला। इस फरमान की पाच नकले अपने सुबेदारो को छठी नकल आचार्य देव को प्रदान की। आचार्य देव की प्रेरणा से अकबर ने मासाहार का त्याग किया। सारे देश मे गो वध बन्द कराने तथा छ मास तक किसी प्राणी को कत्ल न किया जाय ऐसे फरमान जारी किये। डाबर सरोवर मे मछली मारने का काम बद कराया। जैन तीर्थ श्री शत्रुजय, श्री सम्मेद शिखर, गिरनार, तारगा आदि तीर्थो पर श्वेताम्बर सघ की मालिकी रहे, ऐसा फरमान सूरिजी को दिया। जैनो एव हिन्दुओ पर लगने वाला जजियाकर रद्द कराया। इन सब कार्यो से प्रभावित होकर बादशाह ने उन्हे जगत गुरु की पदवी प्रदान की।

मेवाड के महाराणा प्रताप एव राज्य भक्त दानवीर भामाशाह सूरि जी को अपने कुल गुरु तरीके स्वीकारते थे। स 1641 मे चातुर्मास आगरे मे किया वहा उन्हे गुजरात पधारने के लिए पत्र मिले। बादशाह को यह मालूम होने पर उन्होंने किन्हीं विद्वान शिष्य को उपदेश देने को छोडकर जाने का आग्रह किया, तब सूरि जी ने उपाध्याय शाति चन्द्र जी को दिल्ली मे चातुर्मास करने का कहकर गुजरात की ओर बिहार किया। पालीताणा की यात्रा कर सघ की विनती पर आपने वि स 1651 का चातुर्मास उना (गुजरात) मे किया। वहा अस्वस्थतावश दिन पर दिन वे कमजोर होते गये। श्रावको के अति आग्रह पर भी उन्होंने दवा लेने के लिए ना ही किया। ऐसी स्थिति मे वहा के श्रावक उपवास करके बैठ गये एव बहिनो ने बालको को दूध पिलाना बन्द कर दिया। अत मे अन्य साधु मुनिराजो के निवेदन करने पर उन्होंने दवा लेने के लिए मजूरी दी। भादवा सुदी दशमी स 1652 को रात्रि को सब साधुओ को एकत्रित कर उपदेश दिया कि जिन शासन की शोभा बढाना और सभी समुदाय आपस मे प्रेमपूर्वक रहे इस भावना से काम करना। अगले रोज सध्यावक्त प्रतिक्रमण कर आखिरी वक्त मे सबसे कहा कि अब मै अपने काम मे लीन होता हू, तुम सब धर्म कार्य करने मे सूरवीर बनना और उन्होंने देह त्याग दिया। उना के शाही बाग का मे उनका अग्नि सस्कार हुआ। जहा अग्नि सस्कार हुआ उसके पास की 22 बीघा जमीन बादशाह ने समाधि स्थल बनाने के लिए भेट मे दे दी।

400 वर्ष पूर्व के इस महापुरुष ने अहिसा और दया की पालना के लिए अकबर जैसे मुगल सम्राट से जो कार्य कराये वे इतिहास मे महत्वपूर्ण तो बने ही, चमत्कारी भी बने। आज जैन समाज मे जो अहिसा और दया का भाव दिखता है उसमे इन गुरुदेव का योगदान विशेष महत्व का है।

- आचार्य श्री विजय शीलचन्द्र सूरीश्वरजी के सौजन्य से।
- श्री नगीनदास जे शाह के गुजराती लेख से अनूदित।

महान आदर्श, महान मस्तिष्क का निर्माण करते हैं।

– इमर्सन

सुख भोग की लालसा आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।

– प्रेमचन्द

सम्राट अकबर के देहान्त के बाद उनका लडका जहांगीर सम्राट बना। अकबर के अहिंसा के फरमानों को उसने रद्द कर दिया और जैनों के प्रति अपनी अरुचि दिखाई, तब विजयसेन सूरीश्वर जी के शिष्य वाचक विवेक हर्षगणि सम्वत् 1666-67 में चातुर्मास में आगरा रहे। उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा से शाह को पुनः प्रसन्न किया और पर्यूषण के बारह दिवसों का अमारिका फरमान प्राप्त किया।

सम्राज जहांगीर के दरबारी चितेरे उस्ताद शालिवाहन ने कुछ ऐसे चित्र बनाये थे जिनमें मुगल सम्राट का जैन गुरुओं से सम्पर्क बताया गया था। ये चित्र आज भी अहमदाबाद के लालभाई दलपत भाई म्यूजियम में सुरक्षित हैं ऐसा ही एक चित्र यहां प्रदर्शित किया जा रहा है। जहांगीर का यह फरमान पंडित विवेक हर्षगणि ले जाकर विजयसेन सूरीश्वर जी को भेंट कर रहे हैं।

महिला विकास विकसित तथा विकासशील देशों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रो सी एस बरला
अर्थशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्राय बुद्धिजीवी वर्ग मे एक भ्राति प्रचलित पाई जाती है, कि विकसित देशो मे पिछड़े हुए अथवा विकासशील देशो की तुलना मे महिलाओ की स्थिति काफी बेहतर है। यह भी माना जाता है कि महिलाए विकसित देशो मे पुरुषो के समान वेतन पाती है, तथा निर्णय लेने मे उन्हे पुरुषो के समकक्ष अधिकार प्राप्त है।

परन्तु हाल ही मे सयुक्त राष्ट्र सघ के विकास कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट से यह स्पष्ट हो गया है कि विकसित देशो मे भी विकासशील देशो की भाँति ही महिलाओ के साथ भेदभाव बरता जाता है। यहा उन कुछ बिन्दुओ पर चर्चा की जा रही है जो विकसित तथा विकासशील देशो मे महिलाओ की सापेक्ष स्थिति से प्रत्यक्षत सम्बद्ध है। लेख के अत मे भारत के कुछ राज्यो मे महिला विकास की स्थिति पर प्रकाश डाला जाएगा।

1 महिला साक्षरता

यह सच है कि साक्षरता की दृष्टि से विकसित देशो मे 97-98 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षित अथवा साक्षर है, तथापि प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयो मे प्रविष्ट बालिकाओ का अनुपात बालको की तुलना मे कहीं अधिक है। इसके विपरीत (बीस यूरोपीय तथा उत्तरी अमरीकी देशो को छोड़कर) विकासशील देशो मे न केवल साक्षरता की दर महिलाओ मे पुरुषो की तुलना मे कम है, अपितु विद्यालयो मे प्रविष्ट बालिकाओ का अनुपात भी कम है। अत्यधिक पिछड़े हुए देशो जिनमे भारत भी एक है पुरुषो मे साक्षरता का अनुपात 61 5 प्रतिशत रिकार्ड किया गया, जबकि महिलाओ मे यह केवल 36 प्रन्शित ही पाया गया। इसी प्रकार विद्यालयो मे प्रविष्ट बालिकाओ का अनुपात 39 प्रतिशत पाया गया जबकि बालको मे यह प्रतिशत 53 7 प्रतिशत था। भारत मे 1993 मे महिला-साक्षरता 36 प्रतिशत रिकार्ड की गई थी जबकि पुरुषो मे यह 64 3 प्रतिशत थी। इसी प्रकार विद्यालयों मे प्रविष्ट बालको के अनुपात (62 8 प्रतिशत) की तुलना मे बालिकाओ का अनुपात (46 प्रतिशत) बहुत कम था।

विभिन्न अध्ययनो से यह स्पष्ट होता है कि सभी विकासशील देशो मे बालिकाओ की शिक्षा के प्रति माता पिता प्राय उदासीन रहते है क्योंकि प्राय इन देशो मे माताओ के घरेलू कार्यों अथवा कृषि कार्यों मे व्यस्त रहने पर छोटे बालको की देखभाल का दायित्व बालिकाओ पर ही रहता है। अफ्रीका के अधिकाश देशो मे 20 प्रतिशत से भी कम महिलाए साक्षर है तथा विद्यालयो मे प्रविष्ट बालिकाओ का अनुपात

भी प्रायः 15 से 22 प्रतिशत के बीच ही रहता है। एक रोचक तथ्य यह भी है कि विद्यालयों में प्रविष्ट होने के बाद तीन चौथाई बालिकाएं अपनी शिक्षा को पूरा नहीं कर पातीं।

2. महिलाओं पर कार्य-भार :

विश्व के लगभग सभी देशों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं पर कार्य का भार अधिक रहता है। सभ्य समाजों में भी चाहे वह यूरोपीय देश हों अथवा जापान, कनाडा अथवा सं. रा. अमेरिका हो, महिलाएं घर के बाहर तो कार्य करती ही हैं, उन्हें घर पर भी खाना पकाने, सफाई करने, लांड्री करने तथा बच्चों की परवरिश करने संबंधी कार्य करने होते हैं। विकासशील देशों में विशेष रूप से गांवों में महिलाएं खेत खलिहान की क्रियाओं में 40 से 60 प्रतिशत की भागीदारी निभाती हैं तथा घरेलू कार्यो का भी लगभग सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का रहता है।

परन्तु विडम्बना यह है कि अधिक कार्य भार होने पर भी विभिन्न सरकारें जब राष्ट्रीय आय की गणना करती हैं तो महिलाओं द्वारा परिवार के सदस्यों के लिए जो सेवाएं अर्पित करती हैं उन्हे कोई तरजीह नहीं दी जाती। यू.एन.डी.पी. रिपोर्ट (1996) के अनुसार विश्व के अधिकतम विकसित 20 देशों में महिलाओं के कुल कार्य दो तिहाई रिकार्ड नहीं किया जाता जबकि इन देशों में पुरुषों के कुल कार्य के लिए एक तिहाई को ही "अनुत्पादक" माना जाता है।

1993 में विश्व भर में कुल 23.6 ट्रिलियन डालर के मूल्य का उत्पादन हुआ था। इसके अतिरिक्त घरेलू कार्यो तथा समाज सेवा के कार्यो का मूल्य 16 ट्रिलियन डालर आकलित किया गया था जिसको राष्ट्रीय आय की गणना से बाहर रखा गया। इसमें से 11 ट्रिलियन डालर के मूल्य का योगदान महिलाओं का था जिसे "अनुत्पादक" मानते हुए राष्ट्रीय आय की गणना से पृथक कर दिया गया। एक रोचक तथ्य यह भी है कि अरब देशों तथा मुस्लिम बाहुल्य अफ्रीकी देशों में महिला विकास के सूचकांक की दृष्टि से स्थिति अत्यधिक निराशाजनक रही है।

कुछ विकसित देशों के लिए प्रस्तुत आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का कार्यभार अधिक है। जापान में पुरुषों की तुलना में महिलाएं 7 प्रतिशत अधिक कार्य करती हैं जबकि आस्ट्रिया तथा इटली से क्रमशः 11 तथा 28 प्रतिशत है। केन्या में पुरुषों की तुलना में महिलाएं 35 प्रतिशत अधिक कार्य करती हैं। नीति निर्धारकों, समाजशास्त्रियों तथा अर्थशास्त्रियों को इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करना चाहिए कि अधिक कार्य करने के बावजूद महिलाओं के योगदान को प्रायः क्यों नकार दिया जाता है।

विश्व श्रम संगठन की एक रिपोर्ट (1988) में भी इन प्रश्नों को उठाया गया तथा अर्थशास्त्रियों द्वारा आर्थिक क्रियाओं में बाजार के लिए उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं को ही सम्मिलित करने को इसलिए अनुचित माना गया कि इनमें महिलाओं के योगदान की उपेक्षा की जाती है। संगठन ने स्पष्ट किया कि घरेलू कार्यो में कुल श्रम का 40 से 45 प्रतिशत व्यय होता है तथा इसमें से अधिकांश महिला श्रम का योगदान रहता है। यू.एन.डी.पी. की रिपोर्ट में भी यह बतलाया गया है कि भारतीय ग्रामीण महिलाएं सप्ताह में 69 घंटे कार्य करती हैं जबकि पुरुषों के संदर्भ में यह औसत 59 घंटे ही है। नेपाल में महिलाओं व पुरुषों का श्रम क्रमशः 7 7 घंटे व 56 घंटे प्रति सप्ताह अनुमानित किया गया है।

कुल मिलाकर यह स्पष्ट है कि पुरुषों की तुलना में महिलाए उत्पादन प्रक्रिया तथा घरेलू सेवाओं में अधिक योगदान देती हैं। तथापि उनके कार्यो में प्रायः उन्हीं का मूल्यांकन किया जाता है जिनके बदले उन्हे मजदूरी

या पगार मिलती हो।

3 महिलाओ का कुल आय मे योगदान

विश्व के लगभग सभी देशो मे प्राय महिलाओ व पुरुषो के मध्य मजदूरी की दरो मे अतर पाया जाता है, हालाकि श्रम कानूनो के अतर्गत समान कार्य हेतु समान मजदूरी का स्पष्ट प्रावधान है। अतर्राष्ट्रीय श्रम सगठन की उक्त उद्धृत रिपोर्ट मे बतलाया गया कि भारत मे खेतिहर श्रमिको मे महिलाओ को पुरुषो की तुलना मे 73 से 80 प्रतिशत ही मजदूरी प्राप्त होती है। साइप्रस, कोरिया तथा सिगापुर मे तो यह अनुपात 47 से 63 प्रतिशत हीं था। ऐसा प्रतीत होता हे कि ग्रामीण क्षेत्रो म या तो श्रमिको को उपरोक्त कानूनो की जानकारी नहीं है अथवा मध्यस्थो या भूपतियो के वर्चम्व के कारण उनका शोषण जारी है। यही स्थिति शहरो मे भवन निमाण आदि कार्यों मे सलग्न महिला श्रमिको की है। एक तथ्य यह भी है कि विकासशील दशो मे सीमान्त श्रमिको मे महिलाओ का अनुपात पुरुषो से तीन गुना है तथा वे खेतिहर मजदूरो के रूप मे कार्य करने को विवश है चाहे मजदूरी की दर कम ही क्यो न हो।

विश्व के विकसित देशो मे महिलाओ मे बेरोजगारी का अनुपात 8 1 प्रतिशत है जबकि पुरुषो म यह अनुपात 7 प्रतिशत से भी कम है।

ऊपर यह बनलाया गया था कि विश्व के विकसित तथा विकासशील दोनो प्रकार के देशो मे पुरुषो की अपेक्षा महिलाआ द्वारा अधिक कार्य किया जाता है। परन्तु एक तो महिलाओ के कार्यो के एक छोटे अश का ही मूल्याकन किया जाता है और दूसरे महिलाओ की मजदूरी दर या पगार अधिकाश प्रकार के कार्यों मे कम होती है। यही कारण है कुल आय मे सयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा व जापान जैसे विकसित देशो मे भी कुल आय का क्रमश 60 प्रतिशत, 63 प्रतिशत व 67 प्रतिशत पुरुषो को प्राप्त है और शेष महिलाओ को मिल पाता है। सभी विकसित देशो को मिलाकर पुरुषो व महिलाओ का कुल आय मे हिस्सा क्रमश 6 5 2 प्रतिशत तथा 34 8 प्रतिशत है।

पिछड़े हुए देशो मे पुरषो को कुल आय का 72 7 प्रतिशत प्राप्त होता है जबकि महिलाओ को केवल 27 3 प्रतिशत ही मिलता है। भारत मे तो यह अनुपात क्रमश 75 2 प्रतिशत व 24 8 प्रतिशत ही है। सभव है राष्ट्रीय आय की गणना विधि मे परिवर्तन होने पर इस अनुपात मे सुधार हो जाए लेकिन पुरुप प्रधान समाज मे पुरुष-महिला श्रमिको के मध्य न केवल सगठनात्मक अतर रहेगा अपितु मजदूरी की दरो मे अतर बना रहेगा, ऐसी आशका है।

जैसा कि आगे बतलाया गया है, महिलाओ का कुल आय मे कम हिस्सा होने का एक कारण यह भी है कि उनमे से अधिकाश मजदूरो या लिपिको के पद पर सलग्न है न कि ऊची पगार वाले प्रबन्धको के पदो पर।

4 महिला शक्ति तथा प्रशासनिक राजनैतिक अधिकार

पिछले कुछ वर्षों से सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा प्रशासनिक, आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो मे महिलाओ की भागीदारी के आधार पर महिला शक्ति के सूचकाक प्रकाशित किए जा रहे है। इनमे ससद/लोकसभा तकनीकी व प्रशासनिक सेवाओ, लिपिको के रूप मे तथा अन्य सेवाओ मे महिलाओ का पुरुषो की तुलना मे अनुपात कम देखा जाता है। यही नही यह भी देखा जाता है कि मत्री व सरकारी अधिकारियो के रूप मे कितनी महिलाए है।

यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि विकसित देशो मे भी ससद सदस्यो मे महिलाओ का अनुपात 15 से

20 प्रतिशत के बीच ही है तथा इन देशों की नीतियों के निर्धारण में जिनमें आर्थिक, वाणिज्यिक, सामाजिक तथा विदेश नीतियां शामिल है - पुरुषों का वर्चस्व बरकरार है।

सभी प्रशासनिक पदों पर विकसित देशों में 100 पुरुषों की तुलना में केवल 44 पर महिलाएं कार्यरत हैं जबकि पिछडे हुए देशों में यह औसत केवल 12 ही है। भारत व पाकिस्तान में तो यह अनुपात केवल 2 व 4 ही पाया गया है परन्तु लेसोथो, हैती, होंडूरास, मंगोलिया, बोट्सवानिया जैसे छोटे देशों में प्रति 100 पुरुषों की तुलना में 40 से 57 महिलाएं कार्यरत हैं। दूसरी और विकसित देशों में जापान, फ्रांस व स्पेन में केवल 10 से 14 महिलाएं ही 100 पुरुषों की तुलना में प्रशासनिक पदों पर कार्यरत हैं।

परन्तु तकनीकी श्रमिकों तथा लिपिकों के पदों पर पुरुषों की तुलना में विकसित देशों में 60 प्रतिशत अधिक महिलाएं कार्यरत हैं। यही स्थिति कम पगार वाले पदों की है जिनमें 100 पुरुषों के पीछे 159 महिलाएं क्रियाशील हैं। जहां यह औसत जापान में 118 है, वहीं कनाडा व अमरीका में 133 तथा 150 है जबकि नॉर्वे, स्वीडन, आस्ट्रेलिया तथा हंगरी में 300 से अधिक है। न्यूजी लैंड में तो 100 पुरुषों की तुलना में लिपिक के पदों पर 303 महिलाएं कार्यरत हैं।

दूसरी ओर भारत में 100 पुरुषों की तुलना में महिला तकनीकी श्रमिकों की संख्या केवल 26 है। अधिकांश पिछडे हुए देशों में सभी प्रकार के पदों पर (खेतिहर श्रमिकों को छोड़ कर) पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या 30 से 32 प्रतिशत ही है।

सरकारी पदों पर पिछड़े हुए देशों में 6.4 प्रतिशत ही महिलाएं कार्यरत है, हालांकि मंत्री, राज्यपालों या अन्य महत्वपूर्ण पदों पर उनका अनुपात 7 प्रतिशत तक है। किन्हीं किन्हीं विकासशील देशों जैसे बहामास, कोस्टारिका, फिलीपींस, बार्बाडोस आदि में सरकारी पदों पर 21 से 30 प्रतिशत तक महिलाएं आसीन है।

इसी प्रकार विकसित देशों में भी महिलाओं की संख्या सरकारी पदों में 13 से 15 प्रतिशत है, हालांकि नॉर्वे स्वीडन, अमरीका तथा आस्ट्रेलिया इसके अपवाद हैं जहां 26 से 44 प्रतिशत सरकारी पदों तथा मंत्री पदों पर महिलाएं कार्यरत हैं।

कुल मिलाकर यह निष्कर्ष दिया जा सकता है कि महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति विश्व के विकसित तथा विकासशील दोनों प्रकार के देशों में पुरुषों की तुलना में बेहतर नहीं है। इसमें कुछ देश अपवादस्वरूप अवश्य हैं लेकिन महिलाओं की शक्ति तभी पुरुष वर्ग को स्वीकार्य होगी जब वे तकनीकी तथा संगठन की दृष्टि से पुरुषों के समकक्ष बन जाएं। हमारी संसद से लेकर ग्राम पंचायत तक एक तिहाई जन प्रतिनिध महिलाओं के रूप में चुने जाने की देश भर में व्यवस्था की जा रही है परन्तु यह कितनी सार्थक तथा व्यवहारिक हो पाएगा यह भविष्य ही बताएगा। ❑

शरीर एक पवित्र तीर्थ है, क्योंकि इसमें आत्मा का वास है।

- गांधीजी

नवोदय दिशा और दर्शन

✍ विद्यावारिधि डा महेन्द्रसागर प्रचडिया
एम ए, पी एच डी, डी लिट

जीव धारियो मे मनुष्य की श्रेष्ठता असदिग्ध है। उसकी श्रेष्ठता का आधार है - उसमे निहित अमोघ शक्ति और तप तथा सयम-साधना का ज्ञानपूर्वक दृढ सकल्प। मनुष्य का नवोदय उसके विकास का मेरु-दण्ड होता है। यहा सक्षेप मे इसी सदर्भ मे विचार करना हमे ईप्सित रहा है।

जीवन के दो पक्ष होते है - उदय और अस्त। उदय से उसका प्रारम्भ और उसके अत का परिचायक होता है - अस्त। नवोदय की दिशा और दर्शन वस्तुत आज के चिन्तन का आवश्यक विचार बिन्दु है।

नवोदय मे अदम्य ऊर्जा अन्तर्मुक्त है। श्रम व्यक्ति मे स्वावलम्बन के सस्कार उत्पन्न करता है। व्यक्ति-विकास के लिए उसका स्वावलम्बी होना परम आवश्यक है। परावलम्बन से विकास के सोपान पर अन्य द्वारा आरोहण किया जाता है। अत नवोदय के स्वावलम्बन को चिरजीवी रखने पर हमे पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए

श्रम नवोदय का वरदान है। श्रम के सम्यक् उपयोग से श्रमी मे उपयोग की शक्ति का सचार हो उठता है। यदि व्यक्ति मे उपयोग जाग्रत नहीं हुआ तो उसकी कार्मिक शक्ति और सामर्थ्य निस्सार हो जाती है। उपयोग जब शुभोपयोग मे परिणत होता है, तब व्यक्ति के विकास के वातायन स्वयमेव खुला करते है। ऐसी स्थिति मे उसके आत्मिक गुणो का जागरण होता है और परिणामस्वरूप स्व और पर के कल्याणपरक अकुर फूटने लगते है।

नवोदय के श्रम का सदुपयोग होने पर उसमे सकल्प की दृढता का सचार हो उठता है। आज का आदमी अपने दृढ सकल्प के अभाव मे विकास और उल्लास की दौड़ मे पिछड़ रहा है।

नवोदय मे ज्ञान और श्रद्धान की शक्ति स्वयमेव विद्यमान है। ज्ञान के अभाव मे श्रद्धान और श्रद्धान के अभाव मे ज्ञान सर्वथा पगु और पतित है। दरअसल ये दोनो एक दूसरे के पूरक हैं।

जागतिक अथवा आध्यात्मिक विकास के लिए ज्ञान और श्रद्धान का सहयोग परम आवश्यक है। इन दोनो के अभाव मे चारित्र का कोई मूल्य नहीं है। जब ज्ञान, श्रद्धान और चारित्र का एकीकरण होता है तब वस्तुत कार्य की सम्पन्नता सुनिश्चित समझनी चाहिए। आज के आम आदमी मे इस प्रकार की कथनी और करनी मे इकसारता का सर्वथा अभाव है। इसीलिए प्रत्येक प्रकार की उपलब्धि मे उसे असफलता प्राप्त होती है।

नवोदय मे ऊर्जा अपरमित है। पर उसके सम्यक प्रयोग और प्रयोजन की चरितार्थता अपेक्षित है। इसके लिए हमे नवोदय को सन्मार्ग की ओर उन्मुख करने के

लिए दिशा-दर्शन देने की परमावश्यकता है।

नवोदय की दैनिकचर्या में 'आवश्यक' का अभ्यास सातत्य अनिवार्य है। आवश्यक शब्द के मूल में शब्दांश है 'अवश'। इससे तात्पर्य है जो किसी के विशेषकर इन्द्रियों के वश में न होना। स्वाधीन होने के लिए आवश्यक का नैत्यिक प्रयोग अत्यावश्यक है।

गृहस्थ के लिए षट् आवश्यक कहे गए हैं - सामायिक, चउवीं संथव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान। दिगम्बर परम्परा में इन्हें देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान कहा गया है।

'आवश्यक' वस्तुतः जीवन शुद्धि और दोष-परिमार्जन का जीवंत भाष्य है। जो आत्मा को दुर्गुणों से हटाकर सद्गुणों के अधीन करे, वस्तुतः वह है आवश्यक। आवश्यक आध्यात्मिक समता, विनम्रता आदि विविध गुणों का आधार है। सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आध्यात्मिक ज्योति जिससे प्रज्जवलित हो, वस्तुतः वही आवश्यक है। अपनी भूलों और अपराधों को निहारकर परखना तथा यथायोग्य संशोधन करना वास्तव में आवश्यक है।

संसार की लगभग सभी धार्मिक मान्यताओं के यहां 'आवश्यक' का उपयोग करना मान्य है। वैदिक परम्परा में इसे 'संध्या' कहा जाता है। बौद्ध धर्म में आवश्यक के स्थान पर 'उपासना' शब्द प्रचलित है। इस्लाम धर्म में इसे 'नमाज' के रूप में लेते हैं। पारसियों द्वारा इसे 'खोर देह अवस्ता' के रूप में व्यवहृत किया जाता है। यहूदी और ईसाइयों में प्रार्थना के रूप में प्रयुक्त किया गया है। जैन दर्शन में आवश्यक के रूप में प्रयोग किया गया है। दोषों की शुद्धि और आत्मिक गुणों की अभिवृद्धि के लिए 'आवश्यक' शब्द का प्रयोग किया गया है।

सामायिक द्वारा समभाव की साधना की जाती है। चतुर्विंशति स्तव में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की जाती है। वंदन-सदगुरुओं को नमस्कार किया जाता है। प्रतिक्रमण में दोषों की आलोचना की जाती है। कायोत्सर्ग में शरीर के प्रति ममत्व का त्याग किया जाता है। प्रत्याख्यान में आहार आदि के त्याग का अभ्यास किया जाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आवश्यक का अभ्यास धर्माचरण का मूलाधार है। नवोदय में धर्म के जागरण से विकास के महाद्वार स्वतः खुल जाते हैं। प्राणी-प्राणी में भेदक रेखा समाप्त हो जाती है और पारस्परिक समता का संचार हो उठता है। ऐसा कुछ सब कुछ नवोदय में चरितार्थ होने पर उसकी सार्थकता स्वतः प्रमाणित हो जाती है।

इत्यलम् !

❑

गुरू की डांट-डपट पिता के प्यार से उत्तम है।

- शेख सादी

अपने शत्रु से प्रेम करो। जो तुम्हें सताए उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करो।

- ईसा

जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में परमाणु

प्रज्ञा भारती साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्री

जैन दर्शन मे जीव अजीव का विशद वर्णन करते हुए लोक का षट रूप द्रव्यात्मक बताया गया है। ये है धर्मातिकाय, अधर्मातिकार्य, आकाशान्तिकाय, पुगलातिकाय, जीवान्तिकाय एव बाल। (1) जीव एव अजीव द्रव्य मे वर्गीकृत इनमे जीव मे चेतना है जबकि अन्य पाच चेतना रहित हैं। अभेद दृष्टि से देखने पर जड और चेतन, एक और अनेक, सामान्य और विशेष, गुण और पर्याय (सतासामान्य) एक ही द्रव्य रूप है परन्तु द्वैतदृष्टि से द्रव्य को दो रूप - जीव ओर अजीव मे विभाजित किया गया है। (2) जीव द्रव्य को अरूपी माना गया हे जबकि अजीव के दो भेद-रूपी ओर अरूपी किये गये हैं। रूपी द्रव्य को पुदगल कहा गया है तथा अरूपी अजीव के पुन चार भेद है - धर्मान्तिकाय, अधर्मान्तिकाय, आकाशान्तिकाय एव अद्धासमय-काल। इन छ द्रव्यो मे मे प्रथम पाच द्रव्य अतिकाय (प्रदेश वहुत्व) और छठा काल आतिकाय नहीं है। (3) चूकि पुदगल मे स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण ये चारो गुण रहते है अत वह रूपी है। पुदगल को छोडकर शेष पाच द्रव्यो मे स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण नहीं है, अत वे अरूपी है। जीव आभासिक रूपी प्रतीत होता है परन्तु यथार्थ मे पुदगल युक्त होने से ही अन्यथा जीव प्रत्यक्ष मे अरूपी ही है।

1 पचान्तिकाय 131 एव भगवती सत्र 15 2 4
2 विसेसिए जीव दव्वे अजीव दव्वे य/ अनुयोग द्वार स 123
3 भगवती सत्र 2 10 117 एव स्थानाग सत्र 5 44।

सम्पूर्ण विश्व इन्ही छ द्रव्यो से निर्मित है। धर्मान्तिकाय एव अधर्मान्तिकाय क्रमश गति एव स्थिति के माध्यम हैं तो आकाशान्तिकाय जीव तथा अन्य द्रव्यो को अवकाश या स्थान देता है। (4) जीव एव अन्य द्रव्यो मे परिवर्तन-पर्याय का कारण काल माना गया है। अर्थात काल (समय) ही किसी जीव या अजीव मे परिवर्तन का मूलाधार है। (5) पुदगलान्तिकाय मे समान द्रव्य समाहित है जो गुणो से युक्त है तथा अणु अथवा स्कन्ध रूप मे है। (6) पुद्गल जिसे विज्ञान द्वारा मैटर अर्थात द्रव्य कहा गया है, अजीव है परन्तु जहा जीव को शाश्वत बताया हे इसे भी शाश्वत ही कहा है। इसकी पहचान पैतीस बोल का थोकडा (वीसवें बोल) मे पाच बोल से कराई गई है (7) (1) द्रव्य से-अनन्त द्रव्य (2) क्षेत्र से-सम्पूर्ण लोक प्रमाण (3) काल से-आदि अन्त रहित (4) भाव से-रूपी वर्ण है, गन्ध है, रस है, स्पर्श है, अजीव, शाश्वत साकात प्रदेश, असाकात प्रदेशी, अनन्त प्रदेशी है (5) गुण से-पूरण, गलन, सडन, विध्वसन गुण।

इस प्रकार पुदगल सम्पूर्ण लोक मे व्याप्त है और इसमे स्पर्श रस, गन्ध, वर्ण आदि गुण है यह एक प्रदेशी से अनन्त प्रदेशी है और इसमे उत्पाद-व्यय ध्रौव्य क्रियाए होती हैं अर्थात उत्पत्ति, व्यय एव निलता अर्थात पर्याय बदलने पर भी शाश्वत रहता है।

4 पचान्तिकाय 85, 86, 87
5 नियम सार 33
6 तत्वार्थ सत्र 5/23 एव 25
7 पचीस बोल का थोकडा-बोल 20, ठाणाग 5/441

पुदगल छः प्रकार के हैं -

1. अति स्थूल - पृथ्वी, पर्वत आदि
2. स्थूल - मक्खन, पानी, तेल आदि
3. स्थूल - सक्ष्म, छाया, धूप आदि
4. सथम स्थल - जो चार इन्द्रियों द्वारा अनुभूत है जैसे पवन, वाष्प आदि।
5. सक्ष्य - मनोवाजि, कर्म वाजि और अचाक्षुण स्कन्ध अर्थात जो चक्षु इन्द्रिय के विषय नहीं है।
6. सक्ष्य - अंतिम विरश पुदमल (परमाणु)

पुदगल अणुरूप होता है अथवा स्कन्ध रूप (9) स्कन्ध की तीन अवस्थाएं स्कन्ध, देश, प्रदेश है और परमाणु (परम +आणु) पुद्गल का निर्विभागी अंश है। अतः प्रकारान्तर में पुद्गल चार प्रकार का हुआ- स्कन्ध, देश, प्रदेश और परमाणु। स्कन्ध दो से लेकर अनन्त परमाणुओं का पिण्ड अर्थात दो परमाणुओं के द्विप्रदेशी स्कन्ध से लेकर लोक व्यापी महास्कन्ध तक। ऐसे महास्कन्ध का एक से अधिक परमाणुओं की इकाई में पृथक होना भी स्कन्ध है। स्कन्ध के भेद से पुन· परमाणु बन जाते हैं और इस प्रकार पुद्गल का अस्तित्व बना ही रहता है।

यहां स्पष्ट करना अप्रासंगिक नहीं कि किसी पदार्थ का मूल रूप स्थिर रखते हुए जो उसका अंतिम विभाग दृश्य है वह स्कन्ध ही है जैसे एक मिट्टी के घडे के पांच सौ टुकडे करने पर भी स्वतंत्र स्कन्ध है।

8. नियमसार 21/4
9 तत्वार्थ सूत्र 5/25
10 पचान्तिकाय 81

जब तक वह परमाणु रूप में नहीं पहुंचता वहां तक स्कन्ध ही है। इससे परिवर्तनीयता व स्थायित्व का एहयामी रूप स्पष्ट होता है।

स्कन्ध देश - स्कन्ध से तात्पर्य एक इकाई है और इसके बुद्धिमाय एक विभाग को स्कन्ध देश कहते हैं। अर्थात स्कन्ध का एक भाग देश है जैसे एक पेन्सिल का अर्द्ध-चतुर्थ भाग अथवा किसी पुस्तक का एक पृष्ठ उस समय पेन्सिल या पुस्तक का एक देश है। यह देश स्कन्ध से स्पष्ट है पृथक नहीं होता। पृथक होने पर एक एवतन्य स्कन्ध बन जाता है।

स्कन्ध प्रदेश - प्रत्येक स्कन्ध की मूल नीति परमाणु है अर्थात जब तक परमाणु स्कन्ध से पृथक न होकर स्कन्धगत है तब तक स्कन्ध प्रदेश है।

परमाणु - स्कन्ध का वह सभ्यतम भाग जो विभाजित हो ही नहीं सकता उसे परमाणु कहते हैं - अर्थात स्कन्ध में जुडा हुआ वह स्कन्ध प्रदेश है तथा पृथक अवस्था में परमाणु।

परमाणु जो पुदगल का ही एक भेद है ने आज विश्व मानस पर अपना अधिकार जमा लिया है। परमाणु की शक्ति एवं सामर्थ्य से आज कौन अपरिचित है, विज्ञान में इसे डाल्टन थामसन रदरफोर्ड आदि ने बीसवीं शताब्दी में ही स्थापित किया परन्तु जैन दर्शन में इस पर विशदवर्णन शताब्दियों पूर्व प्राप्त है। चौबीसवें तीर्थकर भगवान महावीर के आगम ग्रंथों में इसके स्वरूप, इसकी शक्ति के विविध आयाम, इसकी परिणमशीलता, नित्यता आदि पर जो चर्चा की गई है हमारे तथाकथित विज्ञान के लिये चुनौती है।

ज्ञातव्य है कि एटम (अणु) को काफी समय तक अविभाज्य माना जाता रहा परन्तु प्रयोगों द्वारा सिद्ध

हो गया कि परम अणु (परमाणु) ही अविभाज्य है अर्थात अणु मे प्रोटोन, इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन आदि भी है। एक अणु पूरे सौर मडल का रूप हे। इसमे एक न्यूक्लियस होता है और इसके चारो और इलेक्ट्रोन, प्रोटोन आदि चक्कर लगाते है। अन्य शब्दो मे कहे तो सूक्ष्मतय इकाई परमाणु है जो सक्ष्यगति सक्ष्य होते हुए भी शक्तिपुन्ज हे। ऐसे अन्त परमाणुओ के बन्ध से एटम बम्ब व हाईड्रोजन बम का रूप प्रकट होता है।

जैन तीर्थकरो ने शताब्दियो पूर्व अपने आध्यात्म ज्ञान को यथार्थ से जोडकर एक नवीन विचार शैली प्रस्तुत की है। उनके अनुसार परमाणु उसकी जड (पदार्थ-मेटर) का सक्ष्यतम रूप है, जो अविभाज्य, अच्छेदय, अदाहय एव अग्राह्य है। (11) अर्थात पुदगल की अतिम इकाई परमाणु है। ज्ञातव्य है कि जैन परमाणु सिद्धात मे स्वय परमाणु के दो भेद बताये गये है - सूक्ष्म परमाणु और व्यावहारिक परमाणु (12) अर्थात जिस परमाणु को आज विज्ञान ने विभाजित किया है वह व्यावहारिक परमाणु से सबधित है, क्योकि व्यावहारिक परमाणु स्वय अनन्त सूक्ष्म परमाणुओ का समुदाय है जैसाकि अनुयोगद्धार सूत्र मे वर्णित है।

परमाणु दुविहे, पणने, तजहा सुहुमेव नवहारिमेव। अणताण सुहुम परमाणु योग्गलाण समुदय समिति समागयेण, व्यवहारिए परमाणु योगले निष्पाजति।

भगवती सूत्र के अनुसार (5-7-869) परमाणु का चरम स्वरूप इन्द्रिय ज्ञान का विपय ही नहीं बन सकता। यह इन्द्रिय ग्राह्य नहीं है तथापि अमूर्त नही क्योकि स्कन्ध रूप मे यह मूर्त या रूपी ही है। आज विज्ञान ने परमाणु को दृश्य बताने का दावा इस आधार पर बताया है कि उसे लाखो गुना बढाकर देखा जाना परमाणु की सूक्ष्मता आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से ज्ञान करे तो बीस शख परमाणुओ का भार एक तोला है और इसका व्यास एक इच का दस करोडवा भाग है। इसी प्रकार सिगरेट को लपेटने वाले कागज की मोटाई एक से एक सटाकर एक लाख परमाणु आ सकते है अर्थात इन्हे केवल ज्ञानी ही जान सकते है, इन्द्रिय प्रत्यक्ष व्यक्ति उसे जान ही नहीं मकता।

प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री डब्ल्यू सी डेम्पीयर ने भी विज्ञान की सीमितता को अपने ग्रथ विज्ञान का इतिहास मे स्वीकार करते हुए लिखा है -

"परमाणु परिक्षण के समय बाईस उपकरण किसी न किसी रूप मे प्रभावित करता है ओर उसमे परिवर्तन ला देता है और इस प्रकार हम वही परिवर्तित परमाणु देख पाते हैं, वास्तविक परमाणु नहीं"

(13) परमाणु अप्रतिघाती

परमाणु सूक्ष्मतम होने पर भी अप्रतिघाती है अर्थात इसे पकड कर रोका नहीं जा सकता इस पर प्रतिघात नहीं कर सकते या इसे बाधित नहीं किया जा सकता। मोटी लोह-दिवार, अगाध सागर, महान पर्वत का वज्रवत पदार्थ के आरपार जाने मे परमाणु समर्थ है। आधुनिक विज्ञान मे न्यूट्रोन नामक एक ऐसे अणु की कल्पना की गई है जिसे पृथ्वी के आरपार कराया जाय तो भी वह किसी परमाणु से टकराये बिना निकल जायेगा। (14) अप्रतिघातित्व को निम्नाकित चार वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है -

1 परमाणु की गति व क्रिया को कोई भी भौतिक पदार्थ अथवा जीव रोक नहीं सकता अर्थात गतिशील परमाणु अपने मार्ग मे किसी भी प्रकार की बाधा पार कर सकता है।

2. एक आकाश प्रदेश जिसमें अन्य स्कन्ध या जीव हो, परमाणु रह सकता है।

3. एक आकाश प्रदेश में अन्य के रहते हुए भी परमाणु स्वयं गति प्रारम्भ कर चालू रख सकता है।

4. अन्य की बाधा के बिना परमाणु अपना स्थान छोड सकता है।

13 भगवती सूत्र एक वैज्ञानिक अध्ययन - डॉ महावीर सिह मुर्डिया (श्रमणोपासक 25 जून 1982)
14 विज्ञान लोक - फरवरी 1965 (पृ 33)
15 लेखक की पुस्तक - पुदमल एक अध्ययन पृ 14

कतिपय अवस्थाएं इसकी अपवाद हैं जिनमें परमाणु प्रतिघात (बाधा) से प्रभावित भी होता है। वे निम्नानुसार है -

1. माध्यम की अनुपस्थिति - परमाणु लोक की सीमा को लांघकर अलोक में नहीं जा सकता क्योंकि गति का माध्यम धर्मान्तिकाय लोक के चरम अंत तक ही है।

2. बंधन परिणाम - परमाणु किसी अन्य परमाणु के साथ मिलकर स्कन्ध बन जाता है जो कुछ समय के लिये अपनी क्रियाशीलता खो देता है।

3. अतिवेग प्रतिघात - दो स्व-क्रियाशील परमाणु, जो अतिवेग से घूम रहे हों, पारचर को गति में प्रतिघात उत्पन्न करते हैं।

परमाणु एक सत्ता

परमाणु एक सत्ता है जो निम्न एवं अवस्थित है कोई एकाकी परमाणु न तो नष्ट होता है और न नया बनता है न कोई परमाणु किसी संबंध में मिल जाने पर अपनी वैयक्तिकता ही खोता है इसके गुण और पर्याय अवश्य ही परिवर्तित होते हैं। परन्तु अस्तित्व अर्थात नितमत्व, ध्रुवत्व, शाश्वतत्व बना रहेगा। चूंकि परमाणु परिगमनशील है इसके गुणों के वृद्धि हानि का होना स्वाभाविक है। मूल गुण चार (वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श) हैं पर पर्याय अनन्त है।

चतु:स्पर्शी एवं अष्ट स्पर्शी परमाणु

परमाणुओं से बने सूक्ष्म स्कन्ध का व्यवहार विचित्र है। यह अष्ट स्पर्शी परमाणु भारहीन होते हैं जबकि अष्ट स्पर्शी स्कन्ध बननें पर इनमें भार का गुण होता है। इस प्रकार जैन दर्शन द्वारा पुदगल के गुणों में भारहीनता की गणना उल्लेखनीय है। ऐसे भारहीन (सहंति शून्य) परमाणु की गति अत्यन्त वेगशील होती है।

इस स्कन्ध में भारतीय वैज्ञानिक डॉ. सुरुति एवं रूसी वैज्ञानिक चिरन्को का मानना है कि ऐसे कण भी संभव है जिनकी गति प्रकाश की गति से भी अधिक है। इसी को आईन्स्टीन ने अपने समीकरण में सिद्ध किया कि संहति कला पदार्थ में भार नहीं है (संहति शून्य) उसके लिये यह प्रतिबन्ध नहीं अर्थात ऐसे पदार्थ प्रकाश की गति से भी तेज (3, 10, 450 कि.मी. प्रति सैकन्ड) गति कर सकते हैं। इसी कारण परमाणु एक "समय" में लोक के चरम अन्त तक जा सकता है (16) अर्थात अधिकतम गति पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण, अधो एवं अथर्व चलान्त है।

1 भगवती सूत्र एक वैज्ञानिक अध्ययन (श्रमणोपासक 25 जून "82" डॉ महावीरसिह मुर्डिया)
2 भग सू श 26, उददे 8 सू 7

इसी का दूसरा पहलू अल्पतम गति है जिसके अनुसार परमाणु एक प्रदेश में अपने निकटतम दूसरे प्रदेश में जा सकता है। फिर भी स्वयं में गति बनी रहती है जो आज इलेक्ट्रान को अपने कक्ष में भ्रमणशीलता, हीने के अणुओं में गति, टेलीपैथी (विचार प्रेषण पद्धति)

आदि से स्पष्ट है।

परमाणु कचलशील है जो स्कन्ध रूप व स्थूल पदार्थो के रूप मे वन जाता है। परमाणु से स्कन्ध निर्माण की भी एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमे रूक्ष परमाणु वियोजक व सयोजक स्थितिया बनाता है। जीव के साथ इसकी सम्बद्धता आठ प्रकार से है जिसे वर्गणा कहा गया है। औसरिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्यण श्वासोवधवास, मन एव वचन रूपी इन वर्गणाओ मे तेजस व कार्यण वर्गणाए जीव के साथ एक सूक्ष्म शरीर (तेजस/कार्यण) का निर्माण कर लेती है। ये दोनो शरीर मृत्यु के अनन्तर भी अग्र जन्म के आधार बनते है।

परमाणु के प्रकार

पुदगल के अविभाजन सूक्ष्मतम अश परमाणु के साथ अन्य द्रव्यो के सूक्ष्मतम भाग को परमाणु माना गया है। दृष्टि से परमाणु के चार प्रकार है -

(क) **द्रव्य परमाणु** - पुदगल परमाणु जो परमाणु और स्कन्ध रूप मे अवस्थित है।

(ख) **क्षेत्र परमाणु** - आकाश परमाणु अर्थात वह आकाश प्रदेश जिसमे परमाणु का स्कन्ध अवस्थित है, ज्ञातव्य है कि एक द्रव्य परमाणु एक ही आकाश परमाणु (विन्दु) को घेरता है।

(ग) **काल परमाणु** - समय, यहा उल्लेखनीय है कि "समय" जिसे काल की सूक्ष्मतम इकाई माना है आज के सैकण्ड मे कितना ही सूक्ष्म है। आख की पलक झपकने मे भी सैकण्डो समय व्यतीत हो जाते है।

(घ) **भाव परमाणु** - गुण (17)

भाव-परमाणु चार प्रकार हैं - वर्ण गुण, गन्ध गुण, रस गुण, स्पर्श गुण।

इतना होने पर भी परमाणु इन्द्रिय ग्रहण नहीं है इसकी विलक्षणता है कि जिस आकाश प्रदेश को एक परमाणु ने भर दिया है उसी मे दूसरे परमाणु भी पूर्ण स्वतत्रता के साथ रह सकता है और उसी मे अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी रह सकता है। (18) अन्य शब्दो मे कहा जा सकता है कि परमाणु मे सकोचनशीलता भी है।

परमाणु की अवस्थाए

परमाणु से स्कन्ध-रूप मे परिणत होने मे इसकी दस अवस्थाए उपलब्ध होती है जो क्रमश शब्द, बन्धु, सौक्ष्म्य, स्थात्य, सस्थान, भेद, तण, छाया, आतय एव उद्योत है।

जैन दार्शनिको ने शब्द को केवल पौदमलिक ही नहीं माना, उसकी उत्पत्ति, गति, व्याप्ति, आदि पहलू पर भी व्याख्या की। शब्द की पदैदमलिकता रेडियो, ग्रामोफोन, दूरदर्शन से स्वत सिद्ध है। इसी प्रकार छाया, तप और आतय को पदैदमलिक मानना मरन्वपूर्ण है। सौर ऊर्जा, सौर भट्टिया आदि से आज कौन अनभिज्ञ है। रात्रि भोजन निषेध का मूलाधार यही है कि रात्रि को घनीमूततम (पुदगल) व्याप्त रहता है। और इसके सूक्ष्म परमाणु खाद्य व पेय पदार्थ मे मिल जाते है। अन्धकार के ये परमाणु हमारी आत्मा के मूल गुण (ज्ञान) को विकृत करते है।

इस प्रकार सक्षेप मे कहा जा सकता है कि परमाणु के बारे मे जैन दर्शन सागोपाग वर्णन प्रस्तुत करता है इसकी गति, शक्ति, कृति आदि पर भी विशद चर्चा है। दर्शन मे विज्ञान और विज्ञान मे दर्शन का अद्वैत यहा दर्शनीय है। अनेक पक्ष शोध की अपेक्षा रखते है।

उत्तराध्ययन सूत्र 28/12

संस्मरणों का वातायन

✍ श्रीमती पवनदेवी जूनीवाल
(विद्यालय की पूर्व छात्रा)

गुलाबी नगरी जयपुर के घनी आबादी वाले क्षेत्र में आज से 70 साल पूर्व जैन श्वेताम्बर समाज द्वारा संचालित महिला शिक्षा की कोई शाला नहीं थी। सन 1925 की बात है, जैन आर्या श्री स्वर्ण श्री जी महाराज का ध्यान बालिकाओं की शिक्षा की ओर गया। समाज के सामने इस प्रश्न को रखा। इस प्रश्न का समाधान करने वाले मानव सेवा के प्रति समर्पित एक महान व्यक्तित्व के धनी विरल विभूति रत्न पारखी श्रीमान श्री राजरूप जी टांक के मन में भी महिला समाज में शिक्षा के अभाव के प्रति उत्पीडा हुई, उन्होंने स्वर्ण श्री जी महाराज की बात का अंकन करके समाज के सामने उसका चिन्तन रखा - हमारी महिला समाज कैसे शिक्षित हो ? अगर महिला समाज में शिक्षा नहीं हुई तो समाज पिछड़ जायेगा। चिन्तन की धारा आगे से आगे बढ़ती गई और रास्ता मिलता गया। 'जिन खोजे तिन पाईया' - मात्र 8 बालिकाओं और दो अध्यापिकाओं से धूपियों की धर्मशाला में इस शाला का श्रीगणेश हुआ। वह दिन था कार्तिक सुदि पंचमी, ज्ञान पंचमी आज भी हर साल इस दिन पूजा होती है। अब चाचा साहब को अथक प्रयास करना पडा कि इस शाला में ज्यादा से ज्यादा बालिकाओं का प्रवेश हो। उनको कठिन प्रयास करने पड़े। मुझे याद आता है कि चाचा साहब हमारे पिताजी के पास घर आए और उन्होंने मुझे शाला में आने के लिए कहा, पर पिताजी ने कहा कि मैं अकेली लडकी को पढ़ने नहीं भेज सकता। इस पर चाचा साहब ने उत्तर दिया हम सेविकाएं रखेंगे, उन सेविकाओं का नाम था-श्रीमती फूलाबाई, श्रीमती गुलाब बाई। वे हमें घर से ले जाती और वापिस घर पर छोड़ कर आती। इस प्रकार "करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान, रसरी आवत जात तै सिल पर परत निसान" - चाचा साहब के अभ्यास से बालिकाओं की संख्या बढ़ने लग गई, अब स्थान की चिन्ता हुई। पुरुषार्थी व्यक्तिको चिन्ता की आवश्यकता नहीं, चिन्तन की जरुरत होती है। उन्होंने समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने चिन्तन किया, वे थे - श्री राजमल जी साहब गोलेछा, श्री राजमल जी साहब सुराणा, श्री सोहन लाल जी साहब गोलेछा, श्री घीसीलाल जी गोलेछा, श्री रूपचन्द जी लूनिया आदि ने चिन्तनपूर्वक सोचा जो घी वालों के रास्ते में चाकसू के चौक स्थित गली में एक उपाश्रय था, वह बन्द पड़ा था। उसे इन व्यक्तियों ने शाला को भेंट कर दिया। अब लडकियों की संख्या 100 तक चली गई इस शाला का नाम पहले 'श्राविकाश्रम' रखा, बाद में मिडिल, सैकेण्डरी विद्यालय और महाविद्यालय तक पहुंच गया।

चाचा साहब का चिन्तन था इस शाला में पढ़ने वाली बालिकाओं के जीवन में सद्संस्कार, आध्यात्मिक

ज्ञान का विकास हो। इस के लिए शाला मे एक घटा रखा। उस घंटे मे श्री रामपाल जी जतीजी पढाने आते थे। उन्होंने नमस्कार महामत्र से लेकर उपसर्गहर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि पढाते थे। जब श्री चाचा साहब स्कूल मे पधारते, वे हम से सुनते और कहते जो शुद्ध सीखेगा उसे पारितोषिक दिया जावेगा। इस प्रकार बालिकाओ को शुद्ध सीखने की प्रेरणा मिलती। आध्यात्मिक प्रेरणा पाने वाली छात्राए भी प्राप्त हुई, जो अपने जीवन मे तरण तारण करने वाली तीनो सम्प्रदाय मे साध्वियो के रूप मे बनी। मूर्ति पूजा सम्प्रदाय, स्थानकवासी व तेरापथ मे साध्विया के रूप मे परिभ्रमण कर जनता का कल्याण कर रही हैं।

इस शाला के प्रधानाध्यापक श्री महताब चन्द जी खारेड थे, वे गणित का अध्ययन कराते थे। अगर किसी भी छात्रा के एक अक की भी गलती हो गई होती तो वे तुरन्त उगलियो मे पैन्सिल दबाकर सजा देते थे। आगे कोई गलती न करे, इस बारे मे वे बहुत सचेत थे।

गोवर्धन पडित जी हिन्दी पढाते थे। सरस्वती बहन जी, गोपालबाई बहन जी कला, सिलाई, कुकिग, ड्राईग आदि सिखाते थे।

हमारी चाची जी साहब टाक भी अपने घर पर हम को बुलाती और मिठाई, नमकीन, खिचडी आदि बनाना सिखाती थी और उनकी प्रेरणा हमेशा रहती कि पाक कला मे लडकिया निपुण बने।

यह शाला पहले पाचवी कक्षा तक ही थी। वहा तक हमने अध्ययन किया। अब लडकियो की सख्या मे श्रीवृद्धि होने लगी और कक्षाए भी आगे बढ़ने लगी। श्री महताबचन्द जी साहब खारेड ने बहुत वर्षो तक इस शाला मे अपनी सेवाए दी। उसके बाद प्रकाशवती जी सिन्हा यहा की प्रधान अध्यापिका बनी। श्रीमती प्रकाशवती जी सिन्हा का जैसा नाम वैसा गुण था। उन्होंने ज्ञान के प्रकाश को ज्यादा से ज्यादा बढाने का प्रयास किया। उन्होंने वीर बालिका को विद्यालय से महाविद्यालय तक पहुचाया। वे सादगी पूर्ण विचारो की थी, लडकियो को सीधासाधा रहने की प्रेरणा देती थी।

आपके समय मे ही श्रीमती उर्मिला बहन जी भी स्कूल मे प्रवेश कर चुकी थी। बाद मे आप विद्यालय की प्रधानाध्यापिका बनीं। आप भी सीधी और सरल हैं। वर्तमान मे अपनी सेवाए इस शाला को दे रही हैं।

महाविद्यालय बनने पर श्रीमती शाता जी भानावत प्रिसिपल रही। आपकी सेवाए भी उल्लेखनीय रही हैं, अपने पति के देहावसान के पश्चात भी आप शात स्वभाव की बनी रही। वे इस महाविद्यालय मे सेवा देते देते काल के ग्रास मे चली गई। उन्हे यह महाविद्यालय युगो युगो तक याद करता रहेगा।

वर्तमान मे सुश्री सरोज जी भी अपनी सेवाए दे रही है। और जो बहनजी इस शाला व महाविद्यालय मे अपनी सेवाए दे रही हैं। वे धन्यवाद की पात्र है। शाला के लिए शुभकामनाए व्यक्त करती हू। मै इस शाला की हीरक जयती पर श्रीमान चाचा साहब व उनके कार्य मे सहयोग करने वाले श्रीमान हीराचन्द जी साहब वैद, जतनमल जी लुनावत, राजेन्द्र जी श्रीमाल आदि मेरे विद्या गुरुजनो के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हू। जिन्होंने मुझे अक्षर ज्ञान से लेकर आध्यात्मिक ज्ञान तक पहुचाया, अधकार से प्रकाश की ओर लाए। मै इस शाला मे अध्ययन करने वाली छात्राओ के लिए विशेष प्रयोग भी बताना चाहूगी, जिसे जीवन मे उतार कर अपने भविष्य को उन्नत बना सके। मै इस हीरक जयती पर सभी छात्राओ से अनुरोध करूगी वे ज्यादा से ज्यादा अपने भविष्य

को अच्छा बनावें।

विद्यार्थियों के लिए विशेष

रूपयौवन सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवा:
विद्याहिनान शोभन्ते निर्गधा इव किंसुका ॥

रूप, यौवन, उच्च कुल और ऐश्वर्य से सम्पन्न होने के बावजूद भी विद्यारहित व्यक्ति किंसुक (रोहिणे) के फूल की तरह सौरभहीन होते हैं।

संसार में रहने वाले व्यक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है। जिस व्यक्ति के ज्ञान का प्रकाश व बुद्धि का विकास होता है वह चहुंमुखी कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ जाता है। विद्यार्थियों के लिए जीवन विज्ञान आवश्यक है। जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है। जो छात्र जीवन विज्ञान को अपना कर सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचना चाहते हैं उन्हें निम्नलिखित विधियों को अपनाना चाहिए। जीवन में उसे उतारना चाहिए।

(1) ब्रह्ममुहूर्त में उठना -

ब्रह्ममुहूर्त उपासना ध्यान, जप, स्वाध्याय, योगाभ्यास आदि के लिए सबसे अधिक उपयोगी समय है। इस समय सेराटोनिन नामक रसायन का स्राव होता है। यह स्राव मन की शांति एवं प्रसन्नता के लिए उत्तरदायी होता है। जो देर से उठते हैं, सूर्य उनकी बुद्धि एवं तेज हर लेता है। ऐसी शास्त्रीय मान्यता है। अतः 10 बजे रात्रि में सो जाना तथा चार बजे प्रातः उठ जाना चाहिए।

(2) शुद्धि क्रियाएं -

प्रातः उठकर शरीर आदि की क्रियाओं से निवृत होकर आसन, प्राणायाम तथा यौगिक क्रियाएं करने से शरीर स्वस्थ, चुस्त, प्रसन्न चित्त एवं हल्का रहता है। पढने में मन अधिक लगता है।

(3) आसनों का अभ्यास करना चाहिए-

जैसे - सूर्य नमस्कार, ताड आसन, त्रिकोणासन, पश्चिमोतानासन, अर्धमत्स्यासन, वज्रासन, सिंहासन, योगमुद्रा, पवन मुक्तासन, सर्वागसन और हलासन आदि। प्रत्येक आसनों के बाद कायोत्सर्ग करना बहुत लाभकारी है। आसन प्रायः खाली पेट व खुले स्थान पर किसी की देखरेख में करना चाहिए। इनसे रक्त का प्रवाह ठीक व नाडी शुद्ध होगी। शरीर आरोग्य व चुस्त बना रहेगा।

(4) प्राणायाम -

सभी शारीरिक तंत्र प्राण द्वारा संचालित होते हैं। इससे रक्त का प्रवाह ठीक रहता है। फेफड़े स्वस्थ रहते हैं। अधिक आक्सीजन मिलने से श्वास की गति दीर्घ होगी चंचलता घटेगी। चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई पड़ेगी एवं रक्त शुद्ध होगा। रजोगुण तमोगुण में कमी होकर सत्वगुण की वृद्धि होगी। नींद, आलस्य, रोग, कामवासनाएं समाप्त होंगी। नाड़ी शोधन, सर्दी में सूर्यभेदी, गर्मी में चन्द्रभेदी, अनोलाम विलोम, भ्रामरी, शालिनी प्राणायाम बहुत उपयोगी हैं।

(5) ध्यान -

प्रेक्षा ध्यान की विभिन्न प्रक्रियाओं से छात्र-छात्राएं ध्यान की किसी भी प्रक्रिया का चुनाव कर सकते हैं। ध्यान का अभ्यास पदमासन, वज्रासन, सुत्वासन व सिद्धासन में बैठकर करना चाहिए। 5-15-30 मिनट तक अभ्यास करने से मन शांत होता है, स्मृति बढती है, सद् विचार उत्पन्न होते हैं। एकाग्रता बढ़ाने तथा नेत्रों की ज्योति को ठीक रखने के लिए चन्द्रमा काले बिन्दु हरे पत्ते तथा सूर्य उदय होने की स्थिति पर मोमबत्ती / दीपक की लौ पर ध्यान करना चाहिए। इससे मन की चंचलता कम होती है 'आत्म

नियत्रण बढता है। देर तक पढने व याद करने की शक्ति का विकास होता है।

(6) एकाग्रता और स्मरण शक्ति का विकास–
छात्रो को लगन, एकाग्रता स्मरण शक्ति के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए - थकान हो तो थोडा जल पीना, कायोत्सर्ग करना। शरीर थके तो पढना, मन थके तो खेलना। शारीरिक काम करना। एकाग्रता के लिए दर्शन केन्द्र दोनो भृकुटियो के मध्य पर ध्यान, अर्हम् या ॐ का जप दीर्घ श्वास प्रेक्षा, पढने से पूर्व विषय पर चिन्तन करना, लक्ष्य सामने रखना, रीढ सीधी रखना आदि उपयोगी है। स्मरण शक्ति विकास के लिए "महाप्राण" या 'अर्हम् की ध्वनि करना, कनपटी पर पीले रग का ध्यान करना आदि आदि। धोकना, चितारना, पूछना आदि से ज्ञान की परिपक्वता आती है इसके लिए नाडी शोधन प्राणायाम करे। दाया स्वर साधे, अधिक बोलकर शक्ति नष्ट न करे, कभी कभी मौन का अभ्यास करे, मौनावस्था मे ही अध्ययन करे, सर्वागासन का अभ्यास करे। यह विभिन्न उपाय हमारी स्मरण शक्ति के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

(7) अनुप्रेक्षा -
इसके अभ्यास से सकल्प को वल मिलता है। कायोत्सर्ग की स्थिति मे मन की मूर्च्छा को वोलने विषयो का अनुचिन्तन करना ही अनुप्रेक्षा कहलाती हे। जिस विषय का अनुचिन्तन बार बार किया जाता है, उससे हमारा मन प्रभावित होता है। जिसके कारण हमारी सकल्प शक्ति का विकास होता है। व्यसन मुक्ति के लिए यह प्रयोग राम बाण औषधि के रूप मे है। इसके द्वारा अभय, करुणा, मैत्री, सहिष्णुता, आव्यानुशासन, मानवीय एकता आदि के भावो को जागृत कर सकते है।

(8) आत्म विश्लेपण -
सोने से पूर्व दिन भर की गतिविधियो की समीक्षा करनी चाहिए। दिन भर के समय मे कितना खोया और क्या-क्या पाया है ? यह चिन्तन भी आवश्यक है कि हमने अव तक कितने अच्छे कार्य किये। यदि डायरी लिखी जाए तो और अच्छा रहेगा।

(9) सात्विक आहार -
ताजा स्वादिष्ट व हल्का भोजन आलस्य से वचाता है। शाकाहारी भोजन मासाहारी भोजन की अपेक्षा कई गुणा लाभकारी होता है। पान पराग नशीले पदार्थ नहीं खाने चाहिए।

(10) अणुव्रत -
छोटे छोटे नियम का पालन करना चाहिए - जैसे किसी की हिसा नही करूगी, आत्म हत्या नही करूगी, झूठ नही बोलूगी, चोरी नही करूगी, अनैतिकता से उर्त्तार्ग होने की कोशिश नही करूगी। विद्यार्थी जीवन मे सयम पालन करूगी, अपने माता पिता को अर्थ उपार्जन मे सहयोग दूगी व फिजूल खर्ची नहीं करूगी आदि।

(11) रात्रि सोते समय -
अपने इष्ट का जाप करके सोऊगी, जेसे नमस्कार महामत्र आदि का जप करूगी। इस प्रकार जीवन विज्ञान को अपने जीवन मे अपना कर प्रत्येक छात्र छात्राओ का जीवन सुखी और समृद्धिवान बन जाता है। सभी विद्यार्थी इन नियमो को अनुसरण कर स्वय को लाभान्वित करे।

विद्या धन उद्यम बिना कहो जू पावै कौन
बिना डुलाए ना मिले जिन पखा कर पौन

जैन धर्म का स्वरूप :
जैन महाकवि हरिचन्द्र की चिन्तन सरणि

डॉ. गंगाधर भट्ट
निदेशक
राय बहादुर चम्पलाल प्राच्यशोध संस्थान

महाकवि हरिचन्द्र जैन धर्म के अनुयायी थे। उनका उद्देश्य जैन धर्म को जनता जनार्दन तक पहुंचाना था। उन्होंने अपने इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये जैन आचार्यों द्वारा प्रतिपादित तथा जैन आगम साहित्य में वर्णित जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों को अपनी रचनाओं-धर्मशर्माभ्युदय एवं जीवन्धर चम्पू में अत्यन्त सरल एवं सुबोध भाषा में उपनिबद्ध किया है। यद्यपि कवि वरेण्य श्री हरिचन्द्र ने कथा प्रसंङ्गों में वैष्णव, शैव एवं बौद्ध आदि धार्मिक सम्प्रदायों का यत्र-तत्र उल्लेख किया है, जिससे कवि के समकालीन भारतीय समाज की धार्मिक स्थिति का परिज्ञान अवश्य होता है।

कवि ने कथा प्रसंगों में अनेक स्थानों पर दिगम्बर मुनि और दिगम्बर जैन दीक्षा का वर्णन किया है जिससे प्रतीत होता है कि कवि का संबंध दिगम्बर जैन सम्प्रदाय से रहा है और उन्होंने दिगम्बरी परम्परा के अनुसार जैन धर्म विषयक विवेचन प्रस्तुत किया है। उन्होंने 'धर्मशर्माभ्युदय' के इक्कीसवें सर्ग में पन्द्रहवें तीर्थङ्कर श्री धर्मनाथ के मुख से तथा 'जीवंधर चम्पू' के सप्तम लम्भ में जीवंधर कुमार के मुख से जैन धर्म का उपदेश कराया है। एतदतिरिक्त कवि ने यत्र-तत्र कथा प्रसंगों में जैन धर्म के सिद्धांतों का उल्लेख भी किया है।

जैन धर्म का उदय उस समय हुआ जब वैदिक धर्म में विकृतियों का आना प्रारम्भ हो गया था। आत्म शुद्धि एवं तप चरण का स्थान कर्मकाण्ड व यज्ञ ने ग्रहण कर लिया था। यज्ञों में पशु एवं मानव बलि से हिंसा चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी। श्री महावीर स्वामी ने वैदिक धर्म अथवा ब्राह्मण धर्म की प्रतिक्रिया के रूप में एक नवीन धर्म की स्थापना की। महावीर स्वामी का धर्म किसी विशेष वर्ग या जाति का न होकर मानव मात्र का धर्म था। उसमें बाह्य आडम्बर, कर्मकाण्ड एवं यज्ञ के लिये कोई स्थान नहीं था। उसमें सच्चारित्र, आत्मशुद्धि और तपस्या पर विशेष अभिनिवेश था। उन्होंने सम्यक-दर्शन, सम्यक-ज्ञान एवं सम्यक चारित्र को मोक्ष का मार्ग प्रतिपादित किया। उनकी दृष्टि में प्रत्येक जीव सम्यक दर्शन आदि 'रत्नत्रय' का पालन कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

जैन मुनियों के प्रयास के परिणामस्वरूप जैन धर्म ने ईसा पूर्व ही भारत में अपनी स्थिति दृढ़ कर ली थी। जैन महाकवि हरिचन्द्र के समय में जैन धर्म का

सम्बन्ध किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित नहीं था। समस्त भारतवर्ष मे सभी स्थानो पर जेनधर्म के अनुयायी थे।

जैन धर्म एक अनीश्वरवादी धर्म है, जिसमे प्रत्येक जीव की मोक्ष की प्राप्ति सभव है। जीव का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। कवि वरेण्य हरिचन्द्र के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति दर्शन, ज्ञान और चारित्र के द्वारा हो सकती है। उन्होंने जीवधर चम्पू मे कहा है -

तच्च रत्नत्रये पूर्णे परम प्राप्यमात्मन ।
तच्च तद् दृष्टि सज्ञान चारित्राणि प्रकीर्तितम् ॥

जी च 7/8

दर्शन ज्ञान और चारित्र को ही जैन धर्म मे 'रत्नत्रय' कहा गया है। जैनाचार्य उमास्वाति ने अपने ग्रन्थ 'तत्त्वार्थ सूत्र' का प्रारम्भ ही 'रत्नत्रय' के कथन के साथ किया है तथा सम्यक दर्शन आदि के समन्वित रूप को मोक्ष मार्ग कहा है -

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग ।
त सू 1,1

कवि हरिचन्द्र ने रत्नत्रय पर समुचित प्रकाश डाला है। उनका कथन है कि आप्त, आगम और पदार्थ का श्रद्धान करना सम्यक दर्शन है -

आप्तागम पदार्थाना श्रद्धान दर्शन विदु। (जी च 7,9)

जैनागम मे गृहस्थ के पाच अणुव्रत (पञ्चाणुव्रत) तीन गुणव्रत, और चार शिक्षाव्रत प्रतिपादित किये गये है। सम्यक-दर्शन इन व्रतो की भूमि है क्योकि इसके बिना ससार के दु ख रूप आतय को दूर से ही नष्ट करने वाले व्रतरूप वृक्ष सिद्ध नहीं होते।

सम्यक्त्व भूमि रेषा यत्र सिध्यन्ति तदुज्झिता । (ध श 21)

मोक्ष के समस्त अगो मे सम्यक-दर्शन प्रधान अग है और भव्यलोक के ज्ञान तथा चारित्र सम्यक-दर्शन मूलक ही होते है -

श्रद्धान दर्शन विद्, तन्मूले ज्ञान चारित्रे भव्य लोकैक भूपणे।

जीव चम्पू 7 9

कवि हरिचन्द्र की मान्यता है कि तत्त्वो का अवगम होना ही ज्ञान कहलाता है-तत्त्वस्या वगति ज्ञनिम् ध श, 21,167 ज्ञान, दर्शन और सुख ही जिसका लक्षण है। ऐसा निर्मल आत्मा (जीव) समस्त अपवित्रता के मूल कारण शरीरादि से भिन्न है - 'आत्मा हि ज्ञानदृक्सौरव्य लक्षणो विमल पर, सर्वाशुचि निधानेम्यो देहादिम्य इतीरित । इत्यादि स्वार्थ-विज्ञान सम्यक ज्ञानमसशयम।

जी च 7 11 12

"ऐसा कहा गया है" इत्यादि रूप से निम्न और पर का सशय रहित ज्ञान होना सम्यक दर्शन से व्यपदेश्य है। ज्ञान के पाच भेद किये गये है - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यायज्ञान और केवलज्ञान।

उमास्वाति ने तत्वार्थ सूत्र मे इनका उल्लेख किया है -

मतिश्रुतावधिमन पर्याय केवलानि ज्ञानम्।
(त सू 1,9)

हरिचन्द्र की दृष्टि मे धर्म वही है जो आप्त भगवान के द्वारा क्षमादि दस प्रकार का कहा गया है और आप्त वही जो अठारह दोपो से विनिर्मुक्त है

तत्र धर्म स एवाप्तैर्य प्रोक्तो दश लक्षण ।
आप्तास्त एव ये दोपैरष्टादश भिरुज्झिता ॥

धर्म 21 128

गुरु वही है जो बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह से रहित

हो। तत्त्व वही जीवादि है, जो सर्वदर्शी, सर्वज्ञ जिनेन्द्र देव के द्वारा कहे गये हैं -

गुरुः स एव यो ग्रन्थैर्मुक्तो बाह्यैरिवान्तरैः ।
तत्त्वं तदेव जीवादि यदुक्तं सर्व दर्शिभिः ॥

(धर्म 21, 129)

सम्यक-ज्ञान में केवलज्ञान का सर्वोपरि स्थान है। समस्त द्रव्य और उनके सर्व पर्यायों को एक साथ प्रत्यक्ष जानने वाले ज्ञान को केवलज्ञान की अभिधा दी गयी है। कवि हरिचन्द्र सम्यक चारित्र के संदर्भ में स्पष्ट उल्लेख करता है कि पापारम्भ से निवृत्त होना ही चारित्र है - पापारम्भ निवृत्तिस्तु चारित्रं वर्ण्यते जिनैः। (धर्म 21, 162)

धर्म शर्माभ्युदय के संस्कृत टीकाकार पं. वशस्कीर्ति ने आरम्भ-निवृत्ति या ज्ञान एवं दर्शन की स्थिति को चारित्र कहा है -

आरम्भ निवृत्ति ज्ञान दर्शन स्थितिर्वा चारित्रम।
धर्म टीका 350

कवि हरिचन्द्र के अनुसार जीव को सम्यक-दर्शन से स्वर्ग की और चारित्र से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

(धर्म 8, 50)

सार यह है कि धर्म, आप्त गुरु तथा जीवादि तत्त्वों का किसी शंकादि दोष रहित निर्मल श्रद्धान सम्यग्दर्शन, निज और पर का संशय रहित ज्ञान, सम्यक ज्ञान एवं पापारम्भ से निवृत्ति सम्यक चारित्र है।

जैन धर्म में मानव के आचार-विचार पर अत्याधिक बल दिया गया है, यही कारण है कि आचार विचार को जैन धर्म की आधारशिला माना गया है। जैन धर्म का स्पष्ट निर्देश है कि कोई भी मानव किसी वर्ग से संबंध हो, आचार विचार के बल पर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। जैनाचार्यों ने नाना जैनाचार ग्रंथों का सर्जन किया है। उन्होंने जैनाचार संहिता का विवेचन दो श्रेणियों में किया है। मुनि-जिन आचारों का पालन करते हैं, उन्हें 'मुनि धर्म' या 'मुनिव्रत' अथवा 'अनगार व्रत' कहा जाता है। जिन आचारों का गृहस्थ पालन करते हैं उनको 'सागार व्रत' या 'गृहस्थ धर्म' अथवा 'श्रावकाचार' की संज्ञा दी जाती है।

जैन महाकवि हरिचन्द्र ने अपने ग्रंथों में जैनाचार का विशद विवेचन किया है। उन्होंने प्रतिपादित किया है कि संसार में त्याग करने वाले 'जीव' अनागार और सागार के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं। इनमें जो जीव समस्त पापों का त्याग करते हैं, वे अनागार कहलाते हैं -

परित्यागवतो जीवः द्विविधः परिकीर्तितः ।
अनागाराश्च सागाराः पूर्वे सावद्यवर्जिता ॥

(जी च 7,13)

कवि ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि 'अनागार' (मुनिव्रत) को वहन करने में सामान्य लोग उसी प्रकार समर्थ नहीं होते जिस प्रकार किसी महोक्ष के द्वारा वहन करने योग्य भार को उसका बच्चा नहीं उठा सकता -

यतीनां सुधर्म न शक्नोषि वोढुं महोक्षेण वाह्य तथा तक्किशोरः।
अतस्त्वं गृहाण गृहस्थस्य धर्मं यतो मुक्ति लक्ष्मीरदूरे भवियी ॥

(जी च 7, 14)

जीवंधर चम्पू में यह कहा गया है कि गृहस्थ धर्म का पालन करता हुआ मानव किसी देश और किसी काल में महाव्रती (मुनि) होता है। (जी.च. 7, 13-19) कवि ने जीवधर चम्पू की इसी बात को धर्मशमाभ्युदय

मे इस प्रकार कहा है - जैनाचार्यो के द्वारा प्रतिपादित 'सागार व्रत' 'अणुव्रत' और 'निरागार व्रत' महाव्रत के नाम से वोधित किया गया है - सागार मनागारञ्च जैनैरुक्त व्रत द्विधा अणु महाव्रत भेदेन ।

(धर्म 21, 124)

इस प्रकार कवि ने व्रत, अणुव्रत और महाव्रत का उल्लेख किया है । आचार्य उमास्वाति ने हिसा, असत्य, अस्तेय, मैथुन और परिग्रह - इन पाच पापो से निवृत्ति को व्रत कहा है। हिसादि पापो का एकदेश त्याग 'अणुव्रत' और सर्वदेश त्याग 'महाव्रत' कहा गया है। जैन महाकवि हरिचन्द्र ने मुनिव्रत की अपेक्षा गृहस्थ धम (सागार व्रत) का अधिक विस्तार से विवेचन किया है। उन्होंने जैनधर्म मे निर्दिष्ट गृहस्थ धर्म का पालन प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा करणीय नहीं यह स्वीकृत किया है। उनके अनुसार गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले श्रावक को मधु, मास, मद्य और पाच उदुम्वर फलो का त्याग तथा सप्त व्यसनो का परित्याग करना आवश्यक है । क्षुधा से क्षीण काय होने पर भी निपिद्ध वस्तुओ के परित्याग का निर्देश जैनाचार के अनुसार सर्वमान्य है। इसी प्रकार पञ्चाणु व्रत, गुण व्रत एव शिक्षाव्रत का पालन कवि हरिचन्द्र ने अपनी कृतियो मे किया है।

कवि हरिचन्द्र ने गृहस्थ के वारह व्रत और अष्ट मूल गुणो के अतिरिक्त सप्त व्यसनो के त्याग पर भी वल दिया है। कवि ने धूत, मास, मदिरापान, वैश्यागमन, मृगया, चौर्य और परस्त्रीगमन ये सात व्यसनो का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है कि जो प्राणी मोह-वश द्यूत आदि सप्तव्यसनो का सेवन करता है, वह ससार रूपी दु खदायी अपार वन मे निरन्तर भ्रमण करता रहता है -

मोहादमूनि य सप्त व्यसनान्यत्र सेवते ।
अपारे दु खकान्तारे ससारे वभ्रमीति स ॥

(धर्म 21 134)

कवि कालीन भारतीय समाज मे देवपूजा और आदर्श चरितो की पूजा का विशेप प्रचलन था। अत जिन शासन मे तीर्थंकरो के चरित्र के पूजन का विधान है। पुरुपो के समान स्त्रिया भी जिनेन्द्र की प्रतिदिन तीन वार पूजा किया करती थी। तीर्थकरो मे श्रद्धा और विश्वास की यह चरम सीमा है कि जिनेन्द्र भक्ति को समस्त दु खो की नाशिका और कुल के उद्धार करने मे समर्थ माना गया है। फलत यह स्पप्ट है कि जैन धर्म मे तीर्थंकरो का महनीय स्थान है।

❑

अच्छे स्वभाव का उत्कृष्ट अश है-दूसरे के बुरे स्वभाव को सह लेना।

- एम्पसन

सदैव प्रसन्न रहो। इससे मस्तिष्क मे अच्छे विचार आते है और चित्त शुभ कामो की ओर लगा रहता है।

- टैगोर

अर्द्ध शताब्दी से भी पूर्व का महिला शिक्षा पर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज

॥ श्रीः ॥

जयपुर के जैन श्वेताम्बर संघ से एक नम्र निवेदन

सज्जनों !

इस शुभ और पवित्र धार्मिक उत्सव के अवसर पर जयपुर श्री संघ के सभी महानुभाव उपस्थित हुआ करते हैं। यह अत्यन्त आनंद और एकता सूचक बात है। इस स्वर्ण अवसर पर हम लोगों ने अपना यह कर्त्तव्य समझा कि समाज के सब ही महानुभावों का ध्यान एक अत्यन्त आवश्यक और सामयिक कार्य की ओर आकर्षित करें जिससे समाज का जीवन उच्च, निर्मल और आदर्श बने।

अपनी बात लिखने से पूर्व आप लोगों को याद दिला देना चाहते हैं कि इस समाज को लोग एक उच्च और आदर्श समाज समझा करते हैं। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि वही समाज रूढी ग्रस्त होकर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। समय है अब भी हमारे चेतने का। समाज की उन्नति की दिवार मातृ जाति के उच्च और आदर्श जीवन पर निर्भर है। मातृ जातिका जीवन जब तक उच्च और संस्कृत न होगा तब तक पुरुषों में भी जाग्रति और जीवन चेतनता आही नहीं सकेगी। इस लिए इस मातृ जाति के मुरझाये और असंस्कृत जीवन का उद्धार कर इसमें चेतनता और आदर्श गुण भरने होंगे। इसके लिए हमारा विचार है कि समाज की कन्याओं में आवश्यक सुशिक्षा का प्रचार किया जाय जिससे भावी मातृ जाति के जीवन की सुंदर एवं आनन्दमय गठन हो। परन्तु यह कार्य आपलोगों के सहयोग बिना पूर्ण नहीं हो सकता।

सज्जनों ! इस समय जयपुर में हमारे समाज की ओर से दो कन्या पाठशालाएँ चालू हैं। जिसमें एक तो स्थानकवासी भाइयों की ओर से चलाई जारही है, दूसरी श्वेताम्बर जैन कन्या पाठशाला के नाम से घी-वालों के रास्ते में श्री सेठ सोहनमल जी गोलेच्छा के मकान में (जिसको उनके पूर्वजों ने ऐसे पब्लिक कार्य के लिए बताया था) चालू है। जहांपर इस समय करीब ११० बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इसमें ७ अध्यापक अध्यापिकाएँ शिक्षा दे रहे हैं और इसका मासिक खर्च रु० १०) है, जो बहुत ही थोडा है। इस पाठशाला के प्रबंध के लिए एक कमेटी बनाकर नया संगठन किया गया है। कमेटी के सदस्यों के नाम अंत में लिखे हुए हैं। कमेटी ने निश्चय किया है कि रु० २५०), ३००) तक मासिक व्यय बढाकर इस पाठशाला को एक आदर्श शिक्षालय के रूप में सुन्दर और व्यवस्थित ढङ्ग से चलाया जावे। जहां पर बालिकाएं किताबी शिक्षा के अलावा ऊँचे दर्जे का कला-कौशल और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन सामयिक और आदर्श बनासकें। परन्तु इस कार्य के लिए धन की तो आवश्यकता होंहीगी। इसका प्रयत्न चालू है। पाठशाला के कोष में विशेष द्रव्य जमा नहीं है। हमारी धन की अपील तो है ही, परन्तु इस से भी अधिक मूल्यवान आपकी थोडी सी पाठशाला के प्रति सहानुभूति की आवश्यकता है। हमें इस बात की विशेष चिन्ता है कि आपकी बालिकाएं इस जातीय पाठशाला में अधिक समय तक किस प्रकार शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना सकें। धन तो कार्य की वास्तविकता पर निर्भर है। कार्य होगा तो वह अपने आप बढेगा। परन्तु आवश्यकता है आपके पूर्ण सहयोग और सहानुभूति की जिसके बिना कार्य चलना कठिन है।

सज्जनो ! आपको यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि कमेटी के सदस्यों ने यह निश्चय किया है कि पाठशाला में धार्मिक बंधन न रखा जाय। कमेटी के सदस्यगण जैन धर्म के सबही विचारों के प्रति तो आदर रखते ही हैं परन्तु मानव जाति के अन्य धर्मों के प्रति भी

अपना आदर भाव प्रकट करते हैं। इसलिए इस पाठशाला में किसी को भी अपनी २ श्रद्धा में दृढ़ रहते हुए भी अपनी कन्याओं को भेजने में अड़चन नहीं होनी चाहिये। हमारा यही एक मात्र निवेदन है। हमारा ध्येय तो केवल मात्र मातृजाति में शिक्षा प्रचार कर उसे उन्नत बनाना है।

भगवान से यही प्रार्थना है कि हम सबके हृदय में बल और सद् बुद्धि हो, जिससे हमारे समाज का जीवन उच्च, निर्मल और आदर्श बने।

निवेदक—

जै० श्वे० कन्या पाठशाला की कमेटी के सदस्यगण—

(१) राजमल सुराना (सभापति)
(२) चन्दनमल भण्डारी (उपसभापति)
(३) सोहनलाल दूगड़ फतेहपुर वाले (उपसभापति)
(४) सोहनमल गोलेच्छा 'सदस्य'
(५) राजरूप टांक (मंत्री तथा कोषाध्यक्ष)
(६) सोहनलाल कोठारी बी काम आर सी ए सन्न
(७) समरसिंह बाफना बी. ए. एल एल बी
(८) हीराचन्द कोठारी
(९) उदयमल सुनावत बी ए
(१०) पूर्णचन्द ढूंकलिया एम ए साहित्य रत्न,
(११) सरदारमल कासटिया
(१२) हीराचन्द वैद (संयुक्त मंत्री)
(१३) महतावचन्द खारेड़ 'विशारद'
(१४) सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल बी ए, बीटी विशारद

पार्श्वनाथ जन्म कल्याण दिवस
सं० २०००

श्वेताम्बर जैन कन्या पाठशाला का नाम भारत के आजाद होने के बाद सस्था के अध्यक्ष माननीय श्री सिद्धराज ढढ्ढा की प्रेरणा से वीर बालिका विद्यालय रखा गया, जो निरन्तर प्रगति करते हुए महाविद्यालय तक पहुच गया, वर्तमान मे इस सस्था मे शिशु से स्नातक तक की शिक्षा दी जा रही है।

शाकाहार : परिचय

डॉ. कला कासलीवाल

1. भारतीय परम्परा में शाकाहार वह है जिसमें अन्न, कन्द-मूल, फलफूल आदि वनस्पति को उसके प्राकृतिक रूप में अथवा परिवर्तित रूप में सेवन किया जाए। इस पृथ्वी पर ऐसा एक भी मनुष्य नहीं जो शाकाहारी न हो।

2. शाक-सब्जियां दिन भर धूप में तपती-बढ़ती हैं और उसी से अपना जीवन तत्त्व ग्रहण करती हैं। इसका सेवन करने से हमें सूर्य रश्मियों की ऊर्जा प्राप्त होती है।

3. अन्न से मन का निर्माण होता है। सात्विक आहार से सतोगुण की वृद्धि होती है, सद्कार्य, परोपकारिता की ओर रुचि बढ़ती है एवं मानसिक-आध्यात्मिक शांति शुद्धता की प्राप्ति होती है। तभी तो सभी संत महात्माओं ने शाकाहारी जीवन शैली को अपनाया और उसकी प्रशंसा की।

4. आप जितने ऊंचे पेड़ के फल-फूल का सेवन करेंगे उनके अनुरूप आपका कद बढ़ेगा, विकास होगा। एक रूसी वैज्ञानिक के अनुसार शाकाहार और व्यायाम ही कद बढाने के लिए सर्वोत्तम उपाय है।

5. प्रत्येक वनस्पति पर बाहरी आवरण होता है, जो भीतरी तत्त्वों को दूषित होने से रोकता है। वनस्पति के बाहरी आवरण के रंग, अवस्था से पता चल जाता है कि इसका सेवन अब स्वास्थ्यवर्द्धक है या नहीं।

6. शाकाहार करने में किसी चीज का अस्तित्व समाप्त नहीं करना पड़ता, शाकाहार बढ़ेगा तो फलादि के पेड़-पौधे व कृषि बढेगी जिससे हरियाली बढ़ेगी, प्रदूषण कम होगा, वर्षा बढ़ेगी, जीव-जन्तुओं को संरक्षण मिलेगा, पर्यावरण संतुलन बना रहेगा।

7. शाकाहार ने ही मानव को सामाजिक प्राणी बनाया। जितनी भी सभ्यताएं पनपी जैसे - मिश्र, ग्रीक, सिन्ध-सभी नदी किनारे पनपी, जहां मनुष्य बसा और उसने खेती करके जीवनयापन किया।

शाकाहार : सेहत का खजाना

1. शाकाहार पूर्ण आहार है। हमारे लिए आवश्यक सभी जीवनीय तत्व यथा-प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज लवण, विटामिन और जल इसमें भरपूर मात्रा में होता है।

2. नई खोजों के अनुसार, शाकाहारी प्रोटीन ही स्वास्थ्य के लिए बढ़िया माने गये है, क्योंकि ये सरलता से पच जाते हैं। मटर, दालें, चना, सोयाबीन आदि द्विदल अनाजों में यह बहुतायत

से प्राप्त होता है।

3 वसा और कार्बोज के सेवन से हमे कार्य करने की शक्ति स्फूर्ति मिलती है, वसा (चिकनाई) की प्राप्ति हेतु तेल घी युक्त पदार्थो का सेवन करे। इससे विटामिन ए व डी भी मिलता है। पर इसे पचाने के लिए पर्याप्त श्रम करना चाहिए। कार्बोज प्राप्ति हेतु चावल, अनाज, दाले आदि का सेवन करे।

4 शाकाहारी खाद्य पदार्थ अत्यन्त शक्तिशाली होने है यथा-बादाम मे 91 प्रतिशत, चना चावल घी मे 85 प्रतिशत, गेहू मक्कई मे 86 प्रतिशत, किशमिश मे 73 प्रतिशत शक्ति होती है।

5 खनिज लवणो के माध्यम से हमारे शरीर का निर्माण व हड्डियो दातो को मजबूती प्राप्त होती है। हरी शाक-सब्जिया, फल जैसे पालक, बथुआ, पुदीना, मेथी, आवला, नीबू आदि मे ये बहुतायत मे प्राप्त होते है।

6 विटामिन का समुचित सेवन शरीर को स्वस्थ और सशक्त बनाये रखने हेतु अत्यावश्यक है। विटामिन ए के लिए गाजर, शलजम, खजूर आदि। विटामिन बी हेतु फल, तेल, दाले, विटामिन सी हेतु खट्टे फल यथा नारगी, टमाटर, आवला, विटामिन डी हेतु सूर्य की धूप का सेवन करे।

7 क्या ससार मे ऊट से अधिक ऊचा, हाथी से अधिक सुडौल, तोते से अधिक ज्ञानवान, हस से अधिक बुद्धिमान, गैडे से अधिक ताकतवर और घोडे से अधिक गतिमान कोई जानवर है ? जब कि ये सभी शुद्ध शाकाहारी है।

शाकाहार निरोगता का आधार

1 यदि मनुष्य के अगो का सम्यक् अध्ययन करे तो स्वत ही स्पष्ट हो जावेगा कि मनुष्य की प्रकृति शाकाहार के ही अनुकूल है।

2 जिन जानवरो की प्रकृति शाकाहार करने की है वे सदेव घास-पत्ती फल ही खावेगे, कभी मासादि का सेवन नहीं करेंगे, चाहे भूखे ही क्यो नहीं मर जावे। पर मनुष्य अपनी सीमाए लाघता है। तभी तो रोगी होता है।

3 शाकाहार मे कोलेस्ट्रोल की मात्रा बहुत कम होती हे, जिससे धमनियो का लचीलापन बना रहता है। इसलिए शाकाहारियो को मासाहार लेने वालो की तुलना मे रक्तचाप, हृदय रोग और आतो के कैसर की सभावना कम रहती है।

4 शाकाहारी खाद्य पदार्थों मे तेजाब (यूरिक एसिड) नगण्य होता है इससे हड्डियो का क्षर खून मे नही जाता और हड्डिया मजबूत रहती है। साथ ही, अनेक रोग यथा टी बी, जिगर की खराबी, गठिया, हिस्टीरिया भी कम होते है।

5 शाकाहार करने से कब्ज, कोलाइटिस, हार्निया, बवासीर आदि रोग कम होते है क्योकि शाकाहारी व्यक्ति को कार्बोहाइड्रेट व भोजन तन्तुओ की पर्याप्त मात्रा मिलती रहती है।

6 हरी शाक सब्जिया कैसर रोग से बचने मे अत्यन्त सहायक है क्योकि इसमे आवश्यक विटामिन्स ए, सी व ई तथा कैल्शियम, लोहा आदि खनिज लवणो की भी बहुलता होती है।

7 हरी शाक सब्जियो मे पाया जाने वाला

क्लोरोफिल नामक हरे तत्व में सूक्ष्म ऊर्जा शक्ति होती है। हरी सब्जी के रस की रचना हमारे रक्त के समान होती है। इसलिए इसका रस रुधिर वृद्धि में बहुत सहायक होता है। विदेशों में हरी सब्जी का रस ग्रीन ब्लड के रूप में लोकप्रिय है।

8. शाकाहार सुपाच्य व हल्का होता है तथा वृद्धि व बुद्धि के लिए अत्यन्त लाभदायक है। इसलिए यह बच्चों व मानसिक श्रम वालों के लिए अत्यावश्यक है। शाकाहार से प्राप्त 5-6 घंटों की सात्विक निद्रा 8-10 घंटों की तामसिक निद्रा से बहुत अच्छी है और दिन भर तरोताजा रखने में समर्थ है।

शाकाहार : सेवन के सामान्य नियम

1. शाकाहार स्वयं मानव के रक्षक के रूप में कार्य करता है। निरोग रहने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि आपके क्षेत्र में पैदा होने वाले मौसमी फलों व सब्जियों का सेवन भलीभांति करें। गैर मौसमी फल सब्जियां जो कोल्ड स्टोरेज में रखी हुई होती हैं, वे मृतप्रायः हैं इससे लाभ कम हानि अधिक होती है।

2. हमारे शरीर का जो अंश रोग से आक्रांत हो उस अंग की बनावट जैसे ही फलादि के सेवन से अत्यन्त लाभ होगा। उदाहरणार्थ-आंखों के लिए बादाम, सिर के लिए खोपरा (नारियल), गुर्दे के लिए सेव इत्यादि।

3. ज्यादा तेज मिर्च मसाले, खटाई, महीनों पुराने आचार आदि में अधिकांश विटामिन्स नष्ट हो जाते हैं। अतः इनसे बचें एवं यथासंभव नित्य सादा और ताजा भोजन ही करें। शाकाहार का पूरा पूरा लाभ तभी उठाया जा सकता है जबकि हम संतुलित आहार लेवें। संतुलित आहार है जिसमें प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण आदि समुचित मात्रा में उपलब्ध हों।

4. फल शाक को यथासंभव कच्चे ही प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इसमें खनिज लवण व विटामिन्स की प्रचुरता होती है। इन्हें गर्म करने से विटामिन सी नष्ट हो जाता है। उपयोग करने से पूर्व भलीभांति धोना चाहिए।

5. शाकाहार करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सहज बने रहने की क्षमता विकसित होती है। कारण, शाकाहारपूर्ण है, प्राकृतिक है और ऐसे में प्रकृति उपर्युक्त गुण स्वतः ही प्रदान कर देती है।

6. हमारे शरीर में 20 प्रतिशत अम्ल तत्व और 80 प्रतिशत क्षार तत्व होना चाहिए। मिठाइयां, चटपटी और तली हुई चीजों में अम्ल तत्त्व अधिक होता है जबकि फल शाक में क्षार तत्त्व की बहुलता होती है।

7. जहां तक संभव हो सके पालिश किया हुआ चावल, सफेद बारीक चीनी, चौकर निकले आटे के सेवन से बचें क्योंकि ये कब्जकारक होते हैं।

8. पंचमहाभूतों से निर्मित इस शरीर में जब किसी तत्त्व की कमी हो जाती है तो हम रोगी हो जाते हैं। अलग-अलग वनस्पतियों में अलग-अलग महाभूत की प्रधानता होती है, उचित वनस्पति का सेवन कर हम निरोगता को प्राप्त कर सकते हैं।

शाकाहार देश विदेश मे

1 अमेरिका की एक बीमा कम्पनी ने शाकाहार, योग और ध्यान पर जीवन जीने वालो को बीमे की रकम मे 40 प्रतिशत की छूट देना प्रारम्भ किया है।

2 बी बी सी के टेलीविजन प्रभाग द्वारा वेजीटेरियन किचन नामक श्रृखला मे शाकाहारी व्यजन बनाना सिखाया जाता है, जो कि अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। उक्त विषय पर लिखी पुस्तको की भी भारी बिक्री हो रही है।

3 विदेशो मे स्थान स्थान पर हैल्थ फुड शाप्स खुल रही है जहा शाकाहारी व्यजन, सोयाबीन की निर्मित चीजे, बहुत बिकती है। भारत महोत्सव के दौरान भी भारतीय व्यजनो पर सर्वाधिक भीड देखी गई।

4 स्पेन के एक क्लब ने, भारत से 16 शुद्ध शाकाहारी बालको का चयन करके उन्हे फुटबाल मे पारगत बनाने की योजना बनाई है। प्रशिक्षक श्री कैस्यान के अनुसार मनुष्य जन्म से शाकाहारी है और उसे शाकाहारी ही रहना चाहिए।

5 भारत मे तो शाकाहार का जन्म ही हुआ है। म ऋषभदेव ने कृषि करना सिखाया। सभी भारतीय परम्पराओ के सतो ने शाकाहार को धर्म का ही एक अग बताया है।

6 वर्तमान मे भारत मे भी अनेक सस्थाए शाकाहार पर कार्य कर रही है। बम्बई के अहिसा प्रसारक ट्रस्ट द्वारा स्थान स्थान पर लगाई गई शाकाहार प्रदर्शनी, डा नेमीचन्द जैन के शाकाहार क्राति व जयपुर की आरोग्य भारती द्वारा आयोजित शाकाहार सप्त सत्र व्याख्यान माला से अनेक लोगो ने शाकाहार के महत्व को समझा व इसे पहचाना है।

7 शाकाहारी प्रोटीन की शीघ्र पाचकता, कोलेस्ट्रोल की कमी, कार्बोहाइड्रेट व भोजन तन्तुओ की प्रचुरता, अधिक क्षारता, यूरिक एसिड की न्यूनता, रोग प्रतिरोधक क्षमता, खनिज लवणो की प्रचुरता, मानसिक शाति, कीटाणुनाशक तत्त्वो की भरपूरता आदि ऐसे अनेक कारण है जिससे आज विश्व के सभी देशो मे चिकित्सक वर्ग दीर्घ और स्वस्थ आयुष की प्राप्ति के लिए शाकाहार को सम्यक प्रकार से अपनाने की सलाह दे रहे है।

शाकाहार महापुरुषो की दृष्टि मे

1 शाकाहारी जीवन पद्धति मनुष्य स्वभाव पर अपने पूर्ण शारीरिक प्रभाव द्वारा सर्वाधिक लाभप्रदरूप मे मानव समुदाय को प्रभावित करेगी।

- एल्बर्ट आईन्सटीन

2 ईश्वर ने मनुष्य के लिए विभिन्न खाद्य पदार्थ उपलब्ध किये है, मगर अज्ञानता और लालचवश वह जीवित प्राणियो का विनाश करता है।

- सम्राट अकबर

3 'आहार शुद्धौ सत्वशुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुवास्मृति' अर्थात आहार की शुद्धि होने पर अन्त करण की शुद्धि होती है और अन्त करण की शुद्धि होने पर स्मृति अचल हो जाती है।

- उपनिषद्

4 शाकाहार से ही समाज मे सह अस्तित्व, न्याय,

सुरक्षा और शांतिपूर्वक जीने की मनोवृत्ति बन सकती है।

- आचार्य श्री विद्यानन्द

5. फल और अनाज न केवल मानव जाति की स्वाभाविक और बुनियादी खुराक है बल्कि वह आर्थिक दृष्टि से भी उत्तम है।

- हिटलर

6. मैं अपने पूरे जीवन में शुद्ध शाकाहारी रहा, शाकाहार से मेरी शक्ति, स्फूर्ति, खेल क्षमता में कोई कमी नहीं आई।

- विजय मर्चेन्ट,
टेस्ट क्रिकेट खिलाड़ी

7. कपडे पर खून लगने से कपड़ा गंदा हो जाता है वही घृणित खून जब मनुष्य पीवेगा, तब उसकी चित वृत्तियां अवश्य ही दूषित हो जावेंगी। वह भला निर्मल चित कैसे रह पावेगा।

- गुरुनानक देव

शाकाहारी रहते स्वस्थ
चिरंजीवी, निर्भय आश्वस्त
मानवता का करते ह्रास-
अंडे, मछली, मदिरा मांस
मास-मदिरा से अपने को बचाइये
घर नरक नहीं, स्वर्ग बनाईये
संडे हो या मंडे
कभी न खायें अंडे
शाकाहार है जहां-तन्दुरुस्ती है वहां
शाकाहार करेंगे तन मन से स्वस्थ रहेंगे

शाकाहार कीजिये -

- शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धता के लिए
- दीर्घ और स्वस्थ आयुष की प्राप्ति के लिए
- राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ करने के लिए
- विश्व शांति और युद्ध की विभिषिका को रोकने के लिए
- निरीह जैसे असहाय भयभीत जानवरों को अभय दान देने के लिए
- समाप्त प्रायः होते वन्य जन्तुओं को बचाने के लिए
- पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिए
- प्रकृतिमय जीवन जीने के लिए
- प्रत्येक मनुष्य को भोजन देने के लिए
- अहिंसामय महान मानवीय सभ्यता को प्राप्त करने के लिए
- प्रकृति को सम्पन्न रखने के लिए

शाकाहार है -

निर्ममता के विपरीत दयालुता,
गन्दगी के विपरीत स्वच्छता ।
कुरुपता के विपरीत सौन्दर्य,
कठोरता के विपरीत सवेदनशीलता ,
कष्ट देने के विपरीत क्षमा ।

ये शाकाहार के पुजारी - लियोनादो-दाविन्सी, कवि शैले पाइथोगोरस, सुकरात, प्लूटो, थोरो, वाल्तेयर, आइजक न्यूटन, जार्ज बर्नाडशा, रूडोल्फ हिटलर, लियो टालसटाय, भगवान महावीर, नानक, कबीर, महात्मा गांधी, राम, कृष्ण, हनुमान, विजय मर्चेन्ट, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, मोरारजी देसाई, डा. सी.वी. रमन, क्रिस एवर्ट लायड, डा. एम. विश्वैश्वैरया, वी.वी. गिरि आदि।

आप भी इनमें से एक हो सकते हैं। आज और अभी से संकल्प कीजिए-

शाकाहार करेगे तन मन से स्वस्थ रहेंगे ।
मगल सम्यक् दर्शनित, मगल सम्यक; ज्ञान ।
मंगल सम्यक्; आचरण, मंगल सिद्धि विधान ॥
मंगल हो । मगल हो ॥ मगल हो ॥।

❑

महिला उधमी के लिये कुछ महत्वपूर्ण बाते

✍ उमा जगदीश

आज के इस बदलते युग मे हर परिवार व समाज मे भी बहुत कुछ बदलाव आ गया है और युग के साथ बदलना भी आवश्यक है। रहन-सहन शिक्षा आदि मे और युग के साथ बदलना जरूरी भी है। आज देश प्रगति की राह मे आगे को अग्रसर हो रहा है,इससे जन साधारण को बहुत ही सुविधा व लाभ मिला है। मगर हर चीज के दो पहलू होते हे, जहा जन साधारण को सुविधा मिली है, वहीं पर काफी तकलीफो का भी हर आदमी को सामना करना पडता है और खास कर हर परिवार मे उनकी अर्थ व्यवस्था पर काफी प्रभाव पडा है। उन्हे अपनी गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाना मुश्किल हो गया है, घर की अर्थ व्यवस्था को सुचारु करने को आज हर परिवार मे स्त्री व पुरुष को मिलकर कार्य करना पडता है। हर परिवार की हर महिला छोटा बडा उद्योग करके कुछ पैसे कमाना चाहती है।

जो महिला जैसा भी उद्योग करती है, उस उद्योग के लिए बहुत सी जरूरतें भी होती है। जैसे धन की, प्रशिक्षण की, कच्चे माल की और तैयार किया हुआ माल बाजार मे बेचना। इन सबके लिए महिला को जानकारी नही होती है इस लिए उन महिला को इन सब बातो की जानकारी देना व मदद करना चाहिए। जैसे अगर किसी को कर्ज लेना है, तो उन्हे आसान तरीके से व कम ब्याज पर मिले। और किसी उद्योग मे उन्हे किसी प्रकार की मशीनरी लगवानी है जैसे क्रशर मशीन है, खेत मे कुए पर मशीन लगाना, सिलाइ की स्वेटर बुनने की आदि की इन सभी का उन्हे प्रशिक्षण दिलाया जाये। इसी प्रकार तरह तरह के मसाले बनाना, पेय पदार्थ बनाना, साबुन, तेल, क्रीम, पाउडर, डिटर्जेन्ड पाउडर, पापड, बडी, राखी आदि इन सभी को तैयार करने का भी पूर्ण प्रशिक्षण मिलना चाहिए। अब रही बात कच्चा व सस्ता माल कहा ओर कैसे उपलब्ध हो इन सबकी जानकारी देते हुए उन्हे कच्चा माल उपलब्ध कराए। जब माल तैयार हो जाता है, तब उसे कहा बेचा जाये, जिससे की उन्हे अधिक से अधिक लाभ हो और अगर कर्ज लिया है तो उसे भी वक्त पर आसानी से चुका सके।

खेती बाडी के लिए जमीन की जाच करवाना, सस्ता व अच्छा उपजाऊ बीज, खाद, समय समय पर दवाइया जो कीटनाशक हो, उनका छिडकाव कराना या किस प्रकार काम लेना, कौनसा उर्वरक आदि कैसे काम मे लेना। खेती बाडी करने के नए नए तरीके बताना। अन्य भी खेती बाडी के बारे मे समझाना प्रशिक्षण देना। आचार, मुरब्बा के लिए उन्हे प्रशिक्षण दिया जाये। इस प्रकार कई तरह के उद्योग हैं जिसे महिलाए करती है और करना चाहती है। उन महिलाओ के सामने बहुत सारी रुकावटे आती है जिसका उन्हे सामना करना पडता है और

इन रुकावटों की वजह से कई तो उद्योग कर ही नहीं सकती और कई पूर्ण सफल नहीं हो पाती है। अब देखिए उनकी कुछ रुकावटों को-जैसे धन की कमी, प्रशिक्षण की कमी, अच्छा सस्ता कच्चा माल कहां कैसे उपलब्ध हो इनकी पूरी जानकारी न होना, तैयार माल कहां कैसे बेचा जाए, इसकी जानकारी न होना। मशीनरी को चलाने की पूर्ण जानकारी न होना, इससे कई बार तो जान तक चली जाती है और भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इसी प्रकार अच्छा व सस्ता कच्चा माल न मिलना तैयार किया हुआ माल की सही कीमत न मिलना, बेचने में रुकावट आ जाना आदि इनसे भी महिला हताश होकर वे पिछड जाती हैं।उन्हें बहुत नुकसान उठाना पडता है।

इसी प्रकार महिलाएं किसी प्रकार का कोई भी उद्योग करती है उन्हें उसके अनुसार सभी प्रकार की पूर्ण सुविधा, जानकारी सहायता देते हुए जिम्मेदारी लेने से उनका हौसला बढ़ता है और वे सफलतापूर्वक अच्छा काम करके अच्छा लाभ कमा सकती हैं। महिलाओं को शिक्षा प्रशिक्षण जानकारी आदि सरकारी व अर्द्ध सरकारी संस्थाओं शिविरों द्वारा ही दिये जाते हैं। वहां पर हर महिला उद्यमी किसी न किसी प्रकार सरकार से जुड़ी हुई होती है, ऐसे में सरकार का कर्त्तव्य बनता है कि महिलाओं का विकास व उनकी समृद्धि, उनकी सुख सुविधा को ध्यान में रखते हुए उनकी पूर्ण जिम्मेदारी सरकार को उठानी चाहिए। इससे हर महिला उद्यमी अपना उद्योग सफलतापूर्वक चला कर पूर्ण लाभ उठा सके, और अपना कर्ज भी आसानी से व समय पर चुका सके। और हर महिला उद्यमी का भी सरकार के प्रति अपना पूर्ण कर्त्तव्य होता है कि जी जान से भरसक मेहनत व लगन के साथ अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ाए। साथ ही साथ उत्पादन किये हुए माल के गुणवता का भी पूर्ण ख्याल रख कर ईमानदारी से अच्छा माल तैयार करना चाहिए। जिससे उन्हें भी लाभ और सरकार को भी लाभ होता है, ये हर महिला उद्यमी की जिम्मेदारी व कर्त्तव्य बनता है। इससे हर महिला उद्यमियों की देश विदेश में उनके उद्योग की प्रशंसा व समृद्धि बढ़ती है और उनके उद्योग का विस्तार होता है, जिससे वे अधिक धन भी कमाती हैं, साथ ही साथ उनका भविष्य भी उज्जवल होता है देश की भी समृद्धि बढती है। उन्हें अपनी समृद्धि बढाने के साथ ही साथ कर्त्तव्य व निष्ठा और मेहनत के साथ आगे बढना चाहिये। साथ में नई नई तकनीक का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रयोग करके उद्योग में उन्नति के साथ आगे बढें।

❑

'नारी', जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव है, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।

- चतुरसेन शास्त्री

महिला मुक्ति भारत के लिए शौक की वस्तु नहीं है बल्कि एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है ताकि राष्ट्र भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक संतोषजनक जीवन की ओर अग्रसर हो सके।

- इन्दिरा गांधी

दु ख-सुख का स्वरूप

सुरेश मेहता

मानव जीवन का हर क्षेत्र दु खो से भरा पडा है। शारीरिक व प्राकृतिक दु ख तो बाह्य उपचार व साधनो से कम या दूर हो जाते है परन्तु मानसिक दु ख बाह्य उपचार से कम व दूर नही होते।कारण कि किसी की मनचाही बाते पूरी नही होती, फिर किसी योग से कोई कामना पूरी हो भी जाती है तो उससे मिलने वाला सुख क्षण भर से अधिक रहता नही है। अत पुन सुख पाने के लिए नई कामना पैदा हो जाती है, उसे पूरा करने की अभिलाषा चित्त को अशात बनाये रखती है, यही दु ख का मूल कारण है।

दु ख का कारण

जितनी-जितनी कामनाए होती है उतना उतना ही अभाव का दु ख बढता जाता हे। यही कारण है कि ससार की सारी वस्तुओ व समस्त सपत्ति भी किसी एक मनुष्य को दे दी जाये, तब भी उसे अभाव का दु ख बना ही रहेगा, तृप्ति नही होगी।

अत बुद्धिमानी इसी मे है कि हम कामना उत्पन्न कर व्यर्थ मे ही अपने को दु खी नहीं बनावे। हम अपने भोग उपभोग की वस्तुओ व इच्छाओ को सीमित रखने का दृढ सकल्प ले।

कामना के अभाव मे चित्त शात रहता है और चित्त का शात या समता मे रहना ही सुख है।

सुख दु ख का कारण अन्य कोई नहीं

कामना करना या न करना स्वय मानव पर निर्भर है। अत अपने सुख-दु ख का कारण मानव स्वय ही हे, अन्य कोई नही।

पराधीनता अपने आप मे बड़ा दु ख है। अपने सुख-दु ख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति को मान लेना पराधीन होना है। दु ख इनसे नहीं होता बल्कि अपने ही किसी न किसी प्रकार के दोष के कारण होता है और कोई भी दोष किसी दूसरे की देन नही है, अपितु हमारी ही भूल का परिणाम है।

प्राणी दु ख के मूल कारण पर प्रहार नहीं करता। जैसे कोई व्यक्ति काटो से बचने के लिए बबूल के काटे तोड़ता रहे, जड न उखाडे तो उसे काटो से छुटकारा कभी नही मिलेगा।

अन्य को सुख दुख का कारण मानने से हानिया

1 वस्तु से आशा -
जड वस्तुओ के लोभ से प्राणी की चेतनता तिरोहित हो जाती है, जो बहुत बडी हानि है।

2 व्यक्ति से आशा -
मोह के कारण जड़ता आती है जिससे चिन्मय स्वरूप की क्षति हो जाती है।

3. परिस्थिति से आशा -
परिस्थिति स्वभावतः ही अपूर्ण होती है जो अपूर्ण है उसे सुखद स्वीकार करने से व्यक्ति अपने वास्तविक जीवन से विमुख हो जाता है।

4. अवस्था से आशा -
प्रत्येक अवस्था सीमित, परिवर्तनशील व विनश्वर है, इसमें जुडने से प्राणी असीम अनन्त स्वभाग से विमुख हो जाता है।

सुख-दुख अन्य से न मानने से प्राप्त लाब्धियां :

1. अपने दुख का कारण अन्य को न मानकर अपने को मानने से सजगता आती है और दुख का निवारण करने में हम समर्थ हैं, स्वाधीन हैं, यह भावना जागृत होती है।

2. जब व्यक्ति दुःख का कारण किसी और को नहीं मानता,तब उसके जीवन में से द्वेष की आग सदा के लिए बुझ जाती है,जिससे दिव्य जीवन का अवतरण होता है।

3. मानव को सुख-दु.ख से अतीत के जीवन की अनुभूति के लिये प्रयत्नशील पुरुषार्थ करना चाहिए।

4. परिस्थिति की उपस्थिति कर्मो का फल है परन्तु परिस्थिति से सुखी-दुखी होना या न होना, यह मनुष्य के विवेक या अविवेक पर निर्भर करता है। अतः विवेकशील साधक भयंकर से भयंकर परिस्थिति में भी अपने को दुखी नहीं करता है अपितु उसे अपनी उन्नति का साधन बना लेता है।

5. राग-द्वेषग्रस्त व्यक्ति किसी के भी संबंध में सही निर्णय नहीं कर सकता क्योंकि जिसके प्रति राग हो जाता है उसके दोष दिखायी नहीं देते और जिसके प्रति दोष होता है उसके गुण दिखाई नहीं देते। जब गुण दोष का सही बोध नहीं होता तो निर्णय सही नहीं हो सकता। राग द्वेष रहित होने के लिए यह अनिवार्य है कि हमें अपने सुख-दुख का कारण किसी दूसरे को नहीं मानना होगा।

दुख मुक्ति का उपाय-वीतराग योग :

दुख का कारण है सुख भोग। दुख से मुक्ति पाने का उपाय है - सुख भोग का त्याग, विषय सुख के त्याग, का उपाय है - वीतराग योग की साधना।

योग का अर्थ है जोड या जुडना। जुडना दो प्रकार का होता है -

1. विनाशी के साथ - विनाशी है दृश्यमान संसार, वस्तुएं एवं पुदगल जो परिवर्तनशील हैं।

2. अविनाशी के साथ - अविनाशी है - अपरिवर्तनशील, जो सत्य है, जिसे-चेतना, आत्मा परमात्मा कहा जाता है।

योग सहित आत्मा को संयोगी आत्मा कहा जाता है, जब योग के उपयोग का पूर्णतः निरोध कर दिया जाता है तो वह अयोगी आत्मा कहा जाता है। अयोगी आत्मा ही संसार के बंधन से सर्वथा मुक्त, सिद्ध हो जाता है। मानव में यह विशेषता है कि वह भोग की प्रवृत्ति को घटा या बढ़ा सकता है, पूर्ण त्याग भी कर सकता है। वह भोग के अधीन नहीं है अतः स्वाधीन है, मुक्त है। मुक्त होने की प्रक्रिया या पुरुषार्थ ही साधना है। मुक्ति की प्राप्ति वीतरागता से संभव है। राग रहित होना ही वीतराग होना है इसे ही वीतराग

योग कहा गया है।

वीतराग योग और स्वास्थ्य

वीतराग साधना से जैसे जैसे साधक मे समता वढती जाती है वैसे वैसे उसकी शाति वढती जाती है। शाति से शक्ति की अभिवृद्धि होती है। शक्ति कम व्यय होने से रक्त की कम आवश्यकता होती है। अत हृदय व फेफडो को कम काम करना पडता है इससे रक्तचाप मे कमी आ जाती है।

वीतराग साधना मे भोजन सादा व अल्प करने तथा एक समय करने से आमाशय व आतो पर कम भार पडता है जिससे पाचन शक्ति मे सुधार व वृद्धि होती हे जो रक्त की शुद्धि एव स्वास्थ्य वृद्धि मे सहायक होती है।

रक्त, मास, मज्जा, अस्थि आदि धातुओ का बना हुआ शरीर मन पर निर्भर करता है। मन के तार क्षीण होने पर धातुए क्षीण व दुर्वल हो जाती है, इसलिए सदैव मन की रक्षा करनी चाहिए।

जिसका मन विकार रहित होता हे उसका रक्त इतना शुद्ध हो जाता है कि उस पर विपाक्त प्रभाव नही पड सकता।

मन मे तनाव रहने से पेट मे अल्सर हो जाता है। भोगो के अत्यधिक उपयोग से क्षय हो जाता है। निराशा से मदाग्नि रोग हो जाता है।

वीतराग-योग से शरीर के अन्य अग जैसे यकृत, आमाशय, फेफडे गुर्दे आदि रोगो के निवारण तथा पाचन सस्थान की कमजोरियो को दूर करने मे सहयोग मिलता है।

निरोग रहने के लिए आवश्यक शर्त है कि जीवन को सयमयुक्त विताया जाए, निर्मलता से वढकर न तो कोई शक्ति प्रदायिनी दवा ही है और न रोग विनाशक अमोघ औपधि ही।

इस प्रकार वीतराग योग की साधना आत्मिक, मानमिक और शारीरिक स्वास्थ्य मे महत्वपूर्ण योग पदान करने वाली है। वर्तमान मे विज्ञान के कारण भौतिक विकास चरम सीमा पर पहुच रहा है। विज्ञान प्रदत्त भौतिक उपलव्धिया मानव के अतर मे स्थित कपाय को उभारने मे निमित्त बन रही है, जिससे मानव समाज सत्रस्त व दुखी हो रहा है। इस अवाछनीय स्थिति से मुक्ति पाने के लिए ऐसे मार्ग की आवश्यकता है जो कारण कार्य पर आधारित हो तथा सरल, सहज, सुगम हो। इस कसौटी पर वीतराग साधना शत प्रतिशत खरी उतरती है।

वीतराग साधना को आज का सम्पूर्ण विश्व अपनाने को तैयार है यदि विज्ञान के साथ वीतरागता साधना का योग न हुआ तो विज्ञान से विश्व का विनाश अवश्यम्भावी हे। यदि विज्ञान के साथ वीतराग साधना का योग हो जाए तो आध्यात्मिक विकास व भौतिक विकास परस्पर पूरक व प्रेरक होकर आज से अनेक गुने विस्तृत व उन्नत हो जाऐगे और इस धरती पर दुख से निवृत्ति एव स्वर्गीय सुख व अपवर्गीय परमानन्द की उपलब्धि सभव हो सकेगी। ❑

गुण सव स्थानो पर अपना आदर करा लेता हे।

- कालीदास

चारित्रिक शिक्षा का महान् आगम-ग्रन्थ एवं रोचक रचना "दशवैकालिक सूत्र"

डॉ. भावना आचार्य
प्राध्यापिका एवं अध्यक्ष, सस्कृत विभाग
राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर (राज.)

जैन परम्परा में मान्य आगम-ग्रन्थों में शय्यम्भव सूरि द्वारा रचित "दशवैकालिक सूत्र" एक अद्भुत रचना है। नन्दीसूत्र में श्रुत के दो भेद किये गये हैं - अंगबाह्य और अंगप्रविष्ट। प्रश्न पूछे बिना अर्थ का प्रतिपादन करने वाले श्रुत को 'अंगबाह्य' तथा गणधरों के प्रश्न करने पर तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित श्रुत को 'अंगप्रविष्ट' कहते हैं। अंगबाह्य के भी दो भेद हैं - आवश्यक और आवश्यक व्यतिरिक्त। इनमें से सामयिक आदि छः भेद 'आवश्यक' के हैं। 'आवश्यक व्यतिरिक्त' को कालिक और उत्कालिक भेदों से दो प्रकार का माना गया है। जो दिन और रात्रि के प्रथम और अंतिम प्रहर में पढा जाता है, उसे 'कालिक' कहते हैं किन्तु जिसके पढने का कोई विशेष समय निर्धारित न हो, उसे 'उत्कालिक' कहा जाता है। 'दशवैकालिक सूत्र' इसी कोटि में गिना गया है। 'विकाल' अर्थात् संध्याकाल में भी इसे पढा जा सकता है। इस कारण यह कालिक नियम में बँधा श्रुत-ग्रन्थ नहीं है, यही इसकी पहली विशिष्टता है।

दशवैकालिक सूत्र में जैन मुनियों के संयम-पालन के कठोर नियमों का उपदेश है। इसके रचयिता पहले ब्राह्मण थे और बाद में जैन धर्म में दीक्षित हो गये। वे जब चम्पा में विहार कर रहे थे, तब उनका पुत्र मणग उनकी खोज करते-करते उनके पास पहुँचा। शय्यंभव सूरि को अपने दिव्य ज्ञान से पता चला कि उसके पुत्र की आयु केवल छः माह शेष रही है। पुत्र ने जब जिन सिद्धान्तों के विषय में जिज्ञासा प्रकट की, तब उसे उपदेश देने के लिए उन्होंने अध्ययनकाल की पाबंदी से मुक्त इस ग्रन्थ की रचना की, जो दस अध्ययनों में विभक्त है। एक विशेष उद्देश्य से लिखे जाने के कारण यह ग्रन्थ 'गागर में सागर' के समान सारयुक्त और काल-बाधा से स्वच्छन्द ग्रन्थ है - यह इसकी दूसरी विशेषता है।

इस महत्वपूर्ण आगम-सूत्र पर तीन सौ इकहत्तर गाथाओं में भद्रबाहु ने 'निर्युक्ति' लिखी जिसमें सिद्धान्तों की पुष्टि में अनेक धार्मिक और लौकिक कथानकों का निबन्धन किया। जिनदासगणि महत्तर ने चूर्णी लिखी। अगस्त्य सिंह ने भी इस अवसर पर चूर्णी की रचना की, जो जैसलमेर के ग्रन्थ-भंडार से मिली है। यह चूर्णी वलभी वाचना से 200-300 वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी थी। हरिभद्र सूरि ने इस पर सुप्रसिद्ध टीका लिखी। यापनीय संघीय अपराजित सूरि, जिन्हें विजयाचार्य भी कहा जाता है, ने 'विजयोदया' टीका लिखी, जिसका उल्लेख उन्होंने 'भगवती आराधना' की टीका में किया है। इनके अतिरिक्त तिलकाचार्य, सुमति सूरि और विनयहंस ने 'दसवेयालिय सुत्त' पर 'वृत्तियों' की रचनाएँ की। वर्तमान युग में जर्मन विद्वान शूब्रिंग ने भूमिका आदि सहित तथा लायमैन ने मूलसूत्र और निर्युक्ति को जर्मन अनुवाद के साथ प्रकाशित किया। ये प्रकाशन इस ग्रन्थ की अत्यधिक लोकप्रियता के प्रमाण हैं - यह

इसकी तीसरी विशेषता है।

डॉ पिशेल ने 'दसवेयालिय-सुत्त' को भाषा शास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से उत्तराध्ययन-सूत्र के समान महत्वपूर्ण माना है। इस ग्रन्थ मे प्रयुक्त प्राकृत भाषा तथा उसमे निबद्ध कथानक अत्यन्त रोचक है, साथ ही चारित्र्य-शिक्षा की दृष्टि से समाज के सामान्य वर्गो के लिए भी बडे उपादेय है। 'दशवैकालिक वृत्ति' मे हरिभद्र सूरि ने लिखा है -

बाल-स्त्री-वृद्ध-मूर्खाणा नृणा चारित्रकाक्षिणाम्।
अनुग्रहार्थ तत्त्वज्ञै सिद्धान्त प्राकृत कृत ॥

तत्त्व ज्ञानियो ने गूढ सिद्धान्तो को, चरित्र के आकाक्षी बालक, स्त्री, वृद्ध और मूर्ख लोगो पर अनुग्रह करने के लिए ही प्राकृत भाषा मे ढाला है। सरल, सुबोध और सुरुचिपूर्ण प्राकृत भाषा का प्रयोग 'दसवेयालिय सुत्त' की चौथी विशेषता है।

इस ग्रन्थ की पाचवी विशेषता हे कि इसमे लौकिक, प्राकृतिक उपमानो तथा लोकप्रचलित आख्यानो-कथानको द्वारा गूढ धार्मिक तत्वो को अत्यन्त मनोरजक ढग से अभिव्यक्त किया गया है। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए केवल दो उदाहरण प्रस्तुत करना ही पर्याप्त होगा। यथा -

पहला उदाहरण एक गाथा के रूप मे दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन ''द्रुमपुष्पित'' से उद्धृत है। इस प्राकृत गाथा मे साधु को किस प्रकार आचरण करना चाहिए, यह बात भ्रमर के उपमान से बडे काव्यात्मक ढग से समझाई गई है। गाथा मूल प्राकृत मे इस प्रकार है -

जहा दुमस्स पुप्फेसु
भमरो आवियई रस।
ण य पुप्फ किलामेइ
सो य पीणेइ अप्पय॥

इस गाथा का पद्यबद्ध काव्यानुवाद डॉ हरिराम आचार्य ने अपनी काव्यकृति ''आगम तीर्थ'' मे अपरिग्रह-सूत्र के अन्तर्गत इस प्रकार किया है -

जैसे सदय भाव से भौरा करता फूलो से रसपान।
स्वय तृप्त भी होता, फूलो को भी नहीं बनाता म्लान॥
वैसे ही श्रेयार्थी साधक नही जगत् को देता कष्ट।
अपरिग्रह से जीवन जीता और स्वय भी होता तुष्ट॥

दूसरा उदाहरण 'दशवैकालिकचूर्णी' से लिया गया है। इसमे एक लोक प्रचलित रोचक सवाद का प्राकृत भाषा मे निबद्ध प्राचीन रूप मे मिलता है। जो लोग निठल्ले और कामचोर होते थे, वे मुफ्त का माल चरने के लोभ मे भिक्षु वेश धारण कर लेते थे लेकिन अपनी बुरी लते छोड पाना उनके लिए बडा कठिन था। जब उनकी चोरी कहीं पकडी जाती थी, तब कैसी हास्यास्पद स्थिति बनती थी, इसका वर्णन एक राजा और तच्चन्निक (तत्क्षणिकवादी) बौद्ध भिक्षु के सवाद मे किया गया है -

''तच्चण्णियो मच्छे मारेतो रण्णा दिट्ठो। ताहे रण्णा भणिओ- कि मच्छे मारेसि ?'' तच्चण्णियो भणइ- अवीलक्क न सिक्केमि पातु। ''

इस पूरे सवाद प्रसग के मूलरूप का हिन्दी अनुवाद-मात्र नीचे प्रस्तुत है -

''किसी राजा ने एक तच्चन्निक (तत्क्षणिवादी) बौद्ध भिक्षु को मछली मारते हुए देखा। तब राजा ने प्रश्न किया -

- ''भिक्षु ! तुम मछली मार रहे हो। क्या मास खाते हो ?''

- "मांस खाए बिना पी नहीं सकता।"
- "अरे तो क्या तुम मद्यपान भी करते हो ?"
- "क्या करूं ? वेश्याओं के साथ उनके कहने पर मद्यपान तो करना ही पडता है।"
- "अच्छा तो वेश्यागमन भी करते हो ?"
- "जब पास में ज्यादा धन हो जाता है, तो कहां रक्खूं ? इसलिए उसे उड़ाने के लिए चला जाता हूँ वहाँ।"

"धन ? कहाँ से आता है तुम्हारे पास धन ? क्या भिक्षा में.....?"

"अजी, भिक्षा में धन कौन देता है ? वह तो ऐसा कि कभी-कभी जुए में जीत जाता हूँ।"

"वाह ! तो तुम जुआ भी खेलते हो ?"

"हमेशा नहीं। हॉ, जब कभी चोरी में धन हाथ लग जाता है तो उसको कहॉ छिपाऊँ ? इसलिए जुए में फूंकना पडता है।"

"लेकिन चोरी तो अपराध है, उससे तो बचना चाहिए।"

"बचूँ कैसे बच्चा ! घरवाली पैसे के लिए जब देखो तब हाय-हाय मचाये रहती है।"

"भई वाह ! तो घरवाली भी है तुम्हारी ?"

"अपने बाल-बच्चों को अकेला कैसे छोड दूँ ? बताओ।"

"क्या कहने हैं तुम्हारे ? बाल-बच्चों की पूरी गृहस्थी पाल रक्खी है।"

- " अजी पूछो मत बच्चा ! जब देखो तब 'यह लाओ, वह दिलाओ' की रट लगी रहती है।"
- "फिर ? क्या करते हो उनसे बचने के लिए ?"
- " बचाव कहाँ है बच्चा ! उनके लिए रात-बिरात लोगों के घरों में सेंध मारनी पडती है।"
- "ओ हो ! तो सेंधमारी भी करते हो ?"
- "दासीपुत्र और करेगा भी क्या ?"
- "समझ गया। तो तुम दासीपुत्र हो।"
- " और नहीं तो क्या कोई कुलपुत्र अपना कुल-वैभव और घर-बार छोड़कर भिक्षु बनने आएगा ?"

इस संवाद को दशवैकालिक सूत्र की हरिभद्रवृत्ति में एक संस्कृत श्लोक में इस प्रकार निबद्ध किया गया है -

कन्थाचार्यघना ते ? ननु शफरवधे जालमश्नासि मत्स्यान् ?
ते मे मद्योपदंशान् पिवसि ? ननु युतो वेश्यया, यासि वेश्याम् ?
कृत्वारीणां गलेऽङ्घ्र, क्व नु तव रिपवो ? येषु संधि छिनद्मि।
चौरस्त्वं ? द्यूतहेतो कितव इति कथं ? येन दासीसुतोऽस्मि॥

दशरूपक (4/75) के लेखक धनंजय (1000ई.) ने भी इस हास्य रसपूर्ण संवाद को एक संस्कृत श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है -

भिक्षो ! मांसनिषेवणं प्रकुरुषे ? किं तेन, मद्य विना
कि ते मद्यमपि प्रियं ? प्रियमहो वाराङ्गनाभि सह।
वेश्या द्रव्यरुचिः कुतस्तव धनम् ? द्यूतेन चौर्येण वा
चौर्यद्यूत परिग्रहोऽपि भवतो ? नष्टस्य काऽन्या गतिः॥

ऐसे रोचक प्रसंगों, संवादों, पद्यों और लौकिक कथानकों द्वारा धर्म एवं चारित्र-शिक्षा देने वाला महान् आगम-ग्रन्थ होने के कारण "दशवैकालिक सूत्र" पठनीय और मननीय है।

साक्षरता से सामाजिक शुचिता की ओर

गीता मदान

यह विषय ऐसा है कि प्रारभ मे जिज्ञासा होती है कि इस विषय का अर्थ क्या हे ? क्योकि "साक्षरता" विषय से तो हम सभी भली-भाँति परिचित है,लेकिन साक्षरता से सामाजिक शुचिता का क्या तात्पर्य है या किस प्रकार से यह सभव है इससे हम सभवत अनभिज्ञ ही है। 'शुचिता' शब्द पर चिन्तन मनन करने के पश्चात् इसका एक गूढ व गभीर अर्थ इस विषय से सबधित हमारे समक्ष उपस्थित होता है क्योकि सामान्य तोर पर शुचिता शब्द का प्रयोग 'परित्तता' से ही किया जाता है।किन्तु सामाजिक पवित्रता से क्या सकेत मिलता है यह ऊपरी तोर पर हम नही जानते,किन्तु फिर भी हम परिभापित रुप मे इस विषय को इस प्रकार से व्यक्त कर सकते है कि "एक ऐसा शिक्षित, सुसगठित, स्वच्छ समाज जो कि लोगो के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करे, जहा पाशविक प्रवृत्तियो को स्थान देकर न्याय, एकता, सौहार्द्र, प्रेम, सहयोग भावना को बढावा दिया जाये अर्थात सपूर्ण सामाजिक दोपो, विकारो, कुरीतियो, बुराईयो, सघर्ष, वेमनस्य से पूर्णत मुक्त हो, इस प्रकार का समाज शुचिता स परिपूण कहलाने योग्य है।

इस प्रकार हम एक आदर्श व शुचिता से परिपूर्ण समाज के लिए शिक्षा का अनिवार्य महत्व समझते है। जिसके विना स्वच्छ समाज की कल्पना नही की जा सकती।

एक स्वच्छ समाज के निर्माण मे कई बाधक समस्याए है जिनका समाधान शिक्षा के माध्यम से सभव है, यह समस्याए विभिन्न रूपो मे परिलक्षित होती है जिनमे से प्रमुख है -

जनसख्या वृद्धि, साम्प्रदायिकता, अपराध, आतकवाद, नशा-वृत्ति, अध-विश्वास, अलगाववाद, पर्यावरण-प्रदूषण, दहेज प्रथा, बेकारी, गरीबी, अनैतिकता, वाल-विवाह, अस्पृश्यता इत्यादि।

अध-विश्वास - समाज मे कुछ प्रथाए व कुरीतिया ऐसी है, जिन्हे प्राचीन काल मे उचित व वर्तमान काल मे अनुचित समझा जाता हे, जिनमे वाल विवाह व सती-प्रथा प्रमुख है, यद्यपि वर्तमान मे ऐसा करने पर लोगो को दण्ड का भागीदार वनना पडता है तो भी वह यह कानूनी अपराध करते है क्योकि वह अशिक्षित होने के कारण कानून को नही जानते और वह चली आ रही इन प्रथाओ को निभाने मे गर्व का अनुभव करते है। 'क्यो और किसलिए' वह ऐसा करते है यह पूछने पर उनके पास जवाव नही, क्योकि अशिक्षा का पर्दा ऑखो पर डाला हुआ हे और वही सोच समझकर तर्क करने योग्य ही नही हे। आप सभी शिक्षित जनमान्य है आप खुद ही इसका फैसला करे कि क्या आखा-तीज पर नादान बच्चो का विवाह करना और विधवा होने पर कन्या को उसके पति के

साथ चिता पर जला देना उचित है। क्या वह जिन्दगी को खुशहाल बनाने की अधिकारिणी नहीं है ?

जनसंख्या वृद्धि - हमारा देश जिन ज्वलंत समस्याओं से जूझ रहा है, जिन ज्वलंत समस्याओं से त्रस्त हो रहा है, उनमें जनसंख्या की तीव्र वृद्धि की समस्या भी एक है। वैसे तो सारे विश्व में ही जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ रहा है, अकेले भारत में ही 1991 में 84.53 करोड जनसंख्या थी और यदि इसी प्रकार से जनसंख्या बढती रही तो वर्तमान शताब्दी के अंत तक हमारे देश की जनसंख्या एक अरब हो जायेगी तो यह जनसंख्या विशाल रूप धारण कर लेगी। जनसंख्या प्रबल रूप से विकसित होने के कारण विस्फोटक स्थिति के शीर्ष तक पहुंच चुकी है, इसका एक ही प्रमुख कारण दृष्टिगोचर होता है ''अशिक्षा'' क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां 76% जनसंख्या ग्रामीण हैं जो कि अधिकतर अशिक्षित हैं और वह बच्चों को ईश्वर की देन समझकर स्वीकार करते हैं और बढ़ती जनसंख्या के दुष्प्रभाव से अनभिज्ञ हैं। यदि ऐसे ही जनसंख्या में वृद्धि होगी तो हमें अपनी दैनिक मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाई होगी, जिसके बिना व्यक्ति आदर्शो को भी नहीं अपनाता और इस प्रकार से एक सुसंगठित समाज एक कल्पना मात्र ही बनकर रह जाता है।

साम्प्रदायिकता - जब कोई व्यक्ति धर्म को स्वीकार करते हुए भी उस धर्म के सिद्धांतों को समझने का प्रयास नहीं करता तथा दूसरे धर्म को घृणा की दृष्टि से देखता है, तो लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना उत्पन्न होती है और उनमें शत्रुता आ जाती है। अतः हम यह कह सकते हैं कि साम्प्रदायिकता ही जननी है ''धर्मान्धिता'' इसका शाब्दिक अर्थ है-''धर्म के प्रति लोगों का अंधा विश्वास''। प्राचीन समय से ही भारत में समाज को कर्मों के आधार पर चार पद प्रदान किये-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। इसी प्रकार के जाति भेद करने से लोग दूसरे को नीचा समझने लगे और उनमें वैर-विरोध की भावना पनपी। इसी मत वैभिन्नय का लाभ ब्रिटिश सरकार ने उठाया व हिन्दुस्तान को गुलामी की जंजीरों में जकड लिया। भारत वासियों ने भी अपनी अशिक्षा, अज्ञानता, असमझता से उनकी ''फूट डालो और राज करो' कूटनीति में सहयोग प्रदान किया। हमें स्वतंत्रता आज कितने बलिदानों के पश्चात प्राप्त हुई है लेकिन हम पुनः अपनी मूर्खता व धर्मान्धिता से समाज को विभाजित करने पर उतारु है, आपस में संघर्ष कर रहे हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण ''1992 में अयोध्या में बाबरी मस्जिद को गिराना'' क्या यह एक सभ्य समाज के लक्षण हैं ? नहीं, कदापि नहीं।

आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो लोगों के दिलों से आपसी कटुता, शत्रुता, वैर विरोध को भुला दे क्योंकि धर्म हम सभी को जोडता है, आपस में तोड़ता नहीं है। हम सभी अपने अच्छे-बुरे का फैसला कर सकें और यह समझें कि हमारे समस्त धर्म एक ही वृक्ष की शाखाएं या एक ही भवन तक पहुंचने के अनेक मार्ग हैं। फिर पथिकों में प्रतिद्वन्दिता क्यों ? जब से हम सभी अनेकता में छिन्न-भिन्न हुए तो हमें दुर्दिन देखने पड़े, अतः हम सभी को शिक्षित होकर साम्प्रदायिकता का पूर्ण विनाश करना है।

आतंकवाद - हम जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण व उन्नति में युवा शक्ति का बहुत हाथ होता है, जिसे युवाओं के साथ मिलता है वह उन्नति कर प्रगतिशील बनते हैं तथा जिन्हें साथ नहीं मिलता वह राष्ट्र पतन की ओर अग्रसर होने लगता है। खासतौर

पर जबकि उसका राष्ट्र आतकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद जैसी कठिन समस्याओ से जूझ रहा हो तो।

एक आतकवादी का कार्य पिस्तौल की नोक पर राष्ट्र की सामान्य गतिविधियो मे अवरोध उत्पन्न करना, निर्दोष लोगो की जान लेना है। लेकिन आतकवाद आया कहा से, समाज मे वह नवयुवक अशिक्षित वर्ग, जिनके पास अभी अनुभव व समझ की कमी है, जिनका उचित मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं है-उन लोगो को घुसपैठी गुमराह कर गलत कार्यो की तरफ प्रेरित करते है। उन्हे बारूद देकर अशाति अराजकता का माहौल बनाते है। भारत मे पजाब, जम्मू-कश्मीर ऐसे ही क्षेत्र है वहा के युवाओ को पाकिस्तानी कश्मीर वापिस दिलाने का झूठा दिलासा देकर हिमायती बनते है। अशिक्षित गुमराह युवा वर्ग इतना भी नहीं समझता कि पजाब, जम्मू-कश्मीर इन्हीं का अर्थात भारतवासियो का ही है तो फिर अपनी चीज लेने के लिए अन्य बाहरी लोगो की सहायता की क्या आवश्यकता है। यदि इन युवाओ को उचित शिक्षा व मार्गदर्शन मिले तो यह देश के भविष्य को उज्जवल बना सकते है।

पर्यावरण प्रदूषण – वैज्ञानिक प्रगति जहा एक ओर विश्व को अधिकाधिक समृद्धि व विकास की ओर अग्रसर कर रही है वहीं ही दूसरी तरफ वह मानव के लिए अभिशाप बनती जा रही है। हम अपने चारो ओर के वातावरण को ही ''पर्यावरण'' कहते है जहा हम साँस लेकर जीवित रहते है और अपनी दैनिक स्वाभाविक आवश्यकताओ की पूर्ति करते है और यदि पर्यावरण का ही प्रदूषण हो तो हमारा जीवन समुचित ढग से नहीं चलता।

शहरी व औद्योगिकरण की द्रुतगति मानव के लिए अधिकाधिक घातक सिद्ध हुई है, उससे पर्यावरण प्रदूषण कई रूपो मे अभिव्यक्त हो रहा है। नये कारखाने खुलने से उसकी जहरीली गैसे शुद्ध ऑक्सीजन को दूषित करती है, उसके रासायनिक अवशिष्ट पानी मे मिल जाने से स्वच्छ जल का अभाव हो रहा है, शहरो से दूर कारखाने खोलने से वहा के जगलो मे अधाधुध कटाई करने से जीवन मे सकट ही सकट उत्पन्न हो रहे है। टी वी , रेडियो, वाहनो के शोर से अधिक ध्वनि प्रदूषण होता है।

इस प्रकार से पर्यावरण प्रदूषित होने पर व्यक्ति मानसिक रूप से भी परेशान हो जाता है और समस्या की रोकथाम करने मे असमर्थ होता है। अत हम शिक्षा के माध्यम से ''पर्यावरण की शुद्धता'' का प्रचार-प्रसार तीव्र गति से कर समाज को विनाश के कगार तक पहुचने से बचाये।

बेरोजगारी – साधारण अर्थ मे काम न मिलने की अवस्था को बेरोजगारी कहते है किन्तु सामाजिक दृष्टिकोण मे योग्य व्यक्ति को योग्यता होने के उपरात भी काम नहीं मिलता तो वह बेरोजगारी की अवस्था कहलाती है। जनाधिक्य तीव्रता से होने से कारण सन् 1991 मे 2 30 करोड व्यक्ति भारत मे बेरोजगार थे और वृद्धि की यही स्थिति रही तो सन् 2000 तक अनुमानित 9 40 करोड जनता बेकार होगी। बेकारी का अशिक्षा एक कारण है तो दूसरा दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, जिसमे कि व्यक्ति को ऊचे पद की लालसा हमेशा बनी रहती है, जिसके लालच मे वह छोटा सा कोई काम करने मे शर्म करता है और बेकारी को ज्यादा पसद करता है। अत हमे शिक्षा प्रणाली मे सुधार लाकर उसे पूर्णरुपेण व्यावसायिक शिक्षा को स्थान देकर बेकारी दूर करने मे शिक्षा को सहायक बनाना चाहिए।

नशा वृत्ति - वैसे तो प्राचीनकाल में आर्यों से ही मादक पदार्थ सोमरस का सेवन करना पाया जाता है किन्तु आज पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने के कारण इसका प्रचलन इतना बढ़ गया है कि यह संपूर्ण विश्व के समझ एक गंभीर समस्या के रूप में प्रकट हुई है। नशे का प्रचलन अधिकतर शिक्षित व्यक्तियों में ही है क्योंकि नशा करने में वह अपनी शान समझते हैं अर्थात नशा आजकल प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया है। जबकि यदि वह बुद्धि से सोचे, शिक्षा से जाने तो पता लगेगा की नशे की प्रवृत्ति ही कई भयंकर बीमारियों को उत्पन्न करती है, जिसमें से सर्वाधिक फैलने वाली लाइलाज बीमारी 'एड्स' है, जिसका इलाज आज पश्चिमी देश भी खोज रहे हैं, वह असमर्थ ही सिद्ध हुए। आज इन भयंकर बीमारियों का इलाज सावधानी में ही निहित है, अतः जितना संभव हो इसका उत्तम तरीके से प्रचार-प्रसार करना चाहिए। ताकि इन बीमारियों से मुक्त हो सकें।

गरीबी - भारत की आर्थिक प्रगति में सबसे ज्यादा बाधक तत्व है "गरीबी"। गरीबी स्वयं गरीबी को जन्म देती है चूंकि देश गरीब है इसलिए देश विकास नहीं कर पाता है और इसीलिए गरीबी है। संचयन, विनियोग के अभाव में व्यक्ति अपनी दैनिक मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाता तो वह थोथे आदर्शो को किस प्रकार से अपना सकता है, तभी वह अपराध की ओर अग्रसर होता है तथा नैतिक पतन करता है जो कि समाज की प्रगति में बाधक है। अशिक्षितों का सभी शोषण करते हैं अतः प्रत्येक व्यक्ति साक्षर हो तो देश समुचित विकास कर सकता है।

अपराध - सामाजिक आदर्शों-मूल्यों, नैतिकता के विरुद्ध किया गया आचरण जिसके प्रति लोगों के द्वारा आक्षेप किये जायें तथा जिसके लिए समाज में दण्ड की व्यवस्था की गई हो-वह अपराध है। अपराध समाज के साथ ही जुड़ा है, अतः जब तक समाज रहेगा तब तक अपराध भी। अंतर होगा तो अपराध के रूप में व उसकी दर में, भले ही कारण वैयक्तिक को या अवैयक्तिक-पर दण्ड सभी के लिए निश्चित है। यदि व्यक्ति समझदार, शिक्षित, साहसी, धैर्यवाहन, सहनशील हो तो वह कभी भी अपराध की ओर उन्मुख न होकर सही राह अपनायेगा।

दहेज प्रथा - दहेज एक ऐसी कुप्रथा है जिसे प्राचीनकाल में अच्छाई का प्रतीक माना जाता था क्योंकि पहले यह व्यक्ति की इच्छा या हैसियत पर निर्भर करता था कि लडकी को विवाह के समय कितनी धनराशि, कपड़े, बर्तन देने हैं किन्तु इसके अत्यधिक प्रचलन के कारण आधुनिक युग में यह एक आवश्यक शर्त विवाह की बन गई है। लोग स्वयं इसकी मांग करते हैं, तभी इसे आज कुप्रथा कहा गया है। दहेज न मिलने पर लड़की को मार दिया जाता है या अन्य तरीके से यातनाएं दी जाती हैं या विवाह के समय ही दहेज न मिलने पर विवाह रुक जाता है। धन पाने के लिए व्यक्ति इतना लालायित होता है कि धन न मिलने की अवस्था में अपनी बेटी समान बहू को प्रताड़ित करता है। एक अशिक्षित, खाली दिमाग व्यक्ति ही इतनी नृशंसता दिखा सकता है क्योंकि खाली दिमाग ही शैतान का घर होता है और यदि शिक्षित व्यक्ति ऐसी क्रूरता दिखाता है तो वह शिक्षा से कुछ सीख ही नहीं पाया है। यह कहना गलत न होगा कि वह शिक्षित होते हुए भी एक अशिक्षित, जाहिल, गंवार व्यक्ति के समान व्यवहार करता है। यदि उचित शिक्षा की व्यवस्था हो तो

व्यक्ति मे स्वस्थ मस्तिष्क का निवास हो सकता है।

अनैतिकता - पशु व मानव मे अतर करने का प्रमुख साधन बुद्धि है, यदि लोग इसका उपयोग न करे तो उनका आचरण पशु तुल्य ही होगा। बुद्धि से नैतिक आचरण करने पर ही व्यक्ति स्वय के साथ देश की भी उन्नति कराने मे सहायक सिद्ध होता है अन्यथा बाधक।

फिर कहा भी गया है कि-नैतिकता ही जीवन है और नैतिकता रहित प्राण है जीवन जीने योग्य ही नही क्योकि वह सपूर्ण राष्ट्र का भविष्य अधकारमय बनाता है-स्वय अपने अनैतिक कार्यो के द्वारा।

वर्तमान मे भी भारत देश पतन की ओर जा रहा है, क्योकि चारो ओर अनैतिकता, अपराधो, भ्रष्टाचार, घोटालो, गबन, हत्याओ, व्यभिचार, अन्याय का ही ताडव दृष्टिगोचर हो रहा है। इसमे न केवल सामान्य व्यक्ति ही बल्कि बडे-बडे पद पर आसीन नेता, मुख्यमत्री व प्रधानमत्री तक सलग्न है जो कि देश की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाते है और यदि प्रजापालक ही अनैतिक होगे तो वहा की प्रजा किस प्रकार नैतिकता का आचरण कर पायेगी। इस के आगे अभी तक भी प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है।

अत देश की प्रगति मे नैतिकता का पुट अवश्य ही विद्यमान होना चाहिए।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि इन सभी समस्याओ के होते हुए एक स्वस्थ समाज का निर्माण सभव नहीं है। इन सभी समस्याओ रूपी बीमारी की जड "अशिक्षा" ही है। यदि प्रत्येक व्यक्ति साक्षर हो तो वह समाज मे इनको स्थान ही न देगा। साक्षरता के साथ-साथ हमे मानसिक, शारीरिक, भौगोलिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक शुचिता को भी अपनाना होगा क्योकि यह सभी समाज के महत्वपूर्ण अग है।

समत्व

स्वर को सम करो।
आर्केस्ट्रा का शोर
थोड़ा कम करो।
गीत अर्थ
कही खो न जाए।

अहम को कम करो
उपलब्धियो के प्रतीको को
नमन करना सीखो
श्रद्धा से आखे नम करो।

यह अहकार
कही अपनी ही राह मे
काटे न बो जाए।

दीक्षा

डॉ. हरिराम आचार्य

पात्र: सुकेतु (तरुण-पन्द्रहवर्षीय), मंगला (सुकेतु बहन), सुकर्मा ब्राह्मण (सुकेतु के पिता), चन्दन (सुकेतु के चाचा), मोदक राम (सुकेतु का मित्र), तथा श्वेताम्बर मुनिश्री (एवं कुछ स्त्री पुरुष)।

(पंच णमोकार मन्त्र का नेपथ्य में उच्चारण हो रहा है) मंच शीर्ष (अपस्टेज) की ओर संध्यासूचक सिन्दूरी लाल प्रकाश उतरता है।

नेपथ्य स्वर : यह कहानी उस युग की है जब वैदिक कर्मकाण्ड अपने सर्वोच्च शिखर पर था और जैन धर्म की सौरभ सुगन्ध धीरे-धीरे वायुमण्डल में फैल कर जन-मन को सुवासित करने लगी थी उसी युग के एक वैदिक परिवार की यह घटना है। पृष्ठभूमि में वैदिक मन्त्रों के उच्चारण की ध्वनि उभरती है।

दृश्य-1

(शिखा-सूत्रधारी ब्राह्मण का प्रवेश। इधर-उधर देखकर आवाज लगाता है)

ब्राह्मण: मगला मगला !!

(सहमी हुई मंगला का दूसरी ओर से प्रवेश)

ब्राह्मण सुकेतु कहां है ?

मंगला यहीं कही खेलता होगा।

ब्राह्मण : संध्या कालीन हवन सम्पूर्ण हो चुका और सुकेतु अभी तक घर नहीं लौटा।

मंगला मैं उसे बुलाकर लाती हूँ।

ब्राह्मण · उसे अपने आप लौटने दे मंगला। अगर वह खेलने ही गया है तो इस वाल सुलभ चपलता के लिये उसे क्षमा भी किया जा सकता है। किन्तु यदि वह नित्य की तरह उस विधर्मी के पास गया होगा तो......।

मंगला : नहीं पिता जी, वह और कहीं नहीं गया होगा।

ब्राह्मण : उस दिन कैसे चला गया था। वेदज्ञ बाह्मण सुकर्मा का पुत्र होकर वह एक विरोधी नास्तिक मुनि का उपदेश सुनने जाये, इससे अधिक अनाचार और पाप क्या हो सकता है ?

मंगला : उस दिन उसे अपने पाप का दण्ड मिल गया और अब दूसरी बार भला वह वहॉ क्यों जायेगा।

ब्राह्मण : जायेगा तो इस बार उसकी टांगे तोड दूंगा।

मंगला : नहीं नहीं !

ब्राह्मण . पिछली बार तेरी प्रार्थना पर उसे छोड़ दिया था।

मंगला : उसने मुझे वचन दिया है पिताजी कि अब वह ऐसी भूल नहीं करेगा, जिससे आपका नाम कलंकित हो।

ब्राह्मण · याद रख मंगला, मेरा क्रोध काल सर्प के समान है। तूने भी झूंठ वोलकर उसे मेरे क्रोध से वचाने की कुचेष्टा की तो तुझे भी कठोर दण्ड भोगना होगा (जाते-जाते ऊंचे स्वर) सुकर्मा अपने परिवार में धर्म विरोध का यह अनाचार होते नहीं देख सकता (भीतर की ओर प्रस्थान)

दृश्य-2

(मंगला वैचेनी से प्रतीक्षा करती हुई इधर उधर तेजी से घूम रही है। वार वार द्वार की ओर अधीरता से देखती है तभी सुकेतु का प्रवेश)

मंगला आ गया। कितनी देर कर के आया है।

चाचा पर यह तो वेदपाठी परिवार की परम्परा के विरुद्ध है।

सुकेतु कैसे ?

चाचा ऐसे कि तुम ब्राह्मणो के उच्चकुल मे उत्पन्न होकर एक भिक्षुक से उपदेश प्राप्त करो।

सुकेतु उच्च और नीच का भेद किस आधार पर करते है चाचा ? केवल जन्म से ? कर्म से नहीं।

चाचा कर्म के ही आधार पर हम उच्च है - कर्मकाड हमारा पवित्र धर्म है और ये श्रमण हमारे इसी धर्म के विरोधी है। वेदो के विरोधी है। बेटा ये लोग नास्तिक है।

सुकेतु जो कर्मकाड मूक पशु की बलि का विधान करता है, उसका मै भी विरोधी हू चाचा। जो ब्राह्मण धर्म समाज मे ऊच-नीच की दीवारे खडी करता है, उसका मै भी विरोधी हू। मुख से वेद मत्रो का उच्चारण करके भी जो लोग राक्षस जैसा आचरण करते है उनकी कौन पूजा करेगा ?

चाचा हमारा वैदिक धर्म दिव्य है बैटा, वह देवताओ का धर्म है।

सुकेतु हमे देवताओ का नहीं, मनुष्यो का धर्म चाहिये चाचा, जो सदाचार की शिक्षा दे, सच पूछो तो मुनिश्री किसी के विरोधी नहीं, वे तो सच्चे धर्म के समर्थक है जिससे मनुष्यो का कल्याण होता है।

चाचा पर बेटा ये श्रमण लोग कितने गदे रहते है, कभी स्नान नहीं करते, उनके शरीर से भयकर दुर्गन्ध आया करती है। और एक हम है

सुकेतु जा तीन तीन बार अपने शरीर का मेल धोते है और उसे मन मे भर लेते है। यही न चाचा। ऐसा घृणित कुप्रचार पिताजी ने भी वहुत किया है पर मैने अपनी आखो से देखा है कि श्रमणो का आहार शुद्ध है, उनका व्यवहार पवित्र है। वे सकल्प से भी किसी की हिसा नहीं करते।

चाचा जिन देवताओ का हम यज्ञ मे आह्वान करते है, जिनकी कृपा से हमारे वश की समाज मे प्रतिष्ठा है क्या ये श्रमण उनसे भी समर्थ है ?

सुकेतु मुनिश्री के दर्शन करो चाचा तो ऐसा लगता है कि उनके आगे देवताओ की कल्पना एक झूठी कल्पना है। सरल स्वभाव, मधुरवाणी, सौम्यस्वरूप, एव साक्षात करुणा के अवतार लगते है।

चाचा मै उनकी बुराई नहीं करता बेटा, पर तुम अपने पिता की भावना को भी तो समझने का यत्न करो।

सुकेतु मै क्या करू ?

चाचा तुम उनके इकलौते बेटे हो, देवताओ की बड़ी मनोतिया करके उन्होने तुम्हे पाया है। क्रोधी स्वभाव अवश्य है लेकिन उसके पीछे भी उनका स्नेह यही चाहता है कि तुम उनके योग्य उत्तराधिकारी बनो। वेदो की यज्ञ परम्परा को आगे बढ़ाओ।

सुकेतु हिसा प्रधान यज्ञों मे मेरी आस्था मिट चुकी है, चाचा।

चाचा पर बेटा हम ब्राह्मण है, हमारा परिवार पुरोहितो का परिवार है। इसलिये तुम वेदाभ्यास पूरा करके गृहस्थी बसाओ, वश परम्परा को आगे बढ़ाओ इसके विना मनुष्य की सदगति नहीं होती।

सुकेतु चाचा तुम्हारी बाते मेरी आत्मा को नहीं छूती - वह इन सभी सासारिक मोह बन्धनो से मुक्त हो चुकी है।

चाचा (स्वगत) तो वही हुआ जो होना था। होनहार टलेगी नहीं, होकर ही रहेगी।

सुकेतु कैसी होनहार चाचा ?

चाचा आज वह रहस्य तुम्हे बताना ही होगा बेटा जो तुम्हारे जन्म के समय से तुम्हारे पिता को ज्ञात था।

सुकेतु कैसा रहस्य ?

चाचा तुम्हारी जन्म पत्री बनाते समय तुम्हारे पिता ने कहा था कि यह बालक बड़ा होकर श्रामणी दीक्षा ग्रहण करेगा।

सुकेतु (प्रसन्न) क्या सच चाचा! मै दीक्षा ले

सकूंगा। क्या मेरी मनोकामना पूरी होगी ?
चाचा : पिता का क्रोध और विरोध भी जिसे नहीं टाल सके, जैन धर्म की झूठी निन्दा भी जिससे तुम्हें डिगा नहीं सकी, वह होनहार लगता है अब होकर रहेगी।
सुकेतु : मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूंगा चाचा ! कभी नहीं भूलूंगा।
(चाचा से लिपट जाता है। चाचा उसे स्नेह से सहलाते हैं)

दृश्य-4

मोदक · (हास्य पात्र का प्रवेश) आ हा हा - (हाथ में दोने में से लड्डू खाता हुआ) कितने स्वादिष्ट बनाये हैं ? घृत की गंध से मेरी नासिका फूल रही है। गले से उदर तक घृत की लकीर बन रही है। जिओ जजमान ....जिओ अपने पडोसियों की भी आयु लेकर जिओ और मेरे कर्मकांडी पिता के घर ऐसे ही स्वादिष्ट मिष्ठान्न भेजते रहो, देवता तुम्हारा कल्याण करें। और तुम इस मोदक राम का कल्याण करते रहो।......आ हा हा
सुकेतु : (प्रवेश करते हुए) क्या कर्मकाड चल रहा है मोदकराम ?
मोदक . देवताओं की कृपा से एक ही कर्मकांड है अपना तो - मोदक भोजन। श्रेष्ठी यजमान ने यज्ञ करवाया सो देवताओं का मधुर प्रसाद पा रहा हूं। लो तुम भी खाओ।
सुकेतु (हंसकर) ऐसे बांटोगे तो मोदकराम तो तुम्हारा शरीर क्षीण हो जायेगा, तुम ही खाओ।
मोदक सुकेतु ! मैंने सुना तुम ब्राह्मण धर्म छोडकर जा रहे हो।
सुकेतु मुनिश्री की कृपा होगी तो।
मोदक : तो तुम जैन धर्म ग्रहण करना चाहते हो।
सुकेतु ये ही मेरी बचपन से कामना रही है।
मोदक . पागल तो नहीं हो गये हो। इतना अच्छा आनन्ददायक ब्राह्मण धर्म छोड कर उन घूमंतू श्रमणों से दीक्षा लोगे ?
सुकेतु : हां मोदक।
मोदक : पर वे तो काया को कडा कष्ट देते हैं।
सुकेतु : काया को कष्ट दिये बिना आत्मा का उत्थान नहीं होता।
मोदक · और यहां देखो यजमानों के मोदक खाते खाते अपने उदर का उत्थान अपने आप हो रहा है।
सुकेतु : तुम्हारी आत्मा भी तो उदर में बसती है।
मोदक : तभी तो हमेशा अपने चकाचक छनती है।
सुकेतु देवताओं की कृपा तुम पर सदा ऐसी ही बनी रहे।
मोदक . और तुम पर नहीं। तुम्हारे पिता की यजमानी तो बडे बडे राजाओं तक है तुम्हारे घर में तो दूध दही की घृत और मधु की नदियां बहती हैं।
सुकेतु · मुझे उन नदियों में डूबने की कोई कामना नहीं है। मेरा मन इन हिंसक कर्मकांडों से विरक्त हो गया है।
मोदक · हिंसक ? तुम इन्हें हिंसक कहते हो। क्या तुमने सुना नहीं वदिकी हिंसा हिंसा न भवति.......।
सुकेतु : बहुत सुना है इन पाखंडी वचनो को।
मोदक : ऐसा लगता है तुम ऋषि मुनियों को छोडकर जैन मुनियों के जाल में फंस गये हो।
सुकेतु : जाल में तो अब तक था - झूठे घमंड, भेदभाव और रटी रटाई भाषा के जाल में। मुनिश्री ने तो मुझे पंछी की तरह मुक्त कर दिया है।
मोदक तो यह पंछी अव फुर्र से उडकर उसी डाल पर जाता दिखता है।
सुकेतु हां।
मोदक · तो क्या तुम सोमपान भी छोड दोगे ?
सुकेतु : छोड दिया मैंने।
मोदक . श्रमणों के साथ देश विदेश घूम घूम कर घर घर भिक्षा मांगोगे ?
सुकेतु इसमे नई बात क्या है ? भिक्षाटन तो ब्राह्मण और ब्रह्मचारी दोनो का धर्म है। अगर मुनि श्री ने मुझे

दीक्षा दी तो भी वही कार्य करूगा।

मोदक (खिन्न) सुकेतु ! तुम यहा से चले जाओगे तो मेरा क्या होगा ?

सुकेतु क्यो ? और भी सगी सहचर है, उनके साथ आनन्द से मोदक तोडना, मै जा रहा हू उन्हीं पावन चरणो की शरण मे, जो अपने पवित्र आचरण से पूज्य है, जिनमे जीवन की शाति का निवास है, जिन्हे देवता भी नमन करते है, मोदक !

मोदक पर जाने से पहले अतिम वार ये मोदक तो खालो फिर भिक्षाटन मे कोई डाले या न डाले। (सुकेतु अपने मे खोया मच स चला जाता है) चला गया, ठीक है अपने मित्र के जाने के दु ख मे तू ही इन मोदको को खाले मोदकराम (खाता है)

(वेद मत्रा की ध्वनि उभरती है - उसी पर सुपरइम्पोज होता है, पच नमोकार मत्र का उच्चारण)

दृश्य-5

(सामने चौकी पर मुनिश्री विराजमान है। कुछ स्त्री पुरुष सामने बैठे हुए है। सुकेतु प्रवेश करता है। घुटनो के बल बैठकर नमन करता है और बैठ जाता है)

मुनिश्री धम्मो मगल मविक्टठो, अहिसा सजमो तवो।

देवा वि त णमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो।

उपासकजन धर्म ही सर्वश्रेष्ठ मगल है। अहिसा सयम और तप का ही नाम धर्म है। जिस मनुष्य का मन ऐसे धर्म म लीन रहता हे। उसे देवता भी नमस्कार करते है। यह पद्य आचार्य शय्यमभव सूरि की रचना है। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रथ दस वेकालिक सूत्र मे इसे सवसे पहला स्थान दिया, इसका कारण ? यह है कि आचार्य शय्यमसूरि पहले प्रखर कमकाडी वैदिक ब्राह्मण थ। वाद मे उन्हाने जैन दीक्षा स्वीकार की, उनका अल्पायु पुत्र मनक जव उन्हे खोजता खोजता उनके पास पहुचा तो उनके स्वाध्याय के लिये उन्होंने सारे जैन आगमो के सार रूप दश अध्यायो मे दस वैकालिक सूत्र की रचना की।

एक उपासक प्रखर कमकाडी होकर भी उन्होंने जैन धर्म क्यो स्वीकार किया ?

मुनिश्री उपासक जन। आचरण धर्म मे जिसका रुचि हो जाती है उसका कोरे शास्त्रोक्त कर्मों मे मन नही रमता। जैन धर्म आचार प्रधान है, चित्त शुद्धि प्रधान है। यहा जो कुछ सिद्धि है वह साधना का फल है, केवल जन्म जाति या पद का प्रसाद नही। सूरि जी को ऐसा सद्धर्म भा गया तो उन्होंने दिखावटी कर्मकाड छोड दिया और जिन दीक्षा ले ली।

सुकेतु (उठकर) मुनिश्री।

मुनिश्री वोलो वत्स !

सुकेतु मै भी जिन दीक्षा लेना चाहता हू।

मुनिश्री किस कुल के दीपक हो ?

सुकेतु मै राजपुरोहित वेदपाठी ब्राह्मण सुकर्मा का पुत्र हू।

मुनिश्री क्या नाम है तुम्हारा।

सुकेतु सुकेतु।

मुनिश्री वत्स सुकेतु, क्या आयु है तुम्हारी ?

सुकेतु पन्द्रह वर्ष

मुनिश्री वेदपाठी कुल के आशादीप होकर भी जिन दीक्षा क्यो लेना चाहते हो ?

सुकेतु आप सब कुछ जानते है मुनिश्री - अन्तर्यामी है। मै अपने मुह से क्या कहू।

मुनिश्री अपने पूज्य पिता से अनुमति लेकर आये हो ?

सुकेतु वे कट्टर कर्मकाडी है मुनिश्री - मुझे अनुमति नही देंगे।

मुनिश्री कितने भाई है तुम्हारे ?

सुकेतु मै अपने पिता का इकलौता पुत्र हू।

मुनिश्री तब तो हिसा होगी, दीक्षा नहीं।

सुकेतु हिसा कैसे मुनिश्री ?

मुनिश्री देखो तुम अपने पूज्य पिता की इच्छा के विरुद्ध जिन दीक्षा लोगे तो उनका जी दुखेगा। नही दुखेगा ?

धर्म के अनुसार किसी का जी दुखाना हिंसा है।

सुकेतु : मुझे जैन सिद्धांतों में आस्था है। केवल इसी बात से मेरे पिता मुझ से घृणा करते हैं।

मुनिश्री वत्स उस घृणा को उपेक्षा से नहीं, लगन और विनम्रता से जीतो।

सुकेतु मैने जब जब प्रयत्न किया है तब तब मुझे दंड मिला है। मेरी विनम्रता भी उनके क्रोध को और भडका देती है।

मुनिश्री तुम्हारी निष्ठा प्रशंसा के योग्य है। किन्तु अभी और यत्न करो। संयम और अहिसा की शक्ति से तुम्हारे पिता का क्रोध एक दिन अवश्य शांत होगा।

सुकेतु तब तक क्या मेरी मनोभावना पूरी नहीं होगी ? मुझे दीक्षा नहीं मिलेगी ?

मुनिश्री · निराश न हो वत्स ! दीक्षा तो मात्र एक परिपाटी है, स्वीकृति है, बाहरी मुद्रा है। समय आने पर वह भी तुम्हे अवश्य मिलेगी। तब तक तुम पिता को आश्वस्त करो कि तुम्हारा यह कार्य धर्म विरोधी नही है। अपने सम्यक आचरण से अपने पिता का हृदय परिवर्तन ही तुम्हारी सच्ची दीक्षा होगी।

(अचानक एक ओर से ब्राह्मण सुकर्मा का प्रवेश-उनके पीछे चदन, मंगला भी आते है। सुकर्मा के हाथ में पशुवलि की तलवार है - जिसे वह मुनिश्री के चरणों में पटक कर साप्टाग प्रणाम करता है।)

ब्राह्मण क्षमा ! क्षमा मुनिश्री। मुझे क्षमा करें। मै आपका अपराधी हूं।

मुनिश्री उठो उपासक! जिन प्रभु, तुम्हारा मंगल करे। कौन हो ?

ब्राह्मण . मै सुकेतु का अभागा वाप सुकर्मा हूं। आज आपकी हत्या का कुत्सित विचार लेकर मै यहा आया था। ओ.. .कैसा जघन्य काम करने चला था मैं.. .मुझे दड दीजिये।

मुनिश्री . प्रायश्चित से वडा दंड मनुष्य के लिए और नही हे सुकर्मा।

ब्राह्मण : मैंने आड़ में छिपकर आपकी सब बातें सुनी मुनिश्री ! आत्मग्लानि मुझे खाये जा रही है। मेरा क्रोध विषधर बनकर मुझे ही डस रहा है। मैं अपराधी हूं - मैंने झूठे दम्भ और क्रोध में आकर अपने निर्दोष पुत्र को बहुत सताया है। बेटा सुकेतु! मुझे क्षमा कर दे।

सुकेतु : ऐसा न कहिये पिताजी, आप मेरे पूज्य हैं।

मुनिश्री · (शांत दृढ स्वर) तुम सच्चे हो सुकर्मा - तुम्हारा क्रोध सच्चा था, इसलिए तुम्हारा प्रायश्चित भी सच्चा है। आत्मग्लानि त्याग दो और धर्म के जल से हृदय का कल्मष धो डालो।

ब्राह्मण आप सचमुच महान हैं, मुनिश्री। मैं आज सकुटुम्ब आपके चरणों में समर्पित हूँ। हमें दीक्षा दें मुनिश्री ! (सुकेतु बढकर पिता के समीप जाता है)

सुकेतु : (गद्गद्) पिताजी ! क्या यह सत्य है ?

ब्राह्मण · हां बेटा सुकेतु ! मुनिश्री की करूणा के आगे मेरा क्रोध पराजित हो गया। मुनिश्री यह धर्म की विजय है। सत्य की विजय है। जिन की विजय है। आओ, इस विजय की पावन वेला में हम जिनेन्द्र का श्रद्धा से गुणगान करें - (नेपथ्य से गायनःसभी तन्मय होकर होठ हिलाते हैं)

गीत

प्रेम से कहो सभी, भक्ति से सुनो सभी ।
हृदय से गुनो सभी,
तीर्थंकर महावीर वर्धमान, जय जय
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय ।
जिनका नाम कोटि कोटि मंगलों की खान है ।
जिनका रूप दिव्य सूर्य सा प्रकाश मान है ।
जिनका धर्म सत्य की उपासना का धर्म है ।
जिनका ध्यान ही अखंड मुक्ति का विधान है ।
वीत राग, वीतद्वेष, गुण निधान जय जय ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जय ।

(प्रकाश वृत्त केवल मुनिश्री के मुखमंडल पर ठहर कर धीरे धीरे विलीन ......)

पटाक्षेप।

एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
भारत में देवदासी प्रथा

लक्ष्मी श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

भारत म नारी का स्थान सदा से उच्च रहा है, ओर उस को यह स्थान दिलाने मे भारत की धार्मिक भावनाये प्रमुख भूमिका निभाती रही है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की स्थिति मे अत्यधिक परीवर्तन हुआ है। हिन्दू समाज पर वेश्यावृत्ति का दाग बहुत ही निन्दनीय एव दूषित ममझा जाता रहा है, लेकिन नारी समाज की पतनोन्मुख अवस्था मे वेश्यावृत्ति के अलावा देवदासी प्रथा भी हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है जिस मे विशेषत दक्षिण भारत के दरिद्र तथा पिछडे परिवारो की सुन्दर कन्याओ को देवदासियो मे परिणित कर समाज मे वेश्यावृति से भी अधिक रसातल मे पहुचा दिया।

देवदासी प्रथा का प्रादुर्भाव और विकास

भारत मे जव देवालयो का निर्माण प्रारम्भ हुआ तो उनके वैभव और सौन्दर्य को वढाने के लिए विचार कर इस निष्कर्ष कर पहुँचा गया की आराध्य देव के सम्मुख नृत्य व गान करने के लिए कतिपय सुन्दरीया हो जो अपने आकर्पण व सुन्दर कार्यक्रमो से देव मदिर को गुजायमान किये रखे।

पूजन तथा आरती के समय सुमघुर वाणी मे देवस्तुति होती रहे। जो सुन्दरीया देव मदिर के निमित्त नियुक्त की जाती थी, उन्हे देवदासी कहा जाने लगा।

इस प्रकार की देवदासियो का जातको व वौद्ध साहित्य मे कोई उल्लेख नही मिलता। कौटिल्य के अर्थशास्त्र मे वेश्याओ का वर्णन तो है किन्तु देवदासी का नही।

बनारस से 160 मील दक्षिण मे स्थित रामगढ म प्राप्त अशोककालीन प्राकृत अभिलेख मे देवदीन चित्रकार का सुतनिका के साथ प्रणय का उल्लेख मिलता है जो कि एक देवदासी थी।

कालीदास ने उज्जैन के महाकालेश्वर मदिर मे देवदासियो का वर्णन किया है जो नृत्यगान मे व्यस्त रहती थी।

युवानच्वाग ने अपनी यात्रा के समय मुल्तान के सूर्य मदिर मे नृत्यगान मे व्यस्त अनेक देवदासियाँ देखी थी।

कल्हणरचित "राजतरगिणी" मे काश्मीर मे देवदासी प्रथा के प्रचलन की चर्चा की गई है।अलबरूनी सहित अनेक अरब लेखको ने देवदासियो के बारे मे लिखा है।

चौहान वशीय जोजाल्लदेव अपने राजदरबारियो के साथ देव मदिर के उत्सव मे सम्मिलित होता था जहाँ देवदासियाँ नृत्यगान करती थी। तजौर के राजा ने राजराजेश्वर मदिर मे चार सौ नृत्यागनाए नियुक्त की थी। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय सोमनाथ

के मंदिर में लगभग पांच सौ देवदासियाँ थी।

कर्नाटक में प्राप्त कुछ शिलालेखों में मंदिरों में दो प्रकार के चढावे का वर्णन हैं-अंग भोग और रगभोग। अगभोग के अन्तर्गत देव मूर्तियों को स्नान कराया जाता तथा चन्दन का लेप, धूप दीप व माल्यार्पण होता था। रगभोग के अन्तर्गत देवताओं के सामने नृत्य व गायन के लिए सुन्दर कन्याओं को नियुक्त किया जाता था।

देवदासी प्रथा भारत में ही नही वरन् बेबीलोन, मिश्र व यूनान में भी विद्यमान थी। देवदासी प्रथा भारत के विभिन्न राज्यों मे विभिन्न स्वरूपों में तथा अलग-अलग नामों से प्रचलित है। उदाहरणार्थ केरल में महावी, आसाम मे नटी, महाराष्ट्र में मुराली, आन्ध्र प्रदेश में बोगम, तमिलनाडु मे थिवार तथा कर्नाटक में जोगत देवदासियों के ही विभिन्न रूप है। अधिकांश देवदासियाँ महाराष्ट्र व कर्नाटक मे हैं जो मुख्यत· येल्लमा देवी तथा खांडोबा (शिव) के मंदिरो को समर्पित है।

भारत में देवदासियाँ बनने की परिस्थितियाँ -

दम्पत्ति के लम्बे समय तक संतान नही होने पर वे मनौती के रूप मे अपनी प्रथम संतान (लडकी) को देवालय में चढा देते थे।

दुर्भिक्ष व अकाल के समय गरीब माँ-बाप अपनी लडकियों को मंदिर मे बेच देते थे।

अशुभ नक्षत्र में जन्म लेने वाली कन्या को देवदासी बना दिया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि पांचवीं कन्या घर के लिये अशुभ होती है। अत उसे देवालय में भेंट रूप में चढा दिया जाता था।

देवदासियों की श्रेणियां तथा उनके कार्य -

देवदासी प्रथा विकसित होने के कारण देवदासियों की संख्या में भी वृद्धि होती गई। शनै· शनै. इस प्रथा ने एक संस्था का रूप धारण कर लिया। परिणामत. देवदासियों का विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण आवश्यक हो गया। देवदासियों को मुख्य रूप से चार श्रेणियों में विभक्त किया जाता था। नर्तकी, गायिकी, कामरीकाया (चवर डुलाने वाली) तथा सेवाविलासिनी। नर्तकी मंदिर के विशेष उत्सव में ही भाग लेती थी। ये देवदासी बहुधा देवालय के अधिकारियों को प्रिय होती थी। गायिकी चारों श्रेणियों की दासियों में प्रमुख स्थान रखती थी। धर्म के प्रति जनता को आकर्षित करने तथा देवालय की उपासना को गौरवान्वित करने में उसकी प्रमुख भूमिका थी। उसे प्रातः एवं सायं प्रतिदिन पूजा के समय अपने मधुर संगीत का प्रदर्शन करना पडता था। देवमूर्ति के दांये व बायें चंवर डुलाने का कार्य कामरीकाया करती थी। देवमूर्ति के श्रृंगार व उपासना के उपकरण जुटाने तथा मंदिरों को स्वच्छ रखने का कार्य सेवाविलासिनी नर्तकियां करती थी।

विदेशी यात्री मार्कोपोलो जो तेरहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारत आया था लिखता है कि उपरोक्त कार्यो के अतिरिक्त जब देवालय धर्माधिकारी का स्थान रिक्त होता था तो उसकी नियुक्ति के लिये जो व्यक्ति आता था उसकी सात्विकता का परीक्षण करने का कार्य भी देवदासियों का होता था।

आय के साधन - देवदासी संस्था के गठन के कारणों से स्पष्ट है कि अधिकांशत. गरीब व आर्थिक दृष्टि से पिछडी जातियों की सुदर कन्यायें ही देवदासी बनना स्वीकार करती थी। आजन्म उन्हें अविवाहिता के रूप में देवालयों में अपने कार्य सम्पन्न करते हुये रहना पडता था। अतः देवालयों के संरक्षकों को उनकी उदर पूर्ति के साधन जुटाना आवश्यक हो गया था। मूल रूप से देवदासियों के आजीविका के लिये निम्न साधन अपनाये जाते थे -

1 जागीर मे भूमि देना।
2 वेतन के रूप मे नकद राशि देना।
3 खाने-पीने की व्यवस्था करना, मकान का प्रवन्ध करना तथा भवन निर्माण हेतु भूमि देना।
4 कुछ वस्तुओ को निर्धारित कर उनके नाम करना जैसे चावल व घी वस्त्रादि कर।
5 भेट स्वरूप धन प्रदान करना।

सभ्यता का प्रभाव – प्रारम्भ मे ये देवदासिया पवित्र जीवन व्यतीत करती थी। वे देव सेवा मे समर्पित होती थी किन्तु वाद म अमीर-उमरावो के यहा समारोहो मे सगीत व नृत्य द्वारा मनोरजन के लिये जाने लगी। देवदासियो के सम्पर्क मे रहने के कारण नैतिक तथा सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले पडित व पुजारी चरित्रहीन हो गये।

कालान्तर मे धनी वर्ग के देवालयो मे नृत्य व गायन करने वाली इन देवदासियों को पेशेवर नर्तकियो तथा गायिकाओ मे बदल दिया। आगे चलकर इन धनी पुरुषो ने ही उन्हे वेश्या का व्यवसाय स्वीकार करने के लिये विवश कर दिया। दक्षिण भारत के लोग तो भगवत भक्ति एव रूढिवादी परम्पराओ से इतने ग्रसित है कि वे सहर्ष अपनी सुन्दर कन्याओ को आज भी दवालयो मे चढा कर देवदासियो के रूप मे परिणित करने म अपना गौरव समझते है। परिणामस्वरूप देवदासी प्रथा आज हिन्दू समाज के समक्ष एक महान समस्या वन गई है। समाज को डसने के लिए जो प्रथा आज मुह वाये खडी है उसके समूल उन्मूलन के लिये राज्यो की सरकारो को समय समय पर अनेक कानून बनाने पडे परन्तु राज्य सरकारे आज भी अपने प्रयासो मे असफल सिद्ध हो रही है।

देवदासी प्रथा तथा कानून – सवसे पहले मैसूर के शासको ने इस प्रथा को समाप्त करने के लिये कदम उठाया। 1899 ई मे महाराजाधिराज ने श्रीकान्ता स्वामी मदिर मे देवदासियो के नृत्य बद करने के आदेश जारी किये। 1927 ई मे मैसूर ने एक विशेष कानून द्वारा इस प्रथा को अवेध घोषित कर दिया। 1930 ई मे मधुलक्ष्मी रेड्डी के प्रयासो से मद्रास सरकार ने देवदासी प्रथा को समाप्त करने के कदम उठाये।

1934 ई मे वाम्वे देवदासी प्रोटेक्शन एक्ट पारित हुआ। 1982 ई मे कर्नाटक सरकार ने देवदासी विधेयक के अन्तगत कन्याओ को देवदासी के रूप मे भेट चढाना वर्जित कर दिया। यही नहीं कर्नाटक राज्य के समाज कल्याण वोड द्वारा स्थानीय कार्यकर्त्ताओ को उनका सगठन बनाकर सुधार व पुर्नवास की योजनाये चलाने के लिये प्रोत्साहित किया है। इसका परिणाम यह निकला कि अथानी मे विमोचन, कुडलिगी मे शेलटर, निप्पानी मे सवाली आदि ऐजेसिया पजीकृत की गई है। देवदासियो के सामूहिक विवाह का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। देवदासियो के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गइ है।

निस्सदेह स्वतत्रता प्राप्ति के वाद भारत मे जन जागृति हुई है। समाज सुधारक व सरकार के साथ ही स्त्री समाज भी आज अपने को प्राचीन रूढियो तथा क्लुपित वुराइयो से मुक्त करवाने हेतु प्रयत्नशील है। केवल कानून की सहायता से ही सरकार इस व्याधि से देश को मुक्त नही करा सकती। इसके लिये जनसाधारण का हृदय परिवर्तन कराना आवश्यक है। देवदासी वन जाने को सहर्ष स्वीकृति देने का कारण आर्थिक तो है ही, परन्तु साथ मे उनका प्राचीन रूढियो मे ग्रसित होना तथा अशिक्षा भी है। ऐसी हालत मे केन्द्र व सवधित राज्य सरकारो को कानून की सहायता लेने के साथ-साथ उन पिछडी तथा अशिक्षित कन्याओ की शिक्षा का यथोचित प्रवन्ध करना तथा पिछडे व निम्न वर्ग के लोगो को दारुण दरिद्रता से छुटकारा दिलाने का प्रयास करना चाहिये।

❑

नारी जीवन की उपादेयता और सार्थकता

✍ आचार्य महाप्रज्ञ

स्त्री और पुरुष के द्वैत का अनुभव हजारों हजारों समस्याओं का सृजन करता रहा है। समस्या का समाधान है, उनके अद्वैत की अनुभूति। कोई भी पुरुष सोलह आना पुरुष नहीं है, वह स्त्री भी है। कोई भी स्त्री सोलह आना स्त्री नहीं है, वह पुरुष भी है। इस सिद्धांत को कर्मशास्त्रीय समर्थन भी उपलब्ध है। प्रत्येक पुरुष में पुरुषवेद विपाक में रहता है और स्त्रीवेद सत्ता में और प्रत्येक स्त्री में स्त्रीवेद विपाक में रहता है और पुरुषवेद सत्ता में। जिसमें स्त्रेण गौण होता है वह पुरुष है, और जिसमें पुस्त्व गौण होता है वह स्त्री है। स्त्री और पुरुष में द्वैत नहीं है इसलिए स्त्री के प्रति हीनता और पुरुष के प्रति उच्चता का मनोभाव केवल अहं के द्वारा ही निर्मित हुआ है।

सामाजिक जीवन के प्रारंभिक युग में स्त्री के प्रति कोई हीन भावना नहीं थी। भगवान ऋषभ ने अपनी पुत्रियों (ब्राह्मी और सुंदरी) को लिपि और गणित का ज्ञान कराया था। उनके द्वारा ही मनुष्य समाज में वह ज्ञान प्रवृत्त हुआ।

वैदिक काल में स्त्री के प्रति निम्नता का भाव परिलक्षित नहीं होता। ब्राह्मण काल में पुत्र को धार्मिक महत्व दिया जाने लगा। ऋणमुक्ति और पितरों की शांति के लिए पुत्र की अनिवार्यता स्थापित की गई। फलत पुत्री के प्रति समानता का भाव कम हो गया। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पुरुष को पहले से ही महत्व प्राप्त था। और उसे धार्मिक महत्व प्राप्त होने से पुत्र और पुत्री के बीच संतुलन नहीं रह सका। उत्तर वैदिक काल में वह और अधिक बिगड़ गया। पुत्री का जन्म भार माना जाने लगा। कहा गया है कि कन्या जन्म के समय स्वजनों को दुःख देती है। विवाह के समय अर्थ का हरण करती है। यौवन में बहुत दोष उत्पन्न करती है। इस प्रकार वह दारिका (पुत्री) पिता के हृदय का विदारण करने वाली होती है।

स्त्री की ममता, करुणाशीलता, मातृत्व और समर्पण भावना का मूल्य कम आंका जाने लगा। उसके दुर्बल पक्ष को उभार कर उसमें हीन-भावना जागृत करने का उपक्रम तीव्र होने लगा। फलस्वरूप स्त्री-समाज में हीनता की मनोवृत्ति पनप गयी। पुरुष ही स्त्री को हीन नहीं मानता, स्त्री स्वयं अपने को हीन मानने लग गयी। पति उसके लिए परमेश्वर बन गया और वह पति की दासी बन गयी। परमेश्वर और दासी में इतनी दूरी है कि दोनों एक रथ के पहिए बनकर नहीं चल सकते। पुरुष और स्त्री जीवन-रथ को चलाने वाले दो पहिए हैं। दोनों साथ साथ चलते हैं तभी जीवन रथ गतिमान हो सकता है। पर एक पहिए को इतना रुग्ण बना दिया गया कि उस रथ की गति लडखड़ाने लगी।

श्रमण परम्परा ने स्त्री और पुरुप में भेद की सृष्टि नही की थी। पुत्र को कोई धार्मिक महत्व नही दिया था, ऋणमुक्ति और पितरों की शाति का सिद्धांत उसे

मान्य नहीं था। पर समाज को समर्थ नेतृत्व नहीं दिया जा सका। उसकी विचारधारा को बदलने मे सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इसके विपरीत वैदिक विचारधारा ने समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित कर लिया। श्रमणो की विचारधारा एक क्षीण धारा के रूप मे प्रवाहित रही।

ढाई हजार वर्ष पूर्व श्रमण परम्पराओ को सफल नेतृत्व उपलब्ध हुआ। महावीर, बुद्ध गोशालक, पूरणकाश्यप आदि अनेक प्रभावशाली तीर्थकर, तथागत और आचार्य उस परम्परा मे हुए। उन्होंने अपनी दीर्घ तपस्या और साधना के वल से सत्य का अनुभव किया और उनकी तप पूत वाणी ने समाज के मानस को आदोलित कर दिया। सामाजिक चेतना का नया जागरण होने लगा। स्त्री के प्रति हीनता की मानसिक ग्रथि टूटने लगी। श्रमणो की अन्य धाराए काल के उत्ताप मे सूख गयी। केवल दो धाराए जीवित रहीं, जेन और बौद्ध। इन दोनो धाराओं मे जो प्राचीन साहित्य उपलब्ध है, उसमे स्त्री के जीवन को यथार्थ की खिडकी से देखा गया है। स्वतत्रता जीवन की मौलिक आकाक्षा है। भगवान महावीर ने अहिसा के सदर्भ मे कहा, "कोई किसी की स्वतत्रता का अपहरण न करे। पुरुष स्त्री की स्वतत्रता का अपहरण न करे। ज्ञान का विकास सबके लिए सहजसिद्ध है। उस पर केवल पुरुष का अधिकार नहीं है।" भगवान महावीर ने स्त्रियो को दीक्षित किया, उन्हे धर्मशास्त्रो के अध्ययन की स्वीकृति दी और तत्त्वचर्चा का अवसर दिया। महावीर के धर्म सघ मे साधु चौदह हजार और साध्विया छत्तीस हजार। उन छत्तीस हजार साध्वियो का नेतृत्व आर्या चन्दनबाला कर रही थी। वह चन्दनवाला जो एक दिन प्रताडित थी, बाजार मे बिकी थी, दासी वनकर सेठ धनावह के घर रही थी तथा स्त्रीत्व और दासप्रथा दोनो का अभिशाप भुगत रही थी। दासप्रथा का अभिशाप अभिभूत पुरुष और स्त्री दोनो को अभिशिप्त कर रहा था। स्त्री के अभिशाप से समूचे समाज की स्त्रिया अभिशिप्त थीं। ईश्वरीय सृष्टि को अस्वीकार करने वाले और अपने पुरुपार्थ से श्रेष्ठता-प्राप्ति के सिद्धात का प्रतिपादन करने वाले महावीर और बुद्ध उन अभिशापो पर मुहर नहीं लगा सकते थे। उन्होंने उनका निरसन किया। भगवान महावीर के द्वारा चदनवाला का उद्धार उसका निदर्शन है।

दधिवाहन चपा का शक्तिशाली शासक था। कौशाम्वी के महाराज शतानीक के सेनापति ने चम्पा पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। वसुमति चदनवाला और उसकी माता धारिणी दोनो का अपहरण किया गया। महारानी धारिणी ने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने प्राण विसर्जित कर दिए और चदनबाला को सेनापति ने बेच दिया। सेठ धनावह ने उसे खरीद लिया। पशु की भाति मनुष्य भी बेचा जाता था, इससे हम उस युग के मानस को समझ सकते है। उस मानस मे स्त्री का प्रतिबिम्व और अधिक धुधला है। चदनबाला स्त्री भी थी और दासी भी थी। भगवान महावीर कौशाम्वी मे विहार कर रहे थे। यह वही कौशाम्वी है जिसका अधिपति शतानीक है। उसकी क्रूर दृष्टि से ही एक राजकन्या दासी का जीवन जी रही है। भगवान महावीर ने चदनबाला के हाथ से आहार दान लिया ओर वह दासता के बधन से मुक्त हो गयी। वह अब दासी नहीं रही। दासता के अभिशाप की केचुली उस पर से उतर गयी। पर वह स्त्री तो थी ही। स्त्री होना कोई अभिशाप नहीं है। प्राचीन युग ने स्त्री के प्रति हीन भावना का अभिशाप पुरुष को दे रखा था और वह स्त्री के मन मे भी घर कर गया था। उस अभिशाप को तोडना आवश्यक था। महावीर ने चदनबाला

को दीक्षित कर अभिशाप की जड़ को भी प्रकम्पित कर दिया। उन्होंने प्रस्थापित किया कि स्त्री और पुरुष ये दोनों अवस्थाएं हैं। उनके पीछे जो चैतन्य है वह समान है। उसमें कोई विषमता नहीं है। जैविक दृष्टि से दोनों समान हैं। शारीरिक दृष्टि से कुछ असमानताएं हैं, किन्तु उनके आधार पर हीनता और उच्चता का मनोभाव निर्मित नहीं होना चाहिए। पुरुष का अहंकार ही स्त्री के प्रति हीनता का भाव उत्पन्न कर रहा था। महावीर ने पुरुष की कर्त्तव्य शक्ति पर प्रहार नहीं किया किन्तु उस अहंकार पर गहरी चोट की, जो हीनता और उच्चता की रेखाएं निर्मित कर रहा था। महावीर ने एक दासी के लिए वही सम्मान प्रदर्शित किया जो किसी गुरु के लिए किया जा सकता है। उन्होंने श्रमण से कहा, ''कोई दासी अच्छी बात कहे तो उसे आदर के साथ स्वीकार करो। यह मत सोचो की वह दासी है और यह भी मत सोचो कि वह स्त्री है। स्त्री भी उतनी ही अच्छी बात कह सकती है जितनी पुरुष कह सकता है। जयन्ती ने भगवान महावीर के पास अनेक प्रश्न उपस्थित किए और महावीर ने उनका समाधान किया। राजकुमारी चुन्दी ने भगवान बुद्ध के साथ धर्मचर्चा की। महावीर और बुद्ध ने स्त्री के लिए धर्मचर्चा और तत्त्वचर्चा का द्वार खोल दिया, स्वतंत्रता का पथ प्रशस्त कर दिया। उसे साधना का अधिकार प्राप्त हो गया। पुरुष और स्त्री की समानता का बीज वपन हो गया। उस बीज का पहला विस्फोट चंदनबाला है। उसने कुछ समय पूर्व दो अभिशापों से अभिशिप्त जीवन जीया और कुछ समय बाद उन्मुक्त जीवन जीया जो अभिशाप और वरदान दोनों से ऊपर था।

❑

महाव्रत और विवेक

एक अंधा मार्ग से हटकर आगे बढ़ रहा है। उसके रास्ते में कुंआ है। उसे दिखाई नहीं दे रहा है। यदि ऐसे समय में उसे कुंए की ओर जाते हुए देखकर देखने वाला कुछ न बोले, अन्धे को सावधान न करे तो यह पाप है, बहुत बडा पाप है। और तो क्या, यदि मौन व्रत भी ले रखा हो तो उस समय मौन रहने का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए भगवान महावीर कहते है कि जो भी प्रत्याख्यान लें, जो भी क्रिया करें और जो कुछ बोलें या न बोलें अथवा मौन रहें, उसमे विवेक का होना आवश्यक है। साधना का मार्ग एकान्त निषेधरूप भी नहीं है और एकान्त विधेयरूप भी नहीं है। एक समय के लिए किया गया किसी कार्य का निषेध परिस्थितिवश दूसरे समय उसी रूप में निषेध न रहकर कर्त्तव्य हो जाता है। स्त्री का स्पर्श करने का निषेध, साधु नवजात बच्ची का भी स्पर्श नहीं करता। परन्तु यदि कोई साध्वी भूताविष्ट है, क्षिप्त चित्त है, नदी या तालाब में डूब रही है, तो उस समय उसे बचाने की दिशा में वह पूर्व निषेध अवरोधक नही है। ऐसे समय के लिए स्पष्ट विधान है कि साधु साध्वी को पकडकर उसे पानी मे बाहर निकाल सकता है। इसी प्रकार किसी विशेष प्रसंग पर आवश्यकता पडने पर जानते हुए भी यह कह दे कि मै नही जानता, तो साधु का सत्य महाव्रत भग नहीं होता। उस समय वही सत्य है।

स्वतंत्रता पूर्व की जैन पत्रकारिता का नारी चेतना के विकास मे योगदान

✍ डा सजीव भानावत

जब-जब पृथ्वी पर अत्याचार-अनाचार, शोषण, हिसा, विद्वेष, सघर्ष तथा कुरीतियो का साम्राज्य पनपा है, तब-तब यहा एसी दिव्यात्माओ ने जन्म लिया है, जो पीडित और दलित मानवता की मसीहा बनकर आई, जिनके अन्तस् मे करुणा और प्रेम का सागर बहता रहा और जिन्हाने मानवता की रक्षा करते हुए आदर्श समाज की स्थापना का शाश्वत सदेश दिया। ऐसी ही दिव्यात्माओ म एक है-भगवान महावीर। भारतीय समाज जिस समय वर्ग विशेष के आतक से पीडित हो कराह रहा था, धम के नाम पर निरीह पशुओ का वध किया जा रहा था, व्यक्ति स्वातन्त्र्य का खुल्मखुल्ला अपहरण हो रहा था, श्रद्धा व आस्था का स्थान विश्वासहीनता ने ले लिया था, नारी जाति दासता के बधनो मे कैद थी-ऐसे समय मे महावीर ने अपने अमर सदेशा, कठिन तपस्या, गहन चिन्तन तथा कारुणिक सवेदनशीलता से तत्कालीन समाज की जडता व विपमता का ताडने का स्तुत्य प्रयास किया था।

महावीर के समय नारी जाति की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। पुरुष वग के अत्याचारा से क्रन्दन करती नारी को महावीर ने श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखा। उनके द्वारा स्थापित साध्वी सघ मे गणिकाओ, दासियो और राजघराने की स्त्रियो को भी दीक्षित किया गया। महावीर के साध्वी सघ मे 36000 नारिया, जो विभिन्न जातियो की थीं, सम्मिलित हुईं। महावीर ने नारी और पुरुष की समानता की बात कर उनम एक ही आत्मा क दर्शन किए तथा कहा कि नारी भी अपनी तपस्या और साधना स तीर्थंकर जैसा सर्वोच्च पद तक प्राप्त कर सकती है। निश्चय ही महावीर की इस विचारणा ने तत्कालीन रूढिबद्ध सुषुप्त और चेतनाहीन समाज मे नई जागृति पैदा कर दी। दास-दासी प्रथा का जबरदस्त विरोध करते हुए महावीर ने जिस त्याग, तपस्या और व्रत साधना पर आधारित समाज के आदर्श स्वरूप की कल्पना की, वह निश्चय ही महावीर की क्राति-धर्मिता का महत्वपूर्ण पहलू है।

महावीर के इन प्रयासो का यह परिणाम था कि जैन धम ने स्त्री-जाति को भी पुरुष जाति के समान अधिकार प्रदान किए। न सिफ सामाजिक क्षेत्र मे वरन् धार्मिक, आध्यात्मिक और आर्थिक क्षेत्र मे भी स्त्रियो की इच्छाओ और विचारो को सम्मान मिलने लगा।

धीरे-धीरे समय परिवर्तन के साथ परिस्थितियो मे भी बदलाव आया और समाज अनेक रूढियो और दूषित परम्पराओ के व्यूह मे जकडता चला गया। इसका प्रभाव नारी वग पर भी पडा। पदा-प्रथा, दहेज, बाल-विवाह आदि अनक परम्पराओ ने नारी वर्ग के स्वतत्र विकास को अवरुद्ध कर दिया। नारी वर्ग को शिक्षा के अधिकार से वचित कर दिया गया। विधवा हाने पर पुनर्विवाह की बात तो दूर उसे सती होने के लिए बाध्य किया जाने लगा। वह पुरुष वर्ग की सहचरी न हा

अनुचरी होती चली गई। इसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व ही न रहा। ऐसे समय में नारी वर्ग के उत्थान के लिए अनेक सामाजिक आंदोलन भी प्रारम्भ हुए। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा एनीबीसेन्ट सहित अनेक व्यक्तियों ने अपने विविध संगठनों के माध्यम से सुधारवादी वातावरण तैयार करने का प्रयास किया। इन सुधारवादी कार्यक्रमों को व्यापक और तीव्र बनाने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया गया, हालांकि राजा राममोहन राय के काल में पत्रकारिता अपनी शैशव अवस्था में ही थी। हिन्दी-पत्रकारिता के विकास के प्रयत्न तो सन् 1826 से ही संभव हो सके थे। इसी वर्ष हम हिन्दी पत्रकारिता के विधिवत उदय काल को देखते हैं। राजा राममोहन राय ने अपने बंगाली, अंग्रेजी आदि भाषायी पत्रों के माध्यम से जिस सुधारवादी पत्रकारिता का श्रीगणेश किया उसे भावी पत्रकारिता ने भी अपनाया। पत्रकारिता की इस प्रवृत्ति की झलक जैन धर्म एवं दर्शन के प्रचारार्थ प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं में भी देखने को मिलती है।

जैन पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का मूल उद्देश्य प्राय: नैतिक एवं सामाजिक जागरण का ही रहा। विविध समाजिक रूढियों पर जैन पत्र और पत्रकारों ने कडे प्रहार किए हैं। नारी चेतना के विकास की दृष्टि से जैन पत्र-पत्रिकाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। प्रस्तुत आलेख में मुख्यत भारतीय स्वाधीनता के पूर्व प्रकाशित जैन पत्र-पत्रिकाओं मे नारी चेतना के विकास के लिए किए गए प्रयत्नों को मूल्यांकित करने का प्रयास किया जा रहा है। 26 मई, सन् 1826 को हिन्दी भाषा का पहला पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड' प्रकाशित हुआ। इस प्रथम हिन्दी साप्ताहिक के प्रकाशन के लगभग 54 वर्षो बाद पहला हिन्दी जैन पत्र प्रकाशित हुआ। श्री अगरचन्द नाहटा ने वैंकटलाल ओझा को उद्धृत करते हुए उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर प्रयाग से सन् 1880 में प्रकाशित 'जैन पत्रिका' को प्रथम हिन्दी जैन पत्रिका माना है। इस प्रकार हिन्दी जैन पत्रकारिता का प्रारम्भ हुए एक शताब्दी से अधिक समय हो गया है।

नारी जाति के स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए बाधक रूढ़ियों के खिलाफ जनचेतना जाग्रत करने की दृष्टि से अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं ने अत्यधिक उपयोगी सामग्री का प्रकाशन कर नारी वर्ग के पक्ष में वातावरण तैयार करने का प्रयास किया है। व्यक्ति स्वातन्त्र्य सामाजिक रूढियों के कारण दब गया है। इस बात पर बल देते हुए कलकत्ता से प्रकाशित 'ओसवाल नवयुवक' ने लिखा - ''यह कहने की तो जरूरत ही नही कि अशांति को दूर करने का अर्थ रूढियों को तोडकर व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता का अधिकार दे देना है। हमारा मत है कि व्यक्ति की स्वतंत्रता को हर लेने वाला सामाजिक बंधारण कभी सफल हो ही नहीं सकता। हां, व्यक्ति की स्वतंत्रता पर इतना ही नियंत्रण रहना चाहिए कि स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता न समझ लिया जाए''।

पर्दा हमारे समाज की एक ऐसी प्रथा रही है, जिसने नारी जाति के स्वतंत्र विकास को काफी हद तक रोका है। स्त्रियों के जीवन में यह एक बहुत बडा अभिशाप सिद्ध हुआ है। कलकत्ता से प्रकाशित 'श्री जैन सभा' के बुलेटिन संख्या 8 में पर्दे को ''शिक्षा एवं विकास के मार्ग में बाधक और भारतीय संस्कृति का कलक'' बताते हुए लिखा है कि पर्दे ने नारी जाति को निष्प्राण बना दिया है। शिक्षा के मार्ग को अवरुद्ध कर डाला और उसके जीवन को एक बंदी के जीवन से भी अधिक दयनीय एवं दु:खपूर्ण कर डाला।''

नारी जाति के शारीरिक और मानसिक विकास मे बाधक पर्दे की प्रथा ने उसे पगु कर डाला। इसे 'दासता का उपहार' बताते हुए जयपुर से प्रकाशित 'महावीर संदेश' ने इसकी घोर निन्दा की ''पर्दा पाप है और

भयकर पाप है। वह मनुष्य को पशुता की ओर ले जाने वाली चीज है। स्त्री एक महाशक्ति है और उसके मुह को पर्दे से ढकने की प्रथा चलाने वालो ने उसका घोर अपमान किया है। यह मातृशक्ति का कलक है। वीर नारी के मुह पर पर्दे का भद्दा स्वाग। उफ! कितनी लज्जा और अपवाद की चीज है। यह पर्दे की तह मे कुटिल कायरता और कुत्सित कमजोरी छिपी है, जिसने वीरागनाओ की गौरव गरिमा और स्वाभिमान पर तीक्ष्ण प्रहार किया है''।

पर्दे के स्त्री समाज पर शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक आदि प्रभावो को विश्लेषित करते हुए कलकत्ता के ही 'जैन युवक' ने इसे हानिकारक तथा घृणास्पद प्रथा बताया। प्राचीन काल की शिक्षित नारियो से आधुनिक नारियो की तुलना करते हुए इस पत्र मे त्रिवेणी प्रसाद गुप्त ने लिखा - ''पर्दे ने जमाने को बदलने मे कोई कोर-कसर नही उठा रखी है। कहा वे गार्गी, मैत्रेयी, दुर्गावती और लक्ष्मीबाई और कहा आजकल की अशिक्षित, देशकाल की गति से अनभिज्ञ भीरू महिलाए। आकाश-पाताल का अन्तर है, पर्दे ने स्त्री समाज की शारीरिक और नैतिक उन्नति मे कितना भारी धक्का पहुचाया है, इसका दिग्दर्शन करना आवश्यक है। इसमे सदेह नहीं कि पर्दा ही स्त्री समाज की अवनति के लिए उत्तरदायी है।'' आगरा से प्रारम्भ हुए 'ओसवाल' ने पर्दे को नारी वग के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मानते हुए इसे कूपमडूकता वढाने वाला माना। इस पत्र ने लिखा ''सिवा हिन्दुस्तान के दुनिया के किसी छोर पर अव स्त्रिया पर्दा नही करती। पुराने जमाने मे तो यहा भी पर्दा नही था, यह वात पुराने चित्रो और मूर्तियो से स्पष्ट है।'' स्त्री पुरुष को समान मानते हुए 'ओसवाल' सुधारक ने लिखा ''पर्दे की प्रथा सर्वथा निन्दनीय है - स्त्री पुरुष दोनो एक रथ के दो पहियो के समान है। दोनो का दर्जा आपस मे वराबर है। न स्त्री पुरुष की गुलाम है और न पुरुष स्त्री का। ऐसी हालत मे जव पुरुष वर्ग मे पर्दा प्रचलित नहीं है तव स्त्री वर्ग मे भी नही होना चाहिए। दोनो वर्गों के वस्त्राभूषणो मे समानता हो सकती है, पर पर्दा प्रथा को इस प्रकार की वस्तु नहीं। इसमे सन्देह नही कि जव तक पर्दा प्रथा हमारे समाज मे प्रचलित रहेगी तव तक हमारे समाज की स्त्रियो का स्थान पुरुषो के बराबर कदापि उन्नत नही हो सकेगा''

भारतीय समाज मे विवाह सस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा पवित्र स्थान है। समय के परिवर्तन के साथ यह विवाह सस्था अनेक बुराईयो से ग्रस्त हो गई। जैन पत्रकारिता मे विवाह सस्था मे प्रविष्ट इन बुराइयो के प्रति विरोधी स्वर स्पष्ट देखा जा सकता है। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा विवाह, दहेज आदि जैसे युगीन प्रश्नो पर विचारोत्तेजक लेख तथा सपादकीय इन पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते है तथा इन माध्यमो से नारी जाति के सम्मान और गौरव की रक्षा का आह्वान किया गया।

सन् 1900 मे सूरत से 'जैन मित्र' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस काल मे समाज सुधार की वात करना भी साहस का काम था। 'जैन मित्र' ने इस चुनौती को स्वीकार किया। वृद्ध और बाल विवाह जैसी कुरीतियो के अतिरिक्त इस समय दस्साओ को देवदर्शन से वचित करना, महिलाओ को देवपूजा तथा शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार न देना आदि दूषित परम्पराए जारी थी। इन स्थितियो के विरुद्ध 'जैन-मित्र' ने सघर्ष किया। महिलाओ की स्थिति मे सुधार के लिए इस पत्र ने अभियान छेडा।

तोलाराम डागा ने अपने एक लेख मे तीन प्रमुख कुरीतियो को समाज के लिए घातक माना। ''इस समाज वृक्ष की जड मे तीन प्रकार की दीमक लगी हुई है, जिनका नाम है (1) बाल-विवाह, (2) वृद्ध विवाह, (3) अविद्या।'' बाल विवाह तथा वृद्ध विवाह इन दोनो प्रथाओ ने नारी जीवन को नारकीय

और यंत्रणा युक्त बना दिया। अनेक अबोध कन्याओ को छोटी सी उम्र में ही वैधव्य की पीडा भोगनी पड़ती थी। न सिर्फ स्त्री जाति का पारिवारिक जीवन इससे प्रभावित होता था वरन् सामाजिक जीवन भी इससे दूषित होता था। स्त्रियों के स्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। बम्बई से प्रकाशित 'जैन समाज' ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा - ''हमारे समाज में कुरीतियां, बुरे-बुरे रस्म और रिवाज न मालूम किस तरह घुसे हुए हैं कि अब उनमें जरा सा भी परिवर्तन करना धर्म के नियम को तोडना माना जाता है। वृद्ध विवाह, बाल विवाह विषयक कीट हमारे समाज के जीवन को बुरी तरह नष्ट कर रहे हैं। जितनी हानि इन दो प्रथाओं ने की है तथा कर रही हैं, उसका शताश भी दूसरी सब प्रथाएं मिलकर नहीं करतीं।''

स्वतंत्रता के पूर्व जैन-पत्रिकाओं मे विधवा-विवाह का समर्थन तथा विरोध दोनों ही स्वर मिलते हैं। जयपुर से प्रकाशित 'महावीर संदेश' मे श्री चन्द्रकलाकुमारी ने 'भारतीय नारी एक विचार' शीर्षक लेख में लिखा- ''यह कितने उपहास और आश्चर्य की चीज है कि एक स्त्री का साथ बिछुड जाने पर वह दुनियां में एक तृण के बराबर भी न रहे। वह तुच्छ से तुच्छ और नगण्य से नगण्य समझी जाने लगे। वह संसार की हरेक सुविधा से वंचित कर दी जाए और खाने कपडे के साधारण सुख के लिए भी दूसरो की मोहताज रहे। क्या स्त्री का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं, जो वह अपने पति वियोग के वाद अकिन्चित्कार समझी जाए। घर में तुच्छ से तुच्छ कपडा वह पहनती है। नीरस से नीरस भोजन करती है। भिखारिणी की तरह रहती है और निष्प्राण होकर जीती है-विधवा नारी को अपनी विधुरता के कलंक का स्वतः संशोधन व सुधार करना चाहिए और इसमें यदि निरर्थक लोकोपवाद और तिरस्कार को झेलना पडे तो साहस के साथ झेलना चाहिए।''

उन्नीसवीं शताव्दी के अंतिम दशक में लाहौर से वावू ज्ञानचन्द जी जैनी ने 'जैन पत्रिका' निकालनी शुरू की थी। बाबू ज्ञानचन्द जी बहुत ही साहसी और निर्भीक थे। पं. नाथूराम प्रेमी के अनुसार जैन समाज में सबसे पहले शायद उन्होंने जैन पत्रों मे विधवा विवाह की चर्चा छेड़ी थी।'' 'जैन दर्शन' में सयमशील और साधनापूर्ण जीवन को विशेष महत्व दिया गया है। संयमित जीवन और इन्द्रिय जन्य ब्रह्मचर्यव्रत के पालन पर इस विशेष बल के कारण ही विधवा विवाह को प्रोत्साहन न देकर इसके मूल कारणो, यथा-बाल विवाह, वृद्धविवाह आदि को रोकने की अधिक आवश्यकता प्रतिपादित की।

अनमेल विवाह की प्रवृत्ति पर भी जैन पत्र-पत्रिकाओं ने तीखे प्रहार कर उनका विरोध किया। छोटी-छोटी बालिकाओं की पचास-पचास, साठ-साठ साल के वृद्धों से विवाह करने के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों की कटु आलोचना की गयी। 'एक सुलगता सवाल' शीर्षक से पूर्णचन्द जैन ने नयी क्रांति का आह्वान किया - ''यदि समाज अनमेल विवाह को नहीं रोक सकता, यदि समाज में यह शक्ति नही है कि वह किन्हीं पूंजीपतियों या किन्हीं कथित सुधारवादियों और ढोंगी लोगों के अधर्माचरण और उनके द्वारा किए या कराए गए अन्यायपूर्ण विवाह सबधों का कठोर से कठोर दंड देकर ऐसे कार्यो का होना बन्द कर सके, तो क्यों न एक क्रांति मचाई जाए और उस अपंग समाज को नष्ट करके एक बलवान समाज का पुनर्निर्माण किया जाए ?''

इसी प्रवृति पर 'ओसवाल सुधारक' ने अपने संपादकीय में लिखा - ''जो भारतवर्ष ऋषियों, मुनियों और त्यागियों का घर कहा जाता है, जिसके ज्ञान ध्यान की महिमा विश्वविख्यात है, जिस भारतवर्ष में वालब्रह्मचारी श्री राम पितामय ने जन्म लिया और जिनके अपूर्व बल को आज तक कोई नहीं पा सका, जिस भारत वर्ष में संयम और तपस्या को हमेशा अधिक महत्व दिया गया है, उसी भारतवर्ष की वर्तमान

काया पलट को देखकर वहुत दु ख ओर आश्चर्य होता है। जिस देश मे वडे-वडे राजा-महाराजा तक वृद्धाश्रम म अपन सारे राजपाट ओर धनवभव को छोडकर वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश करते थे, उस देश मे आजकल वृद्ध विवाह हा रहे ह और छोटी-छोटी कन्याओ को उनके वाप दादो की उम्र के कामी पुरुषो के गले मढकर सरासर अन्याय और अत्याचार किया जा रहा हे। इसलिए इस कुप्रथा के प्रति अपनी आवाज बुलन्द करना प्रत्येक सुधारक का कर्त्तव्य है।''

बेजोड विवाह, कन्या विक्रय, एक स्त्री के रहते दूसरा विवाह करने की प्रवृत्ति, दहेज, वेश्या नृत्य आदि सामाजिक कुरीतियो के विरोध मे अनेक प्रम्ताव, लेख, सपादकीय तथा टिप्पणिया प्रकाशित की। 'जेन जगत' ने भी नारी जीवन की विवशताओ, वैधव्य, पदा, विवाह की कुरीतियो आदि का वर्णन कर इनके पीछे निहित धर्मग्रथों के धार्मिक-वैज्ञानिक आधार पर विवेचन कर प्रगतिशील दृष्टि का परिचय दिया।

नारी और पुरुप समाज के दो ऐसे आधार है, जिनके उत्थान औ‍र प्रगति पर ही समाज व राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है। भारतीय समाज का एक युग ऐसा भी था, जब हमारे सामाजिक-शेक्षणिक जीवन मे स्त्रियो का अत्यन्त महत्वूर्ण स्थान था। स्त्रियो के विना अनेक सामाजिक रीति-रिवाज अधूरे समझे जाते थे। स्त्रिया शिक्षा ग्रहण करती थी, शास्त्रार्थ मे भाग लेती थीं तथा पुरुप के साथ कधे से कधा मिलाकर प्रत्येक कार्य सपादन मे सहयोग करती थी।

धीरे-धीरे स्थितिया बदलीं और समाज मे नारी जाति की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई। उसका दायरा घर की चारदीवारी मे ही केन्द्रित हो गया। स्त्रियो की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता था। स्त्री शिक्षा की महत्ता को 'ओसवाल नवयुवक' मे श्रीमती प्रेमकुमारी छाजेड ने इस प्रकार व्यक्त किया- ''विद्या के विना आदमी आदमी नहीं है । इसके विना मनुष्य मे मनुष्यत्व, स्त्री मे स्त्रीत्व नही उत्पन्न हो सकता। मन का, विचारो का तथा मस्तिष्क का विकास नही हो सकता-शिक्षा के विना वे अज्ञान, अकर्मण्यता, असमर्थता के गहरे गर्त मे गिरी हुई रहती है। इससे उनमे रमणी सुलभ गुणो, क्षमता और सेवा की विनम्र भावना, विशुद्ध, पवित्र, स्वर्गीय स्नेह, आत्म-समर्पण की उत्कट लालसा, दया, लज्जा, विनय, सच्चा मातृत्व इत्यादि गुणो का अभाव ही रहता है। उनमे उस अनन्त शाति प्रदायक स्वर्गीय मातृ स्नेह की मन्दाकिनी प्रवाहित नही होती जो एक नारी के विशाल, कोमल, स्वच्छन्द हृदय मे होनी चाहिए।

स्त्री शिक्षा के महत्व का प्रतिपादन करते हुए 'जैन मित्र' ने 'समाज की उन्नति स्त्रियो पर निर्भर है' शीर्षक से सपादकीय लिखा - ''हमारे जैन जाति के मुखिया व परोपकारियो को भी इस स्त्री शिक्षा का पूर्ण ध्यान देना चाहिए। प्यारे भाई व वहनो! जाति अवनति के सागर मे गोता खा रही है। इसलिए इस पर दया करके इसकी रक्षा का दृढ प्रयत्न कर डालिए।''

अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओ मे नारी जाति के उत्थान विपयक काफी लेखादि प्रकाशित होते रहे है। स्त्री के सच्चे आदर्श को 'ओसवाल नवयुवक' मे नाथूलाल कोठारी ने यो व्यक्त किया - ''स्त्री का सच्चा आदर्श-भारतीय आदर्श तो यही है कि सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे वह मनसा, काया, कर्मणा पवित्र रहकर पुरुप को भी मानसिक और कायिक पवित्रता का निर्वाह करने मे योग दे।''

अधिकाश पत्रो ने स्त्री जाति की इस पवित्रता का आदर और सम्मान का आह्वान किया। स्त्रियो के आचरण तथा स्वरूप पर 'जैन महिलादर्श' के साध्वी विशेपाक मे सपादकीय विचार के अतर्गत लिखा गया- ''नारी भले ही साध्वी वेप मे न हो किन्तु उसका साध्वी सुस्वभाव होना चाहिए। जिस स्त्री का साध्वी स्वभाव है, वह सती भी है। सती ओर साध्वी इन दोनो का

निकट संबंध है। सती स्वभाव का अर्थ होता है कि ऐसा स्वभाव, जिसमें कि दया, परोपकार, परदु खकातरता, सेवा, संयम, शील, आत्म-कल्याण की भावना लबालब भरी हो। नारी वीरात्मा है, गृहमंत्री भी है, जननी भी है, संरक्षिका देवी भी है, समाज एवं राष्ट्र की सचालिका भी है और नारी बहुत कुछ है। सहनशीलता, कष्टसहिष्णुता, उदारता एवं आत्मीयता और ममता की मूर्ति है। समय आने पर नारी ने रणक्षेत्र में कुशल, वीरात्मा योद्धा की तरह काम भी किया है और समय आने पर वह अमृतदान भी करती है। नारी का मुख्य धर्म शील है। इसी के संरक्षण में उसके जीवन-मरण का प्रश्न समाया हुआ है। पवित्र नारी अपने प्राणोत्सर्ग तो कर सकती है पर अपने शील धर्म से च्युत नही हो सकती। जीवन का उतना मूल्य नहीं, जितना कि शील धर्म का है। सच्चाई तो यह है कि शील धर्म ही नारी का प्राकृतिक जीवन है। इसी प्राकृतिक जीवन में नारी जीती है और मरती है।

यहां सभी पत्र-पत्रिकाओं के उदाहरण देना संभव नहीं है। इनके अतिरिक्त भी ऐसे अनेक जैन पत्र थे, जिन्होंने नारी जाति के विकास और उत्थान के अभियान में अपना पूरा सहयोग दिया। इनमें जैन हितैषी, जैन ज्ञान प्रकाश, जैन प्रकाश, वीर, सनातन जैन, अनेकान्त, जैन संदेश, जिनवाणी, वीरवाणी, श्वेताम्बर जैन, दिगम्बर जैन आदि कुछ ऐसे प्रमुख पत्र थे, जिन्होंने नारी चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

मई, 1922 में सूरत से 'जैन महिलादर्श' का प्रकाशन श्रीमती पंडिता चंदाबाई, आरा के संपादन में प्रारम्भ हुआ। नारी समाज में नव-चेतना का प्रसार करने की दृष्टि से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् के इस मासिक पत्र ने उपयोगी कार्य किया।

स्त्री शिक्षा, विवाह संस्थाओं की पवित्रता, नारी विकास में बाधक कुरीतियों तथा समान अधिकार मुख्य रूप से ये ही ऐसे प्रमुख पक्ष हैं, जिन पर स्वाधीनता से पूर्व की जैन पत्र-पत्रिकाओं ने प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त नई लेखिकाओं को तैयार करने की दृष्टि से भी जैन पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। महिला लेखिकाओं की रचनाओं को इन पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठो पर प्रमुखता से देखा जा सकता है। 'जैन महिलादर्श' का संपादन तो महिला द्वारा ही होता था। इन लेखिकाओ ने नारी विषयक प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करते हुए उनके विकास की ही बात की।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में भी अनेक ऐसी पत्र-पत्रिकाएं हैं, जो आज भी नारी जाति को कर्मक्षेत्र में अवतरित करने का आह्वान कर रही हैं तथा उन्हें समाज व राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोडे रखना चाहती हैं। स्वतंत्रता के पूर्व की समस्याओं और उद्देश्यों में भी व्यापक बदलाव आया है। इसी बदलाव का प्रभाव जैन पत्रकारिता पर भी पडा है। आज की पत्रिकाओं ने नारी जाति की युगीन समस्याओं को सही परिप्रेक्ष्य में महसूस भी किया है। इन समस्याओं को ये पत्रिकाएं पाठकों के सम्मुख उजागर भी कर रही हैं। इस दृष्टि से जय गुंजार, तीर्थकर, जिनवाणी, श्रमण, अणुव्रत, श्रमणोपासक, समन्वय वाणी, वल्लभ, आत्म रश्मि, सुधर्मा, शाश्वत धर्म, जैन समाज, जैन तीर्थकर, श्रमण भारती, जैन भारती, युवा दृष्टि, जैन जगत, ओसवाल जगत, धर्म ज्योति आदि पत्र-पत्रिकाएं विशेष उल्लेखनीय हैं।

❑

ये आसू

✍ स्व डा नरेन्द्र भानावत

ये जो आसू है,
इन्हे देखकर,
तुम पूछते हो,
क्यो रोते हो,
क्यो दुखी होते हो,
शरीर तो व्याधि-मन्दिर है।
मैं तुम्हे कैसे समझाऊ कि ये आसू दु ख के नही,
मोह-माया और आसक्ति के नही,
ये तो प्रभु-पूजा की तरह पवित्र है।
इनमे न जाने कितने लोगो का प्यार भरा है,
न जाने कितनो का स्नेह झरा है,
आसू केवल दु ख के नही होते,
वे करुणा, वात्सल्य और आत्मीयता के पहरुआ होते हैं।
इनमे कहा है परिवार के प्रति मोह,
कहा है सामाजिक प्रतिष्ठा का छोह
कहा है भय, चिन्ता और देह का विछोह ?
इनमे है वचपन के उन वाल-गोठियो का निश्छल प्यार,
यौवन के उन कर्मठ साथियो की याद,
जिन्होने जीवन-सघर्ष मे विजयी होने की प्रेरणा दी,
जव जव सकट की घडी आई,
उससे उवरने का साथ दिया, विश्वास दिया,
इनमे है उन ऋषि-महात्माओ के आशीर्वाद का
अमृत,
जिसे पीकर मै देह से ऊपर उठ सका,
अपनी चेतना से सलाप कर सका,
आत्माभिमुख हो सका।
वे आसू और होते है,
जो दुख और वेदना की उपज होते हैं।
जिनमे छटपटाहट होती है, व्याकुलता होती है।
देह और ससार के प्रति आसक्ति होती है,
पारिवारिक और व्यावसायिक सवधो का स्वार्थ होता है,
आर्तध्यान होता है,
कषाय को और कसना होता है।
पर ये आसू तो
कृतज्ञता के आसू है,
आत्मिक सवधो की भावुकता के आसू है,
इनसे स्व का विस्तार होता है,
आत्मा का परिष्कार होता है,
मन हल्का और निर्मल होता है,
देह का जल तत्त्व पिघलकर
वहता है, दूसरो के दुख को हरने के लिए,
प्राणिमात्र से मैत्री सवध जोड़ने के लिए,
सच तो यह है कि दोस्त।
ये आसू खार के नही,
प्यार के है।

❑

सौन्दर्य-प्रसाधनों में बढ़ती हुई हिंसा

स्व. डा. श्रीमती शान्ता भानावत

भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित धर्म अहिंसा-प्रधान धर्म है। यहां किसी जीव की हत्या का तो पूर्ण निषेध है ही, पर विचारों द्वारा भी किसी के अहित का चिन्तन भी निषिद्ध है। अहिंसा का जहां इतना सूक्ष्म विवेचन है, वहां आज फैशन और आधुनिकता के नाम पर कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। फर के कोट, टोपियां, चमड़े के जूते, अटेचियां, रेशमी वस्त्र तथा ड्रेसिंग टेबल पर सजे कासमेटिक्स के सामान जैसे शेम्पू, परफ्यूम (सुगन्धित इत्र), आफ्टर शेव लोशन, साबुन, तेल, क्रीम आदि को स्वयं के काम में लेकर अथवा विवाह, शादी आदि मांगलिक अवसर पर इन्हें भेंट देकर हम अपने आपको बडा समझते हैं, स्वयं की सूझबूझ पर बड़ा गौरव अनुभव करते हैं, पर इन चीजों के निर्माण में पंचेन्द्रिय जीवों की कितनी भयंकर हिंसा होती है, यह हमने क्या कभी जानने की कोशिश भी की है ?

कासमेटिक्स की प्रत्येक वस्तु पशुवध का कितना रक्तरंजित इतिहास अपने परिवेश में छिपाये हुए है, यदि इसका पर्दाफाश किया जाये और प्रत्येक मां-बहन को इस करुण कहानी से अवगत कराया जाये तो लगता है अवश्य ही ड्रेसिंग टेबल के निकट जाकर भी वह इन कृत्रिम प्रसाधनों से नश्वर शरीर को सजाने का प्रयत्न नहीं करेंगी और न ही अपने पारिवारिक सदस्यों को रक्तरंजित फर के कोट, टोपी, चमडे के जूते, पट्टे, रेशमी वस्त्र पहनने को बाध्य करेंगी।

यहां हम पशुरक्त से सने सौन्दर्य उपकरणों पर दृष्टि डालेंगे तथा यह समझने का प्रयत्न करेंगे कि इन श्रृंगार प्रसाधनों के निर्माण में किस प्रकार के पशुओं की हत्या होती है और उन्हें मारणान्तिक कष्ट दिया जाता है। फर की टोपी, जो नन्हे मुन्ने की मस्तक-शोभा या कोट जो पारिवारिक जन को ठंड से बचाये हुए है, उनकी करुणकथा सुनिये जरा। यह फर सील, खरगोश, भालू, लोमड़ी, ऊदबिलाव आदि जानवरों की चमड़ी से प्राप्त किया जाता है। सील एक समुद्री प्राणी है। फर उद्योग में इसका बड़ा महत्व है। सबसे मुलायम व मूल्यवान फर सील के नवजात बच्चे का माना जाता है। इस नवजात बच्चे को गोली से या कहीं लाठी मार-मार कर मौत के घाट उतारा जाता है। गोली मारने से तो उसकी चमडी खराब हो जाती है। बेचारे की मृत्यु का पूरा इन्तजार भी नहीं किया जाता, बेहोशी की हालत में ही उसकी चमडी खींच ली जाती है। ऐसे एक नहीं, छः-सात बच्चे जब मारे जाते हैं तब कहीं एक कोट किसी के शरीर की शोभा बनता है। इसी तरह ऊदबिलाव, भालू, खरगोश आदि प्राणियों को भी बेरहमी से पकडा जाता है, मारा जाता है, फिर

उनकी चमडी से फर जैसी घिनौनी वस्तु का निर्माण होता है।

फैशन की दुनिया मे साप और मगरमच्छ के चमडे की वडी कीमत हे। किसी के हाथ की शोभा बढाने वाले पर्स को बनाने के लिए जीते जी सापो की, मगरमच्छो की एक झटके के साथ खाल उतार दी जाती है। उस खौफनाक मौत का नतीजा होता हे किसी के पैर का खूबसूरत जूता या किसी के हाथ का सुन्दर बेग।

सुन्दर मुलायम घुघराले बालो वाली कीमती टोपी के निर्माण के लिये भेड के बच्चो को पैदा होने के 24 या 28 घटो के अदर ही मार दिया जाता है और उसकी मुलायम खाल प्राप्त की जाती है। बढिया जूतो के लिये गर्भिणी मादा पशुओ का वध करके गर्भस्थ बच्चे को निकाल कर उसकी खाल खीच ली जाती है। असली रेशम, जीवित कीडो को पानी मे उवाल कर प्राप्त किया जाता है।

यह भौतिक शरीर, मृत्यु के बाद, जिसमे कीडे पडने लगते है, बदबू आने लगती है, उसी शरीर को जीते जी सुगन्धित तेल-फुलेलो से महकाया जाता है। महक भी हल्की फुल्की नहीं, उसे भी ऐसी महक चाहिए जो बहुत दिनो तक वनी रहे, जल्दी समाप्त न हो। ऐसी महक वाला इत्र कस्तूरी से बनता है। यह कस्तूरी मृग तथा सिवेट नामक जानवर से प्राप्त की जाती है। इसे प्राप्त करने के लिये मृग को गोली से मार दिया जाता है तथा सिवेट नामक जानवर को पिंजरे मे बन्द कर लकडिया झोक-झोक कर उसे खूब तग किया जाता है। कहते है, यह जानवर जितना अधिक चिडचिडा होता है उतनी ही ज्यादा इससे कस्तूरी मिलती है। लकडियो से मार-मारकर खूब तग करने के वाद एक आदमी इसके पैर-मूछ आदि पकडता है, दूसरा कस्तूरी वाली ग्रन्थि, चीरा लगाकर निकाल लेता है। चीरा लगे स्थान पर मोम या मक्खन आदि भर दिया जाता है। यह कस्तूरी निकालने की प्रक्रिया हर दसवे दिन दोहराई जाती है। इस क्रूरता को सहन करते करते बेचारा सिवेट निर्दय मानव के क्रूर हाथो सदा-सदा के लिए अपना शरीर समर्पित कर देता है। फिर उसकी रक्तसनी कस्तूरी से मानव निर्मित करता है परफ्यूम। परफ्यूम की मधुर मादक गध से वह स्वय मदमस्त होता है, दूसरे लोगो पर अपने वडप्पन की छाप डालता है। पर वाह री क्रूर नियति, बेचारे मृग और सिवेट का करुण क्रन्दन और खून।

बाजार मे मिलने वाले इत्र, साबुन, तेल, क्रीम आदि चीजो के निर्माता इनके निर्माण मे पशुओ की चर्बी का प्रयोग करते है। यह चर्वी सबसे ज्यादा ह्वेल मछली से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त इस मछली से एक पकार का तेल भी मिलता है, जिससे टानिक भी बनते है तथा साबुन, क्रीम आदि बनाने के काम मे भी लाया जाता है। ह्वेल मछली सबसे बडी मछली होती है। इसके शरीर पर नुकीले बालो से अनेक वार किये जाते है। खून से लथपथ ह्वेल मछली मानव द्वारा दी गई क्रूर यत्रणाओ का शिकार वन मौत से लडती हुई अपने प्राण त्याग देती है, फिर उसके शरीर की चर्बी से बनते है सुगन्धित इत्र, साबुन, क्रीम, तेल आदि।

सौन्दर्य प्रसाधन मे एक और वस्तु प्रयोग मे लायी जाती है-वह है इस्ट्रोजन। यह द्रव या वस्तु गर्भवती घोडी के मूत्र से बनाई जाती है। सदा यह प्रयत्न किया जाता है कि घोडी गर्भवती रहे। जब वह गर्भ धारण करने योग्य नहीं रहती है तो उसे मार दिया जाता है।

ये कुछ उदाहरण तो सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री के निर्माण के हैं, पर पशुओं पर अत्याचार का यह सिलसिला यहीं समाप्त नहीं होता। बाजार में बिकने वाले शेम्पू, आफ्टर शेव लोशन, यूडीकोलोन आदि के पीछे पशुओं की मार्मिक पीडा की करुण कहानी कम दर्दनाक नहीं है। शैम्पू (सिर धोने का तरल साबुन) जिससे बाल धोकर मानव बालों की चमक पर इतराता है, बाजार में जाने से पहले खरगोश की आंखों में डाला जाता है और यह देखा जाता है कि इस वस्तु से उसकी आंखों में चिरमिराहट या खुजली तो नहीं मचती। जब यह प्रयोग किया जाता है तब खरगोश को ऐसे पिंजरे में बन्द किया जाता है, जिसमें उसका सिर तो बाहर रहता है और शरीर पिंजरे में बन्द किया जाता है। इस प्रकार फिट कर दिया जाता है कि बेचारा खरगोश हिल भी नहीं सकता। शैम्पू की बूंदों से आंख में होने वाली जलन को वह विवश हो सहन करता रहता है। इस प्रकार बार-बार प्रयोग से उसकी आंखों में छाले पड जाते हैं और वह अन्धा हो जाता है। बेचारा भोला, निरीह, कोमल, मूक प्राणी क्रूर मानव के सौन्दर्य प्रसाधन की तैयारी में अपने जीवन को एक दिन यों ही समाप्त कर देता है।

इस तरह भांति-भांति के क्रीम और लोशन भी मार्केट में आने के पूर्व शरीर पर होने वाली उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए जानवरों की नुची हुई खाल पर आजमाये जाते हैं। ये प्रयोग भी अधिकतर खरगोश या चूहे की खाल पर किये जाते हैं। इन पशुओं की बिना रोमों वाली चमड़ी पर पहले टेप चिपका दी जाती है। फिर टेप एकदम खींचकर उतार ली जाती है। इस प्रकार बार-बार खींचने से बेचारे प्राणी की चमडी भी उतर जाती है। अंदर का मांस दिखाई देने लगता है। उस कच्चे मांस पर चिरमराहट वाले लोशन जैसे यूडीकोलीन, आफ्टर शेव लोशन आदि लगाये जाते हैं और 1-2 दिन तक वह मूक प्राणी इस प्रकार पिंजरे में बन्द असह्य वेदना में तड़फड़ाता रहता है। उसकी इस वेदना पर किसी को तरस नहीं, दुःख नहीं।

चिकित्सा के क्षेत्र में तो मानव नई नई औषधियों के निर्माण में, शारीरिक संरचना जानकारी के बारे में पशु-पक्षियों पर अत्याचार करता ही रहा है, पर महज अपना शौक पूरा करने के लिये, अपने कृत्रिम सौन्दर्य को बढ़ाने के लिये, हजारों बेजुबान जानवरों पर जुल्म क्यों ?

मानव के कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों के पीछे मूक प्राणियों के अत्याचार का करुण-क्रन्दन तो हृदय दहलाने वाला है ही, साथ ही इस कार्य पर विश्व के विभिन्न देश कितना खर्चा करते हैं, ये आंकड़े भी चौंका देने वाले हैं। एक सर्वेक्षण से पता चला है कि अकेला अमेरिका का कासमेटिक्स का सालाना खर्चा 5 मिलियन डालर का है। इंगलैण्ड में खाली मेकअप पर 100 मिलियन पौण्ड खर्च होता है। पश्चिम के इन देशों की तुलना में भारत का खर्चा 100 करोड रुपया आंका गया है जो कि अमेरिकी खर्च का 1/5 प्रतिशत है। सरकारी आंकडों के अनुसार हिन्दुस्तान में कुल 1155 कासमेटिक्स उत्पादन के कारखाने हैं, जिनमें से अकेले बम्बई में 155 हैं। जिस देश की जनता को दो जून भर पेट रोटी नहीं मिल पाती है, उस देश में शरीर की बाह्य चमडी की सौन्दर्य-वृद्धि हेतु पानी की तरह द्रव्य बहाना कहां की बुद्धिमत्ता है ? देश में प्रसाधन और विलासिता के फैलाव से अव दूसरी प्रगति रुकने लगी है। वडे उद्योग समूह इस ज्यादा मुनाफा देने वाली सोने की मुर्गी के गुलाम वनते जा रहे हैं तथा

औद्योगिक विकास के नाम पर उद्योगपति ऐयाशी करने व बढ़ाने मे लगे है।

हिसात्मक तरीके से बनाये गये सौन्दर्य प्रसाधन एव इनके ऊपर किये गये खर्च से लगता है कि इस ससार से प्राकृतिक, स्वाभाविक अथवा वास्तविक सुन्दरता का ह्रास होता जा रहा है। आज लोग इस बात को भूलते जा रहे है कि सुन्दरता का निवास मनुष्य के मन मे है, इन बाजार मे मिलने वाले श्रृगार-प्रसाधनो मे नहीं। केवल साज-सज्जा से सुन्दरता प्राप्त करने का प्रयत्न, भ्रान्ति है। इस भ्रान्ति से हम सबको बचना चाहिये। कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनो के निर्माण मे पशुओ की बढती हुई हिसा हमे सचेत करती है कि हम इन रक्तरजित कृत्रिम सौदर्य प्रसाधनो से अपना सौन्दर्य बढाने की होड न करे। सच तो यह है कि कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन बढाने की अपेक्षा सौन्दर्य कम ही करते है। मानवीय सद्गुणो की महक के समक्ष परफ्यूम की महक व्यर्थ है। गुणी व्यक्ति के निकट आने वाले एक नहीं अनेक व्यक्ति उसकी महक से मुग्ध हो जाते है। फिर उसे क्रीम पाउडर से कृत्रिम सुन्दरता बढाकर किसी को आकर्पित करने की आवश्यकता ही नहीं रहती है।

वास्तविक सुन्दरता मानव के शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। स्वस्थ शरीर, निर्विकार मन और मधुर स्वभाव का समन्वय सुन्दरता बनकर मुख पर चमका करता है। यदि हमे सुन्दर बनना है और सुन्दरता को स्थायी रखना है तो हमे प्रसाधन, प्रदर्शन, आडम्बर अथवा कृत्रिम प्रसाधन-श्रृगार सामग्री के स्थान पर अन्तर्मन को सुधारना होगा, उसे शुभ बनाने का प्रयत्न करना होगा। यदि हमारा स्वभाव क्रोधी है, ईर्ष्यालु है हम द्वेप से जलते-भुनते रहते है, लोभ, स्वार्थ अथवा परधन प्राप्ति की विपैली भावना को पालते रहते है, तो दुनिया भर के प्रसाधनो का प्रयोग करके भी हमारा व्यक्तित्व मोहक नहीं बन सकता। व्यक्तित्व का आकर्पण एव प्रभाव दूसरो को दु खित या पीडित करने से नहीं, बल्कि वह बढता है दूसरो के दु ख दूर कर उन्हे प्रसन्न एव सुखी बनाने से। ऐसा समझकर हमे अपने जीवन और व्यवहार मे प्राणी मात्र के प्रति मैत्रीभाव तथा अहिसक दृष्टि का विकास करना चाहिए।

❑

'भगवान महावीर शान्ति, अहिसा, प्रगति व कल्याण के प्रतीक थे। यदि हम सब उनके आदर्शों पर चले तो न केवल हम सबका जीवन ही समृद्ध होगा, बल्कि समाज मे शान्ति व मित्रता का भी प्रार्दुभाव होगा।'

- इन्दिरा गाधी

क्या आप अधिक सुन्दर बनना चाहती हैं ?

श्रीमती निर्मला जैन
अध्यक्ष, इनरव्हील क्लब- जयपुर ईस्ट

आज के आधुनिक जीवन में रूप-रंग व सौन्दर्य को निखारने की बहुत ही व्यावहारिक आवश्यकता है। कोई भी महिला स्वयं को सबसे अधिक सुन्दर दिखने का मन में स्वप्न संजोये रहती है। उसकी लालसा रहती है कि वह इतनी सुन्दर दिखे कि उसके सौन्दर्य की चर्चा दूसरे भी करें, इसी सौन्दर्य-अभिवृद्धि में सहायता करने के लिए आज जगह-जगह ब्यूटी पार्लरस् की सेवायें भी बडे पैमाने पर सुलभ हैं।

अच्छे रूप-रंग की कामना संसार के हर इन्सान के मन में कुलबुलाया करती है-इसी कामना के कारण सौन्दर्य प्रसाधन बनाने वाली कम्पनियों का करोडों रुपये का व्यापार चलता है, हजारों लोगों की रोटी चलती है। इसी अभिलाषा-कामना के बल पर थोडे दिन के बाद वेष-भूषा और श्रृंगार के फैशन एकाएक बदलते रहते हैं।

क्या आपको अपने रूप-रंग से पूरा सन्तोष है ? आपकी कभी इच्छा नहीं होती कि किसी की नीली आँखों जैसी आपकी भी आँखें हों या सुडौल चमकीले दाँत हों, घने घुंघराले बाल हों ?

यदि आप अपने रंग-रूप से थोडा संतुष्ट हैं और उसे ज्यादा निखारने के लिए उत्सुक हैं तो उस बात की अधिक सम्भावना है कि आप प्रयत्न गलत दिशा में कर रहीं हों यानी मुखड़े के बाहर की ओर से। शायद क्रीम, पाउडर, रूज, केशसज्जा पर आपका बहुत सा पैसा भी खर्च हो रहा हो, फिर भी आपको सन्तोष नहीं मिल पा रहा हो। असल में शायद आपके रंग-रूप को संवारने के लिए इन बाह्य साधनों के बजाय आंतरिक सहारे की आवश्यकता है। मेरा मतलब आत्म विश्वास से नहीं है। मेरा मतलब है अच्छे हृदय से, शायद आपका हृदय अपने चेहरे को सहारा नहीं दे रहा है। तमाम क्रीम-पाउडर, वेष-भूषा एवं केश सज्जा के पीछे झांककर वह आपका हुलिया बिगाड़ देता है। चतुरतम सौन्दर्य सज्जाकार और दक्षतम दर्जी भी हृदय को ऐसा करने से नहीं रोक सकते। आपके चेहरे के पीछे जो चीज है, वह अगर असुन्दर है, तो दुनिया को वह दिख ही जायेगी-भले ही आप उसे छिपाने की लाख कोशिश करें।

इसलिए अगर आपको सुन्दर बनना है तो अपने चेहरे के पीछे से अर्थात् अन्तर्मन की गहराई से प्रयत्न आरम्भ कीजिये, प्रतिदिन अपने हृदय की श्रृंगार-सज्जा कीजिये।

सौन्दर्य को निखारने का एक बेजोड़ नुस्खा यहां दिया जा रहा है। अगर आप लगन के साथ उसका उपयोग करें, तो आपके चेहरे में चमत्कारी परिवर्तन आ जायेगा। पर हॉ, नुस्खे में बताया गया लेप आपको स्वयं तैयार करना पड़ेगा। वह किसी फैक्टरी से बना-

बनाया नहीं मिलता, न किसी और से बनवाया जाता है, उसमे पडने वाली सामग्री यद्यपि बाजार मे नहीं मिलती, फिर भी ये बहुत सुलभ है। इसका लेप स्त्री-पुरुष दोनो के लिए समान उपयोगी है।

लीजिये नुस्खा हाजिर है -

- भरपूर मात्रा मे प्यार लीजिये, इसे जितना अधिक ले सके उतना ही अच्छा है। यह मृदुताकारी है, इसके बिना नुस्खा बेकार है।
- मुट्ठी भर सहृदयता मिलाइये, यह चिकनाई देता है। इससे घर्षण भी मिटेगा।
- ढेर सारी प्रसन्नता उडेलिये। यह मनहूसियत दूर करके आनन्द फैलायेगी।
- करुण-रस को मत भूलिये। मगर हा, उसके उपयोग मे विवेक जरूरी है।
- अब विनोद की बडी-सी डली इसमे घोट दीजिये, विनोद जीवन मे वही काम करता है, जो भोजन मे नमक ओर मसाला।
- खूब सारा सब्र मिलाइये। इससे सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।
- दूसरो के प्रति विश्वास की भावना काफी मात्रा मे मिलाइये। इससे महत्वाकाक्षा को बल मिलेगा, प्रयत्न परिपुष्ट होगा।
- पर्याप्त मात्रा मे आशा घोलिये, वह मायूसी को भगायेगी।
- इसके बाद खूब सारा साहस मिलाइये, जो आपको पीला पडने से बचायेगा।
- जितनी भी मुस्कान बटोर सके, बटोरकर इस पर छिडक दीजिये। जैसे आचार, मुरब्बे से बेस्वाद भोजन का फीकापन मिट जाता है, उसी तरह मुस्कान भी बहुत-सी न्यूनताओ को छिपा देती है।

ये सभी चीजे जब आपस मे अच्छी तरह मिलकर बढिया गुलाबी मनमोहक क्रीम सा रूप धारण कर ले, तब प्रतिदिन अपने हृदय पर इसका लेप किया करे। मोटा लेप लग जाये तो कोई हर्ज नहीं। लगा रहने दीजिये। यह भी जज्ब हो जायेगा।

इसके बाद अच्छी तरह मालिश कीजिये और कम से कम एक घण्टा कसरत कीजिये। किसी को स्नेह दीजिये। किसी का कोई हित कीजिये। ज्यादा नही तो जब आपने पूरा वाहन किराये पर लिया है, उसमे सीट खाली है, तब उस राह पैदल जाते किसी को बैठा लीजिये। यह भी सम्भव न हो, तो दो मीठे शब्द ही बोलिए। हसिये, हसाइये। नित्य की जीवन-चर्या मे विनोद के काफी अवसर आते है, उन्हे हाथ से जाने न दीजिये। दूसरो के दोषो को सब्र से सह लीजिये, आखिर हम सब जानते है कि स्वय हम कितने दोषो से भरे है। दूसरो मे आस्था रखिये, सदा शुभ-मगल की आशा व प्रार्थना करिये। जीवन का साहसपूर्वक सामना कीजिये। मुस्कुराइये, दूसरो का बुरा न सोचिये।

इन निर्देशो का निष्ठापूर्वक पालन कीजिये। थोड़े समय मे ही आपको भीतर से अनुभव होगा कि आपका रूप रग निखर रहा है। आपका चेहरा अधिक सुन्दर दिखाई दे रहा है। धीरे-धीरे ये आ रहा परिवर्तन आपके अन्तर्मन की सात्विकता को और अधिक निखारेगा। आप केवल दिखने के लिए ही बाह्य रूप से सुन्दर नहीं दिखेगे, अपितु वास्तव मे सुन्दरतम दिखाई देने लगेगे। आपका मन आत्म सन्तोष के अनमोल सुख से सराबोर हो उठेगा, चेहरा कान्तिमय हो जायेगा और विश्व के सुन्दर प्राणियो मे आपका नाम भी शामिल हो जायेगा। ❑
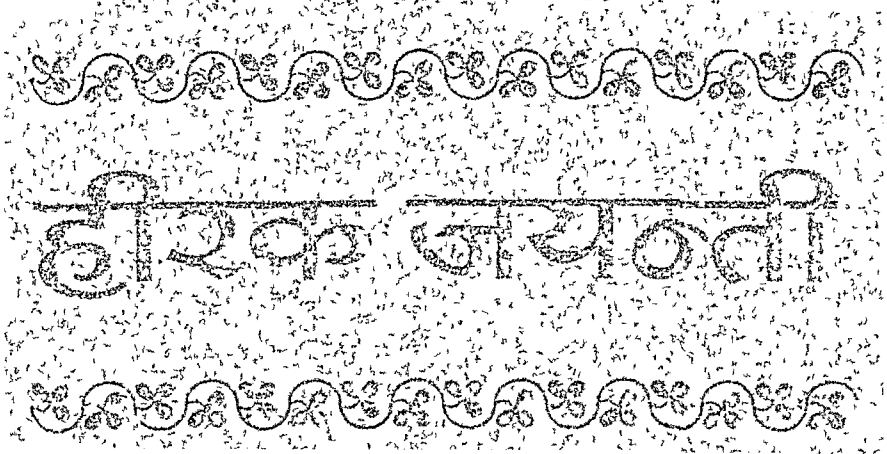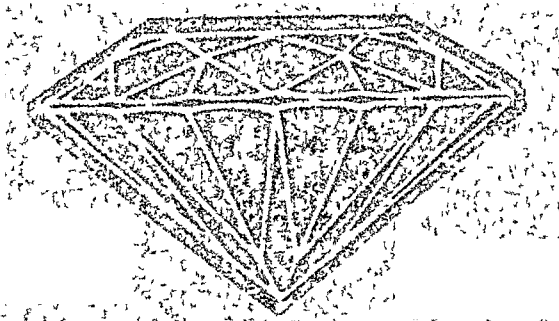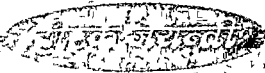
हीरक जयन्ती

हीरक जयन्ती समारोह

विद्यालय स्थापना दिवस पर हीरक जयन्ती वर्ष के शुभारम्भ की घोषणा करते हुए संस्था अध्यक्ष श्री विमलचन्द सुराना.

← प्रवेश द्वार पर मुख्य अतिथि श्री शेखावत का स्वागत-अभिनन्दन करती छात्राएं

→ विशिष्ट अतिथि पर्यटन मंत्री श्रीमती नरेन्द्र कंवर का श्री विमलचन्द सुराना द्वारा अभिनन्दन
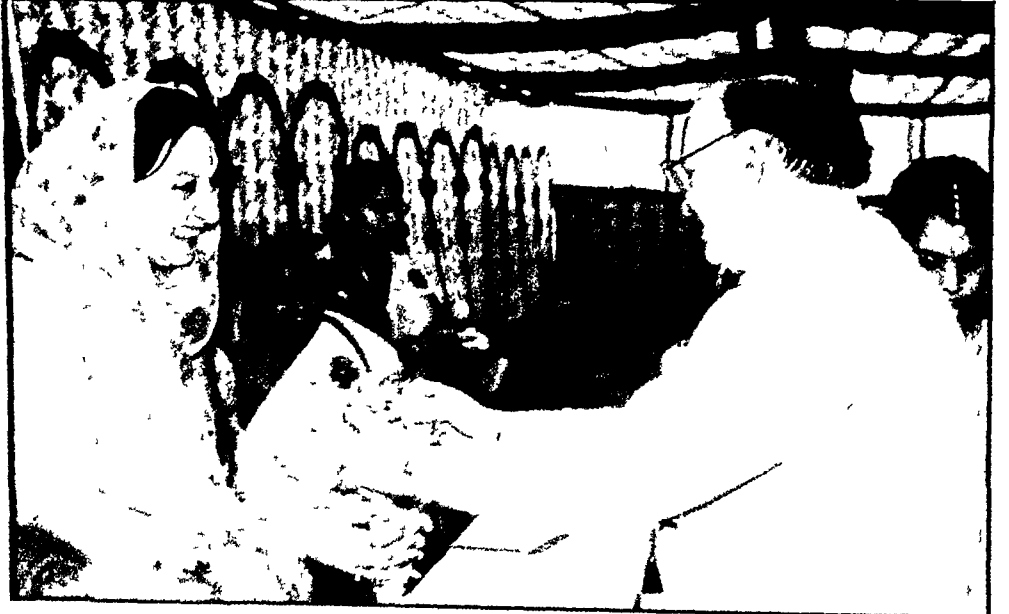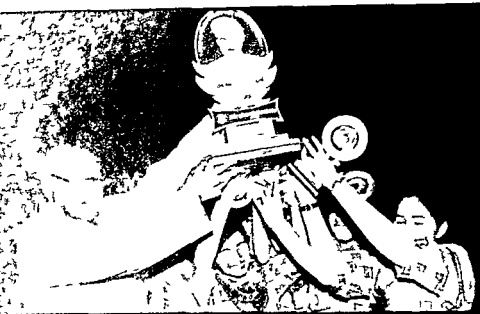
भक्ति सगीत प्रतियोगिता म 'श्री टाक स्मृति चल वैजयन्ती' टेगोर पब्लिक स्कूल को प्रदान करते हुए सासद श्री गिरधारीलाल भार्गव
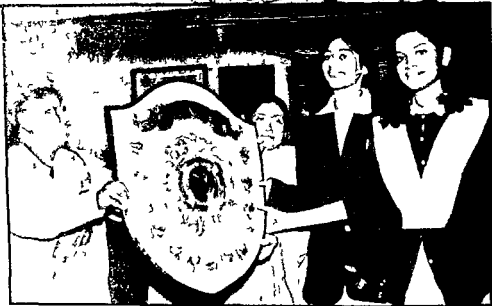
विद्यालय द्वारा प्रदत्त ट्राफी क साथ प्रधानाध्यापिका श्रीमती उर्मिला श्रावास्तव व छात्राए

मुख्य अतिथि श्री अनगकुमार जैन राज्य वित्त मत्री द्वारा छात्राओ का पुरस्कार वितरण

पूर्व छात्रा सम्मेलन मे सम्मिलित 50 वर्ष से अधिक आयु की पूर्व छात्राओ को हीरक जयन्ती स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित

पूर्व छात्रा सम्मेलन

24 फरवरी 96

← मुख्य अतिथि श्रीमती विद्या पाठक, पूर्व जन सम्पर्क मंत्री की अगवानी में हैं - श्रीमती पवन जूनीवाल, मोतीलाल भडकतिया, श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव, छुट्टनलाल बैराठी

→ सात दशक पूर्व की छात्रा श्रीमती नोरतन बाई बोथरा एव श्रीमती रतनदेवी कर्णावट, श्रीमती पवन जूनीवाल के साथ महाविद्यालय की श्रीमती स्नेहलता वैद

प्रस्तुतियां

नाग नृत्य

कत्थक नृत्य

विभिन्न ... प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बाल कलाकार

नारी चेतना रैली

15 नवम्बर, 1995

श्रीमती पुष्पा जैन
एम.ए , एम.एड., एलएल.वी.
व्याख्याता

प्रातः काल की शुभ बेला। चेम्बर ऑफ कामर्स भवन के प्रांगण में छात्राओं का रेला पेला। सामने की तरफ स्टेज पर करीने से सजी मखमल की कुर्सियां और टेबिल पर लगी नामों की चमकती हुई तख्तियां। स्टेज के ठीक सामने की तरफ अपने अपने सदन के झंडे लिये हुए बैठी छात्राएं, जिनके मुख पर हीरक जयंती वर्ष का हर्ष व उल्लास। छात्राओं के हाथों में बीच बीच में झांकते बैनर जिन पर साक्षरता व स्त्री शिक्षा संबंधी संदेश मानो नारी चेतना रैली को प्रोत्साहन दे रहे हों। इतने में ही फूलों से सजे द्वार पर रैली समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री सम्माननीय श्री भैरोंसिंह जी शेखावत, समारोह की विशिष्ट अतिथि राजस्थान की कला एवं संस्कृति मंत्री आदरणीया श्रीमती नरेन्द्र कंवर, समारोह के अध्यक्ष प्रमुख रत्न व्यवमायी श्री रश्मिकान्त दुर्लभजी का भावभीना स्वागत किया गया। उनके स्वागत के लिए विद्यालय की छात्राओं द्वारा बैन्ड की धुन गूंज उठी। मुख्यमत्री के मस्तक पर सजीधजी छात्राओं ने थाली में सजाई रोली व कुंकुम से टीका लगाया। अल्पना व सजावट के वीच बैन्ड की मधुर धुन के साथ साथ अतिथिगण स्टेज की ओर वढने लगे।

कार्यक्रम की संचालिका श्रीमती पुष्पा जैन ने कार्यक्रम की उद्घोषणा आगन्तुक सभी अतिथियों के अभिनन्दन के साथ की। उनके स्वागत में तालियों से हाल गूंज उठा। उधर वीणा के तार झंकृत होने लगे और विद्यालय की छात्राओं के स्वर गुंजायमान हो उठे-सरस्वती वन्दना के रूप में। इसके बाद आगन्तुक अतिथियों का स्वागत व अभिनन्दन हुआ-स्वागत नृत्य के द्वारा, जिसमें फूल बिखरने लगे, मालाएं पहनाई जाने लगी और स्मृति चिन्ह दिये जाने लगे। उसके ठीक कुछ क्षण बाद संस्था के संचालक मंडल के मंत्री श्री हीराचन्द जी वैद ने संस्था का परिचय दिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डा. स्वामी ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री भैरांसिंहजी शेखावत मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार ने कहा कि मेरा प्रत्यक्ष रूप से सस्था से संवंध नहीं रहा, परन्तु संस्था की गतिविधियों से हमेशा परिचित रहा हूं। श्री राजरूप जी टांक ने जो छोटा सा पौधा विद्यालय के रूप में लगाया था, अव वह विशाल वृक्ष के रूप में बढ कर सबको अपनी छाया व सुगन्ध दे रहा है। यहां दादी से पडपोती तक ही नहीं वरन पांच-पांच

पीढिया पढी है। शिक्षा के क्षेत्र मे सुसस्कार डालने के लिये पारिवारिक परिपाटी को सुरक्षित रखा गया है। यह इस सस्था की एक विशेष बात है। मुख्यमत्री जी ने कहा शिक्षा के लिए बच्चे मे इच्छा शक्ति पैदा करनी होगी। छात्राओ को सबोधित करते हुए उन्होने कहा आप अपने परिवार को पहले साक्षर करेंगे, फिर समाज को साक्षर करेगे। यदि शिक्षण सस्थाए मुझे सहयोग देगी तो मै जयपुर और उसके आस-पास के सभी गावो को साक्षर कर दूगा। इस प्रकार अत मे उन्होंने सभी का आभार प्रकट किया। विशिष्ट अतिथि श्री रश्मिकान्त दुर्लभ जी ने भी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। पर्यटन मत्री श्रीमती नरेन्द्र कवर ने इस अवसर पर कहा कि हर महान पुरुष की प्रेरक एक नारी होती है, औरतो के बिना समाज का उद्धार नहीं हो सकता। नारी ही सस्कार डालने वाली होती है।

अन्त मे विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने सस्था की ओर से धन्यवाद दिया। उन्होने कहा मुख्यमत्री जी ने बडे आत्मीय भाव से जो साक्षरता की चुनौती दी, वह हमे स्वीकार है और हम इस कार्य को करके दिखायेगे। इसके बाद प्रधानाचार्या जी ने सभी आगन्तुक अतिथियो का आभार व्यक्त किया। इसके बाद रैली के शुभारम्भ की घोषणा के साथ ही सम्माननीय मुख्यमत्री जी ने एक छात्रा को झडा सौपकर रैली को हरी झण्डी दिखाई। बैड की धुन व नारो की गूज के साथ रैली रवाना हुई। हाथो मे बैनर, झडे व तख्तिया लिये चहकती चमकती उत्साही छात्राए आगे बढने लगी। आकाश मे रग बिरगे गुब्बारे के झुड के झुड उडने लगे। महिला चेतना व साक्षरता सबधी नारो से आकाश गुजायमान हो उठा। बीच बीच मे विभिन्न रूपो को प्रदर्शित करती झाकिया जैसे गाईडिग, साक्षरता व महिलाओ के व्यवसाय सबधी झाकिया व सबसे आगे वन्दना करती हुई छात्राओ की झाकी। सरस्वती वन्दना के मधुर स्वर सम्पूर्ण वातावरण मे गुजायमान हो रहे थे। अत मे विशाल रैली जिसका एक छोर चैम्बर ऑफ कॉमर्स मे व दूसरा छोर त्रिपोलिया गेट पर था, अपनी मथर गति से आगे बढती हुई चौडा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, जौहरी बाजार, सजय बाजार होती हुई अपने गन्तव्य स्थान विद्यालय स्थल पर पहुची। जहा छात्राओ को मिठाई के डिब्बे देकर रैली की सफलता की खुशी व्यक्त की गई। इस प्रकार हर्ष व उल्लास के साथ रैली समाप्त हुई।

❑

भव्य बाल मेला

20 जनवरी, 1996

✍ श्रीमती स्नेहलता बैद

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की ओर से अपने हीरक जयंती वर्ष के अंतर्गत एक विशाल भव्य मेले का आयोजन दिनांक 20 जनवरी, 1996 को किया गया। छात्राओं व उनके परिवार के सदस्यों को मेले में आने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए चेम्बर भवन में इसका आयोजन रखा गया। चेम्बर भवन के महासचिव माननीय के.एल. जैन की स्वीकृति प्राप्त कर इस योजना को साकार रूप देने में सभी प्रयत्नशील कार्यकर्ता जुट गए। संचालक मंडल के निर्देशन व शिक्षिकाओं, छात्राओं एवं संस्था में कार्यरत सभी कर्मचारियों के सहयोग से मेले का पूर्ण प्रारूप तैयार किया गया। मेले के प्रवेशार्थ टिकिट छपवाये गये जिन्हें अभिभावकों द्वारा खरीदा गया। प्रथम बार इस प्रकार की स्वीकृति मिलने के कारण सभी प्रसन्न थे। इस संस्थान में सात दशकों में विद्यालय व महाविद्यालय के परिसर से बाहर यह पहला सफल आयोजन रहा।

प्रात.कालीन बेला से ही मेला परिसर को एवं उसमें लगी स्टालों को सजाया संवारा जाने लगा, सभी अपने कार्यो में व्यस्त थे। दोपहर तक मेला परिसर रंग-बिरंगे बेनरों व सजावटों से चमक उठा। मेला स्थल सभी के लिये आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था और धीरे धीरे उसमें से खाने पीने के विभिन्न व्यंजनों की खुशबू बरबस सभी का ध्यान आकर्षित कर रही थी। हमें भी विश्वास के साथ अपनी सफलता पर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा था। मेले का उद्घाटन श्री भंवर लाल शर्मा स्वायत शासन मंत्री, राजस्थान के कर कमलों द्वारा हुआ। शहर के गणमान्य नागरिक, छात्राओं व उनके परिवारजन, शिक्षिकाएं एवं कर्मचारी सभी उपस्थित थे।

मेले में एक टिकिट घर बनाया गया था ताकि पूर्व में टिकिट न लेने वालों को सुविधा मिल सके। मेले में कई प्रकार की खाद्य सामग्री विभिन्न स्टालों पर बिक्री के लिए रखी गई थी। बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के झूले एवं गेम्स की व्यवस्था थी। खाने के लिए प्रमुख- पताशी, पावभाजी, इडली, डोसा, पकौड़ी, समोसा-कचौरी, दही बड़ा, छोले टिकिया, खमण, भेलपुरी आदि के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के ठंडे पेय पदार्थ एवं कॉफी की विभिन्न दुकानें छात्राओं के माध्यम से लगाई गई थी।

देखते ही देखते मेला देखने वालों की संख्या इतनी बढ़ती गई कि परिसर भी कम लगने लगा। भीड अधिक होने के कारण बार बार प्रवेश पर रोक लगानी पडी। परन्तु मेला देखने आये लोगों के आग्रह के कारण वापस प्रवेश देना पड रहा था। आशातीत

एक अभूतपूर्व आयोजन
पूर्व छात्रा सम्मेलन

(24 फरवरी, 1996)

सरोज अग्रवाल
एम ए , बी एड

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्था का नाम लेते ही वीर बालिकाओ की गौरवमय छवि आँखो के सामने स्पष्ट चित्रित हो जाती है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि 8 बालिकाओ से प्रारम्भ की गई यह छोटी सी पाठशाला भविष्य में वटवृक्ष का रूप धारण कर लेगी। इस सफलता मे सबसे बडा हाथ परम् श्रद्धेय चाचा साहव (श्रीमान् राजरूप जी टाक) का है जिन्होंने अपने अथक प्रयास से महिला शिक्षा को चेतना प्रदान की।

सौभाग्यवश मैंने भी इस शिक्षण सस्था मे कक्षा पद्मम से बी ए तक अध्ययन का लाभ प्राप्त किया है। मुझे यहा के शिक्षण कार्य तथा शैक्षिक गतिविधियो को निकट से देखने का अवसर मिला, जो वहुत रोचक होने के साथ शिक्षाप्रद भी होती है। यहा आवश्यकता पडने पर छात्राओ को आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है ताकि धन के अभाव मे उनकी शिक्षा मे कोई वाधा उपस्थित न हो।

आज यह सस्था अपने 75 वर्ष पूरे करने को है जिसे यह हीरक जयन्ती वर्ष के रूप मे बडे उत्साह और उल्लास के साथ मना रही हे। इसके अन्तर्गत अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है जैसे- साक्षरता रैली, वाल मेला, कवि सम्मेलन, पूर्व छात्रा सम्मेलन आदि। इन सब कार्यक्रमो मे पूर्व छात्रा सम्मेलन भी रोचक व सराहनीय रहा।

हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष मे 24 फरवरी, 1996 को रवीन्द्र मच मे पूर्व छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे मैंने ही नही इस विद्यालय की अनेक पूर्व छात्राओ ने भाग लिया, जो इस समारोह मे सम्मिलित नही हो सकी उन्हे पश्चाताप ही रहा। पूव छात्राओ को पोस्टकार्ड व फोन आदि के माध्यम से आमत्रित किया गया, इसके अतिरिक्त समाचार पत्र मे सार्वजनिक सूचना भी दी गई थी।

समारोह स्थल पर पूर्व छात्राओ की सुविधा हेतु मध्यान्ह 12 00 से 2 00 बजे तक का रखा गया था। अत ठीक मध्यान्ह 12 00 बजे से पूर्व छात्राओ का आगमन प्रारम्भ हुआ। उनके स्वागत के लिए हॉल के द्वार पर एक आकर्षक रगोली सजायी गई, जिसमे रगविरगे फूलो व रगो का प्रयोग किया गया। यह आने वाले सभी आगन्तुको को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। अन्दर प्रवेश करने पर हॉल का मच सुन्दर पर्दो से सजा हुआ था। मच पर 'श्री वीर बालिका शिक्षण सस्था, हीरक जयन्ती वर्ष समारोह' का सुन्दर एव आकर्षक वेनर लगाया गया था। मच के एक ओर 'स्मृति चिन्ह'

रखे गये थे, इसके अलावा आगन्तुक अतिथियों के लिए पुष्पमाला व दीप प्रज्वलित करने की व्यवस्था भी की गई थी। इस सुसज्जित मंच एवं सुव्यवस्था को देखकर पूर्व छात्राओं को अपने विद्यालय के दिन याद आ गए। उद्घोषिका श्रीमती पुष्पा जैन की घोषणा के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम मंगलाचरण के पश्चात् वर्तमान छात्राओं द्वारा अतिथिजनों एवं पूर्व छात्राओं के सम्मान में स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती विद्या पाठक, पूर्व जनसम्पर्क मंत्री, राजस्थान रहीं तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती नवरतन बाई बोथरा ने की।

इस अवसर पर इन्हीं की सहपाठी रतन देवी कर्नावट भी उपस्थित थीं। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने अतिथियों व पूर्व छात्राओं का अभिनन्दन करते हुए गत वर्षो की संस्था की उपलब्धियों एवं प्रगति का वर्णन प्रस्तुत किया जिसमें शैक्षणिक प्रगति, सांस्कृतिक, साहित्यिक उन्नयन, सामाजिक सहयोग, राष्ट्रीय जागरूकता आदि के साथ पूर्व छात्राओं की भी विशिष्ट उपलब्धियों का परिचय दिया गया। साथ ही संस्थापिका साध्वी सुवर्ण श्रीजी म. सा. तथा उनकी शिष्या साध्वी विचक्षण श्रीजी म. सा. ने संस्था की स्थापना से जुडे हुए महानुभावों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा पूर्व प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की, तत्पश्चात मंच पूर्व छात्राओं को सौंप दिया गया।

पूर्व छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जो रोचक होने के साथ-साथ आकर्षक भी था। इसके अन्तर्गत कई कार्यक्रम थे - सर्वप्रथम हास्य नाटिका 'किटी पार्टी' को यहां की पूर्व छात्राओं ने प्रस्तुत किया जिनमें चारु जैन, मनीषा अग्रवाल, निधि अग्रवाल आदि ने भाग लिया। यह नाटिका बड़े घर की महिलाओं की मनःस्थिति और दिनचर्या की सूचक होने के साथ व्यंगात्मक भी थी।

पूर्व छात्राओं के द्वारा एक होली का गीत प्रस्तुत किया गया जिनमें सीमा जैन, पारुल, एकता, शुभाली, कविता आदि ने भाग लिया। इस गीत को सुनते ही हॉल में होली का रंगमय वातावरण व्याप्त हो गया तथा हास्य उल्लास की लहरें चारों ओर फैल गईं।

कुमारी हेमलता श्रीवास्तव ने माउथ आर्गन बजाकर सबको सम्मोहित कर लिया। तत्पश्चात संगीत में विशेष रुचि रखने वाली प्रिया अग्रवाल ने भी एकल गायन के अन्तर्गत एक गजल प्रस्तुत की। इन्हें महारानी कॉलेज में भी संगीत प्रतिभा में कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इसके पश्चात सामूहिक कव्वाली भी प्रस्तुत की गई जिसमें पारुल, एकता, कविता, शुभाली आदि ने हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया।

इसके अतिरिक्त मंच पर दो सामूहिक नृत्य भी प्रस्तुत किये गये। इनमें एक राजस्थानी तथा दूसरा गुजराती गरबा नृत्य था, जिसने दर्शकों को अभिभूत कर दिया। इस अवसर पर सभी पूर्व छात्राएं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रही थीं। उन्होंने अपने अनुभव भी सबके समक्ष रखे।

इस अवसर पर श्रीमती पवन जूनीवाल भी उपस्थित हुई जो जैन महिला समाज में उत्साही कार्यकर्त्ता हैं और इस विद्यालय की पूर्व छात्रा भी हैं। उन्होंने धर्म

के द्वारा आगे वढने व जुडने की प्रेरणा दी। इनके अतिरिक्त विमला जैन, शकुन्तला गोधा जी आदि ने विद्यालय से सम्वद्ध अपने सस्मरण सुनाये तथा अपने कार्यक्षेत्र का परिचय दिया।

इस सम्मेलन मे एक ऐसा कार्यक्रम भी रखा गया जिसमे 50 वर्ष से अधिक आयु की छात्राओ को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। यह शुभ कार्य सस्था के अध्यक्ष श्री विमलचन्द जी सुराणा ने किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती विद्या पाठक ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

पुराने विद्यार्थियो ने अपने अनुभव सुनाये, उन्होंने अपनी विद्वता का परिचय दिया। इस उत्सव मे इन छात्राओ का उपस्थित होना गौरव की बात है। पुराने व नये विद्यार्थियो का मिलन एक स्वस्थ परम्परा हे। इस परम्परा को आगे भी वढाना है। हमारे परिवार सुसस्कृत व सुसभ्य हो। यह तभी सभव है जवकि महिलाए शिक्षित हो। इसके लिए समाज के युवा व वजुर्ग लोगो को वीडा उठाना होगा। क्या आज की शिक्षा वर्तमान कठिनाइयो से जूझने के योग्य वना रही हे ? इस क्षेत्र मे महिलाओ को कार्य करना है।

श्रीमती चम्पा मेहता, उपाध्यक्ष, खरतगच्छ समाज का कार्यकारिणी सदस्या है। ये इस विद्यालय की प्रतिभाशाली छात्रा रहीं है, अन्त मे आपने सवका आभार व्यक्त किया।

सारा कार्यक्रम अनुशासन की समय सीमा मे सानन्द सम्पन्न हुआ।

❑

एक रिपोर्ट
महिला अभिभावक सम्मेलन

(8 अगस्त, 1996)

श्रीमती सुलक्षणा जैन

संस्था के हीरक जयन्ती वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में विशिष्ट कार्यक्रम विद्यालय की छात्राओं के महिला अभिभावकों का सम्मेलन 8 अगस्त को आयोजित किया गया।

सम्मेलन का उद्देश्य माताओं के दृष्टिकोण से छात्राओं की अध्ययन की प्रगति को जानना तथा विद्यालय में करवायी जा रही शैक्षिक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में उनके विचारों को जानना था।

प्रसन्नता अनुभव हुई कि अधिकांश माताओं व महिला संरक्षिकाओं ने अधिकाधिक संख्या में पधारकर अपने विचार व्यक्त कर सम्मेलन को सफल बनाया।

प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने अभिभावकों का विद्यालय प्रांगण में स्वागत करते हुए विद्यालय की शिक्षिकाओं व अभिभावकों के मध्य छात्राओं से सम्बन्धित विचारों के आदान-प्रदान पर बल देते हुए वर्तमान में आती जा रही आचरणहीनता, सभ्यता के मानदण्डों को नकारना, अपने कार्यो द्वारा अशोभनीय व्यक्तित्व का परिचय देना आदि बातों की ओर ध्यान आकर्षित करवाया। साथ ही उन्होंने इस बात पर बल दिया कि संस्था चूंकि जैन सम्प्रदाय के मूल्यों पर आधारित है और जैन साध्वी द्वारा इसकी स्थापना की गई है। अतः छात्राओं को जीवन को सुसंगत तरीके से जीने अर्थात् जीवन जीने की कला पर बल दिया जाता है। व्यावहारिकता को महत्व दिया जाता है क्योंकि जीवन की सार्थकता इसी में है, और इसका दायित्व अध्यापिकाओं व अभिभावकों दोनों का ही है।

तत्पश्चात् अभिभावकों ने जहां विद्यालय में करवाये जा रहे अध्ययन तथा जो प्रवृत्तियां संचालित की जा रही हैं उनके प्रति संतोष व्यक्त किया, वहां गृहकार्य की अधिकता जैसी समस्याओं से विद्यालय परिवार को अवगत कराया।

महिला अभिभावकों ने शिक्षिकाओं से यह अनुरोध किया कि वे शैक्षिक समस्याओं के साथ-साथ छात्राओं की वैयक्तिक समस्याओं का समाधान करने हेतु भी अपना कुछ समय दें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मास के अन्तिम दिन अभिभावकों को विद्यालय में बुलायें, जिससे छात्राओं की गतिविधियों का पता चल सके।

अभिभावकों द्वारा उठाई गई शंकाओं का समाधान करती हुई विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने कहा कि 'छात्र-प्रगति पत्रिका' के शीर्षक "माता पिता तथा संरक्षकों से निवेदन" में उल्लेखित है कि प्रत्येक माह के द्वितीय शनिवार को अभिभावकों के मिलने का समय भी निर्धारित है, अतः आपसे अनुरोध है कि आप डायरी में दिये गये बिन्दुओं का पुनः अवलोकन करें, जिससे आपकी समस्याओं का समाधान हो सके।

शिक्षिकाओ ने भी छात्राओ की सामान्य कठिनाइयो की ओर ध्यान आकृष्ट किया यथा -

1 घर पर छात्राओ को उचित शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जाये।

2 गृह कार्य के साथ-साथ विषय-वस्तु को समझने पर बल दिया जाये।

3 घर पर छात्राओ को अध्ययन करने का अधिक से अधिक समय दिया जाये।

इन्हीं बातो पर चर्चा करते हुए महिला अभिभावक सम्मेलन एक सुखद अनुभूति के साथ समाप्त हुआ।

सम्मेलन के अन्त मे श्रीमती सुलक्षणा जेन ने सभी आगन्तुको महिला अभिभावको के प्रति अधिक सख्या मे आने तथा अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

❑

समय बडा भयकर है और इधर प्रति क्षण जीर्ण-शीर्ण होता हुआ शरीर है। अत साधक को सदा अप्रमत्त होकर भारड पक्षी (सतत सतर्क रहने वाला एक पौराणिक पक्षी) की तरह विचरण करना चाहिए।

- उत्तराध्ययन

●

मेधावी साधक को आत्मज्ञान के द्वारा यह निश्चय करना चाहिये कि, 'मैने पूर्व जीवन मे प्रमादवश जो कुछ भूले की है, वह अब कभी नही करूगा'।

- आचाराग

●

दूसरो की गुप्त बातो को जानने का प्रयत्न नही करना चाहिए।

●

भूख लगे वही भोजन का समय है।

●

बहुत सीधा न होना चाहिए। वन मे जाकर देखो, वहा सीधे वृक्ष ही काटे जाते है, टेढ़े वृक्ष खडे अर्थात् सुरक्षित रहते है।

- चाणक्य

●

जो प्राप्त धन से ही सतुष्ट हो जाता है, उसे लक्ष्मी छोड देती है।

भक्ति संगीत प्रतियोगिता

(14 अगस्त, 1996)

श्रीमती पुष्पा जैन

गुलाबी नगर जयपुर के प्राचीनतम विद्यालय श्री वीर बालिका सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय ने शैक्षिक, सहशैक्षिक, सांस्कृतिक तथा अन्य पाठ्येतर प्रवृत्तियां यथा समाज सेवा का जहां उन्नत और अद्वितीय स्वरूप प्रदान किया है, वहीं आदर्श मूल्यों को स्थापित करने वाली कुछ स्वस्थ परम्पराओं का प्रणयन कर अपनी गुण ग्राहकता और मूल्यों के संरक्षण का परिचय दिया है।

इसी क्रम में श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के आद्य संस्थापक स्व. श्रद्धेय श्री राजरूप जी टांक की स्मृति में उनके पावन जन्म दिवस के अवसर पर हरियाली अमावस को भक्ति संगीत प्रतियोगिता प्रति वर्ष लगभग छ. वर्षो से आयोजित की जाती रही है।

समाज रत्न श्री राजरूप जी टांक शिक्षा प्रेमी, कर्मठ समाज सेवी, उदात्त जीवन मूल्यों के शिल्पी, मानवता के मूक सेवक, त्याग एवं सहयोग के अनूठे उदाहरण है। इसी महान विभूति के जन्म दिवस के अवसर पर श्री वीर वालिका विद्यालय जिला स्तर पर भक्ति संगीत प्रतियोगिता आयोजित करता आ रहा है। इस वर्प हीरक जयन्ती के अवसर पर यह प्रतियोगिता रवीन्द्र मंच पर श्री सिद्धराज जी ढड्ढा व सांसद श्री गिरधारी लाल जी भार्गव के सान्निध्य में जिसमे सोलह विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के दलों ने भाग लिया। इस अवसर पर सांसद श्री गिरधारी लाल जी भार्गव ने भक्ति संगीत के कार्यक्रम की सराहना की और कहा, "आज केवल लोग फिल्मी संस्कृति की ओर भाग रहे हैं, ऐसा भक्ति संगीत कहां सुनने को मिलता है।"

प्रसिद्ध सर्वोदयी विचारक, चिंतक, संस्था के पूर्व अध्यक्ष श्री राजरूपजी टांक के अभिन्न श्री सिद्धराज जी ढड्ढा जो कि मुख्य अतिथि के रूप में पधारे, उन्होंने कहा कि आज के मीडिया के सशक्त साधनों के बीच जो कि हमारी सभ्यता और संस्कृति को निरन्तर ग्रसते जा रहे हैं तथा भौतिकवादी संस्कृति को आरोपित किये जा रहे हैं, ऐसे अवसर पर मानव मन में तुष्टि का भाव भर देने वाली भक्ति संगीत प्रतियोगिता का आयोजन कर आपने निश्चित ही सराहनीय कार्य किया है।

इस समय संस्कृति का संक्रमण काल है, ऐसे में भक्ति संगीत कार्यक्रम होना ही चाहिए जिससे युवा वर्ग को कुछ प्रेरणा मिल सके। इस प्रकार इस नीरसता के जीवन में रस वर्षा करने वाली मानव की हताशा, निष्क्रियता और निष्प्राणता में जीवन चेतना का सचार करने वाली इस भक्ति रस की प्रतियोगिता को सभी लोगों द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

इस समारोह में विद्यालय स्तर पर श्री वीर वालिका सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रथम व टैगोर पब्लिक स्कूल द्वितीय रहा। वीर वालिका विद्यालय के मेजबान होने के कारण चल वैजन्ती टैगोर पब्लिक स्कूल को दी गई। ❑

एक रिपोर्ट
कवि सम्मेलन

(2 अक्टूबर, 1996)

श्रीमती अर्चना जैमन

आज के भौतिकवादी एव प्रतिस्पर्द्धा के युग मे मानव जहा अपनी सवेदनाओ, भावनाओ और जीवन की कोमलता को खोता जा रहा है वहा श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान द्वारा हीरक जयती वर्ष के विभिन्न कार्यक्रमो की श्रृखला मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की जयती 2 अक्टूबर 96 पर आयोजित कवि सम्मेलन एक सराहनीय प्रयास रहा।

छात्राओ के सर्वागीण विकास की पृष्ठभूमि मे उनके साहित्यिक कलात्मक अभिरुचि को विकसित करना सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा। जिसमे उद्देश्य के अनुरूप मरू भूमि के ख्यातनाम कवियो ने कविता की रसवर्षा कर श्रोताओ को अभिभूत कर दिया।

सम्मेलन की मुख्य अध्यक्षा के रूप मे कॉलेज शिक्षा की सयुक्त निदेशिका श्रीमती रेखा शर्मा तथा मुख्य अतिथि के रूप मे मुख्यमत्री के प्रेस सलाहकार श्रीमान के एल कोचर साहब पधारे।

सम्मेलन मे वृद्ध युवा पीढी दोनो ही प्रकार के कवियो का सगम रहा। जिसका सचालन श्री चन्द्रकुमार 'सुकुमार' ने अपनी चिर-परिचित शैली मे किया। उन्हीं के आग्रह पर प्रथम कवि हिण्डौन से आए उमेश अपराधी ने गाधी जयन्ती के अवसर पर गाधी के सपनो के प्रति आशा जगाई 'हम लोगो का रामराज कब आएगा' कविता के माध्यम से।

अलवर से पधारी प्रीता आर्य और अजमेर से आए श्री सुरेन्द्र चतुर्वेदी ने समसामयिक परिस्थितियो को उठाते हुए तथा श्रोताओ मे छात्राओ की अधिक सख्या देखते हुए बडे ओज से अपनी कविताए पढी - यथा

'मत चिरागों को हवा दो, यह वह हवन है, जिसमे उगलिया जल जाएगी मानता हू, पानी मे आग लगा सकते है मगर मगरमच्छो के साथ मछलिया जल जाएगी।

साम्प्रदायिकता पर प्रहार

'उसके बस्ते मे रखी मजहब की किताब, वह बोला
अब्बा कापिया जल जाएगी।
आग बाबर की लगाओ राम की, आयते और
चौपाइया जल जाएगी।

प्रसिद्ध कवि श्री तारा प्रकाश जोशी ने लडकियो की मौन मूक व्यथा को सूरज और धूप मे 'अनबन' कविता से प्रस्तुत किया।

अंतिम पंक्तियां इस प्रकार थीं-

धूप अगर परित्यक्ता होगी
सूरज का अंतिम कल होगा
रंग न होंगे, शब्द न होंगे
सब कुछ काजल - काजल होगा
नभ को नींद नहीं आएगी
फिर होगा शायद परिवर्तन
सूरज और धूप में अनबन

राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि कल्याण सिंह राजावत ने अपनी राजस्थानी कविता -

'मालण फूल फूल रो मोल'

श्री हरिराम आचार्य ने -

'हम आकाश कुसुम के पीछे अपना उपवन भूल गये'

कविता के माध्यम से युवा पीढ़ी को हवाई किले न बनाने तथा यथार्थ पर विचार करने को प्रेरित किया। वयोवृद्ध कवि श्री रामनाथ कमलाकर के अतिरिक्त दौसा से आई इन्दु जैन, अजय अनुरागी, कोटा से पूर्णिमा शर्मा, तारादत्त निर्विरोध, संचालक श्री सुकुमार, शांता बाली, विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती सुधा शुक्ला ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से आनन्द रस से सिंचित किया।

सम्मेलन के अंत में अध्यक्षा के रूप में पधारी श्रीमती रेखा शर्मा ने भी कविता सुना अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया

पश्चात सभी कविगणों को भेंट व स्मृति चिन्ह दिये गये। धन्यवाद ज्ञापित करते हुए विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने वर्तमान में आणविक युग में सत्साहित्य का महत्व बताया। तथा मूल्यों और संस्कारों को बचाने का शिक्षण संस्थाओं का ही दायित्व है, इसका बोध करवाया।

साथ ही छात्राओं व अन्य श्रोताओं को आज के कविता पाठ से जिस आनन्द की प्राप्ति हुई उसके लिए सभी कवियों का आभार प्रकट किया।

❑

एक शाम
सास्कृतिक कार्यक्रम के नाम

(9 मार्च, 1997)

श्रीमती स्वर्ण भार्गव
व्याख्याता

श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान के हीरक जयन्ती वर्ष के कार्यक्रमो मे 9 मार्च 97 को रवीन्द्र मच पर एक सास्कृतिक सध्या आयोजित की गई । इस समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे वित्त राज्य मत्री श्रीमान अनग कुमार जेन उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य सचिव माननीय श्री मिट्ठालाल मेहता ने की। विद्यालय की वैड की छात्राओ ने स्वागत धुन बजा कर पारम्परिक वेशभूषा मे सजी छात्राओ ने टीका लगा कर एवम् माला पहना कर अतिथियो का स्वागत किया।

णमोकार मत्र के उच्चारण के साथ साथ मच का पर्दा उठाया गया तथा कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वदना से हुई। गणेश जी की पूजा अर्चना करते हुये तथा चवर डुराते जो दृश्य प्रस्तुत हुआ वह किसी मनोहर झाकी से कम नहीं था। 'गणपति गज वदन ज्ञान, सागर सुख दाता' की स्तुति को सुश्री सुनीता श्रीमाली एव छात्राओ ने स्वर देते हुये निर्विघ्न कार्य सम्पन्न होने की प्रार्थना की।

अतिथियो एवम् अभिभावको को सस्था का परिचय विद्यालय की कर्मठ प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव दीदी ने दिया, जिन के अथक प्रयासो से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

महाविद्यालय की छात्राओ ने 'मगल गावा हरप मनावा' स्वागत गीत गाकर समस्त अतिथियो का न केवल स्वागत किया वरन गीत के माध्यम से उन सब महानुभावो के लिये आभार भी प्रदर्शित किया जो इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे।

प्राथमिक विभाग की लगभग पच्चीस बालिकाओ ने 'हम नन्हे मुन्ने हो चाहे, पर नही किसी से कम' बाल गीत प्रस्तुत किया। बच्चो का यह सदेश कि किसी भी विपदा मे 'भयभीत नहीं होगे' आत्म विश्वास का परिचायक है। इस मधुर गीत की रचना प्राथमिक विभाग की शिक्षिका श्रीमती सविता भार्गव ने की। प्राथमिक विभाग के ही छात्र-छात्राये विभिन्न जानवरो के मुखौटे पहन कर 'चूहे की बारात' नाटक के बाराती बने। चूहे की शादी का आयोजन सफल कराने मे इन जानवरो को बहुत मेहनत करनी पडी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव ओर श्रीमती सुधा जैन का प्रयास अत्यन्त प्रशसनीय रहा।

किसी भी सास्कृतिक कार्यक्रम की सफलता शास्त्रीय प्रस्तुति के बिना अधूरी रहती है। शास्त्रीय

नृत्य की श्रृंखला में श्रीमती आशा शर्मा व श्रीमान राजेन्द्र डांगी के निर्देशन में कत्थक नृत्य का समावेश किया गया। उच्च माध्यमिक विभाग की तीन छात्राओं ने शुद्ध कत्थक में आमद, टुकडे, तोड़े परन तथा ततकार आदि प्रस्तुत किये।

पर्यावरण प्रदूषण आधुनिक युग की सब से गंभीर समस्या है। नाटक 'बहरी बिरादरी' के माध्यम से समाज में फैले और बढते ध्वनि प्रदूषण के बारे में सचेत किया। कक्षा नौ और ग्यारह की छात्राओं ने श्रीमती वीणा कानूनगो के कुशल निर्देशन में इस नाटक को अभिनीत किया।

इस सांस्कृतिक संध्या में नृत्यों की खूब धूम रही। उच्च माध्यमिक विभाग की छात्राओं ने भी एक नृत्य प्रस्तुत किया। मोर को छम-छम नाचते देख तथा पपीहे को पियु-पियु की पुकार सुन गांव की वो नारियां भावुक हो उठती हैं जिन के पति रोजी रोटी के तलाश में विदेश गये हुये हैं। कुछ ऐसा ही भाव प्रस्तुत किया गया नृत्य 'प्रतीक्षा' में जिस का निर्देशन श्री गांगुली जी तथा श्रीमती स्वर्ण भार्गव ने किया।

फागुन का महीना अबीर गुलाल के साथ साथ चंग की याद दिलाता है। वातावरण के अनुरूप महाविद्यालय की छात्राओं ने होली नृत्य चंग बाजे गौरी धण लुण जाए प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की व्याख्याता श्रीमती कमलेश तिवाडी का विशेष योगदान रहा।

महाविद्यालय की प्राचार्या डा. भगवती स्वामी ने सभी आगुन्तकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने विशेष रूप से उन सभी साथियों के कार्य की प्रशंसा की जिन के प्रयासों से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस हीरक जयन्ती सांस्कृतिक संध्या का संचालन श्रीमती पुष्पा जैन ने किया। संस्था के लिये यह गौरव की बात है कि निम्न शिक्षिकाओं व कर्मचारियों ने स्वर्ण जयंती व हीरक जयंती दोनों में उत्साहपूर्वक भाग लिया - श्रीमती सुलक्षणा जैन, श्रीमती स्वदेश नांगिया, श्रीमती रतना स्वरूप, श्रीमती पुष्पा जैन, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, श्रीमती मालती जैन, सुश्री आशा अबरोल एवं श्री नेमीचन्द जी जैन व श्री रामजीलाल शर्मा।

❑

हीरक जयन्ती समारोह समिति

1	श्री विमलचन्द सुराणा	सरक्षक
2	श्री हीराचन्द वैद	सयोजक
3	श्री प्रेमचन्द धाधिया	सह-सयोजक
4	श्री दुलीचन्द टाक	सह-सयोजक
5	श्री गिरधारी लाल जी टाक	कोषाध्यक्ष
6	श्री मोतीलाल भड़कतिया	सदस्य
7	श्रीमती आशा गोलेछा	सदस्य
9	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव	सदस्य
10	श्रीमती पुण्यवती जैन	सदस्य
11	श्रीमती स्नेहलता वैद	सदस्य
12	श्रीमती सुलक्षणा जैन	सदस्य
13	सुश्री सरोज कोचर	सदस्य
14	डॉ. आशा हीगड़	सदस्य
15	डॉ सी एस बरला	सदस्य
16	डॉ सजीव भानावत	सदस्य
17	श्री तिलकराज जैन	सदस्य
18	डॉ (श्रीमती) भगवती स्वामी	सदस्य
19	श्रीमती विमला शर्मा	सदस्य

विषय

छात्रा परिषद्

उच्च शिक्षा मंत्री श्री ललित किशोर चतुर्वेदी छात्रा परिषद के पदाधिकारियों को शपथ दिलाते हुए

लोक नृत्य

छात्राओं द्वारा प्रस्तुतियां

सामूहिक गान
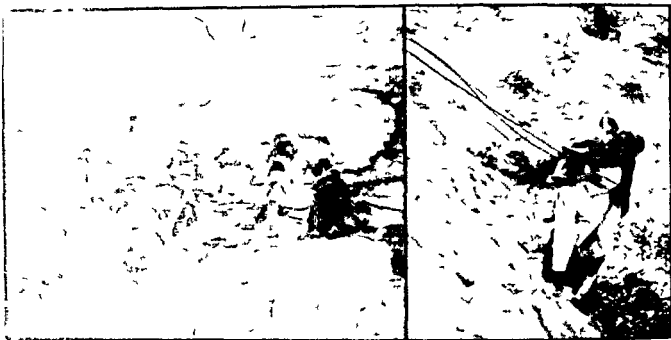
खुली पहाड़िया पर महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा माउन्टरिग व आपातकालीन बचाव प्रशिक्षण

पर्वतारोहण प्रशिक्षण

ऊचाइया को छूती छात्राए

'रोप वे' व 'रेपलिग' तकनीक का महाविद्यालय म प्रशिक्षण

उद्घाटन पर श्री उमरावमल चोरडिया द्वारा उद्बोधन : मंच पर उच्च शिक्षा मंत्री ललित किशोर चतुर्वेदी के साथ पदाधिकारी व शैक्षिक अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना
इकाई-प्रथम व द्वितीय

← प्रशिक्षण शिविर में संचालिका सुश्री सरोज कोचर व शिविरार्थी

स्वास्थ्य प्रशिक्षण →

महाविद्यालय परिवार द्वारा भावभीनी विदाई डॉ सरोज वर्मा विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

पूर्व प्राचार्या स्व डॉ शांता भानावत के चित्र का अनावरण करते हुए कुलपति प्रो आर. एन. सिंह

'महिला उद्यमिता पर विमोचित स्मारिका की प्रति डॉ स्वामी द्वारा संयुक्त राष्ट्र प्रतिनिधियों को भेंट

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय सेवा योजना पुरस्कार के साथ कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर व प्राचार्या डॉ. भगवती स्वामी

उच्च शिक्षा मंत्री श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी का श्रीफल व पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत करती प्राचार्या डॉ. भगवती स्वामी
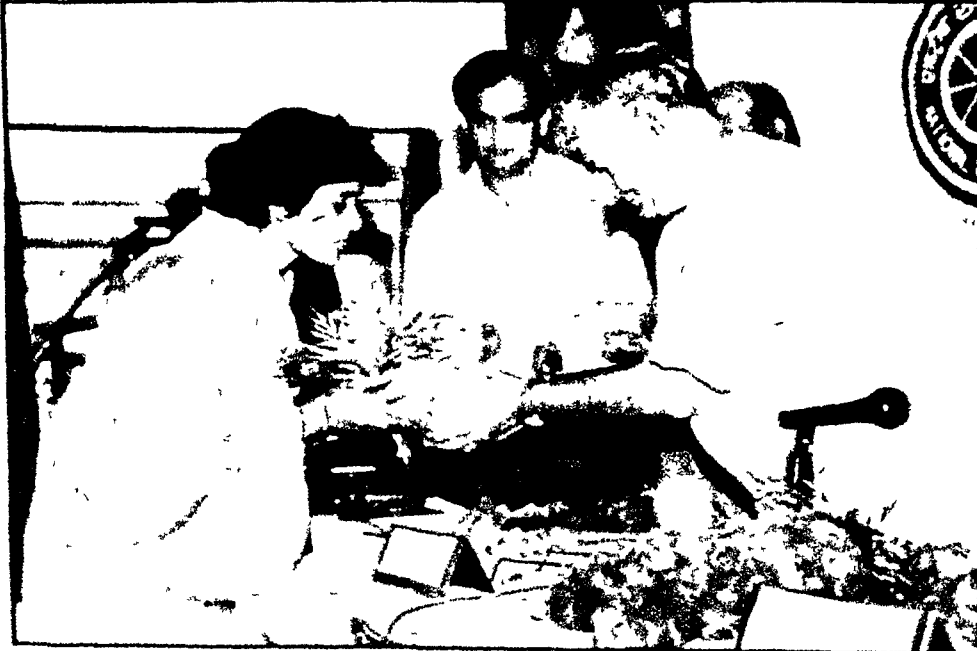
शिविर सचालिका सुश्री सरोज कोचर द्वारा मुख्य अतिथि श्री चतुर्वेदी का अभिनन्दन

सम्मानित प्रतिभाएं 1996

सर्वाधिक अंक
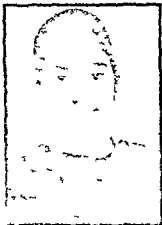
सविता गोयल
(तृतीय वर्ष - वाणिज्य)

सर्वाधिक अंक

गायत्री शर्मा
(प्रथम वर्ष- कला)

सर्वाधिक अंक

ज्योति सोगानी
(प्रथम वर्ष-वाणिज्य)

श्रेष्ठ छात्रा

रजनी सेन

श्रेष्ठ वक्ता

विनया शर्मा

श्रेष्ठ वक्ता

विनीता सचेती

श्रेष्ठ गायन

निर्मला गोयल

श्रेष्ठ गायन

सरला दाधीच

श्रेष्ठ नृत्यांगना

प्रीति श्रीवास्तव

श्रेष्ठ कार्यकर्ता

अंजना सुराणा

श्रेष्ठ लेखन

शैली माथुर

उच्च शिक्षा का अनुपम परिसर :
श्री वीर बालिका महाविद्यालय

(प्रगति प्रतिवेदन)

✍ डा. भगवती स्वामी
प्राचार्या

यह व्यक्त करते हुए अपार आनन्दानुभूति हो रही है कि हम इस वर्ष अपनी शिक्षण संस्था की हीरक जयन्ती मना रहे हैं। मनस्वी मनीषियों, साधु-सन्तों के शिव संकल्प सदा साकार होते हैं। आज से सात दशक पूर्व ज्ञान पंचमी (कार्तिक शुक्ला पंचमी) के शुभदिन परम श्रद्धेय साध्वी श्री सुवर्णश्रीजी के कर कमलों द्वारा इस संस्था का बीजवपन हुआ था। परम श्रद्धेय चाचा साहब श्री राजरूपजी टांक ने अथक अनवरत परिश्रम, लगन, अपनी सूझबूझ और आर्थिक सहयोग से इस संस्था को सफलता की ऊंचाईयों तक पहुँचाया और इस सारस्वत अनुष्ठान में परम आदरणीय श्री हीराचन्द बैद उनके दाहिने हाथ रहे। उनके समकालीन दूरदृष्टा श्री सौभाग्यमल जी श्रीश्रीमाल, श्री विमलचन्द सुराणा, श्री दुलीचन्द टांक, श्री महावीर प्रसाद श्रीमाल आदि के सहयोग से सिंचित ये जूनी संस्था विशाल वट वृक्ष के रूप में पुष्पित एवं पल्लवित हो आज नगर के जाने-माने महाविद्यालयों में अपनी एक अलग पहचान बना सकी है। स्वतंत्रता के पूर्व से बालिका शिक्षा की अलख जगाने वाली इस संस्था की सुदीर्घ विकास यात्रा है।

इस संस्थान की अपनी विशेषता है :- शिशु कक्षा से लेकर स्नातक स्तर तक के अध्ययन की। शिक्षण संस्थान में महाविद्यालय शिक्षा का शुभारम्भ सन् 1974 के सत्र से हुआ। हमारे कर्मठ एवं शिक्षा सेवा के लिए समर्पित शिक्षक भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप बालिकाओं को सुशिक्षित एवं सुसंस्कारित कर रहे हैं। उच्च शिक्षा के परिसरों में जहाँ गुरु-शिष्य की पुनीत परम्परा विलुप्त हो रही है, वहाँ हमारा शिक्षण संस्थान उसे जीवन्त रखने में सफल हुआ है। शिक्षा संस्कार तथा समाज सेवा में अपनी भागीदारी का निर्वाह करते हुए इस संस्था की छात्राओं एवं शिक्षकों ने राजस्थान में ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त कर राजस्थान को गौरव प्रदान किया।

34 छात्राओं के प्रवेश से प्रारम्भ महाविद्यालय में वर्तमान में लगभग 1100 छात्राएं अध्ययनरत हैं। महाविद्यालय के परिणाम अच्छे रहे इसके लिए हम सतत् प्रयासरत रहते हैं। पिछले सत्रों का परीक्षा परिणाम एवं छात्राओं की प्रवेश संख्या इस प्रकार रही :-

कला संकाय

सत्र	कक्षा	छात्रा संख्या	उत्तीर्ण %
1992-93	प्रथम वर्ष	198	78%
	द्वितीय वर्ष	167	89%
	तृतीय वर्ष	96	75%

सत्र	कक्षा	छात्रा सख्या	उत्तीर्ण %
1993-94	प्रथम वर्ष	247	84 5%
	द्वितीय वर्ष	175	80 5%
	तृतीय वर्ष	140	87 9%
1994-95	प्रथम वर्ष	315	96 5%
	द्वितीय वर्ष	196	96%
	तृतीय वर्ष	158	86%
1995-96	प्रथम वर्ष	295	93 64%
	द्वितीय वर्ष	277	80%
	तृतीय वर्ष	177	74%
वाणिज्य सकाय			
1992-93	प्रथम वर्ष	131	91%
	द्वितीय वर्ष	108	95%
	तृतीय वर्ष	88	100%
1993-94	प्रथम वर्ष	121	48 7%
	द्वितीय वर्ष	104	61%
	तृतीय वर्ष	194	87%
1994-95	प्रथम वर्ष	104	93%
	द्वितीय वर्ष	85	96%
	तृतीय वर्ष	85	95%
1995-96	प्रथम वर्ष	99	79 8%
	द्वितीय वर्ष	87	82 7%
	तृतीय वर्ष	78	88%

हमारे कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक जहाँ उच्च शैक्षणिक स्तर को बनाये रखने मे सफल हुए है, वही पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विभिन्न गतिविधियो को आयोजित कर छात्राओ के सर्वांगीण विकास के लिये प्रयत्नशील है, जिसका प्रगति विवरण निम्नलिखित है -

अध्ययन विषय

महाविद्यालय मे कला सकाय के अन्तर्गत सामान्य हिन्दी, सामान्य अग्रेजी, इन दो अनिवार्य विषयो के अतिरिक्त ऐच्छिक विषयो मे हिन्दी साहित्य, अग्रेजी साहित्य, सस्कृत, इतिहास, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, कठ सगीत और गृह विज्ञान विषयो का अध्ययन कराया जाता है। वाणिज्य सकाय मे अनिवार्य विषयो के साथ ए बी एस टी , ई ए एफ एम ,बी एडमि ऐच्छिक विषयो के रूप मे अध्ययन कराये जाते है।

स्वर्ण विचक्षण पुस्तकालय

इस पुस्तकालय की प्रेरणा स्रोत पूज्य गुरुवर्या स्व साध्वी श्री स्वर्णश्रीजी एव साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी महाराज है। दिनाक 10 जून, 1979 को पूज्य गुरुवर्या स्व साध्वी श्रीविचक्षण श्रीजी महाराज साहब के कर कमलो द्वारा इसकी स्थापना की गई थी।

ग्रन्थालय एक वर्द्धनशील सस्था है। महाविद्यालय पुस्तकालय मे विभिन्न विषयो की 13 हजार 500 पुस्तके है। पुस्तकालय की समृद्धि हेतु महाविद्यालय मे प्रत्येक सत्र मे पुस्तके खरीदी जाती है। महाविद्यालय मे निरन्तर छात्राओ की बढती हुई सख्या को देखते हुए पुस्तको की सख्या मे वृद्धि करना नितात आवश्यक है।

महाविद्यालय मे छात्राओ के अध्ययन के विषय उच्च शिक्षा से सबधित होते है। उनके अध्ययन हेतु महाविद्यालय पुस्तकालय मे सदर्भ ग्रन्थ जैसे - विश्वकोश, शब्दकोश, विषय विश्वकोश, बहुभाषीय तथा विषय शब्दकोश वार्षिकी वाडमय सूची तथा अन्य कई सदर्भ ग्रन्थ खरीदे जाते है।

विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयो मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बजट द्वारा भी पुस्तके खरीदी जाती है। जिसके अन्तर्गत अधिक

मूल्य के संदर्भ ग्रन्थ, रिकमन्डेड बुक्स एवं अन्य पाठ्य सामग्री खरीदी जाती है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सत्र 1988-89 में पुस्तकालय विकास अनुदान के तहत 633 पुस्तकें खरीदी गई। सत्र 1990-91 में 625 पुस्तकें तथा सत्र 1992-93 में 406 पुस्तकें खरीदी गईं।

वाचनालय :

महाविद्यालय पुस्तकालय में छात्राओं के ज्ञानवर्द्धन हेतु वाचनालय की व्यवस्था है। इसी प्रयास में वाचनालय में पचास के लगभग पत्र-पत्रिकायें, दैनिक अखबार आदि आते हैं। इसमें सामयिक पत्रिकायें एवं विषयानुसार जरनल दोनों हैं। सामयिक प्रकाशनों में कुछ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक एवं अर्द्धमासिक प्रकाशन हैं।

महाविद्यालय बुक बैंक :

सत्र 1978 में महाविद्यालय में बुक बैंक की स्थापना की गई। बुक बैंक में कुल पुस्तकों की संख्या दो हजार के करीब है। बुक बैंक व्यवस्था के अन्तर्गत वे छात्राएं जो पाठ्य पुस्तकें खरीदने में असमर्थ हैं तथा महाविद्यालय में पढ़ना चाहती हैं, वे छात्राएं बुक बैंक की पुस्तकों से लाभान्वित होती हैं जो उनको नि.शुल्क प्रदान की जाती है। विभिन्न सत्रों में छात्राओं के सहायतार्थ बुक बैंक से दी जाने वाली पुस्तकों का विवरण निम्नलिखित है :-

सत्र	छात्राओं की सं.	पुस्तकों की सं.
1984-85	113	289
1985-86	100	298
1986-87	115	415
1987-88	85	290
1988-89	78	211
1989-90	114	490
1990-91	108	394
1991-92	84	408
1992-93	53	229
1993-94	76	301
1994-95	50	211
1995-96	88	305

छात्र कल्याण कोष एवं विविध छात्रवृत्तियां :

सत्र 1978 में आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं के कल्याण हेतु ज्ञान पंचमी के शुभ दिन छात्रा कल्याण कोष की स्थापना की गई। इस कोष के माध्यम से छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

छात्रवृत्तियों का विवरण इस प्रकार है :-

1995-96	**समाज कल्याण द्वारा प्रदत्त**	
उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति	3 छात्राए	4,500.00
विकलांग छात्रवृत्ति (94-95)	2 छात्राएं	500.00
विकलांग छात्रवृत्ति (बकाया)	2 छात्राएं	2,000.00
मृतक राज्य कर्मचारी (राज्य सरकार)	3 छात्राएं	3,015.00
समाज द्वारा प्रदत्त :		
श्री श्वे. जैन तपागच्छ संघ	3 छात्राएं	3,015.00
श्री ज्ञान विचक्षण महिला मण्डल	4 छात्राएं	4,100.00
डी. पी. डॉ. नरेन्द्र भानावत चैरिटेवल ट्रस्ट छात्रवृत्ति	19 छात्राएं	12,000.00
श्रीजिनकुशल साधर्मी कोष	9 छात्राएं	5,100.00
श्री मिलापचन्द सुखानन्द काला	2 छात्राए	1,000.00
महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त :		
कला संकाय	42 छात्राए	17,040.00
वाणिज्य सकाय	12 छात्राए	4,320.00

शान्तिनाथ चैरिटेवल ट्रस्ट द्वारा भी छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

छात्रा परिषद्

महाविद्यालय की शैक्षणिक एव सास्कृतिक गतिविधियो को सुचारु रूप से सचालित करने एव महाविद्यालय के विकास मे छात्राओ की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित बनाने की दृष्टि से छात्रा परिषद् का गठन प्रतिवर्ष किया जाता है। जिसके चुनाव मे कला एव वाणिज्य सकाय की छात्राए भाग लेती है। सत्र मे होने वाली विभिन साहित्यिक एव सास्कृतिक प्रतियोगिताओ को आयोजित करने का उत्तरदायित्व छात्रा परिषद् पर होता है।

यह वर्ष हीरक जयन्ती वर्ष है जिसमे छात्र परिषद् के द्वारा महिला सस्थान के विभिन्न आयाम नामक झाँकी प्रस्तुत की गई। कवि सम्मेलन मे भी छात्र परिषद् की प्रमुख भूमिका रही। वर्तमान सत्र मे डा हरजिन्दर कोर, परिषद् की अधिष्ठाता है। सुश्री मुन्नी मित्तल, डा सविता किशोर, डॉ अन्जना जैन सहायक प्रभारी है।

इस सत्र मे महाविद्यालय के छात्र परिषद् के अध्यक्ष पद पर कु अशु गौड निर्वाचित हुई व अनुपमा मित्तल विशिष्ट प्रतिनिधि के रूप मे कार्यकारिणी मे सम्मिलित हुई। उपाध्यक्ष कविता गोयल, सचिव कु कुसुमलता दातवानी व सयुक्त सचिव चारू जैन है।

छात्राओ के सर्वागीण विकास हेतु प्रतिवर्ष छात्रा परिषद् के तत्वावधान मे महाविद्यालय मे निम्नलिखित प्रतियोगिताओ का आयोजन करवाया जाता है -

एकल एव सामूहिक नृत्य, एकल एव सामूहिक गान, भारतीय प्रान्तीय परिधान, विचित्र वेष-भूषा, कविता-पाठ, वाद-विवाद, मेहन्दी, अल्पना एव रगोली प्रतियोगिता।

वर्तमान सत्र के प्रारम्भ मे नवागन्तुक छात्राओ का एव शिक्षक दिवस मना कर शिक्षको का अभिनन्दन किया गया।

अन्य महाविद्यालयो मे होने वाली प्रतियोगिता मे छात्राओ को भाग लेने के लिए भेजा जाता है। कौमी सप्ताह व अन्य नेताओ की जयन्तियाँ आदि भी छात्रा परिषद् द्वारा मनाई जाती है।

साहित्यिक एव शैक्षणिक गतिविधिया

महाविद्यालय मे छात्राओ की बौद्धिक प्रगति हेतु अनेक गतिविधियो का आयोजन किया जाता हे यथा निबन्ध, स्वरचित कहानी, कविता, भाषण प्रतियोगिता आदि। गत सत्र मे महाविद्यालय की छात्रा शैली माथुर बी ए भाग द्वितीय ने राजकीय बिडला महाविद्यालय, भवानी मण्डी द्वारा आयोजित अखिल राज्य स्तरीय अन्तर्महाविद्यालय निबध प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। विशिष्ट विद्वानो के व्याख्यानो का आयोजन भी किया जाता है। आमत्रित विद्वानो मे से कुछ विशिष्ट विद्वानो का उल्लेख यहा प्रस्तुत है। श्री विष्णुदत्त शर्मा (पूर्व अध्यक्ष राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर), राजमल बोहरा (रीडर हिन्दी विभाग, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरगाबाद), डा धनजय वर्मा (भोपाल), डा रमेश कुन्तल 'मेघ' (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुरुनानक वि वि , अमृतसर), श्री रणजीत सिह कूमठ।

2 10 96 को कवि सम्मेलन रवीन्द्र मच पर आयोजित किया गया जिसमे मुख्य अतिथि श्री के एल कोचर प्रेस सलाहकार, मुख्यमत्री एव डॉ रेखा शर्मा, सयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा ने

अध्यक्षता की। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी गवर्नमेन्ट हॉस्टल में महाविद्यालय एवं अखिल भारतीय महिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।

श्री राजरूप जी टांक के पावन जन्म दिवस समारोह पर रवीन्द्र मंच पर महाविद्यालय स्तरीय भक्ति संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कु. सरला दाधीच श्री वीर बालिका महाविद्यालय की तृतीय रहीं।

64वां अखिल भारतीय महिला परिषद वार्षिक सम्मेलन बिरला सभागार में आयोजित किया गया। श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की मुख्य भूमिका रही। इस अवसर पर महिला उद्यमिता से सम्बन्धित स्मारिका का प्रकाशन हुआ। प्राचार्य डा. भगवती स्वामी इसकी विशिष्ट सम्पादिका तथा डा. सरोज वर्मा, डा. कोकिला जैन तथा सुश्री सरोज कोचर सह-सम्पादिका थी।

वाद-विवाद समिति के तत्वाधान में हीरक जयन्ती समारोह के उपलक्ष में सत्र 1995-96 में स्व. श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल स्मृति राज्य स्तरीय अन्तर्महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम वीर बालिका महाविद्यालय की छात्राएं रहीं किन्तु मेजबान दल होने के कारण चल वैजयन्ती माला का विजयोपहार दौसा महाविद्यालय को दिया गया।

18.9.95 को सतसांई महाविद्यालय में आयोजित की गई भाषण प्रतियोगिता में कु. इन्दू दादूपंथी बी.ए. भाग तृतीय ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

एस.एस.जी. पारीक कालेज में दिनांक 29.1.96 को आयोजित हिन्दी वाद-विवाद जिला स्तरीय प्रतियोगिता में कु. मन्जू अग्रवाल बी.काम. भाग तृतीय व कु. रिंकू रावत बी.काम. भाग तृतीय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

महिला प्रकोष्ठ :

1989 में महिला विकास परियोजना एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्ग निर्देशन में राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों में महिला अध्ययन केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

परियोजना का मुख्य लक्ष्य :

महिला अध्ययन द्वारा महिला शक्ति को सुदृढ़ करना एवं राष्ट्र निर्माण में उनकी समाजोपयोगी सशक्त भूमिका को उभारकर सामने लाना है। महाविद्यालय की छात्राओं में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं चेतना उत्पन्न करना, राष्ट्रीय विकास की धारा में उन्हें अभिन्न रूप से जोड़ना, रोजगार की उपलब्ध सम्भावना के सम्बन्ध में उन्हें जानकारी दिलाना आदि उद्देश्यों के लिए महाविद्यालय का महिला विकास अध्ययन प्रकोष्ठ सक्रिय है। विभिन्न सरकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों की सहायता से एक सलाह एवं सहायता इकाई का गठन किया गया है ताकि पीड़ित महिलाओं को तुरन्त सहायता और सलाह दी जा सके।

12 व 13 सितम्बर, 96 को निदेशालय कालेज एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महिला अध्ययन केन्द्र के आगामी वर्षो हेतु कार्य योजना विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला पंचायती राज्य संस्थान भवन में आयोजित की गई।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्रीमान ललितकिशोर चतुर्वेदी उच्चशिक्षा मंत्री, राजस्थान

सरकार, अध्यक्ष श्रीमान् नाथूसिह गुर्जर, ग्रामीण विकास एव पचायती राज राज्य मंत्री एव विशिष्ट अतिथि श्रीमान अनिल वैश्य, सचिव उच्च शिक्षा, राजस्थान सरकार, एव श्री दुलीचन्द टाक सयुक्त मंत्री, श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान थे। स्वागत भाषण श्रीमान के एस ढिढोर निदेशक, कालेज शिक्षा राज जयपुर ने किया। प्रारम्भ मे डा भगवती स्वामी प्राचार्या श्री वीर बालिका महाविद्यालय ने अतिथियो का माल्यार्पण कर स्वागत किया एव श्रीमान दुलीचन्द टाक ने अतिथियो को हीरक जयन्ती वर्ष स्मृति चिह्न भेंट किये। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मनोरमा पटवर्धन अध्यक्षा, राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड ने की। सत्र का मुख्य विषय 'राजस्थान मे मानव ससाधन विकास के क्षेत्र मे कार्यकारी शोध की प्राथमिकता' था।

तृतीय सत्र की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा चौपड़ा सचिव, समाज कल्याण विभाग, राजस्थान एव विषय 'महिला विकास कार्यक्रम' सामान्य विवेचन रहा।

चतुर्थ सत्र अध्यक्षता - श्री के बी सक्सैना, सयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा, राजस्थान एव मुख्य विषय 'राजस्थान राज्य मे यूनिसेफ कार्यक्रम महिलाओ के परिप्रेक्ष्य मे'। मुख्य वक्ता - डॉ सुमन भटनागर, यूनिसेफ प्रतिनिधि थी।

पचम सत्र के अध्यक्ष श्री रामलुभाया आयुक्त, चिकित्सा एव स्वास्थ्य सेवाए व सचिव आयुर्वेद थे। मुख्य विषय 'चिकित्सा, स्वास्थ्य परीवार कल्याण एव महिला विकास' तथा मुख्य वक्ता - प्रो रामेश्वर शर्मा, प्रो ललित कोठारी, प्रो एन के सिघी एव डा गोविन्द शर्मा निदेशक, आई ई सी चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग, राज थे।

षष्ठम सत्र - कार्ययोजना प्रस्तुतीकरण का खुला सत्र रहा। अध्यक्ष श्री आर एस कूमट अध्यक्ष, राज प्रौढ़ शिक्षण समिति एव समूह विशेषज्ञ डा भगवती स्वामी प्राचार्या, श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर रहे। विभिन्न महाविद्यालयो से आये महिला अध्ययन केन्द्रो के प्रभारी व्याख्याताओ ने अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत की। श्री वीर बालिका महाविद्यालय महिला अध्ययन केन्द्र की कार्ययोजना श्रीमती विमला शर्मा ने प्रस्तुत की।

सप्तम सत्र - कार्ययोजना का अन्तिम रूप प्रस्तुत करने का रहा। अध्यक्षता श्रीमान अनिल वैश्य सचिव, उच्च शिक्षा राज सरकार ने की। मुख्य वक्ता प्रो एम एन सिन्हा थे।

अष्टम सत्र मे समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमान पी एल चतुर्वेदी कुलपति, एम डी एस विश्वविद्यालय, अजमेर ने की। स्वागत डा भगवती स्वामी प्राचार्या, श्री वीर बालिका महाविद्यालय जयपुर ने किया। श्रीमती रेखा शर्मा उपनिदेशक, कालेज शिक्षा, राजस्थान ने कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एव अत मे श्रीमान के एस ढ़िढोर निदेशक, कालेज शिक्षा, राज ने आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला के सफल सयोजन मे मुझे डा अशोक बाफना, वरिष्ट व्याख्याता, पी जी महाविद्यालय, दौसा एव श्री शिव प्रकाश, सहायक निदेशक कालेज शिक्षा निदेशालय एव निदेशालय के अन्य अधिकारियो एव कर्मचारियो का विशेष सहयोग मिला। महाविद्यालय की व्याख्याताओ मे श्रीमती हरजिन्दर कौर, श्रीमती विमला शर्मा, डा शशि भार्गव आदि की मुख्य भूमिका रही। कार्यक्रम का

सफल संचालन डॉ. सविता किशोर ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना :

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ दिनांक 8.10.80 में किया गया। इस इकाई की संयोजक डॉ. सरोज वर्मा एवं सह-संयोजक सुश्री सरोज कोचर, डॉ. कमलेश तिवारी एवं सुश्री संतोष गर्ग रहीं। तब से राष्ट्रीय सेवा येजना की इकाई सफलतापूर्वक अपने क्षेत्र में कार्य कर रही है। इस समय महाविद्यालय में दो इकाइयां कार्य कर रही हैं। प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर व द्वितीय इकाई की कार्यक्रम अधिकारी डा. कोकिला जैन हैं। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किये हैं। दिनांक 19.1.95 को राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित युवा सप्ताह समारोह में कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर एवं छात्रा सुप्रिया शाह को राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया। राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित युवा सप्ताह दिनांक 12.1.96 से 19.1.96 तक के समापन समारोह में राष्ट्रीय सेवा योजना में उल्लेखनीय कार्यो के लिए प्राचार्या डॉ. भगवती स्वामी एवं कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर को प्रशस्ति पत्र व शील्ड से सम्मानित किया गया।

यहां यह कहते हुए हर्ष है कि भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय व युवा खेल विभाग द्वारा 1994-95 के इन्दिरा गॉधी एन.एस.एस. अवार्ड के रूप में इस महाविद्यालय की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर एवं महाविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया गया। 27.2.96 को दिल्ली में आयोजित समारोह में महाविद्यालय को अवार्ड के रूप में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. भगवती स्वामी को 25 हजार रु. नगद शील्ड व शाल से सम्मानित किया गया तथा व्यक्तिगत तौर पर सुश्री सरोज कोचर को 5 हजार रु. नगद, शील्ड, शाल व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

दिनांक 7.6.96 को सुश्री सरोज कोचर को नवीं पंचवर्षीय योजना के कला एवं संस्कृति विभाग की कार्यकारिणी में चयनित किया गया। इससे पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर एन.एस.एस.एक्शन प्लान की समिति में सदस्य के रूप में चयनित किया गया। 20.8.96 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई व रोट्रेक्ट क्लब तथा अखिल भारतीय महिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में नेवटा गांव को गोद लेकर पर्यावरण गांव बनाने के उद्देश्य से 1500 पौधों की एक नर्सरी तैयार की गई तथा वहां विधि चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

श्री वीर बालिका महाविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की तरफ से राज्य स्तरीय उद्यमिता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 4.10.96 से 9.10.96 तक मोती डूंगरी रोड स्थित दादाबाड़ी में किया गया। 200 शिविरार्थियों से युक्त इस शिविर का उदघाटन मुख्य अतिथि श्री नरपतसिंह राजवी, महामंत्री, भारतीय जनता पार्टी ने तथा अध्यक्षता श्री के. एल. जैन मानद मंत्री, राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्री ने की।

सुश्री सरोज कोचर के नेतृत्व में इस शिविर में छात्राओं के 8 दल बनाकर विभिन्न हस्तकलाओं के प्रशिक्षण दिये गये। जिसमें पर्स, वैग, मोती के आभूषण, पैन्टिंग, मिट्टी के बर्तन एवं लाख के आभूषण, साफ्ट टायज, चद्दर की डिजाइनिंग, कढ़ाई, सूतली के पायदान आदि का प्रशिक्षण दिया

गया।

दिनाक 9 10 96 को शिविर का समापन श्रीमान ललित किशोर चतुर्वेदी, उच्च शिक्षा मत्री, राज सरकार के मुख्य आतिथ्य मे हुआ। समारोह के अध्यक्ष श्री सजय दीक्षित निदेशक, लघु उद्योग निगम थे।

मानव ससाधन विकास मत्रालय युवा कार्य एव खेल विभाग की उपसचिव श्रीमती अमरजीत कौर ने शिविर का अवलोकन करते हुए शिविर की प्रशसा की। इस अवसर पर छात्राओ द्वारा निर्मित हस्तकला की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

उल्लेखनीय है कि भारत मे मात्र राजस्थान मे ही राज्य सरकार द्वारा दूसरी बार इस प्रकार का शिविर आयोजित करवाया गया। दोनो वार भी इस शिविर को आयोजित करने का सौभाग्य इसी सस्था को प्राप्त हुआ।

शिविर के सफल आयोजन मे डा राकेश दुग्गल राज्य सम्पर्क अधिकारी एव श्री अशोक केवलिया युवाधिकारी प्रादेशिक केन्द्र, भारत सरकार का विशेप सहयोग रहा। शिविर मे स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधा सूरज अस्पताल के डा विनय सक्सैना एव डा एस पी सक्सैना द्वारा प्रदान की गई।

12 10 96 को राज्य स्तरीय समस्त महाविद्यालयो के एन एस एस कार्यक्रम अधिकारी सम्मेलन मे उच्च शिक्षा मत्री द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के उल्लेखनीय कार्यो के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार डा भगवती स्वामी प्राचार्या को 10,000 रुपये नगद व सुश्री सरोज कोचर को व्यक्तिगत तौर पर 5,000 रु नगद देकर सम्मानित किया गया।

13 10 96 से 22 10 96 तक प्रथम इकाई राष्ट्रीय सेवा योजना का दस दिवसीय विशेप शिविर दादाबाड़ी मे सुश्री सरोज कोचर के सयोजन मे किया गया।

19 10 96 से 28 10 96 तक द्वितीय इकाई का दस दिवसीय विशेप शिविर सन्मति पुस्तकालय सेठी कालोनी मे डॉ कोकिला जैन के सयोजन मे किया गया।

योजना मच -

योजना मच की स्थापना 1981 मे की गई थी। इस मच के अन्तर्गत सर्वे, सामान्य ज्ञान, पोस्टर, आशुभापण आदि की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। छात्राओ एव व्याख्याताओ के उत्साह के फलस्वरूप यह गतिविधि निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है।

इस वर्प इस की प्रभारी व्याख्याता सुश्री मन्जू जैन है।

खेलकूद -

स्वास्थ्य एव मनोरजन के लिए खेल अत्यन्त आवश्यक है। महाविद्यालय मे समय-समय पर खेलकूद के लिए छात्राओ को महाविद्यालय से वाहर ले जाया जाता हे तथा छात्राओ के उत्साहवर्द्धन के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओ का भी आयोजन किया जाता है-बैडमिटन, टेबिल-टेनिस, खो-खो, कबड्डी, लम्बी कूद, ऊँची कूद, 100 मीटर दौड, रिले दौड आदि छात्राओ के प्रिय खेल है। महाविद्यालय की छात्रा नमिता आल इण्डिया यूनिवर्सिटी टूर्नामेट मे भाग लेने हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय हैण्डबाल टीम मे चयनित हुइ है।

इस वर्ष इस समिति की प्रभारी श्रीमती सुनीला जैन हैं।

रोट्रेक्ट क्लब :

रोट्रेक्ट क्लब की स्थापना 10 नवम्बर 1989 को महाविद्यालय में की गई। तब से यह सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। 1989 में महाविद्यालय रोट्रेक्ट क्लब को बेस्ट रोट्रेक्ट क्लब पुरस्कार एवं डा. शशि भार्गव को बेस्ट इंचार्ज का पुरस्कार रोटरी क्लब जयपुर के द्वारा प्रदान किया गया। रोट्रेक्ट क्लब के तहत छात्राओं के चहुँमुखी विकास के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं और समाज सेवा के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। गाँव नेवटा में रोट्रेक्ट की छात्राओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधे लगाये गये। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं रोट्रेक्ट क्लब के संयुक्त तत्वावधान में डा. कोकिला जैन एवं डा. शशि भार्गव के नेतृत्व में 5 दिवसीय भ्रमण शिविर आयोजित किया गया जिसमें 100 छात्राओं को उदयपुर, चित्तौड़गढ़, माउन्टआबू, श्रीनाथद्वारा आदि एतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों पर ले जाया गया। इस वर्ष छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए एक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें सार्वजनिक भाषण, प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास के खेल आदि का समावेश है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण :

वर्तमान समाज की आवश्यकता को देखते हुए इस संस्था में कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था भी है। बालिकाओं का सर्वांगीण विकास हो यही हमारा प्रयास है और प्राप्य भी।

पर्वतारोहण एवं रोमांचक खेल प्रशिक्षण :

महाविद्यालय की छात्राएं राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़कर अपनी सशक्त भूमिका निभा सकें इस हेतु वर्तमान सत्र में रोमांचक खेलों का प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया है। राजस्थान एडवेंचर सोसाइटी के श्री सांघी के मार्ग निर्देशन में प्रथम 15 दिवसीय पर्वतारोहण एवं आपातकालीन सुरक्षा से सम्बन्धित प्रशिक्षण छात्राओं को दिया गया। प्रशिक्षित छात्राओं ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि उन्हें सुअवसर मिले तो वे सफलता के नये आयाम कायम कर सकती हैं। घर की चारदीवारी ही नहीं पर्वतों को लांघ ऊँचाई की बुलन्दियों को छू सकती हैं।

हमारा शिक्षण संस्थान गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टि से उन्नत पथ पर अनेक कीर्तिमान स्थापित कर सका। उसके मूल में है महाविद्यालय परिवार का सौहार्दपूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध, संचालक मण्डल की सहृदयता एवं सदाशयता तथा महाविद्यालय परिवार की कर्त्तव्यपरायणता, शिक्षक वृन्द का समर्पित सेवा भाव व छात्राओं का अनुशासन इस संस्था के उन्नयन की आधार शिला है।

हीरक जयन्ती की स्मारिका के लिए देश के विभिन्न स्थानों से संतों, विद्वानों, समाजसेवियों, राजनेताओं ने अपने आशीर्वाद, शुभकामनाएं तथा रचनाएं भेजकर हमें अनुगृहीत किया है। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। संस्था के शुभ चिन्तक उदारमना श्रीमन्तों ने विज्ञापन देकर जो आर्थिक सहयोग दिया है उसके लिए मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। प्रत्यक्ष एवं प्रछन्न रूप से सभी के सतत् योगदान से इस स्मारिका का प्रकाशन सम्भव हो सका। उन सभी को हार्दिक आभार।

आशा है स्मारिका सुधी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

❑

वर्तमान शताब्दी के चिन्तक महर्षि अरविन्द

✍ डा कोकिला जैन
विभागाध्यक्ष, दर्शन शास्त्र

15 अगस्त, 1947 स्वाधीन भारत का जन्म दिन है। यह दिन भारत के लिए पुराने युग की समाप्ति और नये युग का प्रारम्भ सूचित करता है। हम अपने जीवन और कार्यो द्वारा इसे ऐसा महत्वपूर्ण दिन भी बना सकते है, जो सम्पूर्ण जगत के लिए, सारी मानव जाति के लिये राजनीतिक, सामाजिक, सास्कृतिक तथा आध्यात्मिक भविष्य के लिए नया युग लाने वाला सिद्ध हो। यह बात खरी उतरी हे यहा से अरविन्द मे। यह एक सयोग है कि अरविन्द का जन्म 15 अगस्त को हुआ और महर्षि अरविन्द ने राजनीतिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक क्षेत्र मे अपने महनीय योगदान से अपने जीवन को सार्थक एव पूर्ण बनाया। स्वय अरविन्द ने अपने जन्म तिथि के सम्बन्ध मे लिखा हे कि 15 अगस्त मेरा अपना जन्म दिन है और स्वभावत ही यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। परन्तु इसके भारतीय स्वधीनता दिवम भी हो जाने को मै कोई आकस्मिक सयोग नही मानता, बल्कि यह मानता हू कि जिस कर्म को लेकर मैने अपना जीवन प्रारम्भ किया था, उसको मेरा पथ प्रदर्शन करने वाली भगवती शक्ति ने इस तरह मजूर कर लिया है और उस पर अपनी मोहर भी लगा दी है ओर वह कार्य पूर्णरूप से सफल होना आरम्भ हो गया है।

श्री अरविन्द का जन्म 15 अगस्त, 1872 को पूरी तरह से यूरोपीय आदर्श से प्रभावित पिता के घर हुआ। पिता की इच्छा थी कि बालक को कहीं भारतीय हवा न लगने पाए, इसलिए शुरु से ही सारी शिक्षा दीक्षा अग्रेजी भाषा मे और अग्रेजो की देख रेख मे हुई। अरविन्द जब सात वर्ष के थे तब उन्हे इग्लेड पहुचा दिया और वहा पर व्यवस्था की गई कि इन पर भारतीयता की छाया तक न पडने पाए। उन्होंने ग्रीक, लैटिन तथा अग्रेजी और फ्रैंच भाषाओ पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया तथा जर्मन, इटालियन, स्पैनिश आदि अन्य यूरोपीय भाषाओ से भी परिचय प्राप्त किया।

अरविद इग्लैड से लौटे तो भारत की भूमि पर पाव रखते ही उन्हे एक असीम शक्ति का अनुभव हुआ। इतने वर्षो से बिछडे हुए लाल को भारत मा का पहला उपहार था। यह शान्ति हमेशा उनके साथ रही ओर कठिन से कठिन परिस्थितियो मे भी उनकी रक्षा करती रही। साथ ही आने वाली कठिनाईयो का रसास्वादन करा दिया। अरविन्द को पता लगा कि उनके पिता को यह गलत समाचार मिला कि जिस जहाज मे उनकी आखो का तारा आ रहा था वह समुद्र मे डूब गया। इन समाचारो से पिता का

प्राणान्त हो गया। अरविन्द के जीवन में आने वाली कठिनाईयों का यह प्रथम आभास था।

एक दिन श्री अरविन्द बड़ौदा के पास किसी गांव में टहल रहे थे। पास में काली का एक मंदिर था वे उस तरफ चले गये और बिना किसी तैयारी के उन्हें काली की मूर्ति में एक जीवित जागृत शक्ति के दर्शन हुए। इसी प्रकार कश्मीर में तख्ते सुलेमान पर खड़े होते ही उन्हें निर्वाण का अनुभव प्राप्त हो गया। बहुतों के लिए परम लक्ष्य हैं। भगवान की ओर से छप्पर फाड़कर उपहार पर उपहार दिए जा रहे थे। उधर सचेतन रूप से श्री अरविन्द अपनी सारी शक्ति भारत मां के चरणों में न्यौछावर कर रहे थे।

बड़ौदा के सर सयाजीराव गायकवाड़ के साथ उनका परिचय हुआ और उनकी नियुक्ति भूमि व्यवस्था विभाग में हो गयी। फिर बड़ौदा कालेज के वाइस प्रिंसिपल हो गये। बड़ौदा के महाराजा, भाषण एवं पत्र अरविन्द से ही तैयार करवाते थे। उन्होंने राजनीतिक विषयों पर अपनी लेख माला लिखनी शुरु की 'न्यू लैम्प फार ओल्ड'। उस समय के नेताओं ने उनके लेखों को बहुत उग्र माना और प्रकाशन रुकवा दिया।

अरविन्द ने बडौदा का काम छोड़ दिया और बंगाल में राष्ट्रीय महाविद्यालय के आचार्य के रूप में कुछ दिनों तक काम किया। वहां जगदीश चन्द बसु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आद इनके सहयोगी थे।

पर्दे के पीछे रहते हुए वे क्रान्तिकारी आंदोलन के कर्ताधर्ता बन गये। नाम के लिए तो और लोग सम्पादन करते थे पर सचमुच जिम्मेदारी श्री अरविन्द की ही थी। वन्दे मातरम् अपने समय का सबसे लोकप्रिय पत्र रहा है जिसने हजारों युवकों के अन्दर एक नई जान फूंक दी थी। यह पत्र विदेशी वस्तुओं, विदेश सत्ता के बहिष्कार, स्वदेशी के प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षण आदि कार्यक्रम को लेकर चला था, जिसका उद्देश्य था एक समानान्तर सरकार खड़ी कर देना।

श्री अरविन्द ने वन्दे मातरम् के नारे में एक ऐसी शक्ति भर दी कि विदेशी सरकार का एक-एक आदमी उससे भड़क उठता था।

श्री अरविन्द की कार्यशैली की यह विशेषता रही कि वे अपने सामने एक निश्चित लक्ष्य रखकर घटनाओं का निरीक्षण करते और शक्तियों को तैयार करते रहते थे और जब उपयुक्त समय लगता तब कार्य क्षेत्र में उतर जाते थे।

अरविन्द का राजनीति के बारे में यह सन्देश प्रेरणास्पद है। उन्होंने कहा कि पश्चिम के लोग भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं। इंग्लैंड का क्रिया कौशल, फ्रांस की तर्क संगत बुद्धि, जर्मनी की विचारशील प्रतिभा, रूस का भाव प्रवण शक्ति, अमरीका की व्यापार शक्ति मानव प्रगति के लिए जो कुछ कर सकती थी कर चुकी। अब एक ऐसी चीज की जरूरत है जिसे देना यूरोप के बस की बात नहीं। ठीक ऐसे अवसर पर एशिया फिर से जाग उठा है क्योंकि दुनिया को उसकी जरूरत है। एशिया जगत की शान्ति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। भारत में इन सब चीजों को आध्यात्म शक्ति के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है। यूरोप की चमक-दमक, तर्क शक्ति, बुद्धि सुव्यवस्था तथा प्राणशक्ति के साथ सम्पर्क पैदा करने के लिए ही इंग्लैंड को हिन्दुस्तान में पांव जमाने दिए गये थे। जब उसका यह कार्य पूरा हो गया तो वह उतनी ही आसानी से

चला गया जितनी आसानी से आया था। आज हमे अपने देश को फिर से सगठित करना है ताकि भौतिक शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति के साथ मिलकर काम कर सके तथा अन्तर/और बाह्य मे एक सामजस्य पैदा हो सके।

श्री अरविन्द वन्दे मातरम् का प्रकाशन इसी उद्देश्य से करते थे। वे वन्दे मातरम् के लेख इस चतुराई से लिखते थे कि 'स्टेटसमैन' के सम्पादक को कहना पड़ा इस अखबार की पक्ति-पक्ति मे राजद्रोह भरा है। परन्तु वह इतनी अच्छी तरह छुपाया गया है कि कहीं भी कानून की पकड मे नहीं आ सकता। इन्हीं दिनो उस समय के वायसराय के सचिव ने अपने गुप्तपत्रो मे लिखा था। इस समय देश मे जो राजद्रोह की लहर चल रही हे। उसकी जड श्री अरविन्द है, जो प्रकट रूप मे भाग नहीं लेते, परन्तु यदि सब अपराधियो को जेल मे ठूस दिया जाये और इस एक आदमी को बाहर रहने दिया जाये तो वह फिर से चुपचाप बागियो की सेना तैय्यार करके राजद्रोह मे भाग लेगा।

श्री अरविन्द को कानूनी पकड मे लेने की कोशिश की गई। उन्हे पूरे एक वर्ष तक जेल मे रहना पड़ा। लेकिन अदालत मे अपराध सिद्ध न हो सका और अरविन्द मुक्त कर दिए गए। कारावास के एक वर्ष ने अरविन्द की बहुत सहायता की। जैसे भारत की जमीन पर पाव रखते ही उन्होंने असीम शान्ति का अनुभव किया था, उसी तरह जेल मे रहकर वासुदेव सर्व का अनुभव हो गया। जिस सिद्धि को प्राप्त करने के लिए लोग आजीवन तपस्या करते रहते है वह अरविन्द को सहज ही मिल गई। अरविन्द के लिए जेल सचमुच कृष्ण मदिर बन गया। जेल से छूटने के पश्चात श्री अरविन्द ने राष्ट्रीय आन्दोलन मे नई जान फूकने के लिए दो साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करने शुरु किये। बगला मे धर्म और अग्रेजी मे कर्मयोगी। उन्होंने कहा- हम केवल सरकार का रूप बदलने की तैयारी नहीं कर रहे है, हम एक राष्ट्र को गठना चाहते है। राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग है। हम केवल राजनीति तो क्या ? सामाजिक सगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन, साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नही रखना चाहते। हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है-धर्म। "धर्म" सिद्धान्तो का धार्मिक परिपाटियो का एक समूह नहीं है। जब तक उसे जीवन मे न उतारा जाये हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बडी से बड़ी चीज के अन्दर चाहे वे राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या कूटनीति-धर्म को मूर्तरूप मे न लाया जाये तब तक उसकी सफलता नहीं होती। भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उनका रक्षण करेगा।

श्री अरविन्द ने कहा - भगवान की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, यूरोप की कार्बन कापी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रो मे विजय ही होगी। अपने राजनीतिक कार्य मे श्री अरविन्द ने किसी प्रकार के विद्वेष को स्थान नहीं दिया था। वे अग्रेजो या इग्लैड से घृणा करने के पक्ष मे नहीं थे। उन्होंने स्वराज्य की माग इसलिए नहीं की कि अग्रेजो का राज्य अत्याचारी या खराब था, परन्तु वे स्वराज्य केवल इसलिए चाहते थे कि यह प्रत्येक देश का

जन्म सिद्ध अधिकार है। इसी लक्ष्य को सामने रखकर श्री अरविन्द काम करते रहे। स्वराज्य के बारे में विचार अभिव्यक्त करते हुए श्री अरविन्द कहते हैं "हमारे स्वराज्य के आदर्श में घृणा के लिए स्थान नहीं है। हमारा आदर्श, प्रेम और मातृभाव के आधार पर खड़ा है। वह केवल राष्ट्र के अन्दर एकता के स्वप्न नहीं देखता, बल्कि राष्ट्रों से परे सारी मानवता में ऐक्य चाहता है। हम अपने देश की स्वाधीनता इसलिए चाहते हैं कि इसके द्वारा ही राष्ट्रों में सच्चा मातृभाव आ सकता है। हम देशों और जातियों के पृथक व्यक्तित्व को मिटाना नहीं चाहते बल्कि उनके बीच से घृणा, द्वेष और गलतफहमियों की बाधाओं को हटाना चाहते हैं। हम अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं, परन्तु हमें अधिकारों से वंचित करने वालों से हवा नहीं।

श्री अरविन्द राष्ट्रीय आन्दोलनों का नेतृत्व कर रहे थे कि अचानक एक दिन उनके अन्तर्मन से यह आदेश आ गया कि आन्दोलनों का नेतृत्व करना उनका काम नहीं है, स्वाधीनता का बीज बोया जा चुका है। अब उन्हें उच्चतर और अधिक ठोस काम के लिए अपने आपको लगाना होगा और श्री अरविन्द 4 अप्रैल, 1910 में अपना सारा काम छोडकर चन्दन नगर होते हुए पांडिचेरी आ पहुँचे। यहां से उनके जीवन का नया अध्याय शुरु होता है। पांडिचेरी आकर श्री अरविन्द लगभग एकांत में ध्यानावस्थित ही रहा करते थे। जितनी गंभीर और विपुल सामग्री श्री अरविन्द एक महीने में तैयार करके देते थे उसे आत्मसाहत करने के लिए एक लम्वे अर्से की जरूरत होती है।

24 नवम्बर, 1926 को श्री अरविन्द ने सिद्धि प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने सबसे साथ मिलना जुलना छोड़ दिया था। और वर्ष में केवल तीन बार विशेष अनुमति पाये हुए लोगों को दर्शन दिया करते थे। फिर भी अंग्रेजी सरकार को इन पर संदेह बना रहता था। उसे भय था कि शायद अपनी तपस्या की गुफा में बैठकर श्री अरविन्द किसी गुप्त सशस्त्र क्रान्ति का सूत्र संचालन कर रहे हैं। श्री अरविन्द के सम्पर्क में आने वालों पर कड़ी नजर रखी जाती थी। आश्रम के चारों नुक्कड़ों पर चौबीसों घण्टे गुप्तचर विभाग के आदमी चक्कर लगाते रहते थे और यहां जो आता था उसके पीछे लग जाते थे। सर अकबर हैदरी की सलाह पर चक्रवर्ती राजगोलाचारी ने मद्रास के मुख्यमंत्री बनने के बाद इस पहरे को उठवा लिया।

दूसरा विश्व युद्ध आरंभ होने पर श्री अरविन्द खुले आम हिटलर का विरोध करते हुए मित्र राष्ट्रों का पक्ष लिया और अपनी सहायता के प्रतीक स्वरूप उन्हें कुछ आर्थिक सहायता भी दी। जिसके भय से अंग्रेज सरकार रातों को चौंक पड़ती थी उसी से युद्ध के समय सहायता पाकर वह स्तम्भित सी रह गई। फिर लंदन से बी.बी.सी. पर उनकी सहायता के बहुत गीत गाये गये।

इसके बाद 1942 में सर स्टेफर्ड क्रिप्स भारत आये तो श्री अरविन्द उसकी योजना की सराहना की ओर देश से अपील की कि उसे स्वीकार कर ले। श्री अरविन्द का कहना था कि अगर आपसी में एकता और पूर्ण स्वाधीनता का विकास होगा। उस समय देश ने अरविन्द की सलाह को स्वीकार नहीं किया। अगर क्रिप्स योजना स्वीकार कर ली जाती तो न पाकिस्तान वनता और न अग्नि परीक्षाएं लेनी पडती।

लोगों से मिलना जुलना वन्द सा था। इन्ही दिनों श्री

अरविन्द ने 23 दिन का उपवास किया। उपवास के समय उनका दैनिक कार्यक्रम ठीक-ठीक चलता रहा। आराम करने अथवा लेटे रहने की आवश्यकता नहीं हुई,वे अपने लक्ष्य की सिद्धि ईश्वर से साक्षात्कार मे तल्लीन रहे थे।

1920 मे लोकमान्य तिलक की प्रेरणा सेजोजेफ बेपटिस्टा ने श्री अरविन्द को एक पत्र लिखा जिसमे उनसे अनुरोध किया गया था कि वे राष्ट्रवादी दल के मुख्य पत्र का सम्पादन स्वीकार कर ले। तिलक को आशा थी कि इस तरह वे अरविन्द को राजनीति मे वापस ला सकेगे। परन्तु श्री अरविन्द ने उसे स्वीकार नहीं किया।

लाला लाजपतराय, देवदास गाँधी, देशबन्धुदास, पुरुषोत्तम दास टडन आदि ने पाडिचेरी आकर श्री अरविन्द से काग्रेस के सभापति पद को स्वीकार कर लेने के लिए आग्रह किया। लेकिन श्री अरविन्द ने राजनीति मे भाग न लेने का निश्चय नहीं बदला। इसी प्रसग मे उन्होंने देशबन्धु दास से कहा था - 'मै एक महती शक्ति की खोज मे हूँ। यदि वह शक्ति मिल गई तो उसी को आधार बनाकर अपना कार्य अपने ढग से करूगा' श्री अरविन्द को विश्वास था कि भारत का ऋण आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा ही हो सकता है और वे अपने पूरे बल के साथ उसे धरती पर लाने के काम मे लग गये।

पाडिचेरी मे आर्य नामक एक अग्रेजी मासिक प्रकाशन शुरु किया। श्री अरविन्द 'आर्य' के लिए जो लेख लिखते थे वे सीधे मशीन पर टकित करते जाते थे। उस समय के लिखे हुए लेख यदि आज पढे जाये तो ऐसा प्रतीत होता है मानो ससार की आज की परिस्थिति को देखकर अभी अभी लिखे गये है। इन लेखो मे उच्चतम अध्यात्मिक दृष्टि है। अग्रेजी साहित्य पर क्रान्तिकारी विचार है। भारत की सभ्यता और सस्कृति, कला, धर्म और उसकी राजनीति के बारे मे आध्यात्मिक दृष्टि से एकदम नयी वाते बतायीं गई है। मानव समाज की गुत्थियो को सुलझाकर भविष्य का एक ढाचा दिया गया है।

इसके बाद 15 अगस्त, 1947 को श्री अरविन्द ने वह ऐतिहासिक वक्तव्य दिया जिसे हम पहले देख आये है। गाँधी जी की मृत्यु पर जब सारे देश मे कोहराम मच गया तो तिरुचिरापल्ली रेडियो ने श्री अरविन्द का एक संदेश प्रसारित किया। उसमे उन्होंने फिर से इस बात पर बल दिया था कि इस देश के भाग्य मे लिखा है कि यह एक हो और महान् हो, उन्होंने कहा था कि भारत मा अपने बच्चो को अपने चारो ओर इकट्ठा करके एक महान् राष्ट्रीय शक्ति और सगठित प्रजा के रूप मे गढेगी।

कोरिया की लडाई के समय श्री अरविन्द ने फिर से एक बार राजनीतिक नेताओ को चेतावनी दी जिसमे चीन के भारत पर आक्रमण करने की सभावना दिखाई गई थी। परन्तु दुर्भाग्यवश देश ने क्रिप्स योजना सबधी सलाह की तरह इसकी भी अवहेलना की और परिणाम हमारी आँखो के सामने है।

श्री अरविन्द ने 5 दिसबर, 1950 को शरीर त्याग दिया।

❑

कविताएं

नारी

✍ छन्दराज 'पारदर्शी'

सबसे महान नारी, सभी सुखों की दातारी,
वीरों की है खान यह, शक्ति अवतार है।
बनी बहन-भौजाई, माता कहीं है लुगाई,
अनेक ही रूप लिए, माँ का दरबार है।
जननी ये जगदम्बा, कहीं काली-दुर्गा-अम्बा,
बालक की पालक ये, मानता संसार है।
सुनलो सब इन्सान, करो मत अपमान,
'पारदर्शी' नारी बिना, जीवन बेकार है।

पाठशाला

पाठशाला देती ज्ञान, हर लेती ये अज्ञान,
पढ़े लिखे योग्य लोग, यहीं से निकलते।
सरस्वती देवालय, मिटे भय हों अभय,
ज्ञान-चक्षु खुलें यहां, सदाचार सिखते।
जात-पॉत, भेद-भाव, भूल, छल-बल-दाव,
एक टाट-पट्टी पर, राजा रंक बैठते।
'पारदर्शी' भगवान, गुरु उनसे महान,
बिना-भेद समदृष्टि, ज्ञान-दान बांटते।

राजस्थान

राजस्थान जहाँ सूर्य, सदा ही चमकता है,
शौर्य और वीरता की, गाथाएँ अपार हैं।
हाड़ी रानी बलिदान, मीरां का जहर-पान,
राणा प्रताप से वीर, वीरों का भण्डार है।
पद्मावती रानी संग, जौहर सजाए रंग,
पन्नाधाय निज पुत्र, दिया प्रेम-प्यार है।
'पारदर्शी' राजस्थानी, धरती है बलिदानी,
आन-बान-शान न्यारी, मानता संसार है।

गुनाह भी करते है और साफ मुकर जाते है

✍ ओम केवलिया
एम ए , बी एड

ऐसे लोगा की तादाद रोज बरोज बढती ही जा रही है जो गुनाह भी करते हे और साफ मुकर जाते हैं उन्हे यह कमाल हासिल हे, इसी के जरीये उनको इस महारत की वजह से बहुत कुछ हासिल हो जाता हे, जिस भोलेपन का लबादा ओढे वे सब कुछ कर गुजरते हे जो हम ओर आप जैसो की बिसात के बाहर है।

एक लम्बे अरसे तक जेल की सीखचो के अदर बद रहने के बाद उस अपराधी ने साफ इकार कर दिया कि उसने कोई गुनाह किया था, उसे बाइज्जत बरी कर दिया गया।चश्मदीद गवाह नहीं मिला, मिल भी जाए तो जुबान खोलने की जुर्रत नहीं, जान को खतरा होना लाजमी हे । कई बार तो ऐसे लोगो का अभिनन्दन आर स्वागत समारोह तक की बडे पैमाने पर व्यवस्था भी हो जाती है, वहा उनकी तारीफो के पुल बाधे जाते हे फूल मालाओ से लाद दिया जाता है । उनकी मूर्त्तिया तक स्थापित कर दी जाती है तो जनाब, वे गुनाह भी करते हे और साफ मुकर जाते है । फिर ऐशो आराम की जिन्दगी बसर करते है । कानून अधा हे देख नही सकता। इसलिए आज तक अदालतो मे जितनी कसमे खाई जाती हे, वे कितनी सही होती है, उसे हम और आप बखूबी समझ सकते है । अधिकाश अपराधी तो स्वीकार ही नही करते कि उन्होंने कोई गुनाह किया भी है।

यह कहावत तो आप अच्छी तरह जानते है कि दुनिया को ठगो मक्कर से और रोटी खाओ शक्कर मे 'मक्कर' से तात्पर्य मक्कारी से हे, मतलब यह कि मक्कारी का सहारा लेकर चाहे गुनाहे कबीरा कर लो फिर साफ मुकर जाओ, कुछ नही होगा अपना अदाजे बया वक्त के मौजू होना चाहिए। यही इनकी दक्षता और सफलता का मापदण्ड हे। प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी इन्हे परेशान होते आप नहीं देख सकते।ऐसे लोग मौके की नब्ज को सही पहचान कर अपना उल्लू सीधा कर लेते हे।उनकी जिन्दगी मुस्कराती हे और दूसरो की दोजख बन जाती है यही वजह हे कि उनकी किस्मत एक झटके मे खुल जाती है तो दूसरो के खोपडे खुल जाते है, उन्हे तो अपने फायदे से मतलब है, वे तो तमाशा दूर से देखते है।डूबा करे कोई, उनकी बला से ।

अखबारो मे बयान छपते हे जब तीखी आलोचना होती हैं, जम कर खिचाई होती है तो एक बयान फिर उनकी तरफ मे जारी होता है कि तथ्यो को तोड मरोडकर पेश किया गया है। हमने ऐसा तो नहीं कहा था। ये बगुले भगत पाक दामन बने साफ मुकर जाते है लोग फिर खामोश हो जाते है, सिवाए इसके कोई चारा नही वरना गुनाह बेलज्जत होने का

अन्देशा बखूबी बना रहता है। मानवता के सभी आदर्शो को ताक पर रख कर ऐसे लोग न जाने कितने गुनाह करते रहते हैं।

तकदीर और तदबीर का सांमजस्य ऐसे लोगों की ही झोली में रहता है,पुरस्कार प्राप्त करने वालों में भी इनका अभाव नहीं है। आर्थिक खुलेपन का सहारा लेकर वे भी कई पुरस्कार झटक लेते हैं। इसमें काबलियत का होना उतना जरुरी नहीं है। सब कुछ बिक्री के लिए होता है, खरीददार चाहिए। जादू वह होता है जो सिर चढ कर बोले। इस तथ्य से ये जनाब अच्छी तरह वाकिफ होते हैं। इनकी सहनशीलता काबिले तारीफ कही जा सकती है। आज तो नोबल प्राइज जैसे पुरस्कार भी संदेह के घेरे में आते दिखाई देते हैं।उसमें ऐसे लोग घुस कर पैठ जमाने की जद्दोजहद करने लगे हैं। अपने नजरिए को जिस खूबसूरती से मोड देकर प्रस्तुत करते हैं,वह काबिले तारीफ होता है या तो मिर्जा गालिब का अंदाजे बयां था या अब इन महानुभावों का।

हमने भी हर चन्द कोशिश की इस फन में कामयाबी हासिल करने की, लेकिन अंजाम हमारे खिलाफ ही निकले। अपराधी जैसा माहौल पल्ले पडा, हमने आखिर तौबा की। यह हमारे बस का रोग नहीं था कि गुनाह भी करें और साफ मुकर जाएं। आखिर जमीर भी तो कोई चीज है। 'हजी' साहब के शब्दों में हम इस बात के कायल रहे कि अपना जमीर बेच कर खुशियां खरीद लें, ऐसे तो इस जहां के तलबगार हम नहीं।हमारी तो किश्ती अकसर वहां डूबती है जहां पानी बहुत कम होता है। यह बात नहीं है कि हमें मौके दस्तयाब नहीं हुए हों, लेकिन हमारी तथाकथित काबलियत इसे गवारा नहीं कर पाती है। वे अपने कार्य को खूबसूरती से सर अंजाम दे देते हैं,जबकि दूसरे लोग ऐसा कुछ करने की हिम्मत भी नहीं जुटा सकते

कहना पडता है - हम हारे उस ठोर जहां पर तुम ने बाजी मारी, जय हो संसार तुम्हारी। ऐसे लोग जहां भी मिलेंगे, आप उन्हें हर दिल अजीज पाएंगे। उनके आकर्षण का माहौल वहां बिखरा हुआ ही मिलेगा। बात को पचाने और पचा कर वक्त जरुरत पेश करने में इनका मुकाबला नहीं किया जा सकता। जमाने के बदलते जीवन मूल्यों से वे बखूबी वाकिफ रहते हैं। इनका जादू सिर चढ़ कर बोलता है अपना रंग ही नहीं, रंगीन नजारे भी पेशे खिदमत करता है, जिसकी बदोलत इनकी गिरफ्त में आया हुआ प्राणी इनका कायल हो जाता है। साधारण व्यक्ति को नियमों और सिद्धांतों का पाबन्द रहने से कई मुशकलात दरपेश आती हैं लेकिन इनके तो उसूल और कायदे कानून इन की अपनी पवित्र धरोहर है, जिसे ये किसी कीमत पर भी छोड नहीं सकते। एडजस्टमैन्ट भी नहीं कर सकते ऐसे महानुभाव यह कहने से भी गुरेज नहीं करते कि - हमको मिटा सके यह जमाने में दम नहीं, हम से जमाना खुद है जमाने से हम नहीं। हमारे दोस्त गोधूमल ने उस दिन बताया था कि देश की आजादी से पहले उनके एक परिचित को किसी अपराध में जेल की हवा खानी पड़ी थी, लेकिन शक की बिना पर वे साफ छूटकर आ गए थे। अब वह इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उस जेल यात्रा को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने का लेबल लगवा कर यह साबित करा दें कि उन्होंने भी इस आन्दोलन में हिस्सेदारी निभाई थी तथा इसीलिए उन्हें जेल के सींखचों में बन्द कर दिया गया था। अगर यह सब हो जाता है तो उनका क्या रूतबा हो जाएगा, हम और आप सभी जानते हैं। यह बात समझदारों के लिए सिरदर्द बन सकती है। वे थोडा

इन्हीं धार्मिक मान्यताओ के कारण समाज मे अनेक कुप्रथाए दृढ होती गईं। भारतीय नारी की अपनी मूढ़ता, विवशता और अध धार्मिक आस्था के कारण उनकी जडे और मजबूत हुईं।

सर्वप्रथम कुप्रथा बाल विवाह को ही ले। हम ऋग्वेद की ओर चलते है। ऋग्वेद की नारी शक्ति और औदार्य की सीमा है। युवती की हैसियत से वह अपना पति आप चुनती है। महाकाव्य काल तक बाल विवाह का नामोनिशान नहीं मिलता। इसके अन्त्य स्तर से सूत्रकाल आरम्भ होता है, जिसका प्रसार बुद्ध के समय से आरम्भ होकर शको के आक्रमणकाल तक है। राजनीतिक और सामाजिक परिणाम को सभालने के लिए भारतीय समाज शास्त्री विकल हो उठे। सूत्रकारो ने देखा कि विपत्तिकाल मे पति जितना पत्नि की रक्षा करता है, उतना अनेक पुत्र-पुत्रियो का पिता नही। अत व्यवस्था दी गई कि कन्या शीघ्र पत्नि बना दी जाये। तर्क सही था परन्तु परिणाम अत्यन्त कठोर। फलत बाल विवाह की नींव पडी। व्यवस्था पूर्व मे थी षोड्ष वर्षीया के विवाह की, परन्तु बाद मे आठ-आठ वर्ष की बालिकाए विवाहानल मे झोकी जाने लगी। जो दम्पति रजस्वला होने तक अपनी कन्या को अविवाहित रखे उसे नरक का भय दिखाया गया। महिलाओ की भीरुता ने उसे धार्मिक जामा पहनाया। परिणामत बाल विवाह के जघन्य उदाहरण इतनी उन्नति के बाद भी आज बडी तादाद मे देखे जा सकते है।

निम्न जातियो और ग्रामीण अचलो मे महिलाओ को बालविवाहो के दुष्परिणामो से अवगत कराना होगा। जिन परिस्थतियो मे यह प्रथा शुरु हुई और वर्तमान मे उनका कोई औचित्य नहीं है, यह भी उन्हे समझाना होगा। उन्हे जागरूक बनाकर इस प्रथा पर कुछ हद तक रोक लगाई जा सकती है।

समाज मे एक समस्या विधवाओ की भी है जिसके लिए बाल विवाह प्रथा भी उत्तरदायी है। वैदिककाल मे विधवा विवाह पर किसी प्रकार के नियत्रण नहीं थे। मनु ने सर्वप्रथम व्यवस्था दी कि किसी विधवा स्त्री को पुनर्विवाह के लिये सोचना भी नहीं चाहिए। सूत्रो ने धर्म की दुहाई देकर विधवा नारी का सम्पूर्ण जीवन शोषण और अमानवीयता से दयनीय बना दिया। जिसे बाद मे कन्यादान के आदर्श, पवित्रतावादी धारणाओ और भाग्यवादिता से इस प्रकार जोड़ दिया गया कि एक विधवा नारी की स्थिति समाज मे निम्नतम हो गई। महिलाओ की अध धार्मिक आस्था ने उसे और दयनीय बना दिया।

महिलाओ को प्रथम तो यह समझना है कि विधवा विवाह का जो विधान वैदिक युग मे और उसके बाद तक धर्मसम्मत था वह बाद मे केवल सूत्रकारो की व्यवस्था के कारण धर्म विरुद्ध कैसे हो गया ?

दूसरा जब पुरुष पुन विवाह कर सकते है और उनका यह कार्य धर्म के अनुकूल है तो स्त्रियो का क्यो नही ? विधवाओ की सख्या भारतीय समाज मे काफी रहती है। इतनी बडी सख्या मे यदि स्त्री का व्यक्तित्व अज्ञानता, उदासीनता और शोषण मे बीत रहा है, तब किस प्रकार समाज का पूर्ण विकास हो सकता है एव विधवाओ की गोद मे पल रही भावी पीढी से किस प्रकार प्रगतिशील होने की आशा की जा सकती है। मुख्य बाधा बाहर से नहीं अपितु महिलाओ के उस बडे वर्ग से रहती है जो अशिक्षित है और धर्म भीरु भी। महिलाए कब तक अपनी विधवा बहनो का शोषण करती और देखती रहेगी। उन्हे परिस्थितियो को समझाना होगा और समय की पुकार को सुनते हुए अपने मानस को बदलना होगा। इसी मे सम्पूर्ण स्त्री जाति का हितनिहित है और इसी मे समाज का।

सामाजिक कुप्रथा दहेज भी समाज के लिये अभिशाप

है। धर्मशास्त्र युग तक कन्या के विवाह के समय पिता वस्त्र आभूषण आदि अपनी इच्छा और सामर्थ्य के अनुसार देता था लेकिन मुस्लिम शासन काल में जब सामाजिक रुढ़ियां अधिक प्रभावपूर्ण हो गई तब कुलीन परिवारों ने अपनी उच्च स्थितियों को ध्यान में रखते हुए कन्या पक्ष से अधिक उपहार लेना प्रारम्भ किया। बाद में पुत्र विवाह एक लाभप्रद सौदा समझा जाने लगा। आश्चर्य तो यह है कि शिक्षा और सामाजिक चेतना में वृद्धि के साथ-साथ दहेज प्रथा भी एक संक्रामक बीमारी की तरह फैलती जा रही है।

महिलाओं में दहेज के प्रति विशेष आग्रह रहता है। उनकी संकुचित जातिबिरादरी और झूठी मान प्रतिष्ठा की विचारधारा से इस प्रथा को और बढ़ावा मिलता है। यदि सभी पुत्रों की माता महिला यह निर्णय ले लें कि वे दहेज नहीं लेंगी तो उनको अपनी पुत्रियों के लिए दहेज जुटाने की समस्या नहीं रहेगी। हम शिक्षित महिलाएं आगे आकर उदाहरण प्रस्तुत कर सकती हैं। सुखद परिणाम होगा नारी की शक्ति का मूल्यांकन पैसे से नहीं वरन योग्यता से किया जा सकेगा एवं पुत्रियों का जन्म परिवार के लिये बोझ नहीं बनेगा।

भारतीय समाज में एक कुप्रथा पर्दे की रही है, जिसे हम अपनी पुरानी प्रथा बताती हैं। लेकिन भारत में महाकाव्य काल तक पर्दे की प्रथा बिल्कुल नहीं थी, मध्ययुग में कुछ दुश्चरित्र बाहरी आक्रमणकर्ताओं की कुदृष्टि से बचाने के लिए स्त्रियों को पर्दे में रखे जाने की आवश्यकता अनुभव की गई। वैसा करना परिस्थितियों को देखते हुए उचित था परन्तु अब इस प्रथा को जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है। वरन इस प्रथा के कारण स्त्रियों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता तथा उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। महिलाओं की जागरूकता के कारण यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। लेकिन ग्रामीण अंचलों में अभी भी यह कुप्रथा विद्यमान है।

भारतीय मुस्लिम समाज़ में भी अनेक कुप्रथाएं विद्यमान हैं। मुस्लिम समाज परम्परावादी तथा धार्मिक कट्टरता में विश्वास करता है। यही कारण है कि नवीन परिवर्तनों के बावजूद मुस्लिम समाज में बहुपत्नीत्व विधान एवं तलाक की दोषपूर्ण पद्धति के कारण स्त्रियों की स्थिति समाज में निम्नतम बनी हुई है। आज भी अनेक शाहबानुएं न्यायालयों के द्वार खटखटाने के बाद भी पुनः घरों की चारदीवारी में कैद हो गई हैं।

इन सामाजिक कुप्रथाओं से निपटने के लिये महिलाओं को जागृत करना होगा। स्वयं महिलाओं को अपनी संकीर्ण धारणाओ से निकलना होगा। यह संभव होगा उन्हें सच्ची शिक्षा देकर। सच्ची शिक्षा से तात्पर्य पुस्तकीय शिक्षा से नहीं वरन ऐसी रचनात्मक शिक्षा से है जो व्यक्ति के चरित्र का निर्माण कर सके, जो उसके बौद्धिक विकास में सहायक हो सके और जिससे व्यक्ति अपने पावों पर खड़ा होकर आत्मनिर्भर बन सके। ऐसी सच्ची शिक्षा प्राप्त होने पर महिला सामाजिक समस्याओं का साहस और आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकेंगी। उचित-अनुचित का भेद समझ सकेगी और जाति बिरादरी के संकीर्ण दायरों से बाहर निकल व्यापक दृष्टिकोण बना सकेंगी। यदि हम महिलाएं तिलक की भांति यह प्रण ले लें कि समाज में समानता औग सम्मानजनक स्थान प्राप्त करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगी तो दुनिया की कोई ताकत हमें इससे नहीं रोक सकेगी।

संघर्ष और नारी

✍ कु कल्पना गुप्ता
द्वितीय वर्ष, कला

शत् शत् वर्षों का इतिहास यही,
नारी संघर्ष के साथ रही।
जीवन मधुमय मृदु कुसुम कानन,
महका संघर्ष सौरभ से।
वारि न वारिद बन पाए,
यदि सहे न ताप रवि कर से।
संघर्षों की प्रतिछाया सी,
नारी अबला से प्रबला बनी।
विपिन के महान विटप सी,
उसकी है महिमा आज तनी।
कभी राष्ट्र स्वातन्त्रय के वशीभूत,
फिरंगी के लिए काल सम।
कभी झांसी का अदम्य साहस,
तो हजरत महल की गाथा दृग अरुण नम।
सिन्धु उद्वेलित तरंगों पर,
जब शरद विकास नये सिरे से।
मनु के संग श्रद्धा तरणी पर,
रघुकुलमणि वैदेही संघर्षरत वन से।
अपने अस्तित्व स्वाभिमानवश,
हर तूफां से है लड़ती रही।
उसकी संघर्ष गौरव गाथा,
अतीत ही नहीं, वर्तमान यही।
विज्ञान युग केवल नर-पौरुष नहीं,
नारी की भागीदारी है।
नभ-ऊंचाई सागर-अन्वेषण का,
श्रेय नारी को, जिसकी वह अधिकारी है।

अपनी उर्वर प्रतिभा से,
संघर्षरत तन-मन से।
नव्य सृजन करती वह,
अपने बाहु-विवेक बल से।

मानव जीवन, सभ्यता विकास,
संघर्ष तो उसकी थाती है।
कंटक पथ अर्पित जिसका जीवन,
संघर्ष विलग कैसे रह पाती है।

संघर्षों में जिसने जन्म लिया,
संघर्षों में जीवन बिताती है।
नारी संघर्ष के संग, संग संघर्ष नारी,
दिशाएं भी गाती है।

मूर्खों से राय लेना, दुष्टों से प्रीत करना, उचित बात से द्वेष करना, प्रमाद करना और सामर्थ्यशाली मनुष्य से विरोध करना, यह सब विधाता के विमुख होने-अर्थात् भाग्यहीनता के लक्षण हैं।

- क्षेमेन्द्र

●

धन की कमी होने पर निरंतर घी, नमक, तेल, चावल, वस्त्र, लकडी की चिंता से बड़े-बड़े बुद्धिमानों की भी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

- पंचतन्त्र

●

सत्यवादी माता की तरह विश्वासपात्र होता है, गुरू की तरह लोगों का पूज्य होता है तथा स्वजन की तरह वह सभी को प्रिय लगता है।

- भक्त परीक्षा प्रकीर्णक

●

जो निःस्वार्थ भाव से किसी का उपकार करता है, वही साधु है।

- स्कंदपुराण

एडवेंचर एकेडमी ऑफ राजस्थान पर्वतारोहण साहसिक खेलो की ओर बढते कदम

✍ सुनील कुमार साघी

राजस्थान जिसका कण कण साहस व सुर लहरियों की मधुर रोमाचक गूज व गाथाओ से रचा बसा। इतिहास, अतीत से वर्तमान तक, देश से विदेश तक आज भी सभी को अपनी ओर सम्मोहित कर रहा है। यही नहीं प्रकृति ने भी अपनी विभिन्न विधाओ - कहीं झीलो की नगरी, तो कहीं मरूभूमि के धोरे, कहीं विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रृखला से इसे सवारा और निखारा है।

इस सम्मोहन ने एक ओर आधुनिक महासम्मोहन की कडी पर्वतारोहण व साहसिक खेलो का राज्य मे वातावरण तैयार करने, सभी आयु वर्ग के नागरिको को इससे जोडने, पर्यावरण सवर्द्धन व सरक्षण का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य लिये हुए राजस्थान की राजधानी जयपुर जिसे खूबसूरती मे 'पेरिस' व शिक्षा की दृष्टि से 'काशी' कहा जाता है, यहा वर्तमान खेल मत्री श्री भवर लाल जी शर्मा की प्रेरणा से अक्टूबर, 1994 मे रजिस्टर्ड सस्था के रूप मे 'एडवेचर ऐकेडमी ऑफ राजस्थान' का गठन किया गया।

1995 मे भारतीय पर्वतारोहण सस्थान, नई दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त कर अकादमी ने पर्वतारोहण की तकनीको - क्लाइम्बिग, रेपलिग, ऑपरेशन रेसक्यू व ट्रेकिग का राज्य के नागरिको को नि शुल्क प्रशिक्षण दिया गया। इन गतिविधियो का विभिन्न विद्यालयो, महाविद्यालयो, सस्थाओ व विभागो मे प्रदर्शन किया, आधुनिक प्रचार माध्यमो - लेख, पत्रपत्रिका व दूरदर्शन न्यूज कवरेज का सहयोग प्राप्त कर राज्य के सुस्त पड़े साहसिक खिलाडियो के माहौल मे रोमाच व उत्साह का वातावरण तैयार किया है।

अकादमी द्वारा माह मई, 1996 से नवम्बर, 1996 तक सात नि शुल्क प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया है एव राज्य के सर्वोच्च शिखर स्थल 'माउन्ट ऑबू' मे पर्वतारोहण ट्रेकिग एव रॉक क्लाइम्बिग अभियान का सफल आयोजन भी किया गया है। साथ ही अकादमी राष्ट्रीय स्तर के पर्वतारोहण प्रशिक्षण सस्थाओ मे यहा के प्रशिक्षणार्थियो को चयनित कर उच्च प्रशिक्षण के लिए भिजवा रही है। बीकानेर मे होने जा रही आर्टिफिशयल रॉक क्लाइम्बिग प्रतियोगिता 25 दिसम्बर से 27 दिसम्बर, 1996 के लिए भी दो

प्रशिक्षणार्थियों को चयनित कर भिजवाया गया है।

आज जबकि हमारा पूरा सामाजिक परिवेश जिसमें शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण अंग है उतनी प्रतिभा को चुनौती देने वाला नहीं है, जहां से कृष्ण या राम, बुद्ध या महावीर, मीरा या कबीर, प्रताप या सुभाष, टेगोर या विवेकानन्द जैसे महानायकों का निर्माण किया जा सके। चुनौती ही चेतना को जागृत करती है और मनुष्य सर्वाधिक चैतन्य प्राणी है। अतः यह अकादमी खेल ही खेल में साहस, संयम, विवेक एवं सामूहिक भावना का विकास करने तथा मनुष्य को प्रकृति प्रेमी बनाने में समर्पित है, जिससे राज्य का प्रत्येक नागरिक ऐसे रोमांचक व साहसिक शिक्षा की सुरभि से ओत प्रोत होकर स्वराष्ट्र, स्वभूमि व राष्ट्रीय संस्कृति के संवर्द्धन, संयोजन की दिशा में योगदान कर सके। आपातकाल में अग्नि, बाढ व अन्य प्राकृतिक आपदाओं की परिस्थिति में इन तकनीकों का प्रयोग कर स्वयं अपने व अन्य व्यक्तियों तथा सम्पदा को अपने साहस व शौर्य के साथ बचा कर स्वयंसेवक की भूमिका को बखूबी से निभा सके जिसके परिणामस्वरूप हम अपनी सेना व पुलिस को इन कार्यो से मुक्त करने में सफल हो सकें।

अकादमी का आठवां प्रशिक्षण शिविर प्रातः व सायंकाल दो चरणों में चल रहा है। प्रातःकालीन शिविर का श्रेय श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर की प्राचार्य डा. श्रीमती भगवती स्वामी को है जो अपने विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के प्रति जागृत है। जब उन्हें अकादमी की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई तो उन्होंने अकादमी को अपने महाविद्यालय में निमंत्रण देकर प्रदर्शन करवाया। साथ ही छात्राओं को इस ओर प्रेरित कर डॉ. शशि भार्गव व्याख्याता का सहयोग प्राप्त कर अपने महाविद्यालय में ही शिक्षण कार्य के साथ साथ पर्वतारोहण तकनीकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी उपलब्ध करवायी।

महाविद्यालय की छात्राओं ने भी इस चुनौतीपूर्ण व रोमांचक खेल को सहर्ष स्वीकार किया तथा अपनी क्षमताओं से कहीं अधिक परिश्रम कर अपने को एक बेहतर खिलाड़ी सिद्ध किया। पर आज कितने शिक्षण संस्था व अन्य विभाग इसके प्रति जागरूक हैं और अपने विद्यार्थियों के मानसिक व शारीरिक विकास की ओर रुचि ले रहे हैं। वास्तव में श्रीमती स्वामी जैसे चन्द व्यक्ति ही इसका अपवाद हैं, अन्यथा अधिकांश विद्या के केन्द्र व संचालक इस दिशा में नकारात्मक विचार लिये हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप आज भी हमारी सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु किताबी ज्ञान व योग्यता का मानदंड डिग्रियां व उपाधियां हैं। जबकि किताबी ज्ञान में कहीं जाना नहीं है यह तो शब्दों का खेल है, तोते की तरह रट लेंगे, याद कर लेंगे और मान लेंगे पहुंच गये शिखर पर। जैसे कोई हिमालय के नक्शे को लेकर बैठ जाये और सोचे पहुंच गये लेकिन तेनजिंग व हिलेरी को जब गोरी शंकर चढ़ना है तो वह नक्शे को तोते की तरह रटने जैसा नहीं है, यह जीवन को दाव पर लगाना है। भय प्रतीत होता है पता नहीं रास्ता कहां ले जावे और पता नहीं रास्ते में क्या घटे, मृत्यु भी हो सकती है, जो है वह भी खो सकता है। यह कहावत सही है कि जीवन के फूल खतरों में खिलते हैं जैसे - गुलाब कांटों में खिलते महकते हैं।

एक बार इस देश को, हमारे शिक्षाविदों को, समाज को यह चिन्तन करना होगा कि आज हम गलत

क्यो हो गये ? आज हमारे राष्ट्र का प्रत्येक क्षेत्र मे नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक, कला दर्शन या खेल ही क्यो न हो पतन क्यो होता जा रहा है ? अगर वीज मीठा था तो फल कडवा कैसे ? फल ही सबूत है कि वीज कैसे थे ? हम सवूत है अपने पूरे अतीत के। अगर हम गलत है तो हमे जानना पडेगा कि हमारे अतीत की प्रक्रिया गलत रही है और अव हमे नयी प्रक्रिया और जीवन दिशा को चुनना है किन्तु आज भी हमारे शिक्षा के केन्द्र शायद रेत से तेल निकालने की चेष्टा मे सलग्न है। अत आज विद्यार्थी के जीवन की रसधार प्रतिदिन सूखती चली जा रही है। उनके जीवन मे न नाच है, न उमग है, न उत्सव है। आज हमारे शिक्षा के केन्द्र धीरे धीरे जेलो की भाति वनते जा रहे है तथा विद्यार्थी चोरो की भाति दीवार फाद कर भाग जाना चाहते है।

चूकि समस्त सम्भावनाए वीज मे छिपी है और विद्यार्थी स्वय एक वीज की भाति है। अत मनुष्य के जीवन मे विद्यार्थी काल का बडा महत्त्व है। इसलिए हमे पुन विद्यार्थी को हमारी प्राचीन कला व सस्कृति की उर्वर भूमि, साहित्य एव विविध भाषायी रूपी खाद व खेलो की विविध विधाओ से युक्त मीठे जल से सींचना होगा, तभी वह जीवन की किसी विपरीत परिस्थिति मे भी सकट से निकलने मे समर्थ हो सकेगा, सरल व सतुलित जीवन जी सकेगा और एक फूल की भाति खिल अपनी सुरभि से राष्ट्र व विश्व को महका सकेगा।

यह तो सर्वविदित सत्य है कि कोई भी खेल बिना एडवेचर के नहीं खेला जा सकता किन्तु एडवेचर खेलो की अन्य खेल से अलग यह पहचान है कि ऐसे खेलो के सामान्यत खेल नियम नहीं होते, करके दिखाना होता है। अन्य खेलो मे खिलाड़ी को खेलने मे जब तक रोमाच व आनन्द की अनुभूति नहीं होती जब तक दर्शको की विशाल सख्या न हो, दर्शक दीर्घा खचाखच भरी न हो, जबकि पर्वतारोहण व अन्य साहसिक खेलो के खिलाड़ी ऐसे रोमाचक खेलो को प्रकृति की गोद मे खेलते है और प्रकृति ही उनकी दर्शक है। साथ ही एक व्यक्ति जीवन मे जिस उपलब्धि तक पहुचे (जैसे एवरेस्ट पर विजय) आवश्यक नहीं कि पुन प्रयास करने पर मौसम या अन्य प्राकृतिक व शारीरिक कारणो मे दुबारा भी उसमे सफलता प्राप्त कर सके।

केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार व कुछ अन्य सस्थाओ ने भी अपने अधीनस्थ कर्मचारियो को पर्वतारोहण ट्रेकिग व अभियानो मे भाग लेने के लिए सुविधाए प्रदान कर रखी है जिसमे ऐसे व्यक्ति जो भारतीय पर्वतारोहण सस्थान, नई दिल्ली से अनुमोदित इन पर्वतारोहण ट्रेकिग/अभियान मे चयनित होकर भाग लेते है तो उन्हे एक वर्ष मे अधिकतम 30 दिवस का (राजकीय अवकाशो को छोड कर) विशेष आकस्मिक अवकाश स्वीकृत करने का प्रावधान रखा गया है।

राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा मे प्रवेश नीति सन् 1996-97 के लिए साहसिक खेलकूद प्रतियोगियो को प्रोत्साहन दिया है। इस नीति के अन्तर्गत आधारभूत पर्वतारोहण कोष या किसी पर्वतारोहण अभियान (20 हजार फुट या उच्च शिखिर पर) मे भाग लेने वाले, पैरा जम्पिग कोर्स, स्नोस्कीइग कोर्स मे से किसी एक के लिए चयनित होकर उस गतिविधि मे भाग लेने वाले विद्यार्थियो को प्रवेश योग्यता सूची मे वरीयता निर्धारण हेतु प्राप्ताको मे तीन प्रतिशत की वृद्धि का लाभ दिया गया है। निश्चय ही इससे

साहसिक खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा।

वर्तमान में केन्द्रीय सरकार, खेल एवं युवा मामलात विभाग, राजस्थान सरकार तथा राज्य क्रीड़ा परिषद् का राज्य में साहसिक गतिविधि के प्रोत्साहन व विकास की ओर विशेष रूझान रहा है। इस अकादमी को राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त आर्थिकं सहायता का परिणाम है कि यह अकादमी निःशुल्क प्रशिक्षण शिविरों, प्रदर्शनों व अभियान के माध्यम से तेजी से अपनी लक्ष्यों की ओर अग्रसर हो रही है तथा अकादमी द्वारा सामान्यतः प्रत्येक माह की पांच तारीख से बीस तारीख तक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों में जो भी नागरिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहता है संस्था के रजिस्टर्ड कार्यालय सी-74, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर फोन : 515681 व 515392 से वांछित जानकारी व सम्पर्क कर आवेदन प्राप्त कर प्रशिक्षण ले सकता है।

अकादमी का नवीन प्रयास इस दिशा में है कि अगर हमें अपने गांव, राज्य, देश व विश्व के पर्यावरण को वचाना है, वन सम्पदा को वचाना है तथा पहाड़ों के विदोहन को रोकना है, पर्यावरण व सामाजिक प्रदूषण से मुक्त कर मूल सद्गुणों का विकास करना है तो हमें हर नागरिक को पर्वतारोही बनाना आवश्यक है क्योंकि पर्वतारोही से बेहतर प्रकृति प्रेमी, न्यूनतम भौतिकवादी व सेल्फ अण्डरस्टेडिंग वाला व्यक्ति शायद ही कोई ओर खेल प्रेमी हो सके। एक पर्वतारोही जानता है -

''क्या है वनों के उपकार
मिट्टी पानी और ब्यार,
मिट्टी पानी और ब्यार,
ये हैं जीवन के आधार''

और जो व्यक्ति जीवन के आधार को प्रकृति समझने लगे, प्रेम करने लगे,उसकी गोद में खेलने लगे,वह व्यक्ति इसे कभी नष्ट नहीं कर सकता। मेरा सभी आयु वर्ग के नागरिकों को यह संदेश है कि खेलो प्रकृति की गोद में, करो हिम्मत, चलो थोड़े कदम, थोड़े कदम चल कर आप स्वयं पायेंगे कि जीवन की रसधार बहने लगी, फिर कोई न रोक सकेगा, थोड़ा स्वाद, संकल्प व हिम्मत की जरूरत है, ये मिल जाये फिर आप अपने वल पर ही चल पड़ेंगे और एक एक चल कर हजारों मील की यात्रा अन्तत.पूरी कर लेंगे।

❑

जो अपने आश्रितों को वांटकर थोडा ही खा लेता है, अधिक काम करके थोडा ही आराम करता है और मांगने पर शत्रु को भी दान देता है, उस आत्मज्ञानी को अनर्थ स्पर्श नहीं करते।

- महाभारत

मीठे वचन

✍ राजेन्द्र प्रसाद वर्मा

जीवन को उन्नत एव सफल वनाने के लिए जहा एक ओर उच्च शिक्षा, स्वस्थ व सुदृढ शरीर की आवश्यकता होती है, वहीं दूसरी ओर मधुर वाणी की भी आवश्यकता होती है। इसके सहारे सभी कार्य सरलतापूर्वक पूर्ण किये जा सकते है। यह एक ऐसा गुण है जिसके सहारे पराये को भी अपना वना सकते है। मनुष्य तो क्या पशु पक्षी तक भी अपनी बोली के कारण देवता बन जाते है।

अव वेचारे कौए को ही लीजिए, यह किसी का कुछ भी नहीं लेता, फिर भी उसे अपने मकान की छत पर वैठने नहीं देते। इसके प्रति मानव की घृणा यहा तक वढ गई है कि उसके दर्शन मात्र को भी अपशकुन समझा जाने लगा। इसके विपरीत कोयल समाज को कुछ भी नहीं देती फिर भी वह अपनी बोली के कारण सबके मन को भाती है। कोयल अपने स्वाभाविक गुण के कारण सोने के पिजडे मे बन्द रहकर राज दरबार की शोभा बढाती है, जबकि कौआ अपनी बोली के कारण किसी झोपडी की छत पर भी चैन से नहीं बैठ पाता।

मृदुभाषी का समाज मे आदर होता है, सबकी सहानुभूति रहती है, सम्पर्क मे आने पर अनजान व्यक्ति भी उसके अपने बन जाते है और आदर करते है। उसके मुख से निकले हुए एक एक शब्द सुनने वाले का मन खुशी से झूम उठता है और ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके मुख से वाणी रूपी सुगन्धित पुष्पो की झडी लग रही है। मधुर वाणी बोलने से केवल सुनने वालो को ही आनन्द की अनुभूति नही होती बल्कि बोलने वाले को भी आत्मिक आनन्द का अनुभव होता है,क्योकि उसके मन का अहकार एव गर्वपूर्ण भावनाए स्वत ही समाप्त हो जाती है। मानव मे नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि गुणो का उदय होने से, जीवन प्रकाशपूर्ण और शात बन जाता है।

मीठे वचन वह औषध है जिससे मानव के सभी हृदय विकास दूर हो जाते है, एक ऐसा वशीकरण मत्र है जिससे दूसरो के हृदय मे बैठा जा सकता है, यह एक ऐसा ब्रह्मास्त्र है जिससे दूसरो के हृदय मे घाव नहीं होता अपितु स्नेह की गगा बहने लगती है। इसके विपरीत जो काम शस्त्र नहीं कर सकते है वह काम मानव की कटु वाणी कर देती है। शस्त्रो के घाव तो चिकित्सा कराने पर भर जाते है लेकिन शब्दो के पेने बाण मानव हृदय मे घुसकर ऐसी टीस चलाते है कि मानव तिलमिला उठता है।

समाज मृदुभाषी को "विद्वान" एव "देवता" आदि उपाधियो से सुशोभित करते है, वहीं इसके विपरीत आचरण करने वालो को "राक्षस"। ❑

विडम्बना

सावित्रीदेवी रांका

लम्बी यात्राओं में प्रायः ऐसे क्षण आते हैं जब कोई घटना अन्तरतम की गहराइयों में समा जाती है और भुलाए नहीं भूलती।

अपनी एक यात्रा के बीच किसी युवा मन की व्यथा ने मुझे इस प्रकार झकझोर दिया था कि आज भी उसके निःश्वासों की ध्वनि मेरे कानों में गूंज रही है। वैसे भी रेल के एक ही डिब्बे में बैठे यात्री चाहे कितने ही अनजान और अपरिचित क्यों न हो उनमें समता और सहानुभूति की एक सहज भावना आ ही जाती है विशेषकर स्त्रियों में। अवकाश और विश्राम के इन अमूल्य क्षणों में वे अपने अपने परिवार का परिचय तक पूर्ण निष्कपटता से दे डालती हैं फिर चाहे पति, पुत्र, बहू की बड़ाई हो या बुराई, कुछ भी छिपाया नहीं जाता। आज की सभ्यता में इसे ओछापन ही माना जाएगा। पर जिस युवती की यह कथा है, वह बीसवीं सदी की होते हुए भी पुरानी मान्यताओं की ही एक विश्रृंखलित कड़ी थी।

अपनी पिछली यात्रा में रिजर्वेशन न मिल जाने के कारण मैंने रात की यात्रा महिलाओं के डिब्बे में ही करना उचित समझा। काफी बड़ा कक्ष था वह और यात्रियों की संख्या भी अधिक नहीं थी। कुली से सामान रखवा कर मैं एक खाली सीट पर बैठने जा ही रही थी कि मेरी दृष्टि सामने की ओर थोड़ी दूरी पर खड़े एक युवा पर गई। उससे लगभग सटी हुई सी घूंघट काढ़े एक युवती खडी थी। दो बच्चे आमने सामने की सीटों पर लेट चुके थे। उसका सामान भी अभी तक अस्तव्यस्त पडा था, क्योंकि दोनों ही बातों में अत्यधिक व्यस्त थे। युवती शायद रो रही थी क्योंकि उसके कंठ से दीर्घ निःश्वासों की ध्वनि बार बार निकल रही थी। सामने खड़ा युवक उसे बार बार धीरज बंधाता, आश्वासन देता, पत्र लिखने की बात कहता तथा दूसरी ओर मुड़ कर बच्चों को भी थपथपा देता। उनके सौभाग्य से ट्रेन भी लगभग एक घंटा लेट थी, पर इस अनवरत वार्तालाप का क्रम टूटने का नाम ही नहीं ले रहा था। शायद उन्हें कुछ अधिक समय देने की विधाता की यह योजना हो, पर युवती की आवाज में जो व्याकुलता जो निरीहता ओर प्रार्थना पहले थी वैसी ही अब तक बनी हुई थी। अपने सामने के इस दृश्य से तंग आकर मैं बाहर की ओर देखने लगी। मेरी खिड़की के ठीक सामने खडी एक दूसरी युवती बड़ी व्याकुलता से उस युवक की प्रतीक्षा कर रही थी। संबंधों के इस त्रिकोण को जानने की मेरी जिज्ञासा अब न चाहते हुए भी कहीं अधिक बढ़ गई थी। थोड़ी देर बाद युवक सीट पर सोई बालिका की ओर बढ़ा उसे छाती से लगाकर खूब प्यार किया। बच्ची ने भी 'पापा!' कहकर हिचकी ली और उसके रूदन का

वाध फूट पडा। विचित्र उद्विग्नता मे दम घुट रहा था, पर अभी तक रहस्य का कोई भी किनारा मेरी पकड मे नहीं आया था।

गाडी ने व्हिसिल दी। डिब्वे से उतरने की तैयारी मे वह युवक दरवाजे की ओर वढा। किसी नाटक के पूर्व नियोजित दृश्य के अनुसार रोती हुई वह युवती भी घूघट उठाकर खिडकी मे आ गई और अव वह युवक उसके सामने खडा था। खिडकी के पास खडी युवती कहीं दूर खिसक गई थी। गाडी ने दूसरी व्हिसिल दी, युवती ने अधीर हो उस पुरुष का हाथ खींच कर उस पर अपना हाथ रखा, फिर धीरे से उसे चूम लिया। गाडी चलने लगी। अव वह खिडकी छोडकर दरवाजे पर आ गई थी, वहुत दूर तक उसे देखने के लिए। गाडी अपनी गति मे आ रही थी, अत मे लूटे हुए हताश व्यक्ति की भाति धम से वह अपनी सीट पर वैठ गई। वीच वीच मे दीर्घ नि श्वासो और सिसकियो की करुण ध्वनि उसके कठ से निकल रही थीं।

यह सव माजरा क्या है, जानने की उत्सुकता मे मैंने उसकी वच्ची से पूछ ही लिया क्यो वेवी, क्या यह तुम्हारे मामा जी थे? नहीं ये तो मेरे पापा थे, सुनकर मुझ ऐसा आश्चर्य हुआ जैसे किसी ने अचानक मुझे धक्का दे दिया हो।

मुझे अपनी वच्ची से वात करते देख वह भी मेरी ओर मुडी, मुझे लगा इस समय उसे सहृदय की अत्यधिक आवश्यकता है, जिसे उफनते हुए हृदय की व्यथा सुनाकर वह सहज हो जाना चाहती है। वातचीत से मालूम हुआ कि वह मा के पास अहमदावाद जा रही है और केवल दस दिन पहले ही वह अपने पति के साथ रहने के लिए दिल्ली आई थी। पति के अत्यधिक मोह से त्रस्त इस महिला को मा के पास न जाने का परामर्श देना मुझे सहसा भीतर तक कचोट गया क्योकि व्यथित होते हुए उसने जो कहा था उससे जान पडता है कि वह कभी भी उसे दस-पन्द्रह दिन से अधिक अपने पास नहीं रहने देता। विवाह हुए पाच साल हो गए है, पर पिछले चार साल से निरन्तर यही क्रम चल रहा है। वडी आशाओ, भावी निश्चयो के साथ मा के हार्दिक आशीर्वादो और मगल कामनाओ से लदी वह दिल्ली आती है और दस दिवस की अवधि वीतते ही वह हसता मुस्कराता अहमदावाद का टिकट लेकर उसके सामने उपस्थित हो जाता है। रात होते होते वच्चो तथा कुछ जरूरी सामान से लदी फदी वह उसके साथ इस जनाने डिब्वे मे आकर बैठ जाती है। अपनी ओर वच्चो की सुरक्षा की कोरी हिदायतो से उमका भविष्य वोझिल वनाता हुआ यह छली ट्रेन खिसकते ही उस वाहर वाली युवती के साथ सटा हुआ उसकी आखो के आगे से ओझल हो जाता है। मैने देखा यह सव कहते हुए उसकी अश्रुधारा लगातार वह रही थी तभी गोद के वच्चे की नन्हीं सी पुकार ने उसका ध्यान तोडा और कुछ स्वाभाविक हो वह वर्तमान मे लौट आई। आसमान मे चढी वदली का वोझ अभी हल्का नहीं हुआ था। मुझे लगा अभी वह कुछ और कहना चाहती है। उसकी दीर्घ नि श्वासो ने मेरी समग्र चेतना को उसकी ओर उन्मुख कर दिया। वह फिर कहने लगी अभी अभी जो पुरुष उससे वाते कर रहा था, वही उसका पति था। और वाहर खडी वह स्त्री जो अति व्यग्रता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी? मैंने पूछा। वह, वह उसकी पत्नी थी, उसने उत्तर दिया। थोडी देर पहले मै उसे यही कह कर समझा रही थी कि यदि वह पति को छोडकर मा के पास नहीं जाना चाहती तो फिर यह सव स्वाग किसलिए? पर जब

उसकी विवशता देख, अज्ञानतावश दिए गए अपने निर्णय पर स्वयं मुझे पश्चाताप हो रहा था। पत्नी वाली बात से मुझे बहुत क्रोध आया था। मेरी उत्सुकता जान वह फिर कहने लगी, वह व्यक्ति जो अभी अभी यहां से गया है, दिल्ली के एक प्रसिद्ध मंदिर का पुजारी है, काफी बड़ी आय है उसकी। आज से पांच वर्ष पहले यही व्यक्ति अहमदाबाद में किसी सेठ की मिल में काम करता था। बड़े ही नेक सदाचारी युवक के रूप में इसकी प्रतिष्ठा थी। मेरे पिता भी उसी मिल में काम करते थे। प्रारम्भ में उन्हें के साथ इसका हमारे घर आना जाना शुरु हुआ। पिताजी तो इस पर मोहित ही थे, मेरे सामने, मां के सामने इसकी प्रशंसा करते अघाते नहीं थे। इधर अपनी सच्चरित्रता के प्रसाद स्वरूप यह सेठ के मंदिर का काम देखने तथा वहीं रहने लगा था।

मेरे पिताजी के इसके प्रति अत्यधिक झुकाव का कारण भी यही था कि इसने उन्हें एक बार नहीं, अनेकों बार यह विश्वास दिलाया था कि वह संसार में नितान्त अकेला है। माता-पिता, भाई बहन उसके कोई भी नहीं है। शायद इसी तरह के किन्हीं भावुक क्षणों में उन्होंने इसे अपनी इकलौती पुत्री सौंप देने का निश्चय कर लिया था।

मेरा विवाह भी खूब धूमधाम से हुआ। कितनी कृतज्ञता ज्ञापित की थी उस समय इस कपटी ने, कहते कहते वह क्रोध से कांपने लगी। बीच बीच में तेजी से वहने वाला अश्रुजल ही उस उत्तेजना की सर्वोत्तम औषधि थी। विवाह के बाद इसके भूत से अनभिज्ञ मेरा एक वर्ष वडे ही आनन्द में बीता और इस अवोध कन्या का पदार्पण भी हो गया।

इसी वीच पिताजी जी की पुरानी खास की वीमारी भयंकर रूप धारण करती जा रही थी। उस समय उनकी निरीह थकी हुई आंखें बड़ी ही विचित्र दृष्टि से सबकी ओर देखती। उन्हें ऐसी ही स्थिति में छोड यह दिल्ली चला आया। और जब यह लौटा उस समय पिताजी नहीं थे। अहमदाबाद की नौकरी छोड दिल्ली में बसने का निश्चय कर यह फिर चला गया। मकान आदि का प्रबन्ध करके मुझे ले जाने का आश्वासन भी दिया था, पर वह आश्वासन कोरा आश्वासन ही रहा। प्रतीक्षा की लम्बी घड़ियों से ऊब कर एक दिन मैं मां को साथ लिए दिल्ली पहुंची और जब इसके बताए ठिकाने पर आकर हम लोग रुके तो इस अनाथ व्यक्ति को हमने भरे पूरे परिवार के साथ देखा। वही प्लेट फार्म पर खडी स्त्री और यह खूब हंस हंस कर बातें कर रहे थे। दो बच्चे पास ही खेल रहे थे, तीसरे को गोद में लिए यह सुलाने के प्रयत्न में थे। मेरे पैरों ने तो जैसे आगे बढ़ने से ही उत्तर दे दिया या किसी पिशाची छाया ने उन्हें वहीं जकड दिया था, मैं कुछ नहीं जानती। जहां खडी थी, वहीं खड़ी रह गई। लगभग यही अवस्था मां की भी थी। पर जब मेरी गोद का शिशु नींद से जगकर चीखने लगा तब वह हाथ पकड कर मुझे भीतर ले गए। जरा उस स्थिति की कल्पना कीजिए वह मेरी ओर बडी असहाय दृष्टि से देखने लगी पर उसकी कथा अभी समाप्त नहीं हुई थी। वह फिर कहने लगी बहुत देर तक ऐसी पीडा होती रही मानों दृदय को कोई कटार से धीरे धीरे चीर रहा हो। भूखी प्यासी मां रात भर रोती रही। दूसरे दिन सुबह की गाडी से लौट गई। उस घर में उन्होंने पानी तक भी नहीं पिया। मेरा मन बहुत तडपा, जिस व्यक्ति को उन्होंने पुत्र से भी बढकर स्नेह दिया था, उसी ने उनकी इकलौती पुत्री के साथ विश्वासघात किया था, इस आघात से वह मानों जड़ हो गई थी।

मुझे उन्होंने नही लौटने दिया, पर ठीक दस दिन वाद

एक दिन ये बडे ही प्रसन्न मन से मेरे पास आए। लम्बी अवधि के बाद पति के इस सहज स्वाभाविक व्यवहार से मै भी विभोर हो उठी थी पर मेरी प्रसन्नता कितनी क्षण भगुर थी। हाथ मे पकडा अहमदाबाद का टिकट मुझे थमाते हुए बोले देखो तुम अभी मा के पास चली जाओ उनकी हालत ठीक नहीं थी, वे बहुत दुखी होगी। मेरी ओर से उन्हे पूरा विश्वास दिलाया। कुछ ही दिनो मे सारा प्रबन्ध करके मै तुम्हे और मा को ले आऊगा। मै किसी भी स्थिति मे लौटने को तैयार नहीं थी, बहुत रोई, प्यार की दुहाई दी, वियोग मे झेली गई यातनाओ के दर्द भरे किस्से सुनाए पर वह पत्थर, पत्थर ही रहा। मेरा रोना बिलखना सब व्यर्थ गया उसी दिन सध्या की बेला मे बडे ही शात सयम ढग से यह मुझे लेकर आया और इस रेल के डिब्बे मे बिठा गया। तब से यही क्रम चल रहा है। चार साल हो गए हे। दो चार महीने मा के पास रहने के बाद घुटन भरे वातावरण एव समाज के व्यग बाणो से भयभीत मै अहमदाबाद से दिल्ली चली आती हू और जैसा कि सदैव होता है दस या पन्द्रह दिन बीतते ही यह अहमदाबाद का टिकट मेरे हाथ मे थमाकर मुझे रेल के डिब्बे मे बिठा जाता है। एकान्त के इन्हीं क्षणो मे मै व्यथा भरे आसू बहाकर इसे बदलने का प्रयत्न करती हू। इसी तरह घूमते घामते इन दो अबोध प्राणियो को जन्म दे चुकी हू।

आज मा की स्थिति भी ऐसी नही है कि वह हम तीनो के भरण-पोषण का बोझ उठा सके। इसीलिए इस बार मैने मा के पास लौटने का डटकर विरोध किया था। अपनी बात मनवाने के लिए तीन दिन तक मै भूखी प्यासी पडी रही। इसकी स्त्री ने मुझे और बच्चो को पीटा, मा को खूब गालिया दी। अत मे यह आत्म हत्या कर लेने की धमकिया देने लगा। मरता क्या न करता। मै लौट ही रही हू, पर अब मेरी दिल्ली आने की कोई इच्छा शेष नहीं है। मैने अपना समस्त विश्वास एव आस्थाए खो दी है। मेरे सामने कवल कठोर जीवन है। अब मै कभी दिल्ली नही लोटूगी। जीवन की वास्तविकता को अब प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करने का मैने निश्चय कर लिया है। अपने समाज की सहायता से मुझे अवश्य कोई काम मिल जाएगा और तब हर दस दिन बाद दिल्ली से अहमदाबाद धकेल दिए जाने का मेरा यह क्रम भी समाप्त हो जाएगा, कह कर फिर उसने दीर्घ नि श्वास लिया। इस बीच उसका बेटा उठ गया था और बडे साहस एव धैर्य से वह उसे सुलाने सहलाने मे जुट गई। विश्वास की टेक ले घुटन के जाल से उसने अपने को मुक्त कर लिया था, जो उसकी नियति के लिए अति आवश्यक था।

रेल के उस डिब्बे मे उसकी सर्द आहो के घेरे मे घिरी मै बहुत देर तक मानव के क्षण भगुर जीवन की दीर्घजीवी यातनाओ के सबध मे सोचती रही। सहसा ट्रेन की लम्बी व्हिसिल ने मुझे सचेत कर दिया, मेरी मजिल आ गई थी।

❑

महिला को सशक्त बनाने में परिवार व शिक्षण संस्था की भूमिका

डॉ. रेणुका पामेचा

आजादी के 50वें वर्ष में हम प्रवेश कर गए हैं। देश में ऐसा क्रांतिकारी संविधान है जो स्त्री पुरुष की समानता की बात करता है। देश में ऐसे महत्वपूर्ण सामाजिक कानून हैं जो महिला को मदद करने के लिए हैं। इन सबके बावजूद स्त्रियों की स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं आया है।

महिलाओं की स्थिति को मापने वाले जितने भी मापदंड हैं उनके अनुसार महिला पिछडों में भी पिछडा वर्ग है। लडकी को जन्म से पूर्व ही समाप्त करने वाले समाज में औरत की स्थिति को अच्छी तरह समझा जा सकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी ज्ञान, रोजगार सबमें वह पिछडी है। जनसंख्या में उसका प्रतिशत निरन्तर घट रहा है। राजस्थान में तो यह स्थिति अत्यन्त खराब है।

विकास के लम्बे चौडे आंकडों का फायदा महिलाओं को नहीं मिल पा रहा है। नई आर्थिक नीति एवं उदारीकरण ने महिला को बाजार की वस्तु बना दिया है। उसका प्रदर्शन बाजार संस्कृति की जरुरत बन गई है। इससे उस पर अत्याचार भी बढे हैं और उनका स्वरूप भी बदला है। खास तौर से यौन हिंसा बढी है। इससे उसके आगे बढने के रास्ते बन्द हुए हैं।

हमारे सामने सवाल है इस स्थिति को बदलने और औरत को सक्षम बनाने का। यह शुरुआत हमें अपने परिवारों से करनी होगी। घर परिवार से जब लिंग आधारित भेदभाव मिटेगा तभी महिला सक्षम होगी और सम्मान प्राप्त करेगी।

परिवार एक आवश्यक इकाई है पर इसके ढांचे में व सोच में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। औरत के दोयम दर्जे की स्थिति को धर्म, जाति, परम्परा, प्रथा, रूढियों व अज्ञानता के वश सही ठहराते रहते हैं और उसे इस सीमा तक मजबूत कर देते हैं कि औरत स्वयं बदलाव के विरोध में खड़ी हो जाती है। वह दोयम दर्जे को स्वाभाविक मानकर उसके खिलाफ कोई विद्रोह नहीं करती है और विद्रोह करने वाली महिला की सबसे बडी आलोचक बन जाती है जिसका फायदा पुरुष-प्रधान समाज उठाता है।

परिवार के सोच में कुछ बदलाव लाकर हम इस तरफ एक पहल कर सकते हैं -

- पुत्र से कुल के चलने की प्रथा को समाप्त करना होगा। घर का बडा बच्चा पुत्र हो या पुत्री, वह घर का उत्तराधिकारी होना चाहिए। कुल व वंश के लिए पुत्र की कामना ने पुत्री को दोयम दर्जे में डाल दिया है।

- परिवार की सब रस्में, जीवन व मृत्यु के समय के सब संस्कार में पुत्र, पुत्री दोनों की भागीदारी

हो।

- पिता की ऐसी कोई सम्पति नहीं हो जिसमे पुत्री का हक न हो। यह पिता की दया का मुद्दा नहीं है।
- परिवार मे पितृसत्तात्मकता के प्रतीको को बदलने की आवश्यकता है। आरैरत को विधवा/सधवा जैसे खाचो मे बाटने वाले शब्दो को समाप्त करना होगा।
- श्रृगार, व्रत, त्यौहार औरत के व्यक्तिगत प्रतीक बने।
- पुत्र पुत्रियो की पहचान माता पिता दोनो से हो।
- बच्चो का सरक्षक मा भी बन सके। अभी कानून मे वह सरक्षक नहीं है।
- विवाह के बाद पति पत्नी के सयुक्त नाम से हर सम्पति को माना जाये। अभी पति की सम्पति मे जीवित अवस्था मे पत्नी का कोई कानूनन हक नहीं है, पति के मरने के बाद है।
- घर का काम सबका काम होना चाहिए इसमे परिवार के हर सदस्य की भागीदारी हो। कुछ विशेष घर के काम औरत के ऊपर डालकर औरत को हेय बनाया गया है उसे बदलने की आवश्यकता है।
- लडके के लिए व्यवसाय और लड़की के लिए विवाह की मानसिकता को बदला जाना चाहिए।
- अक्सर घर मे हम लडकी को 'पराया धन' और सुसराल मे 'पराए घर' की लडकी कहते है। उसका कोई घर नहीं। पिता मुआवजे के रूप मे दहेज देकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है। दहेज से किसी महिला का सम्मान नहीं बढ़ता है। उसे पुत्री और पत्नि का हक मिलना चाहिए।

लड़के और लड़की मे शारीरिक भेद के अलावा जितने भी भेद है वे परिवार के बनाए हुए है उन्हे परिवार ही समाप्त कर सकता है। परिवार लड़की के साथ कोख से कब्र तक भेद करता है। वह लड़की व लड़के के सामाजिकरण मे भेदभाव करता है। उस भेद को हम सस्कारो के कारण न्यायोचित भी ठहराते है। उसी का परिणाम है कि उसी घर से एक अलग तरह का पुरुष जन्म लेता है जो अपने आप को श्रेष्ठ मानता है और उसी घर से एक ऐसी लड़की जन्म लेती है जो अपने दोयम दर्जे को स्वाभाविक मान लेती है। घरो से निकले हुए ये पुरुष जब राजनीतिज्ञ, प्रशासक, पुलिस, न्यायाधीश या अन्य पद ग्रहण करते है तो उनमे स्त्री को दोयम दर्जे मे रखने की मानसिकता बन चुकी होती है और औरत के दर्द को समझने की व उसे समान समझने की सभावना समाप्त हो चुकी होती है। परिवारो मे हम नैतिकता के दोहरेपन को निरन्तर प्रश्रय देते है और औरत को चरित्र के आधार पर देखने की मानसिकता वाले परिवार मे पुरुष के चरित्र पर बात नहीं की जाती है, यही दोहरापन पूरे कानून मे नजर आता है। इसी कारण बड़े से बडा कानून और क्रातिकारी सविधान भी औरत को ताकतवर नहीं बना पाता है।

इस मानसिकता को बदलने की जिम्मेदारी शिक्षा व्यवस्था पर है। पूरे पाठ्यक्रम भी इस दोयम दर्जे की स्थिति को परिपक्व करते है। इस स्थिति मे शिक्षा से जुडे लोगो का यह दायित्व है कि वे गहराई से लिग आधारित भेदभाव को समझे और औरत को कहा कमजोर किया जा रहा है उसे समझे, तभी औरत को सक्षम बनाया जा सकता है।

❑

कविताएं

संगीता शर्मा
तृतीय वर्ष, कला

बचपन

जिन्दगी के हर गम से दूर
होता है बचपन।
अपनों की मुहब्बत में चूर
होता है बचपन।
उसे क्या पता क्या होती है जिन्दगी,
जिन्दगी की रहगुजर से दूर
होता है बचपन।
न हो बचपन तो जवानी का मजा क्या
हर कोई चाहता है जीना बचपन।
अगर मिले फिर जिन्दगी मुझको
सिर्फ 'बचपन' ही जीना चाहती हूं मैं।

यौवन

एक स्मित हास्य
एक अनजाना अहसास
कुछ मासूमियत
कुछ करने की चाह
कुछ कर गुजरने की तमन्ना
अनियंत्रित भावुकता
मुक्त नदी समान
बंधन मुक्त
उड़ता परिन्दा।

ईमानदारी की मौत

ईमानदारी मरी
भ्रष्टाचार ने आंसू बहाए।
जिन्दा थे तो निवाला न था,
मरने पर ब्राह्मण जिमाए।
उसकी याद में स्मारक बनवाए।
कातिलों ने उस पर फूल चढ़ाए।
मिसालें दीं उसकी ईमानदारी की,
उसके कत्ल को शहीदी का जामा पहनाया।
उसके मरते ही भ्रष्टाचार ने
अपना फन फैलाया।
एक ईमानदार की मौत ने
सारे समाज को भ्रष्टाचार
का गुलाम बनाया।

भारत की शान

✍ सगीता शर्मा

इस दुनिया मे सबसे न्यारा,
देश है एक भारत प्यारा।
इसकी शान बड़ी निराली
गाधी का सपना है यह
नेहरु का अरमान है।
इस दुनिया मे सबसे न्यारी,
है भारत की शान।

यहा लिया था जन्म राम ने,
यही हुए थे कृष्णावतार।
यही पे दी थी जान शहीदो ने,
भारत की आन पर।
यही पे जन्मी थी सती सीता,
यही पे जन्मी लक्ष्मीबाई।
भारतीय सस्कृति की पोषक है
गीता और कुरान।
इस दुनिया मे सबसे न्यारी
है भारत की शान।

इसकी धरती पर पले बढ़े थे
टीपू और प्रताप।
आओ करे यह प्रण हम भी
हम रखेगे सदा आजाद देश को।
करेगे इसकी सस्कृति का पोषण,
छोड़ दूसरे देश को।
इसकी रक्षार्थ देगे प्राण भी
रखेगे शहीदो की शहादत की मर्यादा।
कर देगे कुर्बान स्वय को
भारत की आन पर।

प्रतिभा पलायन : कारण और निवारण

✍ शैली माथुर
बी.ए. (पार्ट द्वितीय)

''गायंति देवा किल गीतिकानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे''

देवताओं से भी वंदित विश्व द्वारा गुरु रूप में अभिनन्दित और ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' की उदात्त भावना से समन्वित यह भारत भूमि सदा से ही मानव जाति की आशाओं का केन्द्र बिन्दु रही है। इसकी महान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने इसे अमरता का वरदान दिया है। समय के चक्र से यह पावन भूमि अपने लक्ष्य से भटक गई थी किन्तु सैंकडों वर्षो की पराधीनता से यह मुक्त होकर फिर उठ खड़ी हुई है। आज अनेक समस्यायें भारत को घेरे हुये हैं।

प्रतिभा पलायन :

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, पारिस्थितिक विकास अर्थात अति संक्षेप में सम्पूर्ण वातावरणीय विकास उस राष्ट्र के नव युवा पीढी एवं किशोर पीढ़ी पर निर्भर करता है, उन्हीं की क्रियाओं व दिशा-निर्देशों द्वारा राष्ट्र का सम्पूर्ण विकास पुष्पित व पल्लवित होता है। इन्हीं नव युवा पीढ़ी में से कुछ एक व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनके कन्धों पर सम्पूर्ण युवा पीढ़ी एवं किशोर पीढ़ी का मार्गदर्शन टिका हुआ होता है तथा जो अपनी क्रियाओं व योग्यता द्वारा प्रसिद्धियों के नये-नये आयाम स्थापित करते हैं। कतिपय व्यक्तित्व ऐसे विरले ही होते हैं जो कि उन्नति के नये नये आयाम स्थापित करते हैं एवं अंधकारमय एवं सुसुप्त नवयुवकों में प्रेरणा एवं नवोदय का संचार करते हैं, हम ऐसे व्यक्तियों को विशिष्ट प्रतिभा की श्रेणी में रखते हैं। विशिष्ट प्रतिभा का शाब्दिक अर्थ भी वैसे यही है कि जो किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट एवं नव आयाम स्थापित करे।

विगत कुछ दशकों से हमारे देश में प्रतिमाओं का पलायन हो रहा है जो कि शोचनीय एवं निन्दनीय स्थिति कही जा सकती है। यह पलायन आन्तरिक एवं बाह्य क्षेत्रों में हो रहा है। आन्तरिक क्षेत्रों में यह पलायन सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्र में निजी अर्थात प्राइवेट सैक्टर में व बाह्य पलायन में यह एक देश से दूसरे देश में हो रहा है। इससे हमारे राष्ट्र को भारी नुकसान हो रहा है एवं सक्षम होते हुये भी मुसीबतों का सामना करना पड रहा है। एक छोटा सा उदाहरण यह है कि एम. टैक. या एम. ई. इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट डिग्री है किन्तु जब अमुक डिग्रीधारी व्यक्तियों को उचित कार्य, संतुष्टि नहीं मिलती, तो उन्हें विदेशी सरकारें एवं संस्थाएं आमंत्रित करती हैं तथा वे धन-लिप्सा व पद प्रतिष्ठा की इच्छा में विदेशों में चले जाते हैं। विदेशों में ''कार्य ही पूजा है'' की भावना प्रबल होने से व उचित वेतन व अन्य सुविधाएं प्राप्त होने के कारण मन लगाकर कार्य

करते है व इससे वह देश लाभान्वित होता है।

आज भारत की शिक्षा प्रणाली ससार की सर्वोत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। राजस्थान विश्वविद्यालय मे अध्ययनरत 15000 के करीब विदेशी छात्र इस बात का ज्वलत उदाहरण है। मेरा स्वय का कुछ से व्यक्तिगत सम्पर्क है। मुझे उनके विचारो से मालूम हुआ कि यहा कि शिक्षा प्रणाली व डिग्री से उन्हे वहा लाभ मिलेगा। किन्तु यह बडी ही विचित्र स्थिति है कि फिर भी यहा से प्रतिभा पलायन हो रहा है। यहा आतरिक रूप से भी प्रतिभाए एक क्षेत्र विशेष से दूसरे क्षेत्र विशेष मे गमन कर रही है। सरकारी क्षेत्र मे लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, क्षेत्रीयता, धनाभाव, पद, सम्मान एव प्रतिष्ठा का अभाव होने के कारण विशिष्ठ प्रतिभाए निजी क्षेत्र की ओर आकर्षित हो रही है, जहा ये सभी गुण है। बहरहाल ये सभी लक्षण यदि पूजीवादी अर्थव्यवस्था मे लक्षित या प्रकट हो तो ठीक है किन्तु मिश्रित अर्थव्यवस्था मे यह अनुचित है।

इस सबध मे एक ज्वलत उदाहरण एनरान मुद्दा है जिसमे अमरीकी कम्पनी एनरान को जी ई बैक्टेल कम्पनी के साथ 2015 करोड लागत की परियोजना स्वीकृत की गई, जबकि यह कार्य ये भारतीय कम्पनिया भी भलीभाति कर सकती थी, किन्तु राजनैतिक स्वार्थ व भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा मे भारतीय प्रतिभाए दब कर रह जाती है। इस परियोजना मे करोडो का गबन व घपला हुआ है जिससे देश को भारी आर्थिक हानि हुई है व दूसरी ओर विदेशी तकनीक व तकनीशियनो को हतोत्साहित कर रहे है, ऐसी दशा मे हर इन्जीनियर विदेशो की ओर पलायित होगा व अपने ज्ञान से उस देश को लाभान्वित करेगा।

इस स्थिति की तुलना ठीक उसी प्रकार की जा सकती है कि जिस प्रकार दीपक के नीचे अधेरा होता है।

प्रतिभा पलायन का एक महत्वपूर्ण कारण जनसख्या वृद्धि के अनुरूप कार्यक्षमताओ मे वृद्धि न होना भी है। भारत मे प्रतिवर्ष 2 5% की वृद्धि से जनसख्या बढ रही है किन्तु रोजगार के साधन न बढने से बेरोजगारो की सख्या बढ़ रही है, इससे भी शिक्षित लोग बर्हिगमन करते है।

हमारे बडे राजनेताओ का कहना है कि शिक्षितो को ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है ताकि वे स्वरोजगार योजना मे पोषित हो सके किन्तु हकीकत यह है कि ऊपर से नीचे तक सारी प्रशासनिक लॉबी ही भ्रष्टाचारी है, तो शिक्षित बेरोजगारो को पर्याप्त मात्रा मे ऋण वित्त राशि नहीं मिल पाती।

लीजिए, एक चौकाने वाली बात तो यह है कि हमारे भूतपूर्व प्रधानमत्री स्व राजीवगाधी जी ने एक सार्वजनिक सभा मे कहा कि सरकार यदि 100 रुपये जन विकास कार्यक्रम को आवटित करती है तो जनता तक मात्र 15 रुपये ही पहुच पाते है, ये कितनी गौरवमय बात है ? आज सारे राजनेताओ के मुह भ्रष्टाचार की कालिख से पुते है, योग्यता एव शिक्षा इनकी मुट्ठी मे हे ये लोग अपने परिजनो एव मिलने वालो को ही उच्च पदो पर नियुक्त करवाते है,ऐसे मे प्रतिभाओ को पलायन करना ही पडता है।

सरकार की आरक्षण नीति भी प्रतिभा पलायन मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सरकार की इस नीति के कारण अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग बिना योग्यता के पदो पर नियुक्त किये जाते है तो ऐसी दशा मे लोगो मे हीन भावना जागृत होती है। सरकार ने निम्न वर्गो के लोगो को आरक्षण का

इन्जेक्शन लगाकर इन्हें ऊंचा उठाने की कोशिश की है,किन्तु यह ध्यान में नहीं आया कि इससे शिक्षितों के साथ कितना अन्याय होगा। अभी हाल ही में एक मामला प्रकाश में आया है कि म.प्र. में मात्र 1% पर इंजीनियरिंग में एक व्यक्ति को चयनित किया गया। सरकार की यह नीति नंगी तलवार की भांति है जो कभी भी भंयकर विद्रोह को खुला निमंत्रण दे सकती है यह भी प्रतिभाओं के पलायन में सहायक है।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि यदि हमें इन समस्याओं से छुटकारा पाना है अर्थात देश का समुचित विकास एवं उन्नति करनी है तो प्रतिभाओं का पलायन रोकना होगा इसके लिये निम्न सुझाव अपनाने होंगे -

1. **सरकारी कानूनों एवं नियमों में बदलाव आवश्यक -** प्रतिभा पलायन की इस विकट समस्या को रोकने के लिये आज सरकार को अपने कानूनों एवं नियमों में यथासंभव बदलाव लाना होगा। ऐसे कानूनों एवं नियमों का निर्माण करना होगा जिससे प्रतिभावान व्यक्तियों को स्वयं आगे आने का मौका मिले।

2. **नागरिकों की सोच में परिवर्तन -** जब सरकार अपनी नीतियों व कानूनों में बदलाव लायेगी तो नागरिकों की सोच में अपने आप ही परिवर्तन आने लगेंगे। वे यह जान सकेंगे कि जो हमारी वर्तमान सरकार है वह जिन भी योजनाओं को क्रियान्वित करती है वह हमेशा जनता के हित की ही होती है तथा वह ऐसी कोई भी योजनाएं नहीं बनाती है जिनसे नागरिकों को किसी भी प्रकार का नुकसान या हानि उठानी पडे।

3. **उद्योगों को खोलने** हेतु **ऋण सुविधा -** लघु कुटीर उद्योग खोलने हेतु भी सरकार को ऋण उपलब्ध करवाना चाहिये, ताकि व्यक्ति अपना समुचित रूप से विकास कर सके।

इसके अतिरिक्त प्रतिभा पलायन को रोकने हेतु सरकारी सुविधाओं एवं योजनाओं में वृद्धि करने के साथ ही साथ तीव्र गति से जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि पर रोक लगानी होगी।

❑

भोग समर्थ होते हुए भी जो भोगों का परित्याग करता है, वह कर्मों की महान निर्झराकरता है। उसे मुक्ति रूपी महाफल प्राप्त होता है।

- गीता

●

कछुआ जिस प्रकार अपने अंगों का अन्दर समेट कर खतरे से बाहर हो जाता है, वैसे ही साधक भी अध्यात्मयोग के द्वारा अन्तर्मुख होकर अपने को पापवृत्तियों से सुरक्षित रखता है।

- सूत्र कृतांग

सुखद भविष्य की आधारशिला

✍ डॉ एस पी सक्सैना

महिला परिवार का वह मुख्य स्तम्भ है जिस पर सुखी परिवार की आधार-शिला रखी होती है। यदि वह स्वय कमजोर होगी तो परिवार की इमारत भी अस्थिर ओर कमजोर हो जायगी। अत महिला के उन्नत जीवन को प्राथमिकता देना होगा। समस्त प्राणी जगत जीता तो है, किन्तु क्या आपने कभी सोचा है कि आपका जीवन कैसे उन्नत हो, पूर्ण एव विकसित हो। यदि आप सफल जीवन को लक्ष्य बनाकर कार्य करे और जीवन को ढाले तो कोई कारण नही कि सफलता न मिले। आपका जीवन स्वय के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए, ओर अन्त मे देश के लिए सार्थक और उपयोगी हो जाएगा। आप दूर क्यो जाये स्वय अपने आप को देखिये। एक अबोध शिशु के रूप मे जन्म लिया। माता की गोद मे प्यार एव दुलार की छाव मे आपने शैशव अवस्था विताई। धीरे धीरे घुटनो के वल चलना आरम्भ किया और बाल्यावस्था आरम्भ हो गई। ठुमक-ठुमक कर चलना, मधुर मुस्कान और बाल्यावस्था की क्रीडाओ से घर आगन खिल उठता है। धीरे धीरे माता पिता के सरक्षण मे सस्कारो का बीजारोपण होता है। आपके जीवन की प्रथम शाला और प्रथम गुरु माता-पिता ही होते है। यह अत्यन्त विचारणीय है कि माता पिता का सुसस्कृत और पढा-लिखा होना बालिका के समुचित विकास के लिये परम आवश्यक है जिसके पास कुछ है ही नहीं वह दूसरो को क्या देगा। जैसे जैसे आयु बढती है बालक पाठशाला मे जाता है और पारम्परिक गुरुजनो द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है। माता पिता से दूर होकर सभी साथियो मे मित्रता स्थापित होने से वह सुखी होने लगता है। इस अवस्था मे अच्छे गुरुजन और अच्छे मित्र बालक के विकास मे सहायक होते हे। शनै -शनै बालक गुरुजनो की देख रेख मे, माता-पिता की ममत्वभरी देखभाल और उपयुक्त दिशा निर्देश के द्वारा पारम्परिक पाठशाला की सीढिया पार करके किशोरावस्था की दहलीज पर जा पहुचता है। इस अवस्था मे स्वय मे स्वावलम्वन, तन और मन मे मूलभूत परिवर्तन तथा दायित्वो का अनुभव होने लगता हे। किशोरावस्था अपने अदर बहुत ही कोमल किन्तु कठिन होती है। यदि इस समय उचित मार्ग-दर्शन न मिले तो असफलताओ के अधकार मे खो जाने का भय होता है। सही मित्रो का चुनाव, माता पिता की जागरूकता और गुरुजनो द्वारा मार्गदर्शन आपको सफल युवा बनाने मे सहायक होता है। युवावस्था मे प्राथमिक विद्यालयो से उठकर महाविद्यालयो मे प्रवेश होता है। एक दम भिन्न या यो कहिये स्वच्छन्द वातावरण मे आ जाते है। आपको पहचानना होगा कि कब आपकी किशोरावस्था समाप्त हो गई और युवावस्था मे प्रवेश कर गई। किशोर अवस्था मे ही सफल युवावस्था की नींव पडती है। युवावस्था को पहचानिये आपमे असीमित भावनाए और क्षमताए छुपी पडी हे, आवश्यकता है उजागर करने की। आप अपने परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर है। लगभग 16 वर्ष की आयु ही किशोरावस्था है। कभी कभी देखने मे आता है कि "बेटी" मे अनायास ही कुछ परिवर्तन होते दिखते है जो बच्ची सदा मुस्कुराती

थी, शरारत करती रहती थी कुछ दिनों से उसे न जाने क्या हो गया है ? बात बात पर झुंझलाहट दिखाती है। कभी शून्य की ओर निहारती है तो कभी बहुत समय तक दर्पण में अपने आपको निहारती स्वयं से ही बातें करती है। कभी कभी किशोरियां अपने भाई बन्धुओं अथवा माता-पिता से समुचित प्यार, प्रशंसा और अपेक्षित लगाव नही ले पाती। ऐसी स्थिति में कभी कभी बाह्य जगत से कोई भी व्यक्ति यदि थोड़ी सी वेदना, लगाव व प्यार भरे बोल शब्द अथवां स्नेह दिखाये तो अधिकांश किशोरियां भुलावे में आकर ऐसे व्यक्ति को अपना समझ बैठती हैं,किन्तु वास्तविकता कुछ और ही होती है। ऐसे व्यक्ति के इरादे कुछ और ही होते हैं। युवा मन भावुकता के आवेग मे सुनहरे स्वप्न देखता है, वह आसानी से विश्वास कर लेती है, हम उम्र के साथियों में उठने बैठने में आनन्द लेने लगती है और इस ही के साथ घर के अन्य सदस्यों एवं माता पिता से कतराने लगती है। ऐसे में माता पिता अपनी भूमिका निभाते तो हैं किन्तु बेटी की मनस्थिति नही समझते न ही मित्र के समान बेटी के मन की कसमसाहट को महसूस करते हैं। युवा मन ऐसे साथी की तलाश में होता है जो उसकी मनोदशा समझ सके। जिज्ञासाएं शांत कर सके और मन में उठती उमंगों की हिलोरों का सहारा बन सके। इस स्थिति को माता पिता को यथा समय समझ लेना चाहिये, क्योंकि उनके द्वारा लगाई पाबन्दियां, नोंक-झोंक और डाट-फटकार उलटा प्रभाव डालती हैं, इसका परिणाम घातक होता है। मासूम भावनाओं के आवेग में युवतियां ऐसे पुरुषों के मोह जाल में फंस जाती हैं जो प्रेम की आड में उन्हें अपनी वासना का शिकार बना लेते हैं। अतः आवश्यकता यह है कि माता पिता भाई एवं बहन अपनी किशोरी से मित्रवत व्यवहार करते हुए परिस्थितियो की वास्तविकता, समाज एवं पुरुष वर्ग की कुंठित भावनाओं के प्रति जागरूकता पैदा करें। घर में ऐसा वातावरण एवं विश्वास पैदा करना होगा जिसमें कि युवा अपनी जिज्ञासाओं और भावनाओं का समाधान बाहर न ढूंढ कर घर में ही पा ले। बस यह होते ही 'युवा' का पथ भ्रमित नहीं होगा।

चिन्तन करने की आवश्यकता है कि यदि किशोरावस्था में पथ भ्रष्ट हो गये तो क्षण भर के आनन्द के लिये अनमोल जीवन की बलि चढ जायेगी। ऐसे निरर्थक जीवन का क्या अर्थ होगा ? उन्मुक्त जीवन की लालसा, गलत मित्रों का चुनाव, यौन कुंठाएं, अज्ञान कामुक साहित्य, सस्ती उत्तेजक पाठ्य सामग्री, चित्र वासना जगाने वाले सिनेमा अथवा टी.वी. कार्यक्रम युवा शक्ति को भ्रमित करके मन के अहसास करने की शक्ति समाप्त कर देते हैं। झूठी कसमों, वादों के माया जाल में फंसकर ऐसी भूल हो जाती है, जिसका आजीवन पश्चाताप रहता है। आज की तडक-भडक और दिखावे में "प्रेम" दर्शाया जाता है। इस प्रेम का अर्थ केवल शारीरिक संबंध एवं वासना की पूर्ति है। हां ! वास्तविक प्रेम तो त्याग में है, पाने में नहीं। राधा का कृष्ण के प्रति और गिरधर के लिए मीरा पवित्र प्रेम के प्रतीक अश्रुओं की गंगा-यमुना द्वारा हृदय को धोती रही। दर्शन मात्र की प्रबल इच्छा सच्चे प्रेम को परिष्कृत करती चली गई। प्रेम तो पवित्र होता है। स्वयं विचारकर देखिये, क्या सही और क्या गलत है ? चंचल मन पर नियंत्रण करना परम आवश्यक है। हमारा मन उस जल बिन्दु के समान है, जो सागर जल से उठकर मेघ बनता है। फिर आकाश की ऊंचाइयों को छूता पर्वत शिखरों तक पहुंचता है और पुन· वर्षा के जल बिन्दु में परिवर्तित होकर, झरनों और नदी नालों का रूप धारण कर वेग से नीचे की ओर बहता है। अपनी मर्यादा त्यागकर किनारों को काटता नगरों में बाढ की विभीषिका दिखाता पुनः समुद्र की गहराइयों में विलीन हो जाता है। इसी प्रकार 'मन' को माता पिता सज्जन एवं

गुरुजनो द्वारा दिखाये परिष्कृत दिशा निर्देश के द्वारा सच्चरित्र की ऊचाई तक पहुचाया जाता है । सब कुछ पालने पर कुसगति और धूर्त मित्रो के झझावत मे फसकर वर्षा की बूद के समान नीचे आ गिरते है । ससार रूपी सागर की गहराइयो मे पहुचकर अपना चरित्र गवा बैठते है। समय रहते हम जाग जाये, कहीं ऐसा ना हो कि सदा के लिये पछताते रहे । हम स्वय अपने चरित्र के निर्माता है। राह कठिन है, पर असभव नहीं । आपका चरित्र और व्यक्तित्व आपके हाथ मे उस गीली मिट्टी के समान है जिसे आप चाहे तो देवता का रूप प्रदान कर दे अथवा दानव बना दे । अत जागरूक रहते हुए झूठे दिखावे, तड़क-भडक, अश्लील साहित्य, झूठे मित्रो, कुसगति से बचते हुए उन्नत जीवन के सत्य और तथ्य का साक्षात्कार करे। मन को एकाग्र कर अपने परम लक्ष्य "अध्ययन" की ओर सतत् बढाते जाये । आज का किशोर कल का युवक होगा। किशोरावस्था पूर्ण होने पर युवावस्था मे प्रवेश होगा । इस अवस्था मे हम आवश्यक ज्ञान, अनुभव एव दिशा बोध प्राप्त करके सबसे प्रमुख 'गृहस्थ जीवन' मे प्रवेश करते है । साथ ही अपने व्यवसाय का चयन करते है । लगभग इसी काल मे विवाह हो जाता है और विद्यालय की परीक्षाओ को पार करने के बाद गृहस्थ जीवन की परीक्षाये आरम्भ हो जाती है । माता पिता का घर आगन त्यागकर एकदम नये परिवेश का सामना करना होता है। नई-नई परिस्थितियो मे अनजाने व्यक्तियो के बीच सास-ससुर, ननद-भौजाई और अन्य परिवार जनो के साथ सामजस्य बिठाना होगा । माता पिता एव गुरुजनो द्वारा प्राप्त किये सद्गुण, विद्या एव सुसस्कार का प्रकाश-पुञ्ज आपके नये परिवेश मे एक नई पहचान और सबका विश्वास-पात्र बनायेगा । हर दिन एक नया आयाम लेकर आयेगा और हर दिन आपकी परीक्षा होगी । आपका सद्व्यवहार, आत्मविश्वास, प्रेम एव पूज्यजनो का मान सम्मान और अत मे नये परिवार के प्रति समर्पण-स्वय का ही नहीं माता-पिता, गुरुजनो एव सारे परिवार को गौरवान्वित करेगा और स्नेह की स्निग्ध धारा सारे घर को स्वर्ग बना देगी। आपके अतर मे असीम शक्ति और अनन्त सभावनाए छुपी पडी है । जीवन तो तब ही सार्थक होगा जब हम दूसरो के लिये जीना सीखे । यदि हम दूसरो को सम्मान न दे सके तो कम से कम अपमानित न करें। आज की विलासिता प्रधान ओर भौतिकतावादी अधी सभ्यता मे हमारे सयुक्त परिवार की गौरवशाली परम्परा समाप्त होती जा रही है । सयुक्त परिवार का विघटन होकर हम दो हमारे दो मे ही सिमटकर रह गया है। स्वय की महत्ता सर्वोपरि है, पुत्र-पुत्रवधु, ननद-भौजाई इत्यादि के पारिवारिक बधनो से मुक्ति पाकर हम 'एकल' जीवन शैली अपना रहे है। सयुक्त परिवार के लाभ-हानि स्वय आकिये उसके बाद ही अपनी मर्यादित जीवन शैली चुनिये ।

किसी भी देश का अथवा समाज का भविष्य युवा शक्ति मे निहित है । उठिये- निद्रा एव तद्रा को त्यागकर सत्य का साक्षात्कार करिये । आपके परिवार-जन, समाज और देश वासी आपके उज्जवल भविष्य की ओर टकटकी लगाये प्रतीक्षा कर रहे है। उनके सपनो को साकार करना है। आज की नन्ही सी बाला मे शक्तिशाली भारत माता का प्रकाशतम रूप छुपा है । आपके द्वारा ही देश की भव्य इमारत का शिलान्यास युवा पीढी के सुसस्कार, सच्चरित्र, उच्च आदर्श, मेहनत, दृढ सकल्प और अविरल प्रेम के द्वारा ही होगा ।

❑

प्राचीन जीवन पद्धति : आरोग्य दायक

✍ **सुश्री सरोज कोचर**
व्याख्याता

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। इसके लिये आवश्यक है हमारे चलने-फिरने, भोजन, स्नान आदि अर्थात् दैनिक क्रियाओं को व्यवस्थित रखना अर्थात् प्राकृतिक अवस्था के निकट ले जाना क्योंकि पदार्थ अपनी स्वभाव दशा में रहना चाहता है, विभाव में नहीं। प्रकृति प्रदत्त शरीर कृत्रिम वातावरण से अस्वस्थता की ओर अग्रसर होता है। अतः उत्तम स्वास्थ्य हेतु शरीर के सभी अंगों का कार्य नियमित रूप से व्यवस्थित होना आवश्यक है।

कहा भी गया है कि -

उत्पत्तावेव रोगस्य क्रियते ध्वसन सुखम् ।
व्यापी तु वद्धमूलः स्वात् उर्ध्व· स क्षेत्रियोऽथवा ॥

(पद्मपुराण 12/161)

अर्थात् जब रोग उत्पन्न होता है तब उसका सरलता से विनाश किया जा सकता है पर जब वह रोग जड में व्याप्त हो जाता है तब मृत्यु के पश्चात ही उसका प्रतिकार हो सकता है।

जीवन में सुख और सफलता हमारी परिस्थितियों पर नही हम पर निर्भर है। जिन्हें दूसरों ने बरवाद किया उनके मुकावले में अपनी तबाही खुद ही वुलाने वालों की संख्या कही अधिक है। अत· आवश्यकता है करणीय कार्य, संयमशील शील सिद्धांत एवं आचरणीय आचरण की। जिस प्रकार उत्तम रत्नादि, समृद्धि एवं सम्पत्ति से भरपूर नगर की रक्षा, प्राकार, खाई और बाहर की चारदीवारी द्वारा की जाती है उसी प्रकार स्वस्थ जीवन से समृद्ध आत्मा को अपायों अर्थात् दोषों से बचने के लिये प्राचीन जीवन पद्धति का आलम्बन लेना चाहिए। इस जीवन पद्धति को अर्हन्त परमात्मा द्वारा प्रतिपादित प्रवचन के अनुसार शुभ प्रशस्त प्रवृत्ति को समिति कहा गया है।

पुरानी सामाजिक रीति रिवाज के अनुसार मनुष्य सूर्योदय से पूर्व उठकर अपना नित्य कर्म प्रारम्भ करता था। इसी क्रम में आवश्यक क्रियाओं की विधि के बारे में कुछ जानकारी मैं यहां देना उपयुक्त समझ रही हूं कि हमारी दैनिक क्रियाओं में स्नान का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्वामित्र स्मृति 1/86 में स्नान के बारे में कहा गया है कि-

गुणादशस्नान कृतो हि पुसो रूप च तेजश्च वलं च शौचम् ।
आयुष्मारोग्यमलोलुपत्व दु·स्वप्ननाश च तपश्च मेधा ॥

मनुष्यों को स्नान करने से दस गुणों की प्राप्ति होती है - रूप, तेज, वल, शुद्धता, आयु, आरोग्य, अलोलुपता, कुस्वप्ननाश, तप और मेधा।

उपर्युक्त दस गुणों को प्राप्त करने हेतु स्नान की प्रक्रिया, पात्र आदि का पहले पूर्ण ध्यान रखा जाता था। स्नान करने के लिये प्रायः ताम्बे या पीतल की

बाल्टियो एव लोटो का प्रयोग किया जाता था। स्नान करते समय लकडी के पाटो पर बैठकर स्नान किया जाता था। जहा तक मै समझ पायी हू कि ताम्बे एव पीतल की बाल्टियो मे पानी के रहने से पानी मे धातु के आयन मिल जाते है। जब लकडी के पट्टे पर बैठकर स्नान प्रारम्भ करते समय लोटे को बाल्टी मे डालते है तब लोटे के धातु का बाल्टी के धातु के साथ टकराव होता है इसी दौरान हल्की बिजली उत्पन्न होती है। साथ ही लोटे की आकृति के कारण उसके अदर उत्पन्न तरगे भी उसके अदर घूमती रहती है। इस प्रकार बाल्टी के पानी के अदर स्थित धातु आयन आयनित हो जाते है एव ऐसा पानी जब हमारे मस्तिष्क के मध्य भाग से होता हुआ शरीर पर गिरता है तब पूरा शरीर इस हल्की आयनित बिजली से चार्ज होकर शरीर मे सफूर्ति प्रदान करता है। चूकि नीचे लकडी का पट्टा होने के कारण भूमि से स्पर्श नही होता है अत यह तरग शरीर मे ही विद्यमान रहती है। इस विधि से किया हुआ स्नान स्फूर्तिदायक होता है। साथ ही आयनित मेटल कीटाणुनाशक एव शरीर की क्रान्ति मे वृद्धि करने वाला होता है। जबकि आजकल हम कृत्रिम प्लास्टिक की बाल्टी एव मग का उपयोग करते है। इसमे इस प्रकार की कोई भी क्रिया सभव नहीं है। बल्कि प्लास्टिक निष्क्रिय होने के कारण सुस्ती ही प्रदान करता है।

स्नान आदि के पश्चात प्रात मदिर जाने का विधान था। इस कारण जहा सुबह शुद्ध वायु प्राप्त होती वहीं पर सुखद व्यायाम भी होता था। मदिर पहुचने के पश्चात घटे को बजाने का विधान था। इससे मस्तिष्क का तनाव दूर किया जाता था। चूकि मदिर का घटा गुम्बद के नीचे होता था इस कारण ऊपर की ओर गई ध्वनि वृत्ताकार मे नीचे की ओर आती थी एव मस्तिष्क के चारो तरफ वृत्त रूप मे घूमकर मस्तिष्क के तनाव शरीर के थकान को दूर कर सम्पूर्ण शरीर को स्फूर्तिदायक बनाती थी। मत्रोच्चारण द्वारा शब्दो की तरगो से शरीर मे स्फूर्ति पैदा की जाती थी। पक्षाल को नेत्रो मे लगाकर चन्द एव केसर के द्वारा नेत्र ज्योति मे वृद्धि की जाती थी। साथ ही सुगन्धित केसर एव चन्दन के द्वारा नासिका का उपचार किया जाता था। इस प्रकार पाचो इद्रियो को स्फूर्तिदायक बनाया जाता था।

जहा तक इन सम्पूर्ण क्रियाओ के लिये चलने का प्रश्न है हमारे गमनागमन मे गति सबधी सावधानी, जागरूकता, शास्त्रोक्त नियमोपनियमो के पालन की तत्परता एव यतनापूर्वक उपयोगमय प्रवृत्ति होनी चाहिए। हमारे शास्त्रो मे जीवो एव स्वशरीर रक्षार्थ 3 50 हाथ दूरी की प्रमाण भूमि को देखकर विवेकपूर्वक चलने का विधान बताया है। साथ ही जब तक दिखे तब तक दत्तचित्त होकर चलने का विधान था। चूकि कोई भी प्रतिबिम्ब आखो के पर्दे पर 1/16 सैकिण्ड से ज्यादा नहीं रहता है। जब दो घटना 1/16 सैकिण्ड से पूर्व मे गुजरती है तो वह क्रमबद्ध दिखायी देती है। इसी आधार पर सिनेमा मे दृश्यो को क्रमबद्ध दिखाया जाता है। 3 50 हाथ दूरी की जगह देखने से हम 1/16 सैकिण्ड से हा उस जगह पर पैरो का स्पर्श करते है। इस प्रकार आखो के समक्ष भूमि क्रमबद्ध दिखायी देती रहती है जिससे स्वय की एव जीवो की रक्षा भी होती है। यदि चलते समय दृष्टि को बहुत दूर तक डाला जाए तो क्रमबद्धता समाप्त होती है। जिससे दुर्घटना सूक्ष्म शरीर वाले एव जीवो की हिसा हो सकती है। उसे अत्यन्त निकट रखा जाये तो सहसा पैर के नीचे

आने वाले जीवों को टाला नहीं जा सकता। इसलिए शरीर प्रमाण क्षेत्र देखकर चलने की व्यवस्था की गई है। चलते समय दोनों आंखों से दत्तचित होकर चलने से पैरों की एडियों की अपेक्षा अगले हिस्से पर शरीर का वजन पडता है। अतः हृदय पर तनाव कम रहने से दिल के दौरे को रोकने में सहायक है। 3.50 हाथ से कम दूरी का फासला रहने से नजर का फैलाव कम होता है, पलकों को अधिक झुकाना पडता है इस कारण आसपास के वातावरण से संबंध क्रमबद्ध नहीं रह पाता है। गर्दन अलग झुकती है झुकी गर्दन से रीढ की हड्डी पर जोर पडने से इसका असर मस्तिष्क पर पडता है। ऐसी अवस्था में मस्तिष्क और गर्दन पर ज्यादा जोर पडने से मनुष्य तनावग्रस्त हो जाता है। साथ ही शरीर में अस्वस्थता भी बढती है। मस्तिष्क द्वारा दैनिक क्रिया करने में बाधा होती है तथा इसका प्रभाव मस्तिष्क पर पडने से उसकी लयबद्धता टूटती है। जबकि मस्तिष्क हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अंग, केन्द्रीय नाडी संस्थान का एक हिस्सा है।

इसी प्रकार आहार के संबंध में भी निश्चित क्रमबद्धता रखी जाती थी। आहार शुद्धि के विषय में छान्दग्योपनिषद् में कहा है -

आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्व ग्रन्थीनां विप्रमोक्षः॥

आहार शुद्ध, सात्विक एवं न्याय प्राप्त हो तो सत्व शुद्धि या अंतःकरण की शुद्धि होती है। अंतःकरण की निर्मलता में स्मृति लाभ होता है। आत्म स्मरण सदैव बना रहता है। उससे हृदय की समस्त ग्रंथिया खुल जाती हैं अर्थात् अज्ञान की गांठें नष्ट होने लगती है। लेकिन आहारचर्या के लिये इतना ही पर्याप्त नही है। किस प्रकार बैठकर, कैसे पात्र में आहार करना चाहिये इस पर भी हमें चिन्तन करना होगा।

खाने की वृत्ति को संक्षिप्त करते हुए, रस रहित आहार को जितनी आवश्यकता हो उतना ही ग्रहण करे। परमात्मा ने इसे ऊनोदरी तप के द्वारा नियंत्रित कर उत्तम स्वास्थ्य हेतु आवश्यकता से भी कम आहार लेने का विधान प्रस्तुत किया।

प्राचीन पद्धति के अनुसार आसन पर बैठकर थाली के नीचे लकडी का पट्टा रखकर भोजन किया जाता था। थाली ज्यादातर कांसी, पीतल, चांदी आदि की होती थी अर्थात् खाते वक्त भोजन एवं शरीर का भूमि से सम्पर्क न हो ऐसी व्यवस्था की जाती थी। चूंकि पृथ्वी एक चुम्बक है इस कारण इसके सम्पर्क में भोजन की थाली आने से उसमें चुम्बकीय ध्रुव पैदा होने की संभावना रहती थी। अतः आहार को उपयोगी बनाने हेतु ऐसा किया जाता था। साथ ही धातु की थाली होने के कारण खाने के साथ धातु के आयन शरीर के अंदर प्रविष्ट होते थे तो पाचन शक्ति में वृद्धि होती एवं अन्य उपयोगी क्रियाएं होती। खाने के चारों ओर पृथ्वी पर फैली बिजली चुम्बकीय आदि से भोजन के विकारों को रोकने के लिये, तरंगों को परिवर्तित करने हेतु उसी प्रकार कार लगायी जाती थी जिस प्रकार शरीर के नाजुक अंगों को तरंग प्रभाव से बचाने के लिये जनेऊ धारण की जाती है जो तडित चालक की तरह लक्ष्मण रेखा का कार्य करती है।

भोजन सम्मुख आने के बाद कुछ क्षणों के पश्चात किया जाता था जिसका कारण यह था कि भोजन की सुगन्ध से लार का स्राव प्रारम्भ हो जावे। ऐसा कहा जाता था कि भोजन करते समय ग्रास को बांए जबडे से दाहिने जबड़े में न ले जाए और दाहिने

जबडे से बाए जबडे मे न ले जाए। इसका कारण यह था कि भोजन की अनिवार्यता के स्थान पर स्वाद ग्रहण की अनिवार्यता मे वृद्धि होती तथा जीभ के उपयोग मे वृद्धि होने के कारण स्वादकणिकाए उत्तेजित हो जाती थी। लार मे रहे टाइलिन का मुख मे ज्यादा उपयोग होता एव चबाने की क्रिया कम होने के कारण टाइलिन का स्राव कम हो जाता था। अत माड को चीनी मे बदलने की प्रक्रिया भी अधूरी रहती है। चीनी रहित पदार्थ आमाशय मे पहुचने पर आमाशय रस मे भी नहीं घुलता ओर आगे बढकर छोटी आतो के तीन रसो के मिलने मे भी अस्तव्यस्तता हो जाती थी। ऐसी स्थिति मे हम खाते अधिक है जबकि ऊर्जा कम प्राप्त होती है। अधिक स्वाद लेने से खाने की वृत्ति अधिक होती है जो अपच का कारण होती है। मीठे पदार्थों को इस प्रकार मुह मे घुमाकर खाने से राग और नमकीन पदार्थो से द्वेष भाव की वृद्धि होती है। विज्ञान के अनुसार मीठा पदार्थ भूख मे कमी, कडुवा भूख मे वृद्धि, खट्टा प्यास को शात, नमक का स्वाद प्यास मे वृद्धि करता है। इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर हम कम आहार द्वारा भी अधिक ऊर्जा प्राप्त कर सकते है साथ ही अपच जैसी बीमारी को भी दूर कर सकते है जो कि सम्पूर्ण बीमारियो की जड है।

निष्कर्षत ऐसे हजारो रोजमर्रा के कार्य बिना किसी पृथक क्रिया के करने से सम्पूर्ण शरीर को प्राकृतिक नियमो एव विवेक के द्वारा स्वस्थ रखा जा सकता है। यहा उनका विस्तारभय से वर्णन नहीं किया जा रहा है। जबकि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क मनुष्य को किसी भी ऊचाई पर पहुचा सकता है। हम बिना किसी अतिरिक्त समय एव द्रव्य के बोझ से दैनिक जीवन की वृत्ति को व्यवस्थित कर शारीरिक एव मानसिक रूप से सशक्त, प्रसन्न रह सकते है। इस प्रकार प्राचीन पद्धति से सामजस्य कर हम दैनिक चर्या मे आशिक सुधार कर स्वस्थता की कुजी प्राप्त कर सकते है। जो कि आज के भौतिकवादी युग मे अत्यन्त आवश्यक है।

❑

लज्जा, स्नेह, मधुर सभाषण, बुद्धि, यौवन की शोभा, पत्नी-प्रेम, स्वजनो के प्रति आत्मीयता, सुख, आमोद-प्रमोद, धर्म, शास्त्र, देवभक्ति, गुरुभक्ति और शौच-आचार की बाते प्राणियो को पेट के भरे रहने पर ही सूझ सकती हैं।

– पचतत्र

●

मै नरक मे भी उत्तम पुस्तको का स्वागत करूगा क्योंकि इनमे वह शक्ति है कि जहा ये होगी, वहा आप ही स्वर्ग बन जायेगा।

– तिलक

सोए राग जगाओ साथी

ओम केवलिया

सपनों में क्यों खो जाते हो
विपदा में क्यों घबराते हो,
बुझते दीप जलें क्षण भर में, ऐसा साज़ बजाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी

क्यों चलते हो तुम मन मारे
सोते हो क्यों पांव पसारे,
अगर वेदना छा जाए तो, दुर्बलता मत लाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी

तुम गाओ तो धरा गगन हिल जाए
भूले भटके राही को मंजिल मिल जाए,
रुको नहीं तुम बढ़े चलो बस, मरूथल को सरसाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी

कर्म-क्षेत्र से हटो न राही
मंजिल दूर नहीं है राही
अंधकार को चीर बढो तुम, भारत स्वर्ग बनाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी

इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे, तो वह उसी समय सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (N S S) मे विद्यार्थियो की भूमिका

✍ राखी गर्ग
बी ए (पार्ट द्वितीय)

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धात वाक्य है "Not me but you' ''मुझको नहीं तुमको'' यह सिद्धात वाक्य लोगो को मिल जुलकर रहना सिखाता है और नि स्वार्थ सेवा की आवश्यकता का समर्थन करता हे। यह वाक्य बताता है कि हम दूसरो की बातो की सराहना करने वाले बने और अपने जैसे व्यक्तियो के लिए सहानुभूति रखे। यह घोषणा करता है कि व्यक्ति का कल्याण तभी होगा जब सम्पूर्ण समाज का कल्याण होगा। इसलिए राष्ट्रीय सेवा योजना का लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम इस सिद्धात वाक्य का प्रदर्शन व एन एस एस के दैनिक कार्यक्रम करे।

इसके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि हम विद्यार्थियो को देश से, राज्य से, गाव-कस्बे, समाज आदि से प्रेम हो और उसके साथ साथ विद्यार्थी मे नव निमाण के लिए अदम्य शक्ति, दृढ सकल्प और असीमित क्षमता की आवश्यकता होती हे। इन सबके अभाव मे उसका राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड पाना असभव है।

देश प्रेम के साथ साथ हमारे लिए यह भी आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम अपने परिवार को उन्नत करे तभी हम आस-पडौस, गली-मोहल्ले और राष्ट्र का सुधार कर सकते है क्योकि यदि हम स्वय ही उन्नत नही होगे तो दूसरो को केसे उन्नत कर पाऐगे अत स्वय का उन्नत होना अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत हम बहुत से क्षेत्रो मे अपना योगदान दे सकते है -

विभिन्न क्षेत्रो मे योगदान

1 **शिक्षा के क्षेत्र मे योगदान** - हम सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र मे अपना योगदान दे सकते है क्योकि जो राष्ट्र शिक्षा पर ध्यान नही देगा वह राष्ट्र साक्षर एव सुशिक्षित कैसे हो पाएगा ? अत हमे राष्ट्र निर्माण मे योगदान के लिए अन्य लोगो को भी अनिवार्य शिक्षा देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और प्रौढ शिक्षा जैसे कार्यक्रमो को अपने हाथो मे लेकर भारत की अशिक्षित और पिछडी हुइ जनता को आगे बढाने का कार्य करना चाहिए।

व्यक्ति को साक्षर करने के लिए निम्न बाते आवश्यक हैं

व्यक्ति को साक्षर करने के लिए नि स्वाथ भावना आवश्यक है। हमे यह नही सोचना चाहिए कि हम

उसे कुछ सिखा रहे हैं बल्कि यह सोचना चाहिए कि हम उससे कुछ सीख रहे हैं तभी सीखने और सिखाने की कला का विकास होगा।

व्यक्ति को साक्षर करते समय भाषा उसकी समझ में आने वाली होनी चाहिए, बनावटीपन नहीं होना चाहिए, व्यक्ति की सुविधानुसार ही उसे साक्षर करना चाहिए, साक्षरता के समय हमारी वेशभूषा व पहनावा साधारण होना चाहिए और इन सबके साथ हमें उसे नम्रतापूर्वक साक्षर करना चाहिए। इन सबका ध्यान रखकर यदि हम साक्षरता का कार्य करेंगे तो शिक्षा के क्षेत्र में अवश्य ही सफल होंगे।

2. **पर्यावरण की समृद्धि और सुधार में योगदान** - वर्तमान युग की समस्याओं में सबसे महत्वपूर्ण समस्या पर्यावरण प्रदूषण समस्या है। स्वच्छ पर्यावरण स्वच्छ जीवन का प्रतीक है। पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में हमारा योगदान निम्न है -

(क) पर्यावरण की स्वच्छता के लिए ग्रामीण तालाबों, पोखरों और कुओं की सफाई में अपना योगदान दे सकते हैं।

(ख) सडकों, ग्रामीण गलियों, नालियों के निर्माण में अपना सहयोग दे सकते हैं।

(ग) हम अपने आस-पास के कूड़ा करकट को इकट्ठा करके गढ्ढों में भरकर खाद बना सकते हैं।

(घ) सबसे महत्वपूर्ण योगदान हम वृक्षारोपण में कर सकते हैं, इसके अन्तर्गत हमें हरे-भरे पेड़ों को कटने से रोकना है और वृक्षों की उपयोगिता पर सुदूर ग्रामों तक वृक्षारोपण का संदेश पहुंचाना है और स्वयं निश्चित योजना बनाकर वृक्ष लगाने की ओर प्रवृत्त हो और दूसरों को भी वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना है।

इस तरह हम अपने पर्यावरण को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

3. **सामाजिक सुधार में योगदान** -हम सामाजिक सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, यदि हमें किसी राष्ट्र का सही दिशा में निर्माण करना है तो उसके लिए यह आवश्यक है कि हम समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर करें। हिन्दू धर्म में छूआछूत रूढिवादिता जाति भेद की भावना और अनगिनत अंधविश्वास की स्थिति अंधविश्वास बनकर रही है, हम ऐसे अंधविश्वासों रूढ़ियों को मिलकर योजना बनाकर दूर करने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

4. **महिलाओं के स्तर में सुधार में योगदान** - आज महिलाओं का स्तर गिरता जा रहा है उनके गिरते हुए स्तर में सुधार के लिए हमारा योगदान निम्न है -

(क) महिलाओं के शिक्षण के लिए तथा उनको अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए बहुत से कार्यक्रम बनाकर हम अपना योगदान दे सकते हैं।

(ख) महिलाओं में यह जागरूकता पैदा करना कि कोई भी व्यवस्था अथवा कार्य ऐसा नहीं है जो कि उसके लिए खुला न हो बशर्ते उनमें उसके योग्य दक्षता हो।

(ग) जहां तक हो महिलाओं को सिलाई कढाई,

बुनाई, अन्य हुनरो का प्रशिक्षण देकर हम अपना योगदान दे सकते है।

इस प्रकार हम महिलाओ की इस हीन भावना को कि "हम कमजोर, असहाय है", को दूर करके उनके स्तर मे सुधार कर सकते है।

5 **आपातकाल मे योगदान** - इन सबके अतिरिक्त हमे प्राकृतिक विपदाओ जैसे - भूकम्प, बाढ और तूफान आदि के आने पर सहायता और पुनर्वास कार्यो मे स्थानीय अधिकारियो को सहयोग देना चाहिए। इन परिस्थितियो मे हम अपना सहयोग निम्न प्रकार दे सकते है -

(क) खाद्य वस्तुओ, दवाइयो तथा कपडो इत्यादि के वितरण मे अधिकारियो को अपना सहयोग दे सकते है।

(ख) स्वास्थ्य अधिकारियो को टीका लगाने और दवाइयो के बाटने इत्यादि मे सहायता कर सकते है।

(ग) दान, कपड़ो तथा अन्य सामग्री को इकट्ठा करके उन्हे प्रभावित क्षेत्रो मे भेजने मे सहयोग कर सकते है।

(घ) राहत कार्यो तथा सुरक्षा कार्यो मे स्थानीय अधिकारियो को सहयोग और उनके साथ मिलकर कार्य कर सकते है।

(ङ) लोगो को उनकी झोपड़ियो के पुनर्निमाण, कुओ की सफाई, भवनो और सड़को का पुनर्निमाण इत्यादि के लिए उनके साथ मिलकर कार्यो मे अपना सहयोग दे सकते है।

इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत हमारी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है हम समाज कल्याण के लिए व्यावहारिक रूप से कदम उठाए तो इसमे सदेह नहीं कि कल हमारे भारत जैसे राष्ट्र का नव निर्माण हो सकता है।

❑

ईमानदार आदमी का सोचना लगभग न्यायपूर्ण होता है।

- रूसो

सबसे दुखी कौन है ? ईर्ष्यालु क्योंकि उसको अपने दुख तो चिपटे ही रहते है, दूसरो की खुशियो से उसको जो दुख मिलता है उसकी थाह नही।

- सेम्युअल जॉन्सन

प्रत्येक को अपनी उन्नति से सतुष्ट नही रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

- दयानन्द

भारतीय समाज का नासूर
अजन्मी बालिका की हत्या

डॉ. शशि भार्गव
व्याख्याता

चिकित्सा पद्धति के अनुसार भ्रूण परीक्षण एक ऐसा परीक्षण है, जिसका उद्देश्य है-गर्भस्थ शिशु की विकृतियों का पता लगाना। असामान्य शिशु होने पर गर्भपात कराया जाता है लेकिन आज भ्रूण परीक्षण के संदर्भ ही बदल गए हैं। आज भ्रूण परीक्षण का उद्देश्य गर्भस्थ शिशु के लिंग की पहचान कर मादा लिंग होने पर उसको जन्म से पहले ही खत्म कर देना है। हमारे समाज में पिछले सैंकडों वर्षो से नारी का शोषण हो रहा है लेकिन अब तो स्त्री गर्भ में भी असुरक्षित है। भ्रूण परीक्षण के माध्यम से गर्भाशय में पल रहे शिशु की प्रारम्भिक तीन महिने में जांच कर लिंग का पता लगाकर उसकी हत्या कर देना आज आम बात हो गई है।

चिकित्सकों की राय में भ्रूण परीक्षण द्वारा लिंग का प्रारम्भिक अवस्था में पता लगाना इतना आसान नहीं है। बहुत बार ऐसे उदाहरण सामने आये हैं जब चिकित्सकों ने भ्रूण परीक्षण द्वारा मादा लिंग होना बताया और बाद में पता लगा कि वह नर लिंग था।

अनेक महिला संगठनों एवं बुद्धिजीवियों की मांग पर गर्भ में पल रहे शिशु के लिंग परीक्षण को एक विधेयक के माध्यम से कानूनन अवैध घोषित किये जा चुकने के बाद यह ऊपरी तौर पर बंद है लेकिन आज भी अनेक प्राईवेट नर्सिंग होम, जिनके पास पर्याप्त मशीनें भी नहीं हैं, यह काम जोर शोर से कर रहे हैं। उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात के कई जिलों में जहां पीने के पानी तथा बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं वहां भी ऐसे क्लीनिक खुल गए हैं।

चिकित्सा विज्ञान ने भ्रूण परीक्षण की चमत्कारी खोज भ्रूण में पल रही बीमारियों के निदान के लिए की थी जिसके द्वारा गर्भाशय में ही सेक्स संबंधी बीमारियों के विषय में समुचित जानकारियां प्राप्त कर एम.टी.पी. द्वारा तुरन्त उनका निदान किया जा सके, रोका जा सके। किन्तु इसका दुरुपयोग इसकी उपलब्धियों के समक्ष एक बहुत बडा प्रश्नचिन्ह बनकर खड़ा हो गया है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में एक वर्ष में औसतन 65 लाख गर्भपात कराए जाते हैं, जिसमें से 37 लाख 23 हजार से अधिक संख्या मादा भ्रूण की होती है। इसका नतीजा यह हुआ है कि दुनिया में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है। दुनिया में इस समय एक हजार

पुरुषो के मुकाबले 981 महिलाए है।

स्त्रियो के कम होने की यही रफ्तार रही तो इक्कीसवी सदी के पहले साल मे जब जन गणना होगी तो यह अनुपात ओर विगडा होगा। सामाजिक सवेदना बिल्कुल नगण्य रह जायेगी और घर मे भी ओरत सुरक्षित नही रहेगी। जिसका अभिशाप कालातर मे पुरुष को भी भोगना होगा।

भ्रूण परीक्षण द्वारा मादा लिग होने पर उसकी हत्या कर देने का मुख्य कारण यही है कि आज भी हमारे समाज मे गलत मान्यताए एव परम्पराए है। प्रत्येक दपत्ति की यही कामना रहती है कि उनकी आने वाली सतान पुत्र ही हो। घर परिवार एव गाव समाज के बढे-बूढे नव-दपत्ति को दूधों नहाओ पूतों फलो का ही आशीवाद देते हे। पुत्रियो की माताओ को समाज मे कम प्रतिष्ठा मिलती है। परिवार मे पुत्रो की अधिक सख्या प्रतिष्ठा का सूचक मानी जाती है। पुत्र पैदा होने पर उसे पुत्र रत्न की सज्ञा दी जाती है, बधाइयो का ताता लग जाता हे। अगर पुत्री पैदा हो गई तो खुशियो का अन्त सा हो जाता है। यदि पहली सतान पुत्री है ओर दूसरी भी पुत्री हो गई तो मा उपेक्षित सी हो जाती है, मानो पुत्री पैदा होने मे सारा दोष उसी का हो। मा की खोज खबर लेने वाला कोई नही होता, कभी कभी तो नोबत यहा तक आ जाती है उसे हरीरा भी नही दिया जाता, न कोई बधाई गाता है,न कोई सौगात आती हे। ऐसी स्थिति से बचने के लिए औरत यह ही चाहती है कि वह भ्रूण परीक्षण द्वारा यह पता लगा ले कि मादा भ्रूण है क्या, हे तो गर्भपात करा ले। आज भौतिकवादी समाज मे बढती हुई दहेज की माग के कारण लडकियो का विवाह एक समस्या बन गई है। शादी के दौरान तथा बाद मे भी लडकियो तथा उनके माता पिता को अपमान सहना पडता हे। दहेजरूपी दानव के बढते प्रकोप ने कितनी ही कलियो को असमय झुलस जाने को बाध्य किया है, इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हे हमारा परिवार और समाज उसका दोहरा व्यवहार, पुरुष जीवन भर कुवारा रहे, परिवार और समाज उसे कुछ नहीं कहता, किन्तु युवावस्था मे पहुच चुकी अविवाहित लडकियो को बुरा कहने के लिए लोगो के मुह हर समय खुले रहते है ओर तनी रहती हे-उगलिया।

भ्रूण परीक्षण के सदर्भ वदलने का कारण हमारी दकियानूसी सामाजिक परम्पराए हे। कन्यादान को जीवन का सवसे बडा दान तो माना गया, किन्तु इसीलिए लडकियो को पराया भी मान लिया गया जो दान मे देने के लिए होती हे। विवाहोपरात चूकि स्त्री का परिचय वदल जाता है, उसे पिता का घर छोडकर पति के घर मे रहने के लिए जाना पडता है, इसलिए माता पिता उससे किसी सहारे, किसी मदद की आशा नहीं करते। लाख नालायक होने के बावजूद बुढापे का सहारा बेटे को ही माना जाता है और इस स्वार्थ ने भी भ्रूण हत्याओ के सिलसिले को जारी रखने मे मदद की है।

ऐसा मानना है कि लडकियो के पालन पोषण मे अधिक देख रेख सुरक्षा की आवश्यकता है जिसके कारण माता पिता का उत्तरदायित्व और बढ जाता है। लडकियो की शारिरिक सरचना के कारण उसके शोषण की, आशका बराबर बनी रहती है,इसलिए भी माता पिता लडकियो के जन्म का स्वागत नही करते। लोगो की परम्परागत विचारधारा धार्मिक अनुष्ठानो मे लडके का महत्व होने के कारण ही

शायद अजन्मी बालिका की हत्या हो रही है।

जीवन के परम्परागत मापदंड, मान्यताएं एवं रूढियां और कुरीतियां हैं जिनसे ग्रसित होकर बेटी की गर्भ में हत्या कर दी जाती है। प्रगतिशील और आधुनिक कहलाने वाले हम लोग पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं। लडके और लडकी में भेद करते हैं। जबकि केवल प्राकृतिक बनावट में ही लड़कियां लडकों से अलग हैं। ऐसा कोई काम नहीं जो लडकियां नहीं कर सकतीं। आज असुरक्षित केवल लडकियां ही नहीं हैं, लड़के भी हैं। आए दिन हम अखबार में पढते रहते हैं, यह हमारी मिथ्या धारणा है कि बेटा वृद्धावस्था में माता पिता का सहारा बनेगा। अधिकांश मामलों में पुत्र माता पिता की अपेक्षित सेवा नहीं करता। शादी के बाद पुत्र भी पराया हो जाता है। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अलग रहना पसन्द करता है। इतना ही नहीं वह माता पिता से शीघ्रातिशीघ्र छुटकारा पाना चाहता है, ताकि उत्तराधिकार संबंधी अधिकार उसे प्राप्त हो जाएं और वह अपने माता पिता की सम्पति का स्वामी बन जाए। ठीक इसके विपरीत पुत्री सदैव अपने माता पिता की दीर्घायु होने की कामना करती है फिर लड़कियों के साथ पक्षपात क्यों किया जाता है।

आज सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कुछ ऐसे प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे भ्रूण परीक्षण द्वारा लिंग का पता लगाकर मादा भ्रूण की हत्या न की जाए। इसके लिए जागृति और शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता है,केवल कानून बना देने से कुछ नहीं हो सकता।

तमिलनाडु सरकार ने 1992 के अंत में 'क्रेडल बेबी' योजना की शुरुआत की। इस योजना के अनुसार माता पिता अपनी अवांछित नवजात बालिका शिशु को पब्लिक हैल्थ सेंटर में रखे पालने में छोड सकते हैं। उसके बाद बच्ची की परवरिश की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। स्वैच्छिक संगठनों की सहायता से इन बच्चों को गोद दे दिया जाता है। राज्य सरकार ने अभी तक बहुत सी कन्या शिशुओं की जान बचाई है। यह प्रयास सराहनीय है और भी राज्यों में इस प्रकार के प्रयास किये जाने चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम लडकी और लड़के में भेद न करें। लड़कियों को उच्च शिक्षा दें। उन्हें अपने पैरों पर खडा करें, बहादुर बनायें, विवाह को अनिवार्य न मानें। हमें स्त्री प्रधान या पुरुष प्रधान समाज के रूप में नहीं सोचना है बल्कि मानव प्रधान समाज बनाना है। एक ऐसा समाज जिसमें लिंग के आधार पर समाज में कोई ऊंचा नीचा न हो। ऐसी स्थिति में ही भ्रूण परीक्षण के बदले हुए संदर्भ में बदलाव आएगा और भ्रूण परीक्षण अजन्मी बालिका की हत्या का माध्यम नहीं बनेगा।

❑

आधी अरु सूखी भली, पूरी सा सन्ताप।
जो चाहेगा चूपड़ी, बहुत करेगा पाप॥
- कबीर

कविताएं

✍ रेणु शर्मा
बी ए , तृतीय वर्ष (कला)

बसन्त

वसंत तुम कब आये
और आकर चले गये।
मै स्वप्निल सपने बुनती रही।
खो गये शायद तुम
बीच रास्ते मे
ऊची-ऊची अट्टालिकाओ के भवनो मे
मैं बुनती रही स्वप्निल सपने
शायद तुम आओगे
बैठोगे मेरी कुटिया की खटिया मे
स्नेहाशीष बरसाओगे
पर तुम भटक गये
ऊचे भवनो की वीथियो मे
मुझे यकीन है वह दिन आयेगा
जब तुम आहोगे सभी सदनो मे
समभाव रूप मे
भेद-भुलाकर करोगे निर्धनो को अपनी
आभा से तृप्त।
मुझे इतजार है जब तुम इस धरा की
माटी को चूमोगे
तभी तुम्हे यह भीगी-भीगी पलको से
नयन निहारेगी, नमन करेगी,
नमन करेगी।

लडकी

लडकी जीवन एक जलती मशाल है
पैदा हुई तो मा-बाप पर बोझ बनी
ताने-सुन-सुन कर बडी हुई।
पालने मे पलने की जगह
रसोई मे पलकर बडी हुई।
मा ने टोका मत हस, मत रो, मत पढ़
पिता ने ताने दिये पराये होने का
क्या यही है लड़की का अर्थ ?
यदि यही तो,
मैं न चाहूगी अगले जन्म मे लडकी होना।
ईश्वर चाहे बनाना-पशु जानवर पक्षी
पर न बनाना लड़की।

नारी सम्मान-एक दृष्टिकोण

✍ डॉ. सरला ग्रोवर

नारी जिसे लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती के रूप में आदि काल से ही पूजा जाता है, उसे वास्तव में वैचारिक तथा व्यावहारिक दो प्रकार के मापदंडों में बांध कर रखा गया है। प्राचीन काल में बेशक नारी को बहुत ऊंचा तथा सम्मान का स्थान प्राप्त था, परन्तु धीरे धीरे समय बदलने के साथ साथ नारी को समाज ने तथा उसने स्वयं भी अपने आपको कमजोर और दूसरों पर निर्भर रहने वाला व्यक्ति बना लिया।

मनुस्मृति में कहा गया है - इस जगत के सृजन से पहले आदि देवता ने अपने आपको दो हिस्सों में बांट लिया। एक हिस्सा पुरुष और दूसरा स्त्री कहलाया। अर्द्ध नारीश्वर की पूजा का भी यही रहस्य है। वैदिक काल में स्त्री और पुरुष दोनों को समान अधिकार थे। राम को राजसूय यज्ञ में सीता के अभाव में सोने की सीता बनवानी पड़ी। अर्थात् प्राचीन भारत में नारी को बड़ी प्रतिष्ठा थी। कौटुम्बिक, पारिवारिक, धार्मिक तथा सामाजिक कार्यो में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। परन्तु उस समय भी शायद उसे दोहरे मापदंडों के तराजू में तोला जाता था।

वाल्मीकि जी ने रामायण में जिस सीता को एक ओर सती के रूप में चित्रित किया है उसे ही राम ने लोकापवाद को अधिक महत्व देकर परित्याग दिया। देवी के रूप में पूजनीय सीता को अग्नि परीक्षा देकर अपनी पवित्रता को सिद्ध करना पडा। राम को सीता की पवित्रता में कोई शंका न होते हुए भी क्यों उसे बार बार सामाजिक अपवादों के रूप में तोला गया ?

आज भारत की करोड़ों नारियां अज्ञान, अशिक्षा कुशिक्षा और निरर्थक परम्पराओं तथा अन्धविश्वासों के कारण दीनहीन असहाय स्थिति में अपना जीवनयापन कर रही हैं।

पुरुष वर्ग की स्वार्थी प्रवृति के कारण स्त्री कूप मंडूक बनी हुई है। उनका बहुमुखी व्यक्तित्व और बहुमूल्य क्षमताएं कुंठित हैं। दहेज, बाल विवाह,भ्रूण हत्या इत्यादि के कारण आज नारी जीवन और भी अभिशप्त बन गया है। यह कितनी बडी विडम्बना है कि जिस नारी को देवी, लक्ष्मी, सरस्वती के रूप में पूजा तो जाता है परन्तु उसे एक हाडमांस के व्यक्ति के रूप में न तो सही पहचाना जाता है और न ही सम्मान दिया जाता है। नारी सम्मान को नारी की स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं के साथ न जोड़ कर अधिकतर उसका अस्तित्व भी किसी पुरुष की पत्नी, पुत्री, वहिन इत्यादि के संवंध में ही आंका जाता है। पुरुष प्रधान समाज में यह विचारधारा नारी को. वास्तविक सम्मान देने का सोच ही नही मकती। स्त्रियों ने अव तक समाज की सेवा की है। लेकिन अव समाज परिवर्तन का कार्य भी उन्हें

ही करना है। उन्हे ही माता के रूप मे घर मे लडको और लडकियो के सामाजिकरण मे परिवर्तन लाना है तथा दोनो को समान अवसर विकास के देने है। परिवर्तन की कठिन चुनौतियो का सामना दृढता से करने का साहस जुटाना है। आज की नारी को अपनी योग्यताओ और कमियो को पहचान कर अपने आपको मजबूत बनाना होगा। अपनी आतरिक शक्तियो को पहचानना होगा। स्त्रिया जब बुद्धि प्रखर होंगी तथा निष्ठा और आध्यात्मिकता से सम्पन्न होगी, तब ही उनका स्वय का उद्धार होगा तथा समाज मे परिवर्तन सभव होगा।

अत मे मै यही कहूगी कि महिला सम्मान का प्रश्न महिला शक्ति से जुडा हुआ है और आज आवश्यकता है स्त्रियो को अनेको रूपो मे शक्तिशाली बनाने की, जिस के लिये मै निम्न सुझाव प्रस्तुत करती हू -

- राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और राजनेतिक विकास के लिये महिलाओ की समानता को मानना।
- स्त्रियो को उनकी आश्रित, शोषित और असमान परिस्थिति से मुक्त कराने के लिये रोजगार के अवसरो और अर्जन शक्ति के विकास को प्राथमिकता देना।
- विवाह और मातृत्व को राष्ट्रीय विकास कार्य मे स्त्रियो द्वारा पूर्ण और सही भूमिका निभाने मे बाधक नहीं मानना।
- विवाह का अदालत मे पजीकरण।
- स्त्रियो मे साक्षरता, शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण सभव करना।
- स्त्रियो को विवाह, तलाक, जायदाद तथा समान वेतन इत्यादि सबधित कानूनी अधिकारो का ज्ञान तथा जागृति दिलाना।
- स्त्रियो को पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनेतिक महत्व के निर्णयो मे समान रूप मे भागीदार बनाना।
- अधिक से अधिक महिलाओ को राजनैतिक क्षेत्र मे भागीदारी के लिये प्रशिक्षित करना।
- स्त्रियो के स्वास्थ्य पर ध्यान देना।
- सचार माध्यमो मे स्त्रियो का सकारात्मक तथा अश्लीलता रहित प्रदर्शन होना।
- स्त्रियो द्वारा भारतीय सस्कृति की जडो से दूर न हटना।

□

'आज नही मिला तो क्या, कल मिल जायेगा' जो यह विचार कर लेता है, वह कभी अलाभ के कारण पीडित नही होता है।

- उत्तराध्ययन

नारी के प्रति समर्पित महापुरुषों के विचार

✍ ममता मिश्रा
बी.ए., तृतीय वर्ष

●

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तस्फलाः क्रिया ॥

- मनु

●

प्रकृति और परमात्मा के प्रेमपूर्ण अनुबन्ध का नाम है नारी।

- अलबर्ट आइन्सटीन

●

नारी संसार की प्रथम आवश्यकता है, गृहस्थ की दूसरी और मानवता की प्रतिपल।

- आईजक न्यूटन

●

काली रात के बाद होने वाले सुप्रभात से बढकर नारी ज्योतिर्मया है।

- यंग

●

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नभ पगतल में ।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में ।

- जयशंकर प्रसाद

●

ईश्वर शांति है तो नारी उस महान शांति की मधुरतम सीमा रेखा है।

- डॉ. होमी जहांगीर भाभा

●

पति के लिए चरित्र, संतान के लिए माता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीव मात्र के लिए करुणा संजोने वाली महाप्रकृति का नाम नारी है।

- सी. वी. रमण

●

तुम मुझे सौ माताएं दो, इसके बदले में मैं तुम्हें प्रबुद्ध और ऊंचा राष्ट्र दूंगा।

- नेपोलियन

●

नारी एक ईश्वरीय उपहार है, जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसकी क्षतिपूर्ति के लिए दिया है।

- गेटे

●

सम्पूर्ण महान कार्यो के प्रारम्भ में नारी का हाथ रहा है।

- लामाटिन

●

साध्वी नारी संसार की सर्वोत्तम वस्तु है।

- लावेल

●

नारियों की संगति अच्छे स्वभाव की आधारशिला है।

- गेटे

●

त्याग ओर सेवा की प्रतिमूर्ति के रूप मे मैने नारियो की हमेशा पूजा ही की है।

- महात्मा गाधी

●

नारी तुम इस पृथ्वी पर,
मानो प्रकाश उतर आया ।
आदि युग के वन्य मानव को,
तुमने सुसस्कृत सभ्य बनाया ।

- मुनि रामकृष्ण महाराज

●

मनुष्य नियम बनाते है, स्त्रिया व्यवहार।

- डी सीगर

●

ईश्वर के वाद हम सर्वाधिक ऋणी नारी के है। प्रथम तो जीवन के लिए और फिर इसको जीने योग्य बनाने के लिए।

- वापू

●

सुशील स्त्री काटेदार झाडी को फूल बनाती है, दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को भी स्वर्ग बनाती है।

- कवि गोल्ड स्मिथ

●

जिस समय नारी का हृदय पवित्रता का आगार वन जाता है, उस समय उससे कोमल कोई वस्तु ससार मे नही रह जाती।

- लूथर

●

ममता, वात्सल्य, करुणा और समर्पण की मूर्ति नारी भूमि पर साक्षात देवता है।

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

●

नारी और पुरुप विश्वरूपी अकुर के दो पत्ते है।

- जायसी

●

सबसे शानदार वस्तु सत्य है और सत्य की सुगन्धित पहलू है एक-हसमुख नारी व उसमे निहित नैसर्गिक गुण।

- थामस एडीसन

●

किसी भी देश और समाज को उन्नत करने के लिए नारियो का सम्मान होना आवश्यक है।

- विवेकानन्द

●

आदर-सत्कार करने पर नारी साक्षात लक्ष्मी बन जाती है।

- वेदव्यास

❑

जो अपने नाम से प्रसिद्ध होते है वे उत्तम, जो पिता के नाम से प्रसिद्ध होते है वे मध्यम, जो मामा के नाम से प्रसिद्ध होते है वे अधम् और जो ससुर के नाम से प्रसिद्ध होते है वे अधमाधम मनुष्य है।

●

जो केवल आशा के वल पर जीता है, वह भूखो मरेगा।

पर्यावरण का विनाश, मानवता का ह्रास

✍ डॉ. सविता किशोर
व्याख्याता

पर्यावरण से तात्पर्य है जीव जन्तु, मानव व पेड़ पौधों के बीच एक संतुलन किन्तु आज हमारा मानव समाज बहुत सी विसंगतियों एवं विकृतियों का शिकार हो रहा है। भौतिकवाद की दौड में मनुष्य अंधानुकरण की ओर अग्रसर हो रहा है। अनियंत्रित और विवेकहीन महत्वाकांक्षाओं में लिप्त मानव अपने उच्च आदर्शो को विस्मृत कर मात्र मशीन बन कर रह गया है।

मनुष्य का स्थान मशीनों ने ले लिया है। बडे-बड़े उद्योग व कल कारखाने स्थापित हो गये हैं। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर हमारे आधुनिक जगत ने प्रौद्योगिकी और मशीनों का इस्तेमाल करके प्रकृति को अपना दास बनाना शुरु कर दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पश्चिम ने वैज्ञानिक शोध के माध्यम से अदभुत प्रौद्योगिक प्रगति की है। इसने अन्य राष्ट्रों के सामाजिक आचार विचार पर भी इसी कारण प्रभुत्व कायम किया है। अभी हाल तक यह धारणा रही है कि प्रकृति और पर्यावरण मानव के सेवक तथा मानव और जीवों की प्रगति में योगदान देने के लिए हैं। लेकिन इसने निर्मम भौतिकवाद को वढावा दिया है। इस कृत्रिम भाव का परिणाम प्रकृति की समग्र महता की घोर उपेक्षा के रूप में सामने आया है। इसके पीछे यह धारणा रही है कि प्रकृति सिर्फ मानव से शोषित होने के लिए है।

अतः एक ओर तो मानव भौतिक सुख सुविधाओं में लिप्त हो गया व दूसरी ओर बढ़ती जनसंख्या का विकराल रूप व उनकी आवश्यकता पूर्ति हेतु हुई औद्योगिक क्रांति से भी पर्यावरण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई एवं तभी से प्रकृति का सामान्य रूप विखंडित होने लगा व जंगल के जंगल कटने लगे। मानव पर्यावरण पर अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने पर्यावरण के संबंध में बोलते हुए कहा था - "अधिक जनसंख्या गरीबी को बुलावा देती है और गरीबी प्रदूषण को जन्म देती है।"

यह दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है कि पिछले 500 वर्षो में जितना पर्यावरण नष्ट नहीं हुआ उतना केवल विगत 50 वर्षो में हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय मापदंड यह है कि कुल भूमि का एक तिहाई भाग घने जंगलों से घिरा रहना चाहिए लेकिन पृथ्वी के अधिकांश भाग में आज हरियाली नष्ट होने लगी है। नवोदित राष्ट्रों में जंगल के जंगल साफ होते जा रहे हैं और भारत में करीब 11% जंगल ही बच पाये हैं। तीव्र औद्योगीकरण, जहरीली गैसों के प्रयोग, वाहनों का धुंआ, आणविक अस्त्र शस्त्रों के परीक्षण के कारण वायुमंडल अत्यन्त प्रदूपित हो चुका है और दुनिया के वडे वडे शहर आज इतने प्रदूपित हो चुके हैं कि वहां श्वास लेना भी दूभर हो चला है। भारत की

राजधानी देहली आज विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरो मे गिनी जाती है। मनुष्य नाना प्रकार की बीमारियो का शिकार होते जा रहे है और विपन्न लोगो को तो नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य होना पड रहा है।

पर्यावरण चेतना के लिए प्रयास

सयुक्त राष्ट्र सघ के तत्वावधान मे मानव व पर्यावरण पर एक अतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का स्टॉकहोम मे आयोजन किया गया। 15,16 जून 1972 को आयोजित इस गोष्ठी मे सौ से अधिक देशो ने भाग लिया जिनमे अनेक राष्ट्राध्यक्ष व शासनाध्यक्ष भी उपस्थित थे। इससे इस गोष्ठी के महत्त्व का आकलन किया जा सकता है। इसमे स्वीकृत ऐतिहासिक दस्तावेज मे 26 सूत्र थे जिनमे मुख्य तौर पर उद्देश्य के रूप मे कहा गया है कि -

1 प्रकृतिदत्त व मानवकृत दोनो ही प्रकार के पर्यावरण मनुष्य के स्वय के रख रखाव मानव अधिकार और स्वय के जीवन अधिकार के उपभोग के लिए आवश्यक है।

2 हमारे सामने पृथ्वी के कई भागो मे मानवकृत हानि के ऐसे कई उदाहरण है, वायु, जल, भूमि और प्राणियो मे भयानक स्तर पर प्रदूषण, जीवमडल पर परीस्थिति की सतुलन मे भारी तथा अनचाही बाधाए पुन उत्पन्न न हो सकने वाले अनेक ससाधनो की कमी, तथा उनका विनाश मानवकृत पर्यावरण विशेपकर जैविक और क्रियाशील पर्यावरण मे मनुष्य के भौतिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की भारी गिरावट।

3 अब वह ऐतिहासिक क्षण आ गया है जब हम विश्व स्तर पर पर्यावरणीय परिणामो की दृष्टि से अपने क्रिया कलापो मे विवेकपूर्ण परिवर्तन लावे।

4 इस पर्यावरणीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर स्तर पर नागरिको और समुदायो तथा सभी सस्थानो द्वारा सार्वजनिक प्रयासो मे न्यायसगत भागीदारी के उत्तरदायित्व को स्वीकार करना होगा।

इस सम्मेलन मे सकल्प लिया गया कि

मानव को ऐसे पर्यावरण मे जिसमे वह सुखी और मर्यादापूर्ण जीवन जी सके तथा जहा स्वतत्रता समानता और रहन सहन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो, जीने का मूलभूत अधिकार है और साथ ही वर्तमान तथा भावी पीढी के लिए सुरक्षित व सुधारे हुए पर्यावरण को उपलब्ध कराने का महत्त्वपूर्ण दायित्व है। 10 से 18 जून 1982 मे एक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन नैरोबी मे हुआ और इसमे 105 देशो ने भाग लिया। इसमे एक विशेष चार्टर जारी किया गया जिसे 'नैरोबी घोषणा पत्र' कहा जाता है। 1990 मे रियोडिजनेरो मे एक बहुत महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सपन्न हुआ जिसमे अधिकाश सहभागी शासनाध्यक्ष थे।

नि सदेह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मेलन हुए है और निर्णय लिये गये है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि ये निर्णय केवल प्रस्ताव ही साबित हुये और व्यावहारिक स्तर पर कोई ठोस कार्य नहीं हुआ है। इसका मूल कारण है कि साधन सम्पन्न पश्चिमी राष्ट्र नवोदित गरीब देशो के ससाधनो का शोषण कर रहे है। रियो सम्मेलन मे पर्यावरण सरक्षण की बढ चढकर बाते करने वाला अमरीका ही वातावरण को सर्वाधिक प्रदूषित करने वाला देश घोषित हुआ

है, लेकिन अमरीका का आज कोई क्या बिगाड़े –

'समरथ को नहीं दोष गुसांई'

पर्यावरण की भारतीय परम्परा :

प्रकृति को हिन्दू धर्म में जिसमें उसके बौद्ध व जैन सम्प्रदाय की भी अवधारणा समाहित है, उसमें प्रकृति को माता माना गया है, ऐसी माता जो अपनी संतान का अहित स्वप्न में भी नहीं सोचती, वह प्रकृति देवी स्वरूपा है।

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा के अनुसार ''प्रकृति को नियंत्रित, परिवर्तित या अलंकृत करने की जरूरत नहीं है। उसे उसके सम्पूर्ण रूप में स्वीकार करने की जरूरत है। वह जैसी है वैसी ही प्रिय और उल्लासमय हो सकती है। वह सजीव है और उसे सीमित या शक्तिहीन नहीं किया जाना चाहिए।''

पर्यावरण के साथ हमारा संबंध प्रभावी कार्यक्षेत्र और सांमजस्यपूर्ण हो, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं पर आधारित हो। यहां अथर्ववेदीय पृथ्वी सूक्त से कुछ उद्धरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं। जिनसे यह सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीयों ने पर्यावरण को कितना महत्त्व दिया था।

सत्यं वृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञ पृथिवी धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युंरू लोक पृथिवी नः कृणोतु।

अर्थात अटल सत्यनिष्ठा, यथार्थ ज्ञान क्षात्र तेज धर्मानुष्ठान, या धर्म का पालन, हर एक काम में चतुराई, बडा ज्ञान, यज्ञ - ये गुण देश या राष्ट्र का पालन पोषण और रक्षण करते हैं। प्राचीन और भविष्य के तथा बीच में आने वाले वर्तमान समय के सब पदार्थो की पालन करने वाली ऐसी वह पृथ्वी हमारे लिए विस्तृत स्थल प्रदान करे।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।

जिस पृथ्वी में महासागर और अनेक जलाशय हैं, जिसमें सब प्रकार के अन्न उपजते हैं, जिसमें सजीव प्राणी चलते फिरते हैं, जिसमें खेती करने वाले मनुष्य संगठित होते हैं, ऐसी पृथ्वी हमको ऐश्वर्य प्रदान करे।

प्राचीन भारत की परम्परा इस श्लोक में प्रवाहित होती है। जिसका आज भी हम उच्चारण कर गौरवान्वित अनुभव करते हैं :

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे भवन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

मैंने हमेशा यह देखा है कि दुनिया में कामयाब होने के लिए आदमी को ऊपर से मूर्ख जैसा बने रहना चाहिए, पर वास्तव में बुद्धिमान होना चाहिए।

– मांटेस्क्यू

गीत

सीमा झालाणी
प्रथम वर्ष (कला)

मेरे वतन से अच्छा, कोई वतन नही है।
भारत सिवाय दूजा, कोई चमन नही है॥

इस देश जैसी गगा,
यमुना कहीं न होगी।
वेदो सी खूबसूरत,
रचना कही न होगी।
इस देश जैसी धरती,
ऐसा गगन नही है।
मेरे वतन से अच्छा

इस सरजमी पे आये,
गुणवान कैसे कैसे।
श्रीराम, कृष्ण, गौतम,
नानक, कबीर जैसे।
इस दश जैसी करुणा,
चिन्तन कही नही है।
मेरे वतन से अच्छा

नीला गगन है इसका,
तारो जडा सुहाना।
हरियाली इसका आचल,
जैसे कोई तराना।
फूलो से प्यार छलके,
ऐसा चमन नही है।

मेरे वतन से अच्छा, कोई वतन नही है।
भारत सिवाय दूजा, कोई चमन नही है॥

❑

उच्च शिक्षा की समस्याएँ एवं सुझाव

डा. हरिजन्दर कौर
व्याख्याता

आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं वह शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संघर्ष का युग है। जिसमें भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का संघर्ष चल रहा है। व्यक्ति और नीति का संघर्ष हो रहा है। विवेक और अविवेक का संघर्ष है। मूल्यों प्रतिमानों का संघर्ष है। संघर्षो की इस प्रक्रिया में छात्र छात्रायें भ्रमित हो रहे हैं, नई पीढी में शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की निर्बलता दिखाई देती है। इन सब के लिए उत्तरदायी कारकों में एक महत्वपूर्ण कारक हमारी आज की उच्च्च शिक्षा भी है। उच्च्च शिक्षा अर्थात् महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की शिक्षा। जिसमें निरूद्देश्य भटकाव के अतिरिक्त कोई उपलब्धि सामने नहीं आ रही। आज शिक्षा के ये मंदिर अपने अंतिम लक्ष्यों की प्राप्ति में असफल हो रहे हैं।

जबकि उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो विद्यार्थी आते हैं उनमें अद्भुत एवं अकल्पनीय शक्ति छिपी होती है। उमंग और उत्साह होता है। आकांक्षाएं और कामनाएं होती हैं। परिश्रम एवं अध्यवसाय होता है। यदि हमारे महाविद्यालय/विश्वविद्यालय चाहें तो इन दिव्य शक्तियों का सदुपयोग कर सकते हैं। समाज में बडे से बडा परिवर्तन ला सकते हैं, परन्तु आज ऐसा कहीं दिखाई नहीं देता।

पिछले कुछ समय में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या तो अवश्य बढ़ी है परन्तु ये विद्यार्थियों में न तो सत्य, प्रेम, सहिष्णुतावादी एवं मानवतावादी दृष्टिकोण पैदा कर सके हैं और न ही उन्हें नागरिकता का पाठ पढा सके हैं। उच्च्च शिक्षा की एक नहीं अनेक समस्याएं हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

1. प्रथम समस्या उद्देश्यविहीनता की समस्या है, आज उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को यह नहीं मालूम कि उनके उद्देश्य क्या हैं, वे केवल उपाधि प्राप्त करने के लिए शिक्षा प्राप्त करते हैं क्योंकि उपाधियां आज भी नौकरी प्राप्त करने का पासपोर्ट है।

2. द्वितीय समस्या अपव्यय की समस्या है, उच्च्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या तो बढ़ती जा रही है परन्तु साधन सीमित हैं जिस कारण प्रवेश की समस्याएं आती हैं। चयन हेतु निश्चित मापदंड अपनाने के कारण अधिकांश विद्यार्थी प्रवेश नहीं प्राप्त कर सकते, इसके अलावा परिणामों का प्रतिशत भी अच्छा नहीं निकलता, विद्यार्थी अनुचित तरीके अपनाते है।

3. तीसरी समस्या शिक्षा स्तर में गिरावट की

समस्या है, इस गिरावट के कई कारण है जैसे प्राध्यापको का कक्षाए न लेना, सही पाठ्यक्रम न होना, ट्यूशन का बढना, परीक्षा मे नकल को बढावा मिलना आदि।

4 चौथी समस्या अनुशासन की कमी है। गुरु और शिष्य का जो सबध होना चाहिये वह कहीं दिखाई नही देता, नैतिक मूल्यो का पतन हो रहा है, पुस्तकालयो मे चोरी होती है, शिक्षण सस्थाओ का वातावरण दूषित हो रहा है, निर्देशन सेवाओ का अभाव है। यौन दुर्व्यवहार जैसी समस्याए सामने आती है। जब तक अनुशासन नही होगा शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता।

5 उच्च शिक्षा मे विशिष्टीकरण की समस्या भी है। यह विशिष्टीकरण अपने गलतरूप के कारण छात्रो को अपनी विशिष्टता से आकर्षित तो करता है किन्तु उनके दृष्टिकोण को अव्यवहारिक तथा असतुलित बना देता है। इसका प्रमुख कारण है - विशिष्टीकरण का सकुचित, सकीर्ण तथा अव्यवहारिक रूप। अत यह आवश्यक है कि विशिष्टीकरण की प्रकृति व्यवहारिक होनी चाहिए, सामान्य ज्ञान से इसका सामजस्य हो, सामान्य शिक्षा जैसे विज्ञान तथा सस्कृति, नैतिक शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य हो।

6 उच्च शिक्षा मे छठी समस्या माध्यम की समस्या है। आज भी कई विषयो मे माध्यम अग्रेजी भाषा है, विदेशी भाषा होने के कारण उच्च शिक्षा आवश्यक रूप से महगी हो गयी है और जन साधारण से पृथक हो गई है। आम विद्यार्थी की समझ से बाहर होने के कारण उसे समुचित परिणाम नहीं मिल पाते।

7 एक अन्य समस्या निर्देशन की समस्या है। विद्यार्थी को अपनी रुचियो, अभिवृत्तियो तथा अपनी शक्तियो के बारे मे मालूम नहीं होता। गलत सकाय मे प्रवेश, गलत पाठ्यक्रम का चुनाव, गलत विषयो का चुनाव कर वह स्वय ही अपने सुनहरे भविष्य पर कुल्हाडी मार लेता है तथा व्यवहारिक जीवन मे निराशा के गर्त मे ही डूबता रहता है। अत यह आवश्यक है कि विद्यार्थियो को उचित मार्गदर्शन मिले।

8 छात्रसघो के चुनाव या राजनीति का शिक्षा मे अत्यधिक हस्तक्षेप भी एक समस्या है आजकल महाविद्यालय/विश्वविद्यालय राजनीति के अखाडे बन चुके है, जहा छात्रो को दलो के आधार पर गुटो मे देखा जा सकता है। दूषित राजनीति फैलायी जाती है। वर्षभर का कार्यक्रम केवल प्रवेश चुनाव एव हडताल तक सीमित रह गया है। जिससे परिसर मे सही वातावरण नहीं रह पाता।

उपरोक्त समस्याओ के समाधान हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित है -

सुझाव

1 उच्च शिक्षा मे सुधार के लिए आवश्यक है कि माध्यमिक स्तर पर छात्रो को उनकी रुचि अभिवृति के अनुसार विषय चुनने की व्यवस्था हो।

2 छात्रसख्या पर नियत्रण करने के लिए एक विशेष चयन पद्धति को अपनाया जाये।

3. परीक्षा प्रणाली में यथासंभव परिवर्तन हों, वस्तुनिष्ठ संक्षिप्त उत्तर एवं निबन्धात्मक प्रश्नों को उच्च शिक्षा में भी शामिल किया जाये, अभी तक यह माध्यमिक व उच्च माध्यमिक तक ही सीमित है।

4. उचित मार्गदर्शन हेतु प्रशिक्षित निर्देशन कार्यकर्ताओं का सहयोग लिया जाये।

5. अनुशासनहीनता को रोका जाये, विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की भावना विकसित की जाये।

6. शिक्षा में गुणात्मक सुधार पर बल दिया जाये, शिक्षा को सार्थक बनाया जाये, विद्यार्थी को रोजगार के लिए तैयार किया जा सके।

7. नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में जोडा जाये, समय समय पर होने वाले राष्ट्रीय पर्वो एवं त्यौहारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला जाये।

8. उच्च शिक्षा के स्तर पर अनुसंधानों एवं शोध कार्यो का अपना महत्व है, अतः शोध सुविधाओं का विस्तार किया जाये।

9. छात्र संघ आज शिक्षण संस्थाओं के सिरदर्द बन चुके हैं। निकृष्ट कोटि के विद्यार्थी छलबल करके विजयी होकर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के प्रमुख बन जाते हैं। और प्राचार्य, प्रोफेसर तथा उपकुलपति तक को प्रभावित करने लगते हैं। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय हडताल एवं झगडों के अड्डे बन जाते हैं। ऐसे में छात्रसंघ की सदस्यता स्वेच्छा पर रखी जाये एवं छात्रसंघ के साथ ही साथ साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परिषदें भी बनाई जायें, जिसमें विद्यार्थी रुचि के अनुसार भाग ले सके।

10. इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी की शिक्षा में वृद्धि की जाये।

11. प्राध्यापकों के लिए रिफ्रेशर कोर्स का प्रबन्ध होना चाहिये।

12. पाठ्यक्रम में घरेलू विषयो को भी शामिल किया जाये।

13. गांवों में भी महाविद्यालय खोले जायें।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि अच्छी आदतें बनाना, अच्छी रुचियां उत्पन्न करना, सादा जीवन एवं संयमित जीवन व्यतीत करने की क्षमता प्रदान करना ही उच्च शिक्षा का ध्येय होना चाहिये। इसके लिए अभिभावक, अध्यापक, सरकार, शिक्षण सस्थाएं एवं स्वयं विद्यार्थी सभी के सहयोग की आवश्यकता है।

❑

'पधारिये, यह आसन है, इसपर विराजिये, बहुत दिनों बाद दिखाई पडे। क्या हाल चाल हैं? बाल बच्चों सहित सकुशल तो हैं। आपके दर्शन से बहुत प्रसन्न हुआ।' इस प्रकार जो घर पर आये हुए का स्वागत सत्कार करता है, उसके घर सदा निःशंक मन से जाना चाहिए।

समाज के उत्थान मे नारी की भूमिका

✍ ज्योति आडवानी
बी ए , प्रथम वर्ष

किसी भी देश की उन्नति तथा अवनति वहा के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। एक जागृत एव शिक्षित नारी ही सुदृढ तथा उन्नतशील समाज की स्थापना कर सकती हे। प्राचीनकाल से ही भारतीय सस्कृति मे नारी को सम्माननीय स्थान प्राप्त रहा है। वेदो मे यह कहा भी गया है -

'यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता '

अर्थात जहा नारियो की पूजा की जाती है वही देवता निवास करते है।

नारी प्रेम, त्याग और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है और यह आदर्श ही मनुष्य जीवन के उच्चतम आदर्श है। इन आदर्शों को प्राप्त करना ही मानवता की सबसे बडी साधना है। इन आदर्शो को स्त्री ने पुरुषो से पहले प्राप्त किया है। इसलिए नारी पुरुषो से अधिक श्रेष्ठ है। अत सम्पूर्ण भारतवर्ष मे नारियो को देवी के समान पूजा जाता है। मनु महाराज ने तो यहा तक कह दिया कि 'जिस घर मे नारी को सम्मान नही मिलेगा, उस घर की सारी उत्तम क्रियाए असफल हो जायेगी।' नारी को उसके सेवामय, त्यागमय और करुणामय स्वरूपो के आधार पर शक्ति का केन्द्र माना गया है और उसे पुरुषो की प्रेरणा का स्त्रोत माना गया है। माता के रूप मे, पत्नी के रूप मे भारतीय नारी ने त्याग, करुणा ओर बलिदान का परिचय दिया है इसलिए उसे पुरुष से सौगुना ऊचा स्थान प्राप्त है।

वैदिक काल मे नारी की प्रतिष्ठा अर्द्धागिनी के रूप मे की जाती थी। इस समय नारी का पूजन होता था परन्तु फिर भी उसकी सामाजिक दशा पुरुषो की अपेक्षा हीन तथा दयनीय थी। उसे केवल सृष्टि जनने तथा सतान उत्पन्न करने का साधन समझा जाता था। उत्तरवैदिक काल मे नारी की स्थिति और भी अधिक दयनीय हो गई। उसका जीवन घर की चार दीवारी मे ही सिमट कर रह गया और भूमि की भाति व्यक्तिगत सम्पदा का रूप ले बैठी।

सामन्तकालीन युग मे तो नारी समाज पुरुप जाति के अन्याय तथा अत्याचारो से और भी ज्यादा घिर गयी। वह केवल पुरुषो के मनोरजन का साधन बन गई। मध्ययुग मे नारी की दयनीय स्थिति के कारण समाज मे अनेक कुरीतियो, कुप्रथाआ और रुढियो ने घर जमा लिया। सबसे अधिक उन्नत और सभ्य देश भारत ससार की दृष्टि मे असभ्य, अशिक्षित और पिछडा हुआ माना जाने लगा।

19वी सदी म जब भारत मे अग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई तब मध्यकालीन स्थिति मे पुन परिवर्तन

हुआ। विदेशी जाति के सम्पर्क से भारत में नवीन वातावरण की सृष्टि हुई। ज्ञान विज्ञान का प्रचार बढ़ा, इस युग में कुछ भारतीय सुधारकों ने नारी की हीन दशा पर ध्यान देकर उसके सुधार पर जोर दिया और उसे पुरुषों के समान अधिकार देने की मांग की गई। जनता से कहा गया -

"नारी निन्दा मत करो, नारी गुण की खान
नारी से नर उपजे, ध्रुव, प्रहलाद समान।"

प्रसाद ने कामायनी में लिखा नारी तुम केवल श्रद्धा हो। अनेक सुधारकों ने नारी को उन्नत बनाने में बड़ा परिश्रम किया। पुनः इस युग में कस्तूरबा, सरोजनी नायडू, कमला नेहरू, रामेश्वरी देवी, नेहरु विजय लक्ष्मी जैसी उच्चकोटि की महिलाएं हुई, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता में पुरुषों के समान त्याग व परिश्रम किया। उन्हीं के सततप्रयासों से देश में फैली कुरीतियां, कुप्रथायें जैसे सती प्रथा तथा बालविवाह समाप्त हुई। आज स्त्रियां पुरुषों के समान अनेक पदों पर कार्य कर रही हैं। हमारा देश इंदिरा गांधी के नाम को कभी नहीं भुला सकता क्योंकि वे संसार की पहली महिला प्रधान मंत्री रही तथा उनके सततप्रयासों से देश उन्नति कर सका है। इस प्रकार सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं का प्रमुख योगदान रहा है। भारतीय नारी की इस प्रगति से देश उन्नत होता जा रहा है। रहन सहन का स्तर बढ रहा है। वर्तमान समय में नारी पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। उसमें त्याग, प्रेम गौरव की भावनाएं कम और स्वार्थ व कृत्रिमता अधिक है। आज की नारी अपने उत्तरदायित्व से मुक्त होकर स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रही है उसमें धार्मिक आस्थाएं कम हो गई हैं और प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ रही है परन्तु फिर भी नारी का स्थान सम्पूर्ण भारत वर्ष में सर्वोच्च है। आज की नारी में स्वावलम्बन की भावना होती है वह किसी दूसरे के अधीन नहीं है। नारी की सर्वोच्चता के कारण देवताओं में भी नारी के नाम को पहले लिया जाता है जैसे राधे कृष्ण, सीता राम आदि।

इनकी सर्वोच्चता बताते हुए गुप्त जी ने लिखा है -

"कुछ भी स्वत्व नहीं रखती क्या अर्द्धांगिनी तुम्हारी
एक नहीं दो दो मात्रायें नर से भारी नारी॥"

संक्षेप में कहा जा सकता है कि वर्तमान युग में समाज के उत्थान में नारी की भूमिका उत्तरोत्तर महत्त्वपूर्ण होती जा रही है।

❑

'विशाखा नक्षत्र के उपरान्त वर्षाकाल, प्रसव के उपरान्त नारी का यौवन, प्रणाम करने के बाद सत्पुरुषों का क्रोध और याचना करने के बाद मनुष्य का गौरव समाप्त हो जाता है।'

ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जो मंत्र न हो, ऐसा कोई पौधा नहीं है, जो औषध न हो, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो काम का न हो।

ख्वाब

शैलना वशिष्ठ
बी ए , प्रथम वर्ष

मैंने एक ख्वाब सा देखा
वन गया हू मिनिस्टर
आमत्रित किया गया है मुझे
विवाह के शुभ अवसर पर
वुलाया गया है मुझे, देने वर-वधू को आशीर्वाद।
चख चुका था मै, उद्घाटन का स्वाद॥
तुरन्त अपनी जेव से मैंने चाकू निकाला।
और वर वधू का, गठवन्धन काट डाला॥
फिर प्रसन्न मुद्रा मे लगा कहने -
मै इस कार्यक्रम का उद्घाटन करता हू।
और इनके सफल जीवन की कामना करता हू।

आजादी की राह पर

गीता मदान
बी ए , द्वितीय वर्ष

आजादी की राह पर चलने वाले इन दीवानो को देखो।
देश प्रेम मे जलने वाल इन परवानो को देखो ॥

लड़कर देश के दुश्मनो से
बचाया है हिन्दुस्ता को,
भारत मा के इन्ही पुत्रो से
हुआ है गर्व हमको,

लेकिन हम ने इनसे क्या है सीखा ।
यह इसी की है समीक्षा ॥

साम्प्रदायिकता की तलवार से ।
हिन्दु-मुस्लिम को पथक करना सीखा ।
न सीखा तो इन से
प्यार, मोहब्बत एकता ।

यही थी कमजारी वह
जिसको जाना अग्रेजा ने
हाथ मे आई इस कमजोरी को
आधार बनाया अग्रेजो ने

हुआ देश आजाद तो
सोचा हागा न अब ऐसा तो

पर यह तो एक सुनहरा ख्वाब था
जाति की जजीरो ने समाज को जकड़ा था

धर्म के नाम पर ही किसी को मारा व जलाया था
नासमझो ने धर्म का यह क्या अर्थ लगाया था

हिन्दुओ ने अयोध्या की ज्यो मस्जिदो का ढेर बनाया
मुस्लिमो ने हिन्दुओ को त्यो यम का द्वार दिखाया

मालुम न था धर्म का इतना विकराल रूप होगा
सुना था हमने-धर्म सघर्षशीलो को भी जोड़ेगा

भारतीय सस्कति को अकलकित है करना
जातिवाद से भारत को पथक है करना

इस पृथकता को छोड़कर
आपस मे हमको है मिलना
यही वह गुलिस्ता है
जहा नये -नये फूलो को
अभी है खिलना

भ्रष्टाचार का इन्द्रजाल

✍ **कल्पना गुप्ता**
द्वितीय वर्ष , कला

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की जडों को खोखला एवं शक्तिहीन बनाने के लिए यदि किसी के द्वारा सर्वाधिक कुठाराघात किया गया है तो निश्चित रूप से एक ही आवाज सुनाई पडती है, वह है - 'भ्रष्टाचार' । 'भ्रष्टाचार' शब्द उच्चारण मात्र से ही आचरण की भ्रष्टता पर ध्यान केन्द्रित कर देता है । सदाचार के विपरीत भ्रष्टाचार के कदाचार ने भारतीय राजनीति को बुरी तरह से आक्रात किया है । यह नही है कि भ्रष्टाचार वर्तमान की ही उपज है । भ्रष्टाचार प्रत्येक काल व प्रत्येक देश में रहा है । हां, मात्रा या परिमाण का अंतर हो सकता है । भ्रष्टाचार महान राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ कौटिल्य के समय में भी था और आज भी है । किन्तु आज भ्रष्टाचार का स्वरूप बड़ा भयावह है । नब्बे के दशक के बाद तो भ्रष्टाचार ने अपनी सारी सीमाएं लांघकर जिस प्रकार अपना जाल फैलाया है, वह किसी से छिपा नही है ।

भ्रष्टाचार भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की नस नस में रच बस गया है । राजीव गांधी के प्रधानमंत्रीत्वकाल में हुए बोफोर्स कांड के बाद तो घोटालों का एक नया ही इतिहास बन गया । लेकिन यह एक सुखद पहलू था कि उस समय तक जनता में इतनी जागरूकता थी और राजनीति में भी कुछ ऐसी स्वच्छ छवि वाले लोग थे, जिन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनता का आह्वान किया । जनता ने भी अपनी सुप्त शक्ति को पहचाना और प्रशासन का तख्ता पलट दिया । इस प्रकार वी.पी सिंह बोफोर्स के धमाके की गूंज के साथ प्रधानमंत्री बने । बोफोर्स के बाद घोटालों का जो सिलसिला शुरु हुआ, उसी दिशा में 1992 में 10,000 करोड का प्रतिभूति घोटाला, 1200 करोड का चीनी घोटाला, एनरान सौदा, बैलाडिला का निजीकरण, आवास आवंटन घोटाला, चारा घोटाला आदि घटित हुए । जैन बन्धुओं की डायरी से 1991 में ही प्रकाश में आया हवाला कांड तो भ्रष्टाचार का चरमोत्कर्ष है, जिसे स्वार्थी सत्ता लोलुपों ने पांच वर्ष तक दबाए रखा और राजनीतिक स्वार्थवश फिर चिनगारी दी है । जिसने देश के शीर्षस्थ सफेदपोश नेताओं को बेनकाब कर दिया है । वस्तुस्थिति यह है कि प्रशासन में जड से लेकर चोटी तक भ्रष्टाचार व्याप्त है ।

अब यदि किसी भी विभाग की जांच होती है तो घोटाला अवश्य सामने आता है । चाहे वह विद्युत विभाग हो, गृह विभाग हो या विदेश विभाग या फिर शिक्षा विभाग भी क्यों न हो । इन सब में भ्रष्टाचार का दानव डंके की चोट पर विराजमान है । इन घोटालों के संबध में दुखमिश्रित आश्चर्य यह है कि इनके प्रमाण प्राप्त कर पाना एक टेढी खीर की तरह बन गया है । क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रशासन की सर्वोच्च धुरी, जिसके चारो ओर हमारी प्रशासनिक व्यवस्था घूमती है अर्थात् प्रधानमंत्री पद ही सदेह के दायरे में आ जाए तो लोकतंत्र के महान मूल्यों एवं परम्पराओं पर प्रश्नचिन्ह लग जाना स्वाभाविक है । वर्तमान सार्वजनिक जीवन मे व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर इस महान परम्पराओं के जन्मदाता एवं मानवीय मूल्यों के संदेशवाहक भारत का सामान्य जन भी यह अनुमान लगा सकता है कि हमारी प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार किस तरह घुलता-मिलता जा रहा है ।

भ्रष्टाचार का यह कोढ समाज मे जिस तीव्र गति से प्रसारित हो रहा है उससे आम जीवन मे यह एक आम बात होती जा रही है। आये दिन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ तथा अखबारो मे बुद्धिजीवियो के ऐसे लेख पढने को मिलते है कि भ्रष्टाचार निवारण के लिए यह होना चाहिए, वह होना चाहिए। किन्तु सत्य से आज भी हम कोसो दूर खड़े है। स्थिति कुछ ऐसी है। कि 'खैवैया ही नाव को डुबोए तो कौन बचाये' अर्थात हम ही जागरूक नहीं। सावजनिक जीवन के प्रति हमारी उपेक्षा का दृष्टिकोण ही भ्रष्टाचार को पल्लवित कर पुष्पित कर रहा है।

भ्रष्टाचार का कारण मोटे तौर पर चाहे चुनावी राजनीति हो, सत्ता लोलुपता हो या आथिक उदारीकरण हो, विकृत रूप मे अपनाना या फिर सार्वजनिक जीवन के प्रति हमारा उपेक्षित दृष्टिकोण हो, हिम्मत न हारें तो इनका निराकरण कठिन भले ही हो, असभव नहीं है। भ्रष्टाचार निवारण या इस पर अकुश लगाने के लिए जन आन्दोलनो की अतीव प्रभावशाली भूमिका हो सकती है। ऐसे जन आन्दोलन का सफल प्रयोग अतीत मे लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा 1974-75 के वर्षो मे किया जा चुका है। इस प्रकार के जन आदोलना के माध्यम से आज भी भ्रष्टाचार के खिलाफ एक सशक्त मुहीम छेडा जा सकता है। सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार का सफाया करने के लिए सामान्य नागरिको की महती भूमिका हो सकती है। उन्हे चाहिए कि वे अपने छोटे छोटे कामा के लिए चाय-पानी' के नाम पर रिश्वत न दे। चाहे उन्हे बिजली, टेलीफोन या नल का कनेक्शन प्राप्त करना हो, रसोई गैस का कनेक्शन प्राप्त करना हो, राशन कार्ड बनवाना हो, चरित्र प्रमाण पत्र या मूल निवास प्रमाण पत्र बनवाना हो। उन्हे असुविधाओ का सामना अवश्य करना पड सकता है। किन्तु यह तो सर्वविदित है कि बीज जब मिट्टी मे दबकर अपना बलिदान देता है तभी पौधे की सृष्टि होती है। अत बहुत कुछ पाने के लिए कुछ तो खोना ही पडता है।

यदि एक ओर जन सामान्य को भ्रष्टाचार निवारण के लिए अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी है तो दूसरी ओर प्रशासनिक मशीनरी को दुरुस्त करने तथा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को उसकी प्राणदायिनी शक्ति पुन लौटाने के लिए प्रशासनिक स्तर पर भी भ्रष्टाचार निवारण के प्रयास करना अपेक्षित ही नहीं आज की अनिवार्यता है, समय की माग है। जो भ्रष्टाचार प्रशासनिक व्यवस्था का अविभाज्य अग बन गया है। उस पर अकुश लगाने के लिए उसे शिखर से ही नियत्रित किया जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि भ्रष्टाचार की जाच के लिए गठित केन्द्रीय जाच ब्यूरो तथा ऐसी ही अन्य जाच एजेन्सियो को सभी प्रकार के राजनीतिक दबाव से मुक्त रखकर पूर्ण स्वायतता दी जानी चाहिए। क्योकि यदि सी बी आई जैसी जाच एजेन्सियो पर ही सदेह के बादल मडराने लगे तो इनके द्वारा की जाने वाली जाच कैसे निष्पक्ष मानी जाएगी ? भ्रष्टाचार निवारण हेतु राज्य स्तर पर लोकायुक्त तथा केन्द्रीय स्तर पर लोकपाल सस्थाओ के गठन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उन्हे इस सबध मे पर्याप्त शक्ति सम्पन्न बनाया जाना चाहिए।

राजनीतिक भ्रष्टाचार निवारण हेतु वैधानिक दृष्टि से भी ''भ्रष्टाचार निरोध अधिनियम' तथा भ्रष्टाचार समाप्ति हेतु सविधान मे उल्लिखित अन्य सवैधानिक उपबधो को भी ईमानदारी, दृढता व पूर्ण सख्ती के साथ लागू किया जाना चाहिए। इस प्रकार भ्रष्टाचार को सावजनिक जीवन से तिरस्कृत करने के लिए न केवल राजनीति को नैतिकताबद्ध करने व प्रशासनिक मशीनरी को जड़ से लेकर शिखर तक पारदर्शी बनाने की आवश्यकता है अपितु भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनमानस मे जो एक गहरी उदासीनता, हताशा तथा सहज समर्पण की घुटने टेक मानसिकता बनी है उसे उखाड फैकना है। तभी हमारा, भावी पीढी का और इस देश का सर्वांगीण विकास तथा समुज्जवल भविष्य सभव है।

❑

भारत एवं आर्थिक उदारीकरण नीति

श्रीमती निशा भारिल्ल
व्याख्याता एवं पूर्व छात्रा

उदारीकरण की नीति से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था अनिश्चितता के माहौल से गुजर रही थी, देश आर्थिक संकट में था। देश की अर्थव्यवस्था विदेशी ऋण के बोझ के नीचे दबी हुई थी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति निम्न स्तर की थी। भारत को विनियोग के लायक देश न मानकर सट्टे के लायक माना जाने लगा। मुद्रा स्फीति की दर अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। भारत से पूंजी का पलायन विदेशों की ओर होने लगा। प्रवासी भारतीय अपनी जमाएं यहां से निकालने लगे और कोई भी विदेशी अपनी पूंजी भारत में लगाने को तैयार नहीं था। ऐसी स्थिति में भारत को आर्थिक उदारीकरण का मार्ग अपनाना पडा।

भारत में 1 जुलाई 1991 में उदारीकरण की नीति को अपनाया गया। उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति-जिससे नियंत्रणों व नियमनों के स्पान पर बाजारीकरण, निजीकरण व अन्तर्राष्ट्रीयकरण पर बल दिया गया और लाइसेंस, रजिस्ट्रेशन, नौकरशाही,सब्सिडी आदि को जारी रखने के स्थान पर इनको कम करने और यथासम्भव समाप्त करने पर जोर दिया जाने लगा। इससे कुल मिलाकर नई आर्थिक नीति का बाजार मैत्रीपूर्ण कहा जा सकता है। उदारीकरण की नीति में प्रमुख आर्थिक निर्णय निजीतंत्र के हाथों में आ गया तथा सरकार का स्थान सीमित होता गया। इस नीति को अपनाने से सार्वजनिक क्षेत्रों जैसे शिक्षा, चिकित्सा आदि में भी निजी क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है। इस नीति के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में खुलापन आ रहा है। भारत में विदेशी कम्पनियों का विनियोग बढ रहा है और भारतीय कम्पनियां विदेशी बाजारों से अधिक कर्ज लेने में सक्षम होंगी।

भारत में आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाने के उद्देश्य - भारत के निवासियों के जीवन स्तर को उच्च करना, उसमें सुधार लाना, गरीबी से मुक्त करना, उत्पादन में वृद्धि करना, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि करना, बेरोजगारी दूर करना, निरक्षरता, कुपोषण, मुद्रास्फीति में कमी करना आदि था। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सरकार ने उद्योगों को लाइसेंस से मुक्त किया। जीवन स्तर को उच्च बनाने के लिये कृषि उद्योग व सेवा आदि क्षेत्रों में रोजगार-आमदनी बढाने के प्रयास किये। जीवन स्तर के स्थायित्व बनाये रखने के लिये पूंजी, भूमि व श्रम की उत्पादकता में वृद्धि के सफल व स्थायी विकास के संदर्भ में कदम उठाये गये।

उदारीकरण की नीति के तहत किये गये आर्थिक सुधारों को दो चरणों में विभाजित किया जा सकता

है। प्रथम चरण के कार्यक्रम अल्पकालीन है, जिन्हे स्थिरीकरण कार्यक्रम कहते है, इसमे माग प्रबन्ध पर वल दिया जाता है, इसमे राजकोपीय घाटे को कम करके मूल्य स्थिरता प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है । आर्थिक सुधारो का दूसरा चरण सरचनात्क सुधारो का माना गया, यह दीर्घकालीन है, इसमे पूर्ति प्रबन्ध पर जोर दिया जाता हे। इसके अन्तर्गत उद्योग,विदेशी व्यापार,राजकोपीय प्रबन्ध, वैकिग व बीमा वित्तीय सस्थाओ की नीति, कृषि, श्रम आदि क्षेत्रो मे आवश्यक परिवर्तन करके उत्पादन बढाने पर जोर दिया जाता हे। स्थिरीकरण व ढाचेगत सुधार आपस मे प्रतिस्पर्धी न होकर एक दूसरे के पूरके होते है। लेकिन स्थिरीकरण कार्यक्रम पूरा होने पर ढाचेगत सुधारो को लागू करने मे आसानी होती है । सरचना सुधारो मे विदेशी व्यापार के क्षेत्र मे उदारीकरण की नीति के तहत आयातो व निर्यातो पर प्रतिबन्ध कम किये गये। आयात शुल्क मे कमी की गई । कई प्रकार की वस्तुओ के आयातो को खुले जनरल लाइसेस के अन्तर्गत लाया गया ताकि तीव्र औद्योगिक विकास किया जा सके।

औद्योगिक क्षेत्र मे उदारता की नीति को व्यापक रूप से अपनाया गया और नई औद्योगिक नीति की घोषणा की गई । कुछ उद्योगो को छोडकर अन्य सभी औद्योगिक प्रोजेक्टो के लिये ओद्योगिक लाइसेस हटा दिये गये। इस प्रकार लाइसेस प्रणाली समाप्त होने से नये उद्योगो की स्थापना होगी।

आर्थिक उदारीकरण की नीति के तहत अब तक जो क्षेत्र केवल सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते थे, उन्हे भी निजी क्षेत्र के लिये खोल दिया गया अर्थात अव सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो के अशो को निजी क्षेत्र को भी बेचा जा सकता है। नई आर्थिक उदारीकरण की नीति मे यह भी कहा गया कि सार्वजनिक उद्यमो मे सरकारी भाग के एक हिस्से को म्युच्यल फण्डस वित्तीय सस्थाओ, आम जनता और उद्योगो मे कार्यरत श्रमिको को वेच दिया जायेगा ताकि ये उद्योग साधन जुटा सके।

भारतीय पूजीबाजार को विदेशी निवेश के लिये खोलने और वेहत्तर दर्जे की कम्पनियो को विदेशी शेयर बाजारो मे अपने स्टॉक के सूचीकरण द्वारा विदेशी निवेशको से सम्पर्क करने की अनुमति देने के लिये कदम उठाये गये।

राजकोपीय घाटे को दूर करने के लिये कर सुधारो पर बल दिया गया। अप्रत्यक्ष कर प्रणाली को सरल बनाकर मुद्रा स्फीति को नियत्रित करने के प्रयास किये गये।

वित्तीय व बैकिग क्षेत्र मे नरसिम्हन समिति की सिफारिशो के आधार पर सुधार लाये गये । बैको द्वारा दिये गये ऋणो के सबध मे पूर्ण स्वतत्रता दे दी गई। व्यापारिक बेको को अपनी अपनी ब्याज दरे निर्धारित करने की आज्ञा रिजर्व बैक ने दे दी है। बैको द्वारा ग्राहको को अधिक सुविधाए कम खर्च पर उपलब्ध कराने हेतु सरकार ने मार्च 1995 मे 5 नये विदेशी वैको को भारत मे बेकिग कार्य सम्पन्न कराने की सुविधा प्रदान की है। विदेशी बैको के भारत मे प्रवेश की शर्तो को भी उदार वना दिया है। प्राईवेट बैको को भी खोलने की अनुमति दे दी है।

उदारीकरण की नई आर्थिक नीति "बदलाव का औजार" साबित हो रही है। देश के महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रो मे उदारीकरण की छाप स्पष्ट दिखाई दे रही है। देश की वित्तीय नीति के इस पहलू ने राजनीतिज्ञो, अर्थशास्त्रियो, बुद्धिजीवियो,

उत्पादकों, उपभोक्ताओं, किसानों और मजदूरों सभी का ध्यान बखूबी आकर्षित किया है। विश्व स्तर पर भी भारत में इस संदर्भ में सिलसिलेवार हो रहे परिवर्तनों की व्यापक चर्चा होती रही है।

कुछ आलोचकों का कहना है कि नई आर्थिक नीति के पीछे कोई व्यापक दूर दृष्टिकोण नहीं है, इसमें देश के अनुकूल विकास की रणनीति नहीं अपनायी गई है। देश ने विदेशी व्यापार के द्वार खोलकर विदेशी हितों की रक्षा की है। विकसित देशों ने उदारीकरण की नीति के द्वारा अल्प विकसित देशों (जिनमें भारत भी एक है) को आर्थिक दृष्टि से पंगु कर दिया है। देश पूर्ण रूप से विदेशी कर्ज पर आश्रित हो रहा है।

विश्व के अनेक देश, जिन्होंने बेहतर राजनीतिक व्यवस्था से आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाकर अपना विकास किया है तथा दूसरी ओर भारत, नेपाल, बांगलादेश इसका स्पष्ट उदाहरण हैं, जहां लम्बे समय से दूषित राजनैतिक व्यवस्था के कारण आर्थिक उदारीकरण से वांछित सामाजिक, आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाये हैं। लेकिन अब भारत आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाकर विकास की राह पर चल रहा है। भारत में मूलभूत समस्याओं का उपयुक्त समाधान नहीं होने का कारण 'उदारीकरण की नीति' को नहीं मानना चाहिये। इसका मूल कारण भारत की राजनैतिक व्यवस्था सामाजिक ढांचे का खराब होना है। देश में आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाने के बाद अनेक सुधार हुए और आज देश विश्व बाजार में "एक आर्थिक खिलाड़ी" के रूप में उभर कर आया है। आर्थिक नीति के सुदृढ वातावरण में उदारीकरण बदलाव का औजार हासिल हो रहा है।

शिक्षा का महत्व

सिम्पल कुमारी जैन
प्रथम वर्ष

विद्यार्थी जीवन एक अमूल्य निधि है।
जीवन में कुछ कर दिखलाने की विधि है।
जो समय अब निकल गया, आता नहीं दोबारा।
पछताने से क्या होता है, जब हो गया सवेरा।
पढ़ लिखकर कुछ बन गये तो होगी इज्जत हमारी
अगर अशिक्षित ही रहे तो अधिक फैलेगी बेकारी
आता नहीं है पढ़ाई का मौका बार बार
पढ़ ले बहना नहीं तो पछतायेगी हजार बार।
मां बाप की तरसती आशा कर दे पूरी
नहीं तो रह जाएगी उनकी कामना अधूरी।
सफलता की मंजिल की ओर जो बढ़ जाएगी।
आशीर्वाद देने वालों के दिलों को हर्षायेगी॥

भारतीय नारी

✍ सीमा झालाणी
प्रथम वर्ष (कला)

किसी भी देश की उन्नति तथा अवनति वहा के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। जिस देश की नारी जागृत, शिक्षित तथा गुणवती होती है, वही देश ससार म सबसे अधिक उन्नत समझा जाता है। इस दृष्टिकोण से भारत के वैदिक युग मे नारी का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। मनु महाराज ने तो यहा तक कह दिया कि जिस घर मे नारी को सम्मान नहीं मिलेगा, उस घर मे कभी रिद्धि-सिद्धि प्राप्त नहीं होगी, उस घर की सारी उत्तम क्रियाये असफल हो जायेगी, नारी के सहयोग के बिना पुरुष के कार्य एकागी और अधूरे रहते थे।

मध्यकाल मे नारी की स्थिति व गरिमा मे ह्रास हुआ। अब वह बचपन मे माता-पिता, युवावस्था मे पति व वृद्धावस्था मे पुत्रो के सरक्षण मे रखी जाने लगी। उसकी स्वतत्रता का हरण कर लिया गया।

19वीं सदी मे विदेशी जाति के सम्पर्क से भारत मे नवीन वातावरण की सृष्टि हुई। इस युग मे कुछ भारतीय सुधारको ने नारी की हीन अवस्था पर ध्यान दिया। उन्होंने देश के लिए सर्वप्रथम नारी सुधार को आवश्यक बताया। कवियो और साहित्यकारो ने नारी की महिमा के गान गाये।

हम देखते है कि आधुनिक युग मे नारी ने विविध कार्य क्षेत्रो मे भाग लिया है। वह पढ-लिखकर अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स, सचिव, मत्री, गर्वनर, वकील आदि सभी पदो पर सुशोभित है। बहुत सी बहिने टिकट कलेक्टर, सेल्सगर्ल, टेलीफोन ऑपरेटर, टाइपिस्ट आदि है। कुछ पुलिस विभाग मे भी काय करती है। एन सी सी मे पुलिस के समान बन्दूक चलाना सीखती है, परेड करती है। खेलकूद प्रतियोगिताओ जैसे तैरने, कूदने, दौड़ने आदि मे भाग लेती है। बगाल की 'आरती साहा' ने इगलिश चैनल को पार कर विश्व म रेकार्ड कायम किया है। पी टी ऊषा, बालसम्मा आदि ने विश्वमच पर खेलकूद मे अनेक उपलब्धिया प्राप्त की है।

हमारे यहा अनेक ऐसी स्त्रिया हुई हैं जिन्होंने देश के विकास मे अभूतपूर्व योगदान दिया है, जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। विजय लक्ष्मी पडित विश्व की पहली महिला थी जो सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा की अध्यक्ष बनीं। सरोजनी नायडू स्वतत्र भारत मे पहली महिला राज्यपाल थीं। सुचेता कृपलानी प्रथम मुख्यमत्री तथा इदिरा गाधी सबसे प्रमुख राजनैतिक दल काग्रेस की अध्यक्ष बनीं।

वर्तमान मे हमारी ससद मे नारी को 33% आरक्षण देने की बात स्वीकार की गई है। इससे ससद के सदनो मे अब पुरुषो के साथ साथ बराबर रूप से स्त्रिया भी दिखाई देगी। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी सख्यात्मक दृष्टि से महिलाए अभी भी शिक्षा के क्षेत्र मे पुरुषो से बहुत पीछे है। ग्रामीण क्षेत्रो, अनुसूचित जातियो, अनुसूचित जन जातियो, अल्सख्यको तथा अन्य कमजोर समुदायो मे महिला शिक्षा को बढ़ावा मिलना चाहिये। तभी वे सामाजिक परिवर्तन तथा विकास कार्यों मे पूर्णतया भागीदार बन सकेगी।

❑

महाविद्यालय के अनुभव जो कभी न भुला पाऊंगी

✍ **अंजना सुराणा**
पूर्व अध्यक्ष, छात्रा परिषद्

प्रत्येक व्यक्ति के अपने जीवन के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं लेकिन जब भी कोई व्यक्ति किसी पद पर होता है तो उसके अनुभव अलग प्रकार की मिठास लिए हुए होते हैं। क्योंकि उस पद के अनुभव उसी को प्राप्त होते हैं जो उस पद पर होता है। अध्यक्ष पद पर आते ही सम्पूर्ण महाविद्यालय मेरे लिए परिवार के समान हो गया। प्राचार्या जी का व्यवहार मेरे प्रति माता के जैसा ही रहा क्योंकि जिस प्रकार मेरी माता मेरी हर कठिनाई का हल करती हैं वैसे ही प्राचार्या जी ने मेरी मदद की है। उनका स्नेह मेरे प्रति स्नेह न होकर मातृत्व भाव था। समय-समय पर आपने मुझे मेरी गलतियों का एहसास कराते हुए मेरे उचित कार्यो की सराहना भी खुले दिल से की, जैसा कि एक माता करती है। दूसरा अनुभव जो मुझे अधिक प्रभावित करता है। वह अनुभव मुझे महाविद्यालय छात्रा परिषद् द्वारा ले जाये गये भ्रमण के दौरान प्राप्त हुआ। इस भ्रमण को संस्कृत विभागाध्यक्ष कोकिला दीदी और हम सबकी मेहनत व सहयोग ने सफल बनाया। इस भ्रमण के दौरान जो मीठे अनुभव प्राप्त हुए उन्हें मैं कभी नहीं भुला सकती। भ्रमणकाल में मुझे पहली बार एहसास हुआ कि जिम्मेदारी क्या होती है ? इस जिम्मेदारीपूर्ण एहसास ने मुझे पूरे भ्रमणकाल के दौरान ऐसा बनाए रखा कि मुझे लगा कि मैं इन सबकी बडी बहन हूँ। मुझे उन सबके बीच में जो असीम आनन्द मिला, उसे में कभी भुला नहीं सकती, क्योंकि महाविद्यालय की साथिनों के साथ रहने का सुनहरा अवसर था। हमारे साथ गई मैडम ने हमारा सब प्रकार से ध्यान रखा तथा हमें कहीं भी तकलीफ का आभास तक न होने दिया।

यह एक ऐसा मीठा अनुभव है जो कि मेरे वर्तमान व भविष्य का एक स्वर्णिम पहलू बन गया। अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालने के बाद मैं पूरी तरह नये-नये कार्य करवाने में लग गई। उसी बीच मैं अध्ययन कार्य से विमुख हो रही थी तभी राजनीति शास्त्र की प्राध्यापिका हरजिन्दर कौर दीदी ने कहा, 'अंजना ! बेटी बस अब नेतागिरी छोडकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाओ।'' ये वाक्य मेरे मन मस्तिष्क में इस प्रकार कौंधा कि आज वह मीठी डॉट मेरे वर्तमान व भविष्य का स्वर्णिम पहलू बनी हुई है। उसी मीठी डॉट के कारण मैंने मेहनत की और तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी में स्थान प्राप्त किया।

अन्त में मैं इतना ही लिखना चाहूँगी कि आज मुझे इस परिवार को छोड़े तकरीबन एक साल होने वाला है किन्तु जब भी मैं महाविद्यालय जाती हूँ तो मुझे मेरी साथिनों व समस्त प्राध्यापिका दीदीयों से वही स्नेह मिलता है, जो पहले मिलता था।

NCW'S LEGAL AWARENESS PROGRAMME FOR WOMEN

Dr BHAGWATI SWAMI
PRINCIPAL
SHREE VEER BALIKA COLLEGE

"Ignorance of fact is excused but ignorance of law is no excuse ' There is considerable ignorance of law amongst the people in general and women in particular It often accounts for a lack of assertion of rights on their part and results in atrocities against women It is a truism that, many of the women including the educated are unaware of their rights and the protection assured to them through various laws The National Commission for women's sponsored "Countrywide legal awareness Programme for women' Undersection 10(1)(a) & (d) of the National Commission for Women Act, 1990 intends to impart basic legal awareness to the women with an aim to help women to avail of the benefits under the law and to foster gender justice

Aims of NCW s Legal Awareness Programme

1 To impart practical knowledge about the basic legal richts and remedies provided under various laws thereby making them fit for facing the challenges in real life situation
2 To make the Indian women aware of the various mach neries organs of the Justice delivery system available for redressal of their problems/grievances
3 The procedure of approaching for utilising various channels for the redressal of griecances i e the Police, the Executive and the Judiciary
4 The role of courts in achieving gender equity most importantly the concept of public interest litigation
5 Role of Legal Aid and advise Boards and Free Legal Aid
6 Sensitization of Women and Girls
7 Further disseminate the information to others

Procedure of implementation of Legal Awareness Programmes

The commission has considered the women s colleges and women s study centres as centres of attraction for the dissemination of legal information As a first step two teachers from each women's college will be imparted training by the Commission The teachers in turn shall replicate the training programme among students and female social workers of the region, so as to enable to disseminate legal information among the target women groups of their respective areas

Training of Trainers Programme

The Commission is writing letters to all the women colleges of the nation to forward the names of two teachers along with their bio data for undertaking the training as trainers in legal awareness The scrutiny committee constituted by the commission will select the teachers while selecting the teachers, priority should be given to those teachers who have firm dedication and commitment to the cause of Welfare and development of women, since the

programme envisaged is required to be taken up with all seriousness and devotion. This programme is an ongoing process and each of these teachers shall voluntarily undertake to coordinate the programme at least for the next five years It involves devoting at least 4 hours every week for four to six months in a year for preparation, organization, coordination, reporting etc.

Funding of the programme :

The college Management may take the responsibility of funding the course for the greater cause of imparting legal awareness to the innocent girls and women Since the programme is a continuous one The college/management should allot sufficient amount from their budget towards this programme. Further if the colleges are not in a position to some amount, they may try to obtain funds from various other sources like :-

(i) **NGOs and Others :** The college/ organisation may seek the help of NGOs and other organizations like Lions Club, Rotary Club, etc.

(ii) **Legal Aids Boards :** There are legal aid boards functioning in almost each and every district The colleges may seek assistance from the legal aid board of their area, specially to support the programme with technical services (Lok Adalat and fields visits) and for modest financial assistance. Each State Board has funds for the purpose, as legal literacy for the public is acknowledged as part of the "legal aid activities'.

(iii) **The National Commission for Women :** The commission will provide financial assistance of Rs. 5000/- (Rupees five thousand only) as seed money, for starting the legal awareness course by the trained teachers.

The trained teachers were asked to send a proposal giving, details of the syllabus, the proposed date of starting the course along with a brief break up of the budget required.

Syllaby for Legal Awareness Programme :

The syllabus was framed by the commission, with an aim to impart the knowledge, which may be useful in day to day life. The whole course was conveniently divided in to 25 lectures of one to two hours each.

(1) An overview of Indian Legal System (2 Lectures)
(2) Legal Position of Women under International Law (2 Lectures)
(3) Brief History of Women's Movement in India (1 Lectures)
(4) Women and the Constitution (2 Lectures)
(5) Women & Family Laws (5 Lectures)
(6) Women in custody (3 Lectures)
(7) Criminal Law and Women (2 Lectures)
(8) Procedural Laws relevant to Women (1 Lecture)
(9) Women in employment and women enterpreneurs (1 Lecture)
(10) Public Interest Litigation (1 Lecture)
(11) Visits to Police Station, Courts, Lok Adalats, field studies etc (3 Days)
(12) Local Issues (2 Lectures)

Faculty :

The above syllaby will be taught with the help of Legal Aid Boards, Law teachers, retired, Judges, Senior advocates.

❑

R. K. Narayan's Short Stories

Mrs Vimla Sharma
Lecturer in English

Story telling is an art which can be traced back to Indian Mythology Indian literature is full of short stories right from the days of the Mahabharata Stories written long before any one worried very much about cleaning out the rhetorical impurities from the house of fiction can be found in the literature of any country

The short story form was an interesting vehicle for the moral and philosophical thoughts of the age The nineteenth century saw the flowering of short story, with special characteristics of its own, as a literary form Throughout the world, men of letters have made creative use of this literary form Scott and Dickens in England, Hoffman and Grimm in Germany, Irving, Hawthorne and Edgar Allan Poe in the United States, Maupassant in France, Tolstoy and Chekhov in Russia

It was during the 19th century that the short story form attained a status equal to that of the Ode and established itself as a literary genre The interest that is aroused by a short story can be attributed to the presence of the element of surprise O'Henry's and Kipling's stories are examples of this characteristic feature In these stories the element of surprise and suspense runs throughout

R K Narayan chose this genre to convey his creative impulse and writes with the ease of a born story teller His stories delight us for the same reason as his novels do His main purpose of writing is entertainment and his stories fulfil this aim in a great measure His short stories provide the reader with sustained pleasure and are more effective than his novels R K. Narayan's stories create an "illusion of authentic social reality and present a wide variety of people, all belonging to the little world of Malgudi ' He likes to portray people with small eccentricities He rarely focuses his creative sensibility on themes which are dismal He chooses his material from the ordinary everyday life Narayan has said, "I have to just stand at the market road for my material ' In his short stories, there is, at work, a unique comic vision of life which enables him to contemplate with his characteristic blend of humour and compassion, the absurdites and pathos, fantasies and frustrations, illusions and ironies of everyday life He writes in a straight forward manner without striving at dramatic effects either by means of elaborate devices or techniques He

presents the Indian scene and its life in these tales; the texture of his experience is typically Indian.

Some of R.K. Narayan's stories endear themselves to the reader with their ingenuity of plot. Narayan embodies his perceptions of life in these stories. An example of Narayan's ability to portray social discrepancy which elicits humour, is the story "An Astrologer's Day'. The story opens with a description of the market place. The Astrologer who is seen sitting on the side walk of the street, attracts passersby and forecasts their future. The scene is typically Indian; we indians are fascinated by astrologers, and after every little event we run to them to know our future. The astrologer does brisk business. Central to the story is the episode of the astrologer's chance encounter with the man whom he is stabbed and left for dead years ago. This was the crime for which he had left his village, but the victim had recovered as he later informed the astrologer. The "murdered man' wants the astrologer to forecast when he would be able to avenge his murderer. The astrologer is disconcerted by this sudden encounter. He recognises his victim, but the murdered man fails to recognise his old enemy in the astrologer's garb. He is surprised when the astrologer ferrets out details of his previous history. At the end of the story he accepts the astrologer's prediction that he would never be able to take his revenge since the murderer had been crushed under the wheels of a lorry. The man abandons his vicious search for his enemy. The astrologer is greatly relieved to learn that he is not a murderer after all. The interest and curiosity of the reader is kept right upto the end of the story.

Some of Narayan's stories are autobiographical, and some depend on a compelling atmosphere or a memorable character for their effect. But there are stories that rely heavily on the presence of the supernatural or ghosts for their effect. Narayan is characteristically Indian in his use of the supernatural. The stories having the supernatural element are built on themes and situations which are unfamiliar, far fetched and even bizarre. "Old Man of the Temple' and "Old Bones' are stories that have to do with the mysterious, supernatural and bizarre elements. Narayan seems drawn to such stories of popular imagination mainly for their fictional possibilities and narrative value. The rather abrupt beginning of these stories gives them a certain dramatic suddenness and compelling power.

"The Old Man of the Temple', begins with a brief but vivid account of the actual place of the encounter with a ghost. The narrater begins to narrate the circumstances leading to his accidental meeting with "The Old Man of the Temple' or rather his ghost. He tells his listeners about his driver,Doss and lays emphasis on his perfect judgement, good sense and sobriety and his absolute ability as a driver, so that

whatever he sees in future cannot be dismissed as the hallucination of a superstitious man Gradually the narrator builds up the atmosphere appropriate to the accidental encounter with the ghost The description of the darkness and stillness contribute to create the sense of an unearthly atmosphere appropriate to the things which are about to happen Doss, the driver first sees the old man coming out of the ruined temple on the road side When Doss next says that the old man is sitting next to him in the car and wants a lift, the narrator suspects that Doss has had a "drop of drink' But suddenly the narrator finds a change in the driver's appearance The young driver assumes a hunched up position, trembles like an old man and speaks in a thin dropping voice, as though he has become a different person altogether From the conversation that follows between himself and the spirit that possesses Doss, we come to know that he was the temple priest, Krishna Battar, of the previous century, who was later murdered by thieves The narrator very shrewdly persuades the spirit to join his dead wife instead of haunting the village, and thus exorcises the spirit. The story evokes the mystery and desolution of one of the old temples along the South Indian highways

R.K. Narayan is not overtly concerned with social, political or economic problems except in so far as they help to throw some interesting light on the characters of his stories He is interested in their domestic and private problems and is concerned to show how they are bound by custom and influenced by certain traditional modes of conduct Narayan has reinforced this point, he writes My focus is all on character

If his personality comes alive the rest is easy for me "Narayan's short stories deal successfully with non-urban situations and characters He achieves a universal vision through these localised situations

He writes about life as it is known to him in his non-metropolitian location It may also be added that some stories throw interesting sidelights on the social and historical aspects of the times to which they originally belonged and that they deal with situattions and characters analogous to those we find in his novels, though originally meant for sunday magazine readers Narayan's stories have a relaxed pace and rhythm of narration and are eminently readable

Narayan's stories reflect the "zeal he so obviously has in life and all its creatures, his modesty, his irony, his sense of humour, the complete absence of pomposity and pretence Whatever else may or may not be, he is absolutely authentic'

❑

Growing Population : A Challenge

✍ Vibha Tomar
II Year Arts

Everyone is acainted with the great problem of growing population. This problem is a challenge not only for India but also for the whole world. The economical progress index of a country is depended on population. If the population decreases then economical progress increases. Over population will decrease not only India's but also the whole world's economical progress.

India's population is on the increase because of child marriages, superstitions, illiteracy and ignorance etc.

Every day we hear that there is an earth-quake some where, in some places there are floods and people are dying of famine. All these calamities are to a great extent due to population explosion.

Due to growing population we have to face many problems such as starvation, residential problem, water and electrical problem which are the fundamental requirement of our life. Due to growing population we cannot avail the facilities which are provided by the government, such as medical treatment, education facilities and also transport facilities. Due to pressure of growing population our natural resources are decreasing day by day.

To over come this serious problem of growing population government has initiated programmes and schemes to reduce the population. but first of all government should solve the big problem of unemployment so that life standard of every person can be increased.

Education and especially female education should be given priority. From time to time government should transmit family planning programme through television and radio etc.

Thus this main problem of the country can only be solved by dedicated and sustained effort.

❑

OBJECTIVES OF WOMEN CELL

✍ Vimla Sharma
Convenor Women Cell

Women cell was started in Veer Balika College in 1992 on the directives of the UGC It has become an integral component of the girl's institution The objective of Women cell is to strengthen girl students It also bears the onus of empowering girl students in theirsearch for identity It tries to develope strength of thinking and generates awareness about social and cultural system Its main focus is on women related issues The women cell acts as a cotalyst to bring about a healthy change, through its various programmes and equip girls to live a socially useful life It promotes a desire in students to strive for personal status and an independent social standing Girl students are made to realize that their mission in life does not end with becoming good wives and wise mothers but also realize that they are all members of the civic community and of the body politic

It is now felt that in the present times where there is an increase in dowry deaths violence against women, rapes, emploitation, divorce, legal awareness among girls is essential Therefore, a legal literacy programme is to be started through our women cell It is necessary that girls should have basic knowledge of the laws regarding women It is ignorance of legal rights and its procedures that perpetuate an increase in women exploitation and criminal atrocities on women The knowledge about laws will enable girl students to be well aware of their constitutional rights and legal rights The constitution framers of the Indian Constitution were aware of the sociology of the problem of emanucipation of the female sex, thus right to equality and right against exploitation were made relevant provisions of the constitution The need for legal awareness in the Indian constitution is a post independence demand where as in the western countries the more for empowerment was 200 years old Women demanded equal rights The feminist movement was a culmination of western women's assertion for rights The 1848 convenfion spear hearded by lady stanton and Lucretia Mott criticized marriage laws, conditions of employment and property laws The 1964 Civil Right Act banned Sex Discrimination in employment

Indian women by large are ignorant about their legal rights Girls in particular have no knowledge about laws and Acts

protecting their rights prevailing in our country it has been rightly said, 'ignorance of fact is excused but ignoranc of law is no excuse.'

In order to translate legal awareness among girl students into reality, two key resource persons from amongst the college staff members would be identified. The basic criteria for selection of resource persons would be their dedication to the cause of women empowerment. The selected staff members would have to undergo training in legal literacy training programmes to be organised by the National commission for women. After the completion of the training, the resource persons will select target groups in the College to impart information to them about the Indian Legal System, Intenational Law, constitutional law protecting women's rights, Criminal law, Public interst litigation and Lok Adalats.

This Legal literacy programme will be spread over twenty five sessions of two hours once a week. The resource material would also include audio visual aids. There will be continuous monitoring of progress to asserten the fulfill ment of the objectives.

Thus this legal literacy programme will equip students to fight against exploitation and live a better life.

Life is a Struggle

Chanchal Agarwal
B A. Part II (Arts)

Life is a series of struggle for survival and success. A man has to fight against numerous forces from birth to death. His struggles become acute day by day. Even a new born baby has to do a lot to get its feed. As a child grows, he fights against ignorance He protects himself against heat and cold. diseasesand death. He tries hard to achieve honour and wealth. He scales the mountains and dives into the sea. His actions involve risk. It is also said that- "There is no gain without pain."

In this world only the fittest survive. The whole history of mankind is a story of man's struggle against forces of nature. Struggle has its rewards and pleasure. Why then should one fear it or escape from it ?

ENGLISH IN A DEVELOPING NATION

✍ Vandana Sharma
Lecturer in English

Language is a tool to understand this world Communication among the people has been possible through language Had there been no language there would have been no interaction amidst people Language works as a linking force to join or associate people for a certain purpose

In a country like India language has always remained a prime factor in its development The vast nature of land with myriad cultures and religions has led to the origin of varied languages The present state reveals the continuance of 18 languages in India It is such a large number to be learnt by any Indian So, keeping in mind the distinct nature of languages the government finalised to have "Hindi' as a national language But this, again did not resolve the problem and Hindi being a national language has not yet, achieved prominence, which is a query

The present scenario reveals that English language has gained eminence not only in India but in the world It has become a common medium of communication The impact of British rule in India is still visible on its soil when English is preferred for any communication The people find it more convenient to correspond in English as it is widely accepted

Much before independence English has been used in India but its state is very disappointing despite, the attempts of the government the level of English learning has not rised The knowledge of English is still very less among the people The people with non-English speaking background hesitate to learn this language They treat it as something beyond their reach and this state has failed to acquaint them with its utility The increasing expansion of English medium schools has hardly done anything for the cause Even after studying for so many years, the school children are ignorant of the rudiments of English grammar

It is of atmost importance to look in to the teching of english language The language is not to be treated as a distinct subject rather, an inseparable part of Education It is now high time to ponder over this issue seriously The concerted efforts by all including teachers, students, parents, educationists and official authorities will be required in treating this malady and improving the status of English language

A corollary to this is, English language can never disappear from the Indian panaroma So, lets try to conquer it

❑

Value of Discipline

Vinay Sharma
B A Part I

A wise man once said, "Only those who know how to obey can learn how to command.' These words of wisdom teach us the importance of discipline Only if we have been obedient and disciplined during our childhood, school days and college days. Can we grow up to be responsible people and the leaders of the future.

Obedience to parents, teachers and elders is only one aspect of discipline. The more important type of discipline is self discipline or inner-discipline. In ancient India great importance was laid on self-discipline. Self-discipline means controlling our feelings and desires, so that they do not become our masters. This requires a strong will power which is not some immutable trait we are born with. It is a skill that can be developed strengthed and targeted to help in achieving our goals. "Fundamental among man's inner power is the tremendous unrealised potency of man's own will." Wrote Italian psychologist Roberto Assagioli 29 years ago. The trained will is a masterful weapon it helps people change habits and change their lives It controls our impulses and actions.

To achieve great things in life one has to strike hard and practise hard and this calls for self-discipline. Demosthenes the greatest author of ancient Greece was a stammerer. He overcome this defect by delivering speeches on the sea-shore with a pebble in this mouth.It is not necessary to put pebbles in our mouth and deliver speeches to develop self-discipline. We can begin with smaller things like getting up in the morning at a predetermined time jogging daily for exercise, avoiding untimely meals and not getting up from our home work till the last exercise is over. By these efforts self-discipline can be developed.

Education makes a people easy to read, but difficult to desire, easy to govern, but difficult to ensclave

-Lord Brougham

Economic Development and Self Satisfaction

Rajani Sain
B.A Part I

"It is an illusion to think that more comfort means more happiness Happiness comes of the capacity to feel deeply to enjoy simply, to think freely to be needed " - Storm Jameson

Many people in the world are very happy and satisfied without money because a healthy mind, beautiful heart and healthy body are more important for them then gold and silver

According to Franklin Money can not make a person happy because it doesn t have any such quality which is necessary for a person's happiness the presence of more money increases more desire for money

No wealth can satisfy the covetous desire of wealth ' - Jeremy A person can t be happy because of his bank account and, only his good thoughts can help him to be happy If a rich person has a poor mind and heart then we can t call him rich because a person becomes rich and poor through his thoughts It doesn t matter what he possesses

For example If there are two persons one is poor who has a good heart and a sweet voice and a second is a rich person who is rude and angry No doubt people would like to go to the first person, because they would get love from him Money which creates differences between two brothers is to be deplored Assuredly money is essential to live life better but at the same time we should recognize the real values of life In my view only that person is prosperous who can contribute to develop culture A person who has no money is poor but poorer than him is one who is rich but doesn t have happiness and self satisfaction That person is prosperous who gives importance to his thoughts than to money

It does not mean that a person should not earn money but, if he has to pay its price by his character, behaviour and his qualities then he is not a successful and self satisfied person We can afford to lose money but not character Only that person is rich who has a healthy mind and a good heart

Values thoughts and qualities are more important than money But to those people who give importance to money I would like to tell them that they should look into their ownself and ask am we right ?

Key to Success

Chanchal Agarwal
B A Part II (Arts)

Life is a gift of God to mankind. Everyone wants to be a successful person in this world. But there is no cut and dried formula of success, no royal road to reach the top.

Success is not achieved by magic or mantras. Work, Work and Work-that is the only key to achievement in any field. Honest, constant and intelligent labour leads us to live a meaningful life. Every person should work hard because laziness and negligence are man's arch-enemies. They sow the seeds of ruin. At first we should set the target, then try to achieve it with all our heart and soul.

Let nothing else draw our attention and take our time. Of course, our work should be methodical and purposeful. It is a real fact that no body is born great. His qualities, his behaviour, his character make him great and successful. Hard work is the only key to success. Luck and chance also favour a deserving candidate. So we can say that hard work makes a man successful.

❑

The Crown and Glory of Life is Character

✍ Chanchal Agarwal
B.A Part II (Arts)

Character is man's priceless possesion It is his passport to glory and fame By character, we mean all that is best and purest in man It is revealed in his work-qualities, his spirit of service, his capacity for sacrifice A man of character is a fearless man He is full of self-confidence and courage A man may have money, power, and position but without character he is just a beast A characterless person is a danger to his nation and society Character is built in adversity It is unfortunate that there is crisis of character in free India All our problems arise from the fact that we have become immoral and anti-national

❑

Learning is not attained by chance It must be sought for with ardour and attended to with diligence

-Abigail Adams

श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर

क्र.सं.	व्याख्याता वर्ग	पद
1.	डा. भगवती स्वामी, एम.ए., पीएच.डी.	प्राचार्या
2.	श्रीमती स्नेहलता बैद, एम.ए.	व्याख्याता, समाजशास्त्र
3.	श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव, एम.ए., एम.फिल.	व्याख्याता, इतिहास
4.	डा. कमलेश तिवाड़ी, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, इतिहास
5.	सुश्री सरोज कोचर, एम.ए., एम.फिल.	व्याख्याता, संस्कृत
6.	श्रीमती विमला शर्मा, एम.ए., एम.फिल.	व्याख्याता, अंग्रेजी
7.	श्रीमती सुनीला जैन, एम.ए.	व्याख्याता, गृह विज्ञान
8.	सुश्री मंजू जैन, एम.ए.	व्याख्याता, अर्थशास्त्र
9.	डा. मुकुल सिंह, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, हिन्दी
10.	डा. हरजिन्दर कौर, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, राजनीतिशास्त्र
11.	श्रीमती इन्द्रा शर्मा, एम.ए.	व्याख्याता, समाजशास्त्र
12.	डा. सविता किशोर, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, राजनीति शास्त्र
13.	सुश्री मुन्नी मित्तल, एम.काम., एम.फिल.	व्याख्याता, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध
14.	श्रीमती निशा भारिल्ल, एम.काम.	व्याख्याता, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी
15.	डा. शशि भार्गव, एम.काम., पीएच.डी.	व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन
16.	डा. कोकिला जैन, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, दर्शन शास्त्र
17.	डा. शोभा भाटिया, एम.ए., पीएच.डी.	व्याख्याता, हिन्दी
	अंश-कालीन व्याख्याता	
18.	श्रीमती पुष्पलता जैन, एम.ए.	व्याख्याता, गृह विज्ञान
19.	डा. अंजना जैन, एम.काम., पीएच.डी.	व्याख्याता, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी
20.	सुश्री वंदना शर्मा, एम.ए.	व्याख्याता, अंग्रेजी
21.	डा. अरुणा जोशी, एम.काम., पीएच.डी.	व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन

श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर

क्र स	मत्रालयिक कर्मचारी	पद
1	श्रीमती सत्यवती शर्मा, एम ए , बी लिब	पुस्तकालयाध्यक्ष
2	श्री विमलकुमार जैन, हायर सैकण्डरी	वरिष्ठ लिपिक
3	श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा, स्नातक	वरिष्ठ लिपिक
4	श्री राजेन्द्र सिह गोखरु, हायर सैकण्डरी	कनिष्ठ लिपिक
5	श्री महेशकुमार व्यास, सैकण्डरी, सी लिब	पुस्तकालय लिपिक
6	श्री श्यामसिह राजावत, हायर सैकण्डरी	कनिष्ठ लिपिक
7	श्री धर्मचन्द जैन, स्नातक	कनिष्ठ लिपिक
8	श्रीमती मजुला जेन, आठवीं	बुक लिफ्टर
9	श्री रामगोपाल शर्मा, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
10	श्री शीतल प्रसाद शुक्ला, साक्षर	चौकीदार
11	श्रीमती तुलसी वाई, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
12	श्रीमती अनोखी बाई, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
13	श्रीमती शीला पारीक, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
14	श्री सुभापकुमार, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
15	श्री रामू मोरिया, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
16	श्रीमती चाद बाई, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
17	श्रीमती सन्तोप वाई, साक्षर	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

दीपिका

छायांकन		चित्रमय झलकियां

श्री वीर बालिका विद्यालय के जन्मदाता समाज रत्न
श्रद्धेय स्व. राजरूप जी टांक प्रतिमा प्रतिष्ठापना समारोह
(6 मई, 1988)
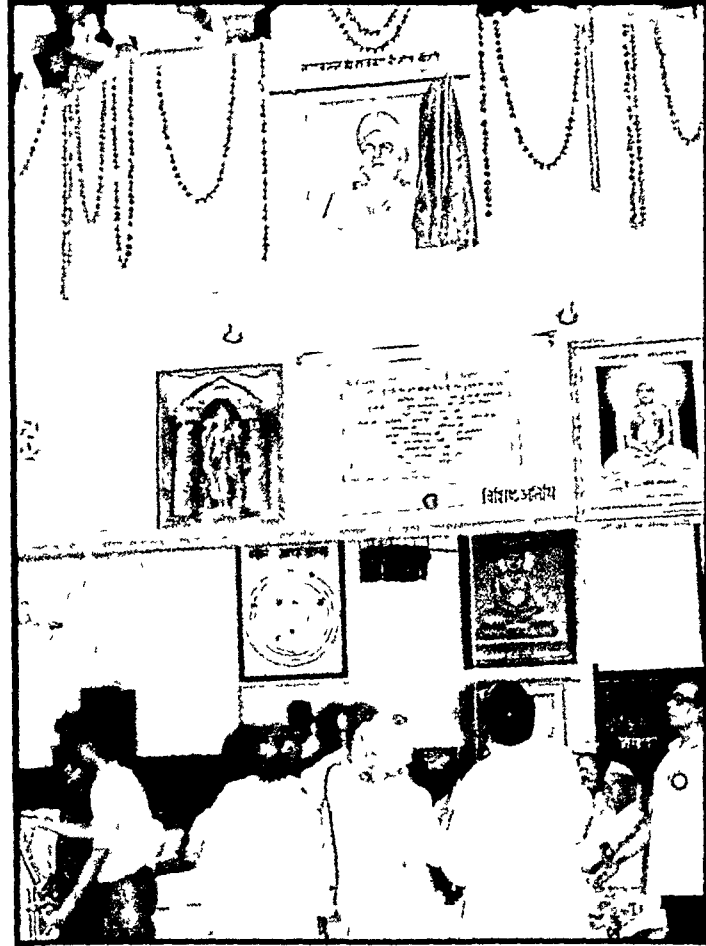
स्व. श्री टांक की प्रतिमा का अनावरण करते हुए मुख्य अतिथि श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी (विधानसभा अध्यक्ष)
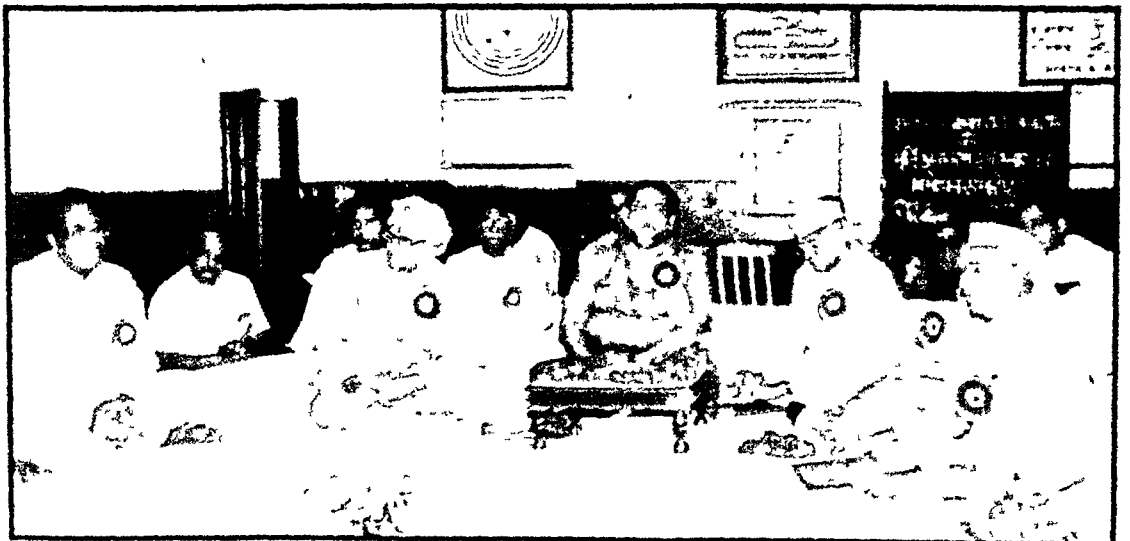
मंच पर विराजित सर्व श्री हीराचन्द वैद, तिलकराज जैन, मुख्य अतिथि श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी, छुट्टनलाल वैराठी, न्यायाधिपति गुमानमल लोढ़ा, चन्दनमल वैद, श्रीचन्द गोलेछा

श्रीमती करुणा 39 वर्षों की समर्पित निष्काम सेवा का अभिनन्दन पूर्व शिक्षा मंत्री श्री हीरालाल देवपुरा द्वारा सम्मान

श्रीमती कमला श्रीवास्तव कर्मनिष्ठ सेवा का अभिनन्दन बैंक महाप्रबन्धक श्री ज एस वाघेल द्वारा सम्मान

सेवा सम्मान

सुश्री विमला चटर्जी पाच दशक का स्वर्णिम सेवाकाल अनुग्रह राशि भेंट

श्रीमती नन्दू देवी गायन कला के प्रति समर्पित विधायक श्री चम्पालाल जैन द्वारा अभिनन्दन

श्रीमती उर्मिला कक्कड अभिनन्दन पत्र भेंट श्रीमती स्वर्ण भाजव द्वारा

श्रीमती निर्मला माथुर : श्री सुलक्षणा जैन द्वारा स्मृति चिन्ह भेट

श्रीमती राधारानी शर्मा : स्मृति चिन्ह भेट सुश्री विमला चटर्जी द्वारा

सेवा सम्मान

श्रीमती पुण्यवती जैन : अनुग्रह राशि भेंट
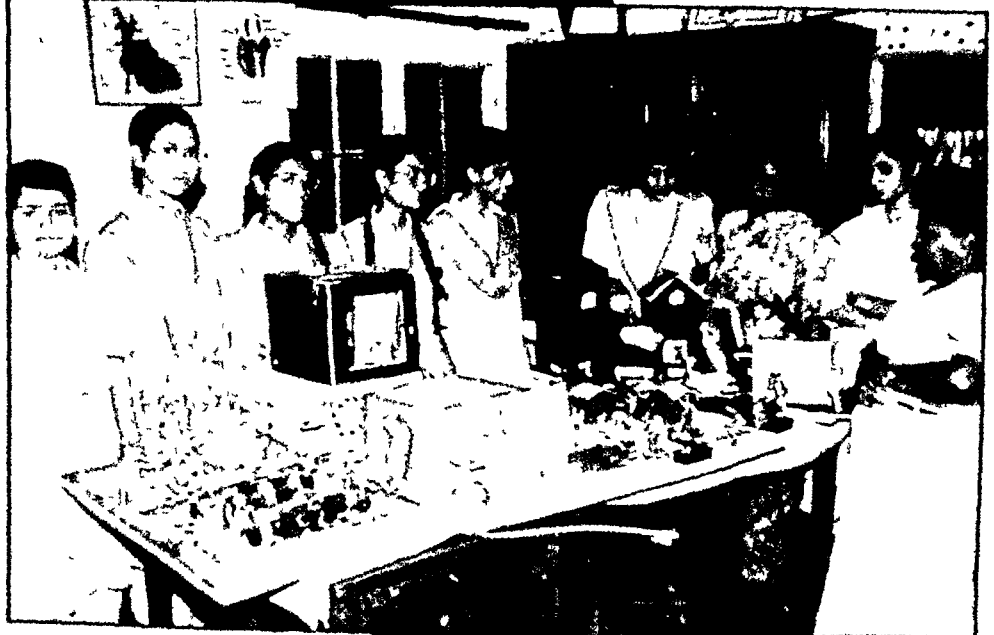
जिला स्तरीय माडल प्रतियोगिता में विजेता छात्राएं अपने माडल प्रदर्शन के साथ

संस्था के पूर्व अध्यक्ष स्व श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल की स्मृति म आयोजित वाद- विवाद प्रतियोगिता के शुभारम्भ पर उनके चित्र को माल्यार्पण करती हुई प्रा पवन सुराणा, पास मे है प्राचार्या डा स्वामी व उर्मिला श्रीवास्तव

चेतना शिविर सगोष्ठी

मेधावी छात्रा ऋतु माहेश्वरी को रजत पदक प्रदान करते हुए सासद श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल

स्व श्री महावीर प्रसाद श्रीमाल की स्मृति मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पवन द्वारा प्रतिभावान छात्रा सुषमा बीलवाल को भेट
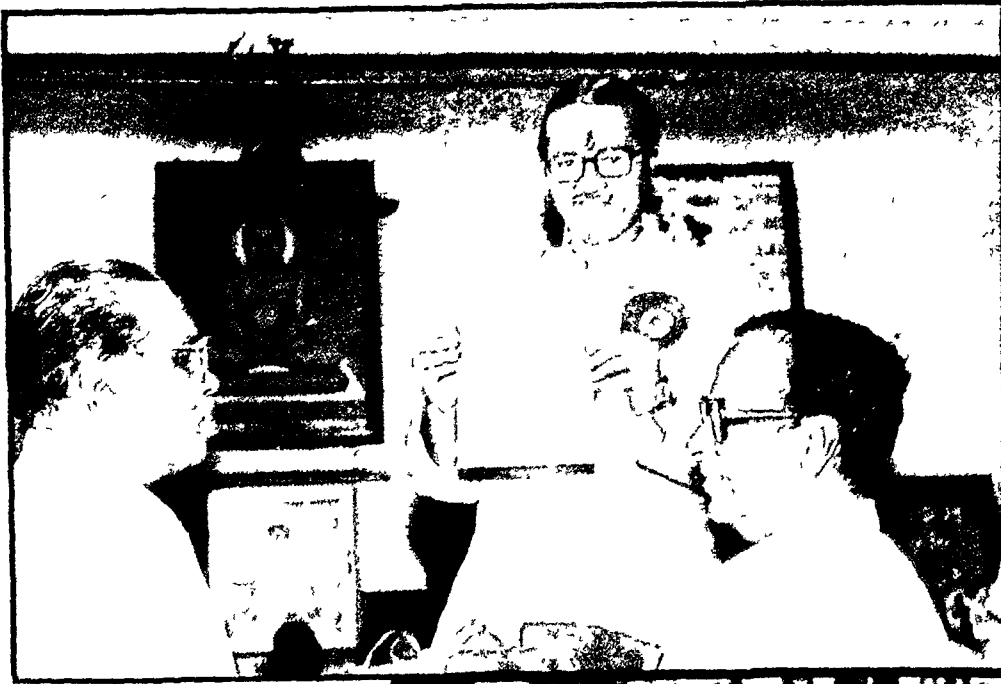
पूर्व शिक्षा मंत्री श्री बी. डी. कल्ला 'श्री राजरूप टांक' की स्मृति में प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते हुए। पास में खड़े हैं - श्री हीराचन्द वैद व मोतीलाल भडकतिया

महापौर श्री मोहनलाल गुप्ता द्वारा पौधारोपण

श्री दुर्गाचन्द टांक द्वारा मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट

कुलपति प्रो. आर. एन. सिंह का स्वागत करते श्री हीराचन्द वैद

विद्यालय परिवार

श्री वीर बालिका विद्यालय में
ज्ञान का दीप जलायेंगे

वन्दना जैन
बी.ए., बी.एड.
सहायक अध्यापिका

विद्या के इस मंदिर में हम ज्ञान का दीप जलायेंगे,
नवप्रभात की किरणों से, घर घर प्रकाश फैलायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर हम आगे बढते जायेंगे।

अथक परिश्रम का पाया है, मूलमंत्र इस धाम से,
कभी न हिम्मत हारेंगे हम, जीवन के संग्राम से,
अपनी मेहनत से मरुधर को उद्यान बनायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर आगे बढ़ते जायेंगे।

सत्य अहिंसा और प्रेम का, मूल मंत्र पहिचाना है,
जीवन के मूल्यों को हमने, भलीभांति से जाना है,
सरल, स्नेह, सरिता से हम, धरती को स्वर्ग बनायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर, हम आगे बढते जायेंगे।

विद्यालय के इस आंगन में, सब कोपल से फूल बने,
कच्ची माटी के पुतले, सब जीवन के अनुकूल बने,
यश की धवल पताका पर हम, कभी न कलंक लगायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर, हम आगे बढ़ते जायेंगे।

दिशाहीन भूले भटके जीवन को लक्ष्य पुनीत मिला,
अनुशासन में रागबद्ध सा, जीवन का संगीत मिला,
नवल चेतना ले धरती से अम्बर तक छा जायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर, हम आगे बढ़ते जायेंगे।

शाला की माटी की सौगन्ध है,
आचार्यों के चरणों की सौगन्ध है,
'चाचा साहब' के चरणों की सौगन्ध है,
हीरक जयंती के अवसर ये सौगन्ध हम खायेंगे,
'चाचा साहब' के पद चिन्हों पर हम आगे बढ़ते जायेंगे
वीर बालिका विद्यालय में ज्ञान का दीप जलायेंगे ॥

छायावाद के विलक्षण प्रयोक्ता
श्री जयशंकर प्रसाद

✍ कु नीता खण्डेलवाल

'कवि प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे हिन्दी मे छायावाद के प्रवर्तक माने जाते है। उन्होने हिन्दी कविता को छायावाद की सरस भाव भूमि पर प्रतिष्ठित किया। यही बताने का प्रयास बाल लेखिका ने किया है।'

- सम्पादिका

मानव जीवन की वेदी पर,
परिणय है विरह-मिलन का ।
सुख-दुख दोनो नाचेगे,
है खेल आँख का मन का ।

ससार को प्रेममय तथा मानव जीवन को विरह-मिलनमय मानने वाले कवि जयशकर प्रसाद की प्रतिभा बहुमुखी थी। इन्होने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास साहित्य के इन अगो मे अपनी लेखनी से क्राति ला दी। इन्होने कवि के रूप मे जो कुछ हिन्दी जगत को दिया वह अविस्मरणीय रहेगा। बचपन से युवावस्था तक इनके जीवन के अनुभवो तथा इनके चिन्तन ने इन्हे एक महान कवि के रूप मे स्थापित कर दिया और जयशकर प्रसाद ने हिन्दी जगत को 'कामायनी' जैसी कृति दी, जिसने इन्हे अमर कर दिया।

झरना से आसू, आसू से लहर, तथा लहर से उत्कृष्ट महाकाव्य "कामायनी" की रचना तक महान कवियो की श्रेणी मे श्री जयशकर प्रसाद का नाम था और आज भी है। इनकी रचना 'झरना' मे इन्होने प्रकृति को अपनी कविताओ मे जिस प्रकार ढाला है वह अविस्मरणीय है-

"बलात तारकागण की मधप-मडली,
नेत्र निमीलन करती है फिर खेलती ।
रिक्त चषक-सा चन्द्र लुढ़क कर है गिरा,
रजनी के आपानक का अब अन्त है ।"

वही 'आसू' मे इनकी कविता विरह, कातरता, निराशा के बीच सामन्जस्य और आशा का सदेश देती है। लोक कल्याण का लक्ष्य 'आसू' मे पूरी तरह समाहित था। यही तो कारण है कि 'प्रसाद' ने ऐसी विविधता हर काव्य मे भर दी कि वह अपना ही एक नवीन रूप लेकर उदित हुआ तथा ससार को कवि के हृदय की अनुभूति से अवगत कराया, जैसे-

"अभिलाषाओ की करवट,
फिर सुप्त हृदय का जगना ।
सुख का सपना हो जाना,
भीगी पलको का लगना ।"

'प्रसाद' ने अपनी रचना में संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, वीर रस, भयंकर रस, अद्भुत रस तथा वात्सल्य रस सभी का सही तरह से प्रयोग किया और काव्य को समृद्धि से पल्लवित किया जिसे भारतीय जन मानस में ही नहीं अपितु विश्व में भी ख्याति प्राप्त हुई। रसों का प्रयोग करने के साथ ही कवि 'प्रसाद' ने नाटक, रूपमाल, सार, रोला तथा ऑस छंदों का विशेषता से प्रयोग किया। यही नहीं कवि ने देश की महिमा, देश के सौन्दर्य व देश-प्रेम का ज्ञान करवाने वाला हिन्दी साहित्य के इतिहास का सबसे सुंदर गीत लिखा-

अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहां पहुंच अंजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा ।''

छायावाद के प्रसिद्ध कवि के रूप में 'प्रसाद' को अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। छायावाद के कवियों ने मानव हृदय के छोटे छोटे भावों को भी अपनी कविताओं में स्थान दिया। छायावाद के आगमन से पूर्व द्विवेदी युग में नैतिक मान्यताओं ने रूढियों का रूप धारण कर लिया था और कवियों की मानसिक स्वतंत्रता समाप्त हो चुकी थी। द्विवेदी युग के अंत में छायावाद का उदय हुआ और 'प्रसाद' जैसे कवि ने उन मान्यताओं का विरोध किया जो रूढियों में परिणित हो चुकी थी। जनमानस छायावाद से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका और वह छायावाद की कविताओं को अपनाने लगा।

छायावादी युग में लिखी गई कवि 'प्रसाद' कृत 'कामायनी' वास्तव में कवि के रूप में उनके श्रेष्ठ होने की परिचायक व उनकी अंतिम कृति थी जिसमें इन्होंने इतनी सुन्दरता, मधुरता, समरसता भर दी कि लोग इसके दीवाने हो गए। ये पंक्तियां ही 'कामायनी' की उत्कृष्टता को भली प्रकार उजागर कर देती है-

''एक तुम यह विस्तृत भूखंड,
प्रकृति वैभव से भरा अमंद,
कर्म का भोग, भोग का कर्म,
यही जड का चेतन आनंद ।''

कवि 'प्रसाद' की ''कामायनी'' हिन्दी संसार को उनकी अंतिम भेंट है। 1986 में महान कवि 'प्रसाद' इस संसार से प्रस्थान कर गए। 'प्रसाद' एक कवि ही नहीं बल्कि एक उच्चकोटि के महापुरुष भी थे। वे उदार, व्यवहार कुशल, पुराण शास्त्र, संस्कृत शास्त्र आदि के अध्ययन के कारण प्राचीनता की ओर झुके हुए, भारतीय सभ्यता व संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखने वाले कवि थे। आज हिन्दी भाषा 'प्रसाद' जैसे महान कवि को नमन करती है जिसने उसे 'झरना', 'आंसू', 'लहर,' तथा 'कामायनी' जैसी श्रेष्ठ कृतियों का दान दिया।

प्रयास

जीवन मे एक ही असफलता है और वह है प्रयास ही न करना। गलत प्रयास भी कभी-कभी सफलता की ओर ले जाता है। लेकिन प्रयास ही कोई न करे, तब सफलता का कोई उपाय ही नहीं है।

प्रयास मे भूल हो जाना एवं भटक जाना बहुधा होता है, लेकिन वह फिर हमे अपनी मंजिल पर पहुंचा देता है।

प्रगति का मूल मत्र
पुरुषार्थ

✍ कु प्रीति सुराणा

'कुछ लोग पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्व देते है। उनका तर्क होता है जो भाग्य मे है वह अवश्य मिलेगा। यह ठीक है कि भाग्य का हमारे जीवन मे महत्व है, लेकिन भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धर कर बेठना उचित नही। पुरुषार्थ के बल पर मनुष्य भाग्य की रेखाओ को भी बदल सकता है।'

- सम्पादिका

''ब्रहा से कुछ लिखा भाग्य म,मनुज नही लाया है,
अपना सुख उसने अपने भुजबल से पाया है,
प्रकृति नही डरकर झुक्ती कभी भाग्य के बल से
सदा हारती वह मनुष्य के उद्यम से, श्रम जल से।''

गीता मे भगवान ने कहा है कि -

''कर्मण्य वाधिकारस्ते मा कलशु कदाचने।''

अथात हे मानव ! तू कर्म करता चल फल की चिन्ता मत कर। भाग्य व पुरुषार्थ हमारे जीवन के दो पहलू है। जिसमे पुरुषार्थ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। कहा भी गया है - ''कर्म ही जीवन है।'' मनुष्य के जन्म स मृत्यु तक जीवन के साधनात्मक विविध रूप, मानव के व्यावहारिक क्रियाकलाप बौद्धिक चिन्तन सभी कर्म की ही तो भिन्न भिन्न अवस्थाए है। जो कि काल, स्थान व परिस्थिति भेद से विभिन्न रूप धारण करती है। कर्म के इस व्यापक स्वरूप की विश्लेषणात्मक भावना से प्रेरित होकर ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि ''कम प्रधान विश्व रचि राखा।'' वास्तव मे सृष्टि का अर्थ ही कममय है क्योकि सृज धातु जिससे सृष्टि की रचना हुई है। कर्म की ही प्रतीकात्मक विवेचना है। अत जब सम्पूर्ण सृष्टि स्वय कर्म से युक्त है तो आवश्यक है कि मानव व अन्य प्राणी भी इसी मार्ग का अनुसरण करे। हमारे वेदो व उपनिषदो मे भी बार बार इस मूल मत्र को दोहराया गया है।

''चरैवेति चरैवेति'' अर्थात लक्ष्य प्राप्ति के लिए गन्तव्य के माग पर निरन्तर बढे चलो। कर्म ही वह शक्ति है, जिसमे कावन का हीरा बनाने की, दुर्गम को सुगम बनाने की क्षमता है तथा जो मानव के विकास का मुख्य आधार है। आज मानव का चाँद के धरातल पर प्रवेश भी उसके पुरुषार्थ का ही परिणाम है न कि भाग्य का। पुरुषार्थ का महत्व उद्घोपित करने वाला कवि सुधीरचन्द्र का यह कथन कितना सत्य है -

चलते रहो सदैव जगत मे
चलते रहो निरन्तर
श्रम से जो थकता ना कभी
पाता वही नरवर
बैठे हुए पुरुष को पातक सदा
दबा लेता सत्वर।

लेकिन वर्तमान परिवेश में यह मूल मंत्र समाज से विलुप्त हो गया है। आज झूठी चकाचौंध तथा भौतिकता ने मानव को इस प्रकार अंधा बना दिया है कि वह केवल स्वार्थपूर्ति में लगा है। आज वह नैतिक मानदंडों को, आचरण की गरिमा को, संस्कृति के गौरव को भूल चुका है। हिंसा, लालच, स्वार्थ की भावना ने मानव के जीवन के आदर्श को समाप्त कर उसके विनाश का मार्ग खोल दिया है। नैतिक मूल्यों का पतन उसे अवनति के गर्त में धकेल रहा है। केवल पुरुषार्थ द्वारा ही आज इन परिस्थितियों का मुकाबला किया जा सकता है। लेकिन आज हम पुरुषार्थ करने से ही जी चुरा रहे हैं। हम चाहते हैं कि कहीं से अलादीन का वह चिराग हाथ लग जाये, जिससे रातों रात लखपति, करोडपति बना जा सके तथा अपने सपनों को बिना प्रयत्न के ही वास्तविक रूप दिया जा सके, इसके लिए भले ही आज मानव को कुछ भी करना पडे। इसी का परिणाम है कि मानव का जीवन इतना भयग्रस्त है व असुरक्षित हो गया है कि प्रतिपल आशंका के घेरे में शांति को तलाशता हुआ मानव अशांति की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। जब उसका जीवन ही आशंकाओं से घिर चुका है तो भला ऐसे परिवेश में देश, समाज व मानव की स्वय की प्रगति कैसे संभव है ? प्रगति तो मानवीय, तन, मन की केन्द्रभूत शक्ति द्वारा ही उपलब्ध होगी तथा यह शक्ति पुरुषार्थ से ही संभव होगी न कि पुरुषार्थ से पलायन द्वारा।

आज हमारे राष्ट्र का अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा पिछडी अवस्था में होने का भी यही कारण है कि भारतवासी कार्य को उसके स्तर से आंकते हैं। व्यापार उच्च श्रेणी का कार्य है, तो मजदूरी निम्न श्रेणी का। इन निम्न श्रेणी के कार्यो को करने से उस व्यक्ति का स्तर घटता है, उसे हीनता का अनुभव होता है। वह बेरोजगार रहना तो स्वीकार करता है किन्तु उपेक्षा की भावना से ग्रस्त कार्यों को करना कभी स्वीकार नही करता है। इसके विपरीत विदेशों में व्यक्ति कार्य को पूजा मानते हैं। किसी भी कार्य को करने से कतराते नहीं हैं यही कारण है कि हमारा राष्ट्र ऐसे राष्ट्रों के समान प्रगति नहीं कर पाया है। आज मानव छोटी छोटी कठिनाइयों से हार मान लेता है। व पुरुषार्थ करना छोड देता है। तभी तो प्रतिदिन सुनने व पढ़ने को मिलता है कि अमुक ने फेल होने के कारण तो अमुक ने बेरोजगारी से तंग आकर आत्म हत्या की, कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति हालात के जरा सा प्रतिकूल होते ही यह विचार बना लेते हैं कि विकास के सभी मार्ग बंद हो चुके हैं और वह परिस्थितियों के समक्ष हथियार डाल देते हैं।

लेकिन वह उस मकडी से प्रेरणा लें जो कि असफल होने पर भी निरन्तर अपना जाल बुनती रहती है तभी मानव उन्नति के शिखर पर ऊंचाइयों पर पहुंच सकेगा। एक वर्गविहीन उच्चकोटि के समाज का निर्माण भी तभी होगा। जब सभी कर्म के महत्व को समझेंगे।

आज आवश्यकता है कि अब्राहिम लिंकन, नेहरू जी, गांधी जी जैसे कर्मवीरों से प्रेरणा लेने की व उनके जीवन का अनुसरण करने की। ये वे महापुरुष थे जिन्होंने कभी भी पुरुषार्थ का मार्ग नहीं छोडा व विकास की बुलन्दियों को छुआ। इनके संबंध में यह कथन उचित ही है -

''देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के, दुःख भोग पछताते नहीं॥''

वर्तमान में भी यदि हम उसी प्रकार कर्म करने की कार्य की श्रेणी की अपेक्षा निष्ठा को महत्व दें, निरन्तर प्रयत्नशील रहें, परिस्थितियों से घबराकर पुरुषार्थ का मार्ग न छोडे तो अवश्य हम प्रगति के लक्ष्य की प्राप्ति करेंगे।

''कर्म वीर मानव के पथ का,
हर पत्थर बाधक बनता है।
दीवारें भी राह दिखाती,
मानव जब आगे बढ़ता है।''

सुनो, क्या कहता है बस्ता तुम्हारा-किताबे तुम्हारी

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
एम ए , बी एड
प्रधानाचार्या

'सामान्यत बच्चो के पाठयक्रम के बोझ के सम्बन्ध मे अनेक चर्चाए चल रही है। उच्च स्तर पर जुडे शिक्षाविद् ने इस बोझ को कम करने की सस्तुति की है। लेकिन क्या ये बस्ते का बोझ व्यवहारिक है या नही ? इस प्रश्न का उत्तर बडे ही सहज तरीके से (आकाशवाणी से प्रसारित) प्रस्तुत वार्ता मे बताने का प्रयास किया है।'

- सम्पादिका

नन्हे मुन्ने, आज सुनो तुम,
क्या कहता है, बस्ता तुम्हारा।
क्यो तुम इसको रोज उठाते,
हस हस कर भी इतना सारा।
चाह तुम्हारी है इतनी सी
काम करो तुम भी कुछ एसे।
हो जाये नाम धरा पर
मम्मी-पापा चाहे जैसे।

बच्चो! आप लोग बहुत समय से अपने हल्के-भारी, नये-पुराने व छोटे-बडे बस्तो के साथ अपना सम्पर्क बनाये हुए है, वरन कहना तो यह चाहिए कि आप बस्तो के बल पर ही बडे हो रहे हो। उन्हीं के माध्यम से आप अपनी जानकारी मे वृद्धि करते हो, तथा इन्हीं की सहायता से अपनी मासिक व वार्षिक परीक्षाये उत्तीर्ण करते रहे हो। किन्तु क्या आपने कभी यह सोचने या समझने का प्रयास किया है कि आपका बस्ता आपसे क्या कहना चाहता है ? शायद नहीं। तो आइये, आज सुनें, क्या कहता है बस्ता तुम्हारा, किताबे तुम्हारी ?

देखिये, यह हिन्दी की पुस्तक कह रही है कि मै इनकी मातृ-भाषा हू, जन्म से ही ये मुझे सुनते बोलते व पढते है, परन्तु मेरे सही स्वरूप व रचना को समझने मे बार बार भूल करते है। कभी मेरी बिन्दी आख पर लगा देते है कभी मेरा एक हाथ बडा कर देते है और कभी दूसरा छोटा। कभी कभी तो मेरी नासिका (चन्द्र बिन्दु) ही गायब कर देते है। यद्यपि आपको अपने स्वरूप का ज्ञान करवाने के लिए मै अकेली नहीं हू। मेरी छोटी बडी बहने हिन्दी अभ्यास पुस्तिका, सुलेख-पुस्तिका तथा व्याकरण की पुस्तक भी मेरे साथ है। हम सब मिलकर आपको हिन्दी भाषा के स्वरूप व रचना का सही ज्ञान करवाना चाहते है, किन्तु नियमित अध्ययन तथा भाषा के सभी अगो पर समान ध्यान व समय न दिये जाने के कारण हम

लोगों का प्रयास विफल हो जाता है। मातृ-भाषा होकर भी अपनी दीन-हीन व खण्डित अवस्था को देखकर मेरा सिर लज्जा से झुक जाता है। अत· मैं इनसे यही कहना चाहूंगी कि अपने थोड़े से प्रयास से न केवल मेरे सम्मान व स्वरूप की रक्षा करें वरन् अपने सम्मान व गौरव को भी बढायें। भारतेन्दुजी ने ठीक ही कहा है ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।''

अरे, यह देखो अंग्रेजी की पुस्तक बडी मन्द-मन्द मुस्करा रही है, देखें यह आपसे क्या कहना चाहती है। भाई English Reader कहो तुम्हारे मुस्कराने का क्या राज है ? मेरी मुस्कराहट का राज मेरा प्रभाव है। यद्यपि सरकार ने प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी न पढाये जाने का निर्णय लिया है किन्तु समाज में प्रतिष्ठित व मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अंग्रेजी का अध्यापन नियमित रूप से होता है। सम्पन्न व उच्च वर्ग में मेरा साम्राज्य है, मध्यम वर्ग में भी अंग्रेजी के प्रति आकर्षण कम नहीं है। अतः अधिकांश बस्तों में मेरा अस्तित्व है। आपके समय विभाग व बस्ते के वजन में मेरा काफी योगदान है। ज्ञान के विस्तार व रचना की दृष्टि से भी मेरा काफी महत्व है। अतः मुझे ग्रहण करने की दृष्टि से भी आपको पीछे नहीं रहना चाहिए।

अरे ! यह विज्ञान की पुस्तक तो आगे ही बढ़ती आ रही है। क्यों, ऐसा क्यों ? विज्ञान तो सदैव से ही आगे बढ़ता रहा है। विद्यार्थियों के ज्ञान में सर्वाधिक वृद्धि विज्ञान ने ही की है। चाहे वर्षा, मौसम या शरीर के ताप को नापने का प्रश्न हो या ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों की जानकारी हो, विज्ञान ही आपकी मदद कर सकता है। आर्कमिडीज के सिद्धांत का ज्ञान, दूरदर्शन-प्रसारण की प्रक्रिया, शरीर के विभिन्न तंत्रों की जानकारी एवं अंतरिक्ष की सैर भी विज्ञान द्वारा ही संभव है।

लेकिन विज्ञान का अध्ययन केवल पुस्तकों से ही पूरा नहीं होता है। इसके लिए प्रयोग व प्रदर्शन की भी आवश्यकता होती है। आपको अपने आप भी कुछ प्रयोग करने चाहिए तथा आस पास के वातावरण में घटित होने वाले वैज्ञानिक परिवर्तनों का भी अध्ययन करना चाहिए।

यह विभिन्न रंग बिरंगे चित्रों वाली कौनसी पुस्तक है, जिस पर अशोक लाट का चिन्ह है। कहीं राणा प्रताप का चित्र है और कहीं मुगल शासकों का। इसके साथ ही एक लम्बी पुस्तक जिसमें भिन्न राज्यों और देशों के चित्र बने हैं। मैं इतिहास और भूगोल हूं। मैं तो तुम्हारे बड़े काम की हूं। सारे देश की उपज, खनिज और व्यवसाय आदि की जानकारी कराती हूं। इस पृथ्वी पर घटित होने वाले परिवर्तनों, भू, जल, आकाश आदि भौतिक तत्वों का ज्ञान कराती हूं। साथ ही मानव सभ्यता और संस्कृति के क्रमिक इतिहास का बोध कराती हूं। प्रेरणादायी घटनाओं और चरित्र के अनुकरण एवं भूलों को न दोहराने की प्रेरणा देती हूं।

अरे, गणित की पुस्तक अभी तक चुपचाप क्यों पडी है ? एक,दो,तीन,चार यह है जीवन का व्यापार। हां मैं आपके जीवन का व्यापार हूं, आपके लिए बहुत आवश्यक हूं। सुबह उठकर घडी देखने, बस्ता संभालने, घंटों व छुट्टियों का हिसाब करने एवं बाजार से सामान खरीदने में आप मेरा उपयोग करते हैं। लेकिन मुझे आपसे शिकायत भी है कि असावधानी या जल्दबाजी के कारण आप लोग कई बार मेरे महत्वपूर्ण अंश भुला देते हो, चाहे हासिल का जोड

हो, भिन्न का घटाना या दशमलव का रूपान्तरण। सभी जगह कुछ न कुछ भूले कर देना आपके लिए साधारण है, पर इससे मुझे वडी ठेस पहुचती है। इसलिए आपको गणित का अध्ययन सावधानी व नियमित रूप से करना चाहिए। कई बार गणित के लिए ट्यूटर की खोज की जाती है यह बात ठीक नहीं है। अपने पर भरोसा रखकर परिश्रम करना चाहिए।

यह नैतिक शिक्षा की छोटी सी पुस्तक भी आपसे कुछ पूछना चाहती है क्या आप मेरी ओर भी कुछ ध्यान देते है ? हू तो मै वहुत छोटी सी पर आपके वडे काम की हू। मेरी अन्य वहने तो आपको भिन्न भिन्न विषय व स्तर की जानकारी कराती हैं, परन्तु मै तो जीवन के लिए सर्वाधिक उपयोगी ज्ञान देती हू। मै ही आपको माता पिता के चरण स्पर्श, गुरु के प्रति आदर, मानव मात्र के प्रति प्रेम व दीन दुखियो के प्रति सेवा भावना की प्रेरणा देती हू। मुझे अपनाकर ही आप एक अच्छे वालक, निष्ठावान नागरिक व आदर्श मनुष्य वन सकेगे।

देखें ! आपके वस्ते मे और क्या क्या है ? आपका टिफिन आधा खुला क्यो पडा है ? अरे, इसमे तो खाना भी पडा हे ? आपने पूरा खाना क्यो नहीं खाया ? अच्छा इसमे पालक की सब्जी है। इस कारण नही खाया होगा। वच्चो ! यह आपकी वहुत गदी वात हे कि यह नही खायेगे, वह नही खायेंगे। घर से मम्मी जो शुद्ध व ताजा भोजन वनाकर देती है उसे छोड़कर वाजार की चीजे खाना व शाला मे विना खाये रहना आपके स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है। आपको शुद्ध व सतुलित आहार लेना चाहिए। आप जानते है आपके लिए हरी सब्जिया, दूध, मक्खन व फल आदि कितने आवश्यक हैं ? अत इन्हे लेने मे पीछे नहीं रहना चाहिए।

अव देखिये आपके वस्ते मे से एक छोटी बॉल और वैट वाहर आ रहा है। ठीक है अव इसकी ही वारी है। पढने के साथ साथ खेलना भी वहुत आवश्यक होता है।

आप लोगो ने सुना कि आपके वस्ते मे आपके लिए कितनी लाभदायक वस्तुए है। अत आपको इनका पूरा पूरा लाभ उठाना चाहिए। किताबो के विषय मे किसी ने ठीक ही कहा है -

मानव की हर उपलब्धि का,
है अनुपम भडार किताबे।
विना तीर तलवार जगत पर,
कर लेगी अधिकार किताबे।
ज्ञान वोध और मनोरजन,
सवका सचित सार किताबे।
शब्द शब्द से उठती खुशबू,
वेला हर सिंगार किताबे।

❑

सवको हाथ की पाच उगलियो की तरह रहना चाहिए ये है तो पाच लेकिन काम सहस्त्रा का कर लेती है। क्योंकि उनम एकता है।

- विनोबा

वक्त की चुनौती

✍ कु. मोनिका अग्रवाल

एक अभागे बालक ने वक्त से पूछा,
कि तुम कौन हो ?
वक्त आश्चर्य से बोला, मैं,
जानना चाहते हो ? मेरे बारे में ?
मैं वह हूं, जिसे आज तक,
कोई जान न पाया है,
ना कभी रुकी मेरी गति,
आज तक किसी के इंतजार में।
सैंकड़ों शहनशाहों को, और
उनकी शान को मिट्टी में
मिलते देखा है मैंने।
कुरुक्षेत्र का युद्ध देखा है,
और देखी अनोखी द्यूत क्रीड़ा भी,
इन लज्जित आंखों से देखा है,
द्रोपदी का वस्त्र हरण,
और देखा युधिष्ठिर के माथे
से बहता हार का पसीना भी।
देखा देश प्रेमियों के
गर्म खून में आये उबाल को।
अरे मैंने तो वह सब कुछ देखा है,
जो किसी को कभी नहीं देखना चाहिये।
मासूम लडकियों के साथ होता घोर अनाचार
देखा है मैंने।
बहुओं को तेल छिड़क कर
जलाती उन सासों के मुख से निकला,
अट्टहास भी सुना है मैंने,
कई बेगुनाहों को फांसी,
पर चढ़ते देखा है मैंने।
कई बेकसूर माओं की
उजडी कोख,
और कई परिणीताओं की सूनी मांग,
और टूटी चूड़ियां देखी हैं मैंने।
देखा इंतजार करती उन बहनों
के हाथों में राखी को,
जिनके भाई अब कभी नहीं लौटेंगे।
सिसकती और बिलखती आहों से,
निकली बद्दुआओं को एक बार नहीं,
अपितु अनेक बार सुनी है मैंने।
और तुम मेरे अस्तित्व के पन्नों को,
पलटना चाहते हो,
क्या तू अपना भविष्य जानता है ?
जो मेरे बारे में जानने का दुःसाहस कर रहा है।
अरे भाग्यहीन तू तो,
यहीं किसी कचरे के ढेर में
पैदा हुआ, यहीं एक कीड़े की भांति,
बार-बार मर कर जीयेगा।
और अन्त में समाप्त हो जायेगा।
यही है तेरा भविष्य,
तू भी समा जायेगा मेरे विस्तार में,
केवल मैं खडा रहूंगा, आने वालों के लिए,
एक चुनौती बनकर।

❑

जीवन की सरक्षिका लोक कला

श्रीमती स्वदेश नांगिया
एम ए, डिप्लोमा आर्ट
व्याख्याता

'लोक कला का इतिहास मानव सम्यता के प्रारम्भिक विन्दु के साथ जुड़ा हुआ है। मानव मात्र प्राणी शास्त्रीय इकाई नही है, अपितु व्यक्तित्व का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पक्ष विशिष्ट स्थान रखता है। सौन्दर्यप्रियता व मानवीय भावनाओ का बोध एक प्रकार से उसकी अपनी स्वाभाविक प्रकृति है। इस प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति ने लोक कलाओ को जन्म दिया है। लोक कलाए इस रूप मे मानव मन मे छिपी मगल कामना व सौन्दर्य अनुभूति की अभिव्यक्ति मामत्र है।'

- सम्पादिका

'लोक कला' शब्द कानो मे पडते ही मन मस्तिष्क एक आलौकिक आनन्द से परिपूर्ण हो उठता है। यह छोटा सा मधुर शब्द अपने अतर मे युगो-युगो से न जाने कितनी सरस भावनाओ को समेटे हुए है। यह कला सम्पूर्ण मानव जाति के मगल व कल्याण की भावना से ओतप्रोत आदि काल से आज तक अनवरत, अविराम चली आ रही है।

लोक कला का अविर्भाव मानव के उदय के साथ ही हो गया था। मानव अभी पूर्ण सभ्य भी न हो पाया था कि लोक कला उसकी सगिनी हो गई। वह अपने अतर की भावनाओ को दूसरे व्यक्तियो पर प्रकट करने के लिए सरल व भावमय प्रतीको का प्रयोग करने लगा था। धीरे धीरे इस लोक कला मे धार्मिकता का समावेश हुआ। धार्मिक प्रतीको व जादू टोने के चिन्हो के रूप मे लोक कला समाज मे छाने लगी। मनुष्य एकाकी प्रवृत्ति छोड समूह मे रहने लगा। समाज बना, परीवार बने, रीति रिवाज, पर्व व त्यौहार बने। लोक कला सम्पूर्ण समाज, परिवार व व्यक्ति के मगल व प्रगति के रूप मे प्रयोग की जाने लगी। देश काल व परिस्थितियो के अनुरूप लोक कला का रूप भी परिवर्तित एव विस्तृत होता चला गया। आज भी लोक कला हमारी सस्कृति का एक महत्वपूण अग है।

कला के दो रूप होते है। एक शास्त्रीय रूप, जिसमे कला मे विशेष दक्षता एव सरक्षण की आवश्यकता होती है। दूसरा रूप है-लोक कला, जो कृत्रिमता से दूर प्रकृति के स्वच्छद प्रागण मे निवास करती है। इसमे कृत्रिमता का पूर्ण अभाव होता है। जन-

साधारण अपनी भावनाओं को सीधे साधे सरल व सजीव रूप में संकेतों व प्रतीकों के रूप में अभिव्यक्त करता है। इसमें न तो विशेष दक्षता की आवश्यकता है न संरक्षण की। यह तो बन्धनहीन है। अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, जात-पात के भेदभाव से दूर लोक कला घर आंगन में युगों युगों से विकसित व पल्लवित होती आई है।

लोक कला जीवन की प्रत्येक परिस्थिति व संस्कारों में रची बसी है। बालक के जन्म,/उपनयन संस्कार, विवाह, गृह प्रवेश आदि सभी पर्वो पर लोक कला का प्रयोग अल्पना, स्वास्तिक, मांगल्य सूचक चिन्हों आदि के रूप में किया जाता है। होली, दीपावली, शीतला, अहोई, करवा चौथ, सांझी आदि कोई भी त्यौहार लोक कला के प्रमाण से अछूता नहीं है। प्रत्येक त्यौहार मंगल चिन्हों लोक गीतों आदि के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। व्यक्ति की मृत्यु पर भी जो धार्मिक संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। उनमें भी यह प्रयुक्त होती है। यदि यह कहा जाए कि लोक कला जन्म से मरण तक की संगिनी है तो यह सत्य ही प्रतीत होता है।

लोक कला युग युग से मानव के साथ चली आ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका महत्व कभी कम नहीं हुआ, परन्तु शहरी क्षेत्रों में, प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिकता के समावेश से इस कला के महत्व पर कुछ कुठाराघात हुआ है। यथा आज बालक के जन्म, विवाह आदि पर गाए जाने वाले मधुर लोक गीतों का स्थान विडिओ कैसेटस ने लिया है। विभिन्न पर्वो व उत्सवों पर दीवारों व आंगनों में बनाई जाने वाली अल्पना मांडने का स्थान आधुनिक सज्जा ने ले लिया है। लोक कला जो हमारी लोक संस्कृति की संरक्षिका है, उसकी इस प्रकार से अवहेलना करना क्या उचित है ? जिस कला की उत्पत्ति ही मानव-कल्याण, सुख-समृद्धि एवं शकुन के निमित्त हुई है उसकी ही अवहेलना करना कहां तक उचित है ?

इस कला की रक्षा करना हमारा उद्देश्य है। यह हमारी संस्कृति की थाती को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करती है, अत· इसकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।

आज हमारे राज्य की सरकार ने लोक कला के संरक्षण के लिए कदम उठाये हैं, जिसका उदाहरण है उदयपुर का 'लोक कला मंडल' व जयपुर का 'जवाहर कला केन्द्र' यहां लोक कलाकारों को आगे आने के सुअवसर प्रदान किये जाते हैं। केवल सरकारी स्तर पर लोक कला को सुरक्षित नहीं किया जा सकता क्योंकि लोक कला का क्षेत्र तो जन साधारण व घर-आंगन है। अत· प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना चाहता है तो लोक कला की अवेहलना न कर लोक कला को अपनाए-जो उसके जीवन की संरक्षिका है, संवारने वाली है।

❑

गुस्से को शर्वत के घूंट की तरह पी लेना चाहिए।
- कहावत

कपट के कारण प्रेम नष्ट हो जाता है।
- रहीम

कर्म और भाग्य

✍ कु ज्योति चन्दनानी

'कर्म ओर भाग्य' मे लेखिका ने भाग्य से अधिक कर्म को महत्व दिया है। निरन्तर कर्मशील रहकर मनुष्य अपने जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकता है। अत सद्कर्म करने की प्रेरणा बाल लेखिका ने प्रस्तुत रचना मे दी हे।

- सम्पादिका

जिस प्रकार सूर्य की किरणो से जगत मे प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार कर्म से जगत म चेतना का सचार होता है। हम अपने भाग्य को बदल सकते है क्योकि हम अपने कर्मो द्वारा अपने भाग्य का निर्माण करते है। कोई ऊपर से कुछ लिखाकर नही लाता है, बल्कि मनुष्य अपने परिश्रम से ही अपने भाग्य को बनाता है। कवि दिनकर का कथन दृष्टव्य है -

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य मे, मनुज नही लाया है,
अपना सुख उसने अपने ही भुजबल से पाया है।
प्रकृति नही डरकर झुकती है कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के उद्यम स, श्रम से ओर कर्म से।

मुसीबते, मुश्किले हर इसान के सामने आती हैं, लेकिन इन सबके लिए किसी अदृश्य को दोषी ठहराना गलत हे। जो मनुष्य अपने जीवन मे जितना परिश्रमी रहा, जितना अधिक से अधिक सघर्ष किया और कठिनाइया उसने सहन की, अत मे उसने उतनी ही अधिक उन्नति की -

''जितने कष्ट सकटो मे है जिनका जीवन-सुमन खिला
गौरव-गध उन्हे उतना ही यत्र-तत्र सर्वत्र मिला।''

केवल ईश्वर की इच्छा और भाग्य के सहारे चलना कायरता एव अकर्मण्यता है। मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वय है। वह दूध मे जितना मीठा डालेगा दूध उतना ही मीठा होगा। जो जीवन के अभ्युत्थान के लिए जितने कर्म करेगा, उसे उतनी ही सफलता प्राप्त होगी, वैसे भी ईश्वर उन्ही की सहायना करता है जो अपनी सहायता स्वय करने मे समर्थ होते है। कायरो से, निरीह ओर निकम्मो से तो ईश्वर भी घबराता है।

अग्रेजी मे एक कहावत है -

"God helps those who help themselves "

कर्म करने से मनुष्य को सबसे बडा लाभ है कि उसे आत्मिक शाति प्राप्त होती है, उसका हृदय पवित्र होता है। उसके सकल्पो मे दिव्यता आती है। उसे

सच्चे ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। भारतवर्ष की दासता और पतन का मुख्य कारण यही था कि यहां के निवासी आलसी और अकर्मण्य हो गए थे, उन्होंने परिश्रम करना भुला दिया था। यदि आज भी हम आलसी और अकर्मण्य बने रहे, तो प्राप्त की हुई स्वतंत्रता भी खो देंगे।

जीवन का वास्तविक सुख और शांति मनुष्य को अपने काम से प्राप्त होती है। अपने द्वारा किये हुये कर्मो का फल जब उसके समक्ष होता है तो उसका हृदय हर्षातरिक हो उछलने लगता है। वह आत्मगौरव का अनुभव करता है। कर्मशील व्यक्ति को कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। वह किसी के सामने हाथ फैलाकर गिडगिड़ाता नहीं, उसे अपने कर्मो पर विश्वास रहता है। वह जानता है कि मैं जो कुछ चाहूंगा प्राप्त कर सकता हूं। वह सदैव आत्मनिर्भर रहता है, दूसरों का मुख देखने वाला वह कभी नहीं बनता।

अच्छे कर्मो से मनुष्य का अन्तःकरण जान्हवी के जल की भांति पवित्र होता है। संसार की समस्त दुर्वासनाएँ, कुलुषित भावनाएँ सदकर्मो से स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। अत. हमें निरन्तर कर्मशील बने रहना चाहिए और मन को निराशा से मुक्त रखना चाहिए।

जीवन की सफलता हेतु परिश्रम की नितान्त आवश्यकता है। आलसी, अनुपयोगी एवं अकर्मण्य व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जो व्यक्ति अपने कामकाज में व्यस्त रहता है। उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं है, चाहे वह संसार के किसी भी कोने में छिपी हुई हो उसे सामने आना ही पडता है। अत. व्यस्तता एक ऐसी चमत्कारपूर्ण शक्ति है, जिसके आगे असफलता का भूत टिक ही नहीं सकता है।

''जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ
मैं बौरी चूढन गई, रही किनारे बैठ।''

इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य अपने कर्मो के बलबूते पर ही भाग्य की इमारत खड़ी करता है। आज तक जो महान पुरुष जैसे महात्मा गांधी, नेहरू आदि हुए हैं उन्होंने भी अपने भाग्य द्वारा अपने भाग्य को सॅवारा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य चाहे तो अपने भाग्य को अंधकार की खाई में ढकेल कर रोता रहे या सूर्य की उजली किरण में शामिल हो अपने भाग्य को सॅवारे। अयोध्या सिंह उपाध्याय के शब्दों में -

''देखकर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं,
रह-भरोसे भाग के, दुख भोग पछताते नहीं,
काम कितना भी कठिन हो किन्तु उकताते नहीं,
भाग्य पर निर्भर रहा जो वो वीर कहलाते नहीं।

कर्म भले ही सदैव सुख न ला सके, पर कर्म के बिना सुख नहीं मिलता।
- डिजरायली

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या है।
- लॉक

जिन पर हमें गर्व है

✍ श्रीमती पुष्पा जैन
एम ए , एम एड , एलएल बी
व्याख्याता

'विद्यालय का प्रारम्भ से ही गौरवमय इतिहास रहा है। समय-समय पर विद्यालय को गौरवशाली बनाये रखने वाली प्रतिभाशाली छात्राए जिन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से अपनी कुशलता का परिचय भिन्न-भिन्न रूपो मे देकर सस्था के गौरव मे चार चाँद लगा दिये है। उन्ही कतिपय चेहरो का यहा उल्लेख किया गया है।'

- सम्पादिका

किसी भी शैक्षणिक सस्था की उपलब्धि, उसके वे प्रतिभाशाली विद्यार्थी होते है, जो अपनी कडी मेहनत, कुशलता, कुशाग्रता, क्षमता व अपने शिक्षक के मार्ग निर्देशन से अपने जीवन मे गौरवमयी उपलब्धिया प्राप्त करने मे सफल होते है। जिससे न कवल उनका जीवन सार्थक होता है अपितु पूरे समाज को महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है। ऐसी गौरवमयी उपलब्धिया किसी भी सस्था के लिये गौरव का विषय हो सकती हैं। हमारी सस्था के इन्द्रधनुप को अपने प्रकाशमान सतरगो से उद्भासित करने वाले बहुमुखी प्रतिभाशाली चेहरे जिन्होने अपनी पहचान भिन्न भिन्न रूपो मे दी है, उनमे से कतिपय चेहरो का उल्लेख कर सस्था अपने को गौरवान्वित महसूस करती है।

1 प्रतिभाशाली छात्रा कु अनिता पुगलिया ने 1987 मे गाइडिग की तृतीय सोपान परीक्षा उत्तीर्ण कर 28-11-88 मे प्रेसीडेन्सी गाईड अवार्ड भारत के राष्ट्रपति श्री आर वैकटरमन द्वारा प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान पर्यावरण सबधी वाद-विवाद एव निबध प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया तथा रेडक्रास का पूर्ण प्रशिक्षण ले कर मेडिल प्राप्त किया।

कु अनिता पुगलिया

कु. यूथिका

2. हंसमुख, मिलनसार, व्यवहार में कुशल छात्रा कु. यूथिका ने जिला व राज्य स्तर पर तैराकी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

3. सौम्य, मध्यम परिवार की छात्रा कु. स्वीटी कर्नावट ने 1993 में 35 वीं जिला स्तरीय जूडो खेलकूद प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार 1994 में 36वीं जिला स्तरीय जूडो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 39वीं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता उदयपुर में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1995 में 40वीं राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता दिल्ली में कांस्य पदक जीत कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। 40वीं राज्य स्तरीय जूड़ो प्रतियोगिता नाथद्वारा (राजसमन्द) में भी स्वर्ण पदक व 41वीं राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता नाथद्वारा में तृतीय (ओपन वेट) स्थान प्राप्त किया।

कु. स्वीटी कर्नावट

कु. अनुराधा शर्मा

4. हमारे विद्यालय के चमकते चहकते चेहरे दौडने में भी पीछे नहीं रहे। जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में 1996 में कु. अनुराधा शर्मा ने 1500 मी. की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार विद्यालय की अन्य धाविका कु. निमिषा पटेल ने 3000 मी. की दौड में द्वितीय व 1500 मी. की दौड में तृतीय रही। राज्य स्तर पर कु. अनुराधा व मनीषा का चयन किया गया और क्रमश चौथा व पांचवा स्थान प्राप्त किया।

5 कक्षा 12वी की कु विशाखा साँघी बचपन से ही अध्ययनशील, कुशाग्र बुद्धि, वक्तृत्व कला मे निपुण रही है। आपने अनेक निबन्धो व वाद-विवाद प्रतियोगिताओ मे भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। आप बालहस चित्राकन व लेखन प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान पर रहीं व टू-इन-वन पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किया। श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा स्मृति वाद-विवाद प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान तथा सरस स्वर्ण पदक मुकाबला मे आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त कर 750 रुपये का नकद पुरस्कार प्राप्त किया।

कु विशाखा साघी

6 कु शुभाली — सौम्य, मधुर व कोकिल कठी कु शुभाली जैन ने 12वीं कला वर्ग मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। अनेको सामूहिक व एकल गीत मे भाग लेकर आपने विद्यालय को गौरवान्वित किया। सगीत आदि विषय मे बोर्ड की 12वी की परीक्षा मे विशेष योग्यता प्राप्त की।

7 अजना जैन — इसी प्रकार कु अजना जैन ने भी विद्यालय की अनेक गतिविधियो मे भाग लिया। नाटक, नृत्य, गीत आदि प्रतियोगिताओ मे भाग ले कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

8 निधि अग्रवाल — चचल, हसमुख स्वभाव की कु निधि अग्रवाल ने अपनी मौलिक प्रतिभा से विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। आप वाद विवाद, नाटक, कविता आदि मे निपुण रही। मौलिक चिन्तन की धनी कु निधि ने अपनी लेखनी से अनेक लघु एकाकियो की रचना कर रगमच पर प्रस्तुत किये।

9 कु आरती — मिलनसार, हसमुख, नृत्य कला मे प्रवीण कु आरती ने प्रारम्भ से ही अपनी नृत्य कला की प्रतिभा से अनेको बार रगमच को सुशोभित कर पुरस्कार प्राप्त किये।

तुझे चलना होगा

✍ कु. श्वेता मेहता
XII-D

अंधकार की इस घोर यामा में,
एक ज्योति पुंज प्रकट हुआ ।
जो इस निशा के घनघोर तम को,
भेदने को तत्पर हुआ ।

आज जो इस मग्न भारत के,
लक्ष-लक्ष जनशिला खंडों को,
एकता के सूत्र में, पुनः स्थापित करने के लिए,
साहस से वह आज अवतरित हुआ है ।

अदम्य कौन-सी, वह शक्ति है ?
जो इस अटल, अचल, शोषण, निरक्षरता की जडमूर्ति को,
जड से उन्मूलित करने को तैयार वह तत्क्षण हुई,
वह शक्ति साक्षरता है, साक्षरता है, साक्षरता है ।

यह वह अखंड द्वीप है
जो राष्ट्रीयता की ओर एकता की सूत्रधारिणी है,
अगाध संवेदना को जागृत कर,
भारत के सुनहले भविष्य को साकार करने,
सजाने के लिए आज जो तत्पर है ।

हे भारत के नर-नारियों हमें इस चिरन्तन शक्ति को,
चिरकाल तक प्रज्जवलित करना होगा ।
देश का साक्षर होना आज अगर एक सपना है,
तो कल हम सबका अपना होगा ।
पढ़ना-लिखना सीखो हे भारत के अग्रदूतो,
पढ़ो अगर इस देश को अपने ढंग से है चलाना ।

साथियों आगे बढ़ते चलो, ज्ञान के दीप रोशन करते चलो,
कभी तो तिमिर को उजाला मिलेगा ।
अगर आज है निरक्षरता का अंधा समंदर,
कभी तो ऐ माझी तुझे साहिल भी मिलेगा ।

मगर तू, हताशा के इस धुएं में फिर खो न जाना
तुझे डोलती इस नैया को है पार लगाना ।
तुझे चलना होगा, तुझे चलना होगा, तुझे चलना होगा ।

दोषी कौन ?

✍ श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव
एम ए , बी एड , सगीत प्रभाकर
क व्याख्याता

'दहेज एक सामाजिक अपराध हे । इस कुरीति को सरकारी तथा गेर सरकारी प्रयत्नो एव सामाजिक सुधारवादी सस्थाओ के प्रयासो से ही दूर किया जा सकता है । दहेज का उन्मूलन करने के लिये जनमत सगठित करना होगा, सूत्रजन चेतना जगानी होगी और वास्तविक रूप से इस कुप्रथा को दूर करने के लिये नारी जाति को स्वय आगे आना पडेगा ।'

- सम्पादिका

'दहज' शब्द से युवती के अभिभावको के शरीर मे जहा सिरहन व घबराहट पैदा होती है वही वर पक्ष के लोगा मे इससे प्रसन्नता की लहर दौडने लगती है ।

वतमान समाज मे दहेज की प्रथा एक 'अभिशाप' बन गइ है ओर धन के लालच ने पारिवारिक सबधो की शुचिता व मधुरता को नप्ट कर दिया है । आर्थिक रूप से कमजोर पिता या तो अपनी पुत्री का विवाह ही नहीं कर पाता या फिर स्वय के परिवार को कगाल कर अपनी पुत्री का विवाह कर देता है । परिणाम यह होता है कि उसके अपने परिवार की बर्बादी, जिसका सीधा असर उसके परिवार के अन्य लोगो पर पडता है । अब सोचिए उस युवती की मनोदशा क्या होगी जो विवाह योग्य होने पर भी दहेज के कारण अनब्याही बेठी रहती है ।

समाचार पत्रो एव पत्रिकाओ मे नियमित रूप से पढ़ने को मिल जाता है कि अमुक स्थान पर दहेज की बलिवेदी पर एक मासूम वधू को या तो मार डाला गया है या असहनीय यातनाओ से तग आकर उसने स्वय ही आत्महत्या कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली । जब ऐसी घटनाए पढ़ने व देखने को मिलती हैं तो मन विषाद से भर उठता है ।

प्रत्येक परिवार मे कहीं न कहीं लडकी मौजूद होती है, जिसका कि समय आने पर विवाह करना आवश्यक होता है और अक्सर इस दहेज रूपी दानव के कारण प्रत्येक परिवार भयभीत रहता है । फिर क्या कारण है कि इस दहेज रूपी दानव के पजे प्रतिपल समाज का नैतिक पतन कर इसे अपनी गिरफ्त मे कसे जा रहे है और लोग लालच के कारण हत्या जैसा जघन्य अपराध करते है । यातनाए देकर आत्म हत्या के लिए विवश कर देते है । इन सबके लिए दोषी कौन ? क्या इस बुराई का सारा दोष पुरुष वर्ग पर डालना उचित है या फिर स्त्रिया भी इसके लिए दोषी है और इस पाप मे बराबर की भागीदार हे । नव विवाहिता जब प्रथम बार अपने ससुराल पहुचती है तो सर्वप्रथम वहा की स्त्रिया, सास, नन्द आदि यह जानने को उत्सुक होती हैं कि नव-वधु अपने साथ क्या क्या सामान लाई है और

दहेज के सामान में कमी पाये जाने पर उनकी आशा के अनुरूप न होने पर उस नव-वधु को जो कि न जाने कितने सपने अपने मन में इस ससुराल के लिए संजोये होती है, तंग करना शुरु कर दिया जाता है। तरह तरह के ताने छींटाकशी का उस नवेली को सामना करना पडता है और फिर यहीं से कटुता आरम्भ हो जाती है, जो हत्या या आत्म हत्या के रूप में हमारे सम्मुख प्रकट होती है। मुझे एक ऐसी ही घटना याद आ रही है कि लडके वालों ने शादी तय करते समय तक तो कोई माग नही की और दहेज लेना-देना दोनों को ही बुरा बताते रहे,पर थोडे दिनों के बाद ही लड़की के साथ बुरा व्यवहार करना, घर का सारा काम उसी से कराना और हर काम में कोई न कोई नुक्स निकालना आरम्भ कर दिया। उस बेचारी को क्या मालूम यह सब क्यों हो रहा है जब उसे रोज रोज ही तंग किया जाने लगा तो एक दिन उसने अपने पति से इसका कारण पूछा, पहले तो मार सहनी पडी इसलिए कि पति महोदय का कहना था कि तुम हमारे घर वालों पर झूठा आरोप लगा रही हो, बाद मे धीरे धीरे मालूम पडा कि दहेज मे कम सामान मिला। हमें सबके सामने अपमान सहना पडा, तुम्हारे पिता के पास इतना धन है कि वे अपने लडके को तो दे सकते हैं बंगला गाडी पैसा पर तुम इससे वंचित क्यों,क्या तुम्हारा कोई अधिकार नही अपने पिता की सम्पत्ति पर ? अब तुम्हारे लिए हमारे घर में कोई स्थान नही और पति, सास, नन्द ने मार मार के घर से निकाल दिया और कहा इस घर मे आने की जब ही हिम्मत करना जब मकान व दो लाख रुपया, तुम्हारे पिता हमे दहेज मे दें, ऐसी कितनी घटनाए हैं जो आये दिन हमें सुनने व देखने को मिलती हैं।

आज के नवयुवक ही नही, नवयुवतियां भी यही चाहती है कि उन्हें दहेज में ज्यादा धन व सामान मिले, उन्हे अपने घर की स्थिति का भान होते हुए भी वह ऐसी ऐसी फरमाइशें करते हैं जिन्हें पूरा कर पाना मुश्किल होता है।

दहेज जैसी बुराई को पैदा करने में पुरुषों का ही हाथ होता है और महिलाएं निर्दोष है ऐसी बात नहीं। अगर दोष एकतरफा होता तो यह कभी का खत्म हो गया होता, दोष दोनों पक्षों का ही है। यदि स्त्री वर्ग इस प्रथा को समाप्त करने का प्रण कर ले और इस ओर अग्रसर हो जाए तो कोई कारण नहीं कि यह दानव जीवित रह सके। इस प्रथा का कारण समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियां हैं। हमारा समाज आज अधकचरा हो गया है इसलिए इसमें परिवर्तन की जरूरत है और जो लोग लालच के वशीभूत होकर दूसरो की होड में, बाहरी चमक दमक देखकर और भौतिकवाद में पडकर अपना स्तर ऊंचा करना चाहते हैं, लडकी वालों से रुपया ऐठ कर जब उनका यह स्वर्णिम सपना पूरा नहीं होता तो हत्या जैसा जघन्य अपराध करते हैं। उनके प्रति कठोरता बरती जानी चाहिए और उन्हें कडा से कडा दंड दिया जाना चाहिए, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष।

दहेज के विरुद्ध आन्दोलन व सामूहिक प्रतिरोध होना चाहिए तथा ऐसे सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन किये जाये जो वर्तमान व्यवस्था को बदल दे, इसके लिए आवश्यकता है कि नारी शिक्षा व जागरण का अभियान चले और नारी को सामाजिक व आर्थिक स्तर पर सबल बनाया जाए और वे संकल्प ले कि जो दहेज मांगे उससे विवाह नही करना है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि युवक-युवतिया सकीर्ण मानसिकता को छोड़कर अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दे और आगे होकर नए समाज की रचना करें और इस प्रकार दहेजरूपी दानव से अपने को छुडाये, बुजुर्ग लोग भी इसमें सहयोग करें क्योंकि अकेले कानून बना देने मे यह समस्या सुलझने वाली नही, यह सर्वविदित है। ❑

आया है फिर से बसत शोषण भरे समाज मे

✍ कु सविता शर्मा
XII-C

आया है फिर से वसत शोषण भरे समाज मे,

फूल सभी मुरझा गये रह गये काटे भारत मा के ताज मे।
प्रताड़ना की चीखे रह गई मधुर सुरीले साज मे ॥

आया है फिर से वसत शोषण भरे समाज मे,

लुट रहा बचपन बच्चो का दरिदो के इस राज मे।
मार डालती वही दवाये ली जाती जो इलाज मे ॥

आया है फिर से वसत शोषण भरे समाज मे,

कितना कुछ बदल गया भूतकाल और आज मे।
जिदगी के बदले मौत बिक रही अनाज मे ॥

आया है फिर से वसत शोषण भरे समाज मे,

गुलामी से निम्न जीवन है अपने इसी स्वराज मे।
दिख रहा गहराता लालच राजनीति के बाज मे ॥

आया है फिर से वसत शोषण भरे समाज मे,

नारी उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार कौन ?

✍ कु. कल्पना गुप्ता
पूर्व छात्रा

समाचार पत्रों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आए दिन नारी उत्पीड़न, प्रताडना, शोषण, अत्याचार व अनाचार से संबंधित समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। नारी उत्पीड़न के प्रतिकार के लिए अनेक सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाएं कार्यरत हैं, कानून बनाए गये हैं, प्रचलित कानूनों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उनमें सुधार किये जा रहे हैं तथा स्त्री शिक्षा के लिए अथक प्रयास किए जा रहे हैं, किन्तु यह कैसी विडम्बना है कि स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार घटने की बजाय दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। प्रश्न यह उठता है कि इन सब के लिए जिम्मेदार कौन है - समाज, रूढ़ियां या फिर स्वयं नारी।

प्राचीनकाल में जिस भारतीय समाज में नारी को आदरणीय समझा जाता था, जिसे 'श्रद्धा' की दृष्टि से देखा जाता था, जो गृहस्थाश्रम के सर्वोच्च साध्य आनंदवाद की प्रतिबिम्ब थी। कालान्तर में वह मात्र भोग की वस्तु बनती जा रही है। उसकी अस्मिता, उसकी प्रतिष्ठा न जाने किस शून्य में सिमटते जा रहे हैं। वर्तमान में समाज में नारी की स्थिति दिनोंदिन बिगडती जा रही है। इस पुरुप प्रधान समाज को कौन समझाए कि नारी तो जगदजननी है, उसकी अवनति में राष्ट्र की प्रगति कहां संभव है। उसकी अवहेलना कर कोई त्राण नहीं पा सकता। ऐसी अनेकानेक रूढ़ियां आज भी अस्तित्व में हैं जो स्त्रियों के सम्मान के सर्वथा विपरीत है। सभी संभव प्रयत्नों और कानून की सहायता के बाद भी बाल विवाह जैसी कुप्रथा, लडकियों को पराया धन मानकर उन्हें अधिक न पढ़ाने जैसी कुत्सित धारणाएं तथा स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर तक सीमित रखने जैसी संकुचित मानसिकताएं आज भी अपने अस्तित्व का डंका बजा रही हैं। 'दहेज के कारण विवाहिता को जिन्दा जलाया' या 'ससुराल वालों के अत्याचारों से तंग आकर बहू ने आत्महत्या की' जैसी खबरों के बिना तो जैसे समाचार पत्र ही पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाते। कैसी भयावह संवेदनहीनता है नारी के प्रति इस समाज की ? उस नारी को जो गृहस्थाश्रम रूपी गाड़ी का एक पहिया है, जिसके बिना गति संभव नहीं, जिसमें विमुख होकर पुरुष का जीवन पूर्णत्व को प्राप्त नहीं कर सकता। और जिस त्यागमयी नारी ने इस मानव समाज की उन्नति में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, उसके साथ ऐसा अनुचित व्यवहार कैसे उचित हो सकता है। यह तो घोर निन्दनीय है, सर्वथा पाशविक है।

किन्तु इस सत्य से हम इंकार नहीं कर सकते कि नारी उत्पीडन के लिए स्वयं नारी भी कम उत्तरदायी नही है। पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति ने भारतीय

समाज की जडो पर कुठाराघात किया है। पश्चिम के अधानुकरण का सर्वाधिक प्रभाव स्त्रियो मे दृष्टिगोचर हो रहा है। स्वतत्रता के नाम पर स्वच्छदतावादी मनोवृत्ति तथा आधुनिका बनने की होड मे फैशन परस्ती भी महिलाओ की बिगडती छवि के लिए कम जिम्मेदार नही हे। स्वच्छदतावादी मनोवृत्ति के दुष्परिणाम मात्र स्त्री को ही नही अपितु उसके परिवार और सम्पूर्ण समाज को भुगतने पड रहे है। फैशन के नाम-सादगी व सौम्यता की प्रतिमूरत भारतीय स्त्री का पहनावा कटे-छटे, आधे-अधूरे वस्त्रो के प्रति बढते आकर्षण से दृष्टिगोचर हो रहा है। जब स्त्रिया ऐसे परिधान धारण कर बाहर निकलेंगी तो स्वाभाविक है लोगो के देखने का नजरिया भी अच्छा नही होगा, भर्त्सनापूर्ण होगा।

जो पाश्चात्य समाज भारतीयता मे आत्मसात होने के लिए प्रयत्नशील है, यदि हम उसी पतित सस्कृति का अधानुकरण करते है तो यह हमारी विवेकहीनता से ज्यादा और कुछ नहीं है। दूरदर्शन पर मुश्किल से गिने-चुने विज्ञापन होते है जिनमे स्त्री देह प्रदर्शन न हो अन्यथा ऐसा लगता है शायद विज्ञापन का प्रसार ही न हो पाए। इन्हे जिस प्रकार की बेढगी वेशभूषा, भावभगिमा के साथ दिखाया जाता है, उससे भी नारी गरिमा को ठेस पहुचती है। ऐसी स्थिति मे नारी शोषण से मुक्ति के लिए चलाए जाने वाले आदोलन भी असफलता के गर्त मे जाते है। जहा एक ओर नारी अपने आत्मसम्मान, स्वाभिमान व अधिकारो के लिए जूझ रही है तो दूसरी ओर वही अपनी दुर्दशा का कारण बनती जा रही है।

अत क्या यह आवश्यक नहीं कि नारी अपनी गरिमा को क्षीण करने की बजाय उसके सर्वागीण विकास के लिए प्रयत्नशील हो, आधुनिका बनने की होड मे फैशनपरस्ती को छोड विचारो मे आधुनिकता लाये तथा भौतिकतावादी पाश्चात्य सस्कृति की मिथ्या चकाचौध से अपने को बाहर निकाले।

❑

आकिचन्य

छोड़ते चलो।
जो जितना ही
छोड़ता चला जाएगा
आकर्षण की सीढ़िया
उसे उतना ही
करेगी याद
आनेवली पीढ़िया।

उपकरणो की आसक्ति का
नही है अन्त
जो हो जाता है 'शून्य'
दर्शन और विज्ञान की
भाषा मे
वही है अनन्त

स्मृतियों के बीच

कु. उर्मिला सैनी
XII C

कबीर की भांति हमें भी 'कागद लेखी' की अपेक्षा 'आखन देखी' पर ही विश्वास है। विशेष रूप से गत वर्ष विद्यालय के साथ किये गये शैक्षणिक भ्रमण के पश्चात आंखों से देखने पर ही सत्य अपनी सजीवता और सुंदरता से हृदयगंम हो सकता है। अब तक जिन स्थलों की छंवि पुस्तकों में पढ कर अनुभूत करते थे, उन्हें साक्षात देखने के सपने देखा करते थे। वह स्वर्णिम अवसर शीघ्र ही विद्यालय के द्वारा ही प्राप्त हो जाएगा ऐसी कल्पना न थी।

लेकिन प्रधानाचार्या जी के सद्प्रयासों ने हमारी उत्साही प्रवृत्ति आकांक्षाओं को देखते हुए उन सपनों को शीघ्र ही साकार कर दिया पिछले वर्ष हम विद्यालय के साथ ऐतिहासिक भ्रमण पर गये। जब हमारे विद्यालय में भ्रमण की घोषणा की गई तो हम वहुत प्रसन्न हुए। उसी समय हमने हमारे मन में यह निश्चय कर लिया कि हमें इस भ्रमण पर जाना ही है। किसी न किसी तरह से अपने माता पिता को मनाना होगा, जब हमने हमारे घर पर यह वृतान्त सुनाया तो हमारे माता पिता फौरन तैयार हो गए। क्योंकि वह जानते हैं कि छात्रों के जीवन में ज्ञान वृद्धि के लिए शैक्षणिक भ्रमण वहुत महत्वपूर्ण है। हम इस भ्रमण पर जाने कि तैयारी में जुट गए।

हमारा शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम 28 अक्टूबर 1995 की रात को बस द्वारा चित्तौड के लिए प्रस्थान के साथ प्रारम्भ हुआ। हमारी अध्यापिकाएं भी हमारे साथ थी। अभी हम लोग कुछ ही दूर पहुंचे थे कि हमारी बस का टायर पंचर हो गया, फिर भी हमने निराशा की ओर न देखते हुए अपना हौसला निरन्तर बनाए रखा। सुबह होते होते हम लोग चित्तौड पहुंच गए। चित्तौड जो अपने आप में अनेक वीर-वीरांगनाओं की कहानियां समेटे हुए है। यहां पर एक ओर महाराणा प्रताप जैसे योद्धा तो दूसरी तरफ पद्मिनी, पन्ना तथा मीरा बाई जैसी वीरांगनाएं हुई हैं। अनेक राजाओं के महल जो पहले भव्य व सुंदर थे वे अब खंडहरों से अधिक कुछ नही हैं। परन्तु वे भी अपने आप में अपने राजाओं की कहानियां समेटे हुए हैं। चित्तौड का दुर्ग वीरता की निशानी है। हमने वहां पद्मिनी का जौहर स्थल देखा, हम वहां मीरा वाई के उस स्थान को देखने गए जहां पर बैठकर वह श्रीकृष्ण की भक्ति किया करती थी। तथा जहां राणा जी ने मीरावाई की भक्ति में अनेक प्रकार की वाधाएं डाली। चित्तौड का विशाल स्तम्भ जो दूर से ही आने वाले पर्यटकों का स्वागत करता है। वह हमें ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह हमें अपने चित्तौड की कहानी कह रहा हो। चित्तौड के भ्रमण ने ऐतिहासिक यादों को ताजा कर दिया। अगले दिन हम उदयपुर के लिए रवाना हुए।

झीलो की नगरी उदयपुर जो चारो तरफ से झीलो से घिरी है। यह अति रमणीय स्थल है। यहा हम कई ऐतिहासिक स्थलो पर गए। हमने हल्दीघाटी का मैदान देखा जहा महाराणा प्रताप ने मुगलो के साथ युद्ध किया था। जब हम कई वीरो की कहानिया सुनते थे तो हमारे अदर भी वीरता की लहरें उठती थीं। हम सहेलियो की बाडी, शिल्पग्राम, मुगल बाग आदि स्थानो पर गए। फिर हम लेक-पैलेस देखने गए जो अपने बीचो-बीच नेहरू बाग को स्थित किए हुए है। वहा हम नाव मे बैठकर गए, असहनीय जल राशियो के बीचो-बीच इस आश्चर्य को देखकर हम भी चकित रह गए। जिन स्थानो के बारे मे हमने केवल किताबो मे पढा था। उनके साक्षात दर्शन से हम सभी प्रसन्न थे। यह स्थान हम छोडना नहीं चाहते थे परन्तु अभी हमे अन्य स्थानो को भी देखना था, फिर हम सिटी पैलेस देखने गए जहा राजाओ के भव्य महल आज भी उनकी शान को दर्शाते है, महल के चारो तरफ काच की नक्काशी व फूल पत्तियो की बनावट भी बहुत सुदर थी। हमने यहा इनकी सेना के हथियार देखे जिनसे उनके युद्ध कौशल का हमे अनुमान हो गया। यह रात हमने उदयपुर मे बिताई तथा सुबह माउण्ट आबू के लिए प्रस्थान किया।

माउण्ट-आबू छोटी-बडी पहाडियो से घिरा है, इसकी यात्रा बहुत रोमाचक थी। हमारी बस पथरीले रास्तो को पार कर शिखर होटल पहुची। यह यहा की सबसे ऊची चोटी पर स्थित है। यहा हम नक्की झील देखने गए। जहा विदेशी पर्यटको की काफी भीड थी। यहा हमने नाव मे बैठ कर इस झील की सैर की और इसके बाद शाम होने पर सन सैट पाइन्ट देखने गए। वहा हम घोड़ो पर बैठकर पहाडी रास्ते से पहुचे। सन सैट पाइन्ट से हमने पहाड़ियो के पीछे जाते सूर्य को ढलते देखा जो हमे ऐसा प्रतीत हो रहा था। मानो हाथ बढ़ाने पर हम सूरज को पकड लेंगे पर वास्तव मे ऐसा नहीं था। ढलते सूर्य की उस गुलाबी रोशनी ने शाम को रगीन कर दिया था। यहा हमने जैन मदिरो के भी दर्शन किये, जहा सगमरमर की कई आकर्पित प्रतिमाए देखने की थी। हम यहा गुरु शिखर पर भी गए तथा देवी के दर्शन किए। अगले दिन सुबह हम अजमेर के लिए रवाना हो गए।

अजमेर मे हम ख्वाजा साहब की दरगाह गए, फिर उसी के पास स्थित अढाई दिन के झोपडे को भी देखा। फिर हम अन्नासागर झील देखने गए, वहा का दृश्य बहुत सुदर था हम वहा सेठ जी की नशिया देखने गये व वापस जयपुर के लिए रवाना हो गए। हम पुष्कर नहीं जा सके क्योकि वहा पर पशुओ का मेला लगा था, हम सभी उदास थे परन्तु प्रसन्नता कम न थी हम ने इतने ऐतिहासिक स्थानो को देखा व इनसे हमने बहुत ज्ञान प्राप्त किया, हमने यह पूर्णत जान लिया कि ऐतिहासिक स्थानो का भ्रमण व दर्शन छात्रो के जीवन मे महत्वपूर्ण है, यह उनके ज्ञान मे वृद्धि करता है।

❑

गुण की पूजा सर्वत्र होती है, बड़ी सम्पत्ति की नही।

- कालीदास

घृणा, घृणा से कभी कम नही होती। घृणा प्रेम से ही कम होती है।

- धम्मपद

विश्वास तेरे संग है

✍ कु. सीमा आसनानी
X-D

हे मनुज ! बढ़ता जा
प्रगति पथ पर चलता जा
विश्वास तेरे संग है
मन में एक उमंग है
यह हंसता रूप रंग है
उबाल अंग-अंग है
फिर देख बजते मृदंग है,
फिर डरने की क्या बात है
विश्वास तेरे साथ है ।

हे मनुज ! बढ़ता जा
प्रगति पथ पर चलता जा
जीवन की डोर को तू थाम
पकड ले तू इसकी लगाम
मन में बढ़ने की हो लालसा
व्यवहार हो तेरा सदा एक-सा
फिर डरने की क्या बात है
विश्वास तेरे साथ है ।

हे मनुज ! बढ़ता जा
प्रगति पथ पर चलता जा
बढ़ता जा तू पल-पल
डर न तू आगे चल
कीमती है तेरे लिए वक्त का हर क्षण
हां, इस संसार में है हर समस्या का हल
हर जगह बना अपना स्थान
करता जा मुश्किलों का समाधान
फिर डरने की क्या बात है
विश्वास तेरे साथ है ।

हे मनुज ! बढ़ता जा
प्रगति पथ पर चलता जा
कदम न तेरे लड़खड़ाए
चाहे हों काटे बिछाए
पाव छलनी हो जाए
विश्वास न तेरा डगमगाए
मंजिल तुझे पुकारती
यह हर राह दुलारती
हे मनुज ! बढ़ता जा
प्रगति पथ पर चलता जा

भारत माता की जय

✍ कु तुलसी फुलवानी
XII C

भारत के भाग्य जगाने को,
अभी हमे बहुत कुछ करना है।
रखने को अपनी आन बान
हमे समर बीच पग धरना है।
तलवार तान गा विजय गान,
हम घोर युद्ध रच डालेगे।
माता की रक्षा हेतु आज,
रिपु रक्त बहा हम डालेगे।
ताकत है किसमे आज हमे,
जो रोके प्रलय मचाने से।
कीन्हा प्रताप मा अमर नाथ,
मा हेतु शौर्य दिखलाने को।
जग उठो शत्रु ने घेरा है।
माता का मुकुट ढहाने को।
यमराज युवक तुम बन जाओ,
शत्रु का दम्भ मिटाने को।

संस्कार पूंजी का क्षरण

✍ कु. अर्चना जैमन

एम. ए., बी.एड

'मन, वाणी एवं कर्म को समान, सन्तुलित एवं श्रेष्ठ बनाने की शिक्षा जिन परम्पराओं से मिलें, उन परम्पराओं की आत्मा को संस्कार कहते हैं। संस्कारों का निर्माण पीढियां या परिवार करते हैं एवं जीवन के सम्यक् विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये संस्कार बनते बिगड़ते और बदलते हुए एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते रहते हैं। संस्कारों का बनना बिगड़ना सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। परन्तु संस्कार रूपी पूंजी का क्षरण रोकने हेतु हम आने वाली पीढ़ी में तेजस्विता के संस्कार भरें तथा समाज व देश को प्रगति की नई दिशा दें।

- सम्पादिका

'संस्कार' शब्द शुद्धि, पवित्रता व सुधार का द्योतक है, जिसका संबंध संस्कृति से है। संस्कृति भी परिष्कार, सुधार, निर्माण, सजावट व आचरणगत परम्परा को स्पष्ट करती है। इसे भाव रूप में देखा जाये तो संस्कृति मानवीय चिन्तन का वह स्वरूप है जो आध्यात्मिक एवं मानसिक वैशिष्ट्य को प्रकट करती है। अतः संस्कारों द्वारा सुधार, परिष्कार के माध्यम से श्रेष्ठ जीवन की निर्मिति होती है। शास्त्रों में भी हिन्दुओं के सोलह संस्कारों के संदर्भ में- सस्कारों को दोषो का परिमार्जन करने वाला कहा गया है, इस संबंध में लिखा गया है-

चित्रं क्रमाद यथानेके रंगरून्मील्यते शनैः।
ब्राह्मण्यमपि तद्वत् स्यात् संस्कारैर्विधिपूर्वकैः॥

अर्थात 'तूलिका के बार-बार फेरने से शनैः शनैः जैसे चित्र अनेक रंगों से निखर उठता है वैसे ही विधिपूर्वक सस्कारों के अनुष्ठान से ब्राह्मणत्व का विकास होता है।' यहां 'ब्राह्मण्य' शब्द ब्रह्म-वेदन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। यानि मनुष्य के दोषों और कमियों को दूर कर ऊर्ध्वगामी तथा सभी जीवों में श्रेष्ठ बनाना संस्कारों का कार्य है।

भारतीय संस्कृति जिसे हम आचरणगत व्यवहार तथा सभ्यता के विकास की दृष्टि से देखें तो सभी कालगत व जीवित संस्कृतियों में श्रेष्ठ कही जा सकती है तथा इसी कारण भारत विश्व में आध्यात्मिक गुरु के नाम से विभूषित है।

सभ्यता व संस्कृति क्रमिक विकास की दृष्टि से एक होते हुए भी स्वरूप की दृष्टि से भिन्न हैं। सभ्यता हमारे जीवन के वाह्य-पक्ष को सजाने-संवारने और आकर्षक स्वरूप प्रदान करने का माध्यम है, इसका संवंध खान-पान, रहन-सहन व आचरण से है, जबकि संस्कृति का संवध मनुष्य के चिन्तन, विचार व भाव-जगत से है जिसकी स्पष्ट छाप हमें उसके आचरण, कार्यो, आकाक्षाओं, इच्छाओं पर दिखाई देती है। अपने इसी वैशिष्ट्य मे

उसके भावो की शुचिता, गहनता व व्यापकता प्रकट होती है। युगो से यही सस्कृति अपने देशवासियो को दया, स्नेह, नैतिकता, सहानुभूति, कर्त्तव्यपरायणता एव मानव मात्र के प्रति करुणा का पाठ पढाती रही है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढी तक इस 'सस्कार-पूजी' का हस्तान्तरण होता रहा है। भारत की इसी पहचान को इगित करते हुए प्रसाद लिखते है-

अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
जहा पहुच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ॥

विश्व के चेतन प्राणियो मे सस्कारो की गुणो की महत्ता सर्वमान्य है। ये गुण यथार्थ मे मानव तथा धरा पर विचरने वाले अन्य जीवो के मध्य एक भेद पक्ति है। अत यह कहा जा सकता है कि सस्कार व्यक्ति को पशुतुल्य व्यवहार से ऊपर उठाते है और व्यक्ति के व्यक्तित्व के परिचायक बनते है।

वर्तमान मे इन्हीं गुणो-सस्कारो के विलोपन से परोक्ष रूप से यह भेद पक्ति निरन्तर धुधली पडती जा रही है। आज मनुष्य यह विस्मृत करता जा रहा है कि वह केवल शरीर मात्र नहीं है वरन् शरीर आत्मा और मन का समन्वित रूप ही मनुष्य है। वह विचारो भावो की अपेक्षा बाह्य-पक्ष, रहन-सहन, खान-पान को महत्व दे रहा है, फलस्वरूप मनुष्य मे आडम्बरपूर्ण जीवन शैली की होड मची हुई है और इसकी प्राप्ति हेतु स्वार्थपरता, छल-कपट, अनैतिकता, हत्या, लूट, हिसा आदि राक्षसी व पशु प्रवृत्तिया दृष्टिगोचर होती हैं।

आज के समाज पर दृष्टि डाले तो हम पाएगे कि बच्चे झुककर नमन करने के स्थान पर वातावरण से प्रभावित 'हॉय डैड, हॉय मॉम', कह दायित्व की इति समझ लेते है। इसी प्रकार नवयुवको मे कर्त्तव्यपरायणता की अपेक्षा कर्त्तव्यहीनता का प्राबल्य है। वे अपने महत्ती दायित्वो यथा माता पिता की सेवा, गुरुजनो का आदर तक को स्वार्थपरता की भूल भूलैया मे विस्मृत कर चुके है, फिर इनसे मानव मात्र के प्रति दया तथा प्रेम की अपेक्षा किस भाति की जा सकती है। यह विकृतिया व्यष्टि ही नहीं अपितु समष्टि की समस्याओ के रूप मे भी सामने आ रही है। विकराल रूप धारण किए दहेज एव साम्प्रदायिकता जैसी सामाजिक विसगतियो को समाज के शिखर पर सत्तासीन-महिमामडित करने का हेतु भी सस्कारो के क्षरण को ही कहा जा सकता है।

समाचार-पत्रो मे नित्य प्रकाशित भाई द्वारा भाई की, पुत्र द्वारा पिता की, पति द्वारा पत्नी की हत्या, आत्महत्या, लूट, हिसा की खबरे इन्हीं अमानवोचित भावो को प्रकट करती है।

समाज का यह वीभत्स रूप देखकर तो भारतेन्दु की तरह हमे भी कहना पड़ेगा -

रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई,
हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई ।

यह सस्कारहीनता विगत् दो चार वर्षों की ही देन नहीं है यह तो अग्रेजो का शासन स्थापित होने के साथ ही समाज मे पदार्पण कर रही थी। इसीलिए उन्नीसवीं शताब्दी के अत मे ही राधाचरण गोस्वामी ने इसी भारतीय सस्कृति की रक्षा हेतु पुकार लगाई थी-

मै हाय हाय दै धाय पुकारो कोई ।
भारत की डूबी नाव उबारो कोई ॥

लेकिन हमे समाज को इस स्थिति से उबारने हेतु गोस्वामी जी की भाति पुकार न लगाकर समाधान खोजने होंगे और उचित निदान हेतु उन कारणो की तह तक जाना होगा जिससे यह सस्कारहीनता उत्पन्न हुई है।

गहराई से विचार करने से ज्ञात होगा कि सर्वप्रथम इसके कारणो मे हमारी सामाजिक व्यवस्था का छिन्न-भिन्न होना है। समाज की मूल इकाई परिवार जो कि सयुक्त हुआ करते थे बच्चों मे बड़ो का आदर, धैर्य, त्याग, सहयोग, कर्त्तव्यपरायणता आदि गुण विकसित करने मे सक्षम थे क्योकि स्वेच्छाचारिता तथा मनमानियो से परिवार सयुक्त नहीं रह पाते। लेकिन आज उसी इकाई

के विघटन से समाज में यह विकृति बढ़ रही है।

इसी से संबंधित दूसरा कारण यह गिनाया जा सकता है कि समय के साथ, परिवार विघटित हो रहे हैं तथा जनसंख्या विस्फोट की विकरालता के परिणाम से सीमित परिवार होने लगे हैं जिससे स्नेहसिक्त माता-पिता अपने उन एक या दो बच्चों के लिए सर्वस्व समर्पित कर देते हैं उनकी सभी बुरी आदतें व मनमानिया सहन करते हैं। जिससे बच्चों में संस्कारों की अपेक्षा स्वेच्छाचारिता की वृद्धि होती है।

साथ ही वर्तमान में आर्थिक प्रधानता के परिवेश में युग की मृगतृष्णा के वशीभूत उस सीमित परिवार में भी माता पिता दोनों नौकरी पेशा होते हैं फलस्वरूप बच्चों को नैतिकता (संस्कारों) का पाठ पढ़ने के लिए मां का संबल नही मिल पाता जिससे बच्चे मनचाहा पथ और कुसंग स्वीकार कर लेते हैं, इससे भी हम अपनी संपदा खोते जा रहे हैं।

अर्थ संबधी कारणों में एक कारण पूंजी की प्रतिस्पर्धा है। विज्ञान की प्रगति के फलस्वरूप हमें टी.वी., वीडियो जैसे अनेक मनोरंजन के साधन प्राप्त हुए हैं लेकिन अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए इन साधनों में रोचक व शिक्षाप्रद कार्यक्रम न प्रसारित कर व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं जो बच्चों में चकाचौंध व फूहडता जैसी विकृतियां उत्पन्न करते हैं।

संस्कारों की संपदा के ह्रास का महत्वपूर्ण हेतु पश्चिमी जगत की उन्नति तथा विकास को देखकर सभ्यता और प्रगतिशीलता के थोथे भ्रम के नाम पर पाश्चात्य अन्धानुकरण है। आज की युवा पीढ़ी स्वयं में हीनता का वोध करती है तथा पश्चिमी संस्कृति को आदर और महत्ता देती है जबकि पश्चिम के लोग हमारे संस्कारों से गुणों से अभिभूत हो रहे है और ग्रहण करने को प्रयासरत हैं।

पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण समाज में भौतिकता की ललक बढ रही है और व्यक्ति आडम्बरपूर्ण जीवनयापन करने में गौरव का अनुभव करता है। फ्रिज, कूलर, कलर टी.वी. आदि साधनों का होना 'स्टेटस सिंबल' बन गया है। यह रोग नगरों और महानगरो में ही नही गांवों तक में पहुच रहा है। कन्हैयालाल सेठिया जी भौतिकता की इस ललक और संस्कृति के क्रमिक ह्रास को पैनी नजरों से देख रहे हैं -

उठ खड़ा हुआ है।
गांव के दिखने वाले
आदमी के भीतर
एक शहर
बैठ गया है रेडियो
रामायण के आसन पर।

रामायण के आसन पर रेडियो को बैठाने का मतलब, सम्पूर्ण सस्कृति का, आस्था का, श्रद्धा का, तर्क में, योग में, आडम्बर में, बौद्धिक विश्लेषण में बदलाव, जो एक गहरी आंतरिक दुर्घटना को प्रकट करता है।

पाश्चात्यता का यह प्रभाव खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, आचार-विचार सभी जगह दृष्टिगोचर हो रहा है। आज के ये भ्रमित लोग विदेशी इम्पोर्टेड वस्तुओं को ललचाई नजरों से देखते हैं,उन्हें प्राप्त करने के सदा इच्छुक रहते है। विदेशी आयातित वस्तुओं के पीछे भागने से ही हमें स्वदेशी, स्वयं द्वारा निर्मित, सृजित वस्तुओं का उपभोग करने में हीनता का वोध होता है। इस आपाधापी में जीवन की समरसता व संतोष कहीं भूल आए हैं , असंतोष जागृत हो गया है जो समाज को पतन की राह दिखा रहा है।

उपर्युक्त विन्दुओं पर विचार करने से ज्ञात होगा कि वस्तुतः सामाजिक व्यवस्था के अव्यवस्थित होने और भौतिक विकास एवं वैज्ञानिक उन्नति के भ्रमजाल में हम अपनी संस्कारों की पूंजी खोते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व में असुरोचित प्रवृत्तियां पनप रही हैं।

विशुद्ध रूप मे देखा जाये तो व्यक्तित्व की सपूर्णता सुसस्कारो के अभाव मे अधूरी है। क्योकि जिस प्रकार बाह्य व्यक्तित्व की उपादेयता स्वस्थ शरीर, परिश्रम करने की क्षमता एव कार्यदक्षता पर अवलम्बित है। ठीक उसी प्रकार सस्कारो की धरोहर व्यक्ति के जीवन मे नैतिक व्यवहार, सास्कृतिक पृष्ठभूमि एव उसके सामाजिक जीवन के मूल्यो को रूपायित करती है। अत व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने उसे मनुष्यत्व प्रदान करने हेतु समाज मे सस्कारो की पुर्नस्थापना आवश्यक है।

यह तब ही सभव है जब सामाजिक, नैतिक मूल्यो की इकाई प्रथम पाठशाला-परिवार मे बच्चे को उचित वातावरण प्राप्त हो। माता पिता सतान को चरित्रवान, सस्कारयुक्त बनाने की दृष्टि से पूर्ण सजग रहें।

सचार साधन स्वस्थ मनोरजन के साथ समाज हितकारी भूमिका का निर्वहन करे।

साथ ही हम प्रगतिशीलता के थोथे भ्रम मे भ्रमित न हों। ज्ञातव्य है कि अधुनातन वैज्ञानिक गवेषणाओ ने कृत्रिम रूप से जीन्स का निर्माण तो कर लिया है। अब बलिष्ठ, मेधावी व अन्य आवश्यकतानुरूप मनुष्य तो बनाये जा सकते है, परन्तु सस्कारो के निरन्तर प्रवाह के अभाव मे यह उपलब्धि समाज को खोखला ही बनायेगी।

युवा पीढी भौतिकता की चमक मे न फसे, क्योकि यह अन्तत मृग-मरीचिका ही है। पाश्चात्य अन्धानुकरण के स्थान पर 'स्व' को महत्व दें, हीनता का बोध न होने दे। गुप्त जी के अनुसार जीवन मे सतुष्टि का भाव तब ही आ सकता है।

अपना बोया आप ही खावे,
अपना कपड़ा आप बनावे।
माल विदेशी दूर भगावे,
अपना चरखा आप चलावे।
बढ़े सदा अपना व्यापार,
चारो दिस हो मौज बहार।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो सास्कृतिक मूल्यो के क्रमिक क्षरण का एक पहलू समाज के वृहत कार्यकारी समूहो द्वारा मूल्यो की अनदेखी करना है। सामाजिक सर्वेक्षणो से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि समाज मे जहा इस सोच पर व्यष्टि रूप मे चितन और विचार किया जाता है एव सुधार के पक्ष मे है, वहीं दूसरी और समष्टि रूप मे इस सोच का गौण होना चिता का विषय है। अत सास्कृतिक पूजी के क्षरण को प्रतिगामी सक्रिय सामाजिक समूहो की शक्ति द्वारा भी रोका जा सकता है।

उपर्युक्त निदानो को विमर्श कर लेने के पश्चात् इतना ही कहना अलम् होगा कि मनुष्य मे मानवता के भाव और सस्कृति के गौरव की रक्षार्थ हमे इस सस्कार-पूजी को सामाजिक परिदृश्य परिवर्तित कर आत्मचेतना द्वारा सभी व्यक्तियो मे प्रवाहित कर बचाए रखना है, अन्यथा दिनकर के शब्दो मे यह गौरव अनुभूत नहीं किया जा सकेगा -

भारत है सज्ञा विराग की,
उज्ज्वल आत्म उदय की,
भारत है, आभा मनुष्य की,
सबसे बड़ी विजय की।

❑

माता के तुल्य कोई छाया नही है। माता के तुल्य कोई सहारा नही है। माता के सदृश्य कोई रक्षक नही है तथा माता के समान कोई प्रिय वस्तु नही है।

- वेदव्यास
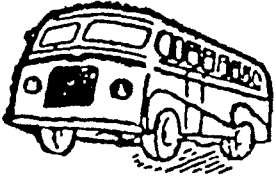
जब मैं भ्रमण पर गई

✍ कु. चन्द्रकान्ता गुप्ता
XII

'प्रधानाचार्या जी की प्रेरणा व शिक्षिका बहनों के उत्साह व लगन से सहशैक्षणिक प्रवृत्तियों के अन्तर्गत छात्राओं को भ्रमण हेतु ले जाया गया। आनन्द के उन्हीं लम्हों को वे अपने मानस पटल से हटा नहीं पातीं। उन्हीं स्मृतियों को लेखिका ने अपने लेख में लेखनीबद्ध किया है।'

- सम्पादिका

''ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ....
ऐसे हो हमारे करम,
नेकी पर चलें और बदी से डरें,
ताकि हंसते हुए निकले दम............-''

भ्रमण के दिनों की ये गीतों की धुन लहरियां आज भी प्रातः व संध्या के समय मुझे भाव विभोर कर देती हैं और होट न चाहते हुए भी थिरकने लगते हैं। कितने अच्छे थे वे भ्रमण के दिन। जब मस्ती का आलम था। अध्यापक अध्यापिकाओं का सान्निध्य था, संगी सहपाठिनों का साथ था। प्रातः से संध्या का समय पानी के बुदबुदों की तरह बीत जाता था। कुछ पता ही नहीं चलता था।

ढेरो खुशियों, आशाओं, उमंगों के साथ हमारा भ्रमण दल 10 अक्टूबर के दिन सायंकाल 6 बजे जय जय कार के नारों के साथ चल पड़ा। माता पिता से इतने लम्बे दिनों के लिए बिछुडना कुछ अच्छा प्रतीत नहीं हो रहा था। सभी की आंखें पानी की बूंदों से नम हो गयी थीं, मन उचटा-उचटा सा हो गया। दृश्य बड़ा करूणामय था। आगे जाकर बिडला मंदिर में ड्राईवर साहब का 2 घंटे के लिए कहीं चले जाना, बडा निराशाजनक लग रहा था। वातावरण ऐसा बनने लगा था कि मानों बिना भ्रमण किये ही हम लोगों को वापस घर लौटा दिया जाएगा। परन्तु ईश्वर की असीम कृपा और हमारी मौन प्रार्थना ने इसको संभव बना दिया,सामने से ड्राईवर साहब आते दिखे और हम लोग पुनः जोश एवं सरगर्मी के साथ एक साथ जय जय कार का नारा लगाते हुए आगे की सफल यात्रा हेतु निकले।

हम लोग उदयपुर की तरफ जा रहे थे। हमारी बस में सहेलियों एवं अध्यापिकाओं के संग पहली रात थी। नींद तो मानों हवा हो चुकी थी। आखिर ऐसी मस्ती में नींद का क्या काम ? रात काफी देर तक हम लोग बातें करते रहे, गीतों का धुन लहरियों के साथ न जाने कब नींद आ गयी। सुबह उठे तो चेहरे पर एक नयी मुस्कराहट थी। उन दिनों प्रार्थना का भी अपना मजा होता था। हम लोग अपने घरों में कभी इतने मन से प्रार्थना न करते हों परन्तु वहां तो सभी पूरे जोर शोर से मन लगाकर प्रार्थना

अद्भुत ह।

इस स्थान को देखने के पश्चात हम लोगो ने रेलगाड़ी मे बैठकर नेशनल पार्क का भ्रमण किया। पूरी रेलगाड़ी मे अपने ही लोग होने के कारण मजे का आनन्द दुगुना हो गया। हम लोग मस्ती भरे गाने गाते हुए, फोटोग्राफी करते हुए हुल्लड मचाते हुए पूरे पार्क का अवलोकन किया।

इस पार्क के भ्रमणोपरान्त हमे खरीददारी हेतु बम्बई के नामी बाजार ''भिण्डी बाजार'' ले जाया गया। इस जगह लाने का उद्देश्य प्रधानाध्यापिका जी का क्या था ? कुछ समझ नहीं आया। इस बाजार का चित्रण करना भी दूभर है। दीवारो पर बडे बडे जाले लगे हुए भवना के बाहर गन्दे मेले कपडो के ढेर सूख रहे थे, एक के बाद एक दुकान मीट मास मछली की थी। लोग निर्दयता से मुर्गो को काट रहे थे जो देखा नहीं जा सकता। यहा से थोडी बहुत खरीददारी करी और आगे रवाना हो गये।

हम लोग बम्बई के नेहरू प्लेनेटोरियम पहुचे। यहा पर अतरिक्ष एव पृथ्वी ग्रह के बारे मे काफी ज्ञानार्जन किया। देवयानी मन्दाकिनी-हमारी सबसे निकट की मन्दाकिनी है। एक आकाश गगा मे अरबो खरबो तारे होते है। उसी तरह काफी कुछ ज्ञानार्जन के बाद हम लोग हैंगिग गार्डन गये।

हैगिग गार्डन के रास्ते मे हम लोगो ने ''तारा पोरवाल मत्स्यालय'' देखा। वास्तव मे यह मत्स्यालय देखने के लिए बडा अद्भुत स्थान था। यहा अलग अलग तरह की सैकडो मछलिया है। हर मछली अपने आप मे सुदर है।

इस मत्स्यालय को एक घटे मे देखा। इसके पश्चात हैगिग गार्डन और कमला नेहरू गार्डन गये। हैगिग गार्डन तो ठीक बडौदा के अजदा गार्डन की तरह था, परन्तु कमला नेहरू गार्डन अच्छा था। वहा एक जूता हाऊस बना हुआ था। उसके सामने हर्षद मेहता की बिल्डिग दिखती थी।

यहा से हम लोग ''भारत के द्वार'' पर पहुचे। कितना सुदर और आकर्षण से भरा हुआ है भारत का द्वार जिसके ठीक सामने प्रसिद्ध होटल ताजमहल था। यहा पर थोड़ी देर घूमने के बाद गोवा के लिए रवाना हो गये।

गोवा का सफर लम्बा था किन्तु बोरियत का आभास जरा भी नहीं हुआ। दूसरे दिन के रात्रि 2 30 बजे गोवा के सेन्टर हॉल मे हम लोग पहुचे। रात आराम के बाद सुबह गोवा के दृश्यो को देखने निकले।

वाह! कितनी शात, साफ थी वे गोवा की सडके, मकान भी एक से एक सुदर डिजाइन से बने हुए। हरियाली का तो कुछ कहना ही नहीं। फुटपाथ तक पर घास को देखा जा सकता था। वहा हमे महिला गाइड के मिल जाने से घूमने मे ज्यादा परेशानी नहीं हुई। वे बडे मस्त स्वभाव की स्त्री थी। बहुत मजाक करती थी।

सर्वप्रथम हम कैलकूट बीच पर गये जो कि बीचो की रानी कहलाता है। इस बीच मे पानी के खूब देर मजे लिए। सब पानी की ऊची ऊची लहरो से पूरा भीग चुके यहा तक कि इतनी मस्ती मे चश्मे भी पानी मे बह चले। लगभग एक घटे पानी मे नहाने के बाद हम लोग अन्जूना बीच पर गये, जिसकी चट्टानें जहरीली थी। अत केवल मात्र प्राकृतिक सुरम्यता का आनन्द उठाकर बागातूर बीच पर निकल गये। इस बीच का आनन्द भी बहुत लिया, सबसे ज्यादा पानी मे फोटोग्राफी करने का मजा था। इसके बाद खाना खाकर, नयी ड्रेस पहनकर हम लोगो ने गोवा के लोक गीतो को देखते हुए 1 30 घटे तक बोटिग करी। इसके पश्चात खरीददारी पर निकले। एक घटे तक खरीददारी करने के बाद वापस अपने हॉल लौट आये। खाना वगैरह खाकर आराम किया। सुबह पुन शेष स्थानो को देखने के लिए निकल पडे। सबसे पहले गोवा चर्च मे गये वहा पर महाराज की

बडी मजाक करी। सब लोगों को मोमबत्ती खरीदते हुए देखकर महाराज बोले बेटी ! क्या चर्च में अंधेरा होता है।" उनकी इस बात पर सबका हंसी का फव्वारा छूट पडा।

इसके बाद हम लोग डोनोपोला गये वहां कुछ देर भ्रमण करने के बाद मगेशी मंदिर गये। यहां से गोवा के अंतिम बीच मीरमार पर गये और नहाने के उपरान्त गोवा से अलविदा लेकर औरंगाबाद के लिए रवाना हुए।

औरंगाबाद गोवा से काफी दूर पडता है अत. कुछ कुछ बोरियत महसूस होने लगी। बोरियत महसूस होने का दूसरा कारण घर की याद आना भी था। जितने उत्साह से हम लोग यहां तक आए थे उतना उत्साह वापस जाने में नहीं था। सब चुपचाप बैठे हुए सफर तय कर रहे थे परन्तु बोरियत या थकावट महसूस नहीं हो रही थी। जितने भी गाने हमें आते थे वे सब गा चुके थे, अत· अब उनको बिगाडकर हम भूख पर पेरोडी बनायी। जब भी खाना मिलने में देर हो जाती तो हम जोर जोर से गाने लगते

भूख लगी है खाना दो
पेट में चूहे दौड रहे हैं खाना दो
बडी मेडम खाना दो
चूं चूं चीं चीं बोल रहे हैं खाना दो

इन पेरोडियों को सुनकर अध्यापकों को भी हंसी आ गयी और हमारी बुद्धि की शाबाशी देने लगे। यह गाना गाते ही हम लोगों को खाना मिल जाता था। अतः जब भी भूख लगती अपनी पेरोडी गाने लगते। इस तरह से खाना खाने का भी मजा हमने लूटा।

इस तरह चलते चलते हम लोग औरंगाबाद पहुंच ही गये। वहां सबसे पहले एलोरा की गुफाएं देखने गये। बीच रास्ते में एक गुफा देखी जो की दिल्ली तक जाती थी इसे मुहम्मद तुगलक ने बनाया था। इसे देखते हुए एलोरा पहुंचे वहां उपर्युक्त गाइड की व्यवस्था न होने के कारण गुफाओं की कुछ जानकारी न मिल सकी। यहां से जल्दी ही रवाना होकर हम लोग अजन्ता की ओर गये। यहां 21 गुफाए थी। विशेष बात थी कि एक चट्टान को काटकर के इन गुफाओं का निर्माण हुआ था। इन गुफाओं मे बुद्ध के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सारे दृश्य दीवारों पर अवलम्बित हैं। ये गुफाएं 1000 वर्ष पुरानी थी। यहां पर एक बुद्ध प्रतिमा है जिसे तीन तरफ से रोशनी डालने पर तीन भाव बिम्ब दिखते हैं। इनको देखने के बाद हम लोग एक झरने से होते हुए नीचे आए और गरम गरम दाल बाटी, कड़ी, चावल खाने के बाद सीधे जयपुर के लिए रवाना हो गये। जयपुर तक आने में भी ज्यादा थकावट का अनुभव नहीं हुआ। यद्यपि अब घर की याद आने लगी थी। और अपने मजे को बताने के लिए उत्सुक हो रहे थे। जब अजमेर आए तो जयपुर का रास्ता बड़ा लम्बा लगने लगा। परन्तु आपस में सहेलियों से बातें करते हुए ज्यादा बोर महसूस नहीं हो रहा था। रास्ते में किसी किसी का उतर जाना बडा दुःखदायी महसूस हो रहा था। ग्यारह दिनों तक एक साथ रहकर बिछुड़ जाना भी कितना दुखदायी होता है।

इसी तरह घर के सदस्यों की यादों को संजोते हुए भ्रमण की यादों को मन में लपेट कर आखिर हम अपने घर आ पहुंचे।

❑

अनीति का उपार्जन ऐसा है, मानो कच्चे घडे में पानी भरना।
वह घडा फूटता है और पानी बिखरता है।

बचपन की खुशियो को छीनता टी.वी.

✍ कु नीतू जैन

XII

'दूरदर्शन के प्रभावहीन, भद्दे व अश्लील कार्यक्रमो से बच्चो मे सास्कृतिक व नैतिक मूल्यो का ह्रास व सस्कारहीनता पनपती जा रही है। वे अपनी पढाई व खेलकूद का समय बर्बाद कर इन कार्यक्रमो को देखने मे व्यस्त रहकर अपराध प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो जाते है । उनमे आलस्य, निष्क्रियता व वैयक्तिता बढ़ने लगी है और वे पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धो से दूर होते जा रहे है।'

– सम्पादिका

'अरे सरिता ! बच्चो के साथ क्लब, किट्टी और शॉपिग के लिए इतना समय तुम कहा से निकाल पाती हो ?' 'अरे भाई, मैंने तो हमारे टी वी मे केबल फिट करा दिया, अब बच्चो को हमसे क्या वास्ता ? वो टी वी मे, मै शॉपिग मे।'

वाह ! ये उत्तरदायित्वहीन, टी वी की ओर आकर्षित करने वाले, बच्चो की उपेक्षा करने वाले माता पिता क्या यह सोच भी पा रहे है कि अपने राजदुलारो को टी वी सस्कृति को सौप वे उनका चरित्र निर्माण कर रहे है अथवा पतन, जीवनरूपी विशाल सडक पर राह दिखा रहे है अथवा भटका रहे है । ये कैसी विडम्बना है कि जीवनदाताओ ने ही जीवन को हरण करने की युक्ति खोज निकाली है।

आज का यह टी वी बच्चो को अपरिचित किन्तु अत्यन्त मोहक, आकर्षक, बनावटी व उत्तेजनापूर्ण, छल-छलावे युक्त वातावरण मे छोड देता है, जहा वे मासूम, नासमझ अच्छे-बुरे, वास्तविक-अवास्तविक, वाछनीय-अवाछनीय का विभेद नहीं कर पाते एव उसमे त्रिशकु की भाति उलझ जाते है। यही टी वी बालमन, मस्तिष्क ऐसी छाप छोड जाता है कि वे रोमाचित दृश्यो की भूमिकाओ मे प्रकट होने को लालायित हो उठते है और अपना जीवन खो देते है। इसका लोमहर्षक एव ज्वलत उदाहरण टी वी के कारण एक नादान, मासूम का जीवनात है। लखनऊ के छ वर्षीय रिकू ने दूरदर्शन पर प्रदर्शित शीतल पेय की नकल करते हुए घर की दूसरी मजिल से छलाग लगा दी और वह अपरिपक्व, कली खिलने से पूर्व ही मुरझा गयी। क्या टी वी का जहरीला नाग बालको को इसी तरह निगलता रहेगा ?

स्पष्टीकरण की आवश्यकता तो कदापि नहीं है। टी वी सचार का वह माध्यम है जिस पर अत्यन्त निकृष्ट, निम्नस्तरीय व सामाजिक एव नैतिक जीवन

मूल्यों के विरोधी कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। जिसमें मात्र फूहड़पन, अश्लीलता एवं अशालीनता का प्रदर्शन होता है और ये कार्यक्रम हमारे नैतिक मूल्यों, जीवन आदर्शों एवं अन्तर्मन की वास्तविकता पर खरे नहीं उतरते हैं। इनसे हमारे सामाजिक, पारिवारिक एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों पर आंच आती है। टी.वी. पर परोसे जा रहे ये हीनस्तरीय कार्यक्रम हमारे समाज को उसी प्रकार कलुषित कर रहे हैं जैसे चांद को दाग।

समयाभाव वाले इस युग में बच्चे उम्र से आगे की उडान भर रहे हैं तो मात्र इसी टी.वी. के कारण। वे उधार की संस्कृति अपना रहे हैं तो मात्र इसी टी.वी. के कारण। इस टी.वी. ने जहां एक ओर बच्चों से उनकी हंसी, उनके खेल, उनका मासूम जीवन छीना है, वहीं दूसरी ओर टी.वी. ने बच्चों से बाल साहित्य भी छीन लिया है और बदले में प्रदान किया है तो मात्र एकाकीपन।

आज बच्चों में पढ़ने की प्रवृत्ति निरंतर कम होती जा रही है। टी.वी. देखने के बाद जो समय बच्चे निकाल पाते हैं, उसमें अध्यापक का खौफ, उन्हें गृह कार्य के लिए अवश्य बाधित करता है। परन्तु बाल साहित्य जो उनके जीवन को दिशा प्रदान करता है, चरित्र को विशिष्ट संज्ञा प्रदान करता है, उसे पढ़ने के लिए उनके पास समयाभाव है। बालकों में से आज मौलिकता समाप्त हो गयी है। उनके स्वयं के विचार, भावनाओं एवं कामनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता का धीरे धीरे ह्रास होता जा रहा है। जिन बच्चों को प्रातःकालीन मधुर बेला में, जब प्रकृति अपने सम्पूर्ण वैभव (सौन्दर्य) पर होती है तब उसकी सुषमा में सैर करने के बजाय टी.वी. के अत्यन्त निकट पाया जाता है, उन बच्चों से क्या हम अपने राष्ट्र के प्रति कुछ आशाएं, अपेक्षाएं रख सकते हैं ?

❑

आर्जव

जैसे गहरे
साफ, चमकदार जल में
और भी
सुन्दर, मनहर
झलक उठते है बादल

वैसे ही
होना निष्कलंक
तरल 'सरल'
प्रतिबिम्बित होते रहें
आत्मीय-बिम्ब ; प्रतिपल।

भारतीय मानस के राजहस
स्वामी विवेकानन्द

✍ कु सीमा आसनानी
X D

श्री रामकृष्ण तथा उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानन्द का भारतीय धरा पर अवतरण, उनकी जीवनी तथा कार्यकलाप, हमारे देश के आध्यात्मिक इतिहास का चरमोत्कर्ष था। ये युग पुरुष भारत मे सहस्त्रो वर्षो से चली आ रही सनातन सत्य तथा अध्यात्मवाद की खोज तथा अनुसधान के चरम विन्दु के रूप मे अवतरित हुए।

स्वामी विवेकानन्द जी ने आगे बढते हुए भारतवासियो के लिए राजनैतिक स्वतत्रता, आर्थिक विकास, सामाजिक चेतना एव चतुर्मुखी सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। भारत के प्राचीन गरिमा व वैभव को आधुनिक युग से श्रृखलाबद्ध करने मे स्वामी विवेकानन्द ने मानो एक सेतु की भूमिका अदा की।

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म 12 जनवरी, 1863 मे, सोमवार, सक्राति के पवित्र पर्व के दिन प्रात 6 बजकर 49 मिनट पर कलकत्ता नगर के सिमिलिया नामक मोहल्ले मे हुआ। ऐसे पुत्ररत्न की प्राप्ति कर माता पिता भाग्यशाली हुए। स्वामी विवेकानन्द जी को एक ऐसे सच्चे गुरु की प्राप्ति हुई। जिन्होने उनके साधारण व्यक्तित्व को दैदीप्यमान रत्न की भाति बना दिया।

स्वामी विवेकानन्द जी का वेदान्त प्रचारक के रूप मे एक विशिष्ट स्थान है। वह आत्म त्याग के सिद्धात के समर्थक थे। वह कहते थे वेदान्त की कवितामयी शैली कितनी छन्दग्राही और वार्पिक है। जिस प्रकार पृथक-पृथक नदियो का उद्गम यद्यपि विभिन्न पर्वतो से होता है। परन्तु सभी की धाराए, टेढे-मेढे या सीधे मार्ग अपनाती हुई अन्तत एक सागर मे विलीन हो जाती है, ठीक उसी प्रकार, विभिन्न धर्म भी पृथक-पृथक आस्थाओ का अनुसरण करने के उपरान्त भी, सीधे या वक्र मार्गो से होते हुए भी अन्तत उसी एक महाशक्ति मे समा जाते है।

स्वामी विवेकानन्द जी का व्यक्तित्व औरो को अपनी ओर आकर्पित करने वाला था। उनके कहे हुए शब्द दिल के तारो को कही न कहीं से तो छू जाते है। उन्होने भारतवासियो को सबोधित करते हुए यह कहा था जैसे - "तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही बन जाते हो, यदि तुम अपने आपको शक्तिशाली मानते हो, तो शक्तिशाली बन जाओगे।" कितना सत्य कहा था - जैसा मनुष्य मन मे अपनी धारणा बनाता है, जेसा ही वह सकल्प करेगा, वैसा ही तो बनेगा। उनके मतानुसार "जो व्यक्ति स्वय पर विश्वास नहीं रखता वह नास्तिक है।" मनुष्य को ईश्वर मे विश्वास न रखने पर ही नास्तिक की सज्ञा दी जाती है, परन्तु उन्होने यह स्पष्ट किया कि जो व्यक्ति स्वय पर

विश्वास नहीं रखता वह किसी पर क्या विश्वास कर सकता है ? उनकी कही हर एक बात सत्य की कसौटी पर खरी उतरती है।

उन्हीं के अनुसार कहा गया यह वाक्य - ''प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है'' कितना मार्मिक है, उन्होंने कहा कि मनुष्य का प्रत्येक मनुष्य से समानता का व्यवहार करना ही उसका पहला धर्म है। अन्य धर्म तो उसके बाद हैं।

उन्होंने कहा कि मनुष्य-मनुष्य पर विश्वास करे, विश्वास एक नाजुक डोर है और कच्चा धागा है जिसे अगर कोई बांधे रख सकता है तो वह विश्वास करने योग्य है।

स्वामी विवेकानन्द जी के गूंजते स्वरों में, यदि कोई ध्यान से सुने, तो कोई बिगुल बजने का आभास होता है। उनके ये स्वर सोई हुई आत्मा को उद्वेलित कर देते हैं। हृदय में सोई हुई शक्तियों में फिर से जान डाल देते हैं।

स्वामी जी के शब्दों में जब तुम अपने अंदर समाहित देवत्व, आत्म बल को पहचान सकोगे और उसका उपयोग करने लगोगे तो तब सब कुछ तुम्हारे लिये सुगम हो जाएगा। अपनी इस चेतना को जगा भारत के कोने-कोने को प्रकाशित करो, फिर देखो प्रत्येक वस्तु तुम्हारे चरणों में होगी। यही आत्मविश्वास अंदर की सोई हुई शक्तियों को जागृत करता है, उन्हें सफलता के कगार पर पहुंचाने में सहायक है और सबसे उत्तम माध्यम भी।

स्वामी जी कहते थे कि जब तक हमें अपने अनुरूप साधन नहीं मिलते, हमें चुप नहीं बैठना है। हमें कांच के बने मोतियों से ही संतुष्ट नहीं होना है, जबकि हमारे सम्मुख अनमोल रत्नों का भंडार लगा है। हमें स्वयं को नूतन सत्यों से परिभाषित करना है।

भारत को लेकर उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात यह भी कही कि किसी भी देश का कोई अपना आदर्श होता है और वही उसके राष्ट्रीय जीवन में आच्छादित रहता है। वही उस देश का मेरूदंड होता है। हमारे देश का आध्यात्मवाद ही हमारा सर्वोच्च आदर्श है। और यदि हम मानव अस्तित्व पर ढकी अंधकार रूपी कालिमा को विलुप्त करना चाहते हैं, तो हमें आध्यात्मिकता का अनुसरण करना होगा, यदि हम इसी को तिलांजलि दे देंगे तो जो हम आगे बढने का सुनहरा स्वप्न बुन रहे हैं वह कभी पूरा न होगा और साथ ही साथ हम विनाश के कगार पर पहुंच जायेंगे।

उन्होंने भारतीयों को यह चेतावनी दी कि ''इस देश को दुर्बल बनाने वाले दुर्बल इंसान नहीं चाहिए। चाहिए तो केवल लोहे के पुट्ठे और फौलाद की नाडियां। दुनिया में कोई पाप है तो वह है दुर्बलता। यदि इस पाप से बचना है तो इसे जहर की तरह फैंक दो। यह सुनकर मन में रोष उत्पन्न होने लगता है।

स्वामी जी भारतीय समाज के प्रति यह कहते हैं कि 'यह भारतीय समाज ही मेरा परिवार है।' और इसे सुदृढ़ बनाना ही भारतवासियों का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है। जिस प्रकार पक्षी का एक पंख से उडना संभव नहीं। उसी प्रकार त्याग और पर-सेवा के आदर्श को अपनाये बिना भारत उन्नति की चोटी को नहीं छू सकता। भारत की प्रगति के लिए राष्ट्रीय आदर्श अत्यन्त आवश्यक हैं।

स्वामीजी का व्यक्तित्व औरों को अपनी ओर आकर्पित करने वाला था। अपने वक्तव्य पर उनका स्वागत जो अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व धर्म

सभा मे हुआ वह इस प्रकार है - शिकागो मे आयोजित विश्वव्यापी सम्मेलन मे जब सभी महान विभूतिया अपने विचार प्रस्तुत कर चुकी, तो स्वामी विवेकानन्द जी के आग्रह पर उन्हे बोलने का अवसर प्रदान किया गया। और अपने वक्तव्य की शुरुआत मे ही ये कहकर -

''अमेरिका-निवासी भाइयो और बहनो''। जिस सौहार्द और स्नेह के साथ यह शब्द उन्होंने कहे, ऐसे शब्द सुनकर सभा गृह मे बैठे हजारो व्यक्तियो को आकर्षण के सागर मे निमग्न कर दिया। जैसे एक झझावात ने पूरी सभा को अपने मे समेट लिया। स्वामी जी के हृदयस्पर्शी सबोधन का स्वागत श्रोताओ ने तालियो की गडगडाहट के साथ किया। ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति ने सभी को अपना मित्र बनाने के लिए लालायित कर दिया।

ऐसे थे स्वामी विवेकानन्द जी। उनकी वाणी मे तेज था, जो श्रोता समाज का चित्र आलोकित कर देता था। उनके आश्रय मे लोग स्वय को ऐसा महसूस कर देते थे जैसे वे हर्ष के सागर मे गोते लगा रहे हों।

वह कहते थे कि दुनिया मे कोई कार्य असभव नहीं। इसीलिए हिन्दी शब्दकोष मे से असभव शब्द को ही निकाल देना चाहिए।

''हमे अपने अध्यात्म ज्ञान मे पूरा विश्वास बनाये रखना चाहिए, यही हमारा स्वामी जी द्वारा दिया गया सदेश है। आज चाहे स्वामी जी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके विचार हम सभी के लिए निरन्तर प्रेरणा-स्त्रोत बने रहेगे।''

❑

नत्वाहं कामये राज्य
न स्वर्गम् न पुनर्भवम्
कामये दुख तप्ताना
प्राणिनामार्ति नाशनम्

न तो मुझे राज्य पाने की इच्छा है और न ही स्वर्ग और पुनर्जन्म की आकाक्षा। मै तो प्राणिमात्र के दु खो को दूर करता हुआ जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ।

- स्वामी विवेकानन्द

भारतीय प्रजातन्त्र के पचास वर्ष

✍ **श्रीमती सुलक्षणा जैन**
एम. ए., बी. टी.
व्याख्याता

'आजादी के बाद प्रजातन्त्र शासन की अर्द्ध-शताब्दी के कार्यो का जब हम सिंहावलोकन करते हैं तो हमारे हाथ लगती है-गहरी निराशा की भावना, जनाकांक्षाओं के प्रति कुठाराघात और भविष्य के प्रति अनिश्चितता। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वार्थ व ईर्ष्या की भावना को त्यागकर सार्वजनिक कल्याण को अधिक महत्त्व दें तो हमारा प्रजातन्त्र सफल हो सकता है।'

- सम्पादिका

सभ्यता एक जीवन पद्धति है, मानवीय आत्मा की एक हलचल । इसका तत्त्व किसी जाति की प्राणी शास्त्रीय एकता में या राजनीतिक और आर्थिक प्रबन्धों में नहीं है, अपितु उन मान्यताओं में है जो उन प्रबन्धों को रचती है और बनाये रखती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने प्रजातंत्र को अपनाया क्योंकि प्रजातंत्र सरकार या शासन का भेद नहीं है, यह राज्य का एक प्रकार भी है, समाज की एक व्यवस्था है और जीवन जीने की शैली है, जिसमें प्रत्येक का भाग होता है। मैक्सी लिखते हैं, ''प्रजातंत्र एक राजनीतिक सिद्धांत, एक शासन पद्धति या एक सामाजिक व्यवस्था मात्र नही है, यह एक ऐसी जीवन पद्धति की खोज है, जिसमें कम से कम बल प्रयोग या दवाव से व्यक्ति की स्वतः प्रेरित स्वतंत्र बुद्धि और उसके कार्यकलाप का मेल वैठाया जा सके और विश्वास यह है कि ऐसी ही जीवन पद्धति समस्त मानव जाति के लिये आदर्श पद्धति होगी. जो मनुष्य की प्रकृति के साथ सर्वाधिक सामंजस्य स्थापित करेगी।''

व्यक्तित्व की महत्ता प्रजातंत्र का सार तत्त्व है, केवल इसी व्यवस्था में ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का आश्वासन है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति और अभिव्यक्ति के अनुकूल अवसर मिल सकें तथा जो सर्वोत्तम है उसे खोजा जा सके। जनतंत्रीय जीवन ही सच्चा धार्मिक जीवन है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह संभव है कि वह अपनी शक्ति से अपने लिये सर्वोच्च कल्याण की सिद्धि कर सके। यहां दरिद्रतम व्यक्ति को अपनी इच्छा व्यक्त करने की उतनी ही स्वतंत्रता है जितनी धनी से धनी व्यक्ति को, क्योंकि सर्वोत्तम सरकार वह है जो यथा संभव सर्वोत्तम नागरिकों का निर्माण करती है, यह केवल इसी व्यवस्था में संभव है, क्योंकि इसमें प्रत्येक का भाग होता है, किसी को शिकायत नहीं कि उसे अपनी वात कहने का अवसर नहीं मिला।

एक अच्छे शासन की आवश्यकता यह है कि विशेषज्ञो और सर्वसाधारण नागरिको के बीच सहयोग हो, एक व्यावहारिक समझौता हो और प्रजातत्र इस आवश्यकता को सर्वोत्तम ढग से पूरा करता है, इसमे सामान्य व्यक्ति को सार्वजनिक समस्याओ के हल ढूढने मे सरकार से सहयोग करने के लिये निमत्रित किया जाता है। सरकार और जनता के बीच एक सहानुभूति पूर्ण सबध स्थापित हो जाता है। व्यक्ति एक निष्क्रिय स्वीकृति देने वाले की अपेक्षा एक सहयोगी बन जाता है। यहा चेतन और उपचेतन मन की एकता है। इतना ही नहीं इस शासन व्यवस्था मे उच्चकोटि की मनोवृत्ति उत्पन्न होती है।

प्रजातत्र जन शिक्षा का एक व्यापक प्रयोग है, समस्याओ का सभी दृष्टिकोणो से विवेचन किया जाता है, व्यक्तिगत बाते सार्वजनिक हो जाती हैं। सरकार सबधी समस्याओ के विषय मे जनता का ज्ञान बढने लगता है। सभी के दृष्टिकोण और विचार परिवर्तित, स्पष्ट और सशुद्ध हो जाते हे, अन्त मे एक सामान्य इच्छा तक पहुचने मे समर्थ होते है, जैसा कि बर्न्स लिखते है, "सभी प्रकार का शासन शिक्षा की एक पद्धति है, पर आत्म शिक्षा ही सर्वोत्तम शिक्षा है, इसलिये सर्वोत्तम शासन आत्म शासन है जो प्रजातत्र है। केवल इसी व्यवस्था मे सभी को शिष्ट और सद्वृत्ति सम्पन्न बनाने का प्रयास किया जाता है। इसमे राष्ट्रीय चरित्र का विकास होता है, क्योकि किसी भी सरकार की कुशलता की कसौटी शाति और व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि या न्याय ही नही है, यह कसौटी है, राज्य व्यवस्था को स्थिर रखने वाले नागरिको का चरित्र।

समाज के उद्योग, आत्म निर्भरता और साहस को दृढ बनाने के साथ साथ प्रतिष्ठा और आत्मसिद्धि को बल केवल इसी व्यवस्था मे मिलता है। व्यावहारिक दृष्टि से केवल इसी तत्र मे क्राति से सुरक्षा मिलती है, कोई गहरा सामाजिक विभेद न होने के कारण प्रतिभा के लिये साधारणत खुला रास्ता विकास करने के लिये मिलता है। सामाजिक असमानता और सामाजिक असतोष क्राति का कारण बनते है, लेकिन गार्नर के अनुसार "लोक शासितो की अनुमति और समानता के सिद्धात पर आधारित होने के कारण प्रजातत्र क्रातियो से अधिक मुक्त रहता है।"

राजनैतिक प्रश्नो की ओर से सतुष्ट ओर जागरूक नागरिको मे देश की समस्याओ के प्रति सच्ची अभिरुचि देश प्रेम को बढाती है क्योकि वह अपने को देश का एक अग और देश को अपना मानता है, देश पर अगर कोई विपत्ति आये तो अपना सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर रहता है। केवल प्रजातत्र मे ही व्यवस्था और प्रगति दोनो साथ साथ आसानी से चल सकती है। सामान्य इच्छा का सर्वोत्तम प्रकाशन केवल सामान्य रूप से जनतत्रात्मक सगठन मे ही होता है। आम चुनाव, सार्वजनिक नियत्रण और सार्वजनिक उत्तरदायित्व से एक उच्चकोटि की कार्य कुशलता जनतत्र मे ही सभव है। इन गुणो को देखकर ऐसा आभास होता है, मानो इस व्यवस्था को अपनाकर हम पृथ्वी पर राम राज्य की स्थापना करने मे सक्षम होगे।

भारत मे प्रजातत्रीय व्यवस्था के पचास वर्षो पश्चात भी हमारी इच्छाओ, कामनाओ और आकाक्षाओ को जो हमने इस व्यवस्था द्वारा पूर्ण करने की आशा की थी, धरी की धरी रह गई है। आज प्रजातत्र पर अनेक दिशाओ से प्रहार हो रहे है आज वोटो की गणना होती है, परख नही। विशेष ज्ञान, विवेकपूर्ण निर्णय और कुशल शिक्षण की बागडोर आज अनजाने, अशिक्षित और अयोग्य नेताओ के हाथो मे है क्योकि हमारे यहा एम एल ए या एम पी बनने

के लिये किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं। इस तरह चंचल बुद्धि, उत्तरदायित्वहीन और भावावेश में *बह जाने वाले राजनेताओं के हाथों में जब सत्ता आयेगी* तो इसका दुष्परिणाम जनता को ही भुगतना पडता है। चूंकि आज के नेता एक अच्छे मनोवैज्ञानिक, समझौता कर सकने वाला तथा आवश्यकता पड़ने पर स्वयं अपने सिद्धांतों को नीचे गिरा सकता है, क्योंकि अधिकार शक्ति कुछ ऐसे अवसरवादी, विवेक शून्य लोगों के हाथ में चली जाती है, जो लम्बे-चौडे वादों और झूठे तर्कों से जनता को बहकाने और उनका शोषण करने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं।

असत्य भाषण की प्रवृत्ति इतनी अधिक पाई जाती है कि सत्य और न्याय का ध्यान ही नही रखा जाता केवल एक प्रधान उद्देश्य आज उनके सामने है, वह है वोट बैंक प्राप्त करना, इसके लिये साम, दाम, दंड यानि सभी सत्ता प्राप्त करने के लिये उपर्युक्त माने जाते हैं। आज भारत में चरित्र के खोखलेपन और लूट-खसोट की प्रथा का उदय हो चुका है, इसके उदाहरण हैं - हवाला कांड, यूरिया कांड, चीनी घोटाला, पशु आहार घोटाला न जाने अभी और कितने घोटाले हो चुके हैं, जिन पर अभी पर्दा ही पडा हुआ है। ऐसे ऐसे कारनामे उन राजनीतिज्ञों के हैं जो सत्ता के ऊंचे ऊंचे पदों पर आसीन हैं। आज निर्वाचकों, प्रशासकीय अधिकारियों और न्यायाधिकारियों ने अवैध धन के लोभ के सामने सिर झुका दिया है क्योंकि गैर कानूनी आमदनी के अवसर बढ गये है और इन अवसरों का लाभ उठाने वालों की संख्या भी बढ गई है। आज राजनीति को राजनेताओं ने लाभदायक व्यवसाय बना लिया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के वातावरण में और आज के वातावरण में आकाश-पाताल का अंतर है। *विश्वास नहीं होता है कि क्या यह वही भारतभूमि है* जिसे स्वतंत्रता दिलाने में देशवासियों ने अपना तन, मन और धन न्यौछावर कर दिया था। व्यक्तिगत स्वार्थ उनको लेश मात्र भी छू नहीं पाया था। करो या मरो के उद्घोष से अभिभूत हर भारतीय बलिदान के लिये तत्पर केवल एक ही लक्ष लिये आगे बढ रहा था, वह थी भारत की स्वतंत्रता, न जाने कितनी माताओं ने अपने बेटों की आहुति दी, कितनी पत्नियों की मांग सूनी हुई और कितने बच्चे अनाथ हुये, पर ध्येय में सफलता पाकर ही संतोष लिया।

आज बलिदानों से पूर्ण प्राप्त इस प्रजातंत्र को बनाये रखने के लिये परिस्थितियों में इतना बदलाव आ गया है कि विश्वास ही नहीं होता कि यह वही भारत है जो पचास वर्ष पूर्व था शायद हमारे पूर्वज अगर आज इस स्थिति को देखें तो भौचक्के रह जायें। आवश्यकता है आज उन सुपुत्रों की जो अपने आंशिक हितों की अपेक्षा सार्वजनिक कल्याण को अधिक महत्व दे भिन्न भिन्न वर्गो में ईर्ष्या की भावना के स्थान पर परस्पर सहानुभूति को प्रोत्साहन दें, भावी कल्याण के लिए वर्तमान कठिनाइयों को दूरदर्शिता और साहस के साथ सहन करें। इस प्रजातंत्र को बनाये रखने के लिये शक्ति, यश, सबलता, सम्पत्ति और प्रतिष्ठा नहीं, अपितु नैतिक गुणों की वृद्धि, सुरुचि के विकास, जीने की कला में निपुणता और मानव मन की स्वतंत्र गतिविधियों की आवश्यकता है, जिसकी जडों को ववंडर और तूफान भी न हिला सके तभी हमारा प्रजातंत्र अक्षुण वना रह सकता है।

❑

विभिन्न प्रकार के विटामिन उनके स्रोत, उनकी कमी तथा अधिकता से होने वाले रोग निम्नलिखित है।

विटामिन ए - इसका रसायनिक नाम रेटिनाल है। यह दूध, घी, मक्खन, अडो के पीतक एव शार्क मछलियो के लीवर ऑयल मे प्रचुर मात्रा मे मिलता है। इसका कार्य त्वचा, आख तथा श्लेष्मा झिल्ली की एपीथिलियमी कोशिकाओ का पोषण करना है।

विटामिन ए की कमी से शरीर की समुचित वृद्धि नही होनी है। इसके अलावा किरेटिनिकरण के कारण त्वचा शुष्क हो जाती है। जिरोपथेल्मिया नामक रोग हो जाता है। रतोधी नामक रोग हो जाता है। इसकी कमी से वृषण व अण्डाशय का अपघटन होने लगता है तथा बाल झडने लगते है।

इसका अधिक सेवन करने से सरदर्द होने लगता है तथा होठ सूखने लगते है। फिर त्वचा मे सूखापन, बालो का झडना, झुझलाहट आदि होने लगते है। हाथ पैरो मे सूजन आ जाती है। यकृत का आकार बढ जाता है व कई बार 'यकृत सिरोसिस'' नामक रोग हो जाता है।

विटामिन बी काम्पलैक्स - इस समूह के विटामिन निम्नलिखित हे जैसे - बी 1, बी 2, बी 3, बी 5, बी 6, बी 12 आदि

विटामिन बी 1 - इसका रसायनिक नाम थायमीन है। यह बीजो छिलको सहित धान्या, जई, सेम, टमाटर, दूध, अडो और सूअर के मास मे प्रचुरता से मिलती है। इसका कार्य शरीर का समुचित विकास एव तत्रिका तत्र का सचालन करना हे।

इसकी कमी से व्यक्ति की बुद्धि मद हो जाती है। मुख मे छाले हो जाते है, नेत्र ज्योति मद हो जाती है। शारीरिक वृद्धि रुक जाती है तथा बेरी बेरी नमक रोग हो जाता है।

विटामिन बी 2 - इसका रसायनिक नाम राइबोफ्लेविन है। यह दूध, अडा, गेहू, चना, दालो, पालक, हरी सब्जी, गोश्त आदि से प्राप्त होता है।

इसका कार्य कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन के उपापचय का नियमन करना तथा ऊतकीय श्वसन करना है।

इसकी कमी से जीभ पर सूजन आ जाती है, बाल झडने लगते है तथा विकृत वृद्धि होने लगती है।

विटामिन बी 3 - इसका रसायनिक नाम पेटोथेनिक अम्ल है। यह दूध, अडा, हरी सब्जिया, मोटा अनाज, मास आदि मे प्रचुर मात्रा मे पाया जाता है।

यह विटामिन वसीय अम्ल व हीमोग्लोबिन निमाण मे सहायता करता है।

इसकी कमी से भूख कम लगती है। तथा रक्त सबधी विकार आ जाते है।

विटामिन बी 5 - इसका रसायनिक नाम निकोटिनिक अम्ल है। यह हरी सब्जियो, सोयाबीन, मगफली, अकुरित गेहू, मास आदि मे प्रचुर मात्रा मे पाया जाता है। यह कार्बोहाइड्रेट व अमीनो अम्ल के आक्सीकरण के लिये आवश्यक है।

इसकी कमी से व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है। त्वचा शुष्क हो जाती है तथा अनिद्रा रोग भी हो सकता है।

विटामिन बी 6 - इसका रसायनिक नाम पिरोडाक्सिन है। यह अकुरित अनाज फल, मास आदि मे पाया जाता है।

यह अमीनो अम्ल व वसा अम्लो के उपापचय मे सहायक है।

इसकी कमी से त्वचा सबधी विकार होते हे। जीभ लाल हो जाती हे। स्वभाव चिडचिडा हो जाता है।

विटामिन बी 12 - इसका रसायनिक नाम

साइनोकोविलामिन है। यह यकृत, अंडा, दूध, पनीर आदि में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

इसका कार्य लाल रुधिर कणिकाओं का निर्माण करना है। इसकी कमी से एनिमिया रोग हो जाता है। लाल रुधिर कणिकाओं का निर्माण बन्द हो जाता है या कम संख्या में बनने लगती हैं। विटामिन बी के अति सेवन से आंतों में अल्सर हो सकता है। रक्तचाप घटने लगता है। बाल झडने लगते हैं। व दिल की धडकनें अनियमित होने लगती हैं।

विटामिन सी - इसका रसायनिक नाम एस्कार्बिक अम्ल है। यह रसदार फलों, नीबू, संतरा, टमाटर, आंवला आदि में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

इसका कार्य रुधिर कणिकाओं के निर्माण में सहायता करना तथा दांत और मसूडों को स्वस्थ रखना है। इसकी कमी से स्कर्वी नामक रोग हो जाता है तथा मसूडों से रक्त बहने लगता है। दांत हिलने लगते हैं।

विटामिन सी के अति सेवन का प्रभाव पथरी से पीड़ित व्यक्तियों पर अधिक पडता है। अत्यधिक मात्रा में विटामिन सी के सेवन से गर्भस्थ शिशु में विकृतियां पैदा हो सकती हैं। पथरी से पीड़ित व्यक्तियों या ऐसे परिवार से संबंध रखने वाले व्यक्तियों को पथरी हो सकती है।

विटामिन डी - इसका रसायनिक नाम केल्सीफेरोल है। यह दूध, मांस, मछली, तेल, मक्खन, अंडा, यकृत आदि में प्रचुर मात्रा मे पाया जाता है।

यह शारीरिक वृद्धि हड्डियों और दांतों के निर्माण में सहायक है। इसकी कमी से रिकेट्स रोग हो जाता है। हड्डियों में कोमलता आ जाती है तथा दांतो की वृद्धि में रुकावट आ जाती है।

विटामिन डी की अधिक मात्रा से रोग की स्थिति घातक हो सकती है। व्यक्ति अपने आपको थका थका व कमजोर महसूस करने लगता है। व्यक्ति के वजन में कमी होने लगती है।

विटामिन ई - इसका रसायनिक नाम टोकोफेरोल है। यह हरी सब्जियों, सोयाबीन, बिनौला, अंकुरित अनाज आदि में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

इसका कार्य जनन में सहायता करना तथा कंकाल पेशियों के विकास में सहायक हैं।

इसकी कमी से जनन क्षमता में कमी आती है। तथा पेशियां कमजोर हो जाती हैं।

इसको अधिक मात्रा में लेने से खून का थक्का बनने की क्रिया कम हो जाती है। जिससे व्यक्ति के जरा भी चोट लगने से अधिक रक्त बह जाता है।

विटामिन के - इसका रसायनिक नाम नेफ्थोक्विनोन फाइटोक्विनोन है। इसका मुख्य स्रोत सोयाबीन, टमाटर, हरी सब्जियां आदि हैं।

इसका कार्य यकृत के कार्य में सहायता करना तथा रुधिर का थक्का बनाने मे सहायता करना है। इसकी कमी से रुधिर अविरल बहने लगता है तथा घाव आसानी से नही भरते है।

विटामिन के की मात्रा शरीर में बढ जाने पर एनिमिया की स्थिति पैदा हो सकती है। यदि माता में यह स्थिति पैदा हो तो नवजात शिशु को पीलिया हो सकता है।

अत· सभी विटामिन्स निश्चित मात्रा में ही लिये जाने चाहिये। कुछ लोग भोजन की तरह ही नियमित रूप से विटामिन की गोलियां लेते रहते है वे यह सोचते हैं कि इससे उनका शरीर स्वस्थ व निरोग रहेगा परन्तु विटामिन की कमी या अधिकता शरीर के लिये घातक व खतरनांक सावित हो सकती है।

❑

भारत के पठार

✍ कु ज्योति चन्दनानी
X-D

एशिया के दक्षिण मे भारत एक विशाल एव महान राष्ट्र है। इसने अति प्राचीन काल से ही विश्व का नेतृत्व किया है तथा विश्व को शाति, सह-अस्तित्व एव अहिसा का पाठ पढाया है। इस देश का नाम देवी शकुन्तला के परम प्रतापी पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से ही प्रारम्भ मे भरत खड तथा बाद मे भारत बना है। समय समय पर जगत का आदि गुर भारत विभिन्न नामो से जाना जाता रहा है। जैसे - आर्यावर्त, इन्दु, सिन्धु, हिन्दुस्तान, इण्डिया आदि। आज से लगभग डेढ दो हजार वर्ष पूर्व भारत का विस्तार बहुत अधिक था। हिन्दचीन, मलाय, स्याम, इडोनेशिया, श्रीलका आदि भारत के ही भाग थे। पाकिस्तान, बागलादेश तथा बर्मा तो इसी बीसवीं शताब्दी मे भारत से अलग हुए है। आज इसका आकार पिछले डेढ-दो हजार वर्ष पूर्व के आकार से बहुत छोटा हो गया है।

भारत की सीमाए प्राकृतिक एव कृत्रिम दोनो प्रकार की है। भारत की प्राकृतिक सीमाए उत्तर मे हिमालय श्रेणी, दक्षिण, पश्चिम मे अरब सागर और दक्षिण-पूर्व मे बगाल की खाडी तथा बिल्कुल दक्षिण मे हिन्द महासागर द्वारा निर्मित हे। भारत की कृत्रिम सीमाए पाकिस्तान एव बागलादेश के मध्य है जो खुली है और जिन पर प्रकृति द्वारा कोई रोक नहीं लगी हुई है। ये भारत विभाजन के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा कृत्रिम रूप से निर्धारित की गई है।

भारत उन भाग्यशाली देशो मे से है, जिन्हे प्राकृतिक सम्पदा बहुत अधिक मात्रा मे प्रकृति से उपहार स्वरूप प्राप्त हुई है। प्राकृतिक विभाग भूमि का वह क्षेत्र है जो मानवीय जीवन को प्रभावित करने वाली दशाओ के सबध मे एक घटक होता है। प्रत्येक प्राकृतिक विभाग जलवायु, वनस्पति ओर जीवन के सामान्य तरीको के समान होता है।

भारत मे विद्यमान प्राकृतिक भिन्नता भारत की अमूल्य निधि है। इस भिन्नता का वर्णन वेद, उपनिषद व पुराणो मे अलग अलग सदर्भो व रूप मे होता है। भारत मुख्य रूप से पाच प्राकृतिक भागो मे विभक्त है–

(1) उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र

(2) गगा सिन्धु का बडा मैदान

(3) थार का मरूस्थल

(4) दक्षिणी पठारी प्रदेश तथा

(5) तटीय मैदान

भारत एक विशाल देश है। जहा भारत मे नदिया, महासागर, पर्वत हैं वही भारत मे अनेक पठार हैं। यहा मै विशेष रूप से भारत के पठारो का विस्तार से परिचय देना चाहूगी। पठार वह उथित भूमि होती है,

जिसका पृष्ठ लगभग समतल होता है तथा जिसके एक या अधिक किनारों का ढाल कभी कभी बिल्कुल खडा होता है। भारत के प्रमुख पठार निम्नलिखित हैं -

1. प्रायद्वीपीय पठार - भारत का दक्षिणी भाग पठारी है जिसे प्रायद्वीपीय पठार कहते हैं। भारत का यह पठार विश्व का प्राचीनतम भू-भाग है। यह सतलज और गंगा के दक्षिण में विस्तृत है और तीन ओर से सागर से घिरा है। यह त्रिभुजाकार में राजस्थान से कुमारी अन्तरीप तक 1700 कि.मी. लम्बा और गुजरात से पश्चिम बंगाल तक लगभग 1400 कि.मी. चौडा है यह उत्तर में चौडा और दक्षिण में संकरा है। इस पठारी भाग के अन्तर्गत दक्षिणी पूर्वी राजस्थान, मध्यप्रदेश, दक्षिणी उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, उडीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, दक्षिणी बिहार, पश्चिमी आन्ध्रप्रदेश आदि राज्य सम्मिलित हैं। इसके बीच-बीच में अरावली, विन्ध्याचल और सतपुडा की पहाड़ियां, पश्चिम में पश्चिमी घाट और पूर्व में पूर्वी घाट और दक्षिण में नीलगिरि पर्वत स्थित है। यह प्रायद्वीप प्राचीन भूखंड गांडावाना लैंड का भाग है, और प्राचीनतम कठोर शैलों से निर्मित है, जिसका क्षरण मौसमीकरण की क्रियाओं द्वारा होता रहा है। इसके अन्तर्गत अनेक छोटे छोटे पठार विभाजित हो गए है। जिनमें मुख्य उत्तर में बिहार में रांची जिले के समीपवर्ती भाग में छोटा नागपुर का पठार और दक्षिण में दक्षिण का पठार मुख्य है। इस प्रायद्वीपीय पठार का धरातल बहुत कम चपटा है।

2. छोटा नागपुर का पठार - यह पठार घाटियों और पहाडियों का क्षेत्र है। जो बिहार के दक्षिण भाग में लगभग आधे क्षेत्र में विस्तृत है। इसका विस्तार पूर्वी व पश्चिमी सिंह भूमि, रांची, पलामू, हजारी बाग, धनबाद, गिरीडीह, गोडडा, दुमका, सहाबगंज, देवधर और दक्षिणी गया जिलों में हैं। यहां अधिकांश खेदार चट्टानें हैं। पश्चिम में यह विच्छादित पठार है। लेकिन इसकी चोटी सपाट है। इस भाग की औसतन ऊंचाई 1000 मीटर से अधिक है। इसे पाट्स कहते हैं। दामोदर घाटी के उत्तरी भाग में अनेक छोटे छोटे पठार तथा पर्वत श्रेणियां हैं। दक्षिण पूर्वी भाग में भी अनेक छोटी छोटी पहाडियां मिलती हैं। बिहार की सर्वाधिक ऊंची चोटी शंक्वाकार ग्रेनाइट पारसनाथ की चोटी है जो 1305 मीटर से ऊंची है।

3. रांची का पठार - यह छोटा नागपुर के पठार का एक भाग है और विच्छिन्न पठार के रूप में रांची जिले में विस्तृत है। यहां ग्रेनाइट और नीस की चट्टानें मिलती हैं। रांची नगर समुद्रतल से 610 मीटर की ऊंचाई पर विस्तृत हैं। इसे बागरु का पठार भी कहते हैं। इस भाग में छोटी छोटी पहाडियां है। इसकी सर्वाधिक ऊंचाई लौहारडागा के समीप 1058 मीटर है। इन समीपवर्ती भागों में दूधापट, धुलनापट, गठपत पठार आदि है।

4. हजारीबाग का पठार - यह भी छोटे नागपुर के पठार का ही एक भाग है। इसकी औसत ऊंचाई 390 मीटर है। इस भाग में पहाडियां दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर विस्तृत हैं। पूर्वी भाग में प्रायः समप्राय भूमि का मैदान है और उत्तरी भाग में कटी-फटी पहाडियां हैं। यहां कोयला और अभ्रक उत्खनित होता है।

5. कोडरमा का पठार - यह भी छोटा नागपुर ५ हजारी बाग पठार का ही एक अंग है। इसकी औसत ऊंचाई 760 मीटर है। यहां चूना पत्थर तथा वालुका पत्थर की शैले मिलती हैं। इस पठार पर अभ्रक की

अनेक खाने हैं।

6 मलावा का पठार - प्रायद्वीपीय पठार का ही एक भाग मध्य प्रदेश के पश्चिम भाग मे स्थित है। इसे मालवा का पठार कहते है। इसकी सरचना दकन लावा पठार जैसी है। यह विन्ध्याचल का उत्तरी-पश्चिमी भाग है। इसकी ओसत ऊचाई 900 से 1000 मीटर तक है। यह पठार लावा से निर्मित काली मिट्टी का समप्राय मैदान बन गया है। यहा उर्मिल मैदान मिलते है। जिनमे कही कहीं चपटी पहाडिया स्थित हैं। इसका ढाल उत्तर की ओर तीव्र है। इस पर बेतवा, पार्वती, काली, सिन्धु, माही तथा चम्बल नदिया बहती हैं। यहा कपास, मूगफली तथा सोयाबीन की खेती बहुत होती है।

7 बुन्देलखड का पठार - मालवा के पठार के पूव मे बुन्देलखड का पठार स्थित है। इसका विस्तार 2600 वर्ग कि मी क्षेत्र मे हे। इसकी उत्तरी सीमा गगा-यमुना तथा उसकी सहायक नदियो की कॉप मिट्टी से बनी है। इसका ढाल दक्षिण मे उत्तर की ओर है। महादेव की पहाडियो से इसकी दक्षिणी सीमा अवरुद्ध हो चुकी है।

8 बघेलखड का पठार - बुन्देलखड के पठार के पूर्व मे बघेलखड का पठार विस्तृत है। यह पठार बुदेलखड के पठार से भूगर्भिक रचना के आधार पर पृथक किया जा सकता है। सोन नदी इसके मध्य से बहती है। इसका ढाल, उत्तर पूर्व की ओर है। इस भाग की रचना मे विन्धयन क्रम की चट्टाने मुख्य स्थान रखती हैं। इसमे चिकनी मिट्टी युक्त शेल, चूने के पत्थर, बालुआ पत्थर एव क्वार्टजाइट मुख्य स्थान रखते है।

9 रीवा-पन्ना का पठार - रीवा पन्ना का पठार मध्य प्रदेश के रीवा, पन्ना, सतना तथा दमोह जिलो मे विस्तृत है। इसे विन्धयन कगार भी कहते है। इस पठार की औसत ऊचाई 350 मीटर है। लेकिन कुछ चोटिया 640 मीटर से 755 मीटर ऊची हैं। इस पठार का निर्माण आद्य महाकल्प की कडप्पा एव विन्धयन शैलो से हुआ है। इस क्षेत्र मे अत्यन्त नूतन एव नूतन निक्षेप भी है। इसमे चूने का पत्थर, कुछ हार्नस्टोन, बालुका पत्थर, हेमेटाइट तथा क्वार्टजाइट परते मिलती हैं। पन्ना मे इस समूह की शैलो मे विद्यमान ज्वालामुखी विभेदो मे ही हीरा मिलता है।

10 हड़ोती का पठार - मालवा के पठार के उत्तर-पश्चिम मे हडोती का पठार स्थित है। इसमे ऊपरमाला का पठार और मेवाड का पठार भी शामिल है। राजनीतिक दृष्टि से यह राजस्थान के झालावाड से बूदी और कोटा, चित्तौडगढ, भीलवाडा और बासवाडा के कुछ भागो मे विस्तृत है। यह पठारी भाग आगे चलकर मालवा के पठार से मिल जाता है। इसे दक्षिणी पूर्वी राजस्थान का पठार भी कहते है।

11 भोराट का पठार - राजस्थान मे उदयपुर जिले के उत्तर पश्चिम मे कुम्भलगढ और गोमुन्दा के मध्य एक पठार स्थित है। इसे भोराट का पठार कहते हे। यह 300 मीटर से ऊचा है। कुछ चोटिया तो 1300 मीटर ऊची हैं। भोराट पठार और इसकी समीपवर्ती कटके सश्लिष्ठ गाठ जैसा रूप धारण करती है। जहा से कई पर्वत स्कन्द और वक्र कटके सभी दिशा मे विस्तृत है। भोराट के पठार से उत्तर पूर्व की ओर अरावली श्रृखला उच्च मैदानो के साथ सूक्ष्म रूप से मिल जाती है और उत्तर मे यह धीरे धीरे अपनी चौड़ाई खोकर टोडगढ के समीप मेरवाड पहाड़ियो के नाम से जानी जाती है।

जन्मते हैं योगी ऐसे

✍ श्रीमती शशि शर्मा
एम ए , बी एड , डिप्लोमा आर्ट

रत्न से एक रत्न-राशि विलग होकर खो गई,
धवल ज्योति, परम ज्योति मे लय हो गई ।
तीन वर्षों की थी अटल वह साधना ,
फिर चल दिये थे प्राण पछी उड़ गगन मे ।
जव सुधारक नाम पाकर,
मर करके भी जो जी गये ।
स्व समर्पित निष्काम कर्मी,
दीनो के सिरमौर यनकर जो जी गए ।
रो उठे थे देखकर,
नारी हृदय की वेदना को,
विकल मानस छटपटाया,
विकलागो की वेदना पर,
ले लिया था प्रण उसी दिन,
नारी के उत्थान का ।
शक्तिशाली हाथ वनकर,
साथ दो गसे दलितो के वे,
अशावतार इव धर्मस्य,
जन-जन के प्राणधार वनकर जो जिये,
निरभिलाषी, विरत सुख,
तल्लीन सेवा भाव मे,
जुट गए जन-जन की सेवा मे,
एकजुट प्रयास से ।
मनुज सस्कृति मे,
कभी मरता न ऐसा व्यक्ति है,
वदलते सक्रान्त मूल्यो से,
जन्मते है योगी ऐसे ।

मानवीय प्रदूषण

✍ श्रीमती सुधा शुक्ला
एम. ए., एम. एड.
क. व्याख्याता

इस तिमिर के घोर भौतिकवादी अंधकार में कहीं तो कोई दीपशिखा दिखाई दे! जहां एक ओर पूरा विश्व वायु प्रदूषण के आत्मघाती खतरे से सामना करने को तत्पर हो रहा है। वहीं इससे अधिक भयावह, जिसके अस्तित्व के लिये विश्व एवं जगत की समस्त मशीनरी व्यवस्था में जुटी हुई है, वह है "मानवीय प्रदूषण"। ज्यों ज्यों अति आधुनिकता की दौड में विज्ञान में मानव के सुख सुविधा के लिये आकर्षक संसाधन जुटाये एवं मानव अति पूर्व ऐतिहासिक पुष्पक विमान की गगनभेदी संस्मरण को पुनः स्मरण कर सका, ऐसा अवसर जुटाया कि "मानव" अपने अस्तित्व के हाशिये पर आ खड़ा हुआ है।

अत्याधुनिकता का प्रतीक अमेरिका जो वर्तमान में सुखसम्पन्नता का दिवा स्वप्न है, सारा चकाचौंध उसके इर्द गिर्द घूम रहा है, पूरे विश्व की आर्थिक दृष्टि उसकी मिजाजपुर्सी में लगी हुई है- वहां हुए अनुसंधान में यह निर्णय सामने आया है कि वहां क्वीटल्स में "नींद की गोलियों" का सेवन निद्रादेवी की गोद में जाने हेतु करना पडता है। सामाजिक व्यवस्था में दरार पड गई है, पति-पत्नी के तलाक आम बात है। मानवीय गुणों की श्रृंखला झंकृत हो गयी है। उसक असर धीमे जहर की तरह हमारे सांस्कृतिक विरासत में ओजोन पर्त पर छिद्र कर चुका है। भारतवर्ष जो पूरे विश्व के लिये आध्यात्मिक गुरु अधिकृत हुआ, वही आज मानवीय गुणों के ह्रास के पगार पर खड़ा हो गया है।

आर्थिक उदारवादी नीतियों के अन्तर्गत मल्टीनेशनल का जो "पैकेज" हमारे देश में आ रहा है वह हमारी आध्यात्मिक मूल्यों को तो चरमरा देगा ही, वहीं सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण को भयावह स्थिति की ओर ले जा सकता है। अति भौतिकता की चकाचौंध में पहले ही हमारा ससम्पन्न वर्ग निराशा, कुंठा, तनाव से ग्रस्त है वहीं अब मध्यम श्रेणी परिवारों ने विश्व केबल एवं दूरदर्शन ने अपने जहर की दखल प्रारम्भ कर दी है। इनमें प्रदर्शित कार्यक्रम जब हम उम्र लोगों को भ्रमित कर रहे हैं तो युवा दिलों पर निश्चित रूप से "साइकोसिस फीयर" एवं स्वप्निल इन्द्रियों सुखों की उड़ान भरने को मजबूर कर रहा है। भय एवं संत्रास का प्रदूषण स्वर्णिम भविष्य की योजनाओं को किस तरह मानवीय सद्गुणों को झकझोर रहा है इसकी कल्पना से ही सिरहन पैदा होती है। करुणा, मुदिता, दया, सहानुभूति, ईमानदारी का जहां वच्चे को लोरियां सुनाकर घर के वृद्धजन घूंटी पिलाते नहीं थकते थे, वहीं इसकी सार्थकता समाज में देखकर "मोडरेट" माता पिता अपने बच्चों को आधुनिक परिवेश के अनुसार "ट्रिक" सिखाने एवं इससे भी वढकर किसी भी तरह से भौतिक उपलब्धि हेतु शून्य मूल्य आधारित

व्यावसायिक प्रशिक्षण दिलाने को तत्पर हैं।

अपने निजी परिवार मे आत्मीयता का दायरा आर्थिक ढाचे के मापदड से नापा जा रहा है । विवाह, जन्मोत्सव सव कुछ ऐसा लग रहा है कि वाणिज्यिक रूप लेते जा रहे हैं। चिकित्सा जैसा पवित्र व्यवसाय सिर्फ पेशा बनता जा रहा है । जीवन की सस्कृति युवा पीढी पर प्रश्नचिन्ह वनती जा रही है, किस दिशा मे किसे आदर्श माना जाए ? शिक्षा जैसे पवित्र सरस्वती के पाव मदिरो मे राजनैतिक प्रदूषण घर करते जा रहे है, जो निश्चित रूप से ध्यान आकृष्ट करते है कि हमे अपने पुरातन सास्कृतिक धरोहर को समवेत एक अपनी जीवन शेली मे आत्सात होना पड़ेगा तभी उच्च रक्तचाप, स्ट्रेस मधुमेह एव तमाम मानसिक स्तर से उपजी वीमारियो का समापन कर सकेगे।

हमे पुन आध्यात्मिक ध्यान योग, मानवीय गुणो से ओतप्रोत शिक्षा पाठ्यक्रम को तन्मयता से लागू करना चाहिये। भगवान महावीर के अहिसक एव अपरिग्रही भारत के जन जन को जगाने हेतु भगवान बुद्ध का करुणा, मुदिता एव आत्मीयता की मगल मैत्री ध्वनित करनी होगी तो हमारा इतिहास नतमस्तक रहेगा एव भविष्य की उज्जवल रश्मि हमे विश्व को सकारात्मक सदेश देने का आधार प्रदान कर सके।

❑

साक्षरता

कु कल्पना पटेल
पूर्व छात्रा

भारत को स्वर्ग वनाना है,
अनपढ़ को हमे पढ़ाना है।

देश का भविष्य सुधारना है,
जन-जन को साक्षर करना है।

देश मे खुशहाली आयेगी,
जनता जव साक्षर हो जायेगी।

साक्षरता के अभियान को सफल वनाना है,
निरक्षर को तुम्हे पढ़ाना है ।

आखर का दीया हमे जलाना है,
पढ़ लिख कर औरो को पढ़ाना है।

नगर नगर और गाव गाव ये सदेश पहुचाना है,
लड़का हो या लड़की, उसे अवश्य पढ़ाना है।

जयशंकर प्रसाद की कामायनी

✍ कु. विनीता डागा
XII-C

'स्वयं देव थे हम सव तो फिर,
क्यों न विश्रृंखल होती सृष्टि'
(कामायनी)

चेतना का सुन्दर इतिहास, अखिल मानव भावो का सत्य।
विश्व के हृदय पटल पर, दिव्य अक्षरों से अंकित हो नित्य।

उपर्युक्त पंक्तियां महाकाव्य ''कामायनी'' के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत हैं। इस काव्य के रचयिता महाकवि ''जयशंकर प्रसाद'' हैं। वे हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। श्री प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल दशमी सं. 1946 में हुआ था। प्रसाद जी का बचपन अत्यन्त वैभवपूर्ण परिवार में व्यतीत हुआ। प्रसाद जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। उनका जीवन अत्यन्त संयत व नियमित था। उन्हें साहित्य लिखने में अद्भुत रुचि थी इसीलिये वे प्रात. ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पहले साहित्य रचना किया करते थे उन्होंने ऐसे अनेक मूल्यवान ग्रंथों की रंचना कर हिन्दी जगत को भेंट किये, जिनके ऊपर हिन्दी साहित्य आज भी गर्व कर सकता है। इन्होंने अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, ब्रह्मर्षि, पंचायत आदि रचनाएं लिखी। परन्तु कामायनी इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है।

जीवन के प्रति जागरुकता, यौवन का मदमस्त उल्लास तथा अतीत के प्रेम की अमिट छाप ने ही महाकवि प्रसाद से हिन्दी साहित्य को ''कामायनी'' जैसा अमर काव्य प्रदान कराया है। यह महाकाव्य रोमांचकारी व मनोवैज्ञानिक है। इसमें यदि एक ओर प्रलयकालीन सागर की गर्जनाएं निहित हैं तो दूसरी ओर उषा की अरुणिमा का कोमल दृश्य भी स्पष्ट है। प्रसाद जी ने कामायनी में नारी व पुरुष दोनों के रूप सौन्दर्य का चित्रण किया है परन्तु उनकी दृष्टि में पुरुष की अपेक्षा नारी श्रेष्ठ है व इसी कारण नारी के रूप सौन्दर्य चित्रण करने में उन्होंने अपनी अद्भुत कला कुशलता का परिचय दिया है। कवि के इस रूप सौन्दर्य विधान में स्पष्ट ही अन्विति, सौष्ठव, सुडौलपन, शारीरिक अंगों का क्रम, विचित्रता आदि उपकरणों को देखा जा सकता है।

''उस असीम नीले अंचल में,
देख किसी की मृदु मुस्कान,
मानो हंसी हिमालय की है,
फूट चली करती कल गान।''

शव्द चयन में कवि ने पर्याप्त प्रौढ़ता का परिचय दिया है व ढूंढने पर भी दो चार पद ही ऐसे मिलेंगे जहां कि शिथिलता दिखाई दे अन्यथा सर्वत्र सुसंघटित शव्द योजना ही दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने लाक्षणिक व प्रतीकात्मक शव्दों का इस महाकाव्य में पूर्ण रूप से प्रयोग किया है।

''कुसुमित कुंजों मे वे पुलकित प्रेमालिंगन हुए विलीन।
मौन हुई थे मूर्च्छित तानें और न सुन पड़ती अव वीन॥''

प्रसाद जी शव्दालंकारों की अपेक्षा सादृश्य अर्थालंकारों में अधिक रुचि रखते थे। इसके साथ ही ''कामायनी'' में जितने भी अलंकार मिलते हैं वे सव कवि की गहन अनुभूति के परिचायक हैं। कामायनी मे उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीय करण आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

सिन्धु सेज पर धरा वधु अब तनिक सकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति म मान किए सी एठी सी॥

कामायनी मे नारी के प्रति प्रसाद ने अपना विश्वास व श्रद्धा प्रक्ट की है। नारी के केवल बाह्य सौन्दर्य पर एक सामान्य कवि की दृष्टि जाती हे। नारी का स्थूल मासल सौन्दर्य प्रत्येक युग मे कवियो की वासनामूलक भावना को उभारता आया हे पर उसके आभ्यन्तर शाश्वत कृति पर विशिष्ट कवियो की ही दृष्टि जाती है। प्रसाद जी ने ''कामायनी'' मे इसी उदात्त सौन्दर्य का चित्रण किया है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पदतल मे।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के समतल प्रागण म॥'

प्रसाद जी ने इस महाकाव्य मे लगभग सभी रसो का समावेश कराया है। उन्होंने रसराज श्रृगार के साथ साथ भयानक, रौद्र, वीभत्स, करुण, वात्सल्य आदि सभी रसो का सफल प्रयोग किया है।

''कामायनी'' मे कुछ स्थलो पर ही अद्भुत रस के दशन होते है।

घूघट उठा देख मुसकाती किसे ठिठकती सी आती।
विजय गगन मे किसी भूल सी किसको स्मृति पथ मे लाती॥

''कामायनी'' म वेसे तीनो गुणो का समावेश है। ''कामायनी'' के वर्णनो की भी यही विशेपता है कि उनमे भयकर से भयकर परिस्थिति के चित्रण मे भी कवि को माधुर्य के दर्शन होते है व कामायनी के अधिकाश पाठको के चित्र को द्रवीभूत करके आघातयुक्त बना देते है। सम्पूण काव्य मे माधुर्य व प्रसाद गुण का ही आधिक्य दिखाई देता है।

'मधु बरसती विधु किरन है काँपती सुकुमार,
पवन म है पुलक मथर चल रहा मधु भार।''

कामायनी मे प्रमुख रूप से ताटक छद का प्रयोग किया है। कामायनी का चिन्ता सर्ग ताटक छदो मे लिखा गया है तथा कहीं कही वीर छद के भी दशन होते है। सघर्प सर्ग मे रोला छद का प्रयोग मिलता है। कामायनी के ईर्ष्या सग मे मिश्रित छद से कुछ नए छदो का आविष्कार भी किया है। छायावादी कवि ने विरोध सूचक शब्दो के प्रयोग से गूढार्थ की व्यजना की है।

''अरी व्याधि की सूत धारिणी अरी आधि मधुमय अभिशाप, हृदय गगन मे धूमकेतु सी पुण्य सृष्टि म सुदर पाप।''

कामायनी काव्य मे देव सस्कृति की सभी प्रमुख प्रमुख विशेपताओ का उल्लेख किया है। इसमे मानव सस्कृति का पूर्ण रूप से वर्णन किया हे। यह महाकाव्य युग की परिवर्तित विचारधारा व प्रगतिशील भावनाआ को लेकर लिखा गया है। इसमे प्रसाद जी ने अपने प्रौढ़ अनुभवो व कला के प्रौढ़ उपादानो का प्रयोग किया है। इसी कारण यह केवल छायावादी युग की ही एक श्रेष्ठ कृति नहीं है अपितु आधुनिक युग की भी सर्वश्रेष्ठ महान कृति है। इसमे मानव जीवन के गहन विचारो व शाश्वत सत्यो का उल्लेख किया है। कामायनी महाकाव्य से प्रसाद जी ने हमे दु ख से न भागने की प्रेरणा दी है। निरन्तर कर्मशील रहकर ही मानव मगलमय वृद्धि करता हुआ सम्पूर्ण समृद्धि का स्वामी बन सकता है। शक्ति के समस्त बिखरे हुए विद्युत कणो को सकलित करके मानवता को विजयिनी बना सकता है। मनु के जीवन की पतनावस्था की ओर सकेत करते हुए कामायनी मे जीवन की क्षुद्रताओ से ऊपर उठने का सदेश दिया है। प्रसाद का मानना है कि इच्छा, क्रिया, ज्ञान का समन्वय हो जाने से ही विपमताजन्य सघर्प समाप्त हो जाता है। प्रसाद जी ने जिस तरह कामायनी पात्र को हृदय की अनुकृति बाह्य उदार व झुलसते विश्व दिन को कुसुम ऋतु रात कहा है। उसी तरह कामायनी विश्व को ''कुसुम ऋतु रात'' का सा सुख प्रदान करने वाला महाकाव्य है। यह महाकाव्य निराश, भय त्रस्त, भ्रमित व चिर दिग्ध दु खी वसुधा को शाति व सुख की आशा बधाता हुआ अखड आनद प्राप्ति का मगलमय सदेश दे रहा है।

❑

शाकाहार

✍ श्रीमती मालती जैन

सहायक अध्यापिका

'लोक व्यवहार में हम कहते हैं -जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम मांसाहारी के स्थान पर शाकाहारी बनें, तभी हमारा मन स्वच्छ हो सकता है। शाकाहार सर्वोत्तम आहार है। मांसाहार में दानवता और शाकाहार में मानवता है। शाकाहार में धर्म है, सब जीवों का प्रेम है और विश्व वात्सल्य की अनुभूति है।'

- सम्पादिका

मानव एक बुद्धिजीवी प्राणी है। उसमें सोचने, विचारने एवं समझने की क्षमता है। इसीलिये हर बात तर्क की कसौटी एवं विज्ञान के अनुरूप सिद्ध होने पर ही वह उसे मानता है। आज वैज्ञानिक तरीकों से समझाई जाने वाली बात सही व प्रामाणिक लगती है। हमारे धार्मिक मनीषियों ने भी जो बात कही है उसे हम वैज्ञानिक कसौटी पर परखने के बाद ही मानने को तैयार होते हैं।

प्रकृति ने शरीर की संरचना मांसाहारी प्राणियों एवं शाकाहारी प्राणियों में भिन्न भिन्न प्रकार से की है। मांसाहारी प्राणियों के दांत, नाखून एवं आंतों की संरचना शाकाहारियों से भिन्न होती है। मांसाहारियों के दांत नुकीले व आगे की ओर निकले हुये होते हैं जबकि शाकाहारियों के दांत सपाट तथा एक समान होते हैं। शाकाहारी प्राणियों में मनुष्य, वन्दर, गाय, घोड़ा हाथी आदि आते हैं जबकि मांसाहारी प्राणियों में चीता, विलाव, कुत्ता, भालू, शेर आदि आते हैं। इनके खाने-पीने का ढंग भी अलग अलग है।मानव एक शाकाहारी प्राणी है क्योंकि उसकी प्रकृति मांसाहारी प्राणियों से कदापि मेल नही खाती। किन्तु विकास के इस युग में उसने अपना शाकाहारी स्वभाव छोड़कर नादानीवश मांसाहार अपना लिया।

शरीर पोषण के लिये मांस खाने की बात में भी कोई दम नहीं है। मांसाहार की तुलना में शाकाहारी मानव व पशु अधिक बलवान पाये जाते हैं तथा अधिक लम्बे समय तक कार्य करने की क्षमता रखते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि मांस शक्ति का भंडार है, घास-पत्ती खाने वालों को शक्ति कहां से प्राप्त होगी ? उन्हें यह सोचना चाहिये कि मांसाहारी लोग शाकाहारी पशुओं का ही मांस खाते हैं, मांसाहारियों का नही। कुत्ते व शेर का मांस कौन खाता है ? जिन पशुओं के मांस को वे शक्ति का भंडार मान बैठे हैं उन पशुओं में वह शक्ति कहां से आयी ? जी हां शाकाहार से। शाकाहारी पशु जितने शक्तिशाली होते हैं उतने मांसाहारी नहीं। शाकाहारी घोड़ा आज भी शक्ति का प्रतीक है। ऊर्जा को मापने की ईकाई आज भी हॉर्स पावर ही है। शाकाहारी हाथी के समान शक्ति किसमें है ?

प्राणियों के घात के विना मांस की उत्पत्ति नहीं होती इसलिये मांसाहार करने वालों को हिंसा का दोष अनिवार्य रूप से लगता है। यद्यपि यह सत्य है कि स्वयं मृत वैल, भैंसे, वकरे आदि से भी मांस प्राप्त हो सकता है, परन्तु उसमे भी निरन्तर अनन्तानन्त त्रस

जीव उत्पन्न होते रहते है, जिनके मन्थन से एव पकाने से भी हिसा होती है। अत जो व्यक्ति कच्चा या पका हुआ किसी भी प्रकार का मास खाता है उसे प्राणियो की हिसा का पाप लगता है। जैन मान्यतानुसार त्रस जीवो (दो इन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक के जीव) के शरीर के अश का नाम ही मास है इस प्रकार त्रस जीवो के घात से मास की उत्पत्ति होती है तथा जीवो का घात करने वाला व मास भक्षण करने वाला दोनो पाप के भागी होते है। शारीरिक रूप से शाकाहारी व्यक्ति मासाहारी की तुलना मे अधिक स्वस्थ जीवन जीते है क्योकि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है जबकि मासाहारियो को भयकर रोग लगने की सभावना अधिक होती है। मृत जानवरो के रोग भी उनको लगते है। शाकाहारी भोजन जैसे दूध, दही, घी, दाले, सोयाबीन, अनाज, मूगफली मे मास मछली की अपेक्षा अधिक एव सुपाच्य पौष्टिक पदार्थ पाये जाते है।

आथिक दृष्टि से मासाहार करना शाकाहार की तुलना मे अत्यन्त खर्चीला होता है। अत न तो आर्थिक दृष्टि से और न ही शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से मासाहार को उचित ठहराया जा सकता है, फिर किस लिये यह हिसामयी ताण्डव नृत्य किया जावे, यह सोचने समझने की आवश्यकता हे। सच कहियेगा कि जिसकी थाली मे मास, मछली, अडे आदि परोसे हो वह अधिक सुन्दर सौजन्यशील लगेगा या जिसकी थाली मे अन्न, दूध, फलो से तैयार व्यजन परोसे हों। दोनो की तुलना कीजिये और निश्चय कीजिये कि क्या शोभनीय एव उपयुक्त है ?

मनुष्य प्रकृति से भी मूलत शाकाहारी है। इसके नख, दात, पाचन तत्र आदि सभी अग शाकाहारी प्राणियो के अनुरूप हैं। आदिम अवस्था मे जबकि मनुष्य असभ्य तथा जगली था उस समय शाकाहारी खाद्य पदार्थों के अभाव मे वह जानवरो का मास खाकर अपनी भूख शात करता था, किन्तु जैसे जैसे वह सभ्य होता गया उसने अन्न, फल आदि शाकाहारी पदार्थों का उत्पादन शुरु किया और इन्हे अपनी उदरपूर्ति का साधन बनाया। अत शाकाहार सभ्यता की निशानी है जबकि मासाहार हिसक एव जगली प्रवृत्ति को दर्शाता है। मनुष्य की प्रकृति एक दूसरे की आवश्यकता वाले सामाजिक प्राणी की भी है। इसकी मानसिक चेतना अकेले रहने की नहीं है। वह परिवार व समाज के साथ मिल जुलकर रहना चाहता है। मनुष्य को सृष्टि मे सभी जीवो से प्रज्ञा (ज्ञान) मे श्रेष्ठ माना गया है। ऐसा श्रेष्ठ प्राणी भी क्षुधा शाति के लिये अपनी प्रकृति के विपरीत आचरण करे यह तर्कसगत नहीं है। हिसक क्रूर प्रकृति वाले मासाहारी प्राणी न तो समूह मे रहते है और न क्षुधा शाति के अतिरिक्त अन्य कोई बौद्धिक व्यवसाय ही करते हैं।

मासाहारी व्यक्ति भी पूर्ण रूप से मासाहार पर निर्भर नहीं रह सकते है। उनके भोजन का अधिकाश हिस्सा शाकाहारी पदार्थ ही होते है। वस्तुत मासाहार न तो हमारे जीवन की आवश्यकता है और न ही स्वाद की। बल्कि अपनी सस्कृति एव सभ्यता को भुलाकर पाश्चात्य भौतिकवाद के अधानुकरण मे भी गर्व की अनुभूति करने वाली हमारी कुठित एव क्रूर मनोवृत्ति का परिचायक है। "जीओ और जीने दो" का उद्घोष करने वाली भारतीय सस्कृति की अनुपालना बिना शाकाहारी बने कतई सभव नहीं है। आहार की शुद्धि अर्थात अहिसक शाकाहारी आहार से ही व्यक्ति के विचार शुद्ध एव सात्विक होते है और विचारो की शुद्धि होने पर ही उसमे दृढता, स्मृति तथा अन्य मानवोचित गुणो का विकास होता है। लौकिक सुख शाति के अभिलाषियो को भी शाकाहारी तो होना ही होगा, अन्यथा उनका जीवन विकृत हुये बिना नही रहेगा। अत यह सुनिश्चित ही है कि लौकिक एव पारलौकिक दोनो ही दृष्टि से शाकाहारी होना अनिवार्य है। ❑

टूटते संयुक्त परिवार : बढ़ता एकाकीपन

कु. विशाखा संघी

एक दिन मैं अपनी आटी के यहां गई। घर में प्रवेश करते ही जोर जोर से चिल्लाती उनकी बहु की आवाज मेरे कानों में पडी जो बार बार एक ही बात कह रही थी कि मैं इस दस व्यक्तियों के परिवार में नहीं रह सकती। मुझे एक अलग कमरा किराये पर ले दीजिये, हम वहीं पर रहेंगे। वह बार बार यही बात कह कर भैया को अलग होने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी। उनकी इस बात ने मेरे मन को झकझोर कर रख दिया उनकी यह बात मेरे अंतर्मन को चीरती चली गई। मुझे उनकी इस नासमझी पर गुस्सा तो बहुत आया लेकिन मैं कुछ भी न तो कह सकी और न ही कर सकी। बस, दबे पांव वहां से अपने घर को लौट आई।

मुझे उनकी यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी। मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया उनकी इस बात ने कि क्या एकल परिवार संयुक्त परिवार से अधिक महत्व रखते हैं ? क्या भाभी को अलग रहने पर इतना ही सुख मिलेगा जितना कि इस संयुक्त परिवार में ? क्या उनके बच्चे वहां पर उतना ही वात्सल्य, स्नेह और ममत्व का स्पर्श प्राप्त कर सकेंगे जितना कि इस संयुक्त परिवार में अपने भाई-बहनों के साथ प्राप्त कर रहे हैं ? क्या वे उन्हीं संस्कारों को प्रापत कर सकेंगे जो कि उन्हें इस वातावरण में मिल रहे हैं ? यह तो केवल एक ही परिवार की कहानी है लेकिन अन्य परिवारों की बहुएं भी तो अलग रहने को उत्सुक रहती है। इस तरह हमारे संयुक्त परिवार आज एक एक कर टूटते जा रहे हैं और समाज में एकल परिवारों का उदय हो रहा है।

आज ऐसा लगता है कि जैसे हमारी संस्कृति का एक अंग ही नष्ट होता जा रहा है। यह कल्पना करते हुए भी डर लगता है कि यदि बुजुर्गों का साया अर्थात आशीर्वाद हमारे सिर पर हमारे साथ न हो तो हमारा क्या होगा, क्या हम प्रगति कर पाएंगे ? नहीं, लेकिन आज हम इस बात को क्यों नहीं समझते ? क्यों हम केवल सिक्के का एक ही पहलू देखते हैं ? हम केवल एकल परिवार के लाभों के बारे में ही जानते हैं, दोषों को नहीं। हम यह तो जानते हैं कि एकल परिवार में रहने से व्यक्ति पराश्रित नही रहता वह स्वावलम्बी हो जाता है वह अपनी जिम्मेदारी से अनभिज्ञ नही रहता, लेकिन हम इन बातों को क्यों नजरअंदाज कर जाते हैं कि एकल परिवार में रहने पर व्यक्ति अपने रिश्तों के महत्व को समझ नहीं पाता, वह बुरी आदतों को एकाकीपन के कारण अपना लेता हैं। वह अपने से बडों का सम्मान करना तथा छोटों को प्यार देना ही नहीं जानता,वह केवल अपने स्वार्थ को जानता है, परहित को महत्व नहीं देता। वह अपनों को भी पराया समझने लगता है।

आज एकल परिवार हमें अपने संस्कारों से,अपने जन्मदाताओं से, अपनी संस्कृति से दूर करता जा रहा है और ले जा रहा है एक ऐसी संस्कृति की ओर जिसे अपनाने के पश्चात न तो हम घर के रहेंगे और न ही घाट के। आज एकल परिवारों को अपना कर मनुष्य स्वयं अपना अहित कर रहा है। वह केवल भौतिकता की चकाचौंध व स्वार्थ को अपनाकर संयुक्त परिवारों की अवहेलना कर रहा है व उनके महत्व को वह समझ नहीं रहा है। आज एकल परिवार में एक बच्चा मां की ममता की कल्पना ही करके खुश हो जाता है, वह सोचता है कि मां

उसे स्कूल छोड़ कर आएगी। घर आने पर अपने पास बिठा कर खाना खिलाएगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता क्योकि उसके माता पिता तो उसे नौकर या आया के सहारे छोड कर नौकरी पर चले जाते है, जब बच्चा अपने स्कूल के बच्चो व पड़ौसी बच्चो को देखता है कि या तो उन्हे उनके माता पिता या चाची, दादी कोई न कोई स्कूल छोडने जाते है और घर आने पर प्यार से खाना खिलाते है तब उसके मन मे अपने माता पिता के प्रति एक दुर्भावना उत्पन्न हो जाती है। जिससे वह उनका विरोध करने लगता है। इस प्रकार बच्चो को न तो स्नेह व मा की ममता से भरा वातावरण ही मिलता है और न ही एक ऐसा वातावरण जिससे वे कुछ सीख सके यथा बड़ो का आदर करना, सहनशीलता, परोपकार, ईमानदारी इत्यादि।

आज के बच्चे अकेले होने के कारण घर पर मनोरजन के उत्तम साधन टी वी पर देखकर सीखते है तो केवल चोरी, डकैती, लडाई झगडा, मा बाप से अप्रिय बाते करना। यही बच्चे आगे चलकर समाज के लिए, सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए कटक बन जाते है। इसके विपरीत यदि उन्हे एक सयुक्त परिवार मे रहने का अवसर मिला होता, घर के सदस्यो का प्यार मे परिपूर्ण वातावरण मिला होता तो वे समाज या राष्ट्र के कटक बनने के बजाय देश का, परिवार का नाम रोशन करते। लेकिन आज सयुक्त परिवार के इस महत्व पर ध्यान कौन देता है। आज तो सभी स्वार्थ लिप्मा मे लिप्त होकर, केवल अपना हित चाहकर, खुशहाल सयुक्त परिवार को बिखराकर, उनकी एक-एक ईट बिखराकर चले जाते है।

आज वे नवयुवक व नवयुवतिया जो कुछ समय पूव ही विवाह बधन मे बधे होते है, वे यही आस लगाए बैठे होते है कि अब वे शीघ्र ही अपना अलग घर बसा लेगे। लेकिन वे यह नहीं सोचते कि जिन मा बाप ने उन्हे इतने वर्षो तक पालपोस कर बडा किया, उन्हे पढा-लिखा कर काबिल इसान बनाया जो उन्हे अपना बुढापे का सहारा समझते है लेकिन ये अहसान फरामोश बच्चे उनके लिए रुकते कहा हैं। बस, उन्हे तो अपनी सुख सुविधा, अपना ऐशो आराम चाहिए। वे यह नहीं सोचते कि जिन "हित" के लिए वे अपना सुखी एव समृद्ध सयुक्त परिवार छोडकर जा रहे है उसी हित मे उनका अहित छुपा है। जब वे एकल परिवार मे रहने लगते है तो वे बच्चो पर नजर नहीं रख पाते और चूकि बच्चो को वो प्यार नहीं मिलता जिसके वे हकदार होते है, अत वे अन्यत्र किसी से प्यार पाने को लालायित हो उठते है और जहा कहीं उन्हे थोडा सा प्यार मिला वे वहीं ठहर जाते है और गलत सबधो मे फस जाते है लेकिन उनके मा बाप इससे बेखबर होते है। अब उस एकाकी परिवार मे केवल बच्चे ही नही माता पिता भी सुखी नहीं रह पाते और छोटी छोटी बातो पर झगड़ा हो जाता है। दोनो एक दूसरे को अपनी अपनी आय की धौंस देते है यहा तक की कभी भी तलाक की समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। उस एकल परिवार मे हमेशा वैमनस्य, कटुता सघर्ष का वातावरण बना रहता है।

एकल परिवार के जो बच्चे होते है तो उन भाई बहनो मे आपस मे वो प्यार नहीं होता जो सयुक्त परिवार के बच्चो मे होता है। एकल परिवार के बच्चो व उनके माता पिता मे आपसी रिश्तो की समझ नहीं होती। उन्हे उनका महत्व पता नहीं होता। उन्हे यह पता नहीं होता कि रिश्तो के धागे कितने कच्चे होते है क्योकि वे प्यार और स्नेह से मिलकर बने होते है। यदि हम देखे तो ज्ञात होगा कि आज एकल परिवारो की सख्या बढती ही जा रही है लेकिन सफल तो सयुक्त परिवार ही हो रहे है। सयुक्त परिवार मे बच्चा तो रिश्तो के मध्य बसे हुए प्यार, स्नेह व दर्द को समझता है, परहित को ध्यान मे रखता है। उस परिवार म बच्चे गलत सबधो ड्रग्स, शराब या अन्य किसी बुरी आदत के शिकार नहीं होते। अत हमे सयुक्त परिवार की महत्ता का समझकर एकल परिवार के सपने छोड़ने चाहिए एव उनकी तो कल्पना भी नहीं करनी चाहिए। ❑

अहं का चक्रव्यूह-विघटन परिवार का

✍ **श्रीमती शशिबाला शर्मा**
एम. ए., बी.एड.
व्याख्याता

आज के अति भौतिकतावादी युग में स्वार्थ में अन्धे लोग संबंधों की बागडोर को किस सीमा तक खींच सकते हैं कि आज यदि उस दृश्य को दानवता भी देख ले तो उसका कलेजा भी कांप उठेगा। दृश्य है अस्सी वर्षीय वृद्ध "सांस के रोगी अपने ही माता पिता द्वारा अपने चार चार बेटों से शरण की भीख मांगना।" देखो बेटा, अब चार महीने ठंड के शुरु होने वाले हैं, हमारे लिए जान लेवा हैं। अकेले तुम लोगों से दूर रहकर, हमारा इलाज भला कौन करायेगा ? हम चाहते हैं कि यह समय हम तुम्हारे साथ रहकर बितायें। माता-पिता के साथ रहने के निर्णय से चारों के कान खड़े हो गये। अफरातफरी में मीटिंग बुलाई गयी, बेटों द्वारा निर्णय लिया गया, अहं की तुष्टि करते हुए निर्णय सुनाया गया, ठीक है आप हम चारों के पास रह सकते हैं, आपको जो पेंशन मिलती है, उस पेंशन में से हर महीने दो सौ रुपये अपने खर्चे के लिए हमें देना होगा और हां, यह याद रखना हमारे घर यदि कोई मेहमान आयें तो अपने इन गन्दे कपडों से "ड्राईग रूम" में मत आना, हमारी इज्जत जाती है। जन्मदाता पिता अपने ही बेटों के ऐसे निर्णय को सुनकर आश्चर्य चकित हो उठा। जिन बेटों को पालने में जिसने अपने जीवन के समस्त सुखों को न्योछावर कर दिया था, जिसके अथक परिश्रम के कारण ही आज उसके चारों बेटे उच्च पदासीन हैं, उनका परिवार खुशहाली और समृद्धि से पूर्ण है। आज वही उनके लिए बोझ है, फालतू है, अनुपयोगी है। धिक्कार है ऐसा जीना, इससे तो अच्छा था मेरे कोई बेटा न होता। यह दृश्य किसी नाटक, कहानी, उपन्यास या फिल्म का न होकर अपितु आज के प्रत्येक परिवार में घटित होने वाले दृश्यों का जीवन्त रूप है। जहां एक ओर आधुनिकता के नाम पर परिवार के युवा सदस्यों का अपनी पुरानी पीढ़ी के लोगों के साथ विचारों के सामंजस्य का प्रश्न ही नहीं उठ सकता तो वहीं दूसरी ओर फैशन और फिल्म की जीवन शैली की नकल करते हुए आज के युवक युवतियों से एक आदर्श परिवार की बात करना असंभव स्वप्न को प्राप्त करने के समान है।

आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का यदि कोई लक्ष्य शेष है, तो वह लक्ष्य है-अति आधुनिकता यदि इस आधुनिकता की प्राप्ति हेतु अपने चिरन्तन नैतिक मूल्य दया, करुणा पर दुःख कातरता सहयोग तथा परस्पर सामंजस्य के बदले में मिलती हो तो भी उन्हें किसी प्रकार का कोई दुःख नहीं है। आज उन्होंने अपने चारों ओर "अहं" की तुष्टि हेतु संकीर्ण स्वार्थ के ऐसे दायरे बना लिए है जिनमें उलझ कर हमारे परिवार विघटन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज

हमारे परिवार के मध्य से उदार व वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव समाप्त हो चुका हे। इस उदार भाव का अभाव ही आज के परिवार मे,टूटन बिखराव और सॅघर्ष को जन्म दे रहा है।

शहरीकरण, भौतिक वस्तुओ का सम्मोहन, अत्यधिक व्यस्तता, परिवार मे अह के वीज वोने वाले सिद्ध हो रहे हे। आज भवन जितने बहुमजिला भव्य एव आकर्षक बनते जा रहे है, उनमे रहने वाले परिवार के सदस्य उतने ही विचारो मे सकीर्ण होते जा रहे है। पति पत्नी के अलावा किसी तीसरे के लिए कोई जगह वहा नहीं है। एक पल के लिए भी उन्हे किसी अन्य का खलल मजूर नहीं है।

पहले कभी मात्र दो या तीन कमरो मे तीन तीन पीढ़ियो के वीसियो स्त्री-पुरुप, वृद्ध, विधवा, वुआ, मौसी निस्सतान चाचा, मामा बडे सुख और चैन की जिदगी जिया करते थे। जहा दर्जनो वच्चे किलोले करते न जाने कब यौवन की दहलीज मे कदम रख लेते थे जहा प्रतिदिन एक समारोह और आनन्द सा रहता था। कहा गया वह आनन्द ? कहा गये वह जीवन मूल्य, कहा गये वह सस्कार, जहा परिवार के वृद्ध लोग बालको को अपनी गोद मे खिला खिलाकर सिखा दिया करते थे। तरसते हैं आज के वालक दादा दादी के सस्कारो को पाने के लिए।

आज के अह प्रधान युग मे अकेलेपन की भावना धीरे धीरे बढती जा रही है। परिवार के मध्य रहते हुए भी आज वह अपने आपको जितना अकेला और असहाय अनुभव करता है इससे पहले ऐसा अनुभव शायद उसने कभी न किया हो। "एकल परिवार" या अकेले परिवार की जीवनशैली जीने वाले लोगो की दृष्टि मे पुरानी पीढी एक पुराने अनुपयोगी फर्नीचर की तरह है। वे महत्वपूर्ण निर्णय जो कभी परिवार के बुजुर्गों के विना पूरे नहीं होते थे, न केवल स्वय के परिवार के सदस्य अपितु पास पडौस के बुजुर्गो की भी राय को सम्मान दिया जाता था। आज उन्हीं की राय "गुजरे जमाने की वात या वेकार की बकवास" के नाम पर तिरस्कृत तथा अपमानित हो रही है। वृद्धो के जीवनपर्यन्त आयु के अनुभवो का इस प्रकार अपमान परिवार मे कडवाहट के वीज बो रहा है, परिणामस्वरूप वह परिवार जो कभी समृद्धि शाति के परिचायक थे, आज वह अपने ही अह भाव के कारण टूटकर विखर रहे है।

ऐसे विसगत परिवेश मे हम समाज से कटते जा रहे है। आज हम अपनी ही जडो से उखडते जा रहे है। आज परस्पर सवेदन शीलता, विचार सामजस्य पर दु ख कातरता जैसे भाव हमारे परिवार एव समाज से सर्वथा के लिए विलुप्त होते जा रहे है। आज हम अपनी ही सस्कृति की जडो को "अह" के कुल्हाडे से वखूबी काट रहे है।

जड़ो को काटने का काम आज वडी कुशलता से एक से दूसरे को हस्तान्तरित किया जा रहा है। विवाह से पूर्व ही पूर्णत स्वछन्द किशोरिया अपने जीवन के सपने बुन लेती हैं, विदाई के समय परिवार के सदस्यो द्वारा परिवार मे फूट के मूल मत्र दिये जाते है कि अपने लिए अलग कमरा चुन लेना, अपने सामान पर पूरी नजर रखना। यह पूरी नजर ही बेटी के परिवार मे कलह का सूत्रपात है या तो नव वधु की बात सर्वोपरि रहती है, नहीं तो वधु के साथ साथ नये घर के नाम पर घरवालो को वेटे से भी हाथ धोना पड जाता है।

सुख की सृष्टि फिर भी नहीं हो पाती। बुने गये सुनहरे सपने की पूर्ति मे पति की आय यदि आडे आती है तब प्रश्न उठता है मै भी नौकरी करूगी। प्रारम्भ से

ही माता पिता के अंकुश से रहित आये दिन की पति-पत्नी की टकराहट गहरी खाई का रूप ले लेती है। "क्रेच" में पलते असहाय अबोध अपने ही बच्चे उनके तनाव का केन्द्र बन जाते हैं। जहां युवतियां तनाव का कारण मानी जाती है वहीं दूसरी ओर अमर्यादित अनुशासनरहित पुरुष किसी भी प्रकार का कोई बंधन या नियंत्रण को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। दोनों की ही टकराहट उन्हें विवाह के थोड़े ही दिनों के बाद कोर्ट की दस्तक देने के लिए विवश कर देता है। परिणाम उभर कर सामने आता है संबंध विच्छेद का। इस बात फिर करारी मार पडी परिवार पर, वह फिर एक बार टूटा बिखरा, एक बार फिर अपने बदलते रुख पर रो उठा।

पश्चिम के अंधानुकरण के नाम पर आज हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य उच्च महत्वाकांक्षाओं के नाम पर कुछ ऐसे सपने संजोए हुए है जिनकी प्राप्ति भारतीय धरातल पर या तो संभव ही नहीं है और यदि किसी प्रकार संभव हो भी जाता है तो उसके मार्ग में अनेक कठिनाईयां हैं। इन उच्च आकांक्षाओं के अभाव में परस्पर विचारों में टकराव तथा संघर्ष होने के कारण परिवार में एक अन्तर्कलह उत्पन्न हो जाती है।

परिवार जहां वृद्धों को आश्रय, बालकों को संरक्षण एवं उनके सुखमय भविष्य की सृष्टि होती है। हमारे राष्ट्र के धरोहर सांस्कृतिक मूल्य जहां सजते संवरते हैं। जहां ये सांस्कृतिक मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बड़ी कुशलता से हस्तान्तरित कर दिए जाते हैं। हमारे राष्ट्र की इस महत्वपूर्ण इकाई के लिए आज के सुविधाभोगी मानव का अहं भाव एक भीषण संकट के रूप में बड़ी तेजी से उभर रहा है। हम धीरे धीरे उस महाविनाश की ओर अग्रसर हैं, जिसके परिणाम से आज हम अनभिज्ञ हैं।

समय रहते यदि हमने इस परिवार के विघटन को रोकने का प्रयास नहीं किया तो कल हम अपनी संस्कृति को राख के ढेर में खोजेंगे। इस कृत्य के लिए हमें आने वाली हमारी अपनी ही पीढ़ी कभी माफ नहीं करेगी। वर्तमान युग में इस जटिलतम होती हुयी इस समस्या का मात्र एक ही समाधान है मैत्रीपूर्ण परिवेश तथा परस्पर विचार सांमजस्य-इसी अभिकामना के साथ।

"मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षताम्, मित्रस्याहं चक्षषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।"

❑

निर्धन होना दुर्भाग्य है पर सबसे अभागे वे हैं जो कृपणता से ग्रस्त हैं। संकीर्णता का अभिशाप साधनों का सदुपयोग नहीं करने देता और वैभव को संकट एवं पतन का कारण बना देता है।

●

असफलता केवल सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं हुआ।

मॉ मुझको पुस्तक दिलवा दो

✍ कु किरण आहूजा
IX B

मा मुझको पुस्तक दिलवा दो,
हा मै भी पढ़ने जाऊगी।

पढ़ लिखकर मै भी आगे बढ़ना चाहूगी।
मै भी भैया की तरह डॉक्टर या इजीनियर बनना चाहूगी।
मै पढ़ जाऊगी तो कभी न कभी देश के काम आऊगी।
मै भी अपने पैरो पर खड़ी होकर दिखलाऊगी।
मै पढ़ जाऊगी तो जीवन के उतार चढ़ाव मे,
अगर कोई बात हो गई तो मै भी कुछ कर बता सकूगी।
मा मुझको पुस्तक दिलवा दो,
हा मै भी पढ़ने जाऊगी।

मै पढ़ जाऊगी तो, गाव गाव जाकर,
अनपढ़ लोगो मे अलख जगाऊगी।
फिर मा तुम्हारी तरह कोई अनपढ़ नही रह जाएगा,
पढ़कर मै किरण बेदी या इदिरा गाधी बन जाऊगी।
देश विदेश मे मेरा नाम होगा,
तुम्हारी तभी तो शान बढ़ेगी।
देखना मा मै भी भैया से आगे बढ़ जाऊगी।
मा मुझको पुस्तक दिलवा दो,
हा मै भी पढ़ने जाऊगी।

फिर कोई पटवारी या जमीदार हमे लूट नही पायेगा,
अगूठे के बल पर कोई हमारी जायदाद नही ले पायेगा।
मा मुझको पुस्तक दिलवा दो।
हा मै भी पढ़ने जाऊगी।

मंगलकारिणी विद्या विपश्यना

✍ श्रीमती सुधा शुक्ला
एम. ए. , एम. एड.

जुलाई, 1989 के वे दस दिन जो गालव ऋषि की सुरम्य पहाडियों से घिरे एकान्त सांसों की परिधि से आच्छादित विपश्यना धम्मथली पर व्यतीत हुए - जीवन में चिरस्मरणीय सकारात्मकता लाये। ज्यों ज्यों अति भौतिकवादी सुविधाओं का विस्तार होता गया और वैज्ञानिक जगत ने मनुष्य के जीवन में क्रांति ला दी, वहीं इसके प्रतिफल में मानव तनाव, कुंठा व भय से आतंकित होता जा रहा है। सुख, शांति और सहृदयता मृगतष्णा बनती जा रही है - इसी तिमिर के घोर अंधकार में भारतीय संस्कृति से 2500 वर्ष पूर्व लुप्त हुई "विपश्यना साधना" ज्योतिपुंज के रूप में आचार्य श्री सत्यनारायण जी गोइन्का द्वारा सन 1969 में भारत में अवतरित हुई। म्यांमार में गुरु शिष्य परम्परा के अन्तर्गत यह मंगलदायिनी विद्या सुरक्षित रही और इसके शुद्ध रूप को महान आचार्य श्री सयाजी उबाखन महोदय से श्री सत्यनारायण गोइन्का को उनके बर्मा प्रवास के समय उपलब्ध हुई।

"विपश्यना" पाली शब्द है, पश्य का अर्थ देखना, वि - विशेष तौर से देखना। अन्तर्मन की गहराइयों को वैज्ञानिक ढंग से छूने वाली यह विद्या निश्चय ही बौद्ध परम्परा में सुरक्षित रही परन्तु किसी सम्प्रदाय, धर्म से इसकी प्रतिबद्धता नहीं। इसमें कुल, जाति, धर्म अथवा राष्ट्रीयता आड़े नहीं आती। हिन्दू, जैन, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, ईसाई, यहूदी एवं अन्य सम्प्रदायों ने इसको सीखकर आत्मसात किया है। इसके परिणामस्वरूप पूरे विश्व में 30 से अधिक विपश्यना केन्द्र खुले हैं तथा विश्व के नरनारी जो विकट मानसिक एवं भावनात्मक तनावों से गुजर रहे हैं, इन केन्द्रों पर रहकर धर्म गंगा में स्नान कर चित्त शुद्धि कां आनन्द ले रहे हैं। विपश्यना ध्यान विधि मन को वास्तविक सुख शांति प्रदान कर अनित्यता का बोध कराकर समता भाव एवं वर्तमान में जीवनयापन करने की अचूक मार्गदर्शिका है। विपश्यना का अभिप्राय है कि जो वस्तु सचमुच जैसी हो, उसे उसी प्रकार जान लेना। जीवन में जब जब विकार जागते हैं, चाहे भय हो, तनाव हो, राग-द्वेष हो तब तब मानव मन विचलित हुए बिना नहीं रह सकता और इस स्थिति में स्वयं तो मानसिक संतुलन खो देता है, साथ ही अपने आसपास के वातावरण को भी बोझिल बना देता है। विपश्यना हमें इस योग्य बनाती है कि हम अपने भीतर शांति और सांमजस्य का समावेश कर सकें। मानव स्वभावानुसार वाह्य जगत से अपार अपेक्षायें रखता है जबकि सत्य यह है कि उसके अन्तर्मन में अथाह समुद्र विराजमान है

उसकी गहराइयो मे डुबकी लगाकर वह इस भवसागर से तिर सकता है। बाहरी आवरण अनित्यता बोध से अवतरित है। जब तक अपने अदर की खोज कर समता भाव का अनुभव दृष्टाभाव की कसौटी पर नही कर ले तब तक चित्त की सर्जरी सभव नहीं। घोर शारीरिक ध्यान के तीन सोपान है - शील, समाधि, प्रज्ञा। भगवान बुद्ध ने जीवन के ओजस्वी काल मे विभिन्न ज्ञान प्राप्ति की विद्याओ का अध्ययन कर घोर शारीरिक तप एव साधना कर पुरातन विद्याओ का अध्ययन कर विपश्यना जैसी फलदायिनी विद्या को जीवन मे उतारा और शील पर सबसे अधिक जोर दिया। जीव हिसा, चोरी, झूठ बोलना, अब्रह्मचर्य एव नशे से विरत रहना शील का पालन बताया गया। इन पचशीलो का लगभग सभी धर्म अपने अपने विधानो मे महत्व रखते है। विपश्यना साधना सीखते समय समाधि हेतु - "आनापान" नामक एकाग्रता की सरल विधि का अभ्यास कराया जाता है। इसके उपरान्त प्रज्ञा का स्वाद चखने हेतु अपने अन्तर्मन की गहराईयो मे दबे हुए विकारो को दूर कर मन को निर्मल बनाना होता है। इसी से साधक अपने दैनिक जीवन मे इस विद्या को आचरित कर सकता है। आर्य मौन का इस साधना को सीखने मे विशेष योगदान रहता है। अपनी सासो के प्रति वह तभी सावधान हो सकता है जब वह मौन के साथ साथ मानसिक मौन का पूरे 10 दिवसीय शिविर के दौरान पालन करता है। तपस्थली मे मौन - सासो के मिश्रण से अपार आनन्द की अनुभूति कराता है। अन्तर्मन मे समावेश हेतु "मौन" दीपिका है।

भगवान बुद्ध को बोधि प्राप्त होने पर प्रथम उद्गार मे यही कहा "अनेक बार इस ससार मे जन्मा और बिना रुके (मृत्यु की ओर) दौड ही लगाता रहा, घर बनाने वाले की खोज मे बार बार दुखमय जन्म ही प्राप्त करता रहा, हे अन्तर्मन ! तू देख लिया गया है, अब तू घट नहीं बना सकेगा। तेरी सारी बेडिया तोड दी गई हैं। घर का कूट स्तम्भ छिन्न भिन्न हो गया है तृष्णा क्षय (वीतराग) की अवस्था प्राप्त हो गयी है। वहीं महानिर्वाण के समय अतिम उद्गार मे कहा "सभी सस्कार व्ययधर्मा हैं नश्वर हैं', प्रमादविहीन होकर इस सत्य का सम्पादन करो।" जीवन की सार्थकता को बताते हुए मगल भाव प्रकट कर कहते है कि-सारे प्राणी सुखी हो, सभी सुरक्षित हो, सब मगलदर्शी हो। किसी को किसी प्रकार का दु ख न हो।

महापरिनिब्बणसुत्त मे कहा गया कि सचमुच (सारे सस्कार अनित्य ही है, उत्पन्न होना और नष्ट हो जाना यही इनका धर्म है, स्वभाव है। उत्पन्न होकर नष्ट होते होते) विपश्यना साधना द्वारा उनका पूर्णतया उपशमन हो जाए, पुन उत्पन्न होने का क्रम समाप्त हो जाए, वही परम सुख और निर्वाण है। धम्मपद भी यह कहते हैं कि सारे सस्कार अनित्य है अर्थात जो कुछ उत्पन्न होता है, वह नष्ट होता ही है, इस सच्चाई को जब कोई विपश्यना प्रज्ञा से देखता है तो उसके सभी दु ख दूर हो जाते है - ऐसा यह विशुद्धि का मार्ग है। विपश्यना साधना करते समय साधक जब सम्यक सावधानता के साथ जब जब शरीर चित्त स्कधो के उदय व्यय रूपी अनित्यता की विपश्यनाभूति करता है तब तब प्रीति प्रमोद रूपी अध्यात्म प्राप्त करता है और मुक्त व्यक्तियो द्वारा अनुभूत अमृत पद निर्वाण कर उपलब्ध कर लेता है।

विपश्यना करते सनय जब साधक सास के माध्यम से अपनी सवेदनाओ का दर्शन करता है उस समय शारीरिक सवेदना के कारण चित्त मे सुख सौमनस्य

उत्पन्न होते हैं, यही संवेदना का आस्वादन है, संवेदना अनित्य, दुःख और परिवर्तनशील स्वभाववाली है, यही संवेदना का दोष है, संवेदना के प्रति उत्पन्न हुए राग का छूटना यही संवेदना का मोक्ष है। जो साधक शरीर पर होने वाली संवेदनाओं का अनुभव कर रहा है, वही उस क्षण के सत्य को प्रतिपादित करता है। यह दुःख है, यह दुःख की उत्पत्ति है, यह दुःख का निरोध है, यह दुःख निरोधगामिनी है।

विपश्यना साधक को जागरूकता के साथ यह दृश्य करता है कि सारी काया में संवेदनाओं की अनुभूति करते हुए सांस ले रहा हूं तथा संवेदनाओं की अनुभूति करते हुए सांस छोड रहा हूं। काया के प्रति जागरूकता की निरन्तरता बनी रहती है। वर्तमान का साक्षी दृष्टा बन जाता है क्योंकि अतीत की ओर दौडने वाला विक्षिप्त चित्त समाधि का मार्ग अवरोधक है। भविष्य की आकांक्षा से प्रकाशित हुआ चित्त समाधि का मार्ग अवरोध है। जो मनुष्य काया, वाणी, मन से संयत है वही पूर्ण और धीर पुरुष है। जिसे अपना कल्याण साधना है, कुशलतापूर्वक जीवनयापन करना है वह सुयोग्य, अति सरल, सुभाषी, मृदु स्वभाव व मैत्री भाव रखे।

जब तक बाहरी चकाचौंध से हम ग्रस्त हैं तथा बाहरी घटनाओं में लिप्त हैं तब तब मन प्रतिक्रिया करने से वंचित नहीं रहेगा। मन के विकारों का स्रोत ही बाहरी दृष्टा बनना है, बाहरी घटनाओं में रस लेने वाला सृजक नहीं हो सकता। अन्तर्मन की ओर चलना प्रगति नहीं, प्रगति की सही दिशा में चलना प्रगति है। बाहरी प्रशंसा के रस का त्याग कठिनतम है परन्तु जिसने अन्तर्मन की छवि का स्वाद चख लिया वह एकाग्रता, तीव्र स्मृति समताभाव का अपने वर्तमान जीवन में समावेश कर सकेगा। ''विपश्यना'' साधना पर हुए शोध के परिणामस्वरूप मानवीय नैतिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन सामने आए हैं। तिहाड जेल एवं राजस्थान में जेलों में हुए विपश्यना शिविरों के परिणाम कैदियों के जीवन में आन्दोलित रचनात्मक परिणाम लाए हैं।

हमारे स्कूल का सौभाग्य है कि बच्चों के दो दल विपश्यना केन्द्र पर तीन दिवसीय साधना कर चुके हैं तथा एक दिवसीय दो शिविरों का आयोजन कर लाभान्वित हो चुके हैं। साधना की नियमितता एवं निरन्तरता बच्चों व शिक्षकों के जीवन में सकारात्मक एकाग्रता एवं जीवन शैली में रचनात्मकता का आगमन अपेक्षित है। तीन दिवसीय बच्चों के शिविरों का बालिकाओं के कोमल चित्त पर जहां वर्तमान में जीने की इच्छा को दृढ़ करती है, वहीं व्यवहारिक जीवन में मानसिक एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति में अद्भुत वृद्धि अवश्यंभावी है। क्या ही अच्छा हो कि ये बालिकाएं ही अपने माता पिताओं को इस वैज्ञानिक विधि की आध्यात्मिकता का रसास्वादन कर जीवन जीने की कला में प्रवीण करने का मार्ग प्रदर्शित करें।

भवतु सब्ब मंगलम्

जो शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पालन करता है, वस्तुतः वही भिक्षु है।

- प्रश्नव्याकरण

भारतीय सामाजिक व सास्कृतिक परिवेश मे तुलसी का योगदान

✍ कु शशिकला शर्मा
XII C

'तुलसी भक्त कवि माला के सुमेरू है। वे हिन्दू समाज के मार्ग दर्शक ओर विश्व समाज के अनुकरणीय साहित्यकार है । तुलसी का काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । तुलसीदास उदार एव करुण थे, वे सर्वहित मे विश्वास करते थे और जनमगल को ही काव्य की उत्कृष्टता की कसोटी मानते थे। उनका काव्य देश काल और सीमा को लाघ कर समूची मानवता की निधि है।'

- सम्पादिका

भारतीय सस्कृति सदैव से ही गौरवपूर्ण रही है। अविरल रूप से इसका विकास होता रहा है । लेकिन वर्तमान समय मे अर्थात 20 वी शताब्दी मे इस महिमामयी सस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का कुप्रभाव पड़ रहा है। आज भारतीयो ने पाश्चात्य देशो की सस्कृति को इतना अधिक आत्मसात कर लिया है कि उनके लिये अपनी सस्कृति के जीवन मूल्यो का कोई महत्व नही रहा । अपने देश की परम्पराओ तथा आदर्शों को भुलाकर वे पश्चिमी सभ्यता के रग मे रग रहे है। भारत एक गौरवशाली देश है । अत समय समय पर यहा अनेक महापुरुष, कवि, लेखक, विद्वान तथा देशभक्त हुए हैं। जिन्होने भारतीय सस्कृति को उसके चरमोत्कर्ष तक पहुचाया । आज इन्हीं महान पुरुषो के जीवन चरित्र, रचनाओ तथा कृतियो से भारतीयो को उचित मार्ग दर्शन मिल सकता है । इन सभी मे सर्वाधिक लोकप्रिय कवि तुलसीदास जी रहे है। हिन्दी मे जितने कवि हुए है उनमे तुलसी का सर्वोच्च स्थान रहा है। उन्होंने यो तो अनेक रचनाए लिखी है। लेकिन उनमे से रामचरितमानस ऐसी पुस्तक है जो कि भारत मे ही नही बल्कि विदेशो मे भी लोकप्रिय रही है। विश्व की लगभग सभी भाषाओ मे इसका अनुवाद हो चुका है।

रामचरित मानस मे समाज के लिये उन आदर्शों की रचना की है जो विश्व के सभी देशो के लिये अनुकरणीय कहे जा सकते है । इसमे समाजवादी भावना का भी पर्याप्त चित्रण हुआ है। काव्य व कला की दृष्टि से भी यह उत्तम रचना है। यही कारण है कि पिछले 400 वर्षो से भारतीय जनता इसे धर्मग्रन्थ की तरह मस्तक पर धारण किये है । उन्होने अपनी अलौकिक शक्ति से भारतीय हिन्दी साहित्य को प्रौढता की चरम सीमा पर पहुचा दिया। मानव हृदय पर अपनी काव्य अनुभूतियो द्वारा जैसा तुलसीदास जी ने विस्तृत

अधिकार जमाया है, हिन्दी साहित्य का अन्य कोई कवि उतनी सफलता न प्राप्त कर सका। भारतीय सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में तुलसी का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। तुलसीदास के आर्विभऽाव के समय वैष्णवों, शाक्तों व शैवों में धार्मिक वैमनस्य तीव्र रूप से था। उन्होंने रामचरितमानस द्वारा इस धार्मिक मनोमालिन्य को समूल नष्ट किया। तुलसीदास को धर्म के पाखंडियों व ढोंगी साधुओं व सुधारकों से घृणा थी। धर्म का आडम्बर करने वाले लोगों को तुलसी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कडी फटकार दी व जनता के समक्ष धर्म का यथार्थ रूप प्रस्तुत कर उसे सावधान किया।

तुलसीदास जी प्रारम्भ से ही राम के प्रति समर्पित थे। श्री रामचन्द्र उनके काव्य के विषय इसलिये बने क्योंकि वे ही उनके इष्टदेव थे, सर्वस्व थे। उन्होंने आराध्य देव की उपासना करते हुए कहा था कि -

सियाराम मय सब जग जानी।
करो प्रणाम जोरि जुग पानी॥

रामचरित मानस में सामाजिक सुधारों का स्थान स्थान पर हमें अत्यन्त सुंदर विवेचन प्राप्त होता है। वर्णाश्रम के आदर्श, चारों वर्णो के कर्त्तव्य, कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य के कार्य आदि विषयों में तुलसी ने अपनी समाज सुधार की भावना की अच्छा परिचय दिया है। वास्तव में तुलसी का यह राम रसायन समाज के लिये वरदान सिद्ध हुआ।

स्व. रामचन्द्र शुक्ल जी ने लिखा है कि -

"गोस्वामी जी द्वारा प्रस्तुत नवरसों का यह राम रसायन ऐसा पुष्टिकर हुआ कि उसके सेवन से हिन्दू जाति विदेशी मतों के आक्रमण से भी बहुत कुछ सुरक्षित रही व अपने जातीय स्वरूपों को भी दृढता से पकडे रही।"

तुलसी की सर्वाधिक लोकप्रियता का कारण यह है कि उन्होंने सामाजिक आदर्शो की स्थापना की है व विभिन्न धर्मो तथा देवी देवताओं के प्रति समान आदर प्रदर्शित करके सांमजस्य की भावना का परिचय दिया है। राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बताकर उन्होंने लोक मर्यादा की रक्षा को आवश्यक बताया है। अतः तुलसी द्वारा बताया गया मार्ग सबके लिये अनुकरणीय है। तुलसीदास जी ने हिन्दुओं के हृदय में ऐसी दृढ़ मंगल आशा की ज्योति जगाई जो आज भी अपने पूर्ण प्रकाश के साथ ज्योतिर्मय है। प्रत्येक युग में असत् पर सत् की विजय होती है, इसी आधार पर भारतीय सभ्यता व संस्कृति आज जीवित है।

"मुखिया मुख सो चाहिये खान पान में एक।
पाल पोष सकल अंग तुलसी सहित विवेक॥"

आज जो हमारे समाज मे पारिवारिक विघटन हो रहा है। उसके संबंध में प्राचीन काल में गोस्वामी जी ने कहा है - जब सब इन्द्रियां स्थगित हो जाती हैं, तब आंसू ही उन भावों को प्रकट करने में सहायक होता है। लेकिन जो सरस चित्त वाले अर्थात विनम्र और सरल व्यक्ति होते हैं। वे अपने सुख दुःख को किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहते, वे उसे गोपनीय रखने की चेप्टा करते है। लेकिन ये आंसू उनके भावों को गोपनीय रखने की चेप्टा को भी व्यर्थ कर देते है अर्थात आंसुओं से उनके सुख दु·ख के भाव ज्ञात हो जाते हैं क्योंकि आसुओं को रोक लेना गंभीर प्रकृतिवालों की भी शक्ति के वाहर होता है।

❑

मूक वेदना के रक्षक

✍ श्रीमती कमला श्रीवास्तव
पूर्व शिक्षिका

पीडित मानव की सुन पुकार,
रक्षा करते थे उसी काल ।
हे मूक वेदना के रक्षक,
हारा था तुम से महाकाल ॥ 1 ॥

गो रक्षक पालक मूक वधिर,
मानव अपग के रक्षक थे ।
थे सबके पालनहार आप
शिक्षण सस्था के पोषक थे ॥ 2 ॥

जो अभाव से त्रस्त व्यथित,
उनके उर के ज्ञानी ध्यानी ।
अब बाट जोहते वे तेरी,
कब आयेगा करुणा-दानी ॥ 3 ॥

तुम रत्न पारखी सर्वश्रेष्ठ,
मानवता के हित चिन्तक थे ।
सवेदनशील, परोपकारी,
स्वाध्यायी आत्म चिकित्सक थे ॥ 4 ॥

तुम मूक वेदना सहते थे,
सबकी आखे भर आती थी ।
साक्षात भीष्म की शर शैया
स्मृति मे सबकी तर आती थी ॥ 5 ॥

हे मृत्युजयी, हे कालजयी,
छोडी हृदयो पर अमिट छाप ।
स्मृति मिटेगी कभी नही
चाहे मिट जाये स्वय आप ॥ 6 ॥

गणित
रोचक कैसे बनायें

✍ **श्री सोहनलाल गुप्ता**
बी.एस.सी., बी.एड.
क. व्याख्याता

गणित नाम लेते ही कुछ के रोम रोम खिल उठते हैं तो कुछ के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, ऐसा क्यों होता है ? गणित जिसमें सर्वाधिक अंक तथा न्यूनतम अंक का अंतर सर्वाधिक होता है,ऐसा क्यों होता है ? गणित जिसमें कुछ को गणित के अलावा कोई विषय ही नहीं दिखता है, तो कुछ को गणित करना तो दूर गणित को छूने से ही डर लगता है, ऐसा क्यों होता है ? आदि बहुत से ऐसे प्रश्न है जिनका उत्तर खोजना अत्यन्त आवश्यक है।

गणित विषय में कमजोर छात्रों में से अधिकांश छात्र केवल इस वजह से कमजोर होते हैं क्योंकि वे गणित को एक कठिन विषय मान लेते हैं, जबकि हकीकत इसके विपरीत है। यदि वे अपने मन से इस डर वाली मनोवृत्ति को निकाल फैंके और गणित के पास आएं तो काफी हद तक तो उनमें वैसे ही सुधार हो जाएगा और साथ ही साथ जरूरत है अभ्यास की।

प्रत्येक छात्र में दिमाग लगभग बराबर होता है। जरूरत है उसे इस्तेमाल की, जो उसे जितना ज्यादा इस्तेमाल करता है वह उतना ही पारंगत हो जाता है। उदाहरण के तौर पर एक ही कम्पनी की सिलाई मशीन का लीजिए, उनमें से एक मशीन अपने घर में आती है तो दूसरी मशीन किसी व्यस्त दर्जी के पास, कौन कितनी आसानी से चल सकती है तथा उसका कारण आप सभी अच्छी तरह जानते हैं। एक अन्य उदाहरण में एक अनपढ सब्जी विक्रेता एक पढे लिखे व्यक्ति की अपेक्षा अपना हिसाब उससे कही जल्द निकाल सकता है कारण, वही अभ्यास।

तो बात चल रही थी अभ्यास की, गणित से डरने वालों को गणित नहीं आती, बल्कि गणित उसे और डराती है। गणित एक सागर है इसमें डुबकी लगाइये तैरना खुदबखुद आ जाएगा। जल से डरने वाले तैरना नहीं सीख सकते। आप गणित विषय से डर कर या हताश होकर कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। आप जिस स्थिति पर भी हैं बहुत अच्छे हैं तथा वहां से आगे बढना शुरु करें अर्थात जिस सीढ़ी पर आप हैं वहां से चढ़ना शुरु करें, एक एक सीढ़ी चढ़े तो आप अवश्य मंजिल पर पहुंच सकेंगे।

सबसे जरूरी चीज है कि आप जो भी प्रश्नावली प्रारम्भ करने जा रहे हैं तो उस प्रश्नावली का अर्थ आपको स्पष्ट होना चाहिये। उदाहरण के तौर पर आप वर्ग के परिमाप के सवाल निकाल रहे हैं तो आपको वर्ग क्या होता है तथा परिमाप के अर्थ से भलीभांति परिचित होना चाहिये, अन्यथा हो सकता है उस समय आप वे सवाल हल कर लें किन्तु बाद में सूत्र याद न होने के कारण हल न कर सकें, ऐसे में यदि वर्ग के परिमाप का अर्थ कि वर्ग चारों भुजाओं का योग है, अब क्योंकि वर्ग की चारों भुजाएं बराबर होती है इसलिए,उसका परिमाप 4 गुना भुजा करके ज्ञात कर सकते है इसलिए किसी सूत्र को रटने की अपेक्षा समझ कर याद करें। एक अन्य उदाहरण समीकरण का लेते हैं जिसमें माना पिता की वर्तमान आयु एक्स वर्ष तथा पुत्र की वर्तमान आयु वाई वर्ष है तथा कहा जाए कि पिता की आयु पुत्र की आयु से तिगुनी है। अब इसका समीकरण बनाने के लिए कहने पर कई छात्र एक्स = 3 वाई करते है तथा कई 3एक्स = वाई करते हैं। यदि छात्र इनके अर्थ के अन्तर से परिचित हो जाएं तथा बता सकें कि यहां एक्स = 3 वाई ही ठीक है तथा समीकरण 3

तिगुनी होने पर बनेगा जो कि असभव है । यदि छात्र इनके अथ के अन्तर से परिचित हो जाए तथा वता सके कि यहा एक्स = 3 वाई ही ठीक हे तथा समीकरण 3 एक्स = वाई का अर्थ तो पुत्र की आयु पिता की आयु से तिगुनी होने पर बनेगा जो कि असभव है । यदि छात्र समीकरण की इन बातो को समझ कर सवाल हल करे तो निश्चित रूप से उसे सफलता मिलेगी । इसी प्रकार यदि छात्र औसत की प्रश्नावली हल कर रहा है और यदि उसे औसत का अथ नहीं मालूम तो यह बात उस अभ्यास म उसकी सफलता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है । ऐसे छात्रो के सवाल कभी तो हल हो जाते है और कभी हल नहीं होते । परिणामस्वरूप उसमे आत्मविश्वास पैदा नहीं हो पाता, ऐसे ही छात्र यह कहते हुए मिलते है कि परीक्षा के समय हम आते हुए सवाल भी गलत कर देते है । परीक्षा मे हमे न जान क्या होता है, सूत्र भी भूल जाते है ।

इस समस्या का समाधान है 'अभ्यास' । अपूर्ण तैयारी तथा आत्मविश्वास की कमी वाले छात्र ही इस समस्या से ग्रसित हाते हे । गणित विषय मे आप जितना अभ्यास करेंगे उतना ही लाभकारी होगा । अभ्यास करन पर आप उस तरह के सवालो की पेचिदगी से परिचित हो पाएगे, उन सवालो को हल करने का आसान तरीका निकाल पाएगे, उदाहरण के तौर पर आप काई सी भी पाच, छ सम सख्याए लेकर उन्हे पाच से गुणा करे तो निश्चित रूप से यह निष्कप निकाल सकेगे कि किसी समसख्या का पाच गुना उस समसख्या के आधे के दस गुने के बराबर होता है । कई छात्र केवल कुछ सवाल हल करके ही अपने मन म यह सोच लेते है कि उन्हे वह प्रश्नावली भली प्रकार से आ गई और वे उसी अपूर्ण तैयारी से परीक्षा देने चले जाते है और उस तरह के सवालो मे अटक जाते है । परिणामस्वरूप अन्य सवालो पर भी उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडता है उसका ध्यान वार वार उस अपूर्ण सवाल की ओर जाता है और जैसे जैसे परीक्षा का समय समाप्त होने को होता है, उसकी हडवडाहट वढ जाती है जिससे कई सवाल या तो छूट जाते हैं या अधूरे रह जाते है, उसका परिणाम आप अच्छी तरह जानते है । अब सोचिये दोप किसका है, दोप है उस अपूर्ण तैयारी का, उसी ने उसके आत्म विश्वास को डगमगाया । इसलिए पूरी तैयारी के साथ परीक्षा दीजिए ।

गणित विषय अन्य विपयो से अलग इसलिए है क्योकि इसमे उत्तर की एक सीमा है, जहा उत्तर आ गये सवाल खत्म हो गया, साथ ही साथ उत्तर सही मिलने पर नये सवाल के लिए प्रेरणा मिलती है, ताजगी आती है, एक नइ शक्ति का सचार होता है । यहा कुछ छात्रो का कहना है कि जब तक हमारे उत्तर मिलते जाते है तव तक हम गणित करना वहुत अच्छा लगता है । उसके लिए हो सकता है कोइ सवाल ऐसा हो जिसकी कोई वात आपके समझ नहीं आयी हो तो अपने अध्यापक की मदद से उसे हल करे लेकिन उस सवाल को फिर अच्छे अभ्यास से तैयार करे ।

एक ओर वात उसकी तैयारी के वारे मे वैसे तो पूरे साल भर की पढाई गणित परीक्षा मे काम आती है किन्तु परीक्षा से एक दिन पूर्व किया गया अभ्यास गणित विषय की परीक्षा के लिए महत्वपूण होता है । हर प्रकार के सवाल हल करने चाहिये कई छात्र केवल देखकर ही आते हैं हल नहीं करते जिससे कई सवालो मे वे अटक जाते है । कई छात्र इस अभ्यास हेतु नींद तक नहीं लेते तो ध्यान रखिये गणित विषय की परीक्षा हेतु रात को जगकर नहीं पढना चाहिये वल्कि अपनी सामान्य नींद लेकर तनाव मुक्त होकर परीक्षा दीजिए । कई छात्र परीक्षा केन्द्र तक जाते जाते भी किताव पढते हुए नजर आते है कई तो परीक्षा कक्ष मे भी सूत्र याद करते नजर आते है एव भयभीत रहते है तो ये वाते फायदा कम नुकसान ज्यादा करती है । परीक्षा समय से एक-दो घटे पूर्व पढना वन्द कर तनाव मुक्त रहिये तथा अपना आत्म विश्वास बनाये रखिये ।

तो गणित को रोचक बनाने का सार यह है कि गणित की मूलभूत वातो को स्पष्ट करते हुए अभ्यास करे,अपने आप मे आत्मविश्वास पैदा करे तथा पहले सरल सवालो को हल करते हुए कठिन सवालो की ओर बढे तो निश्चित रूप से आप मे गणित के प्रति रुचि बढेगी एव आप गणित मे अच्छे अक प्राप्त कर सकेगे ।

बढ़ती हिंसक प्रवृत्तियों के बीच अहिंसा का महत्व

✍ कु. प्रीति सुराणा
XII

अहिंसा परमो धर्मः

इसका तात्पर्य है कि अहिंसा ही सबसे परम धर्म है, अर्थात किसी भी मानव को अथवा पशु पक्षी आदि को सताना, मारना, दुःख पहुंचाना, मन से, वचन से, कर्म से तकलीफ देना हिंसा है, जरूरत से ज्यादा वस्तु को एकत्रित करके, दूसरों के मुंह का कौर छीनना, दूसरों के प्राणों को हरना, दुःख पहुंचाना आदि हिंसा है। इसके विपरीत किसी मानव का पशु-पक्षी को बचाना, रक्षा करना, आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना, जमाखोरी न करना, दूसरों को न सताना, प्रेमपूर्वक भाईचारे का व्यवहार करना अहिंसा है।

कहा गया है - ''आरमंजं दुक्खमिणं।'' संसार के जितने दुःख हैं, वे सभी हिंसा से ही प्रारम्भ होते हैं।

हिंसा व अहिंसा में वही अन्तर है जो कि विष व अमृत में। एक का अर्थ है-मृत्यु व दूसरे का अर्थ है अमरता। ठीक उसी प्रकार हिंसा प्रमाद व काम-भोगों की आसक्ति का परिणाम है। आत्मा की अशुद्ध परिणति है। हिंसा राग द्वेष का भाव उत्पन्न करती है। ठीक ही है -

हिंसा दुःख की बेल है,
हिंसा दुःख की खान।
अनन्त जीव नरक गये,
हिंसा का फल जान॥

इस प्रकार हिंसा नरक के मार्ग की ओर उन्मुख करती है। तो अहिंसा स्वर्ग का मार्ग दिखलाती है। अहिंसा शब्द हिंसा का निषेध है। अहिंसा में मैत्री है। सौहार्द है, एकता है, सुख व शांति है।

भगवान महावीर ने कहा कि ''जीवो और जीने दो''। अर्थात तुम स्वयं आनन्दपूर्वक जीओ व दूसरों के जीवन की भी अपना सर्वस्व देकर रक्षा करो। उनके कार्य में किसी भी प्रकार से रुकावट न बनो। अहिंसा मान अहंकार का विसर्जन कर आत्मा को उत्कृष्ट अवस्था की ओर अग्रसर करती है। संसार रूपी भव सागर से हमें पार ले जाती है। अहिंसा मानव जीवन के मार्ग को सुरक्षित बनाने हेतु दीपक का कार्य करती है। जीवन यात्रियों को ज्ञान का प्रकाश दिखलाकर मार्ग के विषेले जीवो अर्थात लोभ, मोह, माया, तृष्णा, ईर्ष्या, क्रोध आदि से सुरक्षा प्रदान करती है।

महात्मा गांधी ने अहिंसा का अर्थ बताते हुए कहा '' ऐसी हिंसा जिसमें युद्ध तो होता है, पर हथियारों से नहीं, अच्छाई का बुराई से। जिसमें मनुष्य की मृत्यु नहीं होती, अपितु उसे एक नव जीवन प्राप्त होता है, हिंसा कहलाती है।''

स्वामी महावीर ने कहा- ''सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिविउं।''

हिंसा को पशु की व अहिंसा को मनुष्य की पहचान

व्यक्ति का समाज धर्म जाति की सस्कृति अलग अलग होती है, इसलिए मूल्य भी अलग अलग होते है। जैसे कि आज भी भारतीय परिवारो मे परिवार के वृद्ध व्यक्ति परिवार पर भार नहीं माने जाते है । उनका आशीर्वाद जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परिवार मे सुख और दु ख दोनो स्थितियो मे उनका पूर्ण सहयोग भी लिया जाता है तथा वह परिवार पर बोझ नही माने जाते है। भारत मे बुजुर्गो को सामाजिक, आर्थिक एव शारीरिक सुरक्षा परिवार के बच्चे ही प्रदान करते है। और उसमे अपना सौभाग्य मानते है। इसके विपरीत पाश्चात्य देशो के जीवन मूल्य अलग है । वहा स्वार्थपरता अधिक है। उनकी सस्कृति के अनुसार परिवार के बुजुर्गो की जिम्मेदारी परिवार के बच्चो की जिम्मेदारी नही है। वहा भौतिकवादिता अधिक है। परिवार के वृद्ध जो कि हमारे जन्मदाता है उनके प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होगा । यह राष्ट्र समाज की सभ्यता एव सस्कृति पर निर्भर करता है।

जीवन मूल्य समाज की सभ्यता से प्रभावित होते है तथा व्यक्ति उन्हे ही अपनाता है जैसे व्यक्ति उन्ही लोगो के साथ रहना पसद करता है जिनके जीवन मूल्य जीवन के प्रति आचार विचार समान होते है। आज के बच्चे जो देश के भावी नागरिक होगे उनके जीवन मूल्य क्या होंगे ? इसी के आधार पर उस समाज अथवा देश का भविष्य निर्भर करता है। अत बच्चो के जीवन मूल्य निर्माण मे परिवार का पूर्ण योगदान होना चाहिए। वरना बच्चो और समाज दोनो के साथ विश्वासघात है। परिवार न केवल जीवन मूल्य ही सिखाता है, वरन् मूल्यो का भी निर्माण करता है। परिवार और समाज की समृद्धि मूल्यो पर ही निर्भर करती है। परिवार मे मूल्यो का निर्माण करना अत्यन्त उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य है। जीवन मूल्य वर्तमान के साथ साथ भविष्य को भी प्रभावित करते है।

मूल्यो को कई श्रेणियो मे रख सकते है । जैसे साधनात्मक जीवन मूल्य, यथार्थवादी जीवन मूल्य जो कि मनुष्य की विशेष इच्छाओ पर निर्भर करते है और कुछ जीवन मूल्य आदर्शवादी मूल्य होते है, जो कि नैतिकता पर आधारित होते है । इन मूल्यो के निर्माण के समय उचित और अनुचित का ध्यान रखना आवश्यक है । इनके अतिरिक्त कुछ मूल्य ऐसे भी होते है जो इन सबका मिश्रण होते है । जैसे प्रेम, स्वास्थ्य, आराम, इच्छायें, ज्ञान, बुद्धिमानी तथा खेल आदि। ये सभी मूल्य एक दूसरे पर आधारित है।

परिवार मे गृह प्रबन्ध एक साधनात्मक मूल्य होता है। जिसकी प्राप्ति परिवार के उपलब्ध मानवीय भौतिक साधनो के द्वारा होती है। इन मानवीय और भौतिक साधनो का प्रयोग हम कितनी कुशलता से करते है यह हमारी जीवन की व्यवस्था पर निर्भर करता है। इन साधनो के प्रयोग द्वारा अपने स्वय की व्यक्तिगत तथा परिवार की सामूहिक इच्छाओ की पूर्ति करता है।

मनुष्य जीवन को नियत्रित करने वाले जीवन मूल्य जिनमे प्रेम वह जीवन मूल्य है जो कि परिवार मे पति-पत्नी, बालक, अभिभावक,भाई-बहिन आदि के बीच होता है। परिवार मे इस मूल्य को प्राप्त करने के लिए एक दूसरे की भावनाओ को समझकर उसी के अनुसार कार्य करना, सामूहिक भावनाओ से प्रेरित होकर कार्य करना आवश्यक होता है। इसके अभाव मे आपसी समझौते और समझ की कमी रहती है। महत्वाकाक्षा जीवन का वह मूल्य है जो जीवन के हर भाग मे सफलता की इच्छा को प्रभावित करता है। सफलता प्राप्त करने की इच्छा किसी भी कार्य को करने की प्रेरणा देती है। ज्ञान और विवेकशीलता सफलता प्रदान करने मे सोने मे सुहागे का काम करती है। ज्ञान तथा विवेक के अभाव मे कोई भी परिवार किसी भी प्रकार

का कार्य करने में समर्थ नहीं हो सकता है। पारिवारिक सबंधों को दृढ़ बनाने के लिए परिवार के विभिन्न जीवन मूल्यों को प्राप्त करने के लिए ज्ञान एवं बुद्धि की अत्यन्त ही आवश्यकता होती है । परिवार के सदस्यों में ज्ञान और बुद्धि का विकास करने के लिए प्रत्येक सदस्य को इसके महत्व की जानकारी होनी चाहिए। महत्व की जानकारी होने के पश्चात किसी भी विषय के प्रति जागरूकता बढ़ जाती है।

बिना शारीरिक मानसिक विकास के अन्य मूल्यों की प्राप्ति संभव नहीं होती है। इसलिए इन मूल्यों के प्रति परिवार के सभी सदस्यों को जागृत रखना चाहिए।

धर्म वह मूल्य है जो मनुष्य को जीवन के सत्य से परिचय कराता है। सत्य की जानकारी प्राप्त हो जाने के बाद समाज, परिवार व मनुष्य के हित के लिए ही प्रयास करता रहता है। जिससे जीवन में सुख और शक्ति प्राप्त हो।

भारतीय संस्कृति के आधार पर जीवन मूल्यों को कुछ भागों में विभाजित कर सकते हैं जैसे आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक मूल्य।

आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक मूल्य वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए साधन का काम करते हैं तथा आध्यात्मिक एवं दार्शनिक मूल्य आदर्श तथा यथार्थ की व्याख्या करते हैं। गलत कार्यो को करने से रोकते हैं।

परिवार के सदस्यों की अभिवृत्तियों पर ही निर्भर करता है कि वह जीवन मूल्यों को किस प्रकार देखते तथा मानते हैं। उचित मूल्यों के निर्माण के लिए अभिवृत्तियों तथा परिपक्व विचारों की आवश्यकता होती है। यदि किसी परिवार में ऐसा नहीं हो तो परिवार में वैसा स्वस्थ वातावरण उत्पन्न करना चाहिए जिससे कि परिवार के सदस्यों में आवश्यक अभिवृत्तियां उत्पन्न की जा सकें।

प्रबन्ध का दूसरा उत्प्रेरक साधन लक्ष्य होता है। लक्ष्य के बिना मूल्यों का कोई महत्व नहीं है। किसी भी परिवार के लक्ष्य जीवन मूल्यों तथा विचारधाराओं व अभिरुचियों के द्वारा बनते हैं।

जीवन को सुखमय बनाने के लिए परिवार का प्रत्येक सदस्य सदा तत्पर रहता है। लक्ष्यों का निर्माण करना किसी समय विशेष पर होने वाली एक ऐसी क्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती। परिवार विशेष के लक्ष्यों को हम दो रूपों में देख सकते हैं - व्यक्तिगत लक्ष्य तथा सामूहिक लक्ष्य। कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति में लम्बा समय लगता है। कुछ जल्दी पूरे हो जाते हैं। पारिवारिक लक्ष्यों की कड़ियां समाप्त नहीं होती हैं वरना जीवन भी वहीं थम सा जायेगा। लक्ष्यों की प्राप्ति में एकांकी की तुलना में सामूहिक प्रयत्न अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

प्रत्येक परिवार को अपने परिवार के लक्ष्य निश्चित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, लेकिन जीवन मूल्यों के आधार पर। परिवार के सामूहिक लक्ष्य एक दूसरे की सलाह लेकर एक आम सहमति के आधार पर सामूहिक लक्ष्यों का निर्धारण होना चाहिए। जिससे उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी सदस्य मिलजुल कर प्रयत्न कर सकें। एक बात ध्यान रहे कि लक्ष्य साधनों की उपलब्धता और पारिवारिक आवश्यकताओं को देखते हुए निर्धारित किये जाएं विवेकशील एवं बुद्धिमान परिवार भविष्य के वड़े लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन के जीवन से ही साधनों को धीरे धीरे एकत्रित करते रहते हैं। लक्ष्य यथार्थवादी और व्यावहारिक हो तो लक्ष्य में सफलता अधिक दिखाई देती है।

वैसे तो प्रत्येक परिवार समाज और राष्ट्र की साधन प्राप्ति की परिस्थितिया अलग अलग होती है फिर भी कुछ लक्ष्य तो सार्वभौमिक होते है। जिन्हे व्यक्ति एव परिवार अपने अपने ढग से करता है। जेसे परिवार के सदस्यो का सर्वागीण विकास, अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति तथा परिवार के लिए आवास व्यवस्था आदि। परिवार के लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए एक योजना बनाकर उस योजना का क्रियान्वयन, परिवार के सदस्यो को सामाजिक एव राष्ट्रीय कल्याण की क्रियाओ मे भाग लेने हेतु तैयार करना, परिवार मे आवश्यक एव स्वस्थ वातावरण की सृष्टि करना इत्यादि अन्य भी लक्ष्य दीर्घकालीन लक्ष्य होते है जो कि लम्बे समय मे प्राप्त किये जाते है।

जीवन मूल्य और लक्ष्यो के वाद हमारा अगला और अतिम चरण होता है-स्तर। स्तर मनुष्य के जीवन के रहने के ढग का प्रतीक होता है। यह आवश्यक ही है कि मनुष्य के रहन-सहन का स्तर उनकी कल्पना के अनुरूप हो। लेकिन वह प्रयत्न करके कल्पना के अनुरूप स्तर की प्राप्ति कर सकता है। तथा उसे आत्म सतुष्टि होती है। मनुष्य कइ प्रकार की कल्पनाए करता हे परन्तु जब यह कल्पनाए प्रवल इच्छा का रूप धारण करके कार्य रूप मे परिवर्तित हो जाती है तो वह कल्पनाए न रहकर स्तर कहलाने लगती है।

परिवार का स्तर जीवन मूल्यो के द्वारा निर्धारित होता हे। कुछ स्तर परम्परागत व कुछ स्तर परिवर्तनशील होते है। परम्परागत स्तर के निर्धारण मे व्यक्ति की अपेक्षा परिवार अथवा सम्पूर्ण समाज का योगदान होता है। इस प्रकार के स्तर रूढिमत एव बडे परिवार के द्वारा या समूह के द्वारा मान्य होते है। इनकी विशेषता होती हे कि इनमे अधिक परिश्रम और अधिक समय की आवश्यकता होती है। ये अधिकतर उच्च स्तर के होते है।

परिवार अपने परम्परागत स्तर को मान्यता दे अथवा बदलते समय के साथ परिवर्तनशील स्तरो को अपना ले ये उन घटको से निर्धारित होते है जिनसे जीवन प्रभावित होता है।

स्तर को प्रभावित करने वाले वहुत से घटक है जैसे स्तर का समय, धन एव शक्ति की दृष्टि से कितना महत्त्व है। मूल्यो का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वो आर्थिक रूप से भार न वन जाये।

स्तर को प्रभावित करने वाला अगला घटक स्तर का जन्म स्रोत है क्या इस पर निर्भर करता है क्योकि शहर एव गाव मे रहने वाले व्यक्तियो के जीवन स्तर मे बहुत अन्तर होता है। स्तर निर्माण मे सस्कृति के साथ साथ मनुष्य की स्वय की प्रतिष्ठा आवश्यक आवश्यकताओ तथा सामूहिक हित की भावनाओ के सामजस्य का योगदान होता है। स्तर को वनाये रखने मे दूसरे परिवार के सदस्यो का भी प्रभाव पडता है। यदि परिवार द्वारा निर्धारित स्तर परिवार के अन्य सदस्यो के विकास मे बाधा उत्पन्न करता है तो उस स्तर को वदल दिया जाना चाहिए।

स्तरो का भौतिक मूल्यो से गहरा सबध होता है तथा जीवन स्तर और जीवन मूल्यो के निर्धारण मे पूर्ण सहयोग प्रदान करते है।

इस प्रकार हम देखते हे कि मूल्य, लक्ष्य तथा स्तर एक ऐसी चेन है जो हमारे जीवन को बाधे हुए है। जीवन को सुख की चरम सीमा पर पहुचाने मे सीढी का काम करती हे। व्यक्ति नये नये साधनो की खोज करके जीवन को सुखमय वनाने का प्रयत्न करता है।

❑

संघर्ष और नारी

✍ कु. कल्पना गुप्ता
पूर्व छात्रा

शत-शत वर्षों का इतिहास यही,
नारी संघर्षों के बीच रही ।

जीवन मधुमय कुसुम कानन,
महका संघर्षों के सौरभ से ।
वारि न वारिद वन पाये,
यदि सहे न ताप रवि कर से ।

संघर्षों की प्रतिछाया से,
नारी अबला से सबला बनी ।
विपिन के महान विटप सी,
उसकी है महिमा आज तनी ।

सिंधु उद्वेलित तरंगों पर,
जब शरद विकास नये सिरे से ।
मनु के संग श्रद्धा तरणी पर,
रघुकुलमणि वैदेही सद्य रही ।

अपने अस्तित्व, स्वाभिमानवश,
हर तूफां से है लडती रही ।
संघर्षों की गौरव गाथा ही,
है उसका अतीत और वर्तमान यही ।

विज्ञान युग केवल नर पौरुष नही,
नारी की भागीदारी है ।
नभ ऊचाई सागर अन्वेषण का,
श्रेय नारी को, जिसकी वह अधिकारी है ।

अपनी उर्वर प्रतिभा से,
सघर्षरत तन-मन से ।
नया सृजन करती वह,
अपने अंतः विवेक बल से ।

मानव जीवन, सभ्यता विकास,
संघर्ष तो उसकी थाती है ।
कंटक पथ अर्पित जिसका जीवन,
संघर्ष विलग कैसे रह पाती है ।

सघर्षों मे जिसने जन्म लिया,
सघर्षों में जीना सीखा है ।
नारी संघर्षों की पर्याय बनी,
नारी की क्षमता भारी है ।

21वीं सदी का भारत

✍ कु नूतन माथुर
पूर्व छात्रा

'कवि कालीदास ने कहा है, मनोरथ कभी न कभी पूरे अवश्य होते है। अत लेखिका को विश्वास है कि "21वी सदी का भारत" का एक सुन्दर सपना, एक सुन्दर कल्पना चित्र अवश्य साकार होगा, जो उन्होने इस लेख मे सजोये है।'

– सम्पादिका

"गायन्ति देवा किल गीतिकानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे"

देवताओ से भी वदित विश्व द्वारा गुरु रूप मे अभिनन्दित और सर्वे भवन्तु सुखिन की उदार भावना से समन्वित यह भारत भूमि सदा से ही मानव जाति की आशाओ का केन्द्र बिन्दु रही है। इसकी महान सास्कृतिक पृष्ठभूमि ने इसे अमरता का वरदान दिया है। हमारा प्यारा देश ससार का सबसे बडा प्रजातात्रिक देश है, जो 86 करोड से अधिक सतानो को अपनी गोद मे लिये, मस्तक पर धवल किरीट धारण किये और सागर मे पाव पसारे हिमालय की रमणीय कोमल गोद मे लेटा हुआ है। यही हमारा देश भारत है।

हमारे देश की महिमा अदभुत हे। प्राकृतिक रूप आकर्षक है। हमारा देश सृष्टि की सबसे सुदर रचना है। "प माखनलाल चतुर्वेदी" के शब्दो मे -

"तीन तरफ गगा की लहरे, जिसका वुने बसेरा
पतवारो पर नियति सजाती जिसका साझ सवेरा
यनती हो मल्लाह मुट्ठिया, सतत भाग्य की रेखा
रत्नाकर रत्नो को देता हो टकरा कर लेखा ॥"

हमारा देश वह है जहा गगा वहती है, जहा पिघली चादी सी सहस्त्र नदिया वहती है। जो विस्तार मे ससार का सातवा महादेश और जनसख्या की दृष्टि से विश्व मे दूसरे स्थान का सबसे बडा जनतत्र है। जो ऋषियो का तपोवन है, जो प्रकृति का उपवन है। हमारा देश वह है जिसकी हिमालय सदा रक्षा करता है। हिमालय ऐसा पर्वत है, जिससे बढकर धरती पर कोई ऊचा पर्वत नहीं है। "कवि दिनकर" के शब्दो मे हिमालय पर्वत की साकार प्रतिमा ऐसी है -

साकार, दिव्य गौरव-विराट पौरुष का पुजीभूत ज्वाल
मेरी जननी का हिमकिरीट मेरे भारत का दिव्यभाल।

हमारे देश मे एक ऐसे विश्व धर्म को मान्यता प्राप्त है, जिसके अनुसार सब मानव एक ही ईश्वर के पुत्र है। शरीरो के बाहरी रूप भिन्न है परन्तु आत्मा सब मे एक है। भारत मे धर्म निरपेक्षता को अद्वितीय गौरव प्राप्त है। यहा हमे आपस मे वैर नही अपितु भाई बन्दी की शिक्षा मिलती है। "महाकवि

तुलसीदास'' के शब्दों में -

''तुलसी या संसार में सबसे मिलियो धाय
न जाने किस रूप में नारायण मिल जाय ॥''

ऐसा सुंदर है हमारा देश। यहां का प्रत्येक नर भारत मां का पुत्र है और प्रत्येक नारी राष्ट्र की पुत्री। ''मैथिलीशरण गुप्त'' के शब्दों में भारत माता हमारी वह मां है -

''जिसकी रज में लोट लोट कर बडे हुए हैं,
घुटनों के बल सरक सरक कर खडे हुए हैं,
परमहंस सम बाल्यकाल में सुख पाये,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए ॥''

समय के चक्र से यह पावन भूमि अपने लक्ष्य से भटक गई थी किन्तु सैंकडों वर्षो की पराधीनता और पददलन से मुक्त होकर यह फिर उठ खडी हुई है। सुख समृद्धि का स्वर्ण युग विश्व का धर्म गुरु तथा सोने की चिडिया कहलाने वाला हमारा देश अधोगति की गहरी निद्रा में निमग्न है। आज अनेक विषम समस्याएं भारत को घेरे हुए हैं।

भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, निर्धनता, बढ़ती जनसंख्या, बेकारी आदि की समस्याओं से भारतीय जन मानस त्रस्त है। सिफारिशें न्याय का गला घोंट रही हैं। उत्कृष्टता सिर धुन रही है। श्रमिकों का शोषण हो रहा है। भुखमरी का तांडव नृत्य हो रहा है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हम विदेशों के समक्ष हाथ पसार रहे हैं।

किन्तु मुझे विश्वास है कि 21वीं सदी का भारत पुन: अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करेगा। आने वाली सदी भारत के प्रति मेरी इच्छाओं को साकार रूप देगी।

भारतीय संस्कृति सदा से ही उदारता और सहिष्णुता की पक्षधर रही है। यह मनुष्य मात्र के कल्याण की बात सिखाती है। भारतीय संस्कृति धर्म को मनुष्य का मौलिक लक्षण मानती है।

''धर्म हि लेषा मधिको विशेषो,
धर्मेण हीना: पशुभि: समाना।''

किन्तु भारत का धर्म कट्टर साम्प्रदायिकता नहीं है। वह तो मनुष्य के स्वभाविक कर्त्तव्यों का समूह है। 21वीं सदी का भारत इसी उदार सांस्कृतिक दृष्टि से ओत-प्रोत होगा। वह विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रचारक और सभी धर्मों को सम्मान देने वाला होगा। किन्तु भारत की उदारता को उसकी कायरता समझने वाले अपनी मूर्खता का परिणाम भोगेंगे। मेरा भारत अपने देशवासियों को रुढ़ियों और मृत परम्पराओं की जंजीर में नहीं बंधने देगा। वह अपनी प्रजा को सोचने विचारने और आचरण करने की स्वतन्त्रता देगा। उसकी घोषणा होगी .-

''पुराणमित्येव न साधु सर्व
न चापि किंचिद नवमित्यवद्यं।''

अर्थात् प्राचीन होने से सबकुछ उचित नहीं है और न ही नवीन होने से कोई बात अनुचित होती है।

यह मेरा विश्वास है कि आने वाले समय में भारत अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता से सम्पूर्ण विश्व में सम्मान पायेगा।

भारतीय समाज एक आदर्श समाज होगा। वह शोषण विषमता और हर प्रकार के सामाजिक भेदभाव से मुक्त होगा। उस समाज का विभाजन कर्म पर आधारित होगा। धर्म, जाति, समुदाय अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर मनुष्य मनुष्य में कोई भेदभाव नहीं होगा। समाज में प्रतिष्ठा का आधार सेवा भाव और जीवन मूल्यों में विश्वास होगा।

विद्वानो, कलाकारो, वैज्ञानिको, शिक्षको और समाज सेवको का सम्मान होगा।

समाज की आर्थिक व्यवस्था शोषण मुक्त होगी। वह सहयोग और लोकहित पर आधारित होगी। उद्योग और व्यापार केवल लाभ कमाने के साधन नही होगे। अस्वस्थ स्पर्धा और एकाधिकार से अर्थव्यवस्था मुक्त रहेगी। मेरा भारत विश्व की एक सर्वमान्य शक्ति होगा।

मेरा भारत विज्ञान के क्षेत्र मे भी प्रगति के शीर्ष पर होगा। उसकी वैज्ञानिक उपलब्धिया समस्त मानव जाति के हित मे प्रयुक्त होगी। चिकित्सा के क्षेत्र मे असाध्य रोगो की औषधियो का निर्माता होगा। कृषि के क्षेत्र मे उत्कृष्ट बीजो का अन्वेषक होगा। प्रकृति के अज्ञात रहस्यो का उद्‌घाटक होगा।

अन्तरिक्ष मे उसको यानो के स्वर गूजेगे। वह प्रदूषण मुक्त ऊर्जा के निर्माण मे शीर्षस्थ होगा। उसके द्वारा आविष्कृत अस्त्र-शस्त्र अद्वितीय होगे। किन्तु उनका प्रयोग आत्म रक्षा और दुष्टो के विनाश के लिए होगा।

राजनैतिक दृष्टि से भी मेरा देश विश्व की एक सम्मानित हस्ती होगा। वह राजनीति मे नैतिक मानदण्डो की प्रतिष्ठा करने वाला होगा। राजनीति मे भ्रष्टाचार और स्वार्थ को निर्वासित करके 'सर्वजन हिताय' की भावना से शासन करने वाला होगा। मेरे भारत के राजनैतिक दल परस्पर सहयोग भाव से शासन मे भाग लेगे। अपराधियो और तानाशाहो का भारत की राजनीति मे कोई स्थान नही होगा। राजनैतिक नेता सच्चे समाज सेवी और त्याग भावना से पूर्ण व्यक्ति होंगे।

इसके अतिरिक्त शैक्षिक दृष्टि से, सम्पन्नता की दृष्टि से और लोक कल्याण की दृष्टि से भी मेरा देश भारत ससार का श्रेष्ठतम राष्ट्र होगा।

अपने व्यवहार शक्ति और सम्पन्नता की दृष्टि से तथा अपने ज्ञान विज्ञान के बल पर भारत सारे विश्व मे महान् प्रतिष्ठा का पात्र होगा। वह विश्व गुरु के अपने पूर्व गौरव को पुन प्राप्त करेगा। अन्तत हम सबको मिलकर राष्ट्र के उत्थान मे योगदान देना है। क्योकि इसकी कीर्ति हमारी कीर्ति है, इसकी उन्नति हमारी उन्नति है, इसका अपमान हमारा अपमान है और इसका मान हमारा मान है।

यह है हमारा देश भारत। इस धरा का एक-एक कण हमारा है। आओ हम सब मिलकर गाये।

"जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता"

क्योकि हमार देश ससार के सभी देशो मे शाति, मैत्री, निष्पक्षता और न्याय का पक्षपाती है। वह सभी देशो के साथ मित्रता व समानता का व्यवहार रखता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत अपनी त्यागमयी सस्कृति से पृथक न होकर भी वह हर दृष्टि से प्रगतिशील व आधुनिक होगा। वह प्राचीनता और नवीनता का एक अद्‌भुत सगम होगा। विश्व भर के राष्ट्रो के लिये प्रेरणा का स्रोत होगा।

शिक्षा का प्रासंगीकरण

✍ **श्रीमती पूनम सक्सैना**
एम. कॉम., बी. एड.
व्याख्याता

'शिक्षा मनुष्य को ज्ञान और चेतना के प्रकाश से सच्चा मनुष्य बनाती है। शिक्षा मनुष्य की समस्त शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास करती है। अतः वर्तमान शिक्षा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है जिससे छात्र पाठ्य पुस्तकों के सीमित दायरे में सिमटकर परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने का साधन मात्र न बनकर अपना नैतिक व चारित्रिक उत्थान कर सकें।'

- सम्पादिका

''मानव शरीर में विद्यमान मानव की आत्मा ही परमात्मा है, अतः आत्मा के विकास हेतु दी हुई शिक्षा ही मानव मात्र के लिये हितकारी सिद्ध हो सकती है, केवल शरीर पोषक शिक्षा नहीं।''

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उपयुक्त स्वरूप ही जीवन के लिए सार्थक है। शिक्षा मानव को प्रकाश देती और उसके शारीरिक व मानसिक तन्तुओं को विकसित भी करती है। उसका लक्ष्य मनुष्य के जीविकोपार्जन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने तक ही सीमित न होकर ऐसा होना चाहिये, जिससे मनुष्य समाज का एक उपयोगी सदस्य बन सके। जीवन में सच्ची सफलता बौद्धिक विकास पर ही निर्भर न रहकर शुष्क व स्थिर स्वभाव तथा निष्कलंक चरित्र पर अधिक निर्भर है। अतः व्यक्ति के व्यावहरिक जीवन से संबंधित शिक्षा ही उसके तथा समाज के लिये मंगल विधायक बन सकती है।

शिक्षा व्यक्तित्व के विकास का सबसे बडा साधन है। यह व्यक्ति की प्रतिभा को जागृत करती है। उसे सभ्य जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा बहुउद्देशीय होती है, मस्तिष्क का विकास करती है, उन तकनीकियों को स्पष्ट करती है, जिन पर आधुनिक सभ्यता आधारित है। शिक्षा का मूल उद्देश्य विवेक तथा भावना का अनुशासन स्थापित करना है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिये आवश्यक है कि विवेक तथा भावना का समन्वय हो। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का संबंध बुद्धि, आत्मा तथा शरीर से होना चाहिए।

प्रजातंत्र के इस युग में हमारी सबसे बडी व सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा के व्यापक प्रसार की है, ऐसी शिक्षा जो जीवन के लिये हो, न कि जीवनयापन के लिये।

वर्तमान में जो शिक्षा विद्यार्थियों को प्रदान की जाती

है, वह आदर्श व पूर्ण नहीं कही जा सकती। शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को हम भुला बैठे है। आज की शिक्षा प्रणाली का स्वरूप पूर्णत एकागी है। केवल पुस्तक ज्ञान प्राप्त कर परीक्षाये उत्तीर्ण करना व जीविकोपार्जन मे लग जाना शिक्षा का ध्येय समझा जाने लगा हे।

आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल जीवनयापन के लिये नौकरी पाना ही रह गया है। विद्यार्थी नौकरी की आशा मे इस उद्देश्यहीन शिक्षा को ग्रहण करते चले जाते है और जब रोजगार की तलाश मे निकलते है तो हर स्थान पर ना उम्मीदी ही हाथ लगती है। शिक्षा को जीविकोपार्जन का ध्येय मान लेना हमारी सबसे बडी भूल है। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य जीवन को उन्नत बनाने का होना चाहिये।

सच्चे अर्थो मे शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो उद्देश्यात्मक, चेतनयुक्त, परीक्षणात्मक, उत्तेजक तथा प्रोत्साहक हो। शिक्षा का प्रयोजन सच्चरित्र वाले नागरिको का निर्माण करना है। कोई भी व्यक्ति इस तथ्य से इकार नहीं कर सकता कि विश्व मे बुराइया विकृत राजनीतिक मशीनरी से उत्पन्न होती है तथा ऐसी बुराइया केवल उसी स्थिति मे दूर की जा सकती है जबकि मानव चरित्र मे सुधार हो जाये। लिविग स्टोन के अनुसार राजनीतिक समस्या मूलत मानव चरित्र से सबधित है। यदि व्यक्ति का चरित्र उच्च हो तो सघर्ष, लालसाये, वासनाये इत्यादि स्वत ही दूर हो जाती है। यह सही है कि राज्य का निर्माण अनेक प्रकार के भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक तत्वो से मिलकर होता है, परन्तु फिर भी इसमे व्यक्ति का चरित्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि किसी राष्ट्र के नागरिक बौद्धिक गुणो, बुद्धिमता, प्रतिभा, निर्णय करने की क्षमता तथा दूर दृष्टि से युक्त नहीं है तो ऐसे नागरिक अपने राष्ट्र का उत्थान नहीं कर सकते। किसी भी देश का भविष्य काफी कुछ हद तक उसके निवासियो पर निर्भर है। इस सबध मे यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि मानवता अपना आवरण बदलती है, स्वभाव नहीं। अत जब तक शिक्षा अपने चरित्र निर्माण के दायित्व को पूरा नहीं करती, वह व्यर्थ है। जब तक शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सार्थक न बनाये, तब तक वह शिक्षा नहीं बल्कि केवल पुस्तक ज्ञान है।

प्रो रास्किन के अनुसार "शिक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि लोगो को उस तथ्य का ज्ञान कराना, जिसे वे जानते नहीं, बल्कि शिक्षा से तात्पर्य उन्हे ऐसा व्यवहार करने के लिये प्रेरित करना है, जैसा व्यवहार उन्हे करना चाहिये।

लिविग स्टोन के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण करना है। प्लेटो ने भी इस सबध मे यह कहा है कि शिक्षा यद्यपि राज्य का आधार है परन्तु शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य चरित्र तथा अनुशासन की भावना का विकास करना है।

प्राचीन काल मे शिक्षा का स्वरूप आज से सर्वथा भिन्न था। गुरुकुल मे रहकर विद्यार्थी अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ मूल्यो का ज्ञान अर्जित करते थे न कि आज की भाति निरर्थक शिक्षा का। पुराने समय मे शिक्षा का जीविकोपार्जन से केवल आशिक सबध था, परन्तु वर्तमान मे तो शिक्षा पूर्णरूपेण जीविकोपार्जन के उद्देश्य से प्राप्त की जाती है। चरित्र निर्माण करना शिक्षा की परिभाषा मे सम्मिलित नहीं।

यह तथ्य सत्य की परिधि में आता है कि शिक्षा आंशिक रूप से जीवनयापन में सहायक हो, लेकिन उसका उद्देश्य चरित्र निर्माण भी हो। आज विद्यार्थी पी.एम.टी. की परीक्षा इस उद्देश्य से उत्तीर्ण करते हैं कि वे चिकित्सक अथवा इंजीनियर बन जायें। अतः इस प्रकार की शिक्षा उद्देश्यात्मक है जो कि आवश्यक है लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को भुला कर केवल जीविकोपार्जन में लग जायें।

जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं **उसी तरह** शिक्षा के भी दो मौलिक पहलू हैं। यहां पहले **रूप से** तात्पर्य उस शिक्षा से हैं जो जीवन सार्थक बनाने में सक्षम हो। दूसरे रूप से तात्पर्य है कि आंशिक रूप से शिक्षा जीवनयापन में भी सहायक है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों को चारित्रिक व शारीरिक विकास को कोई महत्व नहीं दिया जाता। अपने विषय की पाठ्य पुस्तकों को रट कर परीक्षायें उत्तीर्ण करना, बस यही तक विद्यार्थियों का शिक्षण सिमट कर रह गया। छात्रों को विनय, अनुशासन, शिष्टाचार, कर्त्तव्यपरायणता, सदाचार व नैतिक गुणों की शिक्षा नहीं दी जाती। उनके चरित्र निर्माण पर विशेष बल नहीं दिया जाता। धार्मिक व नैतिक गुणों की शिक्षा को उपेक्षा व तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है। आज उसी का परिणाम है कि विद्यार्थी आज अत्यन्त अविनयी, उच्छृंखल व अनुशासनहीन बनता जा रहा है।

अतः वर्तमान शिक्षा पद्धति में पर्याप्त सुधार की जरूरत है। स्वतंत्र देश की शिक्षा का ध्येय बालकों की सर्वांगीण उन्नति करना ही होना चाहिए। शिक्षा केवल पाठ्य-पुस्तकों के सीमित दायरे में सिमटकर परीक्षायें उत्तीर्ण करने का साधन **मात्र न** बने और न शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य जीविका-निर्वाह मात्र रहे, अपितु शिक्षा के माध्यम से हमारे बालकों की प्रतिभा का विकास हो, उनके चरित्र का निर्माण हो, तथा शारीरिक व मानसिक सभी रूपों में उनके व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास हो।

शिक्षा के ऐसे ही आदर्श स्वरूप पर हमारे राष्ट्र की उन्नति निर्भर है।

❑

पतन के गर्त में गिर पड़ना ढलान की ओर बहाव की तरह सरल है। उबरना और उठना कठिन है। इतना कठिन कि जो आत्मविश्वास के बिना और किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता।

●

शालीनता बिना मोल मिलती है। परन्तु उससे सबकुछ खरीदा जा सकता है।

●

बेईमान व्यक्ति भी ईमानदार साथी चाहता है।

सूर के काव्य मे बाल चपलता

✍ कु इतिका चौहान
XII B

वियोगी हरि जी ने उचित ही लिखा है "सूर" का दूसरा नाम "वात्सल्य" व वात्सल्य का दूसरा नाम "सूर" है। हिन्दी साहित्य मे सूरदास का विशिष्ट स्थान है। उनका काव्य सौष्ठव उनकी भाव व्यजना और उनका मार्मिक प्रभाव देखते ही वनता है। वात्सल्य वर्णन मे तो उनका कोई सानी ही नहीं है।

जन्माध होते हुए भी उन्होने कृष्ण की वाललीलाओ का जो वर्णन किया है, उसे देखते हुए कोई कह नहीं सकता कि ये जन्माध थे। वाल लीला के पद पढ़ने पर हमारी आखो के सामने कृष्ण लीला का चित्र सा खिच जाता है। सूर का वात्सल्य वर्णन मनोविज्ञान, भक्ति और दर्शन का पावन सगम है। वात्सल्य के क्षेत्र मे केवल हिन्दी साहित्य मे ही नहीं अपितु विश्व साहित्य मे भी सूर की प्रतिमा वेजोड है। ये बाल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे प्रविष्ट होकर शैशव की मनोहर झाकिया हमारे चक्षुओ के सम्मुख साकार करते है। कृष्ण की विभिन्न बाल सुलभ चेष्टाओ का जो कलात्मक वर्णन उन्होने किया हे उसे पढकर हमारा हृदय गद्‌गद्‌ हो जाता है।

सूरदास जी ने वालक के विकास की सभी अवस्थाओ को सुदर रूप मे चित्रित किया है। कवि कहते है कि -

"ब्रज भयो महर के पूत जव ये वात सुनि।
सुनि आनन्दे सव लोग गोकुल गनक गुनि"॥

माता यशोदा का समस्त व्यक्तित्व कृष्ण के वात्सल्य प्रेम मे घुल मिल गया है। वह कृष्ण को सुलाते हुए नीद को बुलाने के लिए लोरी गाती है।

"जसोदा हरि पालने झुलावे।
हलरावे दुलरावे जोई सोई कुछ गावे"॥

यशोदा के हृदय मे वडी अभिलाषा है कि कब उनके लाल घुटनो के वल चलेगे, कब उनके दूध के दात चमकेगे, कब उनके मुख से तुतलाहट भरे स्वर निकलेगे। यशोदा कहती है कि -

कब मेरो लाल घुटुरूअन रेगे कब धरनी पग नैक धरै।
कब दैदत दूध के देखो कब तुतरे मुख वैन झरै॥

मातृ हृदय की कैसी सरस व्यजना है। माता की आकाक्षा पूर्ण होती है, कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाए माता पिता को आनदित करती है। कृष्ण घुटनो के वल चलते है व मणिमय कनक आगन पर प्रतिबिम्ब पकडने का प्रयास करते है।

"किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आगन विम्ब पकरिये धावत'॥

यह उस समय का वर्णन है जब श्रीकृष्ण दूध न पीने की हठ करते है, तव माता यशोदा उनकी चोटी बढने का प्रलोभन देती हैं। श्रीकृष्ण अपनी चोटी को बार बार देखकर सहज जिज्ञासा के भाव से पूछते है।

"मैया मोरी कबहि बढ़ेगी चोटी ।
किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूं है छोटी" ॥

इस पद में बाल स्पर्धा का सुंदर चित्रण किया है, एक बार खेल में सुदामा द्वारा हराए जाने पर श्री कृष्ण बेईमानी पर उतर आते हैं, तब सुदामा कहते हैं कि -

"खेलत्त में को काको गोसयां।"

बाल्यकाल उस समय तक पूर्ण नहीं होता जब तक उसमें संघर्ष नहीं होता। सूरदास जी ने भी इन भावों को सुंदर रूप में चित्रित किया है। खेल में बलराम व सभी ग्वाले मुझे चिढ़ाते हैं और कहते हैं कि इसे तो मोल लिया है। कैसी बाल सुलभ उत्कंठा है। श्री कृष्ण जाकर इसकी शिकायत अपनी मां से करते हैं व कहते हैं कि -

"मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ ।
मोसो कहत मोल को लीन्हौ तू जसुमति कब जायौ ॥"

कृष्ण अपनी मां से कहते हैं कि आप सदैव मुझे ही मारती हैं, भैया को नहीं मारती। इस पद में बाल सुलभ ईर्ष्या का सुंदर चित्रण किया है।

"तू मोही को मार न सीखी, दाऊ कबहुं न खीझै।"

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि बालक सर्वाधिक स्वार्थी होता है तथा वह सभी वस्तुओं पर अपना एकाधिकार चाहता है, फिर भला कृष्ण जो यशोदा माता के लाडले और सबसे छोटे पुत्र हैं, उनके अधिकारों की सीमा बांधना तो असंभव ही है। कृष्ण द्वारा अपने बडे भाई बलराम की शिकायत पढ़कर प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख उसका बचपन सजीव हो उठता है।

मां अपने पुत्र के मुख से ऐसी बातें सुनकर प्रसन्नता से कहती है कि हे पुत्र ! बलराम तो जन्म का ही धूर्त है। मैं गायों की सौगन्ध खाकर कहती हूं कि मैं ही तेरी माता व तू ही मेरा पुत्र है।

"सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत को ही धूत ।
सूर स्याम मौहे गोधन की सौं हो माता तू पूत" ॥

श्रीकृष्ण बड़े चंचल व नटखट हैं। मक्खन चुराकर खाने में तो वे सिद्धहस्त हैं। तंग आकर गोपियां कृष्ण को पकड़ कर यशोदा के पास उलाहना देती हुई ले जाती हैं तब कृष्ण अपनी वाक चातुर्य से स्वयं को निर्दोष सिद्ध करते हैं -

"मैया मैं नहिं माखन खायो ।
ख्याल परे ये सखा सबे मिलि मेरे मुख लपटायौ" ॥

एक दिन जब श्रीकृष्ण माखन खाते हुए रंगे हाथों पकड़े गए, तब अपने वाक् चातुर्य की कला से सबको रिझाने लगे और बोले -

"मैं जान्यौ यह घर अपनो है या धोखे में आयो।
देखतु हौ गौरस में चींटी काढ़न को कर नायो ॥"

सूर का वात्सल्य वर्णन वात्सल्य रस का महासागर है। उन्होंने बाल सुलभ हृदय की चपलता, स्पर्धा, ईर्ष्या, क्षोभ आदि अवस्थाओं को प्रकट किया है। उन्होंने एक माता के हृदय का वात्सल्य प्रेम से परिपूर्ण अवस्था को नैसर्गिक सौन्दर्य प्रदान किया है। बाल चपलता का वर्णन एक प्रकार का बाल मनोविज्ञान का मधुर रस है। सूरदास जी ने कृष्ण की बाल सुलभताओं को मनोहारी रूप में वर्णित किया है। रसवादी आलोचक रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार - 'वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्‌घाटन सूर ने अपनी बंद आंखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झांक आए।'

धरती कहे पुकार

✍ कु पिकी
X B

धरती कहे पुकार,
देश की धरती कहे पुकार,
ओ वीरो, मनु की सतानो,
कुछ तो करो विचार,
धरती कहे पुकार,
देश की धरती कहे पुकार,

सपना मेरा कब सच होगा,
बच्चा-बच्चा कब खुश होगा,
शान्ति के कब दीप जलेंगे,
प्रेम के कबतक फूल खिलेंगे,
दीन-दु खी मेरे पुत्रा का
कब होगा उद्धार,
धरती कहे पुकार,
देश की धरती कहे पुकार॥

देखो। पूरा सविधान एक है,
एक तिरगा, गान एक है।
विविध धर्म मय, विविध वर्ण मय,
पूरा हिन्दुस्तान एक है,
एक वृक्ष के विभिन्न अग तुम,
अगणित रूप हजार,
धरती कहे पुकार,
देश की धरती कहे पुकार॥

बन सहयोगी कदम बढ़ाओ,
शुभकर्मों मे नाम कमाओ।
धर्म गुरु सोने की चिड़िया,
भारत को तुम पुन बनाओ।
क्षुद्र भावो से मुक्ति पाओ,
रखो उच्च विचार।
धरती कहे पुकार,
देश की धरती कहे पुकार॥

एक समालोचना
फैशन शो

✍ श्रीमती मधु शर्मा
एमं. कॉम., बी. एड.
व्याख्याता (वाणिज्य)

'फैशन और व्यक्तित्व एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। फैशन बाहरी व्यक्तित्व के साथ-साथ आन्तरिक व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। आज का फैशन (पहनावा) आपकी मानसिकता का आईना है, इसलिए समझदारी इसी में है कि वही फैशन अपनायें जिसमें आपके व्यक्तित्व में निखार आये।'

- सम्पादिका

फैशन एक ऐसी युग प्रवृत्ति है जिसका प्रचलन तत्कालीन समाज की आर्थिक स्थिति और सामाजिक विचार धारा का दर्शन है। यूं तो फैशन की परम्परा सदियों से चली आ रही है। इसमें फर्क सिर्फ इतना पड़ा है कि पहले फैशन टिकाऊ हुआ करते थे। देशकाल की परिस्थितियों और जलवायु और रीति रिवाजों के अनुसार ही मर्यादित फैशन प्रचलन में होता था, किन्तु आज फैशन हवा के रुख की तरह न जाने कब परिवर्तित हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। इस परिवर्तनशील समाज में नित नये फैशन आते हैं और अपनी क्षणिक छटा बिखेर कर लुप्त हो जाते हैं।

अव प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों हो रहा है ? लोगों में अपने आपको औरों से अलग दिखाने की और अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने की मनोवृत्ति ही फैशन के इस बदलाव का मुख्य कारण है।

आधुनिकता के भंवरजाल में पड़कर हमने अपने सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य और जीवन मूल्यों को बिसरा दिया है। भौतिकता की चमक-दमक के पीछे अंधे होकर हम बेतहाशा दौड़े चले जा रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के अंधानुकरण में हमने अपनी मौलिकता खो दी है। हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं इसका हमें सदज्ञान ही नहीं है। बस हम वही करे जा रहे हैं जो हमारे भ्रमित मन को भाता है। क्या श्रेयस्कर है, क्या त्याज्य है, क्या वरेण्य है ? इसके अंतर हेतु हमारे पास विवेक बुद्धि नहीं है। बच्चों को सुसंस्कारित बनाएं, उनको नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें, इसके लिए हमारे पास समय नहीं क्योंकि पूर्णतः दिशाहीन जीवन जी रहे हैं हम। ऐसे में आग में घी का काम कर रहे हैं दूरदर्शन, देशी विदेशी चलचित्र और विज्ञापन। विज्ञापनों की श्रृंखला में ही समाज में पनप रही उपभोक्तावादी संस्कृति का भरपूर आर्थिक लाभ उठाने की मनोवृत्ति का साकार रूप है, फैशन-शो।

'फैशन-शो' का नाम आते ही मानस पटल पर एक

दृश्य उभरकर आता है सजे-धजे स्टेज पर लाईटो की जगमगाहट के बीच इठलाती-बलखाती नवयुवतिया भिन्न-भिन्न डिजाइन के चटकीले-भड़कीले वस्त्रो का प्रदर्शन करती है। अगर ये कहा जाए कि अग प्रदर्शन करती है तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

इसे देखकर होड मच जाती है हमारे युवा वर्ग मे नकल करने की। कॉलेज विद्या के मदिर हो या बाजार पार्क हो या गिरिजाघर सर्वत्र चलता फिरता फैशन शो नजर आता है। आज का समृद्ध वर्ग ही नहीं बुद्धिजीवी वर्ग भी फैशन के इस प्रदर्शन को वैभव और सम्पन्नता का प्रतीक मानता है, मगर मेरे विनम्र मत मे यह अन्त करण के दिवालिएपन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

एक लोकोक्ति है - गणगौर तो पहनी, ओढी ही चोखी लागे। लेकिन आज की गणगौर ने कम से कम वस्त्र धारण करने इस भौडे प्रदर्शन को ही अपना आदर्श मान लिया है। आज की नव यौवनाए शालीनता, सज्जनता, आत्मीयता और लज्जा जैसे प्रकृति प्रदत्त आभूपणो को त्याग कर कृत्रिम आभूपणो को धारण करके सुदर दिखने का भ्रमपाल बैठी है। शरीर को व्यक्तित्व का पर्याय मान बैठी है जिसके दुष्परिणाम हमारे सामने आ रहे है। पारिवारिक विघटन के रूप मे, बढते हुए असतोष के रूप मे, कुठा और तनावो के रूप मे और समाज मे बढती हुई आपराधिक मनोवृत्ति के रूप मे।

समाज को इस चक्रव्यूह से मुक्त कराने के लिए नारी को अपने स्वरूप को पहचानना होगा, अपने दायित्वो को समझना होगा। नारिया जो समय और साधन स्वय को सजने सवरने और केवल मात्र झूठे दिखावे मे गवाती है उसे उन्हे रचनात्मक कार्यों मे सयोजित करना चाहिए। बच्चो को सुसस्कारित बना कर सद्नागरिक बनाने मे लगाना चाहिए। बच्चो को उन जीवन मूल्यो और नैतिक मूल्यो की शिक्षा देनी चाहिए जिनको अपनाकर हमारे देश के वीर सपूतो ने स्वतत्रता की लड़ाई लडी। इससे परिवार मे सुख की वृद्धि होगी। राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा साथ ही नारी की गरिमा बढ़ेगी।

आज के अर्थ युग मे जब हमारा उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना रह गया है हम उक्त बातो को भुला बैठे है। इस तरह के फैशन शो आर्थिक विकास मे तो सहायक हो सकते है क्योकि फैशन व्यवसाय पर आधारित विभिन्न पाठ्यक्रम है, प्रशिक्षण केन्द्र खुले है, टैक्सटाइल डिजाइनिग, मर्चेटाइजिग गारमेट, मैन्यूफैक्चरिग उद्योग आदि जिनसे विभिन्न व्यक्तियो को रोजगार मिलता है। नवयुवक व नवयुवतियो मे आत्मविश्वास बढता है। इसलिए माता पिता भी अपने बच्चो को फैशन की दुनिया मे लाने के लिए प्रोत्साहन दे रहे है। फैशन शो मे काम करने वाला मॉडल अपने लिए पैसा कमाने के साथ-साथ समाजसेवी सस्थाओ के लिए बहुत पैसा इकट्ठा कर समाज सेवा मे अपना योगदान दे सकते है जैसा कि इन दिनो सुष्मिता सेन व ऐश्वर्या राय जैसी विश्व सुदरिया कर रही है। लेकिन दूसरी और ये ही फैशन शो सामाजिक विनाश के कारण बन सकते है। इसलिए हमे पुनर्मूल्याकन करना होगा। आकर्पक और मर्यादित फैशन बाहरी व्यक्तित्व के साथ साथ आतरिक व्यक्तित्व को भी निखार देता है। फैशन शो मे ऐसे फैशन का प्रदर्शन श्रेयस्कर होगा जो बजट को तो सतुलित रखे ही साथ ही रीति-रिवाज परम्पराओ और सामाजिक परिवेश व जलवायु के अनुकूल हो।

❑

प्रेमचन्द के साहित्य में वर्णित नारी की स्थिति

✍ कु. नीता गुप्ता
XII-B

साहित्य अपने युग का प्रतिबिम्ब और उसका सृज्य, उससे प्रभावित और गति देने वाला दोनों होता है। प्रेमचन्द जी का साहित्य अपने युग का स्पष्ट प्रतिबिम्ब और साहित्य को नई दिशा प्रदान करने वाला पहला संकेत और आन्दोलन है। प्रेमचन्द जी का साहित्य अपने युग की परिस्थितियों एवं उसकी समस्याओं का सच्चा दर्पण है। प्रेमचन्द जी के साहित्य में जहां एक ओर नारी के मर्मस्पर्शो का चित्रण देखने को मिलता है, वहीं दूसरी ओर नारी के प्रति समाज का रवैया देखने को मिलता है।

भारतीय नारी समाज का सबसे उपेक्षित वर्ग है। भारतीय मध्यमवर्गीय नारी की स्थिति तो और भी अधिक दयनीय है क्योंकि निम्नवर्गीय नारी के सामने समाज की कोई समस्या नहीं है। वह एक पति का परित्याग करके दूसरा विवाह कर सकती है और जो उच्चवर्गीय नारी है उसे तो किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं है, न खाने-पीने की और न रहने की। मध्यमवर्गीय स्त्रियां रह जाती हैं,वे घर की मर्यादा होती हैं। उनको अपनी इच्छाओं का गला घोटना पडता है। प्रेमचंन्द जी को नारी के त्याग व धैर्य के प्रति श्रद्धा है तथा नारी के प्रति सहानुभूति है।

प्रेमचन्द जी ने नारी को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है-प्रेयसी, पत्नी, मांता,बहिन आदि। प्रेमचन्द जी ने केवल भारतीय ललनाओं की असहाय अवस्था का वर्णन न करते हुए पाश्चात्य नारी को भी करीब से देखा है। भारतीय नारी त्याग, दया, क्षमा, करुणा की प्रतिमूर्ति है। उसका मुख्य उद्देश्य परिवार में स्नेह अमृत की वर्षा करना है।

नारी को हिन्दू समाज में देवी का रूप माना जाता है, जब नारी का जन्म होता है तो उसे कन्या कहते हैं। आज कन्या का जन्म अपने आप में दुखदायी हो गया है। कन्या का जन्म होना ऐसा माना जाता है कि पुनर्जन्म के ऋण से मुक्त होने हेतु है। परन्तु समाज ने उसे कन्या के रूप में न लेकर दासी जैसा व्यवहार किया। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी के साथ हो रही अनेक समस्याओं को उठाया है।

प्रेमचन्द की कहानी "नैराश्य" में निरूपमा का पति उसे सिर्फ इसलिए जली-कटी सुनाता है क्योंकि उसके घर में पुत्रियों ने ही जन्म लिया है। इसीलिए निरूपमा सदा उपेक्षित रहती है तथा घर में लोग उसे उठते-बैठते गाली देते हैं व उसके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करते हैं। हमारे समाज में दहेज समस्या कितनी विकराल हो चुकी हैं,यह हमें प्रेमचन्द की कहानी "कुसुम" में कुसुम की स्थिति देखकर पता चलता है कि किस प्रकार कम दहेज लाने पर कुसुम पारिवारिक स्नेह से वंचित रहती है।

प्रेमचन्दजी के उपन्यास ''सेवा सदन'' मे वैश्या समस्या को उठाया गया है। इसमे 'सुमन' का विवाह अपने से बडी उम्र के व्यक्ति के साथ होता है। पति आर्थिक व्यवस्था मे तनाव उत्पन्न होने पर उसे घर से निकाल देता है। वह वैश्यालय मे शरण लेती है व वहीं पर ''सेवा सदन'' की स्थापना करके नारी सुधार करती है।

इसी प्रकार प्रेमचन्द के ''प्रतिज्ञा'' उपन्यास मे वैधव्य से अभिशापित नारी के दयनीय जीवन का चित्रण है कि किस प्रकार समाज उस विधवा 'पूर्णा' के प्रति कठोर रुख अपनाता है। अन्त मे वह समाज के अत्याचारो से दु खी होकर सदेश देती है कि विधवाओ का या तो विवाह हो या फिर उनके अच्छे जीवन के लिए ''वनिता भवन'' की स्थापना की जाए।

प्रेमचन्द के उपन्यास ''निर्मला'' मे अनमेल विवाह के बाद की समस्या को उठाया गया है। इसमे दिखाया है कि अनमेल विवाह से किस प्रकार रिश्तो मे टूटन आ जाती है। ''कायाकल्प'' मे भी अनमेल विवाह की बुराई उजागर होती है, वही इसी मे दहेज समस्या को भी उठाया है। ''रगभूमि'' और ''कर्मभूमि'' मे प्रेमचन्द ने धन को देकर विवाह करने वालो पर कडा विरोध किया है।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपने साहित्य मे नारी समस्या को उठाया है तथा हमे अपने उपन्यासो के माध्यम से यह दिखाया है कि तत्कालीन समाज मे नारी पर क्या क्या अत्याचार किए जाते थे। इन्होंने नारी चरित्र को इन समस्याओ से लड़ते हुए तथा इस समस्याओ का सही अन्त भी बताया है।

आदमी

कु नीति बसल
X-B

आज सुनहरे लम्हो से सहमता जा रहा है आदमी ।
वक्त के सग सग बदलता जा रहा है आदमी ॥
हाल क्या है इन्सान का, क्यो उससे पूछते हो ।
आज सितारा ये सफर कर रहा है आदमी ॥
जगलीपन और बहरेपन की समा पर आकर ।
देखो सभ्यता के कैसे गीत गा रहा है आदमी ॥
सोच रहा है दिन मे कि मजिल मिल गई मुझे ।
पर आज राहो मे भटकता जा रहा है आदमी ॥
परमाणु शस्त्रो मे छेद कर आज समूचे राष्ट्र को ।
देखो समझौतो से कैसे बहला रहा है आदमी ॥
आज आदमी को आदमी का सहयोग नही मिल रहा ।
भाई भाई के खून का प्यासा हो रहा आदमी ॥
आदमी-आदमी का हक छीनने के लिए ।
मानवता को कुचलता जा रहा है आदमी ॥

लाना है फिर से बसन्त

✍ कु. विशाखा संघी
XII-D

लाना है फिर से बसंत
इस शोषण भरे समाज में।
लोग कहते हैं कि जब बसंत आता है,
हरियाली लाता है।
चारों तरफ खुशिहाली छा जाती है।
मैंने भी सोचा था कि अब बसंत आ गया है
अब खुशियां होंगी चारों ओर
मन सभी का झूमेगा,
गुनगुनाते भंवरों की तरह
नहीं कोई शोषित होगा,
गरीब के घर भी अब खुशियों का अम्बार होगा,
खेतों में छाई हरियाली की तरह
खुशबु लुटाती सरसों की तरह
लेकिन ऐसा कुछ न हुआ
बसंत भी आ गया
लेकिन मन फिर भी दुःखी थे
रो रहे थे गरीब अब भी, अपने नसीब को
इस बसंत को क्या कहें, दोष इसका है नहीं
दोष है इस समाज का
इस समाज के लोगों का, जो लड़ते झगडते रहते हैं
मंदिर मस्जिद को आधार बनाकर
लेकिन अब हमें बसंत के नाम को सार्थक बनाना है।
अब वापस हमको वही हरियाली और खुशियां लानी हैं
हर दिल में प्रेम की ज्योति जगानी है।
शोषण को मिटाना है, जिससे कि हर कोई कहे,
आया है फिर से बंसत इस शोषण भरे समाज में।

मेरी दृष्टि में "शिक्षा"

✍ कु. विशाखा संघी
XII D

मेरी दृष्टि मे शिक्षा, बिल्कुल,
वैसी ही होनी चाहिए।
जैसी थी गाधी के युग मे
जिसको पढ़ कर नही कोई,
रहता था बेकार।
सब करते थे अपना काम
नही चाहते थे वो
आज की तरह केवल "नाम"
वे पागल नही थे
आज के लोगो की तरह
जो चाहते है सरकारी कुर्सी
जिस पर बैठ कर,
करे वो आराम।
आज की शिक्षा ऐसी है,
जिसे पढ़ कर हम सब
केवल सरकारी नौकरी
या "पद" को ही चाहते है।
और किसी काम को छोटा ही समझते है।
और फिर शामिल हो जाते है
हम भी बेकारो की सख्या मे
इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए
जिससे व्यावहारिक ज्ञान मिले
और "हम" जो सरकारी कुर्सी
के पीछे ही पागल है
हम सबको नई दिशा मिले।

भ्रष्टाचार का दानव

कु. कविता गोरवानी
XII-A

'धर्म के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में और इन सबसे बढ़कर राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार सांस्कृतिक मूल्यों को समाप्त कर देता है। सच्चरित्रता, सहानुभूति, शालीनता, नैतिकता, पवित्रता ये संस्कृति के आधार स्तम्भ एक-एक करके धराशायी हो जाते हैं। भ्रष्ट लोगों का न कोई धर्म होता है न आदर्श। भ्रष्टाचार का अदृश्य जाल देश को पतन के गर्त में ले जा रहा है। इसलिए हमें शीघ्र ही विनाश को रोकने के लिए सचेत होना होगा।'

- सम्पादिका

एक प्रशिक्षित इंजीनियर जिसे आप अगर टेम्पो चलाते देखें, तो आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे। यह कल्पना मात्र नहीं, आज का सत्य है। मेरी एक निर्धन सहेली का भाई जिसे मैंने उक्त स्थिति में देखा, तो मेरे अचरज की सीमा नहीं रही। इस संबंध में जब सहेली से मेरी बात हुई तो उसने बताया कि यही सत्य है। न तो उनके पास धन है और न ही सिफारिश, जिसे आम भाषा में ''जैक और चैक'' कहते हैं। वह व्यक्ति कई महीने यहां अपने प्रमाण पत्र लेकर सार्वजनिक व निजी संस्थानों के चक्कर लगाता रहा लेकिन न तो उसे नौकरी मिली और न अपना व्यवसाय करने हेतु ऋण सुविधा। अधिकारी वर्ग व सभी लोगों ने उसकी योग्यता की तो तारीफ की, लेकिन रोजगार नहीं दिया, जिसकी उसे आवश्यकता थी।

यह तो एक छोटा सा दृष्टान्त है, हमारे समाज में फैल रहे इस भ्रष्टाचार रूपी दानव के कई बीज हमें दैनिक जीवन में नित्य देखने को मिलते रहते हैं।

कौटिल्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र में लिखा है - '' पद पर बैठकर कोई भी व्यक्ति तनिक भी भ्रष्टाचार में लिप्त न हों,यह उसी प्रकार असंभव है, जैसे कोई व्यक्ति जीभ पर नमक रखकर यह कहे कि उसने नमक का स्वाद नहीं लिया।'' कौटिल्य का यह कथन वर्तमान युग में अक्षरशः सत्य है। समाज का कोई भी क्षेत्र चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक या आर्थिक हो तथा उसमें कार्यरत अधिकार सम्पन्न व्यक्ति इस दानव के चंगुल से वाहर नहीं है। एक दो रुपये की ''वख्शीश'' रूपी रिश्वत लेने वाले चपरासी से लेकर करोडों अरबों रुपयों का हेरफेर करने वाले पूंजीपतियों, व्यापारियों, अधिकारियों तथा राजनेताओं तक में इसका साम्राज्य फैला हुआ है। आज तो यह कहा जाने लगा है 'आज ईमानदार वही

है, जिसे बेईमानी का अवसर नहीं मिला।' कोई जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु इसे अपनाता है, तो कोई ऐश्वर्य-सम्पन्नता के लिए।

समाज के किसी व्यक्ति द्वारा नैतिक मूल्यो का परित्याग कर अपनी मनमानी करना भ्रष्टाचार है अथवा कोई व्यक्ति अपनी क्षमता व योग्यतानुरूप काम न करे वह भी भ्रष्टाचार की श्रेणी मे आता है। भ्रष्ट व्यक्ति अपना प्रमुख ध्येय अपनी स्वार्थ सिद्धि को ही मानते है। वैसे तो इसका कुप्रभाव सम्पूर्ण समाज पर ही पड़ता है, परन्तु इससे वे लोग अधिक प्रभावित होते है जिनके पास पूजी के नाम पर मात्र अपना परिश्रम है। व्यापारी अपने आयकर व बिक्रीकर बचाने के लिए अफसरो को रिश्वत देते हैं और इसकी वसूली करते है श्रमजीवी जनता से। तो राजनेता किसी सौदे मे दलाली के माध्यम से यह कार्य सम्पन्न कराते है।

समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार को इन पक्तियो मे व्यक्त किया जा सकता है -

> *''कण कण मे बसा है भ्रष्टाचार,*
> *फैल रहा यह पाव - पसार,*
> *''जैक और चैक'' ठहर भगवान*
> *महत्वहीन हो रहा इसान और काम।''*

अग्रेजी शासनकाल मे ही इस दानव का बीज पड़ चुका था। तत्कालीन समय मे अग्रेज अफसरो को प्रसन्न करने हेतु तथा अपने कार्य की सिद्धि हेतु सामंतो आदि द्वारा डालिया भिजवाना इसका उदाहरण है। वही बीज आज बोफोर्स प्रकरण, चारा घोटाला, शेयर घोटाला, जैन-बन्धुओ का हवाला काड, चीनी घोटाला, लक्खु भाई की ठगी के रूप मे सामने आ रहा है।

हवाला काण्ड तथा लक्खु भाई की ठगी के मामले ने तो भारत के दिग्गज नेताओ तथा पूर्व प्रधानमत्री तक को अपनी चपेट मे ले लिया है।

इस प्रकार इस विष बेल की जड़े ऊपर से नीचे तक सर्वत्र व्याप्त है जिन्हे न तो एक दो वर्षों मे तथा न तो एक दो उपायो के द्वारा समाप्त किया जा सकता है। सरकार द्वारा बनाये गये कानून भी इसके लिए पर्याप्त नहीं है।

इसकी समाप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य मे आत्मबोध होना चाहिए। महात्मागाधी के कथनानुसार भी ''भ्रष्टाचार को धन की जगह श्रम को महत्त्व देकर सामाजिक चेतना व नैतिक शिक्षा के द्वारा समाप्त किया जा सकता है।'' सचार साधन व पत्र-पत्रिकाए भी इसे कम करने मे सहयोग दे सकती है।

अत भ्रष्टाचार का अत जनता के द्वारा जनता के लिए एवम् जनता को जागरूक करके ही किया जा सकता है।

❑

यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा, शास्त्रम तस्य करोति कि ,
लोचनाभ्याम विहीनस्य दर्पण कि करिष्यन्ति ।

आज भी प्रासंगिक हैं भगवान महावीर के सिद्धान्त

श्रीमती अर्चना जैन

एम. ए., बी. एड.

'लेखिका ने भगवान महावीर के विचारों को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। वर्तमान में रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। भ्रष्टाचार और अनाचार का जोर है, ऐसी स्थिति में महावीर के संदेशों को जीवन में उतारना ही त्राण पाने का एक मार्ग है। उनके सिद्धान्त आज भी नवीन और सत्य हैं, तथा मानव को सुख शांति प्रदान करने वाले हैं।'

- सम्पादिका

जन साधारण में ज्ञान का प्रकाश फैलाने, समाज से अज्ञान, हिंसा और व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर का जन्म आज से लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व हुआ था। यद्यपि इस लम्बे अन्तराल में सब कुछ बदल गया। जीवन के स्वरूप में परिवर्तन हो गया, मान्यताएं और परम्पराएं बदल गयी। विश्वास और जीवन-मूल्य बदल गये, किन्तु भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत एवं मान्यताएं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सार्थक हैं।

भगवान महावीर के मुख्य सिद्धांत अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त आदि थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने सत्य, स्वतंत्रता, समानता आदि पर भी बल दिया।

भगवान महावीर ने अहिंसा को परम धर्म घोषित किया है। उनके अनुसार जब तक जीवन में विषमता है, अहिंसा नहीं पनप सकती। अहिंसा के सिद्धांत के अन्तर्गत ही उन्होंने बताया कि हमारा समस्त विश्व के प्राणियों के प्रति मैत्री भाव होना चाहिए। दूसरों के कष्ट को स्वयं का कष्ट समझना और दूसरों के प्रति संवेदनशील होना ही अहिंसा है। अहिंसा द्वारा सिर्फ जीव-जंतुओं के साथ मैत्री भाव ही नहीं, अपितु वनस्पति जगत के साथ भी मैत्री भाव स्थापित होना चाहिए। उन्होंने बताया कि अहिंसा कायर के लिए नहीं बल्कि वीर के लिए है। हिंसा से परस्पर द्वेष, बदले की भावना तथा अशांति उत्पन्न होती है। जबकि अहिंसा से प्रेम, त्याग की भावना और सहन शक्ति पैदा होती है। जो काम हिंसा से नहीं हो सकता वह अहिंसा व त्याग से संभव है, क्योंकि उसका प्रभाव स्थायी होता है। गांधीजी का सत्याग्रह सिद्धांत पूर्णतः अहिंसा पर आधारित था, जिसने ब्रिटिश शासन जैसी शक्ति को झुकने के लिए मजबूर कर दिया। महावीर शारीरिक और वैचारिक हिंसा को

समाप्त करने के पक्ष मे थे। उन्होंने कहा भी है -

''अप्रादुर्भाव सतु रागादीना भवत्यहिसेति।
तेषामेवोत्पत्ति हिसेति जिनागमस्य सक्षेप।''

अर्थात आत्मा मे मोह, राग द्वेष भावो की उत्पत्ति नही होना अहिसा है। आत्मशुद्धि के लिए मोह, राग, द्वेष रूपी भाव हिसा का त्याग आवश्यक है।

पजाब और कश्मीर मे व्याप्त हिसा को देखकर अहिसा की बाते नितान्त आदर्शवादी एव अव्यावहारिक दिखायी देती है, परन्तु पिछले कुछ वर्षो से आतकवादियो ने अहिसा और त्याग अपनाकर शाति स्थापित करने की कोशिश की। इसके द्वारा बडे से बडे आततायी, निर्दयी तथा शत्रु को भी वश मे करना सभव है। क्योकि इसका प्रभाव स्थायी होता है। अहिसा के सिद्धातो को ध्यान मे रखकर ही तृतीय महायुद्ध की सभावना को टाला जा सका है। इसी के प्रकाश मे वैश्विक शाति एव एकता की स्थापना हो सकती है।

आज हम भौतिकता से बुरी तरह आक्रात हो गये है। आज हमारे लिए पदार्थ प्रमुख और मानव गौण हो गया है। हम परिग्रह मे तल्लीन है और जहा परिग्रह की भावना होती है, वहा तेरे मेरे की भावना और राग-द्वेष उत्पन्न हो जाता है। उन्होंने राग, द्वेष की भावना से दूर ही रहने की सलाह दी है। वस्तु नाशवान है ओर जो वस्तु नाशवान है, वह स्थायी सुख नहीं दे सकती। आज के भौतिकवादी युग मे राग, द्वेष के कारण ही अनीति, अत्याचार, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी का प्रसार हो रहा है। बोफोर्स काड, शेयर्स काण्ड और हवाला काड आदि जैसे काड अत्याधिक धन एकत्र करने की लालसा के ही दुष्परिणाम है। अभी हाल ही मे पूर्व केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री सुखराम के यहा से करोडो की अवैध सम्पत्ति जब्त की गयी है। यह उनकी धन लौलुपता को ही दर्शाता है। निरन्तर बढते हुए भ्रष्टाचार का मुख्य कारण भी यही है।

ऐसे समय मे भगवान महावीर का अपरिग्रह का सिद्धात कई समस्याओ को समाप्त करने मे सहायक है। इससे वर्ग सघर्ष की समाप्ति होकर विभिन्न आर्थिक समस्याओ का समाधान होगा। इससे वस्तुओ का समान वितरण, वर्गहीन समाज की रचना, परस्पर छोटे-बड़े का भेदभाव दूर होना, सतोष की भावना पैदा होना और अनेकों आर्थिक एव सामाजिक अपराधो मे कमी होना सभव है। आज के युग मे शातिपूर्ण सामाजिक, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण हेतु यह आवश्यक है।

आज सम्पूर्ण विश्व मे अशाति, मारकाट, आतकवाद, भ्रष्टाचार व्याप्त है। इन सबका कारण व्यक्ति और राष्ट्र का मताग्रह, महत्वाकाक्षा और अहकार है। इन सबको दूर करने के लिए भगवान महावीर ने अनेकात का सिद्धात प्रतिपादित किया। इसके अनुसार हमारा यह दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए कि हम जो कहते है, करते है, वही सही है। प्रत्येक बात के विभिन्न पहलुओ को ध्यान मे रखकर ही उचित एव अनुचित का निर्णय करना चाहिए। प्रत्येक वस्तु के अनेक पहलु होते है जब तक हम सभी पहलुओ को नहीं देखेगे, तब तक हम सत्य को नहीं पा सकेगे। आज के युग मे यदि इस सिद्धात पर चले, तो अधिकाश झगडे स्वत ही समाप्त हो जायेगे।

भगवान महावीर स्वतत्रता और समानता के प्रबल समर्थक थे। उनके समय मे व्यक्तिगत स्वतत्रता का काफी हद तक ह्रास हो चुका था, जातीय भेदभाव भी बहुत ज्यादा था, दास प्रथा विद्यमान थी। उच्च जाति द्वारा निम्न जाति पर अत्याचार किए जाते थे।

मनुष्य ही मनुष्य का भाग्य विधाता था व नारी स्वतंत्र नहीं थी। सर्वप्रथम भगवान महावीर ने स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा दिया, उन्होंने स्त्रियों को साध्वी की दीक्षा देकर पुरुषों के समान धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की। वे स्त्रियों की पूर्णतः स्वतंत्रता और उनकी सम्मानपूर्ण स्थिति के पक्षधर थे।

वर्तमान में स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देकर उन्हें उच्च्च पदों पर सुशोभित किया गया है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियां पुरुषों से पीछे नहीं, अपितु एक कदम आगे ही हैं। देश में विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति में मुख्यतः स्त्रियों का ही योगदान है।

आज मनुष्य को पूर्ण सुख-सुविधा, धन सम्पत्ति होते हुए भी मन की शांति शरीर का सुख नहीं है। कारण व्यक्ति सोचता कुछ है, कहता कुछ है और करता कुछ है अर्थात उसकी कथनी और करनी में सामान्जस्य नहीं है। उसने जीवन की सरलता, सादगी और सत्यता को तिलांजलि दे दी है। हर समय मनुष्य असत्य, छल और कपट के ताने-बाने बुनने में व्यस्त रहता है और उसी का परिणाम है, असंतोष, अशांति, अनिद्रा और मानसिक संघर्ष। इनका निदान सम्यक दर्शन' सम्यक चारित्र्य और सम्यक ज्ञान से ही संभव है। सम्यक ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति अपने राग, द्वेषों आदि को समाप्त कर सकता है और प्रत्येक वस्तु के यथार्थ स्वरूप को समझ सकता है। सिर्फ यही नहीं, यदि वह सम्यक चारित्र्य को व्यावहारिक रूप में अपनाने का प्रयास करेगा तो निश्चय ही अहिंसा, सत्य आदि सदाचारों का यथार्थ रूप से पालन कर सकेगा और इन समस्त गुणों को अपने चरित्र में शामिल कर पायेगा। धर्म, सत्य एवं अहिंसा के प्रति सच्ची श्रद्धा रखकर तथा किसी पर भी विश्वास करने से पूर्व विवेकपूर्ण जांच पड़ताल के द्वारा वह स्वतः ही भगवान महावीर के सिद्धांत सम्यक ज्ञान का पालन करेगा।

आज जातीय भेदभाव और आर्थिक असमानताओं के कारण उत्पन्न सामाजिक और नैतिक समस्याओं का समाधान भगवान महावीर के सिद्धांतों से ही संभव है।

भगवान महावीर ने अपने जीवन का अधिकांश भाग सामाजिक क्रांति में लगाया। वे किसी विशेष जाति, काल के प्रणेता न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के प्रणेता थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर के सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक हो गये हैं। आज की मारकाट, शोर-शराबे, आतंकवाद तथा अपराधों से परिपूर्ण वातावरण में विनाश के कगार की ओर बढ़ते मानव के कदमों को रोकने के लिए आज भी इनकी नितान्त आवश्यकता है।

❑

ज्ञान की अराधना दिल का शयन है,
क्लेश से निस्तार केवल कर्म से है।
दर्शनों से सिद्धियां किसको मिली हैं,
जीव का उद्धार केवल धर्म से है॥

- दिनकर

साम्प्रदायिक सद्भाव

✍ कु पुष्पा शर्मा
XI

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है । यहा पर विभिन्न धर्मावलम्बी निवास करते है । वर्तमान काल मे मनुष्य जाति, धम, भाषा, प्रान्त आदि के आधार पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रा मे विभक्त है । सभी परस्पर प्रेम को त्यागकर भेदभाव करते है । कुछ असामाजिक तथा स्वार्थी तत्व स्वार्थहित के लिए राष्ट्र के हितो की उपेक्षा करते है और भारतीयो मे भेदभाव की भावना उत्पन्न करते हैं । परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक दगे उत्पन्न हो जाते है और देश मे अशाति फैल जाती है । सभी एक दूसरे पर अविश्वास करते है ।

भाई भाई अर्थात हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई सम्प्रदाय और धर्म के नाम पर परस्पर लड़ते है । देश की इस बिगडी हुई परिस्थितियो का समाधान मात्र साम्प्रदायिक सद्भाव है । भारत देश विभिन्न प्रान्तो मे विभक्त है । यदि किसी एक प्रान्त मे समस्या उत्पन्न होती है तो वह सम्पूर्ण देश की समस्या बन जाती है उस समस्या से मात्र समस्याग्रस्त क्षेत्र को ही नहीं, वरन सम्पूर्ण देश को उस समस्या से पीडित होना पड़ता है । उदाहरणार्थ - हमारे देश के पजाब राज्य मे गत वर्षो से असामाजिक तत्वो ने आतक फैला रखा है । वे लोग भारतीयो को एक दूसरे के प्रति भड़काते है और उन्हे स्वय मे सम्मिलित कर लेते है ।

यह समस्या मात्र पजाब की ही नहीं वरन सम्पूर्ण देश की समस्या बन गई है । सम्पूर्ण भारत इस समस्या का शिकार हो गया है । वर्तमान मे वहा सुरक्षा व्यवस्था कर शाति की स्थापना की गई है । भारत के ही एक राज्य जम्मू कश्मीर राज्य मे यह समस्या बनी हुई है । वहा पाकिस्तान मे घुसपैठिये आकर आतक का प्रसार करते है । 6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या मे बाबरी मदिर-मस्जिद विवाद खड़ा हो गया था, जबकि इसका मदिर-मस्जिद से कोई सबध नहीं था । कुछ राजनैतिक दल वोट प्राप्त करने के लिए हिन्दुओ और मुसलमानो की भावनाओ को कुरेदते हैं । यदि एक मुसलमान प्रत्याशी ने वोट प्राप्त होने पर उस स्थान पर मस्जिद बनाने का आश्वासन दिया, तो उसके प्रतिद्वदी हिन्दू प्रत्याशी ने वहा मदिर बनाने का आश्वासन दिया । मदिर मस्जिद तो पूजा-अर्चना के स्थल है जहा कि श्रद्धा से पूजा करनी चाहिए न कि उन्हे क्षति पहुचानी चाहिए । इस विवाद के कारण सम्पूर्ण भारत मे स्थान स्थान पर साम्प्रदायिक दगे हुए और देश मे अशाति फैल गई । स्थान-स्थान को कर्फ्यूग्रस्त क्षेत्र घोपित करना पडा । इससे हानि तो जनता को होती है न कि राजनैतिक दलो को ।

हमे चाहिए कि हम अफवाहो पर ध्यान न दे । किसी भी व्यक्ति के बहकावे मे आकर अपने किसी भी भाई या बहन को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुचाये । सभी एक जुट होकर कार्य करे । अफवाहो पर ध्यान देकर उसके आवेश मे आकर कोई गलत कार्य नहीं करे । अविश्वसनीय बातो पर विश्वास करने से कोई लाभ नहीं । हमे चाहिए कि हम अफवाहो को फैलाने वाले लोगो की सरकार को जानकारी दे तथा अन्य लोगो को

अफवाहों का प्रसार करने तथा उन पर विश्वास करने से रोकें।

इतिहास से भी हमें पता चलता है कि किस प्रकार अंग्रेज सर्वप्रथम व्यापार करने के उद्देश्य से भारत आये। धीरे धीरे उन्होंने भारतीयों में वैमनस्य उत्पन्न कर दिया और धीरे धीरे प्रत्येक रियासत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। फिर हमें लगभग 200 वर्षों तक उनकी पराधीनता स्वीकार करनी पडी। असंख्य देशभक्तों के बलिदान के पश्चात हमें 15 अगस्त सन 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यह बात किसी से छिपी नहीं है। अब भारत में साम्प्रदायिकता की भावना में वृद्धि होते हुए देखकर फिर वही विदेशी ताकतें सिर उठाने लगी हैं। और वे पुनः हमारे देश को गुलाम बनाने का प्रयास कर रही हैं। देश के शत्रु मात्र विदेशी लोग ही नहीं वरन वे राष्ट्रीय लोग भी हैं जो उनके बहकावे में आकर उन पर विश्वास करके उनमें सम्मिलित हो जाते हैं। देश को उनका गुलाम बनाने में सहायता देते हैं।

इन समस्याओं के उत्पन्न होने से सरकार को अपना सम्पूर्ण ध्यान उन पर ही केन्द्रित करना पडता है जिससे विकास कार्य अवरुद्ध हो जाता है और देश का विकास भी रुक जाता है। वर्षों से संघर्ष के बाद प्राप्त हुई इस आजादी की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। देश के आंतरिक प्रांतों में साम्प्रदायिकता से हमारे देश की सुरक्षा को खतरा हो गया है। हमें भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद और साम्प्रदायिकता को त्यागकर एकता स्थापित करनी चाहिये। हमें राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत होना चाहिये। राष्ट्रीयता को सुदृढ करने के लिए परस्पर मधुर संवंध स्थापित करने चाहिए। हमें चाहिए कि हम इन वातों से हटकर देश के विकास में सहयोग करें।

वर्तमान समय में कृषि की समस्या भी है। इस समस्या के समाधान के लिए भी हमें साम्प्रदायिक सदभाव की कृषकों में सहयोग के रूप में आवश्यकता है। यदि कृषक अपने छोटे छोटे खेतों को मिलाकर एक बड़ा खेत बना लें और उस पर कृषि करें तथा अपनी थोडी थोड़ी पूंजी को मिलाकर बडी पूंजी बनाकर उससे कृषि के नवीनतम यंत्रों की व्यवस्था करें तो कृषि की अवनत दशा में भी सुधार हो सकेगा। खेल के मैदान में भी यदि खिलाडी भेदभाव को त्याग कर राष्ट्रीयता की भावना से खेलें तो वे भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इस प्रकार यह सुक्ति यथार्थ सत्य प्रतीत होती है -

''संघे शक्ति कलौ युगे।''

अर्थात कलियुग में संगठन में ही शक्ति है। हमें देश के समक्ष उपस्थित होने वाली प्रत्येक समस्या के निवारण के लिए संगठित होकर कार्य करना चाहिए और उस समस्या का सामना करना चाहिए। हिन्दुओं की पवित्र धार्मिक पुस्तक ''श्रीमदभागवद गीता'' और मुसलमानों की पवित्र धार्मिक पुस्तक ''कुरान-शरीफ'' में भी यही बात दर्शायी गई है। दोनों ही पुस्तकों में मिलजुलकर सहयोग से रहने की बात को दर्शाया गया है।

''ईश्वर तक पहुंचने के मार्ग तो भिन्न भिन्न हैं परन्तु ईश्वर एक है।''

''अयं निज परोवेति गणना लघुचेतासां,
उदार चरितानाम तु वसुधेव कुटुम्बकम॥''

अर्थात यह मेरा है यह पराया है। ऐसी गणना छोटे हृदय वाले व्यक्ति ही करते है। उदार व्यक्तियों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार है।

हमें अपने प्रान्त की सीमा में ही नही, वरन सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार करना चाहिए। जो लोग देश के शत्रुओं में सम्मिलित हो जाते हैं उन्हें सही मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमें अपने महान नेताओं तथा सद्पुरुषों के आदर्शो को सामने रखकर प्रत्येक कार्य सच्ची भावना से करना चाहिए।

इस प्रकार करने से हम अपने गुरुओं महात्मागांधी जी श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जी आदि को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे।

❑

अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली कैसे बनाये ?

श्रीमती मधु शर्मा
व्याख्याता (वाणिज्य)

जीवन मे सफलता पाने और सफल जीवन विताने के लिए प्रभावशाली व्यक्तित्व की वहुत वडी आवश्यकता होती है। इस गुण के अभाव मे अनेक साधन, सुविधाये होते हुए और शरीर आदि से पुष्ट होने पर भी मनुष्य समाज मे अपना वाछित स्थान नहीं वना पाता। वहुत वार देखा जाता है कि कोई व्यक्ति धन के आधार पर किसी काम को वनाना चाहता है लेकिन व्यक्तित्व की प्रभावहीनता के कारण असफल रह जाता है। वहुत से पढे लिखे लोग अप्रभावी व्यक्तित्व के कारण साक्षात्कार आदि परीक्षाओ मे असफल हो जाते है और यदि किसी प्रकार वे कोई स्थान पा भी लेते हे तो भी उनकी प्रभावहीनता आए दिन आडे आती रहती है।

सार्थक प्रभावशाली व्यक्तित्व न तो हृष्ट-पुष्ट शरीर से मिलता है, न सुदर आकृति अथवा रूप स्वरूप से और न ही धन दौलत और साधन सुविधाओ से। प्रभावशीलता के आधार कुछ नैतिक गुण और व्यवहार है जो मनुष्य के व्यक्तित्व और आचरण मे चमकते रहते हे। ये गुण विलक्षण अर्थात दुर्लभ भी नहीं होते जिन्हे पाया अथवा विकसित नहीं किया जा सकता। इन्हे पाया, सीखा और अपने अदर उपजाया भी जा सकता है, उनमे से कुछ गुण इस प्रकार है।

दूसरो का उचित मूल्याकन करना और उन्हे मान्यता देना - ससार मे प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ न कुछ अच्छाई अवश्य होती है। किसी का शत प्रतिशत वुरा होना असभव है। प्राय लोग व्यक्ति की वुराई की चर्चा तो करते है लेकिन उसके गुण की उपेक्षा करते है। वुद्धिमान व्यक्तियो का सहज स्वभाव होता है कि वे किसी की वुराई की अपेक्षा अच्छाई पर अधिक दृष्टि रखते है।

यथासभव वुराई को नजरअदाज कर जाते है और यदि उसके प्रकाशन की आवश्यकता भी पडती है तो उसकी चर्चा निदा के रूप मे नही अपितु असावधानी के रूप मे करते है वह भी इस ढग से कि पात्र पर उसका क्रियात्मक नहीं सृजनात्मक प्रभाव पडे। गुणो को आगे रखकर किसी के अवगुणो की गई चर्चा व्यक्ति को सुधार की ओर प्रेरित करती है। इस प्रकार सुधरा हुआ व्यक्ति सबसे पहले उस सज्जन व्यक्ति का ही भक्त बन जाता है। अपनी जीवन नीति मे इस नियम का पालन करने वाले अपने व्यक्तित्व मे प्रभावशीलता का अर्जन करते है।

सार्वजनिक सदभावना को अर्जित करना - सद्भावना का प्रतिपादन सद्भावना के रूप मे मिलना स्वाभाविक है, जो व्यक्ति इसको जितना व्यापक

और विस्तृत बना लेता है वह उतनी ही अधिक सद्भावना पाता है। जिस व्यक्ति को बहुत लोग चाहें और प्रेम करें उसका प्रभाव एक बड़ी सीमा तक फैल जाता है उसका व्यक्तित्व चुम्बक की तरह आकर्षक और सोने की तरह चमक उठता है।

समाज में उदार व्यवहार मनुष्य की प्रभावशीलता को बड़ी सीमा तक बढा देता है और क्या छोटे और क्या बडे, क्या धनी और क्या निर्धन, उदार व्यक्ति का व्यवहार सबके साथ प्रेम, सद्भावना और शिष्टता का रहता है। वह सबसे मीठा बोलता है, सबका यथायोग्य सम्मान करता है। उदारता में सेवा और सहानुभूति का भाव रहना अनिवार्य है। उदार व्यक्ति जहां किसी के साथ नम्रता, प्रेम और शिष्टता का व्यवहार करता है वहीं सेवा करने के लिए भी तत्पर रहता है। वह किसी का दुःख तकलीफ में केवल शाब्दिक सहानुभूति ही नहीं दिखलाता बल्कि यथासंभव सेवा भी करता है। सहानुभूति और संवेदना के साथ जितनी सेवा और सक्रियता जोड दी जाए उदारता उतनी ही सार्थक और प्रभावशाली बन जाती है।

परोपकारी बनें :-

महाकवि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है -

परहित बसै जिनके मन मांही ।
तिनको दुर्लभ कछु नहीं जग मांही ॥

अर्थात जिस व्यक्ति के मन में परोपकार की भावना रहती है जो दूसरों के हित साधने में लगा रहता है उसे इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

परोपकार के महत्व को दर्शाते हुए आगे भी तुलसीदास जी ने लिखा है -

परहित सरिस धरम नहीं भाई ।
परपीडा सम नहीं अधिमाई ॥

अर्थात परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीडा पहुंचाने के समान कोई अधर्म नहीं है। जीवन में असहाय, असमर्थो, निर्बलों की सहायता करने तथा दूसरों के हित संवर्द्धन से व्यक्ति आत्म संतोष तो प्राप्त करता ही है साथ ही अन्य व्यक्तियों की सद्भावना व सम्मान का पात्र बन जाता है। समाज में उनकी छवि प्रभावशाली बन जाती है।

सत्यवादी बनना - जो सत्यवादी है समाज में सबके साथसत्यपूर्ण व्यवहार करता है वैसा ही अंदर से भी होता है तो वह समाज का विश्वास और आस्था का पात्र बन जाता है। सभी लोग उसे परामर्श और पथ प्रदर्शन के लिए बुलाते हैं, अपने विवादों और झगड़ों में आदरपूर्वक उसका दिया हुआ निर्णय शिरोधार्य करते हैं। इतना ही नहीं यदि कभी उस पर संकट या आपदा आ जाती है तो बड़ी संख्या में लोग उसकी सहायता के लिए दौड़ पडते हैं और अपनी सेवाएं अर्पित करते हैं।

दूसरों के सम्मान की रक्षा करना - संसार में सभी व्यक्तियों में कम या ज्यादा कुछ न कुछ अहंभाव तो होता ही है चाहे वह स्वाभिमान के रूप में हो या अभिमान के रूप में। गरीब हो या अमीर, निर्बल हो या बलवान सबकी इच्छा रहती है कि उसका अपेक्षित आदर अवश्य किया जाए। यह बात और है कि धनवानों और बलवानों में सराहना, प्रशंसा और चाटुकारिता पाने की दुर्बलता अधिक होती है। लेकिन सामान्य व्यक्ति में यदि यह दुर्बलता नहीं होती तो भी वह यह तो चाहता ही है कि उसके साथ किया जाने वाला व्यवहार किसी प्रकार भी असम्मान पूर्ण न हो।

समाज मे प्रभाव बढाने के लिए वाचालता के दोष से बचना चाहिए। कितनी ही विद्या, बुद्धि और ज्ञान क्यो न हो तथापि बहुत व निरर्थक नहीं बोलना चाहिए। अपने कहने के बजाय दूसरो की सुनने के लिए अधिक तत्पर रहना चाहिए। समाज मे बहुतायत ऐसे लोगो की ही होती हे जो यह समझते है कि उनकी उलझने और समस्याए दूसरो की अपेक्षा अधिक है और वे उन्हे प्रकट भी करना चाहते है तथा आप बीती दूसरो को सुनाने के लिए बडे उत्सुक रहते है। जो व्यक्ति मनुष्यो की इस सहज धारणा की रक्षा करते हुए व्यवहार करते है वे अपने इष्ट मित्रो की सख्या मे वृद्धि करते है।

जो अपना दु ख सुनाए उसको सहानुभूतिपूर्वक ध्यान से सुन लेना चाहिए और अपनी सवेदना प्रकट करने मे भी कृपणता नहीं करनी चाहिए। किसी की वेदना सुनकर उपहास करना अथवा उसकी उपेक्षा कर देना एक नैतिक दोष है। इससे ग्रस्त लोग समाज मे अपने विरोधियो तथा आलोचको की वृद्धि कर लेते है।

प्रभावशाली व्यक्तित्व के निर्माण के लिए सुखी व सफल जीवन जीने के लिए निम्न गुणो का अनुशीलन किया जाना भी वाछनीय है।

1 ईमानदारी 2 जिम्मेदारी 3 दूरदर्शिता 4 स्वच्छता 5 उपासना 6 स्वाध्याय 7 बड़ो का सम्मान 8 छोटो से समुचित स्नेहपूर्ण व्यवहार आदि।

व्यक्तित्व की प्रभावशीलता मे वृद्धि धन, सम्पत्ति, विद्या, बुद्धि, अथवा शक्ति के आधार पर नहीं होती, उसकी वृद्धि तो नैतिक गुणो के आधार पर होती है। इन गुणो के ग्रहण कर लेने पर मनुष्य साधनहीन होने पर भी प्रभावशील बन जाता है और साथ मे विद्या और अन्य सम्पन्नताए भी हो तब तो उसका प्रभाव समाज के नेतृत्व तक पहुच जाता है। समाज मे प्रभावशीलता की वृद्धि सद्भावो, व्यवहारो और सत्कर्मो द्वारा होती है। केवल साधन और सम्पन्नता के द्वारा नहीं। जिसका व्यवहार और आचरण जितना अच्छा होगा वह उतना ही अधिक प्रभावशाली बन जाएगा।

❑

चार प्रकार के सहवास है- देव का देवी के साथ-शिष्ट भद्र पुरुष, सुशीला भद्र नारी। देव का राक्षसी के साथ-शिष्ट पुरुष, कर्कशा नारी। राक्षस का देवी के साथ-दुष्ट पुरुष, सुशीला नारी। राक्षस का राक्षसी के साथ-दुष्ट पुरुष, कर्कशा नारी।

- स्थानाग

केवल पढ़ लिख लेने, अर्थात शिक्षित होने से कोई विद्वान नही होता। जो इन गुणो को सत्य, तप, ज्ञान, अहिसा, विद्वानो के प्रति श्रद्धा और सुशीलता-धारण करता है, वही सच्चा विद्वान है।

अनमोल वचन

श्रद्धा रहित ज्ञान व्यर्थ है। ज्ञान के बिना चरित्र में उत्कृष्टता नहीं आती। जो उत्कृष्ट नहीं है। वह ईश्वर तक नहीं पहुंच सकता। श्रद्धा ही ज्ञान की आधार शिला है।

●

सज्जनों को देखकर उनके अनुकरण की बात सोचो। दुर्जनों को देखकर यह सोचो कि वैसे ही अंकुर तुम्हारे भीतर नहीं उग रहे हों।

●

आनन्द को अपने अन्दर ढूंढ़ पाना बहुत की कष्ट साध्य है, पर बाहर किसी अन्य में ढूंढ़ निकालना तो सर्वथा असंभव है।

●

यह मत देखो, कि किसे प्रिय लगा और किसे अप्रिय। किसको हानि हुई, किसको लाभ पहुंचा। मात्र आदर्श को अपनाओ वे ही अपना पराया वास्तविक हित साधन करते हैं।

●

जो अपने लिए चाहते हो, वही दूसरों के लिए भी चाहना चाहिए, जो अपने लिए नहीं चाहते हो, वह दूसरों के लिए भी नहीं चाहना चाहिए। बस इतना मात्र जिन शासन है, यही तीर्थंकरों का उपदेश है।

- बृहत्कल्पभाष्य

●

मुझे अपने धन के नष्ट हो जाने की सचमुच कुछ भी चिन्ता नहीं है, क्योंकि भाग्य से ही धन आता जाता है। मुझे, दुःख यही है कि धन के क्षीण हो जाने से मित्रों की मित्रता भी शिथिल पड जाती है।

- मृच्छकटिक

●

सदा अमृत रूप से चिन्तन करने से विष भी अमृत हो जाता है और सदा मित्र भाव से चिंतन करने से शत्रु भी मित्र हो जाता है।

- योग वासिष्ठ

आधुनिक युग में सहशिक्षा की उपादेयता

✍ कु विशाखा सघी
X D

नारी और पुरुष समाज रूपी गाडी के दो पहिये है। शिक्षा के क्षेत्र मे यदि इनमे से किसी एक की उपेक्षा करके हम व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास की कल्पना तक नहीं कर सकते। कुछ विरोधियो का यह मत प्राकृतिक सामाजिक और ऐतिहासिक सच्चाइयो की कसौटी पर किचित मात्र भी खरा नहीं उतरता कि सहशिक्षा विकास मे वाधक है।

इतिहास साक्षी है कि वैदिक काल मे जब नारी व पुरुष की शिक्षा की समान व्यवस्था थी तभी हमारी सभ्यता व सस्कृति सम्पूर्ण विश्व मे सिरमौर थी। यह सहशिक्षा का ही परिणाम था कि सती अनुसूया मैत्रेयी जैसी विदुषियो ने अन्य समकालीन ऋषि मनीषियो के साथ कधे से कधा मिलाकर समाज के विकास को नयी गति प्रदान की।

यह तो सर्वविदित है कि आदि शकराचार्य जी का विद्वता मे कोई सानी नहीं था। शास्त्रार्थ मे महापडित मण्डन मिश्र भी उनसे पराजित हो गये थे। यह सहशिक्षा का ही सुफल था कि उनकी पत्नी ने शकराचार्य जी को शास्त्रार्थ मे निरुत्तर किया और अपना नाम इतिहास मे अमर कर दिया।

यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि विदेशी शासको के आक्रमणो से पूर्व जब तक हमारे देश मे सह शिक्षा प्रचलित रही तब तक हमारी सभ्यता व सस्कृति का सूर्य पूर्ण तेज के साथ सारे विश्व मे जगमगाता रहा। जैसे ही विदेशी आक्रान्ताओ के डर से हमने नारी को उसकी शील रक्षा के नाम पर पर्दे मे कैद कर दिया तभी से हमारे समाज का विकास अवरुद्ध हो गया और हालात यहा तक बिगड़े कि हम पिछडे देशो मे भी सबसे नीचे अटक गये।

स्वतत्रता आदोलन व स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात समाज ने अगडाई ली पुन सहशिक्षा का वरण किया तो महारानी लक्ष्मीबाई, इदिरा गाधी, विजयलक्ष्मी पडित, सरोजनी नायडू जैसे रूपो मे नारी शक्ति का अभ्युदय हुआ। यह सह-शिक्षा ही है जिसकी वजह से नारी पुरुष से आज किसी भी क्षेत्र मे पीछे नहीं है। इस दिखती हुई वास्तविकता व सच्चाई से हम आखे नहीं मूद सकते कि जिस समाज ने अपने यहा सहशिक्षा की व्यवस्था रखी है। समाज के विकास मे नारी को पूरी भागीदारी सौपी है, वे ही आज विकसित कहलाने का गौरव लिए हुए है। जापान का उदाहरण सबके सामने है जो पूरी तरह बर्बाद होने के बाद चद वर्षो मे नारी पुरुष के समन्वित प्रयास से विश्व मे अव्वल दर्जे पर पहुच गया। यदि वहा सहशिक्षा नहीं होती या नारी के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता तो यह कदापि सभव नहीं

होता।

प्रहशिक्षा का विरोध करने में लोगों पर उनकी संकीर्ण व विकृत मानसिकता ही हावी रहती है। वे बड़े जोर शोर से ऐसी आंशका जताते हैं कि सहशिक्षा से समाज में नैतिक व चारित्रिक गिरावट आएगी व विवाहोत्तर संबंधों में बढ़ोतरी होगी। लेकिन उनका यह मत मानवीय आचरण व मनोविज्ञान की कसौटी पर सही नहीं उतरता। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि यदि किशोर किशोरियों को एक दूसरे से जबरन अलग रखा गया तो उनमें एक दूसरे के प्रति स्वाभाविक जिज्ञासाएं उत्पन्न होंगी जो अनेकानेक मानसिक विकृतियों व कुण्ठाओं को जन्म देंगी। यही कुंठाएं यौन अपराध व अनेक सामाजिक समस्याओं के लिए जिम्मेदार होती हैं।

मूलत· मनुष्य भी एक पशु ही है। यह तो शिक्षा ही है जो उसे संस्कारित कर इंसान का दर्जा दिलाती है। ये संस्कार ही उससे सामाजिक वर्जनाओं का पालन कराते हैं। यदि मनुष्य पर शिक्षा व संस्कारों का अंकुश नहीं हो तो वह पशुवत व्यवहार करने से नहीं चूकेगा एवं हजार बंधनों के बावजूद इसके लिए अवसर भी ढूंढ ही लेगा। इसलिए वर्तमान चारित्रिक व नैतिक गिरावट के दौर के लिए सहशिक्षा को जिम्मेदार ठहराना सर्वथा गलत व निराधार है।

बल्कि सहशिक्षा में किशोर किशोरियों को एक दूसरे को समझने का अवसर मिलता है। नारी के मन में से काल्पनिक झिझक व डर निकल जाते हैं। उनका अपना व्यक्तित्व विकसित होता है। जिसके बलबूते पर वे किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने में सक्षम होती है। जबकि विपरीत अवस्था में तुच्छ सा संकट आने पर ही विचलित हो जाती है व अपना बचाव तक करने में स्वयं को अकेला व असहाय पाती है। इस प्रकार मेरी विनम्र राय में सह शिक्षा के विरोध वाला मत व्यक्ति व समाज को विकास के स्थान पर रसातल में ले जाने वाला है। जबकि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए सह शिक्षा अपरिहार्य है। इसके बिना समाज के विकास की कल्पना महज आत्म प्रवंचना मृगमरीचिका होगी।

❑

दो विरोधियों के बीच कभी इस प्रकार बात मत करो कि कभी वे मित्र हो जायें तो तुम्हें लज्जित होना पडे।

●

चिथड़े का निरादर मत करो, क्योंकि उसने भी किसी समय किसी की लाज रखी थी।

– शेख सादी

●

मूर्ख अपने घर में, मालिक-मुखिया अपने गांव में और राजा अपने राज्य में ही आदर पाता है। लेकिन विद्वान सर्वत्र सम्मानित होता है।

– उत्तराध्ययन

विरासत

✍ कु मनीषा जैन
पूव छात्रा

मैं पूछती इस राष्ट्र से,
कहा खो गई विरासत मेरी,
चमकता था सूर्य सभ्यता का
जो उसके नील गगन मे,
ढूढती है उसे भारतमाता
लगाकर प्रभात फेरी
मैं पूछती

शूरवीर और रण बाकुरे
देश का भविष्य थे सवारते
राह भटक रहा आज
नौजवान अपना ही जीवन हार के
बेसुरी हो गयी भविष्य की बासुरी,
मैं पूछती

नैतिक मूल्यो और आदर्शों,
का जीवन सरोवर था,
उनके बल प्रसिद्धि पाकर,
हर कोई जीवन से खुश था
पर उनके पतन की धारा अब लहरा रही
मैं पूछती

शिक्षा जिसका मूल मत्र था
सारे विश्व का वो केन्द्र था,
ज्ञान का अथाह भडार था वा,
पर छायी अब निराशा की धूलि,
मैं पूछती

शात समुद्र था सौम्यता का,
जन जन के मन मे थी विचारशीलता
पर आ गया जलजला समाज म,
युवा वर्ग हुआ दिशाहीन,
क्यो छोड़ा समाज ने उन्हे
छोड़ उनके लिए लिए दिशा अधूरी
मैं पूछती

पग-पग पर बिखरे है काटे,
अपनो मे अपनो ने दुख बाटे,
स्नेह प्यार की धारा नही है,
हमे अपना वतन भी प्यारा नही है
क्या यही है अब किस्मत मेरी,
मैं पूछती

❑

इन्द्रियो से ज्यादा सूक्ष्म मन है, मन से ज्यादा सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धि से ज्यादा सूक्ष्म आत्मा है। यह आत्मा ही सबकुछ है। वही वह है।

– गीता

निर्माणों के गीत

कु. मीना अग्रवाल
XI-B

बहुत कर चुके खून खराबा, धर्म, जाति के नाम पर ।
निर्माणों के गीत लिखें ! अब हम भारत के उन्नत भाल पर ।

इंसां जब धरती पर आता, नहीं जात-पात वह संग लाता ।
रंग एक से, अंग एक से, खून एक सा लाता ।

पर समाज के बंधन उसको, धर्म, वर्ण, जाति में बांधते हैं ।
तू हिन्दू है, ये मुस्लिम है, ऐसा फतवा क्यों देते हो ।

धर्म, जाति का गरल हलाहल, उसको क्यों तुम रोज पिलाते ।
जो जन्में थे भाई होकर, वैरी आज बने फिरते हैं ।

ऐसा ही अगर हाल रहा तो क्या होगा इस देश का ।
हां, क्या होगा ? फिर कृष्ण, मौहम्मद, ईसा के संदेश का ।

कोई धर्म नहीं कहता, तुम आपस में यूं खून बहाओ ।
मत अपने-अपने धर्मों में बंट कर मानवता पर यूं दाग लगाओ ।

बाइबिल, गीता और कुरान सब यही पाठ पढ़ाते है ।
प्रेम, दया, सहयोग, शांति, सहिष्णुता की तुम महिमा समझाओ ।

आओ हम सब मिलकर जान करे कुर्बान एक दूजे की जान पर ।
निर्माणों के गीत लिखें, हम भारत के उन्नत भाल पर ।

कोई हंस के मरा दुनिया में, कोई रोके मरा ।
जिन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा ॥

- अकबर

देश की समृद्धि मे अल्प बचत योजना का महत्व

✍ कु नीलम जैन
XI A

परिवार और राष्ट्र को समृद्धता के डगर पर ले जाना है तो अल्प बचत योजना को महत्व देना होगा। एक योजना का वास्तविक महत्व यह है कि हृदय मे बचत के लाभ भली प्रकार अकित कर दिये जाए और उनमे नियमपूर्वक बचत करने की आदत डाल दी जाय। भारत एक गरीब देश है। अत यह अभीष्ट है कि सबके हृदय मे अल्प बचत योजना गहरी जड पकड ले। अल्प बचत आन्दोलन जनता का आन्दोलन है। "प्रतिदिन बचाइये।" यह स्वतत्र भारत का एक नया नारा है।

इस योजना को चिरस्थायी तथा जन साधारण के जीवन को पूर्ण सुखी बनाने मे देशवासी सभी क्षेत्रो मे विकास के महान कार्यों मे जुटे हुए है। देहातो मे नये जीवन की ज्योति जगमगाने लगी है। सामूहिक विकास योजनाओ के नारो ने ग्रामवासियो की शक्ति को जगा दिया है। एव सहायता मे दृढ विश्वास रखते हुए वे बाध, तालाब, सिचाई नालो व नहरो, सामुदायिक सडक आदि के निर्माण मे स्वेच्छा से आगे आये है। इस प्रकार उनकी बहुत दिनो की उदासीनता ही दूर नही हुई वरन वे रचनात्मक कार्यों मे भा ग लेने लगे है।

गावो मे पचवर्षीय योजनाओ को समृद्ध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस योजनाओ के पूरा होने पर न **केवल** वर्तमान ही खुशहाल बनेगा वरन आने वाली पीढिया भी खुशहाल व समृद्ध होंगी। परन्तु इस प्रकार की विभिन्न योजनाए एव नये उद्योग आदि मे भारी पूजी की आवश्यकता होती है और इस पूजी के लिए राशि की व्यवस्था करने के लिए प्रत्येक भारतवासी को अपने खर्चे म कमी करनी चाहिए। और बचाई हुई रकम सरकार को कर्जे के रूप मे देनी चाहिए। जिनके पास धन प्राप्ति के बड़े साधन है वे सरकारी कार्यों मे जो समय समय पर किये जाते है रुपया लगा सकते है। जो लोग कम बचा सकते है उनके लिए अल्प बचत योजना प्रारम्भ की गई है।

बैक व डाकघर की सुविधाए इस योजना मे उल्लेखनीय योगदान दे रही है। 1882 मे डाक घर मे जनता की छोटी छोटी बचतो को प्रोत्साहन देने के लिए, बचत बैक की स्थापना की गई। सावधि जमा खाता, इदिरा गाधी विकास पत्र अथवा इसी तरह के अन्य राष्ट्रीय प्रमाण पत्र यूनिट ट्रस्ट लोक भविष्य निधि, दस वर्षीय सामाजिक सुरक्षा पत्र सचायिक बचत बैक। इस क्षेत्र मे स्कूली बच्चो के लिए सचायिका बचत बैक की स्थापना उल्लेखनीय है। सचायिका स्कूली बच्चो का एक ऐसा बचत बैक है जिसका प्रबन्ध वे स्वय करते है। इस बैक के मैनेजर, काउन्टर, क्लर्क और लेखाकार सभी बच्चे होते है। इस प्रकार बच्चो मे नियमित रूप से बचत की आदत को बढावा मिलता है और उन्हे पैसा का ठीक ठीक हिसाब किताब करने की जानकारी मिलती है।

❑

यादों के झरोखे से.....
मेरा विद्यालय

✍ **श्रीमती शकुन्तला जैन**
पूर्व छात्रा

'विद्याददाति विनयम्' जैसा उद्देश्य जिस विद्यालय का रहा हो उस विद्यालय को कोई किस तरह भुला सकता है।

बालक की स्वाभाविक प्रवृति अपने गुरुजनों का अनुकरण करने की होती है। अपने गुरुजनों के क्रिया कलापों को सूक्ष्मता से देखते हुए वह उनके द्वारा दी गई शिक्षा व आदर्शों को ग्रहण करता चला जाता है और वही उसके जीवन के व्यवहार व आदर्श बन जाते हैं।

अपने व्यवहार एवं आचरण से बालकों को प्रेरित करने वाली अध्यापिकाओं से युक्त इस विद्यालय में जब मैंने सन् 1945 में प्रवेश लिया था तब जयपुर में वालिकाओं का यही एक उच्च प्राथमिक विद्यालय था। आज यह विद्यालय उन्नति के शिखरों को लांघते हुए महाविद्यालय स्तर तक पहुंच कर अपनी हीरक जयन्ती मना रहा है।

प्रारम्भिक शिक्षा के समय यहां की शिक्षिकाओं ने अपने मिठासपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार से मुझमें विद्यालय जाने की ललक उत्पन्न कर दी थी। यहां की प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवतीजी सिन्हा का जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार' शैली पर आधारित था। वे सदैव एक आदर्श के रूप में वालिकाओं के सम्मुख उपस्थित होती थीं। उनका व्यवहार और शिक्षण शैली न केवल उस समय की अध्यापिकाओं के लिए वरन् आज 50 वर्ष पश्चात् मेरे लिए भी एक आदर्श है। उनका रोबदार, अनुशासन प्रिय व्यक्तित्व मिलने वालों पर अमिट छाप छोड़ता था। संरक्षकों से मिलनसार व्यवहार एवं उनकी समस्याओं को दूर करते हुए विद्यार्थी के चरित्र को उज्ज्वल बनाना ही उनका उद्देश्य था। संस्था के तत्कालीन मंत्री श्री राजरूपजी टांक का व्यक्तित्व भी अनुकरणीय थी। उस वक्त जबकि स्त्री शिक्षा नहीं के बराबर थी, आपने विद्यालय में बालिकाओं के लिये समुचित एवं सुरक्षापूर्ण व्यवस्था कर समाज को अपना महान योगदान दिया था। आप गांधी विचारधारा के व्यक्ति थे। पर्दाप्रथा का विरोध प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इन्होंने एक बार श्रीमान इन्दरचन्द जी संघी के सुपुत्र श्रीमान रतनचन्द जी संघी का विद्यालय सम्मान किया था। क्योंकि इन्होंने बिना पर्दा विवाह कर समाज में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया था।

विद्यालय की अध्यापिकाओं का व्यवहार वालिकाओं के प्रति ममता व स्नेह से परिपूर्ण था। मैंने कक्षा शिशु से वहां शिक्षा प्राप्त की। प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा, सहअध्यापिकाएं श्रीमती कमला श्रीवास्तव, श्रीमती कृष्णा खन्ना, श्रीमती मनफूल देवी, श्रीमती विमला चटर्जी, श्रीमती चन्द्रकान्ता, श्रीमती

सरोज श्रीवास्तव जी आदि आज भी मुझे याद आती है। उस समय की कुछ बाते ऐसी है जिन्हे मै कभी नहीं भुला सकती । कमला बहिन जी जब भी कोई नई विद्यार्थी विद्यालय मे प्रवेश लेती तो उनके सरक्षको व विद्यार्थी की नकल करके इतना हसाया करती थीं कि हम हसते-हसते लोटपोट हो जाते थे। कृष्णा बहिन जी हमे सिलाई सिखाया करती थीं। एक बार उन्होंने बच्चो का ऊन का कोट बनवाया तो मै यह कहकर रोने लग गई कि हमारे यहा तो कोई पहिनने वाला ही नहीं है। क्योकि उस समय हम तीन बहिने ही थीं, हम बनाकर क्या करेंगे। मेरे भैया के जन्म के बाद कृष्णा बहिन जी मुझसे व मेरी मम्मी से हमेशा मेरे भैया के बारे मे पूछती रहती थी। बालिकाओ से शिक्षिकाए पूर्णरूपेण जुडी रहती थीं। व्यावहारिक व विज्ञान की शिक्षा पर ध्यान देते हुए, विद्यालय मे विज्ञान की प्रयोगशाला के अभाव के बावजूद हमे अन्य विद्यालय मे ले जाकर प्रायोगिग शिक्षा दी जाती थी। उस समय टेलिप्रिंटर का नया प्रचलन हुआ था। हमे राष्ट्रदूत प्रेस मे ले जाकर टेलिप्रिन्टर की गतिविधियो को दिखाकर समझाया गया था। इसी प्रकार विधानसभा ले जाकर विधानसभा की कार्य प्रणाली भी बताई गई थी। विद्यालय मे महाराज साहब प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्री जी म सा व अन्य साधुजनो के प्रवचन भी करवाये जाते थे ताकि पढाई के साथ-साथ बालिकाओ मे नैतिकता व आदर्श चरित्र के गुण उभर सके।

सन् 1956 मे विद्यालय मे हाई स्कूल का हमारा प्रथम बेच था। जब हमारा विदाई समारोह हुआ उस समय का दृश्य आज भी आखो के सामने आता है तो नेत्र गीले हो जाते है। लडकिया व उनके परिवार वाले भी लडकी के ससुराल जाते समय इतना नहीं रोते होगे, जितना रोना हम सब लडकियो व अध्यापिकाओ को उस समय आया था। विद्यालय छोडने के बाद मैंने इन्टर किया, बी ए किया। मै इस विद्यालय मे अध्ययन के दौरान ही सपना सजो बैठी थी कि मै भी पढ़ लिखकर गरीब व मध्यम श्रेणी के बालको बालिकाओ को शिक्षा प्रदान करु। मेरे पतिदेव, सासजी व श्वसुरजी ने इसे जानकर अपना पूर्ण सहयोग दिया। इनके मार्गदर्शन माता-पिता एव गुरुजनो के आशीर्वाद से मै गत् 35 वर्षों से बालक बालिकाओ को शिक्षित करने का प्रयास कर रही हूँ।

सन् 1960 मे जब मैंने विद्यालय प्रारम्भ किया, मैंने श्रीमती सिन्हा को बुलाया तो वह विद्यालय देखने आईं तथा जब-जब भी उनसे मैंने विद्यालय के बारे मे बात की, उन्होंने हमेशा उपयोगी सुझाव व आशीर्वाद ही दिया। उनके आदर्श, व्यवहार व उनका जीवन मेरे लिये हमेशा अनुकरणीय रहा है जिसे मै कभी भुला नहीं सकूगी।

श्रीमती सिन्हा जी के बाद श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव प्रधानाध्यापिका जी आई है, उनका भी जीवन व्यवहार व आदर्श बिल्कुल श्रीमती सिन्हा के ही अनुरूप है। लगता ही नहीं है कि विद्यालय की प्रधानाध्यापिका जी बदल गई है। जब-जब भी मै श्रीवास्तव दीदी के पास गई हूँ, आपने छोटी बहिन जैसा व्यवहार व प्यार दिया है और जब-जब भी आपको मेरी याद आई है आप मुझे फोन करके बुला लेती है। आपके मुख से पूर्व छात्राओ के सम्मेलन की बात सुनकर बडी खुशी हुई। मुझे ऐसा महसूस हुआ मेरा सम्पूर्ण बचपन मेरी आखो के सामने गुजर रहा।

आज अपने विद्यालय के लिए लिखते हुए मेरी आखो का पानी प्रत्येक उस व्यक्ति की याद की याद कर रहा है जिसने न केवल मेरी वरन् मेरी जैसी अनगिनत उन लडकियो की मदद की जो पढना चाहती थी। उन व्यक्तियो के सामूहिक व अलग-अलग प्रयासो से ही समाज मे व्याप्त अनेकानेक कुरुतियो का अत हो सका और महिलाओ मे जागृति सभव हो सकी। ❑

विघटित होते जीवन मूल्य और औद्योगीकरण

श्रीमती शशि शर्मा
एम. ए., बी. एड.
व्याख्याता

'औद्योगीकरण का मूलमंत्र 'अधिकाधिक लाभ' मानवीय भावनाओं को समाप्त कर देगा। अतः वर्तमान में औद्योगीकरण की प्रवृत्ति को कम करके मानवीय भावना दया, प्रेम, करुणा व सहानुभूति जैसे गुणों की पुर्नस्थापना करना आवश्यक है।'

– सम्पादिका

''कब्रों में दबी हुई है इन्सानियत
सूली पर लटकी सच्चाई है
दफनाया जा चुका है, मानवता को
आज तो अपनी संस्कृति हुयी परायी है
करो मत आश्चर्य, बताती हूं सच्चाई
ये है औद्योगीकरण की दुहाई !''

कर्णभेदी मशीनों की ध्वनि के पीछे चीखती पुकारती एक आप ही के भाई की आवाज आप यदि न सुन पाए तो ये एक बहुत बड़े आश्चर्य की बात नहीं होगी क्योंकि यदि एक ओर औद्योगीरण भविष्य को संवारना चाहता है तो वर्तमान को विकृत भी करता जा रहा है।

भावनामयी देश भारत श्री प्रसाद के शब्दों में ''अरूण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच, अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा !''

आज उसी भारत में मशीनों की गडगड़ाहट और उससे उत्पन्न भौतिकता की खनक ने मानव के कानों की उस क्षमता को समाप्त कर दिया है, जो कभी किसी का दुःख सुनकर स्वयं भावुक हो जाता था और उसके हृदय की सवेदनाओं को समाप्त कर दिया हे, जो सुख और को बांटकर दुःख को स्वयं खरीद लिया करता था।

हमने माना औद्योगीकरण अपनी तीव्र उत्पादकता, सुलभता के कारण सामाजिक समृद्धि व सम्पन्नता का साधन बना। परिणामतः जीवन में सरलता, गतिशीलता व विभिन्नता परिलक्षित हुयी है। व्यक्ति की कार्यकुशलता व मानसिक क्षमता का विकास भी औद्योगीकरण से संभव हो सका। किन्तु क्या प्रगति व विकास के इन सूत्रों तक पहुंचने के लिए देश व समाज को वहुत बड़ी कीमत नहीं चुकानी पडी ? क्या औद्योगीकरण के हाथों हमारी सांस्कृतिक विरासत को आघात नहीं पहुंचा है ? हमारे आध्यात्मपरक जीवन मूल्यों को भौतिकता के आकर्षण ने घेर लिया है। आज जीवन में त्याग, संयम व सादगी को सर्वोपरि स्थान देने वाली भारतीय सभ्यता व संस्कृति को औद्योगीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति का रूप दे दिया है। क्या नित नये उत्पादनों ने विज्ञापनों के प्रभाव से हमारी नयी पीढी संक्रामक विलासिता के जाल में नहीं फंस गयी है ? क्या वर्तमान अथवा भावी पीढी से हम त्याग, संयम, सादगी के महान आदर्शों की अपेक्षा कर सकते हैं ? नहीं, कदापि नही।

औद्योगीकरण का अभिप्राय है अधिकाधिक धन का निवेश व अर्जन। किन्तु पूजी निवेश, अर्जन तथा नैतिकता का निर्वाह साथ साथ सभव नही होता। औद्योगीकरण के विकास हेतु हमे नैतिकता व जीवनमूल्यो का वलिदान करना ही पडता है जिसके उदाहरण हम समाज मे नित्य प्रति देखते है, चाहे दवा के नाम पर बिकने वाली विषाक्त सुराकाड हो अथवा सीमेट के स्थान पर रेत से बनाए गए, मकान बाध या नहरे हो। केवल इतना ही नही मानवीय खाद्य पदार्थों और औपधियो तक मे की गई मिलावट मनुष्य को मनुष्य नही दानव बना देती है और इसके लिए औद्योगीकरण ही उत्तरदायी है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप भौतिकता भोगवाद, फैशन परस्ती, चरित्रहीनता व स्वार्थ की दूषित मनोवृत्ति के कारण मानवीय मूल्य गिरते जा रहे है। नवीनता के मोह म प्रेम, दया, करुणा व प्राचीन सस्कृति की भावना को भूलते जा रहे है। आज ससार भौतिकता से पीडित है। परमाणु बम व हिसक शस्त्रो की दौड़ मे समस्त मानव जाति का विनाश निकट ही है।

औद्योगीकरण आर्थिक विकास का एक पहलू अवश्य है किन्तु क्या उद्योगपतियो व व्यापारियो की अर्थलोलुपता, निरतर समाज मे रिश्वतखोरी, जमाखोरी, कर की चोरी व धोखाधडी का एक नया अध्याय नहीं जोड रही है। क्या आज विभिन्न उद्योग श्रमिक शोषण के उत्तरदायी नहीं है ? फिर भला औद्योगीकरण के साये मे जीवन मूल्यो की रक्षा किस प्रकार सभव है ? विघटित जीवन मूल्यो का अभिशाप वर्तमान समाज को ही नहीं भोगना पड रहा है, वरन आने वाले समाज के लिए भी हम यही विरासत छोडेंगे।

नि सदेह औद्योगीकरण ने समाज की सम्पन्नता मे वृद्धि की है परन्तु मानवीय सवेदनाए पारस्परिक सहयोग व सदभाव व आत्मीयता की वली देकर आज महानगरीय सभ्यता मे मनुष्य मशीन वनकर रह गया है विशाल भवनो व महान अट्टालिकाओ ने मनुष्य को वौना बना दिया है, न वह अपने विषय मे कुछ सोच पाता है, न परिवार के विषय मे। स्वार्थ, सकीर्णता व अर्थलोलुपता से घिरे लोग भला दधीचि के अस्थिदान के महत्व को क्या समझ पाऐगे ? औद्योगीकरण के दुष्ट परिणामस्वरूप व शहरीकृत होते ग्रामो के सयुक्त परिवारो, जो युगो से जीवनमूल्यो के जनक कहे जाते रहे है, आज वही परिवार विघटित होकर नए नए विकल्पो का रूप ले रहे है और जीवन मे नई समस्याओ को जन्म दे रहे है। चाहे बच्चो के लालन पालन का प्रश्न हो या वृद्धो के सरक्षण का। योग्य सरक्षण, कर्त्तव्यबोध से रहित तथा माता पिता के स्नेह से वचित बच्चे जीवन मूल्यो को नहीं वरन नये अपराधो को जन्म दे रहे है।

औद्योगीकरण के प्रभाव ने केवल भूतल को दुष्प्रभावित नहीं किया है वरन अतरिक्ष व पाताल लोक को भी अपना निशाना बनाया है। कल-कारखानो से निकलने वाले धुए ने उनका तन ही काला नही किया है वरन मन भी कलुपित कर दिया है। अब क्षमा, दया, परोपकार, पर दुख कातरता के जीवन मूल्यो का कोई महत्व नही है। पड़ौसी भी पड़ौसी से अपरिचित होता जा रहा है। फिर भला ऐसे औद्योगीकरण का क्या लाभ ?

मानवीयता के हनन की प्रक्रिया उस स्थिति की भाति प्रतीत होती है जिस स्थिति मे पैंदे मे छेद की गई बाल्टी मे पानी धीरे-धीरे समाप्ता होता जाता है और अत मे उसमे सूखेपन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता। इसी प्रकार आज औद्योगीकरण मानवीय हृदयो मे एक ऐसा घाव, एक ऐसा सुराख बना दिया है जिसमे से निरतर रिस रिस कर मानवता बह रही है।

❑

एड्स रोग

श्रीमती वीणा चतुर्वेदी

एड्स एक संक्षिप्त शब्द है जो ए, आई, डी, एस शब्दों से मिलकर बना है, जिसका पूरा नाम है - एक्वार्यड इम्यूनो डेफिसिएन्सी सिण्ड्रोम। इन चारों शब्दों का पहला अक्षर लेकर शब्द बनाया गया है इम्यून डेफिसिएन्सी का मतलब होता है रोग प्रतिनिरोधक क्षमता की कमी। यह कमी व्यक्ति के ही किसी प्रयत्न या कार्य से प्राप्त हो तो अंग्रेजी में इसे एक्वायर्ड यानी प्राप्त की हुई कहा जाता है। सिण्ड्रोम किसी रोग के लक्षणों के समूह को कहते हैं। इस सब विवरण का संक्षिप्त अर्थ ही एड्स है। जब किसी व्यक्ति के शरीर में रोग प्रतिनिरोधक शक्ति कम हो जाती है और समुचित चिकित्सा करने पर इस शक्ति का कम होना रुकता नहीं बल्कि बढ़ता ही जाता है तो इस स्थिति को "एड्स" कहते हैं।

रोग का जन्म कब और कैसे -

सन 80 के आसपास सबसे पहले अमेरिका के केलिफोर्निया और सेनफ्रांसिस्को नामक शहरों में इसका पता चला था। एक मान्यता के अनुसार यह रोग अफ्रीका से शुरु हुआ था। वहीं से सबसे पहले अमेरिका के केलिफोर्निया और सेनफ्रांसिस्को नामक शहरों में पहुंचा और वही से यूरोपीय देशों में फैला था। अब तो संसार के अन्य देशों की तरह यह रोग हमारे देश में भी आ पहुंचा है।

एड्स एक प्रकार के वायरस से होता है। प्रत्येक सामान्य व्यक्ति के शरीर में कुछ श्वेत रक्त कण होते हैं। ये मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति का काम करते हैं। अर्थात किसी भी रोग के आक्रमण का मुकाबला करके रोग से शरीर की रक्षा करते हैं। जबकि एड्स का वायरस इन्हीं रक्त कणों को नष्ट करने लगता है। एक वायरस से कई वायरस पैदा हो जाते हैं तथा रक्त कणों को तीव्रता से नष्ट करते हुए शरीर को रोग प्रतिरोधक शक्ति को समाप्त करने के पूर्ण प्रयास में जुट जाते हैं। परिणाम स्वरूप शरीर में कोई भी रोग प्रवेश करके बढ़ता जाता है और उसके ठीक होने की सम्भावना नहीं रहती जिससे रोगी घातक स्थिति में पहुंच कर मौत का शिकार हो जाता है।

रोग के कारण -

सन् 1981 में अमेरिका के लांसएँजिलस में पांच व्यक्ति अस्पताल में भर्ती हुए थे जो पहले स्वस्थ थे। उन सभी को एक ही प्रकार का न्यूमोनिया था। इनकी जांच करने पर पता चला कि उनमें ऐसे कीटाणु थे जिनसे सामान्य व्यक्ति में न्यूमोनिया नहीं होता। पूरी जांच करने पर वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुंचे कि उन पांचों व्यक्तियों में रोग प्रतिनिरोधक शक्ति कम थी। इससे यह सोचा गया कि इन पांचों व्यक्तियों में इस रोग के पैदा होने का कारण समलैंगिक आचरण

और रोग प्रतिरोधक शक्ति की कमी होना हो सकता है। धीरे धीरे इस रोग के विषय मे और अधिक जानकारिया मिलती गई, सर्वेक्षण ओर अध्ययन किये जाते रहे जिनसे कई तथ्य सामने आये।

1 एड्स होने का सर्वप्रथम कारण असुरक्षित एव उन्मुक्त यौन सवध करना पाया गया हे।

2 दूसरा कारण ब्लड ट्रासफ्यूजन अर्थात रक्त की जाच किये विना रोगी को रक्त दे देना जिससे रक्त मे मौजूदा एड्स के वायरसो का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के शरीर मे पहुचना।

3 तीसरा कारण सुई या इजेक्शन द्वारा मादक द्रव्य को शरीर मे पहुचाना।

4 चौथा कारण एड्स रोग से ग्रस्त मा के गर्भवती होने पर जन्म लेने वाले वच्चे को एड्स होना।

उपर्युक्त कारणो से वचाव करने वाला व्यक्ति एड्स रोग से वचा रह सकता है।

एड्स के वायरस वहुत ही कमजोर होते है। इनकी स्वय की प्रतिरोधक क्षमता वहुत कम होती है और जरासी प्रतिकूल परिस्थिति आते ही इनकी मृत्यु हो जाती है। अत साथ रहने से, हाथ मिलाने से, साथ सोने से, साथ खाना खाने अथवा पानी पीने से भी एड्स नहीं होता। एड्स का वायरस इतना कमजोर होता है कि स्वय आसानी से किसी के शरीर मे प्रवेश नहीं कर पाता। हा त्वचा कटी फटी हो, रक्त स्त्राव हो रहा हो तो वहा से वायरस शरीर मे प्रवेश कर सकते है।

एड्स रोगी के लक्षण –

वायरस के प्रवेश करते ही तो किसी तरह के लक्षण प्रकट नहीं होते, बल्कि अगर व्यक्ति स्वस्थ शरीर का हे और उसके शरीर मे अन्य कोई इन्फेक्शन्स नहीं है तो उसके शरीर मे प्रवेश करने के वाद वायरस लम्बे समय तक प्रसुप्त अवस्था मे पड़े रह सकते हे। देखा गया है कि जिनके शरीर मे वायरस का सक्रमण 10, 12 वर्ष पूर्व हुआ था वे अभी तक ठीक है तथा अन्य लोग जो कि अन्य इन्फेकशन्स से ग्रस्त थे वे साल दो साल मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। कोई भी इलाज उन्हे वचा नहीं पाया। एड्स लाइलाज रोग वना हुआ है।

अव प्रश्न है कि एड्स का रोग शरीर मे क्या क्या परिवर्तन लाता है कौन कौन से लक्षण प्रकट होते है। एड्स का वायरस शरीर के श्वेत रक्त कणो को समाप्त करता जाता हे जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति धीरे धीरे समाप्त होती जाती हे। इस वायरस का सबसे अधिक प्रभाव शरीर के दो अगो पर पडता है। एक तो आतो के म्यूकोसा पर जिससे आतो पर वार वार इन्फेक्शन होने लगते है और लगातार डायरिया होना, पतले दस्त लगना, अतिसार होना आदि लक्षण प्रकट होने लगते हे।

दूसरा लक्षण यह दिमाग को प्रभावित करता है जिससे दिमाग के सेल्स धीरे धीरे नष्ट होने लगते है और दिमाग कमजोर हो जाता है, याददाश्त खराव होती जाती है। ऐसा व्यक्ति धीरे धीरे शारीरिक और मानसिक रूप से ऐसा कमजोर और अक्षम हो जाता है कि उसे कोई भी रोग आसानी से हो जाता है। दूसरी और रोग प्रतिरोधक शक्ति के कम हो जाने से कोई इलाज उस रोग को दूर नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति देख कर रोगी को एड्स से ग्रस्त घोषित कर दिया जाता है।

रोगी के इलाज के लिये किये गये प्रयास –
हमारे देश के वैज्ञानिक, चिकित्सक एव शरीर शास्त्री

इस रोग की जांच और रोकथाम के लिये भरसक प्रयास कर रहे हैं। इस रोग के पूरी जांच की परीक्षा हमारे देश में उपलब्ध है। जो जांच आसानी से की जा सकती है उसे संक्षेप में एलाइसा कहते हैं। इसमें वायरस के जरिये शरीर में उपलब्ध एण्टीबडीज की जांच की जाती है यह जांच करने की व्यवस्था देशभर में उपलब्ध है। दुर्भाग्य की बात है कि अभी तक एड्स का वेकसीन नहीं बनाया जा सका है। इसका कारण यह है कि एड्स का वायरस इतनी तेजी से अपनी संरचना बदलता रहता है कि जब तक वेक्सीन बनाया जाये तब इसकी जगह दूसरा वायरस दिखाई देने लगता है। अधिकतर वायरस शरीर के कोशों के अंदर रहते हैं और कोशों के अंदर तक जाकर असर कर सके ऐसा वेकसीन होना चाहिये। अभी तक ऐसा वेक्सीन नहीं बन पाया है जो एड्स के वायरस पर असर कर सके। लेकिन आशा की जा सकती है कि आगामी 3-4 वर्षो में कुछ सफलता अवश्य मिल सकेगी।

जहां तक इलाज का सवाल है तो अभी तक दो तरह के इलाज हैं। एक ऐसा इलाज जो वायरस को खत्म करे और दूसरा वायरस के द्वारा जो वीमारियां हो रही हैं, जो रोग प्रतिरोधक शक्ति को कम कर रही हों उनके विरुद्ध में इलाज करें। सीधे वायरस के खिलाफ तो हमारे देश में अभी एक ही दवा उपलब्ध है जिसको एजिडथायमेडिन यानी ए.जेड.टी. वोलते हैं यह दवा शरीर में जाकर वायरस को नष्ट करती है लेकिन साथ में वहुत सारे साइड इफेक्ट भी करती है, जैसे सामान्य से कम मात्रा में खून वनना, लिवर और किडनी खराव होना, त्वचा खराब होना आदि। दूसरे यह दवा बहुत ही मंहगी है। दूसरी बात उन रोगों के इलाज करने की है जो इस रोगी के शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण पैदा हो जाते हैं। उन रोगों का इलाज भी आसानी से उपलब्ध है बस आवश्यकता इस बात की है कि उन रोगों को ठीक से पहचाना जाये और उचित इलाज किया जाये।

भारत में रोग कब आया और कैसे -

हमारे देश में सबसे पहला रोगी सन् 1985 मे प्रकाश में आया था। उसको एड्स होने का कारण था अमेरिका में उसकी हार्ट सर्जरी करते समय ब्लड ट्रांसप्लाण्ट करना। वह रोगी बचाया नहीं जा सका। आज भारत में अनुमानत. एड्स से ग्रस्त रोगियों की संख्या दो से तीन लाख के बीच है और हो सकता है कि आगामी पांच छः वर्षो में यह संख्या दस बारह लाख तक पहुंच जाये। खासकर बम्बई, कलकत्ता जैसे महानगरों में एड्स के रोगी बढ़ने की संभावना सबसे अधिक है।

उपसंहार -

इसकी रोकथाम का सबसे अच्छा उपाय यही हो सकता है कि देशवासियों को एड्स होने के चारों कारणों की समुचित रूप से जानकारी दी जाये और उनको इससे वचाव करने के प्रति सतर्क किया जाये। एड्स से भयभीत होने की इतनी आवश्यकता नही जितनी इस विपय में सतर्क रह कर वचाव करने की है।

❑

दूरदर्शन और बाल जगत

✍ कु सविता शर्मा
XII-C

समयानुसार ममता, वात्सल्य, पितृप्रेम, सखा स्नेह पारिवारिक लाड इत्यादि प्रत्येक दिवस उचित मात्रा मे उपलब्ध हुआ। बचपन की परिभाषा वो भी जो शायद हमने एक दशक पूर्व व्यतीत की, वह जो आज के नव पल्लवित पुष्प समान बालक व्यतीत कर रहे है। उस और इस दिन मे समानताए नगण्य रह गई है। तथा विभिन्नताओ की खाई विस्तृत रूप ले चुकी है। ऊपरी तौर पर दृष्टि विम्व होने पर महसूस किया जा सकता है कि उस समय भी एक खिलौना हुआ करता था जिसका निश्चित समय कार्य होता था। दूरदर्शन रूपी इस खेल को मात्र कुछ क्षणो का मनोरजन और देश विदेश के हर क्षण मे घटित घटना क्रम का व्यौरा होता था।

दिवस व रात्रि के 24 घटो मे इस खेल का आनद मात्र दो या तीन घंटे ही लिया जाता था जो कि मेरे मायने मे उचित ही नहीं सर्वथा उपयुक्त था। आज का बचपन, विचलित बचपन, पुस्तकीय बचपन गृह कार्य, स्कूलीय तथा टी वी से ग्रस्त बचपन कह लीजिए।

सोमवार का महाकाव्य दिवस प्रात काल अनचाही निद्रा से पीछा छुडाना। विद्यालय की देहरी ठोकना तथा पिछले दिन दूरदर्शन पर वर्णित सभी कार्यक्रमो का विस्तृत वर्णन, सखा सहेलियो के साथ नगर निगम के ट्रक की भाति पुस्तको का बोझ, गृहकार्य तथा धारावाहिको के देखने करने के समय मे सामजस्य बैठाते हुए घर मे प्रवेश। यूनिफार्म उतारने से पहले दूरदर्शन का दर्शन अत्यावश्यक है। भोजन ग्रहण हो या टूथब्रश, होमवर्क हो या नींद की झपकिया। हर वक्त टी वी के सामने चलाये जाना एक जरुरी व्यथा हे। रात्रि 2 बजे तक उस सफेदपोश राक्षस की महिमा आज के बचपन को बाधे रहती है।

पडौस के घर मे आग कहा लगी है, वरन यह पता है कि मुकद्दर का सिकन्दर मे तीन मजिला मकान बम से उडा दिया गया। पापा ने चश्मा मगवाया ये सुन न पाये मगर अगला कार्यक्रम जुनून है, ये मस्तिष्क मे कम्प्यूटर प्रिट की भाति फिक्स है। रात्रि मे बन्द हुआ उस मशीनी ताडव का नृत्य तो याद आया। अध्यापको द्वारा दिया गया होमवर्क की सैकण्ड मे सोचा बहाना, चद्दर खैचकर सो गये। मात्र चार घटो के लिए। शनिवार को यही। रविवार को शायद घूमने जायेग, खेलेगे, कूदेगे, मित्रो से मिलेगे परन्तु यह क्या सुबह 6 से रात तक दूरदर्शन ने बच्चो का घर बैठे ही मनोरजन कर रखा है। क्या यही बचपन है ? बचपन मे खेल सीखने चाहिए उसमे बम बनाना, ड्रिक और फैशन करना सीख जाते है। यही बचपन मा के कोमल हाथो के प्यार के लिए आतुर होते है। वे हाथ 10-50 बार चैनल मरोडने और ऑन व

ऑफ करने में लगे रहते हैं। उफ! क्या यही बचपन है ? जिस बचपन में मां व पिता का प्यार बालक रूपी मछली के लिए समुद्र के समान होता है। उसे दूरदर्शन माता पिता में तलाक व पति पत्नी में कटु संबंध दिखा देते हैं। क्या यही बचपन है ? जिसमें आंखे 10 घंटे की नींद चाहती है और केवल मात्र 4 घंटे की नींद ही मिल पाती है। जिस बचपन में टॉफी, चॉकलेट और सांप सीढ़ी ही मनोरंजन होता है। वह खुले आम शराब का सेवन देखने पर मजबूर होता है।

बाल बचपन तो ऐसा है, इसे जिधर ढालो उधर ढल जाता है। फिर वह बालक उत्साहपूर्वक वही कार्य करेगा जो उसे दूरदर्शन पर 12 घंटे दिखाया जाता है। अगर बालक बचपन में यह भूल भी जाता है निष्कपट, विचारयुक्त धारावाहिक आ रहा है तो मां कहती है " बेटा टी.वी. चला, स्वाभिमान आ रहा है। जिसमें कलाकार और उसकी कला को देखने में बालकों को मार्ग दर्शन ही नहीं मार्गदर्शन को ताक में रखकर एक परिवार का भद्दा मजाक, अश्लीलता, घिनौनापन व उपद्रव मां व बच्चे साथ देखते हैं। प्रत्येक धारावाहिक बचपन से कोसों दूर है। लेकिन आज का बचपन इन धारावाहिकों या इस शौकीन वीमारी दूरदर्शन के करीब आने की बेतहाशा कोशिश कर रहा है।

वह दौड रहा है ऐसी दौड़ जिसमें वह जीत भी गया तो उसे मिलेगी भंयकर दुर्गम पराजय। ऐसी पराजय जिसमें स्वयं पराजय का हृदय कांप उठेगा।

जो बचपन डा. वकील या इंजिनियर बनने का इच्छुक था वह आज फैशन डिजाइनर, एक्टर, मि. नटवरलाल बनने की कामना करता है। चार दीवारी में बंद बालक यह भी नहीं जानता कि बाहर की दुनिया कैसी है ? वह तो हर किसी से मोगेम्बो, टाइगर या दारासिंह बनकर बात करता है। चाहे मेहमान कितना भी बडा हो या छोटा हो, हाय अंकल और नमस्कार के स्थान पर दाहिना हाथ बढ़ा दिया जाता है।

भूख अगर रोटी की भी होती है तो भी मैगी, ब्रेड, सांस इत्यादि का वरन वो भी शान से। मासूम बचपन टी.वी. पर व्यस्त रहता है। वह कुछ क्षणों के लिए इससे दूर चला जाता है। वह सुखद समय समाचार, परख या आज तक का होता है।

संस्कृति, सभ्यता, भारतीयता या प्रेम सौहार्द इत्यादि का विनाशक अगर दूरदर्शन को कहा जाए तो यह अनुचित प्रतीत होता है। जिस प्रकार दूर दर्शन पर आने वाले अल्प अच्छे कार्यक्रमों की अपेक्षा, विस्तृत भद्दे, चित्रपट, नाचगान मारधाड़, गाली-गलौच, अश्लीलता का काला निशान बच्चों की सफेद दीवारों पर जल्दी अंकित होता है।

जिस बचपन में बालक को भगवान के प्रति आस्था का प्रवाह होना चाहिए,वहां एम.टी.वी., जी.टी.वी. और ए.टी.एन. जैसे महादेवों का ठहराव है। दूरदर्शन इस मासूम, भोले, कोमल वचपन को कितना वृद्ध कर चुका है। इस घातक और जान लेवा वचपन से छुटकारा पाना नाजुक बचपन के लिए असंभव है। इस ओर चिन्तन आवश्यक है।

❑

प्रतिभाशाली छात्राएं

कु अशु गोयल

सैकण्डरी परीक्षा सन् 87 वाणिज्य वर्ग की योग्यता सूची मे 9वा स्थान एव हायर सैकण्डरी वर्ग मे तृतीय स्थान तथा छात्रा वर्ग मे प्रथम स्थान।

विद्यालय मे प्रथम बार बोर्ड की वरीयता सूची मे अपना स्थान निर्धारित करने वाली "कु अशु गोयल" ने निरन्तर दो वर्षों तक वरीयता क्रम म अपना स्थान बनाकर स्वय को, परिवार को तथा विद्यालय परिवार को गौरवान्वित किया। सरल, सौम्य एव मितभाषी कु अशु प्रारभ से ही अध्ययनशील व विनम्र स्वभाव की है। आपके पिता श्री प्रकाशचन्द जी गोयल जयपुर नगर के सफल अधिवक्ता के रूप मे जाने जाते है। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव की सतत् प्रेरणा व शिक्षिकाओ के मार्ग निर्देशन से आपने योग्यता सूची मे स्थान प्राप्त किया। कु अशु वक्तृत्व कला मे भी अपना एक विशेष स्थान रखती है।

सैकण्डरी परीक्षा 88 वाणिज्य वर्ग की योग्यता सूची मे 9वा स्थान एव हायर सैकण्डरी 89 की वाणिज्य वर्ग की योग्यता सूची मे तीसरा स्थान तथा छात्रा वर्ग मे प्रथम स्थान।

लगातार दो वर्षो तक बोर्ड के वरीयता क्रम मे स्थान प्राप्त करने वाली कु ज्योति निष्ठा, लगन, परिश्रम के बल पर ही अपना स्थान बनाने मे समर्थ हुई।

"जो सोचा उसे पाया" का मूल मत्र अपना कर कु ज्योति ने सफलता के प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त किया। विद्यालय एव परिवार का पूर्ण सहयाग प्राप्त करने वाली कु ज्योति प्रतिदिन तीन घंटे तथा परीक्षा काल मे अध्ययन पाच घंटे तक जारी रखती थी। कु ज्योति अपने अध्ययन मे ही निपुण नहीं है अपितु वक्तृत्व कला मे भी वह अपने विचारो को स्वतत्र रूप मे प्रकट करने की क्षमता रखती है।

कु ज्योति

कु. शिखा जैन

सीनियर सैकण्डरी परीक्षा 91, वाणिज्य वर्ग की योग्यता सूची में 10वां स्थान तथा छात्रा वर्ग में द्वितीय स्थान।

बोर्ड की वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाली कु. शिखा सरल, शांत एवं परिश्रमी छात्रा के रूप में जानी जाती है। कु. शिखा प्रारंभ से ही उत्तम अंकों से उत्तीर्ण होती रही हैं।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकण्डरी वरीयता सूची में स्थान प्राप्त न कर पाने पर भी कु. शिखा निराश नहीं हुई। अपितु दुगुने उत्साह से वह अपने अध्ययन में संलग्न हो गई।

माता पिता विद्यालय शिक्षिकाओं के पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन से कु. शिखा ने सीनियर सैकण्डरी परीक्षा की वरीयता सूची में अपना स्थान निर्धारित किया।

कु. संघमित्रा बोहरा प्रारंभ से ही कक्षा 12 तक इसी विद्यालय में अध्ययनरत रही। वह अत्यन्त शांत, अनुशासित, गंभीर एवं अध्ययनशील छात्रा थी। कक्षा 10 तक बहुत अच्छे अक न लाने पर भी आपने कठिन परिश्रम का निश्चय किया तथा अध्यापिकाओं, परिचितों एवं परिवार के सदस्यों से समुचित मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा कठिन परिश्रम करने में आपने कोई कमी नहीं छोडी। इसी कारण आपका परिणाम सुखद एवं उत्साहवर्धक रहा। सीनियर सैकण्डरी परीक्षा की वरीयता सूची में चतुर्थ स्थान प्राप्त कर विद्यालय का, अपने परिवार का तथा स्वयं अपना गौरव बढाया।

कु. संघमित्रा बोहरा

कु. ऋतु मालपानी

सीनियर सैण्डरी परीक्षा 1995 की वाणिज्य वर्ग की योग्यता सूची :

कु. ऋतु मालपानी प्रारम्भ से ही चचल, हंसमुख एव स्फूर्ति व गतिशील छात्रा रही हैं। जल्दी बोलना, जल्दी चलना, जल्दी समझना तथा जल्दी ही उत्तर देना आपकी विशेषता रही। कक्षा में प्रारंभ से ही सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली, सभी अध्यापिकाओं एवं छात्राओ की प्रिय तथा शैक्षणिक गतिविधियों की ओर विशेष रूप से जागरूक रही। आपने अपनी कक्षा में अनुशासन एवं अध्ययन का स्तर विशेष रूप से प्रशंसनीय बनाये रखा। विषय के प्रति जिज्ञासा, अध्ययन के प्रति नियमितता तथा शिक्षिकाओं के प्रति सम्मान आपकी प्रमुख विशेषताएं रही। अध्ययनशील छात्राओं के लिये योग्यता सूची में स्थान के लिये समय समय पर अतिरिक्त अध्ययन कराने हेतु कक्षाएं लगाई गई जिसमें आप नियमित अध्ययन करती रहीं। उन्हीं सबका परिणाम हुआ कि आपने बोर्ड की योग्यता सूची में पांचवा स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

श्री वीर बालिका सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

सत्र	छात्राओ की सख्या	
	प्राथमिक विभाग (1 से 5)	उच्च मा विभाग (6 से 12)
1971-72	267	272
1972-73	317	326
1973-74	342	353
1974-75	395	409
1975-76	416	437
1976-77	485	449
1977-78	544	514
1978-79	608	606
1979-80	678	658
1980-81	752	751
1981-82	719	794
1982-83	761	875
1983-84	725	926
1984-85	717	1007
1985-86	730	1059
1986-87	734	1075
1987-88	710	1092
1988-89	699	1236
1989-90	704	1304
1990-91	669	1299
1991-92	609	1234
1992-93	591	1258
1993-94	570	1243
1994-95	585	1234
1995-96	569	1197
1996-97	571	1216

सीनियर सैकण्डरी वाणिज्य वर्ग

सत्र	कुल छात्रा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	पूरक	अनु.
1988-89	30	5	16	1	7	1
1989-90	86	15	49	12	6	4
1990-91	82	13	48	14	4	3
1991-92	88	18	39	21	7	3
1992-93	84	13	44	22	3	2
1993-94	68	8	31	23	2	4
1994-95	52	10	27	14	-	1
1995-96	56	24	25	3	2	2

सीनियर सैकण्डरी कला वर्ग

सत्र	कुल छात्रा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	पूरक	अनु.
1988-89	35	1	28	6	-	-
1989-90	64	2	29	11	3	19
1990-91	79	5	37	33	3	1
1991-92	48	3	32	13	-	-
1992-93	70	14	48	6	1	1
1993-94	104	12	66	7	11	8
1994-95	117	23	80	12	2	-
1995-96	100	24	65	7	3	1

सैकण्डरी परीक्षा

सत्र	कुल छात्रा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	पूरक	अनु
1988-89	171	30	84	50	5	2
1989-90	165	34	53	53	17	8
1990-91	181	34	79	42	6	20
1991-92	175	56	96	19	2	2
1992-93	165	22	100	41	-	2
1993-94	181	49	101	29	1	1
1994-95	178	33	93	42	10	-
1995-96	191	68	95	25	1	2

गत दस वर्षों का परीक्षा परिणाम

सीनियर सैकण्डरी			सैकण्डरी	
सत्र	वाणिज्य	कला	वाणिज्य	कला
1985-86	80%	91%	94%	96%
1986-87	98%	87%	93%	88%
1987-88	94%	85%	98%	89%
1988-89	73%	100%	94%	
1989-90	88%	65%	85%	
1990-91	92%	95%	86%	
1991-92	89%	100%	98%	
1992-93	94%	97%	99%	
1993-94	91%	82%	99%	
1994-95	98%	98%	94%	
1995-96	93%	96%	98%	

श्री वीर बालिका सी. उ. मा. विद्यालय, जयपुर

क्र.सं.	शिक्षक/शिक्षिका वर्ग	पद
1.	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव, एम.ए., बी.एड.	प्रधानाचार्या
2.	श्रीमती सुलक्षणा जैन, एम.ए., बी.टी.	व्याख्याता
3.	श्रीमती स्वदेश नांगिया, एम.ए., डिप्लोमा आर्ट	व्याख्याता
4.	श्रीमती राजकुमारी सोनी, एम.ए., बी.एड.	व्याख्याता
5.	श्रीमती शशिबाला शर्मा, एम.ए., बी.एड.	व्याख्याता
6.	श्रीमती स्वर्ण भार्गव, एम.ए., बी.एड.	व्याख्याता
7.	श्रीमती रत्ना स्वरूप, एम.ए., बी.एड.	व्याख्याता
8.	श्रीमती पुष्पा जैन, एम.ए., एम.एड., एलएल.बी.	व्याख्याता
9.	श्रीमती पूनम सक्सैना (वाणिज्य), एम.कॉम., बी.एड.	व्याख्याता
10.	श्रीमती मधु शर्मा (वाणिज्य), एम.काम.,एम.फिल.,बी.एड.	व्याख्याता
11.	श्री सोहनलाल गुप्ता, बी.एस.सी., बी.एड.	वरिष्ठ अध्यापक
12.	श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव,एम.ए.,बी.एड., बी.(म्यूजिक)	वरिष्ठ अध्यापिका
13.	श्रीमती बीना कानूनगो, एम.ए., बी.एड.	वरिष्ठ अध्यापिका
14.	सुश्री सुनीता श्रीमाली, एम.ए.	वरिष्ठ अध्यापिका
15.	श्रीमती सुधा शुक्ला, एम.ए., एम.एड.	वरिष्ठ अध्यापिका
16.	श्रीमती अर्चना जैन, एम.ए., बी.एड.	वरिष्ठ अध्यापिका
17.	सुश्री अर्चना जैमन, एम.ए., बी.एड.	वरिष्ठ अध्यापिका
18.	श्रीमती मालती लता जैन, मैट्रिक, संस्कृत शास्त्री	सहायक अध्यापिका
19.	श्रीमती आभा श्रीवास्तव, एम.एस.सी., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
20.	श्रीमती शोभा सक्सैना, बी.एस.सी., वी.एड.	सहायक अध्यापिका
21.	श्रीमती शशिबाला जैन, एम.ए., वी.एड.	सहायक अध्यापिका
22.	श्रीमती वन्दना जैन, वी.ए., वी.एड.	सहायक अध्यापिका
23.	श्रीमती आशा शर्मा, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
24.	श्रीमती शारदा भार्गव, बी.ए., व्यायाम प्रशिक्षण	पी. टी. आई.
25.	श्री राजेन्द्र डांगी, पंचम वर्ष, तवला वादन	तवला वादक

क्र स	अस्वीकृत स्टाफ	पद
1	श्रीमती चचल छाजेड, पी यू सी	कार्यालय सहायिका
2	श्रीमती सतोष डगलिया, मैट्रिक	पुस्तकालय सहायिका
3	श्रीमती राधा अग्रवाल, बी काम	सहायक अध्यापिका
4	सुश्री निभा श्रीवास्तव, एम काम	सहायक अध्यापिका
5	सुश्री सरोज अग्रवाल, एम ए , बी एड	सहायक अध्यापिका
6	श्रीमती नीरा जैन, बी ए	सहायक अध्यापिका
7	श्रीमती अल्का माथुर, एम काम , बी एड	सहायक अध्यापिका

क्र स	मत्रालयिक कर्मचारी	पद
1	श्री नेमीचन्द सौगानी, इन्टर कामर्स	वरिष्ठ लिपिक
2	श्री रामजीलाल शर्मा, हायर सैकण्डरी	वरिष्ठ लिपिक
3	श्री हेमन्त कुमार जैन, बी काम	कनिष्ठ लिपिक
4	श्रीमती पद्मा भार्गव, बी ए , सी लिब	लाइब्रेरियन
5	श्री लल्लू लाल	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
6	श्री देवीलाल	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
7	श्रीमती धन्नी बाई	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
8	श्रीमती केसर बाई	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
9	श्रीमती धापा बाई	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
10	श्रीमती अनिता मण्डल	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
11	श्री रोशन लाल	पार्ट टाइम हरिजन

श्री वीर बालिका प्राथमिक विद्यालय, जयपुर

क्र.सं.	शिक्षक/शिक्षिका वर्ग	पद
1.	सुश्री आशा अवरोल, बी.ए., बी.एड.	प्रधानाध्यापिका
2.	श्रीमती सुधा सक्सैना, हायर सैकण्डरी, एस.टी.सी.	सहायक अध्यापिका
3.	श्रीमती मालती देवी सक्सैना, मैट्रिक, एस.टी.सी.	सहायक अध्यापिका
4.	श्रीमती कमला शर्मा, बी.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
5.	श्रीमती सरोज मित्तल, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
6.	श्रीमती सरोज उपाध्याय, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
7.	श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, बी.एस.सी., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
8.	श्रीमती सविता भार्गव, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
9.	श्रीमती रेणु कुम्भट, बी.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
10.	श्रीमती किरण बत्रा, बी.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
11.	सुश्री आभारानी सक्सैना, एम.काम., एम.ए. बी.एस.सी., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
12.	श्रीमती कल्पना जैन, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
13.	सुश्री तारा बोहरा	सहायक अध्यापिका
14.	श्रीमती सरोज जैन, एम.ए., बी.एड.	सहायक अध्यापिका
15.	सुश्री प्रतिमा सक्सैना, बी.एस.सी.	सहायक अध्यापिका
16.	श्रीमती प्रेम सैन	सेविका
17.	श्रीमती सरोज बाई	सेविका
18.	श्रीमती सुगना बाई	सेविका

श्री वीर बाल निकेतन, जयपुर

क्र स	शिक्षक/शिक्षिका वर्ग	पद
1	श्रीमती सुधा जैन, एम ए , बी एड	इन्चार्ज
2	श्रीमती दया मरवाहा, मैट्रिक, एस टी सी	सहायक अध्यापिका
3	श्रीमती कृष्णा जुनेजा, बी ए , बी एड	सहायक अध्यापिका
4	श्रीमती चन्द्रकान्ता जैन, बी ए	सहायक अध्यापिका
5	श्रीमती सध्या शारदा, बी ए	सहायक अध्यापिका
6	सुश्री सुनीता कटारा, बी ए , बी एड	सहायक अध्यापिका
7	श्रीमती सुभद्रा बाई	सेविका
8	श्रीमती सूरज बाई	सेविका

संस्था में आए आगन्तुकों का दृष्टिकोण, सम्मतियां एवं सुझाव

श्री वीर बालिका विद्यालय को आज देखने का शुभअवसर मिला। इसकी शिक्षा व्यवस्था देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस छोटे से मकान में इतना बडा शिक्षा परिवार जिस पारस्परिक सौहार्दमय वातावरण में रहता है, वह निश्चित ही प्रशंसनीय है। विद्यालय की प्राचार्या जी तथा अन्य अधिकारीगण इसके लिए बधाई के पात्र हैं। मेरी शुभकामना है कि विद्यालय सर्वोच्च्च प्रगति कर समाज की सेवा अक्षुण्य रूप से करता रहे।

डा. भागचन्द जैन भास्कर
निदेशक
जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्री वीर बालिका विद्यालय को देखने का शुभअवसर प्राप्त हुआ। यहां का अनुशासन तथा कार्य पद्धति देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्रीमती प्रधानाध्यापिका जी के अथक प्रयत्न से यहां अनेक हस्त कलाएं सिखाई जाती हैं। जिसका निरीक्षण करने का आज सौभाग्य प्राप्त हुआ। एस.यू.पी.डब्ल्यू. जो नया पाठ्यक्रम चालू किया गया है उसका काफी अच्छा कार्यक्रम चल रहा है। यहां की प्रध्यापिकाएं भी प्रशंसा की पात्र हैं। मेरी शुभकामना है कि यह शाला उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

श्रीमती शान्ता
प्रधानाचार्या
महारानी बालिका उ.मा. विद्यालय, जयपुर

माध्यमिक विद्यालय में समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के अन्तर्गत चल रहे शिविर की गतिविधियां देखी। छात्राओं ने उत्साह से कार्य किया है व अध्यापिकाओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त है, यह अच्छा है। प्रधानाध्यापिका श्रीमती श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में विद्यालय प्रगति की ओर बढ रहा है। परीक्षा परिणाम इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। विद्यालय की चहुमुखी प्रगति की मैं कामना करती हूं।

सुश्री कमल केसकर
प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि., गांधीनगर, जयपुर

आज विद्यालय प्रांगण में आकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। छोटा सा प्रोग्राम रखा गया पर सम्पूर्ण तैयारी थी। बालिकाएं बहुत ही चुस्त हैं और किसी भी प्रकार की कोई अनुशासनहीनता नहीं थी। यहां बालिकाओं की प्रतिभा का चंहुमुखी विकास होता है यह उनके बैंड, गायन और शिक्षा के परिणाम तथा ललित कला की प्रदर्शनी में रखी वस्तुओं से पता चलता है। इस संस्था ने मुझ पर अपूर्व छाप छोड़ी है। हर प्रकार से इसे हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रीमती मोहिनी कपूर
न्यायाधीश

आज श्री वीर बालिका उ.मा. विद्यालय में आयोजित अन्तर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए उपस्थित होने का अवसर मिला। इस विद्यालय का

शैक्षिक वातावरण बहुत प्रिय है । यहा की अध्यापिकाओ की अपने दायित्व के प्रति तत्परता सराहनीय है । प्रधानाध्यापिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव के निर्देशन मे चल रहा यह विद्यालय वस्तुत अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है ।

हार्दिक शुभ कामनाए !

रामजीलाल
प्राचार्य
राजस्थान सस्कृत कॉलेज

अनिल मेहता
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर

हजारीलाल वर्मा
प्रवक्ता, सुबोध महाविद्यालय, जयपुर

आज विद्यालय के शुभ कामना समारोह के अवसर पर यहा आने का अवसर मिला । सास्कृतिक कार्यक्रम का स्तर एव प्रस्तुतिकरण सराहनीय था । प्रदर्शनी के माध्यम से भी छात्राओ की बहुमुखी प्रतिभा का आभास मिला । विद्यालय परिवार इसके लिए बधाई का पात्र है ।

अभिमन्युसिह
शासन सचिव
शिक्षा विभाग, राजस्थान

श्री वीर बालिका सस्थान का छात्राआ की शिक्षा मे बहुत बडा योगदान है । जयपुर मे शायद ही कोई ऐसी सस्था है जो 3500 छात्राओ का प्रारम्भिक स्तर से कॉलेज स्तर तक शिक्षा उपलब्ध कराती हो । इससे भी महत्वपूर्ण बात है शिक्षा की गुणवत्ता की । प्रत्येक वर्ष 80% से 90% सफलता इसकी द्योतक है ।

अनुशासन, सुसस्कार और विनम्रता जो प्रागण मे उपलब्ध है उससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नही रह सकता है । छात्राओ, प्राध्यापिका-प्राध्यापकगण व सचालक मडल सभी को इस सुदर प्रयास व उपलब्धि पर गर्व हो सकता है । मै मगल कामना करता हू कि यह सस्थान और अधिक फले फूले और विकसित हो ।

देवेन्द्रराज मेहता

आज इस विद्यालय मे इन्टरेक्ट क्लब के शपथ समारोह मे आने का अवसर मिला । शहर की घनी बस्ती मे बहुत बडी सख्या मे छात्राओ की शिक्षा व्यवस्था समाज को बहुत बड़ी देन है । छात्राओ का अनुशासित उत्साह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई । अध्यापिकाओ को ही इसका श्रेय है । टाक परिवार ने जो सेवा की हे उसे हमे याद रखना होगा । यह सस्था सफल हो यह मेरी शुभकामना है ।

भगवती प्रसाद बेरी
मुख्य न्यायाधीश

मैंने आज समाजोपयोगी उत्पादन कार्य शिविर के आयोजन के अवसर पर विद्यालय देखा । छात्राओ द्वारा दिखाया गया कार्यक्रम बहुत अच्छी श्रेणी का था । सस्थाओ का विकास, कार्यकर्ताओ की निष्ठा एव समर्पित प्रयास पर ही निर्भर होता है । यह सस्था इतनी अधिक प्रगति कर पायी है । यह सस्था से जुडे व्यक्तियो के प्रयास को अच्छी तरह दर्शाती है ।

विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहे, यही मेरी कामनाए है ।

मिट्ठालाल मेहता
मुख्य सचिव, राजस्थान

आजादी के 43वीं वर्षगाठ पर आज झडारोहण के समय इस महाविद्यालय मे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । इस विद्यालय की प्रगति से मै बराबर सपर्क मे

रहा हूं। आज यह विद्यालय एक महान विद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया। परीक्षाफल बालिकाओं की संख्या, अनुशासन और सफाई सबके लिहाज से यह विद्यालय अब राजस्थान के सर्वोपरि महिला विद्यालयों की श्रेणी में आ गया है। इस विद्यालय के संयोजकों को बधाई देता हुआ मैं विद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

चंदनमल वैद
वित्त मंत्री, राजस्थान

मैंने आज श्री वीर बालिका उ.मा. विद्यालय में समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समाज सेवा शिविर का अवलोकन किया, जहां छात्राओं द्वारा देश के अलग अलग राज्यों की वेशभूषा, भाषा, महापुरुषों का समन्वय ज्ञान का सौहार्दपूर्ण वातावरण देखा। जो भारतीय संस्कृति का सांमजस्य एवं देश की एकता व अखंडता के लिए बहुत उपयोगी है। विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहे यही शुभ कामना है।

पोकरलाल परिहार
विधायक-देसूरी (पाली)

आज श्री वीर बालिका, विद्यालय के शुभकामना समारोह में शामिल होकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। विद्यालय के निरन्तर उत्कृष्ठ परिणाम और वातावरण में व्याप्त आदर्शान्मुख उत्साह अत्यन्त प्रभावशाली रहा। शहर के भीतर विद्यालय को इस स्तर तक लाने वालों की निष्ठा को सभी सरकारी और गैर सरकारी व्यक्तियों और संस्थाओं का सहयोग वांछनीय है।

आनंदी लाल रूंगटा
प्रबन्ध निदेशक, रीको

आज इस संस्था में गणतंत्र दिवस के अवसर पर आने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां की अनुशासन की स्थिति, शालीनता व वातावरण से प्रभावित हुआ। कुछ बालिकाओं ने प्रभावोत्पादक स्वरचित कवितायें भी सुनायीं। बालिकाओं के तैयार किए हुए क्राफ्ट कार्य भी देखे, जो बहुत अच्छे थे। इस संस्था के उत्तरोत्तर विकास की शुभकामनाएं।

बी.डी. जोशी
विशिष्ट सचिव, शिक्षा विभाग

स्कूल प्रांगण में आयोजित स्वाधीनता दिवस समारोह में भाग लेकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। स्कूल और कॉलेज का अनुशासन तथा उत्कृष्ठ परीक्षा परिणाम देखकर मैं अति प्रभावित हूं। मैं स्कूल के संचालक मंडल और शिक्षक शिक्षिकाओं को इतनी अच्छी स्कूल के लिए बधाई देता हूं।

एम. आर. सिंघवी
समाचार सपादक, दूरदर्शन जयपुर

'दीपिका' का विमोचन एक सुखद अनुभूति है 'अध्ययन' 'मनन' और 'लेखन' शिक्षा के अङ्ग है 'दीपिका' से प्रमाणित है कि इस शाला की शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण है। शाला का अनुशासन परिश्रम जन्य कार्य करने की क्षमता श्लाघनीय है।
इन सबके लिए शाला परिवार साधुवाद का पात्र है।

अधीक्षक, केन्द्रीय कारागृह, जयपुर

अनेक बार वीर बालिका विद्यालय, परिवार में आनें का अवसर मिला और हर बार पाया कि इससे जुडी संस्थाओं में उत्तरोत्तर निखांर आया है ये संस्थाएं प्रगति करती रहे इसी शुभेच्छा के साथ।

प्रो. चैनसिंह बरला
राजस्थान विश्वविद्यालय

I came to know more intimately this institution to-day. I am inspired and impressed. The contribution of this institution in the field of education of

women is landable I wish the principal and staff and students all success May the institution produce great citigens of the country

श्यामप्रताप सिह राठौर
आई पी एस

श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मे समाज सेवी शिविर मे आकर छात्राओ एव अध्यापिकाओ के उत्साह को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरी शुभकामनाये है कि इसकी प्रत्येक छात्रा समाज मे अपना स्थान बनाये।

डॉ पवन सुराणा
प्रोफेसर जर्मन भापा

आज के सदर्भ मे जब हम यह सोच रहे है कि समाज क्या रसातल की ओर जाने को कटिबद्ध है, क्योकि ऐसा हमारा अनुभव रहा है, तो वीर बालिका विद्यालय और महाविद्यालय हमे आशा की किरण दिखाई देते है, जो हमे विश्वास दिलाते है कि सभी कुछ समाप्त नहीं हुआ है और यदि हम दृढ निश्चय और अनुशासन से कार्य करे तो शिक्षा जगत मे ही नही जीवन के हर क्षेत्र मे सफलता अर्जित की जा सकती है। और ऐसे ही सस्थानो से, और ऐसे ही शिक्षको व समाज सेवियो के सतत् प्रयासो और योगदान से समाज आगे बढ़ सकेगा। मै विद्यालय और महाविद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना करता हू।

महेन्द्र सुराणा
प्रबन्ध निदेशक
राजस्थान राज्य हाथकर्घा विकास निगम

स्कूल प्रागण मे आयोजित स्वतत्रता दिवस समारोह मे सम्मिलित होने का अवसर मिला। छात्राओ का अनुशासन भाव एव परीक्षा मे श्रेष्ठ प्रदर्शन का विवरण सुनकर मन प्रफ्फुलित हुआ, मेरी शुभकामनाए।

कॉलेज के लिए राज्य सरकार को भूमि उपलब्ध करानी चाहिये। राजस्थान मे लडकियो की साक्षरता का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है। इस स्थान के अभाव मे सस्था और प्रगति नही कर सकती। हार्दिक धन्यवाद आज निमत्रण के लिए, हार्दिक शुभ कामनाए भविष्य के लिए।

सतीशचन्द अग्रवाल
सासद (राज्यसभा)

सबसे दुखी कौन है ? ईर्ष्यालु-क्योंकि उसको अपने दुख तो चिपटे ही रहते है, दूसरो की खुशियो से उसको जो दुख मिलता है, उसकी थाह नही।
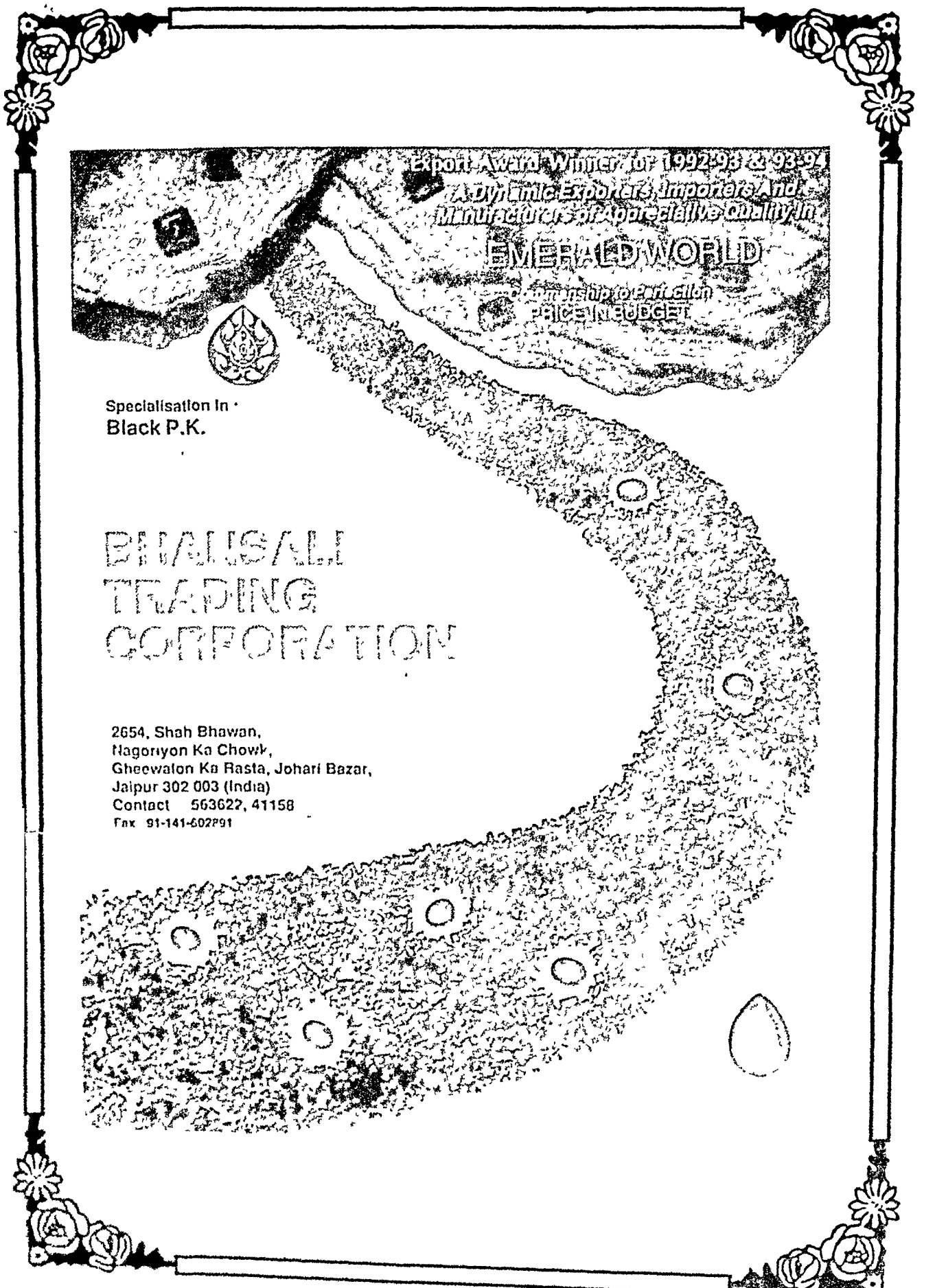
- सेम्युअल जॉन्सन

प्रत्येक को अपनी उन्नति से सतुष्ट नही रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

- दयानन्द

विज्ञापन

Gazdhar Private Ltd.
Hotel Tajmahal
Mumbai
Tel 2023666

Paras Golecha

Nathmalji Ka Chowk, K. G B Ka Rasta,
Jaipur-302 003

॥ श्री ॥

Jewels International

Jewellers & Commission Agents
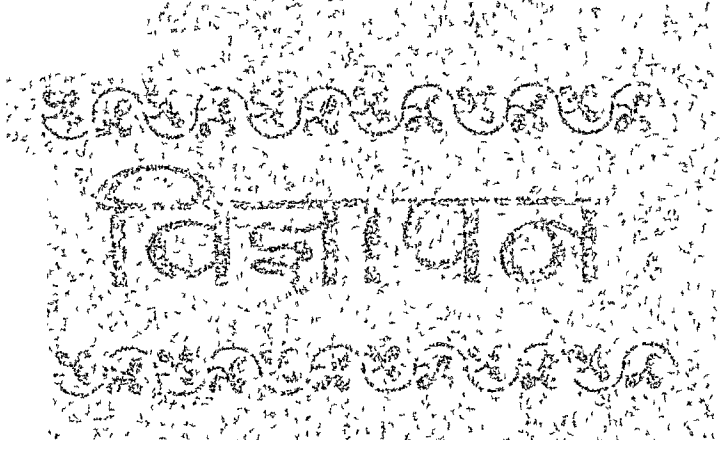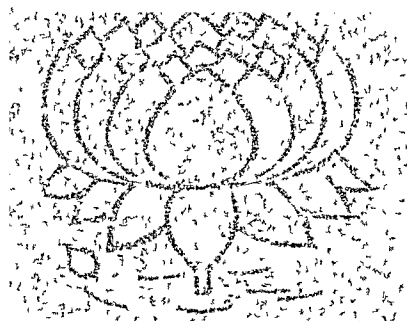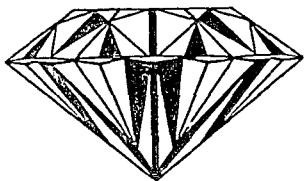
Manufacturers, Importers & Exporters of
Precious & Semi Precious Stones

3936, M. S. B. Ka Rasta, Johari Bazar, Jaipur-302 003
Phone : 565560, 560448, 563847

Partners :	*Phone :*
Mahaveer Mal Mehta	602802
Girdhari Lal Jain	601942
Jatan Mal Dhadda	40181
Kirti Chand Tank	560520
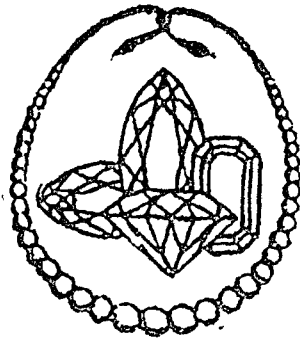
लेखराज सोनी
चाकसू का चौक,
घी वालों का रास्ता, जयपुर-302 003

कन्हैयालाल एस. पारीख

बम्बई

卐 शुभाशीर्वाद दात्री 卐
विचक्षण ज्योति प्रज्ञा भारती

गुरुवर्या श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म. सा.

सौजन्य से :

श्री विचक्षण महिला मण्डल

बीकानेर

विशाल पंडाल में अनुशासित छात्राओं के दल